गणधर श्री सुधर्मा स्वामि प्रणीत तृतीय अंग

# सचित्र
# श्री स्थानांगसूत्र
## (प्रथम भाग)

मूल पाठ-हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद, विवेचन एवं रंगीन चित्रों सहित

* प्रधान सम्पादक *

उत्तर भारतीय प्रवर्तक जैनधर्म दिवाकर
श्री अमर मुनि जी महाराज

* सह-सम्पादक *

श्रीचन्द सुराना 'सरस'

**पद्म प्रकाशन**
पद्म धाम, नरेला मण्डी, दिल्ली-११० ०४०

उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. सा. द्वारा सम्प्रेरित
सचित्र आगममाला का पन्द्रहवाँ पुष्प

- सचित्र श्री स्थानांगसूत्र (भाग १)

- **प्रधान सम्पादक**
  उ भा प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी

- **सह-सम्पादक**
  श्रीचन्द सुराना 'सरस'

- **अंग्रेजी अनुवाद**
  श्री सुरेन्द्र बोथरा, जयपुर

- **संशोधन**
  राजकुमार जी जैन, दिल्ली

- **चित्रांकन**
  डॉ त्रिलोक शर्मा


- **प्रकाशक एवं प्राप्ति-स्थान**
  पद्म प्रकाशन
  पद्म धाम, नरेला मण्डी, दिल्ली-११० ०४०

- **मुद्रण-व्यवस्था**
  संजय सुराना
  श्री दिवाकर प्रकाशन
  ए-७, अवागढ़ हाउस, एम जी रोड, आगरा-२८२ ००२
  दूरभाष (०५६२) २१५११६५

- **प्रथम आवृत्ति**
  वि सं. २०६१ चैत्र
  ईस्वी सन् २००४,

- **मूल्य**
  छह सौ रुपया मात्र (६००/- रुपये)

THE THIRD ANGA WRITTEN BY GANADHAR
SHRI SUDHARMA SWAMI

ILLUSTRATED

# SHRI STHAANANGA SUTRA

(FIRST PART)

Original Text with Hindi and English Translations,
Elaboration and Multicolored Illustrations

* EDITOR-IN-CHIEF *

Uttar Bharatiya Pravartak Jain Dharma Diwakar
**Shri Amar Muni ji Maharaj**

* ASSOCIATE-EDITORS *
Srichand Surana 'Saras'

PADMA PRAKASHAN

PADMA DHAM, NARELA MANDI, DELHI-110 040

THE FIFTEENTH NUMBER OF THE ILLUSTRATED AGAM SERIES
INSPIRED BY UTTAR BHARATIYA PRAVARTAK GURUDEV BHANDARI
SHRI PADMACHANDRA JI M. S.

- ILLUSTRATED SHRI STHAANANGA SUTRA (PART 1)

- *Editor-in-Chief*

  U B Pravartak Shri Amar Muni ji

- *Associate-Editors*

  Srichand Surana 'Saras'

- *English Translator*

  Shri Surendra Bothara, Jaipur

- Copy Editing

  Raj Kumar Jain, Delhi

- *Illustrator*

  Dr Shri Trilok Sharma

- *Publisher and Distributor*

  Padma Prakashan
  Padma Dham, Narela Mandi, Delhi-110 040

- *Printer*

  Sanjay Surana
  Shri Diwakar Prakashan
  A-7, Awagarh House, M G Road, Agra-282 002
  Phone (0562) 2151165

- *First Edition*

  2061 V Chaitra
  March 2004 A D

- *Price*

  Six Hundred Rupees only (Rs 600/-)

जैन
जैनागम
आचार्य
श्री
की
अमर
में
आपश्री का
प्रशिष्यानुशिष्य
सेवक
अमर मुनि
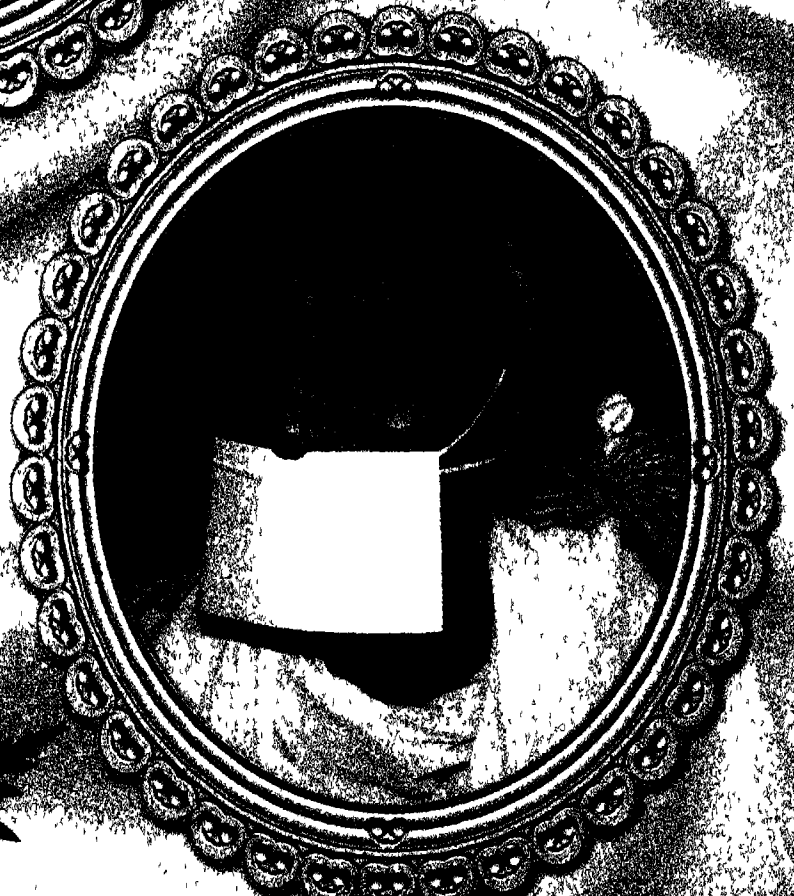
# श्रुत-सेवा के प्रेरणा स्रोत

सरलमना सस्कृत–प्राकृत विशारद
पडित शिरोमणि पूज्यश्री हेमचन्दजी महाराज

पजाब प्रवर्तक उपाध्याय प्रवर
श्रमण श्री फूलचन्द्र जी महाराज

राष्ट्रसंत उत्तर भारतीय प्रवर्तक
अनन्त उपकारी गुरुदेव भण्डारी
श्री पद्म चन्द्र जी महाराज

श्रमण संघीय वरिष्ठ सलाहकार
आत्म कुल कमल दिवाकर चमत्कारी
भोले बाबा श्री रतन मुनि जी महाराज

# श्रुत सेवा में सहयोग दाता

पूज्य पिताश्री भगत जी
श्री त्रिलोक चन्द जी जैन (कसूर वाले)

पूज्यनीय माताजी धर्ममूर्ति
श्रीमती विद्यावती जी जैन

गुरुभक्त श्री महेन्द्र कुमार जी जैन एवं
धर्मशीला श्रीमती चांद रानी जैन

आपने पूज्य पिताजी की पुण्य स्मृति में इस आगम प्रकाशन में उदार सहयोग प्रदान किया है।

# श्रुत सेवा में सहयोग दाता

श्री धर्मवीर जी जैन एव
श्रीमती धनेष काता जैन

श्री अशोक जैन एव श्रीमती सीमा जैन
(सुपुत्र श्री धर्मवीर जी जैन)

श्री अनूप जैन एव श्रीमती रमा जैन
(सुपुत्र श्री महेन्द्र कुमार जी जैन)

## श्रुत सेवा में समर्पित

# एक आदर्श परिवार

धन सम्पत्ति मिलना पूर्व पुण्यो का फल है। बहुतो के पास अपार लक्ष्मी होती है, किन्तु लक्ष्मी का सदुपयोग करना, उसे धर्म एव पुण्य कार्यो मे खर्च करना, यह किसी-किसी भाग्यशाली को मिलता है। जिनमे धर्म के सस्कार दृढ होते है, सत्सग का प्रभाव जिनके मन मे रमा होता है, उन्ही मे इस प्रकार की प्रेरणा और भावना जगती है। वे स्वय त्याग, तप व सतोष का आचरण करते है, परन्तु सेवा और धर्म प्रभावना के क्षेत्र मे खुले हाथो दान करते है। लुधियाना निवासी श्री त्रिलोकचन्द जी जैन 'भक्त' जी का परिवार एक ऐसा ही आदर्श परिवार है।

भक्त जी के नाम मे प्रसिद्ध श्री त्रिलोकचन्द जी जैन के नाम से लुधियाना के आबालवृद्ध सभी सुपरिचित है। त्रिलोक चन्द जी जैन समाज के प्रतिष्ठित सुश्रावक थे। वे धर्मवीर, दानवीर और अनन्य श्रमणोपासक थे। धर्म श्रद्धा उनकी रग-रग मे रमी थी। साधु सन्तो के प्रति भक्ति, दान की भावना और समाज-सेवा के कार्यो मे उदार हृदय से दान देना उनकी विशेषता थी। परम श्रद्धेय आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी म सा की उन्होने अविस्मरणीय सेवा की थी।

महामना 'भक्त' जी की एक विशेषता थी कि वे मौन रहकर अपने धर्म कार्यो मे तल्लीन रहते थे। तथा सेवा, दान करके भी कभी यश कीर्ति की कामना नही करते। किन्तु कस्तूरी की सुगध जैसे हवा के साथ अपने आप फैलती है, उसी प्रकार उनके सदगुणो की सुगध पूरे समाज मे व्याप्त थी। जन मानस मे उनके लिए सहज ही श्रद्धा, प्यार और सम्मान का भाव मौजूद था।

श्री भक्त जी का पुत्र पौत्र परिवार उन्ही के द्वारा सृजित पथ पर गतिमान है। वे दान-सेवा और गुरुभक्ति के क्षेत्र मे उसी प्रकार तन मन धन से समर्पित है। उनके चार सुपुत्र है-(१) श्री ऋषभदास जी (२) श्री धर्मवीर जी, (३) श्री महेन्द्र कुमार जी और (४) श्री सतीश कुमार जी। ये सभी अपने पूज्य पिताश्री द्वारा प्रदत्त सुसस्कारो को प्राणवन्त करते हुए उनके सेवा मिशन को आगे बढा रहे है।

प्रस्तुत आगम **श्री स्थानागसूत्र** (प्रथम भाग) का प्रकाशन श्री त्रिलोक चन्द जी जैन के सुपुत्रो द्वारा अपने पूज्य पिता श्री जी की पुण्य स्मृति मे कराया जा रहा है। इस प्रकाशन मे

जिनवाणी के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाली श्री भक्तजी की धर्मपत्नी धर्मशीला **मातेश्वरी विद्यावती जी जैन** की मुख्य प्रेरणा रही है। आप अपने सुपुत्रो को दान--दया-धर्म हेतु सदैव प्रेरित करती रहती है। उन्ही की छत्र छाया मे यह परिवार दिन प्रतिदिन धर्म क्षेत्र मे अभिवृद्धि कर रहा है।

प्रस्तुत प्रकाशन मे श्री धर्मवीर जी एव श्री महेन्द्र कुमार जी का पूर्ण अर्थ सौजन्य प्राप्त हुआ है। आप दोनो ही भाई उदारमना एव धर्मनिष्ठ है।

श्री धर्मवीर जी की धर्मपत्नी श्रीमती धनेशकाता जी एव श्री महेन्द्र कुमार जी की धर्मपत्नी श्रीमती चाँदरानी जी भी धर्मशीला और नारी रत्न है। श्री धर्मवीर जी के सुपुत्र श्री अशोक जैन एव पुत्रवधू श्रीमती सीमा जैन तथा श्री महेन्द्र कुमार जी के सुपुत्र श्री अनूप जैन एव पुत्र वधू श्रीमती रमा जैन भी धार्मिक कार्यो एव श्रुत-सेवा मे सदैव अग्रणी रहती है। एव अपने माता-पिता के धर्म कार्यो मे सदैव सहयोगी रहते है।

श्री भक्त जी का परिवार सन् १९३८ से ही हौजरी व्यवसाय से जुडा हुआ है। इनके उत्पादन मिनी किग निट वियर (टॉप गेयर) नाम से भारत भर मे विश्रुत और प्रचलित है।

उक्त बधुद्वय द्वारा प्राप्त उदार अर्थ सौजन्य से श्री स्थानाग सूत्र के प्रथम भाग का प्रकाशन किया जा रहा है। इस उदार श्रुत- सेवा के लिए हम श्री पद्म प्रकाशन की ओर से इस परिवार का हार्दिक अभिनन्दन करते है और शासनेश प्रभु से यही प्रार्थना है कि यह परिवार इसी प्रकार धर्म कार्यो मे उन्नति करता हुआ जिनशासन की प्रभावना करता रहे।

शुभ कामनाओ के साथ

**महेन्द्र कुमार जैन**
अध्यक्ष- पद्म प्रकाशन,
पद्मधाम, नरेला

# प्रकाशकीय

श्रुत-सेवा के महान् कार्य में हम निरन्तर असीम उत्साह के साथ आगम-भक्तिपूर्वक आगे बढ़ रहे हैं और शासनदेव तथा स्व. गुरुदेव उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. का आशीर्वाद हमारा पथ प्रशस्त कर रहा है।

उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी म. जैसे दृढ़ अध्यवसायी, संकल्पबली, गुरुभक्त और आगम ज्ञाता संत वर्तमान समय में बहुत कम मिलेंगे। देखा जाता है, अधिकतर विद्वानों में अपनी रचित-निर्मित कृति के प्रकाशन की उत्कंठा रहती है और उसे ही वे सबसे अधिक महत्त्व देते हैं तथा हर जगह सबसे आगे अपने नाम को ही प्रतिष्ठापित करने को उत्सुक रहते हैं। प्रचार व ख्याति की प्रतिस्पर्धा के इस युग में प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी म एक अलग किस्म के संत हैं। इन्हें न अपने नाम के प्रचार की भूख है, न ही अपनी रचनाओं को प्रकाशित करने की उत्सुकता। प्रवर्त्तकश्री जी के प्रवचनों व भजनो की २-३ पुस्तकें सम्पादित हो प्रकाशन के लिए तैयार रखी हैं, किन्तु प्रवर्त्तकश्री जी का मानना है, पहले मुझे जिनवाणी का प्रकाशन करना है, इसी में समूचे संसार का लाभ कल्याण निहित है। अतः श्रुत-सेवा में ही मुझे पूरी निष्ठा व शक्ति का सदुपयोग करना है।

उन्हीं की इस विस्मयकारक प्रेरक श्रुत-भक्ति का यह परिणाम है कि हम अब तक धीरे-धीरे सचित्र आगमों की १५ पुस्तको में १७ आगमों का प्रकाशन करने में सफल हुए हैं और हम निरन्तर इसी श्रुत-सेवा मे संलग्न रहकर अपनी शक्ति व धन का सदुपयोग करने के लिए कृतसंकल्प हैं।

हमे प्रसन्नता है, सचित्र आगममाला की इस शृखला में इस वर्ष हम श्री स्थानांगसूत्र जैसे विशालकाय आगम को दो भागों मे प्रकाशित कर पाठकों के हाथों मे पहुँचा रहे हैं।

इस श्रुत-सेवा कार्य मे अर्थ सौजन्य दाता महेन्द्र जैन, लुधियाना; हमारे सहयोगी विद्वान् श्रीचन्द जी सुराना 'सरस', आगरा, सुश्रावक श्री राजकुमार जी जैन, देहली तथा श्री सुरेन्द्रकुमार जी बोथरा, जयपुर का सहयोग मिल रहा है। साथ ही दिल्ली, पंजाब, हरियाणा के अनेक श्रद्धालु गुरुभक्तों ने जिनेश्वर देव की पवित्र वाणी के प्रकाशन में अपने धन का सदुपयोग करके अपनी शास्त्रभक्ति तथा गुरुभक्ति का परिचय दिया है, दे रहे हैं। हम उन सबके प्रति हृदय से आभार प्रकट करते हैं।

श्री महेन्द्र जी जैन ने अपने स्वर्गीय पूज्य पिता श्री त्रिलोकचन्द जी जैन 'भगत जी' की स्मृति में प्रकाशित करवाने मे उदार सहयोग प्रदान किया है। श्री भगत जी साधु-सन्तों की सेवा, दान और सामायिक आदि धर्मध्यान में सदा ही आगे रहते थे। हम श्री महेन्द्र जी को विशेष रूप में धन्यवाद देने के साथ ही भविष्य में उनके सहयोग की कामना रखते है।

**महेन्द्रकुमार जैन**
अध्यक्ष
पद्म प्रकाशन

## PUBLISHER'S NOTE

We are steadily progressing in the great mission of promoting the scriptures with boundless enthusiasm and devotion for *Agams*. The blessings of the Protective Deity and late Gurudev Uttar Bharatiya Pravartak Bhandari Shri Padma Chandra Ji M. acts as a beacon on our path.

In modern times assiduous, unwaveringly resolute, devout and saintly ascetic scholars of *Agams* like Uttar Bharatiya Pravartak Shri Amar Muni ji M. are rare to find. It is common that most of the scholars are eager to get their work published and that is what they consider to be of prime importance. They crave to put their name at the fore front always. In this age of competitive publicity and fame Pravartak Shri Amar Muni ji M. is a sage with a difference. He neither has the hunger for publicity nor the eagerness to get his works published. Two-three compilations of his discourses and *Bhajans* are lying ready for publication but Pravartak Shri ji believes that his primary mission is to get *Jinavani* (Sermon of the *Jina*) published because that embodies the uplift and beatitude of the whole world. Thus, he says that, he has to devote all his faith and energy to the mission of service to the *Shrut* (Sermon of the *Jina*).

As a result of his astonishingly inspiring devotion for the *Shrut* we have, in due course, published seventeen *Agams* in fifteen volumes of this Illustrated Agam Series and we are committed to put our energy and wealth to a noble cause by remaining ever involved in this mission of service to the *Shrut*.

We are pleased to bring a voluminous *Agam* like *Shri Sthaananga Sutra* this year to our readers in two volumes.

We are getting regular assistance of our donor Shri Mahendra Jain, Ludhiana, and contributing scholars like Shri Srichand ji Surana 'Saras', Agra, Shri Raj Kumar ji Jain, Delhi and Shri Surendra Kumar ji Bothara, Jaipur. Many devout guru-devotees from Delhi, Punjab and Haryana have displayed their devotion for the Guru and scriptures through their financial contributions towards publication of the pious sermon of the *Jina*, and the process continues. We express our sincere gratitude for them all.

Shri Mahendra Jain has contributed liberally towards this publication in memory of his father late Shri Trilok Chand ji Jain "Bhagat ji". We express our hearty thanks to him and hope that he will continue his co-operation in future.

**—*Mahendra Kumar Jain***
PRESIDENT
Padma Prakashan

# प्रस्तावना

प्रसिद्ध आगम भाष्यकार आचार्य संघदासगणि ने लिखा है–"तीर्थंकरों और केवलज्ञानियों के ज्ञान में किसी प्रकार का भेद नहीं होता। जैसा केवलज्ञान और जैसा धर्म–तत्त्व–निरूपण भगवान ऋषभदेव ने किया, वैसा ही श्रमण भगवान महावीर ने किया है। अर्थ (भाव) रूप में सभी तीर्थंकरों का उपदेश एक ही समान होता है, किन्तु जो भेद होता है, वह सूत्र–रचनाकार गणधरो व स्थविरों की शैली के कारण ही होता है। गणधर केवल द्वादशांगी की रचना करते हैं। अग बाह्य आगमो की रचना करने वाले स्थविर होते है। अतः अंग बाह्य आगमों की प्रामाणिकता अंग आगमों के आधार पर ही मानी जाती है।"

प्रस्तुत श्री स्थानागसूत्र ग्यारह अगसूत्रो मे तीसरा अंगसूत्र है। नन्दीसूत्र आदि मे स्थानांग का जो वर्णन एवं विषय–वस्तु का जैसा निरूपण है, उस अनुसार तो आज इसका स्वरूप काफी परिवर्तित हो चुका है। इसके अनेक कारणों में से मुख्य कारण हैं भगवान महावीर के पश्चात् पूर्व भारत में जहाँ श्रमणों का विहार होता था वहाँ एक के बाद एक अनेक लम्बे दुष्कालो का पडना। दुष्कालों के कारण श्रमणो को शुद्ध भिक्षा की उपलब्धि दुर्लभ हो गई, इस कारण अनेक बहुश्रुत श्रमण संथारा आदि करके देह त्याग कर गये। अनेक द्वादशागधर श्रमण अन्यत्र विहार कर गये। परीषहों के कारण काल प्रभाव से स्मरण शक्ति की दुर्बलता, शिष्य परम्परा का विच्छेद और आगम का ज्ञान देने वाले बहुश्रुतों का अभाव आदि अनेक कारणों से श्रुतज्ञान की बहुत–सी अमूल्य ज्ञान निधि क्षीण होती चली गई। जो श्रुतज्ञानी श्रमण बचे थे, उनका विहार दूर–दूर प्रदेशों मे होने के कारण उनमें वाचना का भेद, उन प्रदेशो की भाषा के उच्चारण आदि मे अन्तर के कारण थोडा–बहुत शब्दो का उच्चारण भेद और लौकिक रीति–रिवाजो, लोकाचारो आदि की भिन्नता के कारण अर्थ–परम्परा में भी यत्किंचित् भिन्नता आना स्वाभाविक था। इस कारण विलुप्त होते श्रुतज्ञान को सुरक्षित रखने के लिए आगमज्ञ स्थविर श्रमणो ने समय–समय पर साधु–सम्मेलन बुलाकर परस्पर आगम पाठो का मिलान करने के लिए सम्मेलन (वाचनाएँ) किये और श्रुतज्ञान को यथाशक्ति, यथामति सुरक्षित रखने का भरसक प्रयत्न किया।

**आगमों की पाँच वाचनाएँ**

भगवान महावीर निर्वाण से १६० वर्ष बाद (वि पूर्व ३१० या ईसा पूर्व ३१६) के लगभग दशपूर्वधर आर्य स्थूलभद्र के नेतृत्व मे पाटलिपुत्र मे प्रथम आगम वाचना हुई।

आगम संकलन की दूसरी वाचना वीर निर्वाण के ३०० वर्ष पश्चात् सम्राट् खारवेल के प्रयत्नों से कुमारगिरि पर्वत (उडीसा) पर आर्य सुस्थित और सुप्रतिबुद्ध के सान्निध्य मे तथा तीसरी वाचना ८२७ से ८४० वर्ष के मध्य मथुरा मे आर्य स्कन्दिल के नेतृत्व में सम्पन्न हुई। उसी समय दक्षिण–पश्चिम भारत में विचरने वाले श्रमणों का एक विशाल सम्मेलन वल्लभी (सौराष्ट्र) में आर्य नागार्जुन के नेतृत्व

मे हुआ। इन चारो सम्मेलनो मे जो श्रुत-सकलना हुई वह भी केवल स्मृति के आधार पर चलता आया शास्त्र ज्ञान था। तब तक आगमो को लिपिबद्ध करने का कोई सार्थक प्रयास नही हुआ था। पहली वाचना पाटलिपुत्र बिहार मे, दूसरी उडीसा मे, तीसरी उत्तर भारत और चौथी पश्चिम भारत में हुई। इस कारण इनमे भाषा का ध्वन्यात्मक अन्तर रहना और स्मृति-दोष के कारण पाठान्तर आदि रहना स्वाभाविक ही था। आज आगम-पाठों मे जो पाठान्तर तथा भाषा मे त, द, य, ध, ह आदि उच्चारणो का भेद (जैसे-कोह-कोध, अह-अध, इई-इति) मिलता है, इसका भी यही कारण प्रतीत होता है।

इसके पश्चात् वीर निर्वाण की दशवीं शताब्दी (९८० से ९९३ ईस्वी सन् ४५४-४६७) के मध्य पुनः वल्लभी मे आचार्य देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण के नेतृत्व मे श्रमण सम्मेलन हुआ। अब तक स्मृति के आधार पर चले आये आगम पाठों का लिपिकरण प्रथम बार हुआ। तब से आगम पाठ हाथ से लिखी पुस्तको मे पुस्तकारूढ हुआ माना जाता है।

काल के इतने लम्बे दु स्सह झझावातो के पश्चात् जो आगमज्ञान बचा था, वह आचार्य देवर्द्धिगणि के समय जिस रूप मे पुस्तकारूढ किया गया, वही आगम पाठ आज हमारे समक्ष विद्यमान है। इस कारण प्रत्येक अग के मूल स्वरूप एव उसके परिमाण आदि मे काफी अन्तर पड गया। यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है।

स्थानांगसूत्र का आज जो रूप उपलब्ध है, वह भगवान महावीर के पश्चात् एक हजार वर्ष के समय मे जिस रूप मे विद्यमान रहा, वही रूप आज उपलब्ध है। अत यह माना जाता है कि इस अवधि में जो-जो ऐतिहासिक घटनाएँ हुईं उनका सकलन भी इस सूत्र मे होता गया। यही कारण है कि इसमे भगवान महावीर के ५००-६०० वर्ष बाद हुए निन्हवो आदि का उल्लेख भी विद्यमान है। किन्तु इन सबके बावजूद यह परम्परागत सुदृढ धारणा है कि आगमो के मूल तात्त्विक विषयो मे कही कोई परिवर्तन या परिवर्धन नही हुआ है और पाठ सकलन करने वाले आगमज्ञ मुनियो ने जैसा पाठ स्मृति मे चल रहा था, उसे बिना कुछ घटाये-बढाये एक जगह सुरक्षित स्थापित कर दिया। इसलिए उनकी प्रामाणिकता मे कही भी सन्देह या शका की कोई गुजाइश नही है। अस्तु

**स्थानांग की निरूपण शैली**

हमारे मान्य ३२ आगमो मे स्थानाग तथा समवायागसूत्र की निरूपण शैली अन्य सूत्रो से बिल्कुल ही भिन्न और नवीन प्रकार की है। स्थानागसूत्र मे एक से लेकर दस तक की सख्या वाले विषयो का वर्गीकरण/सकलन है। इसलिए इसके दस स्थान हैं। अन्य सूत्रो मे अध्ययन, शतक, पद आदि के रूप में उनका विभाग है, तो इसमे अध्ययन के स्थान पर 'स्थान' शब्द प्रयुक्त हुआ है।

स्थानाग में सैकडों प्रकार के विषय है। दर्शन से सम्बन्धित गहन विषय है तो तत्त्वज्ञान और इतिहास के भी विविध तथ्य इसमे सकलित है। धर्म, नीति, आयुर्वेद, इतिहास, ज्ञान-मनोविज्ञान, कर्मशास्त्र, प्राणि विज्ञान, पुद्गल, वनस्पति विज्ञान, ज्योतिष्क और पृथ्वी, नदी, पर्वत, समुद्र आदि के उल्लेख भी संख्या व गणना प्रधान दृष्टि से यहाँ सकलित हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि स्मरण रखने में संख्या प्रधान-शैली अधिक उपयोगी लगी हो, इस कारण स्थानांग तथा समवायांग की रचना संख्या प्रधान शैली में की गई हो। यह शैली स्मरण रखने में सरल और विषयों की विविधता के कारण अधिक रुचिकर रही है। प्राचीनकाल में संख्या प्रधान शैली में तत्त्व कथन करने की एक परिपाटी प्रचलित थी। बौद्ध आगम त्रिपिटिकों के अंगुत्तर निकाय और पुग्गल पञ्जत्ति की सकलना भी इसी शैली में है तथा महाभारत, गीता आदि में भी संख्याप्रधान शैली में अनेक विषयों का निरूपण हुआ है। स्थानांगसूत्र में वर्णित बहुत से विषय बौद्धों के अंगुत्तरनिकाय में प्राय मिलती-जुलती शैली में आते है। प्रसिद्ध विद्वान् प्रो दलसुखभाई मालवणिया ने अत्यन्त परिश्रम करके यह अनुशीलन किया है कि स्थानांग के सैकडो सन्दर्भ बौद्ध ग्रन्थों में बहुत ही समान रूप मे विद्यमान हैं। इससे पता चलता है कि प्राचीनकाल में सख्या प्रधान शैली में ग्रन्थ रचना की शैली प्रचलित थी और यह बहुत लोकप्रिय थी।

स्थानागसूत्र के बहुत से सन्दर्भ अन्य आगमो के साथ भी प्राय समान रूप में मिलते हैं। जैसे भगवतीसूत्र मे आयुबन्ध के छह प्रकार-जातिनाम निधत्तायु, गतिनाम निधत्तायु (शतक ६, उ ८) चार जाति आशीविष (भगवती, शतक ८, उ २) आदि। केवली समुद्घात, कर्मबन्ध, शरीर आदि का वर्णन प्रज्ञापनासूत्र मे विस्तार से उपलब्ध है। नदी, पर्वत, समुद्र आदि से सम्बन्धित वर्णन जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति मे आता है। स्वर मण्डल व वचनविभक्ति का पूरा प्रकरण अनुयोगद्वार मे ज्यो का त्यो मिलता है। इसके अतिरिक्त प्रश्नव्याकरण, दशाश्रुतस्कध, उत्तराध्ययन, जीवाभिगमसूत्र आदि के अनेक प्रकरण व सन्दर्भ स्थानागसूत्र मे उपलब्ध हैं। इसका कारण यही प्रतीत होता है कि स्थानांगसूत्र एक संग्रह सूत्र है। इसमें सख्या के अनुसार अन्य आगमो मे आये अनेक प्रकरण सग्रहीत हुए है। आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म ने स्थानागसूत्र की विस्तृत प्रस्तावना मे इसकी सन्दर्भ सहित तुलनात्मक चर्चा की है।

इस प्रकार स्थानागसूत्र के विहगावलोकन से यह स्पष्ट होता है कि यह आगम एक बृहद् संकलन है। इस सकलन से स्थानागसूत्र की महत्ता कम नही हुई, बल्कि इसकी उपयोगिता और रोचकता में वृद्धि हुई है और यह साधारण बुद्धि पाठक से लेकर गम्भीर विद्वानो तक के लिए उपयोगी सिद्ध होता है।

**व्याख्या व अनुवाद**

स्थानागसूत्र में विषयो की विविधता तो है, परन्तु इतनी जटिलता या गहनता नहीं है कि जिसे समझने के लिए विस्तृत व्याख्या व भाष्य की जरूरत हो, अधिकांश विषय प्राय· स्पष्ट व सहज, सुगम हैं। यही कारण रहा होगा कि अन्य आगमों की तरह इस पर किसी आचार्य ने निर्युक्ति अथवा भाष्य नहीं लिखा है। आचार्य अभयदेव सूरि ने विक्रम सवत् ११२० मे इस पर एक विस्तृत सस्कृत टीका का निर्माण किया है। इसमें दार्शनिक व आचार सम्बन्धी विषयो का स्पष्टीकरण भी किया है तथा अन्य अनेक ग्रन्थों के सन्दर्भ उद्धृत कर उसे अधिक स्पष्ट रूप से समझाया है तथा विशद रूप में समझाने के लिए बीच-बीच में प्राचीन व ऐतिहासिक दृष्टान्तों व उदाहरणो का भी उल्लेख किया है। वर्तमान

समय मे यही संस्कृत टीका अधिक प्रसिद्ध है। हमने जहाँ-जहाँ इसका उपयोग किया है, वहाँ सन्दर्भ मे वृत्ति शब्द से उसका सकेत दिया है। इसके अलावा आचार्य श्री घासीलाल जी म ने इस पर अपनी शैली में भी सस्कृत टीका लिखी है, किन्तु यह हमें उपलब्ध नहीं हुई।

हमारे सामने अनुवाद व विवेचन करने के लिए मूल आधार रहा है आगम रत्नाकर आचार्यसम्राट् श्री आत्माराम जी म. सा कृत विस्तृत हिन्दी टीका। आचार्यश्री आगमों व उनकी टीका-भाष्य आदि ग्रन्थो के विशेष गम्भीर ज्ञाता थे। हिन्दी टीका मे अपने व्यापक आगमज्ञान का उपयोग करके स्थानांग के संक्षिप्त संकेत सूत्रो पर इतना सुन्दर और प्रामाणिक प्रकाश डाला है कि पढते हुए रोचकता भी बनी रहती है और आगमकार का मूल आशय भी बहुत स्पष्टता के साथ समझ मे आ जाता है। आचार्यश्री ने आगमज्ञान के साथ अपने अन्य ग्रन्थो के विस्तृत ज्ञान का भी इसमे उपयोग किया है, इस कारण यह हिन्दी टीका स्थानाग का हार्द समझने के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होती है। विवेचन मे हमने प्राय इसी का आधार लिया है और उसका सन्दर्भ भी हिन्दी टीका के रूप में स्थान-स्थान पर उल्लेखित किया है।

मूल पाठ तथा सूत्र सख्या के लिए हमने श्रमण सघ के युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म के प्रधान सम्पादकत्व मे प्रकाशित स्थानागसूत्र का आधार लिया है। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, भिन्न-भिन्न समयों व स्थानो पर आगम वाचना होने के कारण आगमो की सूत्र सख्या मे अन्तर आता रहा है। भिन्न-भिन्न प्रदेशो मे वाचना होने के कारण स्थानीय भाषा व उच्चारण का प्रभाव भी उस पर पडा है। अत य, त, ध, ह आदि उच्चारण मे अन्तर आया है। दूसरी बात, आगमो के समान पाठ व एक ही पाठ की बार-बार आवृत्ति होने के कारण पाठ संक्षिप्त करने की शैली प्रचलित थी। 'जाव', 'तहा', 'एव' आदि वाक्यो से पाठो की आवृत्ति सक्षिप्त होती थी, पहले आये पूरे पाठ को दुहराने का सकेत भी हो जाता है। इससे याद रखने मे भी सुविधा रहती तथा हाथ से लिखने मे भी समय, श्रम और कागज की बचत हो जाती थी, क्योंकि प्राचीनकाल मे शास्त्र लिखने के लिए ताडपत्र आदि बहुत दुर्लभ थे।

आज जबकि कागज और छपाई के साधन सर्व सुलभ है, तब इस शैली मे परिवर्तन आना स्वाभाविक है। सक्षिप्त पाठो को पूरा का पूरा विस्तार के साथ देने की शैली प्रचलित है। इससे लाभ यह है कि आगमकार जो कहना चाहते है, वह पूरा विषय पाठक वही समझ लेता है उसके लिए उसे बार-बार पुराने पाठ (शतक, अध्ययन) आदि पलटने की जरूरत नही रहती। इससे आगमकार का भाव ग्रहण करने मे सरलता रहती है। किन्तु चूँकि पुरानी अधिकाश प्रतियो मे संक्षिप्त पाठ ही मिलता है, इसलिए नई सम्पादन शैली मे उस विस्तृत पाठ को मूल के साथ नहीं जोड़कर दोनों तरफ कोष्ठक [ ] लगाकर अलग दर्शाया जाता है। इससे पाठक समझ सकता है कि यह विस्तृत पाठ है। इससे ग्रन्थ का कलेवर तो अवश्य बढता है, परन्तु सुबोधता भी बढ जाती है। युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म. तथा आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने इसी शैली को अपनाया है। जबकि आचार्य श्री अभयदेव सूरि जी की वृत्ति में तथा आचार्यसम्राट् श्री आत्माराम जी म की हिन्दी टीका में प्राचीन शैली का अनुसरण कर

संक्षिप्त पाठ ही रखा गया है। हमने पाठकों व अनुसंधानकर्ताओं की सुविधा के लिए युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी का विस्तृत पाठ ही यहाँ दिया है और उसी के अनुसार विस्तृत पाठ कोष्ठक में दर्शाकर यह भी सूचित किया है कि यह कुछ प्राचीन प्रतियों मे नहीं है।

हमने मूल पाठ का शब्दश· अनुवाद नहीं देकर भावानुवाद देने का प्रयत्न किया है। भावानुवाद की भाषा सरल और स्पष्ट रखने के उद्देश्य से कहीं-कहीं मूल शब्द के साथ ही उसका प्रचलित अर्थ व संक्षिप्त व्याख्या भी वहीं पर दे दी है, जिससे आगमपाठी जिज्ञासु हिन्दी अनुवाद पढ़ता हुआ उसका पूरा भाव भी समझता रहे, भाषा में प्रवाह तथा रोचकता बनी रहे और उसे बार-बार उन शब्दों का अर्थ समझने के लिए टीका या शब्द कोष नहीं टटोलना पडे। विवेचन करने मे भी हमने उपलब्ध सभी सस्करणों का उपयोग करते हुए भी अपनी स्वतंत्र शैली अपनाई है। अनेक स्थानों पर जिन विषयों का विवेचन आवश्यक प्रतीत हुआ और अन्य व्याख्याकारो ने उस विषय का पर्याप्त स्पष्टीकरण नहीं किया है, तो वहाँ हमने उस विषय से सम्बन्धित अन्य आगमो को देखकर विवेचन में उसका आवश्यक वर्णन किया है।

हो सकता है, इस कारण कही-कही विवेचन विस्तृत भी हो गया है, परन्तु वह पाठकों के लिए सुविधाजनक और ज्ञानवर्धक होगा। उन्हे अन्य आगम खोलकर पढने की अपेक्षा नही लगेगी। अनेक स्थानो पर सस्कृत टीकाकार ने विषय को स्पष्ट करने वाले उदाहरण व दृष्टान्तो का भी उल्लेख किया है, किन्तु विस्तार भय से हमने उन दृष्टान्त का उल्लेख छोड दिया है।

यह शास्त्र कुछ अधिक विस्तृत विवेचन की अपेक्षा रखता है, परन्तु हम इसे मात्र दो भागों में ही प्रकाशित करना चाहते है, क्योंकि अभी अन्य आगमो का प्रकाशन भी करना है, इस कारण विवेचन आदि का विस्तार बहुत ही कम किया और जहाँ आवश्यक प्रतीत हुआ वही संक्षेप में विवेचन करके हिन्दी टीका व सम्बन्धित शास्त्र देखने का संकेत कर दिया है। इसमे ४-५ परिशिष्ट जोडना भी मुझे उपयोगी लग रहा था। जैसे शब्दानुक्रमणिका, मूलसूत्र के कथन को अधिक स्पष्ट करने वाले उदाहरण व दृष्टान्त जिनका वृत्तिकार ने उल्लेख किया है। एक ही विषय, संख्या क्रम से भिन्न-भिन्न स्थानों में बार-बार आया है, जैसे जम्बूद्वीप के नदी, पर्वत, कूट आदि का वर्णन प्रायः सभी स्थानो में आया है, प्रायश्चित्त के प्रकार, प्रतिमाओ का वर्णन आदि इन सबकी तुलनात्मक तालिका आदि। किन्तु पुस्तक की पृष्ठ सख्या बढ़ती देखकर उनको स्थगित ही रखना पडा है।

इसके सम्पादन में श्रीचन्द जी सुराना 'सरस' ने अथक परिश्रम किया है तथा अंग्रेजी अनुवाद में श्री सुरेन्द्र जी बोथरा ने भी इस बात का ध्यान रखा है कि आगमकार का भाव अंग्रेजी में यथार्थ रूप मे व्यक्त हो। यह ग्रन्थ मूलतः अभिधान ग्रन्थ है। अत· उसका वही स्वरूप बनाये रखने के लिए प्रत्येक मूल शब्द व अन्य महत्त्वपूर्ण शब्दो के साथ ही कोष्ठक मे उसका उपयुक्त अंग्रेजी अर्थ देकर उसका मौलिक स्वरूप समझाने का प्रयत्न किया है। सुश्रावक श्री राजकुमार जी जैन (देहली) ने अंग्रेजी अनुवाद का पुनः निरीक्षण करने मे सेवाभाव से हमे पूर्ण सहयोग दिया है। सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

स्व पूज्य गुरुदेव उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. सा का जो आशीर्वाद मुझे मिला था, वह आज भी मेरा सम्बल बना हुआ है और उन्हीं की प्रेरणा और प्रोत्साहन का बल मुझे इस श्रुत-सेवा के महान् पुण्य कार्य मे आगे से आगे बढा रहा है। अतः इस प्रसंग पर पूज्य गुरुदेव का स्मरण होना स्वाभाविक है। जब भी कोई नया आगम सम्पादित प्रकाशित होता तो उसे देखकर उन्हें बहुत अधिक प्रसन्नता होती थी, सबसे पहले वे उसे पढ़ते थे और यही आशीर्वाद देते-"जिनवाणी की सेवा करते रहो। घर-घर में महावीर के उपदेश पहुँचा दो यही मेरी तमन्ना है।"

इस आगम प्रकाशन मे सुश्रावक श्री महेन्द्र जी जैन, लुधियाना ने अपने पूज्य पिताजी श्री त्रिलोकचन्द जी 'भगत जी' की पुण्य स्मृति में सहयोग प्रदान किया है। अतः वे विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।

आगमो का चित्रो सहित अंग्रेजी अनुवाद का कार्य बहुत ही श्रमपूर्ण तथा महँगा है, परन्तु अनेक गुरुभक्त श्रावको तथा जिनवाणी के उपासक दानवीरो के सहयोग से यह कार्य आगे बढ रहा है और बढता ही जायेगा।

इसी दृढ विश्वास के साथ !

*—प्रवर्त्तक अमर मुनि*

## सम्पादन में सहायक साहित्य

१. **श्री स्थानांगसूत्र—**आचार्य श्री अभयदेव सूरि कृत वृत्ति सहित

   **सम्पादक—**मुनि श्री जम्बूविजय जी म.

   [प्रथम–द्वितीय भाग, वि. सं. २०५९]

   **प्रकाशक—**आत्मानन्द जैन सभा, भावनगर

२. **श्री स्थानांगसूत्र**

   (मूल–संस्कृत छाया मूलार्थ एव हिन्दी विवेचन)

   **हिन्दी व्याख्याकार—**जैनागम रत्नाकर आचार्य श्री आत्माराम जी म.

   [प्रथम–द्वितीय भाग, वि. सं. २०३२]

   **प्रकाशक—**आचार्य श्री आत्माराम जैन प्रकाशन समिति, लुधियाना

३. **स्थानांगसूत्र**

   **प्रधान सम्पादक—**युवाचार्य श्री मिश्रीमल जी म. 'मधुकर'

   **विवेचक—**पं हीरालाल जी शास्त्री

   [तृतीय संस्करण, वि. सं. २०५७]

   **प्रकाशक—**श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर

४. **ठाणं**

   सम्पादक, विवेचक—मुनि नथमल (आचार्य श्री महाप्रज्ञ)

   [वि. सं २०३३]

   **प्रकाशक—**जैन विश्व भारती लाडनूँ

५. **स्थानांग–समवायांग**

   **संपादक—**पं दलसुखभाई मालवणिया

   [ईस्वी सन् १९५५]

   **प्रकाशक—**गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद,

**नोट—**प्रस्तुत विवेचन मे सन्दर्भ के रूप में उद्धृत ग्रन्थों के इस प्रकार संकेत दिये गये है—

**वृत्ति—**आचार्य श्री अभयदेव सूरि कृत संस्कृत वृत्ति

**हिन्दी टीका—**आचार्य श्री आत्माराम जी म कृत हिन्दी व्याख्या

**ठाणं—**आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी कृत विवेचन एवं टिप्पण

सभी विद्वान् सम्पादको तथा प्रकाशन संस्थाओं के प्रति हार्दिक कृतज्ञता

सम्पादन हेतु टीका ग्रन्थ उपलब्ध कराने में आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि शोध संस्थान, उदयपुर तथा प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर का सहयोग निरन्तर प्राप्त होता रहा है, हार्दिक साधुवाद !

## FROM THE EDITOR'S PEN

Acharya Sanghadas Gani, the famous commentator (*Bhashya*) of *Agams*, has stated—"There is no difference between the knowledge of *Tirthankars* and omniscients The *Keval-jnana* of and exposition of religious fundamentals by Bhagavan Mahavir was same as that of Bhagavan Risabhadeva In essence (*artha*) the sermons of all *Tirthankars* remain same. The apparent variations are due to the variations in the styles of textual forms given by the *Ganadhars* and *Sthavirs*. *Ganadhars* are the authors of only the *Dvadashangi* (the twelve limbed corpus of Jain canon). The authors of *Angabahya Agams* (scriptures other than the *Angas*) are *Sthavirs* Therefore the *Angabahya Agams* derive their authenticity from the *Anga Agams* "

This *Shri Sthaananga Sutra* is the third among the eleven *Anga Sutras* When we look at the description and list of contents of *Sthaananga* as mentioned in *Nandi Sutra* and other works, we find that the available text has undergone a considerable change Of the many reasons for this change the most important one is that the post-Mahavir area of movement of *Shramans* in eastern India underwent difficult times of a series of droughts of extended duration These hard times made the availability of acceptable alms for ascetics extremely difficult. As a consequence many profound scholarly ascetics took the ultimate vow and abandoned their earthly bodies Many scholars of *Dvadashangi* migrated to other areas Under the influence of afflictions and regressive times the general level of memory got reduced, the disciple lineages disintegrated and the *Shrut* scholars who could impart knowledge of *Agams* became scarce, all these and many other reasons caused a steady decline in the invaluable wealth of *Shrut-jnana* The still extant scholarly ascetics lived in remote areas with no means of communication and interaction. This caused textual variations The influence of tonal variations of local languages was natural in pronunciation of many words as was the influence of local customs and rituals on the interpretation of many terms and concepts. For this reason *Agam*-conventions were organized from time to time by ascetics for the purpose of protecting the dwindling *Shrut-jnana* through

comparative study and compilation of the available *Agamic* texts. These were popularly called *Vaachana* (recitation). All efforts were made for protecting and safe keeping of the available *Shrut-jnana*.

### THE FIVE AGAM VAACHANAS

The first *Agam vaachana* was held in Pataliputra under Dashapurvadhar Arya Sthulabhadra around 160 ANM (after nirvana of Mahavir) or 310 BV (366 BC).

The second *Agam vaachana* was held at behest of King Kharvel at Kumaragiri hills (Orissa) under the auspices of Arya Susthit and Supratibuddha around 300 ANM (169 BV or 226 BC). The third *Vaachana* was held in Mathura under Arya Skandil sometime between 827 to 840 ANM (358 to 371 V or 301 to 314 AD). Around the same time a large convention of ascetics roaming south eastern India was held in Vallabhi (Saurashtra) under the leadership of Arya Nagarjun. The compilation of *Shrut* (scriptures in oral tradition) in all these four conventions still remained the oral tradition of the scriptural knowledge carried through memory. No effective steps were taken till then for writing the *Agams* Thus the first *Vaachana* was held in Bihar or eastern India, the second in southern India, the third in northern and the fourth in western India. Therefore phonetic variations in the language, variant readings in text due to memory lapses and other faults were natural This appears to be the reason for the variant readings in the texts available today as well as the variations in the use of consonants like *ta*, *da*, *ya*, *dha* and *ha* (for example *koha* and *kodha*, *aha* and *adha*, *i-ee* and *iti*)

After that in the tenth century after Mahavir's Nirvana (980-993 ANM or 511-524 V or 454-467 AD) another ascetic convention was held in Vallabhi under the leadership of Acharya Devardhigani Kshamashraman. The *Agam* readings carried on through oral tradition were written for the first time here. It is believed that the *Agam* texts came into the present manuscript and book form since then.

Whatever *Agamic* knowledge was left after the ravages of time and was compiled during the period of Acharya Devardhigani is what is available to us as *Agam* text. Therefore it is not hard to surmise the scale of changes that must have taken place in the original content and volume of each *Anga*.

The available form of *Sthaananga Sutra* is what it had acquired after a millennium of Bhagavan Mahavir's *nirvana* Therefore it is accepted that the historically important incidents of this intervening period also found place in this *Sutra*. That is the reason that we find mention of the *nihnavas* (mendacious seceders) from a period 500 to 600 years after Bhagavan Mahavir However, in spite of that it is a firm and established traditional belief that there has been no change in the fundamental ontological and doctrinal subjects The scholarly ascetics compiling the texts transferred into writing the original text exactly as it was carried by the oral tradition without any addition or subtraction from their side. Therefore there is no place for any doubt or incredulity in their authenticity So be it.

**THE STYLE OF EXPOSITION IN STHAANANGA**

The style of exposition adopted in *Sthaananga* and *Samavayanga Sutra* is new and unique as compared with the remaining of the thirty two *Agams* recognized by our tradition *Sthaananga Sutra* compiles different topics classified according to their relationship with numerals one to ten Therefore it has ten *Sthaans* (sections or chapters). In other *Agams* the sections are called *adhyayan*, *shatak*, *pad* etc but in *Sthaananga sthaan* has been used in place of *adhyayan* (chapter)

*Sthaananga* encapsulates hundreds of topics Alongside profound topics related to philosophy a wide range of information about metaphysics and history is also compiled in it Information related to religion, ethics, history, psychology, theory of *karma*, biology, matter, botany, astrology, earth, rivers, mountains, seas and numerous other subjects are compiled here in its unique style of numerical placement

It appears that *Sthaananga* and *Samvayanga* were written in this numerical placement style considering the numeral based classification to be very convenient in memorizing the information. This style has been popular because it encapsulates larger number of subjects within the text, making it interesting and easy to remember. In ancient times there was a tradition of stating fundamentals in numeral based style In Buddhist *Tripitaks* this style has been used in *Anguttar Nikaya* and *Puggal Panjatti* In *Mahabharat*, *Gita* and many other works of Vedic tradition this style has been used for many topics. Many topics dealt

with in *Sthaananga Sutra* are also available in the Buddhist *Anguttar Nikaya* in a similar style. After an in depth study, renowned scholar Pt. Dalsukh Bhai Malavania has found that hundreds of references from *Sthaananga Sutra* are available with great similarity in Buddhist works. This shows that in ancient times this numerical style of classification was popular and frequently used in writing scriptures

Many references from *Sthaananga Sutra* are also available in other *Agams* in almost same form. For example *Bhagavati Sutra* contains six kinds of *Ayubandh* (bondage of *karma* determining life span)—*jatinaam nidhattayu, gatinaam nidhattayu* (6/8); four *jati asheevish* (8/2) etc. Detailed description of *Kevali samudghat, karmabandh, sharira* etc. is available in *Prajnapana Sutra*. Information regarding rivers, mountains, seas etc is available in *Jambudveep Prajnapti*. Descriptions of *Svar mandal* and *vachan vibhakti* are given in *Anuyogadvar Sutra* as it is Besides this many passages and references from *Prashna Vyakaran, Dashashrutskandh, Uttaradhyayan, Jivabhigam Sutra* and other scriptures are available in *Sthaananga Sutra*. From this it appears that *Sthaananga Sutra* is a taxonomical anthology. It is an anthology of various topics from other *Agams* classified in numerical placement style In the detailed preface of *Sthaananga Sutra* Acharya Shri Devendra Muni ji has presented its comparative study with valuable references

Thus an overview of *Sthaananga Sutra* reveals that this *Agam* is a voluminous anthology. Being an anthology does not reduce its importance In fact it enhances its usefulness and appeal making it valuable for both ordinary reader as well as profound scholars.

### COMMENTARY AND TRANSLATION

Although *Sthaananga Sutra* contains a wide variety of topics but it is free of complexities and abstruseness requiring detailed explanations or elaborations. Most of the subjects are simple and easy. This must have been the reason that unlike other *Agams, Niryukti* or *Bhaashya* was not written on it by any *acharya*. In 1120 V. (1163 AD) Acharya Abhayadev Suri for the first time wrote a detailed Sanskrit *Tika* on this. He has elaborated subjects like philosophy and ascetic conduct and

explained these using references from many other works. For greater clarity he has also used old and historical examples and incidents at many places. In modern times this is the most famous Sanskrit *Tika* available. Wherever I have used this commentary we have indicated it by the term *Vritti* Besides this Acharya Shri Ghasilal ji M. has also independently written a Sanskrit commentary but that was not available to me

For my translation and elaboration the main reference work before me has been the detailed Hindi *Tika* written by Acharya Samrat Shri Atmaram ji M. who was a great scholar of *Agams*, *Tikas*, *Bhashyas* and other *Agamic* literature He has employed his profound knowledge of *Agams* in making his Hindi *Tika* absorbing to read and easily comprehensible by giving lucid but authentic explanations without clouding the basic idea of the original author of the *Agam* Besides his knowledge of *Agams*, Acharya Shri has also used his wide knowledge of other scriptures making his Hindi *Tika* an extremely useful key for understanding the message of *Sthaananga* I have based my elaborations mainly on this, indicating its reference as Hindi *Tika*.

Original Text and aphorism numbers have been taken on the basis of *Sthaananga Sutra* edited by Yuvacharya Shri Madhukar Muni ji M of Shraman Sangh As already mentioned, there has been variations in the number of aphorisms of *Agams* due to different recitations at different places and different times. As these recitations were done in different states the pronunciation of local dialects also had its influence Therefore difference in pronunciation of *ya*, *ta*, *dha*, *ha* and other consonants also creeped in. In writing also, similarity in text and repetition of the same text at many places gave rise to the style of abbreviating the text 'Java', 'Taha', 'Evam' and other such phrases were used to shorten the text by indicating the text to be repeated This helped in memorizing the text and at the same time saving the time, labour and paper used for copying In ancient times availability of palm leaves for writing was scarce

With the easy availability of paper and printing the change in style became inevitable, and instead of abbreviated text complete and even enlarged text is in vogue This elaborate style has the advantage that the reader gets the message of the author at the spot without the need

of often referring to earlier chapters or another reading. This makes the understanding of the text easy. However, as most of the ancient manuscripts contain abbreviated text a new style of editing has evolved. The expanded text is not mixed with the original text but given in brackets [ ] with the running original text. This indicates to the reader that this part is expanded text. Although this increases the volume of the book but it makes easy reading. Yuvacharya Shri Madhukar Muni ji M and Acharya Shri Mahaprajna ji M. have adopted this style whereas Acharya Shri Abhayadev Suri in his *Vritti* and Acharya Shri Atmaram ji M. in his Hindi *Tika* have used the old style of abbreviated text. For the convenience of readers and research scholars we have used the expanded text given by Yuvacharya Shri Madhukar Muni ji M. retaining the brackets as well as informing that this particular text is not available in ancient manuscripts.

Instead of its literal translation we have given free flowing translation of the original text For ease in understanding and keeping the language easy, at many places we have given the popular meaning and brief explanation of the original word. Besides maintaining the flow and lucidity this facilitates the reader to grasp the meaning in a single reading without any need of interruption for consulting dictionary or reference books. While consulting all available editions for elaboration we have adopted our own style. At many places where detailed explanation was required and other commentators omitted providing it, we consulted other Agams related to that subject and included the needed information.

It is possible that at places such explanations have become more elaborate, but this would be convenient and edifying for the readers. They will not feel the need to consult other *Agams*. At many places the Sanskrit commentator has referred to examples and incidents for further clarification of the topic. But for space restrictions we used restraint in including such examples.

Although this scripture requires a more detailed elaboration but we wanted to restrict it to only two volumes because in our project we still have to publish many more *Agams*. For this reason we have kept the elaboration brief as far as possible and wherever needed indications have been provided for consulting Hindi *Tika* and other available works.

I also wanted to include 4-5 useful appendices, for example—alphabetical list of words, examples and incidents mentioned in the *Vrutti* for further clarification, comparative tables of subjects repeated at different numerical placement (such as rivers, mountains, peaks etc. of Jambudveep, kinds of atonement, description of self restraints etc.) But this had to be kept in abeyance due increased number of pages.

Shri Srichand Surana 'Saras' (Agra) has put in great labour in editing of this work In the English translation Shri Surendra Bothara (Jaipur) has tried to ensure that the original idea of the author of the Agam is presented in its untainted form. This is basically a lexicon. Therefore, to maintain its form each main word and other important terms have been given in Roman script along with its appropriate meaning in parenthesis in an effort to convey the basic idea. Sushravak Shri Rajkumar ji Jain (Delhi) has provided his selfless contribution by copy editing the English translation. They all deserve thanks

The blessings of my revered Gurudev, Uttar Bharatiya Pravartak Bhandari Shri Padmachandra ji Maharaj, still remain my support The strength of his inspiration and encouragement continues to push me ahead in this pious mission of service to the *Shrut* (the sermon of the *Jina*). It is natural that he surfaces in my memory on such occasions He used to be very happy whenever a new *Agam* was edited and published He was the first to read it and bless me with these words "Continue your services to *Jinavani*. Spread Mahavir's message from house to house. This is my only wish "

Sushravak Shri Mahendra ji Jain of Ludhiana has given special contribution towards publication of this *Agam* in auspicious memory of his father Late Shri Trilokchand ji Jain 'Bhagat ji' My special thanks to him.

The project of publication of illustrated *Agams* with English translation is labourious as well as cost intensive. But with liberal contributions from many devotees and *Agam* lovers this mission is progressing and will continue to progress.

With this unwavering belief....

***—Pravartak Amar Muni***

## BIBLIOGRAPHY

1. ***Shri Sthaananga Sutra*** with *Vritti* by Acharya Shri Abhayadev Suri
   ***Editor :*** Muni Shri Jambuvijaya ji M.
   [First and Second Part, 2059 V.]
   ***Published by :*** Atmanand Jain Sabha, Bhavanagar

2. **Shri Sthaananga Sutra**
   (Original text, Sanskrit Chhaya, meaning and elaboration in Hindi)
   ***Hindi Commentator :*** Jainagam Ratnakar Acharya Shri Atmaram ji M.
   [First and Second Part, 2032 V.]
   ***Published by :*** Acharya Shri Atmaram Jain Prakashan Samiti, Ludhiana

3. **Sthaananga Sutra**
   ***Editor-in-Chief :*** Yuvacharya Shri Mishrimal ji M. 'Madhukar'
   ***Commentary :*** P Hiralal ji Shastri
   [Third edition, 2057 V]
   ***Published by :*** Shri Agam Prakashan Samiti, Beawar

4. **Thanam**
   **Editor and commentator :** Muni Nathmal (now Acharya Shri Mahaprajna)
   [2033 V]
   ***Published by :*** Jain Vishva Bharati, Ladnu

5. **Sthaananga-Samvayang**
   ***Editor :*** Pt Dalsukh Bhai Malavania
   [1955 AD]
   ***Published by :*** Gujarat Vidyapeeth, Ahmedabad

**Note**—Abbreviations of the books referred in elaborations in this book ·

**Vritti :** Sanskrit *Vritti* by Acharya Shri Abhayadev Suri

**Hindi Tika :** Hindi *Tika* by Acharya Shri Atmaram ji M

**Thanam :** Elaborations and foot notes by Acharya Shri Mahaprajna ji

We convey our gratitude to all scholarly editors and publishers of these works

Commendations also for Acharya Shri Devendra Muni Shodh Samsthaan, Udaipur and Prakrit Bharati Academy, Jaipur for making available Commentaries used in editing this work.

| अनुक्रमणिका | | CONTENTS | |
|---|---|---|---|

ॐ नमो समणस्स भगवओ महावीरस्स

**Om Namo Samanassa Bhagavao Mahavirassa**

पंचमगणहर–सिरिसुहम्मसामिविरइयं तइयं अंगं

पंचमगणधर–श्रीसुधर्मास्वामिविरचिततृतीयअंग

# स्थानांग

**The third Anga Agam by the fifth Ganadhar,**
**Shri Sudharma Swami**

# THANAM
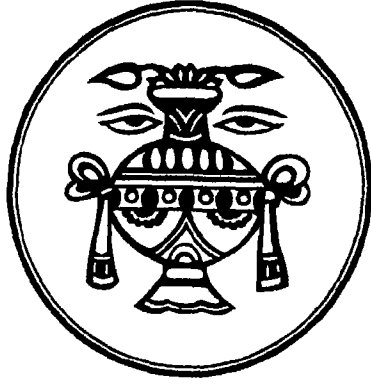
## पंचमगणधर-श्रीसुधर्मास्वामिविरचित तृतीय अंग
# स्थानांगसूत्र

## प्रथम स्थान

*अध्ययन सार*

- ग्यारह अंग आगमों मे तीसरे आगम का नाम 'स्थानांग' है। 'स्थान' का अर्थ है–परिमाण, संख्या या केन्द्र विशेष। इस आगम की प्रतिपादन शैली सख्या–प्रधान है। इसमें एक से लेकर 'दस' तक के विषयो का गणनात्मक शैली मे प्रतिपादन है। इसके दस स्थान हैं। जैसे अन्य सूत्रो के एक–एक विभाग को 'अध्ययन' कहा जाता है वैसे ही इसके प्रत्येक अध्ययन को 'स्थान' कहा है। इसके प्रथम अध्ययन मे 'एक' से सम्बन्धित विषयो का वर्गीकरण किया गया है।
- जैनदर्शन मे प्रत्येक विषय का कथन 'नय दृष्टि' से अर्थात् अपेक्षा सहित अनेकान्त दृष्टि से किया जाता है। निरपेक्ष वचन एकान्त होता है, सापेक्ष वचन अनेकान्तमय है। जैनदर्शन मे मुख्यत. दो नय मान्य है–द्रव्यार्थिकनय और पर्यायार्थिकनय। द्रव्यार्थिकनय के दो मुख्य भेद हैं–संग्रहनय और व्यवहारनय। सग्रहनय मे अभेद दृष्टि मुख्य रहती है। व्यवहारनय मे भेद के आधार पर कथन किया जाता है। जब किसी वस्तु की एकता या नित्यता आदि धर्मों (गुणों) का कथन किया जाता है तब उसमे रहे हुए अनेकता या अनित्यता आदि प्रतिपक्षी धर्मों की उपेक्षा कर दी जाती है। अभेद दृष्टि से प्रतिपादन करना सग्रहनय है। जब अनेकता या अनित्यता आदि धर्मों का प्रतिपादन किया जाता है तब वहाँ व्यवहारनय या पर्यायार्थिकनय की दृष्टि मुख्य रहती है।
- इस प्रथम अध्ययन मे सभी प्रतिपादन 'सग्रहनय' की दृष्टि से किया गया है। जबकि आगे दूसरे–तीसरे अध्ययन व अन्य अध्ययनो मे 'व्यवहारनय' अथवा पर्यायार्थिकनय की मुख्यता मिलती है। दोनो ही दृष्टियाँ परस्पर सापेक्ष है। इनमे कोई विरोध नही, अपितु अपेक्षा भेद रहा हुआ है।
- इस प्रथम अध्ययन में सम्पूर्ण वर्णन द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा से हुआ है। जैसे 'आत्मा एक है' यह पहला सूत्र द्रव्य दृष्टि से कहा गया है। क्योंकि सभी आत्माएँ अनन्त शक्ति–सम्पन्न है। ज्ञान–उपयोगमय है, इसलिए द्रव्य की अपेक्षा एक समान होने से एक ही है, ऐसा कहा जा सकता है।
- इसी प्रकार जम्बूद्वीप एक है, यह सूत्र क्षेत्र की दृष्टि से है। 'समय एक है', एक समय मे एक ही कार्य होता है, इन सूत्रो का कथन काल की अपेक्षा है तथा 'शब्द एक है' यह सूत्रवचन भाव की अपेक्षा से है। भाव का अर्थ पर्याय है और शब्द पुद्‌गल की एक पर्याय–अवस्था है। इस प्रकार प्रस्तुत प्रथम अध्ययन में द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव–इन चारो दृष्टियो से प्रतिपादन किया गया है।
- इस सूत्र में एक श्रुतस्कन्ध है तथा उसके दस अध्ययन है। प्रथम अध्ययन 'स्थान' मे २५६ सूत्र हैं। इन सूत्रो का वर्गीकरण पद शैली मे किया गया है, जैसे अस्तित्ववाद पद। जिन सूत्रो मे अस्तित्व सम्बन्धी वर्णन है उन सबको 'अस्तित्व पद' में समाविष्ट किया है। इसी प्रकार आगे भी जान लेना चाहिए।

●●

The third Anga Agam by the fifth Ganadhar, Shri Sudharma Swami

# STHAANANGA SUTRA

## FIRST STHAAN

### INTRODUCTION

- Of the eleven *Anga Agams* (The primary canons or the main corpus of the Jain canonical texts This consists of twelve treatises, eleven of which are extant according to the Shvetambar tradition) the third *Agam* is *Sthaananga* *Sthaan* means a specific quantity, number or locus The *Agam* has been written in an unusual number-oriented style It compiles topics following a system of numerical placement from one to ten, thus having ten *sthaans* (numerical places) In other *Sutras* a specific section is called a chapter, here it is called *sthaan* (numerical place) Topics associated with the numeral one are compiled in the first chapter
- Every topic in Jain philosophy is discussed from *Naya Drishti* (the context of standpoints) or with *Anekant Drishti* (from relative viewpoint or in relative terms) A non-relative statement is absolute and a relative one is non-absolute In Jain philosophy generally two standpoints are accepted—*Dravyarthik naya* (existent material aspect) and *Paryayarthik naya* (transformational aspects) There are two main divisions of *Dravyarthik naya* (existent material aspect)—*Samgraha naya* (generalized viewpoint) and *Vyavahara naya* (particularized viewpoint) *Samgraha naya* is predominantly an encompassing perspective whereas *Vyavahara naya* (particularized viewpoint) is predominantly a discerning perspective When the general attributes of singularity, permanence (etc ) of a thing are described, its other specific attributes like plurality, impermanence (etc ) are ignored This encompassing perspective is *Samgraha naya* (generalized viewpoint). However, when these other attributes including plurality and impermanence are discussed, it is the *Vyavahara naya* (particularized viewpoint) or *Paryayarthik naya* (transformational aspect) that is predominantly applied
- Everything in this first chapter has been discussed from the generalized viewpoint (*Samgraha naya*) In the following chapters,

including the second and third, mainly particularized viewpoint (*Vyavahara naya*) or transformational aspects (*Paryayarthik naya*) have been employed. Both these viewpoints are relative They are not contradictory but have a variation of perspective.

- All the descriptions in this chapter are with reference to *dravya* (physical or related to matter), *kshetra* (spatial or related to area), *kaal* (temporal or related to time) and *bhaava* (modal or related to mode or state) aspects For example the first aphorism 'Soul is one' is with reference to physical aspect on the basis that all souls have unlimited potency Knowledge can be placed in the numerical classification of 'one' on the basis that it is uniform from physical standpoint since it has the attribute of application
- In the same way the statement 'Jambudveep is one' is with reference to the spatial aspect The statements '*Samaya* (the smallest unit of time) is one' and 'Only one act can be performed in one *Samaya*' are with reference to the temporal aspect. 'Word or sound is one', this aphorism is with reference to the modal aspect because sound is a mode of matter (*bhaava* means *paryaya* or mode). This way the discussion in the first chapter includes all these four standpoints of *dravya, kshetra, kaal* and *bhaava* (physical, spatial, temporal and modal aspects)
- This *Sutra* (book) has one *shrutskandh* (section) having ten *sthaans* (chapters) There are 256 aphorisms in the first *sthaan* (chapter) These aphorisms have been classified subject-wise with the affix '*pad*' (another term for place or location, for convenience we will use the term 'segment') An example is *Astitvavad-pad* (segment of existence) The aphorisms that contain description related to *astitva* (existence) have been included in the *Astitvavad-pad*. This style is followed throughout.

# प्रथम स्थान
## FIRST STHAAN (Place Number One)

**१. सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं–**

१. आयुष्मन् ! मैने सुना है–"उन भगवान ने ऐसा कहा है–"

1. Long lived one ! I have heard—"That *Bhagavan* has said thus—"

**विवेचन**–भगवान महावीर के पाँचवे गणधर श्री सुधर्मास्वामी अपने प्रधान शिष्य जम्बू अणगार को सम्बोधित करते हुए कहते है–"आयुष्मन् ! मैंने स्वय सुना है कि उन भगवान महावीर ने तीसरे अंग, स्थानागसूत्र का भाव इस प्रकार से प्रतिपादन किया है।"

**Elaboration**—Sudharma Swami, the fifth *Ganadhar* (principal disciple) of Bhagavan Mahavir, says to his chief disciple ascetic Jambu—"Long lived one ! I have heard myself that Bhagavan Mahavir has propagated the text and meaning of *Sthaananga Sutra*, the third *Anga* as follows—"

### *अस्तित्व–पद* ASTITVA-PAD (SEGMENT OF EXISTENCE)

**२. एगे आया।**

२. आत्मा एक है।

2. *Atma* (soul) is one

**विवेचन**–**'एगे आया'** सूत्र का प्रतिपादन आत्मा के चैतन्य स्वभाव को मुख्य मानकर किया गया है। चेतना की दृष्टि से ससार की समस्त आत्माएँ समान है। प्रत्येक आत्मा को दु:ख अप्रिय तथा सुख प्रिय है। यह स्वभाव की समानता है। इसी प्रकार प्रत्येक आत्मा चेतना की दृष्टि से समान है। इस समानता को मुख्य मानकर 'आत्मा एक है' यह कथन है।

अन्य आगमो मे 'आत्मा अनन्त है' ऐसा भी कहा गया है–**अणंताणि य दव्वाणि कालो पोग्गल जंतवो।** (उत्तरा २८/८) काल, पुद्गल और जीव द्रव्य सख्या मे अनन्त है।

क्योंकि प्रत्येक आत्मा असख्यातप्रदेशी है, सब आत्माएँ स्वतन्त्र है और सबका कर्म तथा कर्मफल पृथक्–पृथक् है। इसलिए आत्माएँ अनन्त है, यह कथन भी युक्ति–सगत है। कथन की इस शैली मे सग्रहनय तथा व्यवहारनय की दृष्टि का अन्तर ध्यान मे रखना चाहिए।

उपनिषदो मे 'आत्मा की एकता' का प्रतिपादन है–**एको देवः सर्वभूतेषु गूढः**–(श्वेताश्वतर. ६/११)। किन्तु उपनिषद का 'अद्वैतवाद' सख्या की दृष्टि है। उसके अनुसार समस्त जीवो मे एक ही आत्मा (परमात्मा) का प्रतिबिम्ब झलकता है। जबकि जैन दृष्टि से प्रत्येक आत्मा स्वतत्र है, किन्तु सबमे चेतना

आत्म ज्योति सबमें समान है
सिद्ध आत्मा

चित्र परिचय १

Illustration No. 1
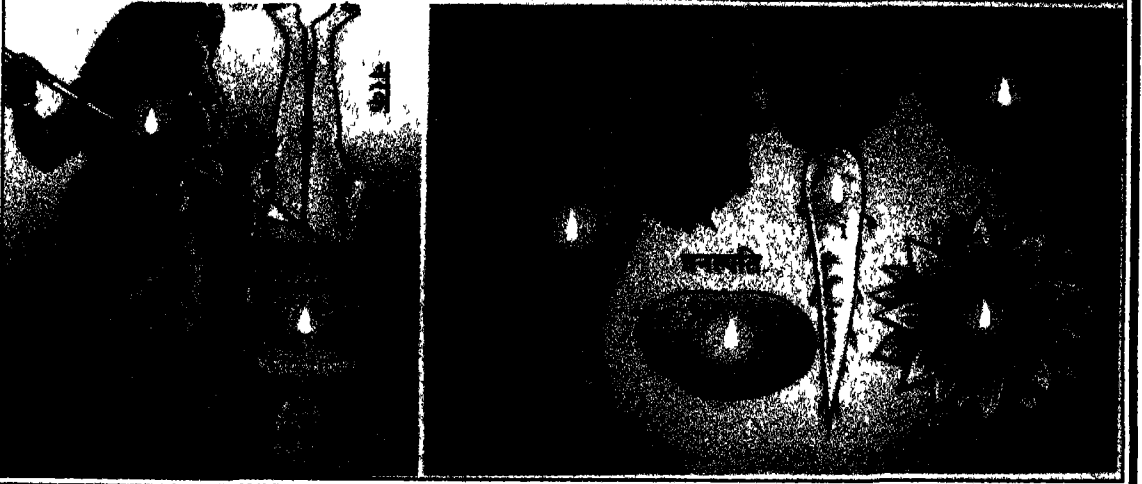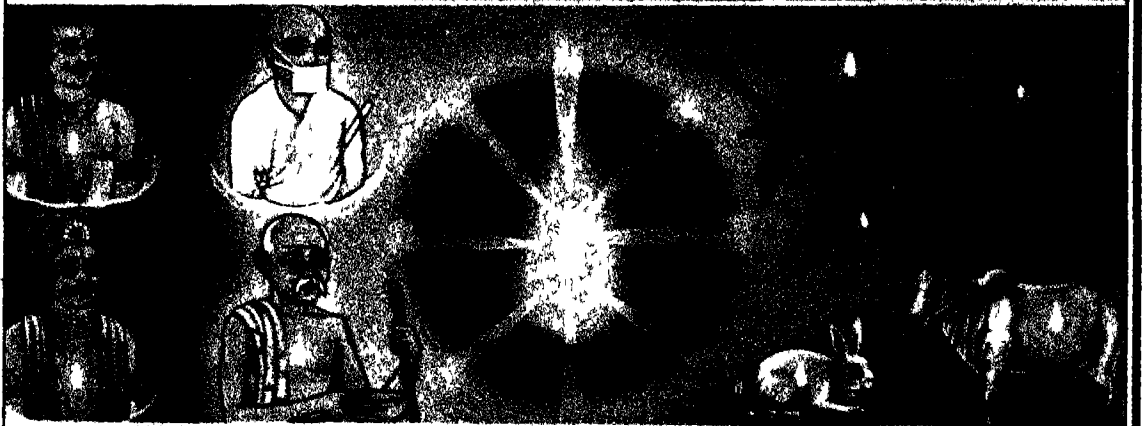
# आत्म-ज्योति सब में समान है

'आत्मा या जीव का स्वरूप ज्योतिर्मय है। ज्ञान-चेतना की दृष्टि से सब आत्माएँ समान है। सिद्ध आत्माओ म वैमानिक ज्योतिष्क आदि देवो मे, युगलियो मे साधु, गृहस्थ राजा और दरिद्र म, छोटे बड पशु पक्षी, कीट, पतग तथा भिन्न भिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ फल, फूल, कन्द मूल वृक्षो म और नारको तथा परमाधार्मिक देवो मे, चारो ही गतियो के जीवो मे ज्ञान-चतना की दृष्टि से आत्मा मे कोई भिन्नता या अन्तर नही है। अत द्रव्य स्वरूप मे आत्मा एक है। जो उनमे आचार आदि की भिन्नता दिखाई देती है वह केवल पर्याय (शरीर) की दृष्टि से है। चित्र के मध्य मे ज्योतिर्मय चेतना दिखाई है, जो सभी जीवो मे विद्यमान है।

*-स्थान १ सूत्र १*

## SPIRITUAL FLAME IS SAME IN EVERYONE

Soul or being is represented in the form of flame In terms of knowledge and sentience all souls are same In terms of its attribute of sentience there is no difference in souls irrespective of their belonging to any of the beings of any of the four genuses—*Siddhas*, *Vaimanik*, *Jyotishk* and other gods, twins, ascetic, householder, king and beggar large or small animal, insects and moths, different types of plants and trees including fruits, flowers and roots, infernal beings and *Paramadharmik* gods Thus as entity soul is one The visible differences like that of behaviour and conduct is merely from the angle of *paryaya* or mode (body) In the illustration, at the center is soul in the form of a flame and that exists in every being

*—Sthaan 1, Sutra 1*

समान है। अतः जैनदर्शन में 'एकात्मकता' स्वभाव की समानता की अपेक्षा से है, न कि संख्या की दृष्टि से। अहिंसा एवं समतावादी चिन्तन का विस्तार इसी सूत्र के आधार पर हुआ है।

**Elaboration**—The aphorism *'Ege aayaa'* has been stated with the belief that the defining quality of soul is its sentient (*chaitanya*) nature. From the angle of sentience all souls in this universe are similar. Every soul detests pain and loves pleasure. This is similarity of nature. In the same way from the angle of sentience all souls are same. Considering this similarity to be the main criteria it has been stated that soul is one.

We also find the statement that 'souls are infinite' (there are endless souls) in other *Agams* (Jain canonical literature) Also that the substances like time, matter and soul are also infinite in number

A soul consists of innumerable space-points (*pradesh*), all the souls are independent, and the bondage and fruition of *karmas* is different for all Thus the statement that 'there are endless number of souls' is also logically correct In this style of statement the difference between *Samgraha naya* (generalized viewpoint) and *Vyavahara naya* (particularized viewpoint) should be kept in mind.

In *Upanishads* also the singularity of soul is propounded but this non-duality of *Upanishads* is from the numerical viewpoint. Here one single soul is reflected in all beings Whereas according to the Jain view every single soul is independent but the attribute of sentience (*chetana*) is same in all souls Therefore in Jain philosophy the singularity of soul means similarity of intrinsic nature and not the numerical singularity The elaborate doctrines and concepts of *ahimsa* and equanimity have evolved from this aphorism

**३. एगे दंडे।**

**३. दण्ड एक है।**

**3.** *Dand* (punishment or abuse) is one

**विवेचन**—जिस क्रिया या प्रवृत्ति विशेष से आत्मा दण्डित अर्थात् आत्मा के ज्ञान-चारित्र आदि गुण सारहीन हो जाते है, उस क्रिया को अथवा कषायात्मक प्रवृत्ति को दण्ड कहते हैं। दण्ड दो प्रकार का है—द्रव्यदण्ड और भावदण्ड। लाठी-बेंत, तलवार आदि से मारना द्रव्यदण्ड है। मन, वचन और काय की दुष्प्रवृत्ति भावदण्ड है।

प्रत्येक कार्य के तीन रूप होते हैं—उत्पत्ति, प्रवृत्ति और निष्पत्ति। दण्ड की उत्पत्ति-करण और निष्पत्ति-कार्य एक ही है, आत्मा की कषायात्मक परिणति। मन जब राग-द्वेषयुक्त प्रवृत्ति करता है तो

मनोदण्ड, वचन दूषित होने पर वचनदण्ड और काय दूषित होने से वह कायदण्ड हो जाता है। कषायभाव व राग-द्वेष की विद्यमानता सभी मे रहती है, इस दृष्टि से यहाँ 'दण्ड' को एक कहा है।

**Elaboration**—The specific action or attitude through which soul is punished or gets abused is called *dand* In other words the damaging action or attitude, instigated by passions, through which the basic qualities of soul, namely knowledge and conduct, are rendered worthless is called *dand* (punishment or abuse) There are two kinds of *dand*—*dravya dand* (physical punishment) and *bhaava dand* (mental or emotional abuse) To hit with staff, stick, sword (etc ) is physical punishment Indulgence in ignoble action through mind, speech and body is mental or emotional abuse

Every action has three stages—origin, indulgence and conclusion In case of *dand* (punishment or abuse) all the three have just one root—the passion-driven attitude of soul or coming of soul under influence of passions When mental activity is infested with attachment and aversion it is the manifestation of *manodand* (mental or emotional abuse), when vocal activity is so influenced it is the manifestation of *vachan dand* (vocal abuse) and when physical activity is so affected it is the manifestation of *kaaya dand* (physical abuse) In every case passions, attachment and aversion are present It is with this view that *dand* is said to be one

**४. एगा किरिया।**

४. क्रिया एक है।

**4.** *Kriya* (action) is one

विवेचन-मन, वचन और काय की प्रवृत्ति या व्यापार को क्रिया कहते है। वह अशुभ और शुभ दोनो प्रकार की होती है। क्रिया के अनेक भेदो का कथन आगे इसी सूत्र मे आया है, किन्तु उन सभी भेदो मे प्रवृत्तिरूप क्रिया समान है, अत क्रिया एक कही है।

**Elaboration**—The indulgence or involvement of mind, speech and body in some activity is called *kriya* (activity) It is of two types noble and ignoble The mention of numerous kinds of *kriya* follows in this very text However, the act of indulgence is common to all those kinds of actions. It is in this context that *kriya* (action) is said to be one

**५. एगे लोए। ६. एगे अलोए। ७. एगे धम्मे। ८. एगे अहम्मे। ९. एगे बंधे। १०. एगे मोक्खे। ११. एगे पुण्णे। १२. एगे पावे। १३. एगे आसवे। १४. एगे संवरे। १५. एगा वेयणा। १६. एगा णिज्जरा।**

# दण्ड का स्वरूप

**चित्र परिचय २**

**Illustration No. 2**
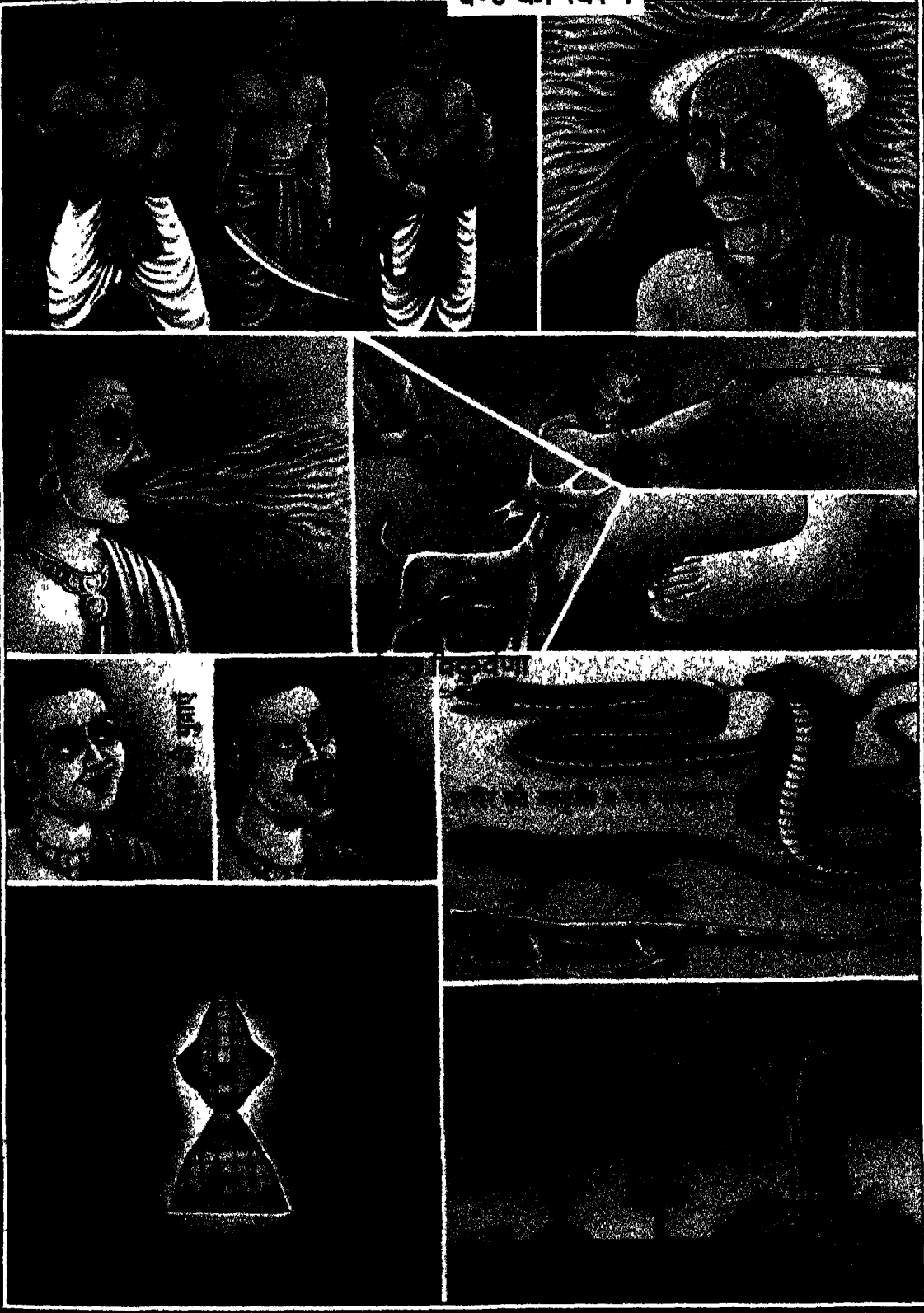
# दण्ड का स्वरूप

**१ एगे दण्डे—**

दूसरो को पीडा पहुँचाना या अपने आत्म गुणो को क्षीण करना इस क्रिया का नाम दण्ड है। स्वरूप की दृष्टि से दण्डित करने की क्रिया दण्ड एक ही है। किन्तु व्यवहार मे उसके विविध भेद भी हो जाते है। जैसे **द्रव्य दण्ड** है-लाठी, तलवार, बन्दूक आदि। **भाव दण्ड** है मन के मलिन विचार। मुँह से कटु व पापकारी भाषा की चिनगारियाँ निकालना **वचन दण्ड** है। किसी जीव का घात करना चोट मारना या अपने पाव आदि से जीवो को कुचलना यह **काय दण्ड** है। चित्र मे दण्ड के विभिन्न प्रकार बताये है।

*-स्थान १ सूत्र ३, तथा स्थान ३ सूत्र २१*

**२ अपर्यादाय विकुर्वणा—**

बाहरी पुदगलो को लिए बिना अपनी अन्त स्थित चेष्टा या मुद्रा आदि से अथवा शरीर के स्वभावानुसार जो जो विविध विक्रियाएँ होती है, जैसे मुख की भिन्न भिन्न मुद्राएं बनाना साप का फना का विभिन्न रूप मे उभारना या गिरगिट द्वारा शरीर के नाना रंग रूप बदलना अथवा बीज का क्रमश वृद्धि गत होते अकुर पौधा का वृक्ष रूप मे परिणत होना आदि यह सभी **अपर्यादाय विकुर्वणा** के उदाहरण है।

*स्थान १ सूत्र १६*

**३ अलोक—**

शून्य आकाश की दृष्टि से **अलोक** भी एक है, असीम है। उसके मध्य मे स्थित षडद्रव्यात्मक रूप वाला १४ राजू प्रमाण लोक एक है।

*स्थान १ सूत्र ५६*

## DAND (PUNISHMENT OR ABUSE)

**1. Ege dande—**

The act of inflicting pain on others or harming one's own spiritual qualities is called *dand* In terms of basic form it is just one However, in context of its application it has numerous categories For example *Dravya dand* (physical punishment) is to hit with stick sword and gun (etc ) *Bhaava dand* (mental punishment) is ignoble thoughts *Vachan dand* (vocal punishment) is bitter and sinful speech To kill beat or crush beings is *Kaya dand* (bodily punishment) The illustration shows different kinds of *dand*

*—Sthaan 1 Sutra 3 and Sthaan 3 Sutra 21*

**2. Aparyadaaya vikurvana—**

The variety of transformations taking place without acquiring any outside matter and only with some effort or naturally are called non-acquisitive transmutation For example—different facial expressions, raising of hood by a snake, changing of the colour of body in various hues by chameleon gradual sprouting of a seed and growing of plant into a tree

*—Sthaan 1, Sutra 16*

**3 Alok—**

In terms of empty space *Alok* (unoccupied space) is also one, endless At its center is located one *Lok* (occupied space) having six entities and a spread of 14 *Rajju* (a linear measure)

*—Sthaan 1, Sutra 56*

५. लोक एक है। ६. अलोक एक है। ७. धर्मास्तिकाय एक है। ८. अधर्मास्तिकाय एक है। ९. बन्ध एक है। १०. मोक्ष एक है। ११. पुण्य एक है। १२. पाप एक है। १३. आस्रव एक है। १४. संवर एक है। १५. वेदना (कर्मफल का वेदन) एक है। १६. निर्जरा एक है।

**5.** *Lok* (occupied space) is one. **6.** *Alok* (unoccupied space) is one **7.** *Dharmastikaya* (motion entity) is one **8.** *Adharmastikaya* (inertia entity) is one. **9.** *Bandh* (*karmic* bondage) is one. **10.** *Moksha* (liberation) is one **11.** *Punya* (merit) is one. **12.** *Paap* (demerit) is one. **13.** *Asrava* (*karmic* inflow) is one **14.** *Samvar* (blocking of inflow of *karmas*) is one **15.** *Vedana* (suffering *karmic* fruition) is one **16.** *Nirjara* (shedding of *karmas*) is one.

**विवेचन**—आकाश द्रव्य के दो भेद है—लोक और अलोक। जिस आकाश मे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आदि छहो द्रव्य मिलते है, वह **लोक** है, जहाँ आकाश द्रव्य मात्र है वह **अलोक** है। जीव और पुद्गलो की गति मे सहायक द्रव्य को **धर्मास्तिकाय** और उनकी स्थिति मे सहायक द्रव्य को **अधर्मास्तिकाय** कहते है। योग एव कषाय के निमित्त से आत्मा के साथ कर्म-पुद्गलो का बँधना **बन्ध** है और तप आदि द्वारा आत्मा से समस्त कर्मों का क्षय होना **मोक्ष** है।

सुख का वेदन कराने वाले सातावेदनीय कर्म को **पुण्य** और दु ख का वेदन कराने वाले असातावेदनीय आदि अशुभ कर्मों को **पाप** कहते है। आत्मा मे कर्म-परमाणुओ के आगमन द्वार को अथवा बन्ध के कारण को **आस्रव** और उसके निरोध को **संवर** कहते है। स्वाभाविक रूप से, या तप आदि प्रयत्न द्वारा उदय मे आये कर्मों के विपाक (फल) को अनुभव करना **वेदना** है। कर्मों का फल देकर आत्मा से पृथक् होना **निर्जरा** है।

द्रव्यास्तिकाय की अपेक्षा लोक, अलोक, धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय एक-एक ही द्रव्य है तथा बन्ध, मोक्षादि शेष तत्त्व बन्धन आदि की समानता से एक-एक रूप ही है। अत उन्हे एक-एक कहा गया है। विस्तार की दृष्टि से पुण्य, पाप, आस्रव, सवर आदि के अनेक भेद भी सूत्र मे बताये है।

**Elaboration**—The ontological category or entity *aakash* (space) is divided into two sections—*lok* (occupied space or the known universe) and *alok* (unoccupied space or the space beyond the known universe) The section of space where all the six fundamental entities including *Dharmastikaya* and *Adharmastikaya* exist is called *lok* (occupied space) The section where just space entity exists is called *alok* (unoccupied space or the space beyond the known universe) The fundamental entity associated with the movement of soul and matter is called *Dharmastikaya* and that associated with the rest or inertia of these is called *Adharmastikaya*. The fusion of *karma*-particles with soul caused by *yoga* (association of soul with mental, vocal and physical activities)

and kashaya (passions) is called *bandh* (bondage) Shedding of all these *karmas* through spiritual practices like *tap* (austerities) is called *moksha* (liberation)

Experiencing joy due to fruition of *sata-vedaniya karma* (the *karma* that causes feelings of pleasure) is called *punya* (merit) and experiencing sorrow due to fruition of *asata-vedaniya karma* (the *karma* that causes feelings of pain or grief) is called *paap* (demerit). The passage through which the *karma* particles enter soul, in other words the cause of bondage, is called *asrava* (influx or inflow of *karmas*) The closing of this passage or eliminating this cause is called *samvar* (blocking of inflow of *karmas*)

To experience the consequences of fruition (*vipaak*) of *karmas*, natural or initiated (through spiritual efforts including austerities), is called *vedana* (suffering karmic fruition). The separation of *karmas* from soul after dispensing fruits is called *nirjara* (shedding of *karmas*)

With reference to *dravyastikaya* (physical existence) each one of the entities *Lok, Alok, Dharmastikaya* and *Adharmastikaya* is singular or one The same is true of the fundamentals including *bandh* and *moksha* in context of their individual actions (bondage, liberation etc ). That is why all these have been included in Place Number One When their attributes are elaborated *punya, paap, asrava, samvar* and other fundamentals have been placed at numerous different place numbers in this book

**प्रकीर्णक-पद PRAKIRNAK-PAD (SEGMENT OF MISCELLANEOUS)**

**१७. एगे जीवे पाडिक्कएणं सरीरएणं।**

१७. प्रत्येकशरीर मे जीव एक है।

**17.** In every body there is one soul

**विवेचन**–भगवतीसूत्र (२०/१७) मे जीव के २३ पर्यायवाची नाम है। उनमें जीव और आत्मा दोनों नाम है। 'जीव' का अर्थ है, शरीर व आयुष्य रूप जीवन को धारण करने वाला। 'आत्मा' का अर्थ है, चैतन्य गुणो मे रमण करने वाला। सूत्र २ मे चैतन्य तत्त्व की अपेक्षा से एगे आया कहा है, यहाँ देह स्थित आत्मा को जीव बताया है। शरीरधारी ससारी जीव दो प्रकार के होते हैं–प्रत्येकशरीरी और साधारणशरीरी। जिस एक शरीर का स्वामी एक ही जीव होता है, उसे प्रत्येकशरीर जीव कहते हैं। जैसे–देव–नारक, मनुष्य आदि। जिस एक शरीर के स्वामी अनेक जीव होते हैं, उन्हें साधारणशरीरी जीव कहते हैं। जैसे–जमीकन्द, आलू, अदरख आदि। इस सूत्र में प्रत्येकशरीरी जीवों का कथन है।

**Elaboration**—In *Bhagavati Sutra* (20/17) we find twenty three synonyms for *jiva* (soul). They include *jiva* as well as *atma* (soul) *Jiva* means that which has a life defined by body and life-span. *Atma* means that which functions with attributes of sentience (*chaitanya*). In aphorism 2 the statement 'soul is one' is in context of this attribute of sentience Here *jiva* is depicted as soul residing in a body. Worldly souls with body are of two kinds—*pratyek shariri* and *sadharan shariri* A body whose master is a single soul is called *pratyek shariri* being, for example—divine beings, infernal beings, human beings etc. A body whose masters are numerous souls is called *sadharan shariri* being, for example—sweet potato, potato, ginger etc. This aphorism refers to *pratyek shariri jiva* (individually embodied soul).

**१८. एगा जीवाणं अपरिआइत्ता विगुव्वणा।**

१८. जीवो की अपर्यादाय–विकुर्वणा (बाह्य पुद्‌गलो को ग्रहण किये बिना होने वाली स्वाभाविक विक्रिया) एक है।

18. *Aparyadaaya-vikurvana* (non-acquisitive transmutation) of beings is one.

विवेचन–एक शरीर से नाना प्रकार की विक्रिया करने को विकुर्वणा कहते है। जैसे देव अपने–अपने वैक्रियक शरीर से गज, अश्व, मनुष्य आदि नाना प्रकार के रूप बना सकता है। यह बाहरी पुद्‌गलो को ग्रहण करके की जाने वाली विक्रिया पर्यादाय–विकुर्वणा कहलाती है। जो विकुर्वणा बाहरी पुद्‌गलो को ग्रहण किये बिना ही भवधारणीय (जन्मजात–स्वाभाविक) शरीर से अपने छोटे–बडे आदि आकार रूप होती है, उसे अपर्यादाय–विकुर्वणा कहते हैं। यह सभी जीवो मे यथासम्भव पायी जाती है।

**Elaboration**—The process of transformation of a body in various ways is called *vikurvana* (transmutation). For example a divine being may attain a variety of forms, such as elephant, horse and man, through his transmutable body. This transmutation is done by accepting alien matter particles and thus is called *paryadaaya-vikurvana* (acquisitive transmutation). The transmutation in the form of growth, which occurs naturally in *bhava-dharaniya* (incarnation sustaining or natural) body without accepting alien matter particles is called *aparyadaaya-vikurvana* (non-acquisitive transmutation) Almost every being undergoes this process.

**१९. एगे मणे। २०. एगा वई। २१. एगे काय–वायामे।**

१९. मन एक है। २०. वचन एक है। २१. काय–व्यायाम एक है।

**19.** *Man* (mind) is one **20.** *Vachan* (speech) is one **21.** *Kaya-vyaayaam* (physical activity) is one

**विवेचन**—व्यायाम का अर्थ है प्रवृत्ति। यद्यपि सभी जीवो के मन, वचन और काय की प्रवृत्ति विभिन्न प्रकार की होती है। इस अपेक्षा से मनोयोग और वचनयोग चार-चार प्रकार का तथा काययोग सात प्रकार का आगे बताया है, किन्तु यहाँ सामान्य की विवक्षा से एकत्व का कथन है।

**Elaboration**—*Vyaayaam* (exercise) here means activity or indulgence. All beings have different kinds of mental, vocal and physical activities In this context mental and vocal activities of four kinds each and physical activities of seven kinds have been mentioned in the following text. However, the mention of singularity here is a generalized statement.

**२२. एगा उप्पा। २३. एगा वियती। २४. एगा वियच्चा। २५. एगा गती। २६. एगा आगती। २७. एगे चयणे। २८. एगे उववाए।**

२२. उत्पाद (उत्पत्ति) एक है। २३. विगति (विनाश) एक है। २४. विगतार्चा (मृत शरीर) एक है। २५. सामान्य रूप मे गति एक है। २६. आगति एक है। २७. च्यवन एक है। २८. उपपात एक है।

**22.** *Utpatti* or *utpaad* (birth or creation) is one **23.** *Vigati* (death or destruction) is one **24.** *Vigatarcha* (abandoned body) is one **25.** *Gati* (incarnation or birth) is one **26.** *Aagati* (present incarnation) is one **27.** *Chyavan* (descent) is one **28.** *Upapat* (instantaneous birth) is one

**विवेचन**—विगतार्चा—जीव एक समय मे एक ही शरीर का त्याग करता है। अथवा सभी मृत शरीर (मृतक रूप मे) एक समान है। गति अर्थात् गमन। जीव और पुद्गल दोनो मे ही गति होती है, किन्तु यहाँ जीव के एक भव को छोडकर आगामी भव मे जाने को गति कहा है। पूर्व भव को छोडकर वर्तमान भव मे आना आगति है। ऊपर से च्युत होकर नीचे आना च्यवन है। वैमानिक और ज्योतिष्क देव आयुष्य पूर्ण कर ऊपर से नीचे आकर उत्पन्न होते है, उनका मरण 'च्यवन' कहलाता है। देवो और नारको का जन्म उपपात कहलाता है।

**Elaboration**—*Vigatarcha* means abandoned or dead body In this context singularity means a soul abandons only one body at a time This also means that, defined as a body devoid of soul, all dead bodies are same The common meaning of *gati* is movement Both soul and matter have movement but here the term has been used to indicate the movement of soul from one incarnation to another The incarnation from previous birth to the present birth is *aagati* The descent from a higher dimension to a lower one is called *chyavan* On conclusion of their life-span the *Vaimanik Devas* (vehicle dwelling gods) and the *Jyotishk Devas* (stellar gods) reincarnate in lower dimensions, therefore, their death is

called *chyavan* (descent). The instantaneous birth of divine and infernal beings is called *upapat*.

**२९. एगा तक्का। ३०. एगा सण्णा। ३१. एगा मण्णा। ३२. एगा विण्णू।**

२९. तर्क एक है। ३०. सज्ञा एक है। ३१. मनन एक है। ३२. विज्ञता या विज्ञान एक है।

**29.** *Turk* (logic) is one **30.** *Sanjna* (recognition) is one. **31.** *Manan* (contemplation) is one **32.** *Vijnata* (sagacity or learning) is one.

**विवेचन**—इन सूत्रों मे मतिज्ञान के चार भेदो का निरूपण है। मतिज्ञान के अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा ये चार भेद है। 'ईहा' के पश्चात् और 'अवाय' से पहले होने वाले ऊहापोह या विचार-विमर्श को तर्क कहते हैं। सज्ञा के दो अर्थ हैं-प्रत्यभिज्ञान (पहचान) और अनुभूति। प्रस्तुत मे संज्ञा का अर्थ प्रत्यभिज्ञान है। स्मृति के पश्चात् 'यह वही है' इस प्रकार से उत्पन्न होने वाला निश्चयात्मक ज्ञान प्रत्यभिज्ञान है। वस्तु के सूक्ष्म धर्मों का पर्यालोचन करना मनन है। अभयदेवसूरि ने हेयोपादेय के निश्चय को 'विज्ञान' कहा है। 'विण्णू' का सस्कृतरूपान्तर विज्ञता या विद्वत्ता भी होता है। उक्त सभी ज्ञान जानने की अपेक्षा सामान्य रूप से एक ही है।

**Elaboration**—These aphorisms define the four divisions of *mati-jnana* (sensory knowledge) Sensory knowledge has been divided into four levels—*avagraha* (acquire cursory knowledge), *iha* (study), *avaya* (conclude) and *dhaarana* (absorb) Following the process of study (*iha*) and preceding the act of conclusion (*avaya*) the acquired information undergoes the process of inquiry or analysis This is called *turk* (reasoning or logic) *Sanjna* has two *meanings—pratyabhijnana* (recognition) and *anubhuti* (experience) Here it means recognition The conclusive recognition with the help of memory—'indeed, it is that'—is *pratyabhijnana* To study subtle attributes of a thing is *manan* (contemplation) According to Abhayadev Suri the conclusion arrived through discernment about good and bad is called *vijnana* (specialized knowledge or sagacity) Another transliteration of the Prakrit term *vinnu* is *vijnata* or *vidvata* (scholarship or learning) The singularity of these levels of knowledge is in context of the general process of acquisition of knowledge

**३३. एगा वेयणा। ३४. एगे छेयणे। ३५. एगे भेयणे।**

३३. वेदना (पीडा रूप अनुभूति) एक है। ३४. छेदन (उदीरणाकरण के द्वारा कर्मों की दीर्घ स्थिति को कम करना, कर्मों का स्थितिघात) एक है। ३५. भेदन (कर्मों का रसघात) एक है।

**33.** *Vedana* (experience of pain) is one **34.** *Chhedan* (to slash, to shorten the duration of *karmic* bondage by precipitating fruition,

*sthitighaat of karmas*) is one **35.** *Bhedan* (to pierce; to reduce the qualitative intensity of *karmas, rasaghaat* of *karmas*) is one.

**३६. एगे मरणे अंतिमसारीरियाणं। ३७. एगे संसुद्धे अहाभूए पत्ते।**

३६. अन्तिमशरीरी जीवो का मरण एक है। ३७. सशुद्ध यथाभूत पात्र एक है।

**36.** Death of *antim shariri* (terminal-bodied) beings is one **37.** *Samshuddha* (pure) *yathabhuta* (following conduct conforming to perfect purity) *paatra* (vessel) is one

विवेचन–प्रत्येक प्राणी के दो प्रकार के शरीर होते है–स्थूल और सूक्ष्म। मृत्यु के पश्चात् स्थूल शरीर छूट जाता है, किन्तु सूक्ष्म शरीर (तेजस् व कर्म-शरीर) नही छूटता। जब तक सूक्ष्म शरीर रहता है जन्म-मरण का चक्र चलता ही रहता है। जब विशिष्ट साधना द्वारा सूक्ष्म तेजस् व कर्म-शरीर को छोड दिया जाता है तब वह आत्मा अन्तिमशरीरी होता है। इसके पश्चात् जन्म नहीं होने से मरण भी नही होता।

कषायमुक्त होने से विशुद्ध तथा यथाख्यातचारित्र सम्पन्न आत्मा ही एक उत्तम पात्र है।

**Elaboration**—Every being has two kinds of bodies—*sthula* (gross) and *sukshma* (subtle) After death the gross body is abandoned by soul but the subtle body (*taijas* and *karman shariras* or fiery and *karmic* bodies) is not As long as the subtle body remains, the cycle of life and death continues When the subtle *taijas* and *karman shariras* (fiery and *karmic* bodies) are abandoned as a consequence of special spiritual practices the soul is called *antim shariri* (terminal-bodied) Following this there is no rebirth and thus no death

A soul that has attained purity on being devoid of passions and is possessed of *yathakkhyata-charitra* (conduct conforming to perfect purity) is truly worthy

**३८. एगे दुक्खे जीवाणं एगभूए। ३९. एगा अहम्मपडिमा, जं से आया परिकिलेसति। ४०. एगा धम्मपडिमा, जं से आया पज्जवजाए।**

३८. जीवो का दु ख एक और एकभूत है। ३९. अधर्मप्रतिमा एक है, जिससे आत्मा परिक्लेश कष्ट को प्राप्त होता है। ४०. धर्मप्रतिमा एक है, जिससे आत्मा पर्यव-जात शुद्ध होता है।

**38.** *Duhkha* (sorrow) of beings is one and *ekabhuta* (unified) **39.** *Adharma pratima* (intent of wrong action or irreligiousness) is one and it causes torment to soul **40.** *Dharma pratima* (intent of right action or religiosity) is one and it causes purification of soul.

विवेचन–अपना कृत-कर्मफल भोगने की अपेक्षा सभी जीवो का दु ख एक समान है। वह एकभूत है अर्थात् लोहे के गोले मे प्रविष्ट अग्नि के समान एकमेक है, आत्म-प्रदेशो में व्याप्त है। अधर्म और धर्म

का प्रभाव सभी जीवों के मन पर समान रूप से पड़ता है। उसे एक कहा गया है अर्थात् सभी जीवों के परिक्लेश या कष्ट का कारण एक अधर्म प्रतिज्ञा (अधर्म का प्रभाव) है, तथा धर्म प्रतिज्ञा (साधना) भी एक ही है जिससे आत्मा शुद्ध स्वरूप की प्राप्ति करता है।

**Elaboration**—Sorrow or misery, when defined as suffering the consequences of one's own deeds, is same for all beings. This phenomenon is unified with soul and spread all over, encompassing every single space-point of soul exactly as heat is unified with iron in a hot iron ball encompassing every single atom. The effect of good and bad intent and action is same on all beings. It is classified as singular because the cause of all misery of all beings is the intent of wrong action Same is true of intent of right action as it uniformly leads every being towards spiritual purity

**४१. एगे मणे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि। ४२. एगा वई देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि। ४३. एगे काय–वायामे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि। ४४. एगे उट्ठाण–कम्म–बल–वीरिय–पुरिसकार–परक्कमे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि।**

४१. देव–(वैमानिक एव ज्योतिष्क), असुर–(भवनपति एव व्यन्तर) और मनुष्य जिस समय चिन्तन करते है उस समय उनका एक मन होता है। ४२. देव, असुर और मनुष्य जब बोलते है, उस समय उनके एक ही वचन होता है। ४३. देव, असुर और मनुष्य जिस समय काययोग की प्रवृत्ति करते है, उस समय उनके एक काय व्यायाम (व्यापार) होता है। ४४. देव, असुर और मनुष्यो के एक समय मे एक ही उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषकार और पराक्रम होता है।

**41.** At the time when *devas* (vehicle based and stellar gods), *asuras* (abode dwelling and interstitial gods) and human beings contemplate, there mental activity is one. **42.** At the time when *devas, asuras* and human beings speak, there vocal activity is one **43.** At the time when vehicle based and stellar gods, abode dwelling and interstitial gods and human beings indulge in physical activity, there bodily action is one. **44.** At one time *devas* (vehicle based and stellar gods), *asuras* (abode dwelling and interstitial gods) and human beings have only one *utthan, karma, bal, virya, purushakar* and *parakram*

**विवेचन**–जीवो के एक समय में एक ही मनोयोग, एक ही वचनयोग और एक ही काययोग होता है। आगम में मनोयोग के चार भेद कहे है–सत्यमनोयोग, मृषामनोयोग, सत्य–मृषामनोयोग और अनुभय (व्यवहार) मनोयोग। इनमे से एक जीव के एक समय मे एक ही मनोयोग का होना सम्भव है।

इसी प्रकार वचनयोग के चार भेदो मे से एक समय मे एक जीव के एक ही वचनयोग होना सम्भव है।

काययोग के सात भेद बताये गये है–इनमे से एक समय मे एक ही काययोग का होना सम्भव है।

उत्थान, कर्म, बल आदि शब्दो के अर्थ इस प्रकार हैं–उत्थान–उठने आदि की चेष्टा। कर्म–गमन आदि क्रिया। बल–शारीरिक शक्ति। वीर्य–मानसिक सामर्थ्य। पुरुषकार–पुरुषार्थ। पराक्रम–कार्य सम्पन्न करने मे सक्षम प्रयत्न। यह सभी एक जीव के एक समय मे एक ही होता है।

**Elaboration**—At one time every being has only one mental activity, one vocal activity and one physical activity In *Agams* there is a mention of four kinds of *manoyoga* (mental activity)—*satyamanoyoga* (mental activity associated with truth), *mrishamanoyoga* (mental activity associated with falsity), *satya-mrishamanoyoga* (mixed mental activity) and *anubhaya manoyoga* (practical or conventional mental activity) Of these only one mental activity is possible at one time for one being

In the same way out of the four vocal activities only one is possible at one time for one being

There are said to be seven kinds of physical activities Of these only one is possible at one time for one being

The meanings of the terms *utthan* to *parakram* are as follows.—***utthan***—effort to rise, ***karma***—action, such as movement, ***bal***—physical strength, ***virya***—mental capacity, ***purushakar***—intent to act, and ***parakram***—effort capable of accomplishing an act. Of each of these only one category is possible at one time for one being

**४५. एगे णाणे। ४६. एगे दंसणे। ४७. एगे चरित्ते। ४८. एगे समए। ४९. एगे पएसे। ५०. एगे परमाणू। ५१. एगा सिद्धी। ५२. एगे सिद्धे। ५३. एगे परिणिव्वाणे। ५४. एगे परिणिव्वुए।**

४५. ज्ञान एक है। ४६. दर्शन एक है। ४७. चारित्र एक है। ४८. समय एक है। ४९. प्रदेश एक है। ५०. परमाणु एक है। ५१. सिद्धि एक है। ५२. सिद्ध एक है। ५३. परिनिर्वाण एक है। ५४. परिनिर्वृत्त एक है।

**45.** *Jnana* (right knowledge) is one **46.** *Darshan* (right faith) is one **47.** *Chaaritra* (right conduct) is one **48.** *Samaya* (ultimate unit of time) is one **49.** *Pradesh* (space-point) is one **50.** *Paramanu* (ultimate particle) is one **51.** *Siddhi* (state of perfection) is one **52** *Siddha* (liberated soul) is one **53.** *Parinirvana* (liberation) is one. **54.** *Parinirvritta* (liberated) is one.

**विवेचन**–वस्तु के स्वरूप को सम्यक् रूप मे जानना **ज्ञान**, उस पर श्रद्धान करना **दर्शन** और यथार्थ आचरण करना **चारित्र** है। इन तीनो की एकता ही मोक्षमार्ग है, अत इनको एक–एक ही कहा गया है।

काल के सबसे छोटे अविभाज्य अश को **समय**, आकाश के सबसे छोटे अश को **प्रदेश** और पुद्गल के अविभागी अश को **परमाणु** कहते है। अतएव ये भी स्वरूप की दृष्टि से एक–एक ही है।

आत्म-सिद्धि सबकी एक सदृश है अतः सिद्ध भी एक हैं। समस्त विकारी भावों के अभाव को परिनिर्वाण मोक्ष कहते है तथा शारीरिक और मानसिक अस्वस्थता का अभाव होने पर परम शान्ति प्राप्त करने वाले को परिनिर्वृत्त अर्थात् मुक्त कहा जाता है।

**Elaboration**—The right and perfect knowledge of the true form of a thing is *jnana*, to have faith in it is *darshan* and to rightly act upon it is *chaaritra*. The union of these three is the path of *moksha* (liberation) that is why each of the three is classified as one.

The smallest indivisible fraction of time is *Samaya*, the smallest indivisible fraction of space is *pradesh* (space-point) and the smallest indivisible fraction of matter is *paramanu* (ultimate particle). Thus with reference to form each of these is one (singular)

*Atma siddhi* (the state of perfection of soul) is similar for all. Therefore, *Siddha* (liberated or perfected soul) is one. The absence of all pervert or malignant sentiments is called *parinirvana* or *moksha* (liberation) One who attains ultimate bliss on rising above all physical and mental ailments and distortions is called *parinirvritta* or *mukta* (liberated).

### पुद्गल स्वरूप-पद PUDGAL SVAROOP-PAD (SEGMENT OF MATTER)

**५५. एगे सद्दे। ५६. एगे रूवे। ५७. एगे गंधे। ५८. एगे रसे। ५९. एगे फासे। ६०. एगे सुब्भिसद्दे। ६१. एगे दुब्भिसद्दे। ६२. एगे सुरूवे। ६३. एगे दुरुवे। ६४. एगे दीहे। ६५. एगे हस्से। ६६. एगे वट्टे। ६७. एगे तंसे। ६८. एगे चउरंसे। ६९. एगे पिहुले। ७०. एगे परिमंडले। ७१. एगे किण्हे। '७२. एगे णीले। ७३. एगे लोहिए। ७४. एगे हालिद्दे। ७५. एगे सुक्किल्ले। ७६. एगे सुब्भिगंधे। ७७. एगे दुब्भिगंधे। ७८. एगे तित्ते। ७९. एगे कडुए। ८०. एगे कसाए। ८१. एगे अंबिले। ८२. एगे महुरे। ८३. एगे कक्खडे जाव। ८४. एगे मउए। ८५. एगे गरुए। ८६. एगे लहुए। ८७. एगे सीते। ८८. एगे उसिणे। ८९. एगे णिद्धे। ९०. एगे लुक्खे।**

५५. शब्द एक है। ५६. रूप एक है। ५७. गन्ध एक है। ५८. रस एक है। ५९. स्पर्श एक है। ६०. शुभ शब्द एक है। ६१. अशुभ शब्द एक है। ६२. शुभ रूप एक है। ६३. अशुभ रूप एक है। ६४. दीर्घ सस्थान एक है। ६५. ह्रस्व सस्थान एक है। ६६. वृत्त (गोल) सस्थान एक है। ६७. त्रिकोण संस्थान एक है। ६८. चतुष्कोण संस्थान एक है। ६९. विस्तीर्ण सस्थान एक है। ७०. परिमण्डल सस्थान एक है। ७१. कृष्ण वर्ण एक है। ७२. नील वर्ण एक है। ७३. लोहित (रक्त) वर्ण एक है। ७४. हारिद्रवर्ण एक है। ७५. शुक्ल वर्ण एक है। ७६. शुभ गन्ध एक है। ७७. अशुभ गन्ध एक है। ७८. तिक्त रस एक है। ७९. कटुक रस एक है। ८०. कषाय (कसैला) रस एक है। ८१. आम्ल (खट्टा) रस एक है। ८२. मधुर रस

एक है। ८३. कर्कश स्पर्श एक है। ८४. मृदु स्पर्श एक है। ८५. गुरु स्पर्श एक है। ८६. लघु स्पर्श एक है। ८७. शीत स्पर्श एक है। ८८. उष्ण स्पर्श एक है। ८९. स्निग्ध स्पर्श एक है। ९०. रूक्ष स्पर्श एक है।

**55.** *Shabd* (sound) is one **56.** *Rupa* (appearance) is one. **57.** *Gandh* (smell) is one **58.** *Rasa* (taste) is one. **59.** *Sparsh* (touch) is one. **60.** *Shubh shabd* (pleasant sound) is one **61.** *Ashubh shabd* (unpleasant sound) is one. **62.** *Shubh rupa* (pleasant appearance) is one. **63.** *Ashubh rupa* (unpleasant appearance) is one **64.** *Deergh samsthan* (large structure) is one **65.** *Hrasva samsthan* (small structure) is one. **66.** *Vritta samsthan* (spherical structure) is one **67.** *Trikone samsthan* (triangular structure) is one. **68.** *Chatushkone samsthan* (quadrangular structure) is one. **69.** *Visteern samsthan* (expansive structure) is one **70.** *Parimandal samsthan* (circular structure) is one **71.** *Krishna varn* (black appearance) is one. **72.** *Neel varn* (blue appearance) is one **73.** *Lohit varn* (red appearance) is one **74.** *Haaridra varn* (yellow appearance) is one **75.** *Shukla varn* (white appearance) is one. **76.** *Shubh gandh* (pleasant smell) is one **77.** *Ashubh gandh* (unpleasant smell) is one. **78.** *Tikt rasa* (bitter taste) is one **79.** *Katuk rasa* (pungent taste) is one **80.** *Kashaya rasa* (astringent taste) is one **81.** *Amla rasa* (sour taste) is one **82.** *Madhur rasa* (sweet taste) is one. **83.** *Karkash sparsh* (hard touch) is one. **84.** *Mridu sparsh* (soft touch) is one **85.** *Guru sparsh* (heavy touch) is one **86.** *Laghu sparsh* (light touch) is one **87.** *Sheet sparsh* (cold touch) is one. **88.** *Ushna sparsh* (hot touch) is one **89.** *Snigdha sparsh* (smooth touch) is one **90.** *Ruksha sparsh* (coarse touch) is one

**विवेचन**—पिछले सूत्रो (४५-५४) मे आत्मा के गुणो का कथन था, अब इन सूत्रो (५५ से ९०) मे पुद्गलास्तिकाय के लक्षण, कार्य, संस्थान (आकार) और पर्यायो का निरूपण किया गया है। शब्द पुद्गल का कार्य है। रूप, रस, गन्ध और स्पर्श ये पुद्गल के लक्षण है। दीर्घ, ह्रस्व, वृत्त आदि पुद्गल के आकार-सस्थान है। कृष्ण, नील आदि वर्ण (रूप) के पाँच भेद है। गन्ध के दो भेद है-शुभ और अशुभ। रस के तिक्त, कटुक आदि पाँच भेद है और कर्कश, मृदु आदि आठ भेद स्पर्श के है। इस प्रकार पुद्गल स्वरूप-पद मे पुद्गल द्रव्य का वर्णन किया गया है।

**Elaboration**—Preceding aphorisms 45 to 54 contained the qualities of soul. Now these, the aphorisms 55 to 90, describe the attributes, action, structure and modes of the matter entity. Sound represents action of matter. Appearance, taste, smell and touch are the attributes of matter Large, small, spherical and other terms define the structure of matter There are five kinds of appearance including black and blue. Smell is of two kinds—good or pleasant and bad or unpleasant There are five kinds

of taste including bitter and pungent and eight kinds of touch including hard and soft This way the matter entity has been described here in the segment of matter.

### अष्टादश पाप-पद ASHTADASH PAAP-PAD (SEGMENT OF EIGHTEEN DEMERITS)

**९१. एगे पाणाइवाए जाव। ९२. [एगे मुसावाए। ९३. एगे अदिण्णादाणे। ९४. एगे मेहुणे।] ९५. एगे परिग्गहे। ९६. एगे कोहे जाव। ९७. [एगे माणे। ९८. एगा माया। ९९. एगे लोभे।] १००. एगे पेज्जे। १०१. एगे दोसे जाव। १०२. [एगे कलहे। १०३. एगे अब्भक्खाणे। १०४. एगे पेसुण्णे।] १०५. एगे परपरिवाए। १०६. एगा अरति-रती। १०७. एगे मायामोसे। १०८. एगे मिच्छादंसणसल्ले।**

९१. प्राणातिपात (हिंसा) एक है। ९२. [मृषावाद (असत्यभाषण) एक है। ९३. अदत्तादान (चोरी) एक है। ९४. मैथुन (कुशील) एक है।] ९५. परिग्रह एक है। ९६. क्रोध (कषाय) एक है। ९७. [मान एक है। ९८. माया एक है। ९९. लोभ एक है।] १००. प्रेयस् (राग) एक है। १०१. द्वेष एक है। १०२. [कलह एक है। १०३. अभ्याख्यान (झूठा आरोप लगाना) एक है। १०४. पैशुन्य (चुगली करना) एक है।] १०५. पर-परिवाद (दूसरो की निन्दा) एक है। १०६. अरति-रति एक है। १०७. मायामृषा एक है। १०८. मिथ्यादर्शनशल्य एक है।

**91.** *Pranatipat* (harming or destruction of life) is one. **92.** [*Mrishavad* (falsity) is one. **93.** *Adattadan* (taking without being given, act of stealing) is one **94.** *Maithun* (indulgence in sexual activities) is one ] **95.** *Parigraha* (act of possession of things) **96.** *Krodh* (anger) is one **97.** [*Maan* (conceit) is one. **98.** *Maya* (deceit) is one **99.** *Lobha* (greed) is one ] **100.** *Preyas* or *raag* (attachment inspired by love) is one **101.** *Dvesh* (aversion inspired by suppressed anger and conceit) is one. **102.** [*Kalah* (dispute) is one. **103.** *Abhyakhyan* (blaming falsely) is one **104.** *Paishunya* (inculpating someone) is one ] **105.** *Paraparivad* (slandering) is one **106.** *Rati-arati* (inclination towards indiscipline and that against discipline) **107.** *Mayamrisha* (betraying or telling a lie deceptively) is one. **108.** *Mithyadarshan shalya* (the thorn of wrong belief or unrighteousness) is one.

**विवेचन**-यद्यपि मृषा और माया को पृथक्-पृथक् पाप माना गया है, किन्तु सत्रहवे पाप का नाम 'मायामृषा' है, उसका अभिप्राय है माया-युक्त असत्य भाषण करना। अभयदेवसूरि ने इसका अर्थ बताया है-**वेषान्तरकरणेन लोकप्रतारणं**-वेष बदलकर दूसरो को ठगना। मानसिक उद्वेग रूप मनोविकार अरति और मोहासक्त आनन्दरूप चित्तवृत्ति रति है। *(अष्टादश पाप का विस्तृत वर्णन आचार्य श्री आत्माराम जी म. कृत हिन्दी टीका, भाग १, पृष्ठ ५७-५८ देखें)*

**Elaboration**—Although *mrisha* (falsity) and *maya* (deceit) are believed to be different vices, here the seventeenth demerit has been named as *mayamrisha*, which means a deceitful lie Abhayadev Suri has interpreted this term as 'to resort to disguise in order to cheat someone' Perversions in the form of mental agitation are included in *arati* or neglect of discipline The attitude of fondness for mundane pleasures leading to inclination towards indiscipline is included in *rati*. *(for detailed description of eighteen demerits refer to the Hindi commentary by Acharya Shri Atmamarm ji M )*

### अष्टादश पापविरमण-पद ASHTADASH PAAP VIRAMAN-PAD (SEGMENT OF ABSTAINING FROM EIGHTEEN DEMERITS)

**१०९. एगे पाणाइवाय-वेरमणे जाव। ११०. [एगे मुसवाय-वेरमणे। १११. एगे अदिण्णादाण-वेरमणे। ११२. एगे मेहुण-वेरमणे।] ११३. एगे परिग्गह-वेरमणे। ११४. एगे कोह-विवेगे। ११५. [एगे माण-विवेगे जाव। ११६. एगे माया-विवेगे। ११७. एगे लोभ-विवेगे। ११८. एगे पेज्ज-विवेगे। ११९. एगे दोस-विवेगे। १२०. एगे कलह-विवेगे। १२१. एगे अब्भक्खाण-विवेगे। १२२. एगे पेसुण्णे-विवेगे। १२३. एगे परपरिवाय-विवेगे। १२४. एगे अरतिरति-विवेगे। १२५. एगे मायामोस-विवेगे।] १२६. एगे मिच्छादंसण-सल्ल-विवेगे।**

१०९. प्राणातिपात-विरमण एक है। ११०. [मृषावाद-विरमण एक है। १११. अदत्तादान-विरमण एक है। ११२. मैथुन-विरमण एक है।] ११३. परिग्रह-विरमण एक है। ११४. क्रोध-विवेक एक है। ११५. [मान-विवेक एक है। ११६. माया-विवेक एक है। ११७. लोभ-विवेक एक है। ११८. प्रेयस् (राग)-विवेक एक है। ११९. द्वेष-विवेक एक है। १२०. कलह-विवेक एक है। १२१. अभ्याख्यान-विवेक एक है। १२२. पैशुन्य-विवेक एक है। १२३. पर-परिवाद विवेक एक है। १२४. अरति-रति-विवेक एक है। १२५. मायामृषा-विवेक एक है।] १२६. मिथ्यादर्शनशल्य-विवेक एक है।

**109.** *Pranatipat viraman* (to abstain from harming or destroying life) is one **110.** [*Mrishavad viraman* (to abstain from falsity) is one **111.** *Adattadan viraman* (to abstain from taking without being given, to abstain from acts of stealing) is one **112.** *Maithun viraman* (to abstain from indulgence in sexual activities) is one ] **113.** *Parigraha viraman* (to abstain from acts of possession of things) is one **114.** *Krodh vivek*

---

१ [ ] इस प्रकार कोष्ठक मे जो आगम पाठ है, वह कुछ प्राचीन प्रतियो मे नहीं मिलता है, किन्तु आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर की प्रति मे है।

1 [ ] Text within these brackets is not in some ancient texts but it is included in the Agam Prakashan Samiti, Beawar edition

(prudence with regard to anger) is one. **115.** [*Maan vivek* (prudence with regard to conceit) is one **116.** *Maya vivek* (prudence with regard to deceit) is one. **117.** *Lobha vivek* (prudence with regard to greed) is one **118.** *Preyas* or *raag vivek* (prudence with regard to attachment is one **119.** *Dvesh vivek* (prudence with regard to aversion inspired by suppressed anger and conceit) is one. **120.** *Kalah vivek* (prudence with regard to dispute) is one **121.** *Abhyakhyan vivek* (prudence with regard to blaming falsely) is one **122.** *Paishunya vivek* (prudence with regard to inculpating someone) is one. **123.** *Paraparivad vivek* (prudence with regard to slandering) is one. **124.** *Arati-rati vivek* (prudence with regard to inclination towards indiscipline and against discipline) is one **125.** *Mayamrisha vivek* (prudence with regard to betraying or telling a lie deceptively) is one ] **126.** *Mithyadarshan shalya vivek* (prudence with regard to the thorn of wrong belief or unrighteousness) is one

विवेचन–प्राणातिपात आदि पाप–स्थानो के सेवन मे तथा विरमण/त्याग मे भावों की तरतमता रहती है, उस अपेक्षा इनके अनेक भेद होते है, किन्तु पापरूप कार्य की समानता की अपेक्षा उन्हें एक कहा गया है। 'विरमण' और 'विवेक' शब्द यद्यपि समानार्थक है, फिर भी इनके प्रयोग में कुछ अन्तर है। विरमण का अर्थ है प्रवृत्ति का त्याग। विवेक का अर्थ है पृथक्करण। विरमण के पालन मे विवेक अपेक्षित है तथा विवेकपूर्वक ही विरमण किया जाता है। अत दोनो एक–दूसरे से सम्बद्ध भी हैं।

**Elaboration**—There is variation in the intensity of feelings in indulgence in and abstaining from each of the said demerits including the act of killing Thus in that context there may be many kinds of each of these demerits But as they all are acts of sin they are classified here as one *Viraman* and *vivek* appear to have been used as synonyms but there is a subtle difference in there use. *Viraman* means abstainment from indulgence in a specific act *Vivek* means discernment with regard to a specific act Discerning attitude is required for observing abstainment; in fact abstainment comes into effect only with discerning attitude Thus the two terms are complementary as well

### *अवसर्पिणी उत्सर्पिणी–पद* AVASARPINI UTSARPINI-PAD (SEGMENT OF DESCENDING AND ASCENDING CYCLES OF TIME)

**१२७. एगा ओसप्पिणी। १२८. एगा सुसम–सुसमा जाव। १२९. [ एगा सुसमा। १३०. एगा सुसम–दूसमा। १३१. एगा दूसम–सुसमा। १३२. एगा दूसमा। ] १३३. एगा दूसम–दूसमा।**

**१३४. एगा उस्सप्पिणी। १३५. एगा दुस्सम–दुस्समा जाव। १३६. [ एगा दुस्समा। १३७. एगा दुस्सम–सुसमा। १३८. एगा सुसम–दुस्समा। १३९. एगा सुसमा। ] १४०. एगा सुसम–सुसमा।**

१२७. अवसर्पिणी एक है। १२८. सुषम–सुषमा एक है। १२९. [सुषम एक है। १३०. सुषम–दुषमा एक है। १३१. दुषम–सुषमा एक है। १३२. दुषमा एक है।] १३३. दुषम–दुषमा एक है।

१३४. उत्सर्पिणी एक है। १३५. दुषम–दुषमा एक है। [१३६. दुषमा एक है। १३७. दुषम–सुषमा एक है। १३८. सुषम–दुषमा एक है। १३९. सुषमा एक है।] १४०. सुषम–सुषमा एक है।

**127.** *Avasarpini* (regressive half-cycle of time) is one **128.** *Sukham-sukhama* (epoch of extreme happiness) is one. **129.** [*Sukham* (epoch of happiness) is one **130.** *Sukham-dukhama* (epoch of more happiness than sorrow) is one **131.** *Dukham-sukhama* (epoch of more sorrow than happiness) is one **132.** *Dukhama* (epoch of sorrow) is one.] **133.** *Dukham-dukhama* (epoch of extreme sorrow) is one

**134.** *Utsarpini* (progressive half-cycle of time) is one. **135.** *Dukham-dukhama* (epoch of extreme sorrow) is one ] **136.** *Dukhama* (epoch of sorrow) is one **137.** *Dukham-sukhama* (epoch of more sorrow than happiness) is one **138.** *Sukham-dukhama* (epoch of more happiness than sorrow) is one **139.** *Sukhama* (epoch of happiness) is one ] **140.** *Sukham-sukhama* (epoch of extreme happiness) is one

**विवेचन**—काल अनादि–अनन्त है और सतत प्रवर्तमान है। उतार–चढाव की अपेक्षा से उसे कालचक्र कहा जाता है। उसके दो प्रमुख भेद है–अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी। अवसर्पिणी काल मे मनुष्यो आदि की बल, बुद्धि, देह–मान, आयु–प्रमाण आदि की तथा पुद्‌गलो मे उत्तम वर्ण, गन्ध आदि की क्रमश हानि होती है और उत्सर्पिणी काल मे उनकी क्रमश वृद्धि होती है। रथ चक्र की भाँति इनमें से प्रत्येक के छह–छह भेद होते है, जो छह आरो के नाम से प्रसिद्ध है। अवसर्पिणी काल का प्रथम आरा अतिसुखमय है, जो चार कोटा–कोटि सागरोपम प्रमाण है। दूसरा आरा तीन कोटा–कोटि सागरोपम प्रमाण है। सुखमय है। तीसरा सुख–दु खमय है, चौथा दु ख–सुखमय है, पाँचवाँ (इक्कीस हजार वर्ष प्रमाण) दु खमय है और छठा अतिदु खमय है।

उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी काल का उल्टा क्रम होता है। इस कालचक्र के उक्त आरो का परिवर्तन भरत और ऐरवत क्षेत्र में ही होता है, अन्यत्र नही होता। *(स्पष्टता के लिए देखे संलग्न चित्र।)*

**Elaboration**—Time is eternal as well as beginningless and endless. In context of progressive and regressive living conditions it is called cycle of time. It has two main divisions—*Avasarpini* (regressive half-cycle of time) and *Utsarpini* (progressive half-cycle of time). During the regressive half-cycle there is a gradual decline in strength, wisdom, size of the body, life-span and other qualities of living beings including humans. The same is true in case of properties of matter, such as good appearance, smell etc. During the progressive half-cycle there is gradual improvement in the

said qualities of living beings and matter. Like the spokes in the wheel of a chariot there are six divisions of each of these half-cycles popularly known as *aras* (spokes). The first *ara* of the regressive half-cycle is epoch of extreme happiness and is of four *kota-koti Sagaropam* (a metaphoric unit of time) long. The second *ara* is of happiness and is three *kota-koti Sagaropam* (a metaphoric unit of time) long. The third one is of more happiness than sorrow, fourth is of more sorrow than happiness, fourth is of sorrow (twenty one thousand years long) and the sixth is of extreme sorrow and is of twenty one thousand years.

In the progressive half-cycle the said order is exactly reverse. These progressive changes in the time-cycle are effective only in the Bharat and Airavat areas (as postulated in Jain cosmology) and nowhere else. *(for clarity see illustration)*

### *वर्गणा पद (२४ दण्डक कथन)* VARGANA-PAD (SEGMENT OF CATEGORIES)

**१४१. एगा णेरइयाणं वग्गणा। १४२. एगा असुरकुमाराणं वग्गणा जाव। १४३. [ एगा णागकुमाराणं वग्गणा। १४४. एगा सुवण्णकुमाराणं वग्गणा। १४५. एगा विज्जुकुमाराणं वग्गणा। १४६. एगा अग्गिकुमाराणं वग्गणा। १४७. एगा दीवकुमाराणं वग्गणा। १४८. एगा उदहिकुमाराणं वग्गणा। १४९. एगा दिसाकुमाराणं वग्गणा। १५०. एगा वायुकुमाराणं वग्गणा। १५१. एगा थणियकुमाराणं वग्गणा। १५२. एगा पुढविकाइयाणं वग्गणा। १५३. एगा आउकाइयाणं वग्गणा। १५४. एगा तेउकाइयाणं वग्गणा। १५५. एगा वाउकाइयाणं वग्गणा। १५६. एगा वणस्सकाइयाणं वग्गणा। १५७. एगा बेइंदियाणं वग्गणा। १५८. एगा तेइंदियाणं वग्गणा। १५९. एगा चउरिंदियाणं वग्गणा। १६०. एगा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं वग्गणा। १६१. एगा मणुस्साणं वग्गणा। १६२. एगा वाणमंतराणं वग्गणा। १६३. एगा जोइसियाणं वग्गणा। ] १६४. एगा वेमाणियाणं वग्गणा।**

१४१. नारकीय जीवों की वर्गणा (दण्डक समुदाय) एक है। १४२. असुरकुमार देवो की वर्गणा एक है। १४३. [नागकुमारो की वर्गणा एक है। १४४. सुपर्णकुमारों की वर्गणा एक है। १४५. विद्युतकुमारो की वर्गणा एक है। १४६. अग्निकुमारो की वर्गणा एक है। १४७. द्वीपकुमारों की वर्गणा एक है। १४८. उदधिकुमारो की वर्गणा एक है। १४९. दिक्कुमारो की वर्गणा एक है। १५०. वायुकुमारो की वर्गणा एक है। १५१. स्तनित (मेघ) कुमारो की वर्गणा एक है। १५२. पृथ्वीकायिक जीवों की वर्गणा एक है। १५३. अप्कायिक जीवो की वर्गणा एक है। १५४. तेजस्कायिक जीवो की वर्गणा एक है। १५५. वायुकायिक जीवो की वर्गणा एक है। १५६. वनस्पतिकायिक जीवो की वर्गणा एक है। १५७. द्वीन्द्रिय जीवों की वर्गणा एक है। १५८. त्रीन्द्रिय जीवो की वर्गणा एक है। १५९. चतुरिन्द्रिय जीवों की वर्गणा एक है। १६०. पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिक जीवो की वर्गणा एक है। १६१. मनुष्यों की वर्गणा

एक है। १६२. वाणव्यन्तर देवो की वर्गणा एक है। १६३. ज्योतिष्क देवो की वर्गणा एक है।]
१६४. वैमानिक देवों की वर्गणा एक है।

**141.** There is one *vargana* (category, also called ***dandak*** or place of suffering) of *nairayiks* (infernal beings) **142.** There is one category of *Asur-kumar* gods **143.** [There is one category of ***Naag-kumar*** gods. **144.** There is one category of *Suparn-kumar* gods **145.** There is one category of *Vidyut-kumar* gods **146.** There is one category of ***Agni-kumar*** gods **147.** There is one category of *Dveep-kumar* gods. **148.** There is one category of *Udadhi-kumar* gods **149.** There is one category of *Disha (Dik)-kumar* gods **150.** There is one category of *Pavan (Vayu)-kumar* gods **151.** There is one category of *Stanit (Megh)-kumar* gods **152.** There is one category of *Prithvikayiks* (earth-bodied beings) **153.** There is one category of *Apkayiks* (water-bodied beings) **154.** There is one category of *Tejas-kayiks* (fire-bodied beings). **155.** There is one category of *Vayukayiks* (air-bodied beings) **156.** There is one category of *Vanaspatikayiks* (plant-bodied beings) **157.** There is one category of *Dvindriya* (two-sensed beings) **158.** There is one category of *Trindriya* (three-sensed beings) **159.** There is one category of *Chaturindriya* (four-sensed beings) **160.** There is one category of *Panchendriya-tiryagyonik* (five-sensed animal beings) **161.** There is one category of human beings **162.** There is one category of *Vanavyantar Devas* (interstitial gods) **163.** There is one category of ***Jyotishk Devas*** (stellar gods) ] **164.** There is one category of *Vaimanik Devas* (vehicular gods)

**विवेचन**—ससार के सभी जीवो को चौबीस वर्गों मे विभक्त किया गया है। उन चौबीस वर्गों की पृथक्-पृथक् वर्गणा बताकर यहाँ उनका उल्लेख है। वर्गणा, समुदाय, दण्डक सभी समान अर्थ के सूचक है। प्रचलित भाषा मे इन्हे चौबीस दण्डक कहा जाता है। उक्त चौबीस दण्डको मे नारकी जीवो का एक दण्डक, भवनवासी देवो के दस दण्डक, स्थावरकायिक एकेन्द्रिय जीवो के पाँच दण्डक, द्वीन्द्रियादि तिर्यंचो के चार दण्डक, मनुष्यो का एक दण्डक, व्यन्तरदेवो का एक दण्डक, ज्योतिष्क देवो का एक दण्डक और वैमानिक देवो का एक दण्डक। प्रत्येक दण्डक की एक-एक वर्गणा होती है। *(२४ दण्डकों के परिचय चित्र अनुयोगद्वारसूत्र, भाग २ मे चित्र १०-११ पर देखे)*

**Elaboration**—All the living beings in the world have been divided into twenty four categories Each of these twenty four divisions have been mentioned as a separate *vargana* or category The terms *vargana, samudaya* and *dandak* carry same meaning here. These divisions are popularly known as twenty four *dandaks* (places of suffering). Of the said twenty four *dandaks* one *dandak* is of infernal beings, ten *dandaks* of

abode dwelling gods, five *dandaks* of one sensed immobile beings, four *dandaks* of two to five sensed beings including animals, one *dandak* of human beings, one *dandak* of interstitial gods, one *dandak* of stellar gods, and one *dandak* of celestial vehicle based gods. Each *dandak* forms one *vargana* (category). (for detailed and illustrated description of twenty four *dandaks* refer to *Illustrated Anuyogadvar Sutra*, illustration No 10 and 11)

### भव्य-अभव्यसिद्धिक-पद BHAVYA-ABHAVYASIDDHIK-PAD (SEGMENT OF WORTHY-UNWORTHY OF LIBERATION)

**१६५. एगा भवसिद्धियाणं वग्गणा। १६६. एगा अभवसिद्धियाणं वग्गणा। १६७. एगा भवसिद्धियाणं णेरइयाणं वग्गणा। १६८. एगा अभवसिद्धियाणं णेरइयाणं वग्गणा। १६९. एवं जाव एगा भवसिद्धियाणं वेमाणियाणं वग्गणा, एगा अभवसिद्धियाणं वेमाणियाणं वग्गणा।**

१६५. भवसिद्धिक जीवों की वर्गणा एक है। १६६. अभवसिद्धिक जीवों की वर्गणा एक है। १६७. भवसिद्धिक नारकीय जीवो की वर्गणा एक है। १६८. अभवसिद्धिक नारकीय जीवों की वर्गणा एक है। १६९. इसी प्रकार भवसिद्धिक-अभवसिद्धिक (असुरकुमारो से लेकर) वैमानिक देवो तक के सभी दण्डको की वर्गणा एक-एक है।

**165.** There is one category of *bhavasiddhik jivas* (beings worthy of liberation) **166.** There is one category of *abhavasiddhik jivas* (beings unworthy of liberation) **167.** There is one category of *bhavasiddhik naarakiya jivas* (infernal beings worthy of liberation) **168.** There is one category of *abhavasiddhik naarakiya jivas* (infernal beings unworthy of liberation) **169.** In the same way there is one category each of *bhavasiddhik* (worthy of liberation) and *abhavasiddhik* (unworthy of liberation) beings belonging to all the remaining aforesaid categories from Asura Kumar gods to Vaimanik gods

विवेचन-ससारी जीव दो प्रकार के है-भवसिद्धिक (भव्य) और अभवसिद्धिक (अभव्य)। जिन जीवो मे कर्मक्षय कर मुक्ति प्राप्त करने की योग्यता होती है, वे **भवसिद्धिक** और जिनमे यह योग्यता नही होती है, वे **अभवसिद्धिक** कहलाते हैं। यह भव्यपन और अभव्यपन किसी कर्म के निमित्त से नहीं, किन्तु स्वभाव से ही होता है, अतएव इसमे कभी परिवर्तन नही हो सकता। भव्य जीव कभी अभव्य नही बनता और अभव्य जीव कभी भव्य नही हो सकता। जीव और पुद्गल की तरह भवसिद्धिक-अभवसिद्धिक का भेद भी अनादिकालीन है।

**Elaboration**—Worldly beings are of two kinds—*bhavasiddhik (bhavya)* and *abhavasiddhik (abhavya)*. Beings having the capability of attaining liberation through shedding of *karmas* are called *bhavasiddhik* (worthy of getting liberated). Those who do not have this capability are

*abhavasiddhik* (unworthy of getting liberated). This worthiness and unworthiness is inherent and not caused by some *karma* Therefore, this quality is unalterable A worthy being can never become unworthy and vice versa. Like distinction of soul and matter the distinction of worthy of liberation and unworthy of liberation is eternal

**दृष्टि-पद DRISHTI-PAD (SEGMENT OF PERCEPTION)**

**१७०. एगा सम्मद्दिट्ठियाणं वग्गणा। १७१. एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा। १७२. एगा सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा। १७३. एगा सम्मद्दिट्ठियाणं णेरइयाणं वग्गणा। १७४. एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं णेरइयाणं वग्गणा। १७५. एगा सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं णेरइयाणं वग्गणा। १७६. एवं जाव थणियकुमाराणं वग्गणा। १७७. एगा मिच्छिद्दिट्ठियाणं पुढविक्काइयाणं वग्गणा। १७८. एवं जाव वणस्सइकाइयाणं।**

**१७९. एगा सम्मद्दिट्ठियाणं बेइंदियाणं वग्गणा। १८०. एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं बेइंदियाणं वग्गणा। १८१. एगा सम्मद्दिट्ठियाणं तेइंदियाणं वग्गणा। १८२. एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं तेइंदियाणं वग्गणा। १८३. एगा सम्मद्दिट्ठियाणं चउरिंदियाणं वग्गणा। १८४. एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं चउरिंदियाणं वग्गणा। १८५. सेसा जहा णेरइया जाव एगा सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं वेमाणियाणं वग्गणा।**

१७०. सम्यग्दृष्टि जीवो की वर्गणा एक है। १७१. मिथ्यादृष्टि जीवों की वर्गणा एक है। १७२. सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों की वर्गणा एक है। १७३. सम्यग्दृष्टि नारकीय जीवो की वर्गणा एक है। १७४. मिथ्यादृष्टि नारकीय जीवों की वर्गणा एक है। १७५. सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकीय जीवो की वर्गणा एक है। १७६. इस प्रकार असुरकुमार से लेकर स्तनितकुमार तक के सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवों की वर्गणा एक-एक है। १७७. पृथ्वीकायिक मिथ्यादृष्टि जीवों की वर्गणा एक है। १७८. इसी प्रकार अप्कायिक जीवो से लेकर वनस्पतिकायिक तक के जीवो की वर्गणा एक-एक है।

१७९. सम्यग्दृष्टि द्वीन्द्रिय जीवों की वर्गणा एक है। १८०. मिथ्यादृष्टि द्वीन्द्रिय जीवों की वर्गणा एक है। १८१. सम्यग्दृष्टि त्रीन्द्रिय जीवो की वर्गणा एक है। १८२. मिथ्यादृष्टि त्रीन्द्रिय जीवों की वर्गणा एक है। १८३. सम्यग्दृष्टि चतुरिन्द्रिय जीवो की वर्गणा एक है। १८४. मिथ्यादृष्टि चतुरिन्द्रिय जीवों की वर्गणा एक है। १८५. सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि शेष दण्डकों (पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक, मनुष्य, वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक) की वर्गणा एक-एक है।

**170.** There is one category of *samyagdrishti jivas* (beings with right perception/faith). **171.** There is one category of *mithyadrishti jivas* (beings with wrong perception/faith). **172.** There is one category of *samyagmithyadrishti jivas* (beings with right-wrong or mixed perception/faith). **173.** There is one category of *samyagdrishti naarakiya jivas* (infernal beings with right perception/faith). **174.** There is one

category of *mithyadrishti naarakiya jivas* (infernal beings with wrong perception/faith). **175.** There is one category of *samyagmithyadrishti naarakiya jivas* (infernal beings with right-wrong or mixed perception/faith). **176.** In the same way there is one category each of *samyagdrishti*, *mithyadrishti* and *samyagmithyadrishti devas* (gods with right perception/faith, wrong perception/faith and right-wrong or mixed perception/faith) from Asur Kumar to Stanit Kumar classes. **177.** There is one category of *prithvikayik mithyadrishti jivas* (earth bodied beings with wrong perception/faith). **178.** In the same way there is one category each of *ap-kayik* to *vanaspatikayik jivas* (water-bodied to plant-bodied beings).

**179.** There is one category of *samyagdrishti dvindriya jivas* (two sensed beings with right perception/faith) **180.** There is one category of *mithyadrishti dvindriya jivas* (two sensed beings with wrong perception/faith). **181.** There is one category of *samyagdrishti trindriya jivas* (three sensed beings with right perception/faith). **182.** There is one category of *mithyadrishti trindriya jivas* (three sensed beings with wrong perception/faith) **183.** There is one category of *samyagdrishti chaturindriya jivas* (four sensed beings with right perception/faith). **184.** There is one category of *mithyadrishti chaturindriya jivas* (four sensed beings with wrong perception/faith). **185.** There is one category each of *samyagdrishti*, *mithyadrishti* and *samyagmithyadrishti jivas* (beings with right perception/faith, wrong perception/faith and right-wrong or mixed perception/faith) of the remaining *dandaks* (five sensed animals, human beings, interstitial gods, stellar gods and celestial vehicle dwelling gods).

### कृष्ण–शुक्लपाक्षिक–पद KRISHNA-SHUKLAPAKSHIK-PAD (SEGMENT OF BRIGHT AND DARK-SIDED)

**१८६. एगा कण्हपक्खियाणं वग्गणा। १८७. एगा सुक्कपक्खियाणं वग्गणा। १८८. एगा कण्हपक्खियाणं णेरइयाणं वग्गणा। १८९. एगा सुक्कपक्खियाणं णेरइयाणं वग्गणा। १९०. एवं चउवीसदंडओ भाणियव्वो।**

१८६. कृष्णपाक्षिक जीवो की वर्गणा एक है। १८७. शुक्लपाक्षिक जीवों की वर्गणा एक है। १८८. कृष्णपाक्षिक नारकीय जीवों की वर्गणा एक है। १८९. शुक्लपाक्षिक नारकीय जीवों की वर्गणा एक है। १९०. इसी प्रकार शेष सभी कृष्णपाक्षिक और शुक्लपाक्षिक जीवो की वर्गणा एक–एक है, ऐसा कहना चाहिए।

**186.** There is one category of *krishnapakshik jivas* (dark-sided beings). **187.** There is one category of *shuklapakshik jivas* (bright-sided

beings). **188.** There is one category of *krishnapakshik naarakiya jivas* (dark-sided infernal beings) **189.** There is one category of *shuklapakshik naarakiya jivas* (dark-sided infernal beings) **190.** In the same way there is one category each of *krishnapakshik* and *shuklapakshik jivas* (dark-sided and bright-sided beings) of all the remaining aforesaid categories.

**विवेचन**—भवसिद्धिक जीवों मे मोक्ष जाने की योग्यता तो होती है, परन्तु ऐसा नही है कि सभी भवसिद्धिक जीव मोक्ष को प्राप्त करेंगे। इस दृष्टि को स्पष्ट करने के लिए शुक्लपक्ष व कृष्णपक्ष का वर्गीकरण किया गया है। जिन भवसिद्धिक जीवो मे मुक्त होने की कालावधि निश्चित हो गई है वे शुक्लपाक्षिक कहलाते है तथा जिनकी मोक्ष गमन की कोई सीमा निश्चित नही है उनका भविष्य अन्धकारमय होने से उन्हे कृष्णपाक्षिक कहा जाता है। अर्थात् जिन जीवो का अपार्ध-कुछ कम अर्ध पुद्गल परावर्तन काल ससार मे परिभ्रमण शेष रहता है, वे शुक्लपाक्षिक हैं, इससे अधिक काल सीमा वाले कृष्णपाक्षिक है। *[पुद्गल परावर्तन के सम्बन्ध मे विशेष वर्णन अनुयोगद्वार, भाग २, परिशिष्ट १, पृष्ठ ४८१ पर देखे]*

**Elaboration**—The *bhavasiddhik* beings have the ability to get liberated but all such beings will not get liberated To remove this ambiguity such beings have been further classified into *shuklapakshik* and *krishnapakshik* beings The beings with a defined period after which they will certainly get liberated are called *shuklapakshik* (bright-sided) As the future of those who have no such defined period is dark, they are called *krishnapakshik* (dark-sided) In other words, the beings with a span of cycles of rebirth slightly less than *ardhapudgala paravartan kaal* are called *shuklapakshik*. Beings with the said span of more than this period are *krishnapakshik* (for detailed description about *pudgal paravartan* refer to *Illustrated Anuyogadvar Sutra,* part-2, appendix 1, p 481)

### लेश्या-पद LESHYA-PAD (SEGMENT OF COMPLEXION OF SOUL)

१९१. एगा कण्हलेस्साणं वग्गणा। १९२. एगा नीललेसाणं वग्गणा। एवं जाव। १९३. [एगा काउलेसाणं वग्गणा। १९४. एगा तेउलेसाणं वग्गणा। १९५. एगा पम्हलेसाणं वग्गणा।] १९६. एगा सुक्कलेसाणं वग्गणा।

१९७. एगा कण्हलेसाणं णेरइयाणं वग्गणा। १९८. [एगा नीललेसाणं णेरइयाणं वग्गणा जाव।] १९९. एगा काउलेसाणं णेरइयाणं वग्गणा।

२००. एवं-जस्स जइ लेसाओ-भवणवइ-वाणमंतर-पुढवि-आउ-वणस्सइकाइयाणं च चत्तारि लेसाओ, तेउ-वाउ-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं तिण्णि लेसाओ, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं छल्लेस्साओ, जोतिसियाणं एगा तेउलेसा, वेमाणियाणं तिण्णि उवरिमलेसाओ।

१९१. कृष्णलेश्या वाले जीवों की वर्गणा एक है। १९२. नीललेश्या वाले जीवों की वर्गणा एक है। १९३. [कापोतलेश्या वाले जीवों की वर्गणा एक है। १९४. तेजोलेश्या वाले जीवों की वर्गणा एक है। १९५. पद्मलेश्या वाले जीवों की वर्गणा एक है।] १९६. शुक्ललेश्या वाले जीवों की वर्गणा एक है।

१९७. कृष्णलेश्या वाले नारकीय जीवों की वर्गणा एक है। १९८. [नीललेश्या वाले नारक जीवों की वर्गणा एक है।] १९९. कापोतलेश्या वाले नारक जीवों की वर्गणा एक है।

२००. इसी प्रकार जिन दण्डको में जितनी लेश्याएँ होती हैं, उनके अनुपात से उनकी एक-एक वर्गणा है। भवनपति, वाणव्यन्तर, पृथ्वी, अप् (जल) और वनस्पतिकायिक जीवों में प्रारम्भ की चार लेश्याएँ होती है। अग्नि, वायु, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवो में आदि की तीन लेश्याएँ होती है। पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक और मनुष्यो के छहो लेश्याएँ होती हैं। ज्योतिष्क देवो के एक तेजोलेश्या होती है। वैमानिक देवो के अन्तिम तीन लेश्याएँ होती हैं।

**191.** There is one category of beings with *krishna leshya* (black complexion of soul). **192.** There is one category of beings with *neel leshya* (blue complexion of soul) **193.** [There is one category of beings with *kapot leshya* (pigeon complexion of soul) **194.** There is one category of beings with *tejo leshya* (fiery complexion of soul). **195.** There is one category of beings with *padma leshya* (yellow complexion of soul).] **196.** There is one category of beings with *shukla leshya* (white complexion of soul)

**197.** There is one category of infernal beings with *krishna leshya* (black complexion of soul) **198.** [There is one category of infernal beings with *neel leshya* (blue complexion of soul).] **199.** There is one category of infernal beings with *kapot leshya* (pigeon complexion of soul).

**200.** In the same way there is one category each for each *leshya* (complexion of soul) of beings of all the *dandaks* (places of suffering) depending on *dandak*-specific number of *leshyas*. Abode dwelling and interstitial gods, earth-bodied, water-bodied and plant-bodied beings have first four *leshyas* Fire-bodied, air-bodies, two sensed, three sensed and four sensed beings have first three *leshyas* Five sensed animals and human beings have all the six *leshyas* Stellar gods have only *tejo leshya*. Celestial vehicle dwelling gods have last three *leshyas*

**२०१. एगा कण्हलेसाणं भवसिद्धियाणं वग्गणा। २०२. एगा कण्हलेसाणं अभवसिद्धियाणं वग्गणा। २०३. एवं छसु वि लेसासु दो दो पयाणि भाणियव्वाणि। २०४. एगा कण्हलेसाणं भवसिद्धियाणं णेरइयाणं वग्गणा। २०५. एगा कण्हलेसाणं अभवसिद्धियाणं णेरइयाणं वग्गणा। २०६. एवं—जस्स जति लेसाओ तस्स ततियाओ भाणियव्वाओ जाव वेमाणियाणं।**

२०१. कृष्णलेश्या वाले भवसिद्धिक जीवो की वर्गणा एक है। २०२. कृष्णलेश्या वाले अभवसिद्धिक जीवो की वर्गणा एक है। २०३. इसी प्रकार छहो (कृष्ण, नील, कापोत, तैजस, पद्म और शुक्ल) लेश्या वाले भवसिद्धिक-अभवसिद्धिक जीवो की वर्गणा एक-एक है। २०४. कृष्णलेश्या वाले भवसिद्धिक नारकीय जीवो की वर्गणा एक है। २०५. कृष्णलेश्या वाले अभवसिद्धिक नारकीय जीवो की वर्गणा एक है। २०६. इसी प्रकार जिसकी जितनी लेश्याएँ होती हैं, उसके अनुसार भवसिद्धिक और अभवसिद्धिक वैमानिक पर्यन्त सभी दण्डको की वर्गणा एक-एक है।

**201.** There is one category of *bhavasiddhik jivas* with *krishna leshya* (beings worthy of liberation having black complexion of soul). **202.** There is one category of *abhavasiddhik jivas* with *krishna leshya* (beings unworthy of liberation having black complexion of soul). **203.** In the same way there is one category each of *bhavasiddhik* and *abhavasiddhik jivas* with all the six *leshyas* (black, blue, pigeon, fiery, yellow and white). **204.** There is one category of *bhavasiddhik naarakiya jivas* with *krishna leshya* (infernal beings worthy of liberation having black complexion of soul) **205.** There is one category of *abhavasiddhik naarakiya jivas* with *krishna leshya* (infernal beings unworthy of liberation having black complexion of soul) **206.** In the same way there is one category each for each *leshya* (complexion of soul) of beings of all the *dandaks* (places of suffering) up to *bhavasiddhik* and *abhavasiddhik Vaimanik* gods depending on *dandak*-specific number of *leshyas*

**२०७. एगा कण्हलेसाणं सम्मद्दिट्ठियाणं वग्गणा। २०८. एगा कण्हलेसाणं मिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा। २०९. एगा कण्हलेसाणं सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा। २१०. एवं-छसु वि लेसासु जाव वेमाणियाणं 'जेसिं जइ दिट्ठीओ'।**

२०७. कृष्णलेश्या वाले सम्यग्दृष्टि जीवो की वर्गणा एक है। २०८. कृष्णलेश्या वाले मिथ्यादृष्टि जीवो की वर्गणा एक है। २०९. कृष्णलेश्या वाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवो की वर्गणा एक है। २१०. इसी प्रकार कृष्ण आदि छहों लेश्या वाले वैमानिक पर्यन्त सभी दण्डकों मे जिसके जितनी दृष्टियाँ होती है, उसके अनुसार उसकी वर्गणा एक-एक है।

**207.** There is one category of *samyagdrishti jivas* with *krishna leshya* (beings with right perception having black complexion of soul) **208.** There is one category of *mithyadrishti jivas* with *krishna leshya* (beings with wrong perception having black complexion of soul) **209.** There is one category of *samyagmithyadrishti jivas* with *krishna leshya* (beings with right-wrong or mixed perception having black complexion of soul) **210.** In the same way there is one category each for each of the said perceptions for beings of all the *dandaks* (places of

suffering) up to *Vaimanik* gods depending on *dandak*-specific number of *leshyas*.

**२११. एगा कण्हलेसाणं कण्हपक्खियाणं वग्गणा। २१२. एगा कण्हलेसाणं सुक्कपक्खियाणं वग्गणा। २१३. जाव वेमाणियाणं। जस्स जति लेसाओ एए अट्ठ, चउवीसदंडया।**

२११. कृष्णलेश्या वाले कृष्णपाक्षिक जीवों की वर्गणा एक है। २१२. कृष्णलेश्या वाले शुक्लपाक्षिक जीवों की वर्गणा एक है। २१३. इसी प्रकार जिनमे जितनी लेश्याएँ होती हैं, उसके अनुसार कृष्णपाक्षिक और शुक्लपाक्षिक जीवों की वर्गणा एक-एक है। ऊपर बतलाये गये ये चौबीस दण्डकों की वर्गणा के आठ प्रकरण हैं।

**211.** There is one category of *krishnapakshik jivas* with *krishna leshya* (dark-sided beings having black complexion of soul). **212.** There is one category of *shuklapakshik jivas* with *krishna leshya* (bright-sided beings having black complexion of soul). **213.** In the same way there is one category each for every *leshya* present in *krishnapakshik* and *shuklapakshik* beings Thus there are eight groups or categories of the aforesaid twenty four *dandaks* (places of suffering)

विवेचन-लेश्या पद में लेश्याओं से सम्बन्धित वर्गणा का कथन है। 'लेश्या' जैनदर्शन का विशेष पारिभाषिक शब्द है। आचार्यों ने अनेक प्रकार से इसकी व्याख्याएँ की हैं। आचार्य अभयदेवसूरि ने कहा है-"जिस योग परिणति के द्वारा जीव कर्म से लिप्त होता है, वह लेश्या है।" लेश्या के दो भेद है-भाव लेश्या और द्रव्य लेश्या। कषाय जनित भावो की प्रवृत्ति भाव लेश्या है तथा शरीर के कृष्ण-नील आदि वर्णों को द्रव्य लेश्या कहा गया है। दोनो ही लेश्या के कृष्ण लेश्या आदि छह भेद हैं। उत्तराध्ययनसूत्र में इनका विस्तृत विवेचन हमने किया है। आधुनिक विज्ञान भी इस विषय मे काफी खोज कर रहा है। तेजोवलय, आभामण्डल (आरा) आदि को लेश्या के रूप में माना जा सकता है।

छह लेश्याओ मे से कृष्ण, नील और कापोत ये तीन अशुभ लेश्याएँ है तथा तेज, पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएँ है। प्रस्तुत लेश्यापद मे जिन-जिन जीवों की जो-जो लेश्या समान होती हैं, उन-उन जीवों की समानता की दृष्टि से एक वर्गणा कही गई है।

**Elaboration**—The segment of *leshya* deals with *leshya*-related categorization *Leshya* is a unique Jain technical term Preceptors have defined it many ways. Acharya Abhayadev Suri defines this term as—"The association through which a being attracts bondage of *karmas* is called *leshya*" There are two categories of *leshya—bhaava leshya* (spiritual complexion) and *dravya leshya* (physical complexion). The attitude inspired by thoughts or feelings triggered by passions is *bhaava leshya*. The black, blue and other hues of the complexion of a body are called *dravya leshya*. Each of these *leshyas* are of aforesaid six kinds—

black to white. We have discussed this in greater detail in *Illustrated Uttaradhyayan Sutra* Modern science has also taken up this topic for elaborate research. Orb and aura can also be considered as types of *leshya*

Of the six *leshyas* black, blue and pigeon coloured are said to be inauspicious or bad and fiery, yellow and white are said to be auspicious or good In this segment of *leshyas* the categorization has been done on the basis of beings with a common *leshya*

### सिद्ध-पद SIDDHA-PAD (SEGMENT OF LIBERATED SOULS)

**२१४. एगा तित्थसिद्धाणं वग्गणा एवं जाव। २१५. [एगा अतित्थसिद्धाणं वग्गणा। २१६. एगा तित्थगरसिद्धाणं वग्गणा। २१७. एगा अतित्थगरसिद्धाणं वग्गणा। २१८. एगा सयंबुद्धसिद्धाणं वग्गणा। २१९. एगा पत्तेयबुद्धसिद्धाणं वग्गणा। २२०. एगा बुद्धबोहियसिद्धाणं वग्गणा। २२१. एगा इत्थीलिंगसिद्धाणं वग्गणा। २२२. एगा पुरिसलिंगसिद्धाणं वग्गणा। २२३. एगा णपुंसकलिंगसिद्धाणं वग्गणा। २२४. एगा सलिंगसिद्धाणं वग्गणा। २२५. एगा अण्णलिंगसिद्धाणं वग्गणा। २२६. एगा गिहिलिंगसिद्धाणं वग्गणा।] २२७. एगा एक्कसिद्धाणं वग्गणा। २२८. एगा अणिक्कसिद्धाणं वग्गणा। २२९. एगा अपढमसमयसिद्धाणं वग्गणा, एवं जाव अणंतसमयसिद्धाणं वग्गणा।**

२१४. तीर्थसिद्धो की वर्गणा एक है। २१५. [अतीर्थसिद्धो की वर्गणा एक है। २१६. तीर्थंकरसिद्धो की वर्गणा एक है। २१७. अतीर्थंकरसिद्धो की वर्गणा एक है। २१८. स्वयबुद्धसिद्धों की वर्गणा एक है। २१९. प्रत्येकबुद्धसिद्धो की वर्गणा एक है। २२०. बुद्धबोधितसिद्धो की वर्गणा एक है। २२१. स्त्रीलिगसिद्धो की वर्गणा एक है। २२२. पुरुषलिगसिद्धो की वर्गणा एक है। २२३. नपुसकलिगसिद्धो की वर्गणा एक है। २२४. स्वलिगसिद्धो की वर्गणा एक है। २२५. अन्यलिगसिद्धो की वर्गणा एक है। २२६. गृहिलिगसिद्धो की वर्गणा एक है।] २२७. एक (एक) सिद्धो की वर्गणा एक है। २२८. अनेकसिद्धों की वर्गणा एक है। २२९. अप्रथमसमय (दूसरे समय मे हुए) सिद्धो की वर्गणा एक है। इसी प्रकार तीसरे, चौथे यावत् अनन्तसमयसिद्धो की वर्गणा एक है।

**214.** There is one category of *Tirth Siddhas* **215.** [There is one category of *Atirth Siddhas* **216.** There is one category of *Tirthankar Siddhas.* **217.** There is one category of *Atirthankar Siddhas.* **218.** There is one category of *Svayam-buddha Siddhas* **219.** There is one category of *Pratyek-buddha Siddhas.* **220.** There is one category of *Buddha-bodhit Siddhas.* **221.** There is one category of *Streeling Siddhas.* **222.** There is one category of *Purushling Siddhas.* **223.** There is one category of *Napunsakling Siddhas* **224.** There is one category of *Svaling Siddhas.*

**225.** There is one category of *Anyaling Siddhas*. **226.** There is one category of *Grihiling Siddhas*.] **227.** There is one category of *Ek Siddhas*. **228.** There is one category of *Anek Siddhas*. **229.** There is one category of *Apratham-samaya Siddhas* (those who have become *Siddhas* in the second *Samaya* from the beginning of the cycle of time). In the same way there is one category each of third-*Samaya Siddhas*, fourth-*Samaya Siddhas* and so on up to infinite-*Samaya Siddhas*.

**विवेचन**—एक स्थानक के ५२वें सूत्र में 'सिद्ध एक है' ऐसा कहा गया है और उक्त सूत्रों में उनके पन्द्रह प्रकार कहे गये हैं, इसे परस्पर विरोधी कथन नहीं समझना चाहिए। क्योंकि सम्पूर्ण आत्मिक विकास की दृष्टि से सिद्धो मे कोई भेद नहीं है। इस अभेद की दृष्टि से सिद्ध एक है। सिद्ध होने से पूर्व मनुष्य भव के नाना सम्बन्धों, स्थितियो व अवस्थाओं के आधार पर यहाँ सिद्धों के १५ भेद बताये गये हैं। इनका स्वरूप इस प्रकार है–

(१) **तीर्थसिद्ध**—जो तीर्थ की स्थापना के पश्चात् तीर्थ मे दीक्षित होकर सिद्ध होते हैं, जैसे–गणधर आदि।

(२) **अतीर्थसिद्ध**—जो तीर्थ की स्थापना के पहले सिद्ध हो जाते हैं, जैसे–मरुदेवी माता।

(३) **तीर्थंकरसिद्ध**—जो तीर्थंकर होकर के सिद्ध होते है, जैसे–ऋषभदेव आदि।

(४) **अतीर्थंकरसिद्ध**—जो सामान्यकेवली के रूप में सिद्ध होते हैं, जैसे–गौतम आदि।

(५) **स्वयंबुद्धसिद्ध**—जो स्वयबोधि प्राप्त कर सिद्ध होते है, जैसे–महावीर स्वामी।

(६) **प्रत्येकबुद्धसिद्ध**—जो किसी बाह्य निमित्त से प्रबुद्ध होकर सिद्ध होते हैं, जैसे–नमिराज ऋषि आदि।

(७) **बुद्धबोधितसिद्ध**—जो आचार्य आदि के द्वारा बोधि प्राप्त कर सिद्ध होते है, जैसे–जम्बूस्वामी आदि।

(८) **स्त्रीलिंगसिद्ध**—जो स्त्रीलिग से सिद्ध होते है, जैसे–मरुदेवी माता, मृगावती आदि।

(९) **पुरुषलिंगसिद्ध**—जो पुरुष लिंग से सिद्ध होते है, जैसे–भरत आदि।

(१०) **नपुंसकलिंगसिद्ध**—जो कृत्रिम नपुसकलिंग से सिद्ध होते है, जैसे–गांगेय।

(११) **स्वलिंगसिद्ध**—जो निर्ग्रन्थ वेष से सिद्ध होते हैं, जैसे–सुधर्मा।

(१२) **अन्यलिंगसिद्ध**—जो निर्ग्रन्थ वेष के अतिरिक्त अन्य वेष से सिद्ध होते है, जैसे–वल्कलचीरी।

(१३) **गृहिलिंगसिद्ध**—जो गृहस्थ के वेष से सिद्ध होते है, जैसे–मरुदेवी।

(१४) **एकसिद्ध**—जो एक समय मे एक ही सिद्ध होते हैं, जैसे–महावीर आदि।

(१५) **अनेकसिद्ध**—जो एक समय मे दो से लेकर उत्कृष्टत. एक सौ आठ तक एक साथ सिद्ध होते हैं, जैसे–ऋषभदेव।

**Elaboration**—In aphorism 52 of Place Number One it is mentioned that *Siddha* is one. In the preceding aphorisms fifteen kinds of *Siddhas* have been mentioned These statements are not contradictory. This is because in context of supreme spiritual perfection there is no qualititive division among *Siddhas*, thus all *Siddhas* fall in one category only. However, as human beings prior to attaining the status of *Siddha* there are variations in social and individual conditions and states Based on these there are said to be fifteen categories as follows—

(1) ***Tirth Siddha***—Those who become *Siddha* after the establishment of the religious organisation (*Dharma-tirth*) are called *Tirth Siddha*; for example Bhagavan Rishabhadeva's chief disciple Rishabhasen.

(2) ***Atirth Siddha***—Those who become *Siddha* before the establishment of the religious organisation are called *Atirth Siddha*; for example Bhagavan Rishabhadeva's mother Vamadevi.

(3) ***Tirthankar Siddha***—Those who become *Siddha* after attaining the status of *Tirthankar* are called *Tirthankar Siddha*, for example Bhagavan Rishabhadeva.

(4) ***Atirthankar Siddha***—Those who become *Siddha* as normal *kevalis*, for example Gautam Ganadhar

(5) ***Svayam-buddha Siddha***—Those who become *Siddha* after getting enlightened through their own efforts are called *Svayam-buddha Siddha*; for example Bhagavan Mahavir

(6) ***Pratyek-buddha Siddha***—Those who get enlightened after getting inspired by some outside factor are called *Pratyek-buddha Siddha*, for example Nami Rajarishi

(7) ***Buddha-bodhit Siddha***—Those who get enlightened with the help of a discourse of an *acharya* or other accomplished ascetic and consequently become *Siddha* are called *Buddha-bodhit Siddha*, for example Jambu Swami

(8) ***Streeling Siddha***—When a soul in a female body becomes *Siddha* it is called *Streeling Siddha*; for example mother Marudevi and Mrigavati

(9) ***Purushling Siddha***—When a soul in a male body becomes *Siddha* it is called *Purushling Siddha*, for example Emperor Bharat.

(10) ***Napunsakling Siddha***—When a soul in a genderless body becomes *Siddha* it is called *Napunsakling Siddha*; for example Gangeya.

(11) ***Svaling Siddha***—Those who become *Siddha* as Jain ascetics are called *Svaling Siddha*; for example Sudharma.

(12) ***Anyaling Siddha***—Those who become *Siddha* not as Jain ascetics are called *Anyaling Siddha*; for example Valkalchiri.

(13) ***Grihiling Siddha***—Those who become *Siddha* as householders are called *Grihiling Siddha*; for example Marudevi.

(14) ***Ek Siddha***—Those who become *Siddha* one at a time are called *Ek Siddhà*; for example Bhagavan Mahavir.

(15) ***Anek Siddha***—Those who become *Siddha* with others at the same time (2 to 108 in number) are called *Anek Siddha*, for example Bhagavan Rishabhadeva.

### *पुद्गल-पद* PUDGAL-PAD

**२३०. एगा परमाणुपोग्गलाणं वग्गणा, एवं जाव एगा अणंतपएसियाणं खंधाणं वग्गणा। २३१. एगा एगपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा जाव एगा असंखेज्जपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा। २३२. एगा एगसमयठितियाणं पोग्गलाणं वग्गणा जाव एगा असंखेज्जसमयठितियाणं पोग्गलाणं वग्गणा। २३३. एगा एगगुणकालगाणं पोग्गलाणं वग्गणा जाव एगा असंखेज्जगुणकालगाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एगा अणंतगुणकालगाणं पोग्गलाणं वग्गणा। २३४. एवं वण्णा गंधा रसा फासा भाणियव्वा जाव एगा अणंतगुणलुक्खाणं पोग्गलाणं वग्गणा।**

२३०. (एकप्रदेशी) परमाणु पुद्गलों की वर्गणा एक है, इसी प्रकार द्विप्रदेशी, त्रिप्रदेशी यावत् अनन्तप्रदेशी स्कन्धो की वर्गणा एक-एक है। २३१. एकप्रदेशावगाढ (एकप्रदेश पर स्थित) पुद्गलो की वर्गणा एक है, इसी प्रकार दो, तीन यावत् असंख्यप्रदेशावगाढ पुद्गलों की वर्गणा एक-एक है। २३२. एक समय की स्थिति वाले पुद्गलो की वर्गणा एक है। इसी प्रकार दो, तीन यावत् असख्य समय की स्थिति वाले पुद्गलो की वर्गणा एक-एक है। २३३. एक गुण वाले पुद्गलों की वर्गणा एक है। इसी प्रकार तीन यावत् असख्य गुण वाले पुद्गलों की वर्गणा एक-एक है। अनन्त गुण वाले पुद्गलों की वर्गणा एक है। २३४. इसी प्रकार सभी वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्शों के एक गुण वाले यावत् अनन्तगुण रूक्ष स्पर्श वाले पुद्गलों की वर्गणा एक-एक है।

**230.** There is one category of (*ek pradeshi*) *paramanu pudgalas* (ultimate particles of matter with single space-point) In the same way there is one category each of aggregates (*skandh*) of ultimate particles with two, three and so on up to infinite space-points **231.** There is one category of one *pradeshavagadh pudgalas* (particles of matter occupying one space-point). In the same way there is one category each of particles of matter occupying two, three and so on up to infinite space-points.

232. There is one category of one *samayasthiti pudgalas* (particles of matter existing for one *Samaya*) In the same way there is one category each of particles of matter existing for two, three and so on up to innumerable *Samayas* 233. There is one category of *ekagunakrishna pudgalas* (particles having one unit intensity of black appearance). In the same way there is one category each of particles of matter having two, three and so on up to innumerable units of intensity of black appearance. Also there is one category of infinite units of intensity of black appearance 234. In the same way there is one category each of particles of matter having one to infinite units of intensity of all kinds of (*varna*) appearance, *gandh* (smell), *rasa* (taste) and *sparsh* (touch) up to *ruksha sparsh* (coarse touch)

**२३५. एगा जहण्णपएसियाणं खंधाणं वग्गणा। २३६. एगा उक्कस्सपएसियाणं खंधाणं वग्गणा। २३७. एगा अजहण्णुक्कस्सपएसियाणं खंधाणं वग्गणा। २३८. एवं एगा जहण्णोगाहणगाणं खंधाणं वग्गणा। २३९. एगा उक्कोसोगाहणगाणं खंधाणं वग्गणा। २४०. एगा अजहण्णुक्कोसोगाहणगाणं खंधाणं वग्गणा। २४१. एगा जहण्णठितियाणं खंधाणं वग्गणा। २४२. एगा उक्कस्सठितियाणं खंधाणं वग्गणा। २४३. एगा अजहण्णुक्कोसठितियाणं खंधाणं वग्गणा। २४४. एगा जहण्णगुण–कालगाणं खंधाणं वग्गणा। २४५. एगा उक्कस्सगुणकालगाणं खंधाणं वग्गणा। २४६. एगा अजहण्णुक्कस्सगुणकालगाणं खंधाणं वग्गणा। २४७. एवं–वण्ण–गंध–रस–फासाणं वग्गणा भाणियव्वा जाव एगा अजहण्णुक्कस्सगुणलुक्खाणं पोग्गलाणं [ खंधाणं ] वग्गणा।**

२३५. जघन्यप्रदेशी स्कन्धों की वर्गणा एक है। २३६. उत्कृष्टप्रदेशी स्कन्धो की वर्गणा एक है। २३७. अजघन्योत्कृष्ट (न जघन्य, न उत्कृष्ट, किन्तु मध्यम प्रदेशी) स्कन्धो की वर्गणा एक है। २३८. जघन्य अवगाहना वाले स्कन्धो की वर्गणा एक है। २३९. उत्कृष्ट अवगाहना वाले स्कन्धो की वर्गणा एक है। २४०. मध्यम (न जघन्य, न उत्कृष्ट) अवगाहना वाले स्कन्धो की वर्गणा एक है। २४१. जघन्य स्थिति वाले स्कन्धो की वर्गणा एक है। २४२. उत्कृष्ट स्थिति वाले स्कन्धो की वर्गणा एक है। २४३. मध्यम स्थिति वाले स्कन्धो की वर्गणा एक है। २४४. जघन्य गुण काले स्कन्धो की वर्गणा एक है। २४५. उत्कृष्ट गुण काले स्कन्धो की वर्गणा एक है। २४६. मध्यम गुण काले स्कन्धो की वर्गणा एक है। २४७. इसी प्रकार शेष सभी वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्शों के जघन्य गुण, उत्कृष्ट गुण और अजघन्योत्कृष्ट गुण वाले पुद्‌गलो (स्कन्धों) की वर्गणा एक–एक है।

235. There is one category of *jaghanya pradeshi skandhs* (aggregates with minimum number of space-points) 236. There is one category of *utkrisht pradeshi skandhs* (aggregates with maximum number of space-points) 237. There is one category of *ajaghanyotkrisht pradeshi skandhs* (aggregates with medium number of space-points). 238. There is one

category of *jaghanya avagahana skandhs* (aggregates with minimum space-occupation). **239.** There is one category of *utkrisht avagahana skandhs* (aggregates with maximum space-occupation). **240.** There is one category of *ajaghanyotkrisht avagahana skandhs* (aggregates with mean or average space-occupation). **241.** There is one category of *jaghanya sthiti skandhs* (aggregates with minimum period of existence). **242.** There is one category of *utkrisht sthiti skandhs* (aggregates with maximum period of existence). **243.** There is one category of *ajaghanyotkrisht sthiti skandhs* (aggregates with medium period of existence) **244.** There is one category of *jaghanya gunakrishna skandhs* (aggregates with minimum units of intensity of black appearance). **245.** There is one category of *utkrisht gunakrishna skandhs* (aggregates with maximum units of intensity of black appearance) **246.** There is one category of *ajaghanyotkrisht gunakrishna skandhs* (aggregates with average units of intensity of black appearance) **247.** In the same way there is one category each of (aggregates of) particles of matter having minimum, maximum and average units of intensity of all kinds of (*varna*) appearance, *gandh* (smell), *rasa* (taste) and *sparsh* (touch) up to *ajaghanyotkrisht ruksha sparsh* (average coarse touch)

### जम्बूद्वीप–पद JAMBUDVEEP-PAD (SEGMENT OF JAMBU CONTINENT)

**२४८. एगे जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं जाव [ सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डाए, वट्टे तेल्लापूयसंठाण–संठिए, वट्टे रहचक्कवालसंठाणसंठिए, वट्टे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिए, वट्टे पडिपुण्णचंदसंठाणसंठिए, एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलस सहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस अंगुलाइं. ] अद्धंगुलगं च किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं।**

२४८. सब द्वीपो और सब समुद्रों में सबसे मध्य मे जम्बूद्वीप नाम का एक द्वीप है, [वह सबसे छोटा है। वह तेल मे तले हुए पूआ के संस्थान (आकार) जैसा, रथ के चक्र–सस्थान जैसा, कमल–कर्णिका के सस्थान जैसा है तथा परिपूर्ण चन्द्र के सस्थान जैसा वृत्त (गोलाकार) है। वह एक लाख योजन लम्बाई–चौडाई वाला है। उसकी परिधि (घेरा) तीन लाख, सोलह हजार, दो सौ सत्ताईस योजन, तीन कोस, अट्ठाईस, धनुष, तेरह अंगुल और] आधे अगुल से कुछ अधिक है।

**248.** At the center of all continents and all oceans there is a continent named Jambu continent, which is smallest of all. [It has a round shape or structure like that of a *pua* (a discoid shaped doughnut) fried in oil, like that of a chariot-wheel, *kamal-karnika* (pericarp of a lotus) and full

moon Its length and breadth is one hundred thousand *Yojans* (a unit of distance equivalent to four *Kos* or eight miles) each.] Its circumference is slightly more than three hundred sixteen thousand two hundred twenty seven (3,16,227) *Yojans*, three *Kos* (six miles), twenty eight *Dhanush* (a linear measure equivalent to four cubits), thirteen and a half *Angul* (a linear measurement equal to the width of a finger)

### महावीर-निर्वाण-पद MAHAVIR-NIRVANA-PAD (SEGMENT OF MAHAVIR'S NIRVANA)

**२४९. एगे समणे भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउव्वीसाए तित्थगराणं चरमतित्थयरे सिद्धे बुद्धे मुत्ते जाव [ अंतगडे परिणिव्वुडे. ] सव्वदुक्खप्पहीणे।**

२४९. इस अवसर्पिणी काल के चौबीस तीर्थंकरो मे चरम तीर्थंकर श्रमण भगवान महावीर अकेले ही सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत् (ससार का अन्त करने वाले), परिनिर्वृत्त एवं सर्व दुःखो से रहित हुए।

**249.** Shraman Bhagavan Mahavir, the last among the twenty four *Tirthankars* of the current regressive half-cycle of time, became *Siddha* (perfect), *Buddha* (enlightened) and *Mukta* (liberated) [terminating his cycles of rebirth], accomplishing everything and freeing himself of all sorrows alone

### देव-पद DEV-PAD (SEGMENT OF GODS OR DIVINE BEINGS)

**२५०. अणुत्तरोववाइया णं देवा 'एगं रयणिं' उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।**

२५०. अनुत्तरोपपातिक देवो की ऊँचाई एक हाथ की होती है।

**250.** The height of *Anuttaropapatik devas* (the gods of the *Anuttaropapatik* dimension) is one *haath* (cubit).

### नक्षत्र-पद NAKSHATRA-PAD

**२५१. अद्दाणक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते। २५२. चित्ताणक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते। २५३. सातिणक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते।**

२५१. आर्द्रा नक्षत्र का तारा एक है। २५२. चित्रा नक्षत्र का तारा एक है। २५३. स्वाति नक्षत्र का तारा एक है। (अन्य नक्षत्रो के तारों का वर्णन आगे यथास्थान किया गया है।)

**251.** There is one star in *Ardra nakshatra* (Alpha Orionis; the sixth lunar asterism) **252.** There is one star in *Chitra nakshatra* (Spica Virginis; the fourteenth lunar asterism) **253.** There is one star in *Swati nakshatra* (Arcturus; the fifteenth lunar asterism) (Description of other stars has been given at appropriate place later in the book.)

**पुद्गल-पद PUDGAL-PAD (SEGMENT OF MATTER)**

**२५४. एगपदेसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता। २५५. एवं एगसमयठितिया पोग्गला। अणंता पण्णत्ता। २५६. एगगुणकालगा पोग्गला अणंता पण्णत्ता जाव एगगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता।**

२५४. एक प्रवेशावगाढ़ (एक प्रदेश मे स्थित) पुद्गल अनन्त हैं। २५५. एक समय की स्थिति वाले पुद्गल अनन्त हैं। २५६. एक गुण काले पुद्गल अनन्त हैं। इसी प्रकार शेष वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्शों के गुण वाले पुद्गल अनन्त-अनन्त कहे गये हैं। *(इस विषय का विस्तृत विवेचन हिन्दी टीका, पृष्ठ ९१ पर देखें)*

॥ प्रथम स्थान समाप्त ॥

**254.** There are infinite one-*pradeshavagadh-pudgala* (kinds of matter particles occupying one space-point) **255.** There are infinite one-*samaya-sthiti-pudgala* (kinds of matter particles existing for one *Samaya*) **256.** There are infinite one-*gunakrishna-pudgala* (kinds of matter particles having one unit of intensity of black appearance) In the same way there are infinite kinds of matter particles having one unit each of intensity of all kinds of (*varna*) appearance, *gandh* (smell), *rasa* (taste) and *sparsh* (touch) up to *ajaghanyotkrisht ruksha sparsh* (average coarse touch) *(for detailed discussion on this topic refer to Tika by Acharya Shri Atmamarm ji M., p. 91)*

**● END OF PLACE NUMBER ONE ●**

# द्वितीय स्थान

*अध्ययन सार*

- प्रथम स्थान मे चेतन-अचेतन सभी पदार्थों का सग्रहनय की अपेक्षा से एकत्व का प्रतिपादन किया गया है। उसमे 'अद्वैत' प्रधान दृष्टि थी किन्तु प्रस्तुत द्वितीय स्थान मे व्यवहारनय की अपेक्षा से भेद विवक्षा से प्रत्येक द्रव्य, वस्तु या पदार्थ के दो-दो भेद करके द्वैतवादी दृष्टि से प्रतिपादन किया गया है। इस स्थान का प्रथम सूत्र, इस सम्पूर्ण अध्ययन का सार रूप है-**'जदत्थि णं लोगे तं सव्वं दुपओआरं'**-इस लोक मे जो कुछ है, वह सब दो-दो पदो में अवतरित होता है अर्थात् उनका समावेश दो विकल्पों मे हो जाता है। जगत् का प्रत्येक तत्त्व प्रतिपक्ष सहित है। इस वाक्य के अनुसार इस स्थान के चारो उद्देशो मे सम्पूर्ण लोक की सभी वस्तुओ का दो-दो पदों मे वर्णन किया गया है।
- पहले स्थान मे कोई उद्देशक नही था। इस स्थान मे चार उद्देशक हैं।
- इसके **प्रथम उद्देशक** मे सर्वप्रथम द्रव्य के दो भेद बताये है-जीव और अजीव। फिर जीव तत्त्व के दो-दो प्रतिपक्षी भेदो का निरूपण है। अजीव तत्त्व के धर्मास्तिकाय-अधर्मास्तिकाय आदि दो-दो युगलों का वर्णन है। तदनन्तर बन्ध-मोक्ष, पुण्य-पाप, संवर-निर्जरा आदि का वर्णन करने के पश्चात् जीव और अजीव के निमित्त से होने वाली २५ क्रियाओ का निरूपण है। गर्हा और प्रत्याख्यान के दो-दो भेदो का कथन कर मोक्ष के दो साधन बताये गये है। तत्पश्चात् बताया गया है कि केवलि-प्ररूपित धर्म का श्रवण, बोधि की प्राप्ति, शुद्ध सयम-पालन और मतिज्ञानादि पाँचो सम्यग्ज्ञानो की प्राप्ति जाने (ज्ञान) और त्यागे (चरित्र) बिना नही हो सकती, किन्तु दो स्थानो को जानकर उनके त्यागने पर ही होती है।
- **द्वितीय उद्देशक** मे चौबीस दण्डकवर्ती जीवो के वर्तमान भव मे एव अन्य भवो में कर्मों के बन्धन और उनके फल का वेदन बताकर सभी दण्डक वाले जीवो की गति-आगति का वर्णन है।
- **तृतीय उद्देशक** मे दो प्रकार के शब्द और उनकी उत्पत्ति, पुद्गलो का सम्मिलन, भेदन, परिशाटन, पतन, विध्वस आदि के द्वारा पुद्गल के दो-दो प्रकार बताये गये है। तत्पश्चात् आचार और उसके भेद-प्रभेद मे बारह प्रतिमाओं का दो-दो रूप मे कथन किया गया है। कायस्थिति और भवस्थिति का वर्णन कर दो प्रकार की आयु, दो प्रकार के कर्म, निरुपक्रम और सोपक्रम आयु भोगने वाले जीवों का वर्णन है। तदनन्तर क्षेत्र, पर्वत, गुहा, कूट, महाद्रह, महानदी आदि के दो-दो पदो द्वारा जम्बूद्वीपस्थ की भौगोलिक स्थिति का विस्तृत वर्णन किया गया है। अन्त में भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिष्क और कल्पवासी देवो के दो-दो इन्द्रों का निरूपण एवं विमानवासी देवो के सम्बन्ध मे कथन है।
- **चतुर्थ उद्देशक** मे समय, आवलिका से लेकर उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी पर्यन्त काल के सभी भेदों को, तथा ग्राम, नगर से लेकर राजधानी तक के सभी जन-निवासो को, सभी प्रकार के उद्यान-वनादि को, सभी प्रकार के कूप-नदी आदि जलाशयों को, फिर नरक, नारकावास, विमान-विमानवास आदि सभी लोकस्थित पदार्थों को जीव और अजीव रूप बताया गया है।

- तत्पश्चात् दो प्रकार के बन्ध, दो स्थानों से पापकर्म का बन्ध, दो प्रकार की वेदना से पापकर्म की उदीरणा, दो प्रकार से वेदना का वेदन और दो प्रकार से कर्म–निर्जरा का वर्णन है।
- औपमिककालपद के द्वारा पल्योपम, सागरोपम काल का और क्रोध, मानादि पापों के आत्मप्रतिष्ठित और परप्रतिष्ठित होने का वर्णन कर जीव के दो–दो भेदों का निरूपण किया गया है।
- अन्त में त्रस और स्थावर–कायरूप से कर्मों का संचय निरूपण कर पुद्गल के द्विप्रदेशी, द्विप्रदेशावगढ़, द्विसमयस्थितिक तथा दो–दो रूप रस, गन्ध, स्पर्श गुणयुक्त पुद्गलो का वर्णन करके लोक में जीवात्मक एवं अजीवात्मक स्वरूप का कथन है।

## SECOND STHAAN

**INTRODUCTION :**

- Place Number One defined the singularity of all sentient and non-sentient things from the *Samgraha Naya* (generalized viewpoint). There the emphasis was on the non-dualistic angle. But in this second Sthaan, shifting emphasis on dualistic angle, all entities, things or substances have been classified into two classes from the *Vyavahara naya* (particularized viewpoint). The first aphorism of this chapter defines the theme of the chapter—'Whatever there is in this *Lok* (occupied space) falls in two categories.' In other words everything in this universe can be summed up in two alternatives. Every phenomenon in this universe has its antithesis. Following this sentence all things in this universe have been described with two divisions in all the four lessons of this chapter.
- In the first Sthaan there were no lessons In this Sthaan there are four lessons.
- The first lesson starts by stating two kinds of *dravya* (entity)—*jiva* (soul or living being) and *ajiva* (matter) Then there is mention of attributes of *jiva* (soul or living being) in pairs of opposites, kinds of *ajiva* (matter or non-living) in pairs and pairs related to the state of *soul—bandh* (bondage) and *moksha* (liberation), *punya* (merit) and *paap* (demerit), *samvar* (stopping inflow of *karmas*) and *nirjara* (shedding of *karmas*) etc. This is followed by twenty five activities connected with *jiva* and *ajiva*. Then two means of liberation have been mentioned after stating two kinds each of censure and abstainment In conclusion it is mentioned that listening to the religion propagated by the omniscient, attaining of enlightenment, observing pure conduct

and acquiring of five kinds of right knowledge including *mati-jnana* (sensory knowledge) is not possible without knowing (knowledge) and then abandoning (ascetic conduct). All this can only be accomplished by first knowing the two *sthaans* (all the pairs mentioned here) and then abandoning them

- Second lesson contains description of *gati* (incarnation) and *agati* (present incarnation) of beings of all the twenty four *dandaks* (places of suffering) along with the details of their *karmic* bondage and resultant sufferings during the present and other births.
- In the third lesson are mentioned two kinds of sound and their origin besides details about two kinds of *pudgala* (matter) divided on the basis of the processes of combination, disintegration, decay, fall and destruction of matter-particles Thereafter information about conduct and its categories and sub-categories is compiled This includes two divisions each of twelve *pratimas* (special codes and resolutions). After this two kinds of life-span inclusive of duration of body and specific birth is described Other information compiled in pairs include—*karmas*, beings with long and short life-span, description of Jambu continent (its areas, mountains, caves, peaks, oceans, rivers and other geographical features), and description of divine beings (two super lords each of abode dwelling, interstitial, stellar and *kalp*-dwelling gods as also details about celestial vehicle based gods).
- The fourth lesson contains information about *Samaya, Avalika, Utsarpini-Avasarpini* and all the other divisions of time; village, city, capital and all other areas of human habitations; and other areas including gardens, forests, wells, rivers etc This is followed by hell and dwellings in hell, celestial vehicles and dwellings thereof and all other things stationed in the occupied space in their sentient and non-sentient forms
- After this comes description of two kinds each of bondage, bondage from places of suffering, fruition of *karmas* through suffering, suffering of pain and shedding of *karmas*
- In the segment of conceptual time are listed units like *Palyopam* and *Sagaropam* Then comes the two divisions of beings on the basis of self-instigated and other-instigated sins including anger and conceit.
- Stated in the end is the living and non-living form of the occupied space with reference to acquisition of *karma* particles having a dimension and occupation of two space-points for two *Samayas* and having two attributes each of appearance, taste, smell etc

●●

## द्वितीय स्थान
## SECOND STHAAN (Place Number Two)

### प्रथम उद्देशक FIRST LESSON

**द्विपदावतार–पद DVIPADAVATAR-PAD (SEGMENT OF TWO CATEGORIES)**

**१. जदत्थि णं लोगे तं सव्वं दुपओआरं, तं जहा–जीवच्चेव अजीवच्चेव। तसच्चेव, थावरच्चेव। सजोणियच्चेव, अजोणियच्चेव। साउयच्चेव, अणाउयच्चेव। सइंदियच्चेव, अणिंदियच्चेव। सवेयगा चेव, अवेयगा चेव। सपोग्गला चेव, अपोग्गला चेव। संसारसमावण्णगा चेव, असंसारसमावण्णगा चेव। सासया चेव, असासया चेव। आगासे चेव, णोआगासे चेव। धम्मे चेव, अधम्मे चेव। बंधे चेव, मोक्खे चेव। पुण्णे चेव, पावे चेव। आसवे चेव, संवरे चेव। वेयणा चेव, णिज्जरा चेव।**

१. लोक में जो कुछ हैं, वह सब दो–दो पदो मे अवतरित (समाविष्ट) होता है। यथा–जीव और अजीव। त्रस और स्थावर। सयोनिक और अयोनिक। आयुसहित और आयुरहित। इन्द्रियसहित और इन्द्रियरहित। वेदसहित और वेदरहित। पुद्‌गलसहित और पुद्‌गलरहित। ससारसमापन्न और असंसारसमापन्न। शाश्वत और अशाश्वत। आकाश और नोआकाश। धर्म और अधर्म। बन्ध और मोक्ष। पुण्य और पाप। आस्रव और सवर। वेदना और निर्जरा।

1. Whatever there is in this *Lok* (occupied space) falls in two categories, for example—*jiva* (living or soul) and *ajiva* (non-living or matter). *Tras* (mobile) and *sthavar* (immobile) *Sayonik* (with a place of birth) and *ayonik* (without a place of birth) *Sa-ayu* (with a defined life-span) and *anayu* (without a defined life-span) *Sa-indriya* (with sense organs) and *anindriya* (without sense organs) *Sa-veda* (with sexual desire) and *aveda* (without sexual desire) *Sa-pudgala* (with matter) and *apudgala* (without matter) *Samsarasamapanna* (entrapped in cycles of rebirth) and *asamsarasamapanna* (liberated from cycles of rebirth). *Shashvat* (permanent or eternal) and *ashashvat* (transitory). *Aakash* (space) and *noaakash* (other than space). *Dharma* (entity of motion) and *adharma* (entity of inertia). *Bandh* (bondage) and *moksha* (liberation) *Punya* (merit) and *paap* (demerit). *Asrava* (inflow) and *samvar* (blockage of inflow) *Vedana* (suffering caused by *karmas*) and *nirjara* (shedding of *karmas*).

**विवेचन**–संसार के सभी पदार्थ दो राशि समूहों में विभक्त है–जीव और अजीव। तीसरी कोई राशि नहीं है। भारत के वेदान्तानुयायी अनेक दार्शनिक केवल जीव द्रव्य को ही मानते थे–एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म–

केवल एक ब्रह्म है, तो चार्वाक जैसे दार्शनिक केवल पाँच भूतों के अतिरिक्त अन्य किसी तत्त्व को नहीं मानते थे। जैनदर्शन जीव और अजीव दोनों तत्त्वो का अस्तित्व मानता है। यह सम्पूर्ण लोक इन्हीं दो तत्त्वो का विस्तार है। मुख्य शब्दो का अर्थ इस प्रकार है–

**त्रस**–जो उद्देश्यपूर्वक एक स्थान से दूसरे स्थान पर गति करे, द्वीन्द्रिय से लेकर पचेन्द्रिय तक के जीव, ये असंख्यात है। **स्थावर**–जो एक स्थान पर स्थिर है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पतिकायिक जीव। ये अनन्त है।

**सयोनिक**–योनि अर्थात् उत्पत्ति या जन्म लेने का स्थान। योनि सहित सभी संसारी जीव सयोनिक। **अयोनिक**–जिनकी उत्पत्ति न होती हो। देह मुक्त जीव।

**सवेदक**–कामवासना की अनुभूति वाले। **अवेदक**–कामवासना से मुक्त दशम गुणस्थान से आगे के जीव।

**सपुद्गल**–जो कर्म, मन, वाणी और शरीर सहित है। ससारी जीव।

**संसारसमापन्नक**–ससार मे जन्म-मरण करने वाले जीव। **असंसारसमापन्नक**–ससार चक्र से मुक्त।

**शाश्वत**–कर्ममुक्त; सिद्ध; आत्मा। **अशाश्वत**–जो जन्म-मरणादि दशाओ में भ्रमण करते है।

**आकाश**–सभी द्रव्यो का आधारभूत द्रव्य। आकाश द्रव्य अनादि अनन्त है। **नोआकाश**–आकाश द्रव्य के अतिरिक्त अरूपी अजीव द्रव्य।

**धर्म**–जीव और पुद्गल की गति मे सहायक द्रव्य। **अधर्म**–जीव और पुद्गल की स्थिति मे सहायक द्रव्य।

**Elaboration**—All substances in this universe are divided into two groups—living and non-living No third group exists Philosophers from the Vedanta school believe in just one entity, the living (there is only one Brahma) Philosophers from another school, Charvak, accept no entity other than the five *bhoots* (matter entities—earth, water, fire, air and sky) Jain philosophy accepts existence of both living and non-living entities This whole universe is growth and expansion of these two entities.

**TECHNICAL TERMS**

***Tras* (mobile)**—that which is capable of willfully moving from one place to another; this includes all two to five sensed beings, which are innumerable. ***Sthavar* (immobile)**—that which is stationed at one place; this includes earth-bodied, water-bodied, fire-bodied, air-bodied and plant-bodied beings, which are infinite

***Sayonik* (with a place of birth)**—*yoni* means place of birth; those having a place of birth are *sayonik* ***Ayonik* (without a place of birth)**—those who are not born or the liberated ones

***Saveda* (with sexual desire)**—those who are endowed with sexuality; they are of three kinds. ***Aveda* (without sexual desire)**—those who have transcended sexuality; beings beyond tenth *Gunasthaan* (level of spiritual ascendance or level of purity of soul).

***Sa-pudgala* (with matter)**—beings with bondage of *karmas* and endowed with mind, speech and body; worldly beings.

***Samsarasamapanna* (entrapped in cycles of rebirth)**—those who take birth in this world and die. ***Asamsarasamapanna* (liberated from cycles of rebirth)**—those who are free of the cycles of rebirth.

***Shashvat* (permanent or eternal)**—free from *karmic* bondage; *Siddha*; soul entity ***Ashashvat* (transitory)**—those who are caught in the chain of birth and death

***Aakash* (space)**—the entity that supports every other entity or substance, it is without a beginning or an end ***Noaakash* (other than space)**—other non-sentient and formless entities.

***Dharma* (entity of motion)**—that which helps movement of soul and body ***Adharma* (entity of inertia)**—that which helps in the state of rest of soul and of body

### *क्रिया–पद* KRIYA-PAD (SEGMENT OF ACTIVITY)

**२. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–जीवकिरिया चेव, अजीवकिरिया चेव। ३. जीवकिरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–सम्मत्तकिरिया चेव, मिच्छत्तकिरिया चेव। ४. अजीवकिरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–इरियावहिया चेव, संपराइया चेव।**

**५. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–काइया चेव, आहिगरणिया चेव। ६. काइया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–अणुवरय–कायकिरिया चेव, दुपउत्तक–कायकिरिया चेव। ७. आहिगरणिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–संजोयणाहिकरणिया चेव, णिव्वत्तणाहिकरणिया चेव।**

**८. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–पाओसिया चेव, पारियावणिया चेव। ९. पाओसिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–जीवपाओसिया चेव, अजीवपाओसिया चेव। १०. पारियावणिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–सहत्थपारियावणिया चेव, परहत्थपारियावणिया चेव।**

२. क्रिया दो प्रकार की है–जीवक्रिया (जीव की प्रवृत्ति) और अजीवक्रिया (पुद्‌गल वर्गणाओं की कर्मरूप में परिणति)। ३. जीवक्रिया दो प्रकार की है–सम्यक्त्वक्रिया (सम्यग्दर्शन बढाने वाली क्रिया) और मिथ्यात्वक्रिया (मिथ्यादर्शन बढाने वाली अथवा मिथ्यात्वी की क्रिया)। ४. अजीव क्रिया दो प्रकार

की है–ऐर्यापथिकी (अप्रमत्त छद्मस्थ साधु अथवा सयोगी केवली के द्वारा गमनागमन में होने वाली क्रिया) और साम्परायिकी (योग एवं कषायपूर्वक जीव को कर्म बँधाने वाली क्रिया)।

५. क्रिया दो प्रकार की है–कायिकी (शारीरिक क्रिया) और आधिकरणिकी क्रिया (अधिकरण-शस्त्र आदि की प्रवृत्तिरूप)। ६. कायिकी क्रिया दो प्रकार की कही है–अनुपरतकायक्रिया (प्रत्याख्यानरहित व्यक्ति की शारीरिक प्रवृत्ति) और दुष्प्रयुक्त-कायक्रिया (इन्द्रिय और मन के विषयों में आसक्त प्रमत्तमुनि की शारीरिक प्रवृत्ति)। ७. आधिकरणिकी क्रिया दो प्रकार की है–सयोजनाधिकरणिकी (पूर्वनिर्मित भागों को पुन जोड़कर शस्त्र-निर्माण करने की क्रिया) और निर्वर्तनाधिकरणिकी क्रिया (नये सिरे से शस्त्र-निर्माण करने की क्रिया)।

८. क्रिया दो प्रकार की है–प्रादोषिकी (प्राद्वेषिकी-क्रोध, द्वेष एवं मात्सर्यभावयुक्त क्रिया) और पारितापनिकी (दूसरो को सन्ताप व ताडना देने वाली क्रिया)। ९. प्रादोषिकी क्रिया दो प्रकार की है–जीवप्रादोषिकी (जीव के प्रति होने वाला द्वेष एवं मात्सर्य भाव) और अजीवप्रादोषिकी (अजीव के प्रति होने वाला द्वेष भाव)। १०. पारितापनिकी क्रिया दो प्रकार की है–स्वहस्तपारितापनिकी (अपने हाथ से अपने को या दूसरे को पीडा रूप परिताप देना) और परहस्तपारितापनिकी (दूसरे व्यक्ति के हाथ से स्वय को या अन्य को पीडा पहुँचाना)।

2. *Kriya* (activity) is of two kinds—*jivakriya* (activity of soul or living being) and *ajivakriya* (transformation of matter particles into *karmas*) 3. *Jivakriya* is of two kinds—*samyaktva kriya* (activity that enhances right perception/faith) and *mithyatva kriya* (activity that enhances false perception/faith) 4. *Ajivakriya* is of two kinds—*airyapathiki* [careful movement of *apramatt chhadmasth sadhu* (accomplished ascetic who is short of omniscience due to residual *karmic* bondage) or *sayogi kevali* (an omniscient with non-vitiating *karmas*)] and *samparayiki* (activity inspired by association and passions and leading to *karmic* bondage)

5. *Kriya* is of two kinds—*kaayiki kriya* (bodily or physical activity) and *aadhikaraniki kriya* (activity involving tools or weapons). 6. *Kaayiki kriya* is of two kinds—*anuparat-kaaya-kriya* (physical activity of a person who has not resolved to abstain from sinful activities) and *dushprayukata-kaaya-kriya* (physical activity of a pervert ascetic with sensual and mental cravings) 7. *Aadhikaraniki kriya* is of two kinds—*samyojan-aadhikaranik-kriya* (the act of assembling weapon with already made components) and *nirvartan-aadhikaranik-kriya* (act of making weapons from scratch)

8. *Kriya* is of two kinds—*pradveshiki kriya* (hostile action inspired by feelings of anger, aversion and malice) and *paaritapaniki kriya* (punitive action of inflicting punishment and pain on others) 9. *Pradveshiki kriya*

(hostile action) is of two kinds—*jiva-pradveshiki-kriya* (hostility towards living being) and *ajiva-pradveshiki-kriya* (hostility towards non-living things). **10.** *Paaritapaniki kriya* (punitive action) is of two kinds—*svahast-paaritapaniki-kriya* (inflicting pain on self and others with one's own hands) and *parahast-paaritapaniki-kriya* (causing other person to inflict pain on self and others).

**११. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पाणातिवायकिरिया चेव, अपच्चक्खाणकिरिया चेव। १२. पाणातिवायकिरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सहत्थपाणातिवायकिरिया चेव, परहत्थपाणातिवायकिरिया चेव। १३. अपच्चक्खाणकिरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवअपच्चक्खाणकिरिया चेव, अजीवअपच्चक्खाणकिरिया चेव।**

**१४. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आरंभिया चेव, पारिग्गहिया चेव। १५. आरंभिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवआरंभिया चेव, अजीवआरंभिया चेव। १६. पारिग्गहिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवपारिग्गहिया चेव, अजीवपारिग्गहिया चेव।**

११. क्रिया दो प्रकार की है--प्राणातिपात क्रिया (जीव–घात मे होने वाली क्रिया) और अप्रत्याख्यान क्रिया (अविरति–अप्रत्याख्यान से होने वाली क्रिया)। १२. प्राणातिपात क्रिया दो प्रकार की है–स्वहस्तप्राणातिपात क्रिया (अपने हाथ से अपना या दूसरे के प्राणो का नाश करना) और परहस्तप्राणातिपात क्रिया (दूसरे के हाथ से अपने या दूसरे प्राणो का नाश करना)। १३. अप्रत्याख्यान क्रिया दो प्रकार की है–जीव–अप्रत्याख्यान क्रिया (जीवो से सम्बन्धित हिंसादि की अविरति या आसक्ति) और अजीव--अप्रत्याख्यान क्रिया (धन या मद्य माँस आदि अजीव--पदार्थों का सेवन)।

१४. क्रिया दो प्रकार की है–आरम्भिकी क्रिया (हिंसा सम्बन्धी प्रवृत्ति) और पारिग्रहिकी क्रिया (परिग्रह के संग्रह या सरक्षण सम्बन्धी क्रिया)। १५. आरम्भिकी क्रिया दो प्रकार की है–जीव–आरम्भिकी क्रिया (जीवो की हिंसा से सम्बन्धित क्रिया) और अजीव–आरम्भिकी क्रिया (जीव, शरीर अथवा जीव की आकृति आदि के उपमर्दन की तथा अन्य अचेतन वस्तुओ के आरम्भ–समारम्भ की क्रिया)। १६. पारिग्रहिकी क्रिया दो प्रकार की है–जीव–पारिग्रहिकी क्रिया (दासी–दास आदि सचेतन परिग्रह सम्बन्धी क्रिया) और अजीव–पारिग्रहिकी क्रिया (हिरण्य–सुवर्णादि अचेतन परिग्रह से सम्बन्धित क्रिया।)

**11.** *Kriya* is of two kinds—*pranatipat kriya* (act of harming or destroying life) and *apratyakhyan kriya* (indisciplined action in absence of resolve of abstainment) **12.** *Pranatipat kriya* is of two kinds—*svahast-pranatipat kriya* (destroying life of self and others with one's own hands) and *parahast-pranatipat kriya* (causing other person to destroy life of self and others) **13.** *Apratyakhyan kriya* is of two kinds—*jiva-apratyakhyan kriya* (indisciplined action, such as violence, directed at living beings) and

*ajiva-apratyakhyan kriya* (indisciplined action connected with the non-living, such as consuming money, meat, alcohol etc ).

**14.** *Kriya* is of two kinds—*arambhiki kriya* (act of violence) and *paarigrahiki kriya* (act of possession and hoarding) **15** *Arambhiki kriya* is of two kinds—*jiva-arambhiki kriya* (act of violence involving living beings) and *ajiva-arambhiki kriya* (act of violence involving the non-living, this also includes intent of harming material replicas of living things) **16.** *Paarigrahiki kriya* is of two kinds—*jiva-paarigrahiki kriya* (act of possession related to living things like slaves, cattle etc ) and *ajiva-paarigrahiki kriya* (act of possession of non-living things like gold, silver etc )

**१७. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—मायावत्तिया चेव, मिच्छादंसणवत्तिया चेव। १८. मायावत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—आयभाववंकणता चेव, परभाववंकणता चेव। १९. मिच्छादंसणवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—ऊणाइरियमिच्छादंसणवत्तिया चेव, तव्वइरित्तमिच्छादंसणवत्तिया चेव।**

**२०. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—दिट्ठिया चेव, पुट्ठिया चेव। २१. दिट्ठिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवदिट्ठिया चेव, अजीवदिट्ठिया चेव। २२. पुट्ठिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवपुट्ठिया चेव, अजीवपुट्ठिया चेव।**

१७. क्रिया दो प्रकार की है—मायाप्रत्यया क्रिया (माया सेवन से होने वाली क्रिया) और मिथ्यादर्शनप्रत्यया क्रिया (मिथ्यादर्शन से होने वाली क्रिया।) १८. मायाप्रत्यया क्रिया दो प्रकार की है—आत्मभाव-वचना क्रिया (अपने अप्रशस्त भावो को छुपाकर प्रशस्त दिखाने की प्रवृत्ति) और परभाव-वचना क्रिया (कूटलेख आदि के द्वारा दूसरो को ठगने की क्रिया।) १९. मिथ्यादर्शनप्रत्यया क्रिया दो प्रकार की है—ऊनातिरिक्त मिथ्यादर्शनप्रत्यया क्रिया (वस्तु का जैसा यथार्थ स्वरूप है उससे हीन या अधिक कहना, जैसे—शरीरव्यापी आत्मा को अगुष्ठ-प्रमाण कहना। अथवा सर्व लोकव्यापी कहना आदि)। तद्व्यतिरिक्त मिथ्यादर्शनप्रत्यया क्रिया (विद्यमान वस्तु के अस्तित्व को अस्वीकार करना, जैसे—आत्मा है ही नही आदि)।

२०. क्रिया दो प्रकार की है—दृष्टिजा क्रिया (राग के वशीभूत होकर देखना) और स्पृष्टिजा क्रिया (रागपूर्वक स्पर्श करना आदि)। २१. दृष्टिजा क्रिया दो प्रकार की है—जीवदृष्टिजा क्रिया (सजीव वस्तुओ को रागात्मक दृष्टि से देखना) और अजीवदृष्टिजा क्रिया (अजीव वस्तुओ को देखने वाली रागात्मक प्रवृत्ति)। २२. स्पृष्टिजा क्रिया दो प्रकार की है—जीवस्पृष्टिजा क्रिया (मोह या विकार की भावना से किसी जीव को छूना) और अजीवस्पृष्टिजा क्रिया (निर्जीव पदार्थ को विकार भाव से छूना)।

**17.** *Kriya* is of two kinds—*maya-pratyaya kriya* (activity involved in indulgence in deceit) and *mithyadarshan-pratyaya kriya* (activity

involved in indulgence in false perception/faith). **18.** *Maya-pratyaya kriya* (indulgence in deceit) is of two kinds—*atma-bhaava-vanchana kriya* (indulgence in deceit by expressing noble thoughts concealing ill feelings) and *para-bhaava-vanchana kriya* (indulgence in deceit using false documents and other such means). **19.** *Mithyadarshan-pratyaya kriya* is of two kinds—*unatirikta mithyadarshan-pratyaya kriya* (indulgence in false perception/faith by conveying misinformation, like knowing that soul is confined to the body but calling it to be as small as thumb or as large as the universe) and *tadvayatirikta mithyadarshan-pratyaya kriya* (indulgence in false perception/faith by negating the existence of an existing thing, like saying that soul does not exist).

**20.** *Kriya* is of two kinds—*drishtija kriya* (act of looking at a thing with attachment) and *sprishtija kriya* (act of touching a thing with attachment). **21.** *Drishtija kriya* is of two kinds—*jiva-drishtija kriya* (act of looking at a living thing with attachment) and *ajiva-drishtija kriya* (act of looking at a non-living thing with attachment) **22.** *Sprishtija kriya* is of two kinds—*jiva-sprishtija kriya* (act of touching a living thing with attachment) and *ajiva-sprishtija kriya* (act of touching a non-living thing with attachment).

**२३. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पाडुच्चिया चेव, सामंतोवणिवाइया चेव। २४. पाडुच्चिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवपाडुच्चिया चेव, अजीवपाडुच्चिया चेव। २५. सामंतोवणिवाइया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवसामंतोवणिवाइया चेव, अजीवसामंतोवणिवाइया चेव।**

**२६. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—साहत्थिया चेव, णेसत्थिया चेव। २७. साहत्थिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवसाहत्थिया चेव, अजीवसाहत्थिया चेव। २८. णेसत्थिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवणेसत्थिया चेव, अजीवणेसत्थिया चेव।**

२३. क्रिया दो प्रकार की है–प्रातीत्यिकी क्रिया (बाहरी वस्तु के निमित्त या उसके सम्पर्क से होने वाली कषायात्मक प्रवृत्ति) और सामन्तोपनिपातिकी क्रिया (अपनी वस्तुओ के विषय मे दूसरों के द्वारा की गई प्रशसा सुनकर होने वाली कषायपूर्ण प्रवृत्ति)। २४. प्रातीत्यिकी क्रिया दो प्रकार की है–जीवप्रातीत्यिकी क्रिया (जीव के निमित्त से होने वाली क्रिया) और अजीवप्रातीत्यिकी क्रिया (अजीव के निमित्त से होने वाली क्रिया)। २५. सामन्तोपनिपातिकी क्रिया दो प्रकार की है–जीवसामन्तोपनिपातिकी क्रिया (अपनी सजीव वस्तुओं के विषय में लोगों द्वारा की गई प्रशसादि सुनकर होने वाली क्रिया) और अजीवसामन्तोपनिपातिकी क्रिया (अपनी अजीव वस्तुओं के विषय में प्रशंसादि के सुनने पर होने वाली क्रिया)।

२६. क्रिया दो प्रकार की है–स्वहस्तिकी क्रिया (अपने हाथ से होने वाली हिंसारूप क्रिया) और नैसृष्टिकी क्रिया (किसी वस्तु के रखने/फेकने से होने वाली हिंसात्मक क्रिया अथवा दूसरों के द्वारा कराई जाने वाली क्रिया)। २७. स्वहस्तिकी क्रिया दो प्रकार की है–जीव–स्वहस्तिकी क्रिया (अपने हाथो से किसी जीव को मारने की क्रिया) और अजीव–स्वहस्तिकी क्रिया (अपने हाथ से निर्जीव शस्त्रादि के द्वारा किसी जीव को मारने की क्रिया)। २८. नैसृष्टिकी क्रिया दो प्रकार की है–जीव–नैसृष्टिकी क्रिया (जीवो को रखने/फेकने से होने वाली क्रिया) और अजीव–नैसृष्टिकी क्रिया (अजीव को, पत्थर, धनुष वाण आदि फेकने से होने वाली क्रिया)।

**23.** *Kriya* is of two kinds—*praatityiki kriya* (passionate indulgence inspired by an external thing or contact with it) and *samantopanipatiki kriya* (passionate indulgence inspired by the praise of one's own possession by others) **24.** *Praatityiki kriya* is of two kinds—*jiva-praatityiki kriya* (passionate indulgence inspired by an external living thing or contact with it) and *ajiva-praatityiki kriya* (passionate indulgence inspired by an external non-living thing or contact with it) **25.** *Samantopanipatiki kriya* is of two kinds—*jiva-samantopanipatiki kriya* (passionate indulgence inspired by the praise of one's own living possession by others) and *ajiva-samantopanipatiki kriya* (passionate indulgence inspired by the praise by one's own non-living possession others of)

**26.** *Kriya* is of two kinds—*svahastiki kriya* (violent activity performed by self) and *naishrishtiki kriya* (violent activity involved in placing or throwing a thing, also violent activity performed through others) **27.** *Svahastiki kriya* is of two kinds—*jiva-svahastiki kriya* (harming or killing a living being with one's own hands) and *ajiva-svahastiki kriya* (harming or killing a living being with one's own hands using an instrument or weapon that is non-living) **28.** *Naishrishtiki kriya* is of two kinds—*jiva-naishrishtiki kriya* (violent activity involved in placing or throwing a thing) and *ajiva-naishrishtiki kriya* (violent activity involved in placing or throwing a non-living thing like stone, arrow etc ).

**२९. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–आणवणिया चेव, वेयारणिया चेव। ३०. आणवणिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–जीवआणवणिया चेव, अजीवआणवणिया चेव। ३१. वेयारणिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–जीववेयारणिया चेव, अजीववेयारणिया चेव।**

२९. क्रिया दो प्रकार की है–आज्ञापनी क्रिया (सावद्य कार्य की आज्ञा देने से होने वाली क्रिया) और वैदारिणी क्रिया (किसी वस्तु के विदारण छेदन–भेदन से होने वाली क्रिया)। ३०. आज्ञापनी क्रिया दो प्रकार की है–जीव–आज्ञापनी क्रिया (जीव के विषय मे आज्ञा देना) और अजीव–आज्ञापनी क्रिया (अजीव के विषय मे आज्ञा देने, अथवा हिंसाजनक वस्तु मँगवाने से होने वाली क्रिया)।

३१. वैदारिणी क्रिया प्रकार की है–जीव–वैदारिणी क्रिया (जीव के विदारण से होने वाली क्रिया) और अजीव–वैदारिणी क्रिया (क्रोध, द्वेषवश अजीव के विदारण से होने वाली क्रिया)। (वृत्तिकार ने विदारण के तीन अर्थ किये है–विदारण–फोड़ना, विचारण–द्व्यर्थक भाषा बोलना तथा वितारण–कपट आचरण)।

**29.** *Kriya* is of two kinds—*ajnapani kriya* (act of giving command or preaching to indulge in violence) and *vaidarini kriya* (act of piercing or tearing something). **30.** *Ajnapani kriya* is of two kinds—*jiva-ajnapani kriya* (giving command to indulge in violence against a living being) and *ajiva-ajnapani kriya* (giving command to indulge in violence associated with the non-living or to order to fetch some instrument of violence). **31.** *Vaidarini kriya* is of two kinds—*jiva-vaidarini kriya* (act of piercing or tearing a living being) and *ajiva-vaidarini kriya* (act of piercing or tearing something non-living under the influence of anger or aversion). [the commentator (*Vritti*) has given three meanings of the term *veyaran—vidaran* = to pierce; *vicharan* = to speak ambiguous or confusing language, *vitaran* = to deceive]

**३२. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–अणाभोगवत्तिया चेव, अणवकंखवत्तिया चेव। ३३. अणाभोगवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–अणाउत्तआइयणता चेव, अणाउत्तपमज्जणता चेव। ३४. अणवकंखणवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–आयसरीरअणवकंखवत्तिया चेव, परसरीरअणवकंखवत्तिया चेव।**

**३५. दो किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–पेज्जवत्तिया चेव, दोसवत्तिया चेव। ३६. पेज्जवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–मायावत्तिया चेव, लोभवत्तिया चेव। ३७. दोसवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–कोहे चेव, माणे चेव।**

३२. क्रिया दो प्रकार की है–अनाभोगप्रत्यया क्रिया (अज्ञान, प्रमाद से होने वाली क्रिया) और अनवकाक्षाप्रत्यया क्रिया (असावधानीपूर्वक की जाने वाली हिंसक क्रिया)। ३३. अनाभोगप्रत्यया क्रिया दो प्रकार की है–अनायुक्त आदानता क्रिया (असावधानीपूर्वक वस्त्र आदि लेना) और अनायुक्त प्रमार्जनता क्रिया (असावधानी से वस्त्र, पात्र आदि का प्रमार्जन करना)। ३४. अनवकांक्षाप्रत्यया क्रिया दो प्रकार की है–आत्मशरीर–अनवकांक्षाप्रत्यया क्रिया (असावधानीपूर्वक अपने शरीर से होने वाली क्रिया) और पर–शरीर अनवकांक्षाप्रत्यया क्रिया (दूसरों के शरीर की परवाह न कर उन्हे हत्या आदि के लिए प्रेरित करना)।

३५. क्रिया दो प्रकार की है–प्रेयःप्रत्यया क्रिया (राग भाव से अनुप्रेरित क्रिया) और द्वेषप्रत्यया क्रिया। (द्वेष के निमित्त से होने वाली क्रिया)। ३६. प्रेयःप्रत्यया क्रिया दो प्रकार की है–मायाप्रत्यया क्रिया (माया से प्रेरित रागात्मक क्रिया) और लोभप्रत्यया क्रिया (लोभ के निमित्त से होने वाली क्रिया)। ३७. द्वेषप्रत्यया क्रिया दो प्रकार की है–क्रोधप्रत्यया क्रिया (क्रोध के वश होकर की जाने वाली द्वेषपूर्ण क्रिया) और मानप्रत्यया क्रिया (मान के निमित्त से होने वाली क्रिया)।

32. *Kriya* is of two kinds—*anabhoga-pratyaya kriya* (action out of ignorance or stupor) and *anavakanksha-pratyaya kriya* (careless violent act) 33. *Anabhoga-pratyaya kriya* is of two kinds—*anayukta aadanata kriya* (to be careless in taking clothes, bowls and other things) and *anayukta pramarjanata kriya* (to be careless in cleaning clothes, bowls and other things). 34 *Anavakanksha-pratyaya kriya* is of two kinds—*atmasharira anavakanksha-pratyaya kriya* (careless violent act with disregard for one's own body) and *parasharira anavakanksha-pratyaya kriya* (careless violent act with disregard for others; also to provoke others to indulge in violence with disregard for their body).

35. *Kriya* is of two kinds—*preyah-pratyaya kriya* (action inspired by attachment) and *dvesh-pratyaya kriya* (action inspired by aversion). 36. *Preyah-pratyaya kriya* is of two kinds—*maya-pratyaya kriya* (action inspired by deceit) and *lobh-pratyaya kriya* (action inspired by greed). 37. *Dvesh-pratyaya kriya* is of two kinds—*krodh-pratyaya kriya* (action inspired by anger) and *maan-pratyaya kriya* (action inspired by conceit).

**विवेचन**—प्रस्तुत क्रियापद मे क्रियाओं का विस्तृत वर्गीकरण है। प्रवृत्ति, चेष्टा या हलन-चलन रूप परिस्पन्दन को क्रिया कहते है। क्रिया जीव मे भी होती है और अजीव मे भी। इसलिए क्रिया के मुख्य दो भेद किये हैं-जीव क्रिया और अजीव क्रिया।

जीव की क्रिया-प्रवृत्ति के तीन स्रोत हैं, मन, वचन एव काया। फिर प्रवृत्ति के प्रेरक-राग-द्वेष एव प्रयोजन उद्देश्य के आधार पर इनके अनेक भेद हो जाते है। प्रस्तुत सूत्र मे विभिन्न दृष्टियों से क्रियाओ के भेद संग्रहीत हैं। क्रियाओ के तीन प्रकार के वर्गीकरण मिलते है। सूत्रकृताग (२/२/२) मे क्रिया के १३ भेद मिलते है। प्रस्तुत सूत्र मे मुख्य-गौण रूप मे क्रियाओ के बहत्तर भेद बताये हैं। तत्त्वार्थसूत्र (६/६) में २५ क्रियाओ के नाम मिलते है। इसके अतिरिक्त प्रज्ञापना (पद २२) तथा भगवतीसूत्र मे भी विविध क्रियाओं का विवरण प्राप्त होता है।

**Elaboration**—This *kriya-pad* (segment of activity) contains detailed classification of actions *Kriya* includes indulgence, physical activity, movement, vibration etc As the living and non-living both have activity, the first and broad classification of action is activity associated with the living and that associated with the non-living.

There are three sources of activity in a being—mind, speech and body. After this comes the role of inspiring factors like attachment, aversion, purpose etc All these call for a variety of categories of action This book compiles numerous categories of *kriyas* from a variety of angles. The three important classifications of *kriya* are : 13 types mentioned in

*Sutrakritanga* (2/2/2); 72 types mentioned in this *Sthananga Sutra*, and 25 types mentioned in *Tattvarth Sutra* (6/6) Besides these some descriptions of *kriya* are also available in *Prajnapana Sutra* (22) and *Bhagavati Sutra*

### गर्हा-पद GARHA-PAD (SEGMENT OF REPENTANCE)

**३८. दुविहा गरिहा पण्णत्ता, तं जहा—मणसा वेगे गरहति, वयसा वेगे गरहति। अहवा, गरहा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—दीहं वेगे अद्धं गरहति, रहस्सं वेगे अद्धं गरहति।**

३८. गर्हा (भूल से हुए अशुभ आचरण के प्रति पश्चात्ताप अथवा ग्लानि का भाव) दो प्रकार की है—कुछ लोग मन से गर्हा (अपने पाप की निन्दा) करते है (किन्तु वचन से नहीं) और कुछ लोग वचन से गर्हा करते है (किन्तु मन से नहीं)। (अथवा इस सूत्र का यह आशय भी निकलता है कि कोई न केवल मन से अपितु वचन से भी गर्हा करते है और कोई न केवल वचन से किन्तु मन से भी गर्हा करते हैं।) गर्हा दो प्रकार की है—कुछ लोग दीर्घकाल (जीवन पर्यन्त या जीवनभर के पापों की) तक गर्हा करते हैं और कुछ लोग अल्पकाल तक (कुछ काल तक किये गये पापों की) गर्हा करते हैं।

**38.** *Garha* (remorse and repentance for bad conduct committed out of ignorance) is of two kinds—some people repent mentally (not verbally) and some verbally (not mentally) Another interpretation is that some people repent not just mentally but verbally also and some do so not just verbally but mentally as well Also *garha* (remorse and repentance for bad conduct committed out of ignorance) is of two kinds—some people repent for a long period (for sins committed throughout one's lifetime) and some for a short period (for sins committed during a specific short period).

**विवेचन**—टीकाकार ने मन से गर्हा के सम्बन्ध मे प्रसन्नचन्द्र राजर्षि का तथा केवल वचन से गर्हा के सन्दर्भ में अंगारमर्दक आचार्य का दृष्टान्त उद्धृत किया है।

**Elaboration**—The commentator (*Tika*) has quoted the example of Prasannachandra Rajarshi in connection with mental repentance and that of Angaramardak in connection with verbal repentance.

### प्रत्याख्यान-पद PRATYAKHYAN-PAD (SEGMENT OF ABSTAINMENT)

**३९. दुविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणसा वेगे पच्चक्खाति, वयसा वेगे पच्चक्खाति। अहवा, पच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दीहं वेगे अद्धं पच्चक्खाति, रहस्सं वेगे अद्धं पच्चक्खाति।**

३९. प्रत्याख्यान (अशुभ कार्य का त्याग) दो प्रकार का है—कुछ लोग मन से प्रत्याख्यान करते हैं और कुछ लोग वचन से प्रत्याख्यान करते हैं। अथवा प्रत्याख्यान दो प्रकार का है—कुछ लोग दीर्घकाल—जीवनभर के लिए प्रत्याख्यान करते हैं और कुछ लोग अल्पकाल के लिए प्रत्याख्यान करते हैं।

**39.** *Pratyakhyan* (resolve to abstain from bad or sinful deed) is of two kinds—some people abstain mentally and some verbally. Also *pratyakhyan* (resolve to abstain from bad or sinful deed) is of two kinds—some people abstain for a long period (for sins committed throughout one's lifetime) and some for a short period (for sins committed during a specific short period)

**विवेचन**—प्रत्याख्यान केवल भविष्य मे होने वाली अशुभ क्रियाओ का ही होता है। पचमहाव्रत धारण तथा अन्तिम आराधना रूप सथारा दीर्घकालिक प्रत्याख्यान है। सामायिक, पौषधव्रत आदि अल्पकालिक प्रत्याख्यान है।

**Elaboration**—Resolve to abstain is only about future Taking the five great vows or the ultimate vow (*santhara*) are long term resolves. Practices like *Samayik* (Jain system of periodic meditation performed in slots of 48 minutes) and *Paushadh* (partial ascetic vow under which a householder lives like an initiated ascetic for a specific period) are short term resolves

### *विद्या–चरण–पद* VIDYA-CHARAN-PAD (SEGMENT OF KNOWLEDGE AND CONDUCT)

**४०. दोहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं वीतिवएज्जा, तं जहा—विज्जाए चेव चरणेण चेव।**

४०. विद्या (ज्ञान एव दर्शन) और चरण (चारित्र) इन दोनो स्थानो से सम्पन्न अनगार (साधु) अनादि-अनन्त तथा दीर्घ मार्ग वाले एव चार गतियो वाले ससाररूपी गहन वन को पार करता है, अर्थात् ज्ञानयुक्त क्रिया से मुक्त होता है।

**40.** An *anagar* (ascetic) endowed with two *sthaans* (placements)—*vidya* (knowledge and perception/faith) and *charan* (conduct) crosses the long path, without a beginning or an end, through the dense forest that is this world with cycles of rebirth in four *gatis* (genuses) In other words, liberation is accomplished through action performed with right knowledge

### *आरम्भ–परिग्रह–अपरित्याग–पद* ARAMBH-PARIGRAHA-APARITYAG-PAD (SEGMENT OF NON-ABANDONING OF ILL-INTENT AND TENDENCY TO POSSESS)

**४१. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव (१)। ४२. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलं बोधिं बुज्झेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव (२)। ४३. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलं मुंडे भवित्ता**

अगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव (३)। ४४. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव (४)। ४५. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव (५)। ४६. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव (६)। ४७. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलमाभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव (७)। ४८. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलं सुयणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव (८)। ४९. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलं ओहिणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव (९)। ५०. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलं मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव (१०)। ५१. दो ठाणाइं अपरियाणेत्ता आया णो केवलं केवलणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—आरंभे चेव, परिग्गहे चेव (११)।

४१. आरम्भ और परिग्रह–दो स्थानों को जाने और उनका त्याग किये बिना आत्मा केवलि–भाषित धर्म को नही सुन पाता (१)। ४२. आरम्भ और परिग्रह–दो स्थानो को जाने और छोडे बिना आत्मा विशुद्ध बोधि–(सम्यक् दर्शन) का अनुभव नहीं कर पाता (२)। ४३. आरम्भ और परिग्रह–दो स्थानो को जाने और छोडे बिना आत्मा मुण्डित होकर घर से (ममता–मोह छोड़कर) अनगारिता (साधुत्व) को नही पाता (३)। ४४. आरम्भ और परिग्रह–दो स्थानो को जाने और छोडे बिना आत्मा सम्पूर्ण ब्रह्मचर्यवास को प्राप्त नही होता (४)। ४५. आरम्भ और परिग्रह–दो स्थानों को जाने और छोडे बिना आत्मा सम्पूर्ण सयम (पचमहाव्रत रूप धर्म) को ग्रहण नही कर पाता (५)। ४६. आरम्भ और परिग्रह–दो स्थानो को जाने और छोडे बिना आत्मा सम्पूर्ण संवर द्वारा संवृत्त नहीं होता (६)। ४७. आरम्भ और परिग्रह–दो स्थानो को जाने और छोडे बिना आत्मा विशुद्ध आभिनिबोधिक ज्ञान (निर्मल मतिज्ञान) को प्राप्त नहीं कर पाता (७)। ४८. आरम्भ और परिग्रह–दो स्थानों को जाने और छोडे बिना आत्मा विशुद्ध श्रुतज्ञान को प्राप्त नहीं कर पाता (८)। ४९. आरम्भ और परिग्रह–दो स्थानों को जाने और छोड़े बिना आत्मा विशुद्ध अवधिज्ञान को प्राप्त नहीं कर पाता (९)। ५०. आरम्भ और परिग्रह–दो स्थानो को जाने और छोडे बिना आत्मा विशुद्ध मन.पर्यवज्ञान को प्राप्त नही कर पाता (१०)। ५१. आरम्भ और परिग्रह–दो स्थानो को जाने और छोडे बिना आत्मा विशुद्ध केवलज्ञान को प्राप्त नही कर पाता (११)।

**41.** Without knowing and abandoning two *sthaans* (attitudes) a soul is not able to listen to the Sermon of the Omniscient (1), they are—*arambh* (ill-intent; occupation that causes harm to beings) and *parigraha* (attachment for possessions) In the same way, without knowing and abandoning *arambh* and *parigraha* a soul is not able to—**42.** experience pure enlightenment (right knowledge) (2). **43.** tonsure his head and

renounce his household (discarding attachment for his family) to become a homeless ascetic (*anagar*) (3). **44.** observe complete celibacy (4). **45.** embrace complete ascetic-discipline (in the form of five great vows) (5) **46.** accomplish complete *samvar* (stopping of the inflow of *karmas*) (6). **47.** acquire pure *abhinibodhik-jnana* or *mati-jnana* (sensory knowledge or to know the apparent form of things appearing before the soul by means of five sense organs and the mind) (7). **48.** acquire pure *shrut-jnana* (scriptural knowledge) (8) **49.** acquire pure *avadhi-jnana* (extrasensory perception of the physical dimension; something akin to clairvoyance) (9) **50.** acquire pure *manahparyav-jnana* (extrasensory perception and knowledge of thought process and thought-forms of other beings, something akin to telepathy) (10) **51.** acquire pure *keval-jnana* (omniscience) (11).

### *आरम्भ–परिग्रह–परित्याग पद* ARAMBH-PARIGRAHA-PARITYAG-PAD (SEGMENT OF ABANDONING OF SINFUL ACTIVITY AND TENDENCY TO POSSESS)

**५२. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, तं जहा–आरंभे चेव, परिग्गहे चेव। ५३. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलं बोधिं बुज्झेज्जा, तं जहा–आरंभे चेव, परिग्गहे चेव। ५४. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा, तं जहा–आरंभे चेव, परिग्गहे चेव। ५५. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा, तं जहा–आरंभे चेव, परिग्गहे चेव। ५६. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, तं जहा–आरंभे चेव, परिग्गहे चेव। ५७. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, तं जहा–आरंभे चेव, परिग्गहे चेव। ५८. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलमाभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा–आरंभे चेव, परिग्गहे चेव। ५९. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलं सुयणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा–आरंभे चेव, परिग्गहे चेव। ६०. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलं ओहिणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा–आरंभे चेव, परिग्गहे चेव। ६१. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलं मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा–आरंभे चेव, परिग्गहे चेव। ६२. दो ठाणाइं परियाणेत्ता आया केवलं केवलणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा–आरंभे चेव, परिग्गहे चेव।**

५२. आरम्भ और परिग्रह–इन दो स्थानो को जानकर और उनका त्यागकर आत्मा केवलि–भाषित धर्म को सुन पाता है (१)। ५३ आरम्भ और परिग्रह–इन दो स्थानो को जानकर और त्यागकर आत्मा इसी प्रकार विशुद्धबोधि को प्राप्त करता है (२)। ५४. आरम्भ और परिग्रह–इन दो स्थानो को जानकर और त्यागकर आत्मा मुण्डित होकर गृहवास का त्यागकर सम्पूर्ण अनगार अवस्था को पाता है (३)। ५५. आरम्भ और परिग्रह–इन दो स्थानो को जानकर और त्यागकर आत्मा सम्पूर्ण ब्रह्मचर्यवास धारण करता है (४)। ५६. आरम्भ और परिग्रह–इन दो स्थानो को जानकर और त्यागकर आत्मा सम्पूर्ण

संयम द्वारा संवृत्त होता है (५)। ५७. आरम्भ और परिग्रह–इन दो स्थानों को जानकर और त्यागकर आत्मा सम्पूर्ण संवर द्वारा संवृत्त होता है (६)। ५८. आरम्भ और परिग्रह–इन दो स्थानों को जानकर और त्यागकर आत्मा विशुद्ध आभिनिबोधिक ज्ञान को प्राप्त करता है (७)। ५९. आरम्भ और परिग्रह–इन दो स्थानों को जानकर और त्यागकर आत्मा विशुद्ध श्रुतज्ञान को प्राप्त करता है (८)। ६०. आरम्भ और परिग्रह–इन दो स्थानों को जानकर और त्यागकर विशुद्ध अवधिज्ञान को प्राप्त करता है (९)। ६१. आरम्भ और परिग्रह–इन दो स्थानों को जानकर और त्यागकर आत्मा विशुद्ध मनःपर्यवज्ञान को प्राप्त करता है (१०)। ६२. आरम्भ और परिग्रह–इन दो स्थानों को जानकर और त्यागकर ही आत्मा विशुद्ध केवलज्ञान को प्राप्त करता है (११)।

**52.** By knowing and abandoning two *sthaans* a soul is able to listen to the Sermon of the Omniscient (1), they are—*arambh* (ill-intent; activity that causes harm to beings) and *parigraha* (tendency to possess). In the same way by knowing and abandoning *arambh* and *parigraha* a soul is able to—**53.** experience pious enlightenment (right knowledge) (2). **54.** tonsure his head and renounce his household to become a homeless ascetic (*anagar*) (3). **55.** observe complete celibacy (4). **56.** embrace complete ascetic-discipline (in the form of five great vows) (5). **57.** accomplish complete *samvar* (stopping of the inflow of *karmas*) (6). **58.** acquire pure *abhinibodhik jnana* or *mati-jnana* (sensory knowledge or to know the apparent form of things appearing before the soul by means of five sense organs and the mind) (7) **59.** acquire pure *shrut-jnana* (scriptural knowledge) (8). **60.** acquire pure *avadhi-jnana* (extrasensory perception of the physical dimension; something akin to clairvoyance) (9) **61.** acquire pure *manahparyav jnana* (extrasensory perception and knowledge of thought process and thought-forms of other beings, something akin to telepathy) (10) **62.** acquire pure *keval-jnana* (omniscience) (11).

## श्रवण–ग्रहण–अधिगमपद SHRAVAN-GRAHAN-ADHIGAM-PAD (SEGMENT OF ATTAINMENT THROUGH LISTENING AND ACCEPTING)

६३. दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, तं जहा–सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव। ६४. दोहिं ठाणेहिं आया केवलं बोधिं बुज्झेज्जा, तं जहा–सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव। ६५. दोहिं ठाणेहिं आया केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा, तं जहा–सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव। ६६. दोहिं ठाणेहिं आया केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा, तं जहा–सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव। ६७. दोहिं ठाणेहिं आया केवलं संजमेणं संजमेज्जा, तं जहा–सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव। ६८. दोहिं ठाणेहिं आया केवलं संवरेणं संवरेज्जा,

तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव। ६९. दोहिं ठाणेहिं आया केवलमाभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव। ७०. दोहिं ठाणेहिं आया केवलं सुयणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव। ७१. दोहिं ठाणेहिं आया केवलं ओहिणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव। ७२. दोहिं ठाणेहिं आया केवलं मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव। ७३. दोहिं ठाणेहिं आया केवलं केवलणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा—सोच्चच्चेव, अभिसमेच्चच्चेव।

६३. गुरुजनो आदि के मुख से शास्त्र वचन सुनकर तथा उसे भली प्रकार ग्रहण (धारण) करके इन दो स्थानो (कारणों) से आत्मा केवलि-भाषित धर्म को प्राप्त करता है (१)। ६४. इसी प्रकार सुनकर और ग्रहण कर विशुद्धबोधि को प्राप्त करता है (२)। ६५. सुनने और ग्रहण करने से आत्मा मुण्डित होकर और घर का त्यागकर सम्पूर्ण अनगारिता को पाता है (३)। ६६. सुनकर और ग्रहण कर आत्मा सम्पूर्ण ब्रह्मचर्यवास को प्राप्त करता है (४)। ६७. सुनकर और ग्रहण कर आत्मा सम्पूर्ण संयम से युक्त होता है (५)। ६८. सुनकर और ग्रहण कर आत्मा सम्पूर्ण संवर से संवृत्त होता है (६)। ६९. सुनकर और ग्रहण कर आत्मा विशुद्ध आभिनिबोधिक (मतिज्ञान) ज्ञान को प्राप्त करता है (७)। ७०. सुनकर और ग्रहण कर आत्मा विशुद्ध श्रुतज्ञान को प्राप्त करता है (८)। ७१. सुनकर और ग्रहण कर आत्मा विशुद्ध अवधिज्ञान प्राप्त करता है (९)। ७२. सुनकर और ग्रहण कर आत्मा विशुद्ध मन पर्यवज्ञान को प्राप्त करता है (१०)। ७३. धर्म को सुनकर एव ग्रहण करके ही आत्मा विशुद्ध केवलज्ञान को प्राप्त करता है (११)।

**63.** By following two *sthaans* a soul is able to listen to the Sermon of the Omniscient (1), they are—listening to the scriptural discourse of preceptors and sincerely accepting and following the same In the same way by listening to the scriptural discourse of preceptors and sincerely accepting and following the same a mundane soul is able to— **64.** experience pious enlightenment (right knowledge) (2) **65.** tonsure his head and renounce his household to become a homeless ascetic (*anagar*) (3) **66.** observe complete celibacy (4). **67.** embrace complete ascetic-discipline (in the form of five great vows) (5). **68.** accomplish complete *samvar* (stopping of inflow of *karmas*) (6) **69.** acquire pure *abhinibodhik-jnana* or *mati-jnana* (sensory knowledge or to know the apparent form of things appearing before the soul by means of five sense organs and the mind) (7) **70.** acquire pure *shrut-jnana* (scriptural knowledge) (8). **71.** acquire pure *avadhi-jnana* (extrasensory perception of the physical dimension, something akin to clairvoyance) (9) **72.** acquire pure *manahparyav-jnana* (extrasensory perception and knowledge of thought process and thought-forms of other beings, something akin to telepathy) (10). **73.** acquire pure *keval-jnana* (omniscience) (11).

चित्र परिचय ३

Illustration No. 3
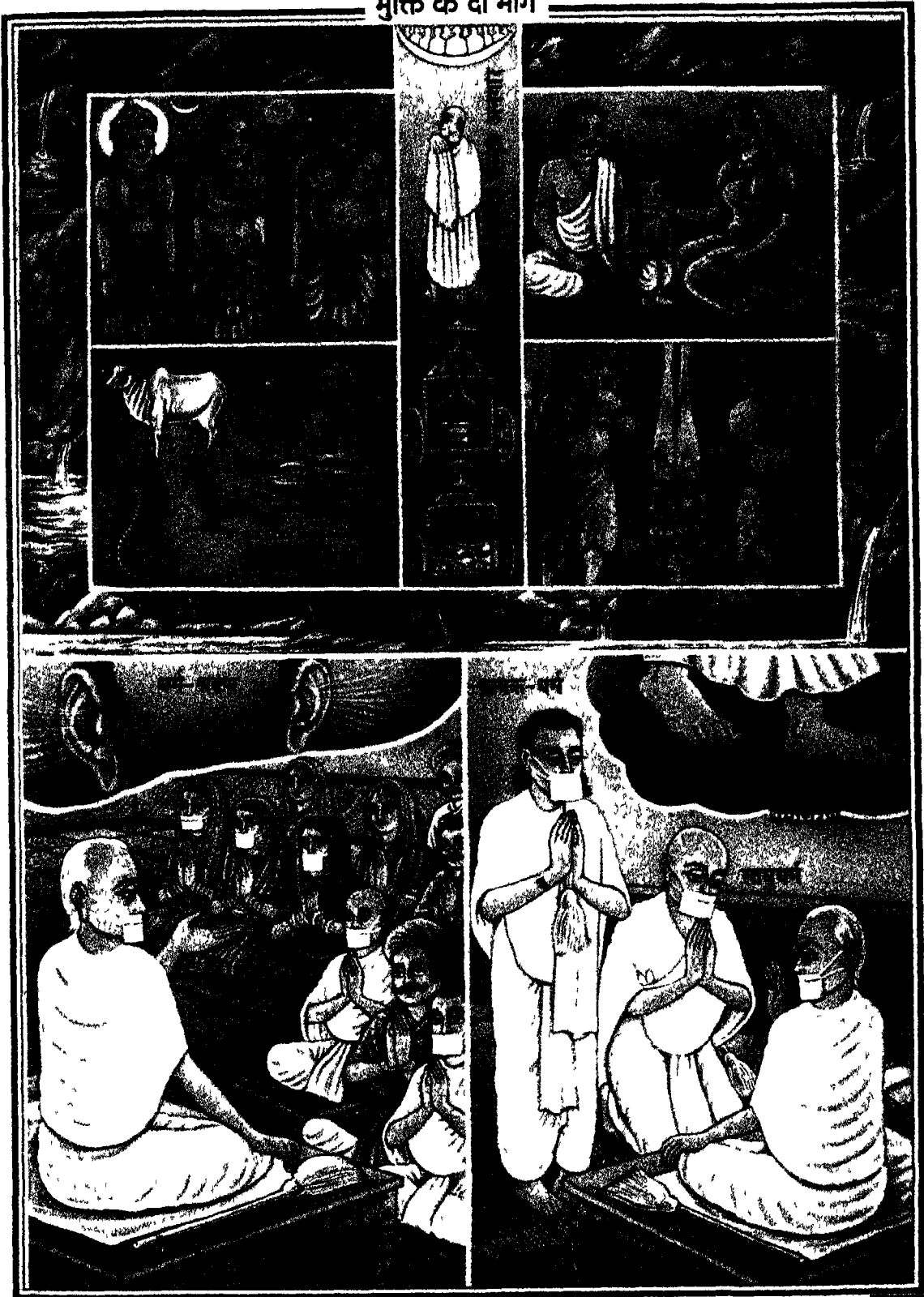
## मुक्ति के दो मार्ग

१ यह ससार एक ऐसा भयानक जगल है, जिसका कोई आदि अन्त और छोर नही है (१) देवगति, (२) मनुष्यगति, (३) तिर्यचगति, और (४) नरकगति। इस प्रकार चार गति रूप इसके चार विशाल कोने है। मुनिजन ज्ञान अर्थात् विद्या (शास्त्र) तथा चारित्र अर्थात् सयमरूपी रथ का सहारा लेकर इस अपार भव अटवी को पार कर अनन्त सुखमय सिद्धगति को प्राप्त कर लेते है। चित्र मे श्रुत रथ मे शास्त्र तथा चारित्र रथ मे सयमोपकरण बताये है।

*स्थान २ सूत्र ४०*

२ मोक्ष प्राप्ति का मुख्य साधन धर्म है। धर्म प्राप्ति के दो मार्ग है-(१) **धर्म-श्रवण**-सद्‌गुरुओ के मुख द्वारा कानो से धर्मशास्त्र का श्रवण करना, तथा (२) **धर्म-ग्रहण**-गुरुजनो से सयम व्रत व तप रूप चारित्र धर्म का ग्रहण कर कठोर सयम पथ पर चलना मुक्ति का दूसरा मार्ग है। चित्र मे धर्म का श्रवण तथा ग्रहण बताया है।

*स्थान २ सूत्र ६३*

## TWO PATHS OF LIBERATION

1 This mundane existence is like a terrible forest that has neither a beginning nor an end It has four prominent sections in the form of four genuses—(1) Divine birth, (2) Human birth, (3) Animal birth, and (4) Infernal birth Ascetics or sages cross this jungle of rebirths and attain blissful *Siddha* state with the help of the chariots of *shrut* (knowledge of scriptures) and *charitra* (ascetic-discipline) The illustration shows scriptures in the chariot of *Shrut* and ascetic equipment in the chariot of conduct

*—Sthaan 2, Sutra 40*

2 *Dharma* is the primary means of liberation There are two ways of learning religion—(1) *Dharma-shravan* or to listen to the discourse on scriptures by a learned guru, and (2) *Dharma-grahan*—to accept the code of conduct comprising of discipline, vows and austerities from a guru and take to the path of strict ascetic discipline The illustration shows the two

*—Sthaan 2, Sutra 63*

समा (कालचक्र)–पद SAMA-PAD (SEGMENT OF TIME CYCLE)

**७४. दो समाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—ओसप्पिणी समा चेव, उस्सप्पिणी समा चेव।**

७४. समा (काल मर्यादा) दो प्रकार की होती है–अवसर्पिणी समा (अवसर्पिणी काल का समय) और उत्सर्पिणी समा (उत्सर्पिणी काल का समय)।

**74.** *Sama* (time cycle) is of two kinds—*avasarpini-sama* (the period of regressive half-cycle of time) and *utsarpini-sama* (the period of progressive half-cycle of time).

**विवेचन**—अवसर्पिणी समा–इसमें वस्तुओं के रूप, रस, गन्ध आदि का एवं जीवों की आयु, बल, बुद्धि आदि का क्रम से ह्रास होता है। उत्सर्पिणी समा–इसमें वस्तुओ के रूप, रस, गन्ध आदि का एवं जीवों की आयु, बल, बुद्धि, सुख आदि का क्रम से विकास होता है। (प्रत्येक समय में छह–छह आरे होते हैं। १२ आरो का एक कालचक्र बीस कोटा–कोटि सागरोपम का होता है। देखें–संलग्न चित्र)

**Elaboration**—*Avasarpini-sama*—During the regressive half-cycle there is a gradual decline in strength, wisdom, size of the body, life-span and other qualities of living beings including humans. *Utsarpini-sama*—During the progressive half-cycle there is gradual improvement in the said qualities of living beings and matter. Like the spokes in the wheel of a chariot there are six divisions of each of these half-cycles popularly known as *aras* (spokes). One complete cycle of time is twenty *Kota-koti Sagaropam* (a metaphoric unit of time) long (see illustration)

उन्माद–पद UNMAAD-PAD (SEGMENT OF MADNESS)

**७५. दुविहे उम्माए पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे चेव, मोहणिज्जस्स चेव कम्मस्स उदएणं। तत्थ णं जे से जक्खाएसे, से णं सुहवेयतराए चेव, सुहविमोयतराए चेव। तत्थ णं जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, से णं दुहवेयतराए चेव, दुहविमोयतराए चेव।**

७५. उन्माद अर्थात् बुद्धिभ्रम या बुद्धि की विपरीतता दो कारणों से होती है–यक्षावेश से (यक्ष के शरीर मे प्रविष्ट होने से) और मोहनीयकर्म के उदय से। जो यक्षावेश–जनित उन्माद है, वह मोहनीयकर्म–जनित उन्माद की अपेक्षा सुख (सरलता) से भोगा जाने वाला और सुख (सरलता) से छूट सकने वाला होता है। किन्तु जो मोहनीयकर्म–जनित उन्माद है, वह यक्षावेश–जनित उन्माद की अपेक्षा दुःख (कठिनाई) से भोगा जाने वाला और दुःख से छूटने वाला होता है।

**75.** *Unmaad* (madness or delusion or perversion) is for two reasons—*yakshavesh* (under the influence of evil spirit) and fruition of *mohaniya karma* (deluding *karma*). Madness caused by evil spirit is easier to suffer and get rid of as compared to that caused by *mohaniya karma*. But the

delusion caused by fruition of deluding *karma* is difficult to suffer and get rid of as compared to that caused by evil spirit.

### दण्ड-पद DAND-PAD (SEGMENT OF INDULGENCE IN IGNOBLE ACTION)

**७६. दो दंडा पण्णत्ता, तं जहा—अट्ठादंडे चेव, अणट्ठादंडे चेव। ७७. णेरइयाणं दो दंडा पण्णत्ता, तं जहा—अट्ठादंडे य। ७८. एवं चउवीसादंडओ जाव वेमाणियाणं।**

७६. दण्ड (पाप कर्म रूप प्रवृत्ति) दो प्रकार का है—अर्थदण्ड (प्रयोजन सहित) और अनर्थदण्ड (बिना प्रयोजन)। ७७. नारकियो मे दोनो प्रकार के दण्ड कहे गये हैं—अर्थदण्ड और अनर्थदण्ड। ७८. इसी प्रकार वैमानिक तक के सभी दण्डको मे दो-दो दण्ड जानना चाहिए।

**76.** *Dand* (indulgence in ignoble action) is of two kinds—*arth-dand* (indulgence in ignoble action with a purpose) and *anarth-dand* (indulgence in ignoble action without any purpose). **77.** *Dand* (indulgence in ignoble action) related to *naarakiyas* (infernal beings) is of two kinds—*arth-dand* (indulgence in ignoble action with a purpose) and *anarth-dand* (indulgence in ignoble action without any purpose). **78.** In the same way all the *dandaks* (places of suffering) up to *Vaimaniks* (celestial vehicle dwelling gods) have two *dands* each

### दर्शन-पद DARSHAN-PAD (SEGMENT OF FAITH)

**७९. दुविहे दंसणे पण्णत्ते, तं जहा—सम्मद्दंसणे चेव, मिच्छादंसणे चेव। ८०. सम्मद्दंसणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—णिसग्गसम्मद्दंसणे चेव, अभिगमसम्मद्दंसणे चेव। ८१. णिसग्गसम्मद्दंसणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पडिवाइ चेव, अपडिवाइ चेव। ८२. अभिगमसम्मद्दंसणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पडिवाइ चेव, अपडिवाइ चेव। ८३. मिच्छादंसणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अभिग्गहिय मिच्छादंसणे चेव, अणभिग्गहिय मिच्छादंसणे चेव। ८४. अभिग्गहिय मिच्छादंसणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सपज्जवसिते चेव, अपज्जवसिते चेव। ८५. अणभिग्गहिय मिच्छादंसणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सपज्जवसिते चेव, अपज्जवसिते चेव।**

७९. दर्शन (तत्त्व विषयक श्रद्धा या रुचि) दो प्रकार का है—सम्यग्दर्शन और मिथ्यादर्शन। ८०. सम्यग्दर्शन (वस्तु के प्रति यथार्थ श्रद्धा) दो प्रकार का है—निसर्गसम्यग्दर्शन (आत्मा की सहज निर्मलता होने पर किसी बाह्य निमित्त के बिना स्वत. उत्पन्न होने वाला) और अभिगमसम्यग्दर्शन (शास्त्र सुनकर अथवा गुरु-उपदेश आदि के निमित्त से उत्पन्न होने वाला)। ८१. निसर्गसम्यग्दर्शन दो प्रकार का है—प्रतिपाती—(प्राप्त होकर पुन नष्ट हो जाने वाला औपशमिक और क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन) और अप्रतिपाति (नष्ट नही होने वाला क्षायिकसम्यक्त्व)। ८२. अभिगमसम्यग्दर्शन दो प्रकार का है—प्रतिपाती और अप्रतिपाती। ८३. मिथ्यादर्शन दो प्रकार का है—आभिग्रहिक (इस भव में ग्रहण किया गया मिथ्यात्व अथवा किसी विपरीत सिद्धान्त के आग्रहवश। यह केवल सज्ञी पचेन्द्रिय जीवों में होता है) और

अनाभिग्रहिक (गुण-दोष की परीक्षा किये बिना अथवा पूर्वभवों से आने वाला सहज मिथ्यात्व। यह किसी भी जीव में हो सकता है)। ८४. आभिग्रहिक मिथ्यादर्शन दो प्रकार का है-सपर्यवसित (अन्त सहित) और अपर्यवसित (अनन्त)। ८५. अनाभिग्रहिक मिथ्यादर्शन दो प्रकार का है-सपर्यवसित और अपर्यवसित।

**79.** *Darshan* is of two kinds—*samyagdarshan* (realistic or right faith) and *mithyadarshan* (unrealistic or wrong faith). **80.** *Samyagdarshan* is of two kinds—*nisarg-samyagdarshan* (spontaneously evoked right faith due to natural purity of soul and not by any outside cause) and *abhigam-samyagdarshan* (right faith acquired as a consequence of studying scriptures or listening to a teacher or other such cause). **81.** *Nisarg-samyagdarshan* is of two kinds—*pratipati* (that which can be lost after acquiring, such as *aupashamik* and *kshayopashamik samyaktva* or righteousness gained through pacification and extinction-cum-pacification of *karmas*) and *apratipati* (that which cannot be lost, such as *kshayik samyaktva* or righteousness gained through extinction of *karmas*) **82.** *Abhigam-samyagdarshan* is of two kinds—*pratipati* and *apratipati* **83.** *Mithyadarshan* (wrong faith) is of two kinds—*aabhigrahik mithyadarshan* (wrong faith acquired during this birth due to influence of some wrong doctrine, this is applicable only to sentient five sensed beings) and *anaabhigrahik mithyadarshan* (wrong faith naturally acquired without any qualitative concern or inherited from past births; this is applicable to all beings) **84.** *Aabhigrahik mithyadarshan* is of two kinds—*saparyavasit* (having an end) and *aparyavasit* (endless). **85.** *Anaabhigrahik mithyadarshan* is of two kinds—*saparyavasit* (having an end) and *aparyavasit* (endless)

विवेचन-विशेष ज्ञातव्य है कि भव्य जीवो का दोनो प्रकार का मिथ्यादर्शन सान्त होता है, क्योंकि वह सम्यक्त्व की प्राप्ति होने पर छूट जाता है। किन्तु अभव्य जीवो का मिथ्यात्व अनन्त है, क्योंकि वह कभी नहीं छूटता है।

**Elaboration**—It should also be known that in case of *bhavya jivas* (souls worthy of being liberated) wrong faith of both kinds is with an end because on attaining righteousness it is completely erased But in case of *abhavya jivas* (souls unworthy of being liberated) wrong faith is endless because it is never completely erased.

**केवलज्ञान-पद (केवलज्ञान) KEVAL-JNANA-PAD (SEGMENT OF OMNISCIENCE)**

**८६. दुविहे णाणे पण्णत्ते, तं जहा-पच्चक्खे चेव, परोक्खे चेव। ८७. पच्चक्खे णाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-केवलणाणे चेव, णोकेवलणाणे चेव। ८८. केवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-**

भवत्थकेवलणाणे चेव, सिद्धकेवलणाणे चेव। ८९. भवत्थकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अजोगिभवत्थकेवलणाणं चेव। ९०. सजोगिभवत्थकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव। अहवा—चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव। ९१. [ अजोगिभवत्थकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पढमसमय—अजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अपढमसमय—अजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव। अहवा—चरिमसमय—अजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अचरिमसमय—अजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव।] ९२. सिद्धकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणंतरसिद्धकेवलणाणे चेव, परंपरसिद्धकेवलणाणे चेव। ९३. अणंतरसिद्धकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—एक्काणंतरसिद्धकेवलणाणे चेव, अणेक्काणंतरसिद्धकेवलणाणे चेव। ९४. परंपरसिद्धकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—एक्कपरंपरसिद्धकेवलणाणे चेव, अणेक्कपरंपरसिद्धकेवलणाणे चेव।

८६. ज्ञान दो प्रकार का है–प्रत्यक्ष–(इन्द्रियादि की सहायता के बिना आत्मा द्वारा पदार्थों को जानने वाला ज्ञान) तथा परोक्ष (इन्द्रियादि की सहायता से पदार्थों को जानने वाला ज्ञान)। ८७. प्रत्यक्ष ज्ञान दो प्रकार का है–केवलज्ञान और नोकेवलज्ञान (केवलज्ञान से भिन्न)। ८८. केवलज्ञान दो प्रकार का है–भवस्थ केवलज्ञान (चार घाति कर्मों का क्षय होने पर मनुष्य भव मे स्थित केवलियो का) और सिद्ध केवलज्ञान (मुक्तात्माओ का)। ८९. भवस्थ केवलज्ञान दो प्रकार का है–सयोगिभवस्थ केवलज्ञान (तेरहवे गुणस्थानवर्ती केवलियो का) और अयोगिभवस्थ केवलज्ञान (चौदहवे गुणस्थानवर्ती केवलियो का)। ९०. सयोगिभवस्थ केवलज्ञान दो प्रकार का है–प्रथम समयसयोगिभवस्थ केवलज्ञान (केवलज्ञान उत्पन्न होने के पहले समय का ज्ञान) और अप्रथम समयसयोगिभवस्थ केवलज्ञान (केवलज्ञान हुए अनेक समय हो जाने पर)। अथवा चरम समय सयोगिभवस्थ केवलज्ञान (जिस ज्ञान को तेरहवाँ गुणस्थान पार करने में मात्र एक समय शेष रह गया हो, वह और अचरम समय भवस्थ केवलज्ञान जिस गुणस्थान को पार करने में अनेक समय शेष हो वह। ९१. अयोगिभवस्थ केवलज्ञान दो प्रकार का है–प्रथम समय अयोगिभवस्थ केवलज्ञान और अप्रथम समय अयोगिभवस्थ केवलज्ञान। ९२. सिद्ध केवलज्ञान दो प्रकार का है–अनन्तरसिद्ध केवलज्ञान (प्रथम समय के मुक्त सिद्धो का ज्ञान) और परम्परसिद्ध केवलज्ञान (जिन्हे सिद्ध हुए एक समय से अधिक काल हो चुका है ऐसे सिद्ध जीवो का ज्ञान)। ९३. अनन्तरसिद्ध केवलज्ञान दो प्रकार का है–एकअनन्तरसिद्ध का केवलज्ञान और अनेक अनन्तरसिद्धो का केवलज्ञान। ९४. परम्परसिद्ध केवलज्ञान भी दो प्रकार का है–एक परम्परसिद्ध का केवलज्ञान और अनेक परम्परसिद्धो का केवलज्ञान।

**86.** *Jnana* (knowledge) is of two kinds—*pratyaksh* (directly acquired by soul without the help of sense organs or mind) and *paroksha* (acquired through the sense organs) **87.** *Pratyaksh-jnana* (directly

acquired knowledge) is of two kinds—*Keval-jnana* (omniscience) and *nokeval-jnana* (other than omniscience). **88.** *Keval-jnana* (omniscience) is of two kinds—*bhavasth Keval-jnana* (omniscience of the *Kevalis* when their four vitiating *karmas* are destroyed) and *Siddha Keval-jnana* (omniscience of the liberated souls). **89.** *Bhavasth Keval-jnana* (omniscience of the *Kevalis*) is of two kinds—*sayogi bhavasth Keval-jnana* (omniscience of the *Kevalis* at the thirteenth *Gunasthaan* or level of purity) and *ayogi bhavasth Keval-jnana* (omniscience of the *Kevalis* at the fourteenth *Gunasthaan* or level of purity). **90.** *Sayogi bhavasth Keval-jnana* (omniscience of the *Kevalis* at the thirteenth *Gunasthaan* or level of purity) is of two kinds—*pratham Samaya sayogi bhavasth Keval-jnana* (omniscience of the *Kevalis* at the thirteenth *Gunasthaan* during the first *Samaya* of attainment) and *apratham Samaya sayogi bhavasth Keval-jnana* (omniscience of the *Kevalis* at the thirteenth *Gunasthaan* anytime after the first *Samaya* of attainment) Also *charam Samaya sayogi bhavasth Keval-jnana* (omniscience of the *Kevalis* at the thirteenth *Gunasthaan* during the ultimate *Samaya* before crossing the thirteenth *Gunasthaan*) and *acharam Samaya sayogi bhavasth Keval-jnana* (omniscience of the *Kevalis* at the thirteenth *Gunasthaan* anytime prior to the ultimate *Samaya* before crossing the thirteenth *Gunasthaan*) **91.** *Ayogi bhavasth Keval-jnana* (omniscience of the *Kevalis* at the fourteenth *Gunasthaan* or level of purity) is of two kinds—*pratham Samaya ayogi bhavasth Keval-jnana* and *apratham Samaya ayogi bhavasth Keval-jnana*. **92.** *Siddha Keval-jnana* (omniscience of the liberated souls) is of two kinds—*anantar Siddha Keval-jnana* (omniscience of the liberated souls during the first moment of liberation) and *parampar Siddha Keval-jnana* (omniscience of the liberated souls any time after the first moment of liberation). **93.** *Anantar Siddha Keval-jnana* (omniscience of the liberated souls during the first moment of liberation) is of two kinds—*ek-anantar Siddha Keval-jnana* (omniscience of single liberated soul during the first moment of liberation) and *anek-anantar Siddha Keval-jnana* (omniscience of numerous liberated souls during the first moment of liberation). **94.** *Parampar Siddha Keval-jnana* (omniscience of the liberated souls any time after the fist moment of liberation) is of two kinds—*ek-parampar Siddha Keval-jnana* and *anek-parampar Siddha Keval-jnana*.

## नोकेवलज्ञान-पद NOKEVAL-JNANA-PAD
## (SEGMENT OF KNOWLEDGE OTHER THAN OMNISCIENCE)

**९५. णोकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—ओहिणाणे चेव, मणपज्जवणाणे चेव। ९६. ओहिणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—भवपच्चइए चेव, खओवसमिए चेव। ९७. दोण्हं भवपच्चइए पण्णत्ते, तं जहा—देवाणं चेव, णेरइयाणं चेव। ९८. दोण्हं खओवसमिए पण्णत्ते, तं जहा—मणुस्साणं चेव, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव। ९९. मणपज्जवणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—उज्जुमती चेव, विउलमती चेव।**

९५. नोकेवलज्ञान दो प्रकार का है—अवधिज्ञान और मन:पर्यवज्ञान। ९६. अवधिज्ञान दो प्रकार का है—भवप्रत्ययिक (जन्म के साथ उत्पन्न होने वाला) और क्षायोपशमिक (ज्ञानावरणकर्म के क्षयोपशम से, तपस्या आदि गुणो के निमित्त से उत्पन्न होने वाला)। ९७. भवप्रत्ययिक अवधिज्ञान दो गति के जीवों को होता है—देवताओ को और नारकियों को। ९८. क्षायोपशमिक अवधिज्ञान दो गति में होता है—मनुष्यों को और पचेन्द्रियतिर्यग्योनिको को। ९९. मन पर्यवज्ञान दो प्रकार का है—ऋजुमति मन पर्यवज्ञान (मानसिक चिन्तन के पुद्‌गलों को सामान्य रूप से जानने वाला) तथा विपुलमति मन पर्यवज्ञान (मानसिक चिन्तन के पुद्‌गलो की विविध पर्यायों को विशेष रूप से जानने वाला)।

**95.** *Nokeval-jnana* (knowledge other than omniscience) is of two kinds—*avadhi-jnana* (extrasensory perception of the physical dimension; something akin to clairvoyance) and *manahparyava-jnana* (extrasensory perception and knowledge of thought process and thought-forms of other beings, something akin to telepathy). **96.** *Avadhi-jnana* is of two kinds—*bhava pratyayik* (acquired at birth) and *kshayopashamik* (acquired due to extinction-cum-pacification of knowledge obscuring *karmas* caused by virtues including austerities) **97.** *Bhava pratyayik avadhi-jnana* manifests in beings of two genuses—*devas* (divine beings) and *naarakiya* (infernal beings). **98.** *Kshayopashamik avadhi-jnana* manifests in beings of two genuses—*manushya* (human beings) and *panchendriya tiryaks* (five sensed animals) **99.** *Manahparyava-jnana* (extrasensory perception and knowledge of thought process and thought-forms of other beings) is of two kinds—*rijumati* (limited knowledge of thought forms) and *vipul-mati* (extensive knowledge of various modes of thought forms).

## परोक्ष-ज्ञान-पद PAROKSHA-JNANA-PAD
## (SEGMENT OF KNOWLEDGE ACQUIRED THROUGH SENSE ORGANS)

**१००. परोक्खे णाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—आभिणिबोहियणाणे चेव, सुयणाणे चेव। १०१. आभिणिबोहियणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुयणिस्सिए चेव, असुयणिस्सिए चेव।**

**१०२. सुयणिस्सिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अत्थोग्गहे चेव, वंजणोग्गहे चेव। १०३. असुयणिस्सिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अत्थोग्गहे चेव, वंजणोग्गहे चेव। १०४. सुयणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अंगपविट्ठे चेव, अंगबाहिरे चेंव। १०५. अंगबाहिरे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—आवस्सए चेव, आवस्सयवतिरित्ते चेव। १०६. आवस्सयवतिरित्ते दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—कालिए चेव, उक्कालिए चेव।**

१००. परोक्ष ज्ञान दो प्रकार का है—आभिनिबोधिक ज्ञान और श्रुत ज्ञान। १०१. आभिनिबोधिक ज्ञान दो प्रकार का है— श्रुतनिश्रित (श्रुत ज्ञान से सम्बन्धित) और अश्रुतनिश्रित (बिना शास्त्र पढ़े सहज बुद्धि से प्राप्त ज्ञान)। १०२. श्रुतनिश्रित ज्ञान दो प्रकार का है—अर्थावग्रह (सामान्य ज्ञान। यह सभी इन्द्रियों से होता है) और व्यजनावग्रह (किंचित् मात्र ज्ञान। यह चक्षु इन्द्रिय और मन को नहीं होता)। १०३. अश्रुतनिश्रित ज्ञान दो प्रकार का है—अर्थावग्रह और व्यंजनावग्रह। १०४. श्रुत ज्ञान दो प्रकार का है—अंगप्रविष्ट (द्वादशांग) और अंगबाह्य। १०५. अगबाह्य श्रुत ज्ञान दो प्रकार का है—आवश्यक और आवश्यकव्यतिरिक्त। १०६. आवश्यकव्यतिरिक्त दो प्रकार का है—कालिकश्रुत (दिन और रात के प्रथम और अन्तिम प्रहर मे पढा जाने वाला) और उत्कालिकश्रुत (अकाल के सिवाय सभी प्रहरों में पढा जाने वाला)। *(ज्ञान का विस्तृत वर्णन सचित्र नन्दीसूत्र, पृष्ठ १६१ से ३७५ पर देखें)*

**100.** *Paroksha-jnana* (knowledge acquired through sense organs) is of two kinds—*abhinibodhik-jnana* (sensory knowledge or that acquired by means of five sense organs and the mind) and *shrut-jnana* (scriptural knowledge). **101.** *Abhinibodhik-nana* (sensory knowledge) is of two kinds—*shrut-nishrit* (acquired through scriptures) and *ashrut-nishrit* (acquired directly and not with the help of scriptures). **102.** *Shrut-nishrit-jnana* is of two kinds—*arthavagraha* (actual knowledge gathered through all sense organs and mind) and *vyanjanavagraha* (sense organ specific scanty knowledge; this is acquired through sense organs other than eyes and mind). **103.** *Ashrut-nishrit-jnana* is of two kinds—*arthavagraha* and *vyanjanavagraha.* **104.** *Shrut-jnana* (scriptural knowledge) is of two kinds—*Angapravisht* (the twelve *Angas*) and *Angabahya* (other than twelve *Angas*) **105.** *Angabahya shrut-jnana* is of two kinds—*Avashyak* (essentials) and *Avashyak vyatirikt* (other than essentials). **106.** *Avashyak vyatirikt* is of two kinds—*kaalik* (to be studied at a specific time, during the first and last quarters of day and night) and *utkaalik* (to be studied anytime other than the prohibited times. ***(for detailed discussion about Jnana refer to Illustrated Nandi Sutra, pp 161 to 375)***

**धर्म-पद DHARMA-PAD (SEGMENT OF RELIGION)**

**१०७. दुविहे धम्मे पण्णत्ते, तं जहा—सुयधम्मे चेव, चरित्तधम्मे चेव। १०८. सुयधम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुत्तसुयधम्मे चेव, अत्थसुयधम्मे चेव। १०९. चरित्तधम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अगारचरित्तधम्मे चेव, अणगारचरित्तधम्मे चेव।**

१०७. धर्म दो प्रकार का है-श्रुतधर्म-(द्वादशांगश्रुत का स्वाध्याय करना) और चारित्रधर्म-(सम्यक्त्व, व्रत, समिति आदि का आचरण करना)। १०८. श्रुतधर्म दो प्रकार का है-सूत्र श्रुतधर्म-(सूत्रो के मूल पाठ का अध्ययन करना) और अर्थ श्रुतधर्म-(सूत्रो के अर्थ का अध्ययन करना)। १०९. चारित्रधर्म दो प्रकार का है। अगारचारित्रधर्म (श्रावको का अणुव्रत आदि) और अनगारचारित्रधर्म-(साधुओ का पच महाव्रत आदि धर्म)।

**107.** *Dharma* (religion) is of two kinds—*Shrut dharma* (to study the twelve *Angas*) and *charitra dharma* (to observe Jain conduct inclusive of righteousness, vows, self-regulation etc ) **108.** *Shrut dharma* is of two kinds—*Sutra Shrut dharma* (to study the text of scriptures) and *arth Shrut dharma* (to study the meaning of scriptures) **109.** *Charitra dharma* is of two kinds—*agaar charitra dharma* (the conduct of laity inclusive of five minor vows) and *anagaar charitra dharma* (the conduct of ascetics inclusive of five great vows)

**संयम-पद (सराग संयम) SAMYAM-PAD (SEGMENT OF ASCETIC DISCIPLINE)**

**११०. दुविहे संजमे पण्णत्ते, तं जहा—सरागसंजमे चेव, वीतरागसंजमे चेव। १११. सरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव, बादरसंपरायसरागसंजमे चेव। ११२. सुहुमसंपरायसरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव, अपढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव। अहवा—चरिमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव, अचरिमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव। अहवा—सुहुमसंपरायसरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—संकिलेसमाणए चेव, विसुज्झमाणए चेव। ११३. बादरसंपरायसरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पढमसमयबादरसंपरायसरागसंजमे चेव, अपढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव। अहवा—चरिमसमयबादरसंपरायसरागसंजमे चेव, अचरिमसमयबादरसंपरायसरागसंजमे चेव। अहवा—बादरसंपरायसरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पडिवातिए चेव, अपडिवातिए चेव।**

११०. सयम दो प्रकार का है-सरागसंयम और वीतरागसयम। १११. सरागसयम दो प्रकार का है-सूक्ष्मसम्पराय सरागसयम और बादरसम्पराय सरागसयम। ११२. सूक्ष्मसम्पराय सरागसंयम दो प्रकार का है-प्रथमसमय-सूक्ष्मसम्पराय सरागसयम और अप्रथमसमय-सूक्ष्मसम्पराय सरागसयम।

अथवा–चरमसमय सूक्ष्मसम्पराय सरागसयम और अचरमसमय सूक्ष्मसम्पराय सरागसंयम। अथवा–सूक्ष्मसम्पराय सरागसंयम दो प्रकार का है–संक्लिश्यमान सूक्ष्मसम्पराय सरागसंयम (ग्यारहवे गुणस्थान से गिरकर दशवे गुणस्थानवर्ती साधु का संयम संक्लिश्यमान होता है) और विशुद्ध्यमान सूक्ष्मसम्पराय सरागसंयम (दशवे गुणस्थान से ऊपर चढ़ने वाले का संयम विशुद्ध्यमान होता है)। ११३. बादरसम्पराय सरागसंयम दो प्रकार का है–प्रथमसमय–बादरसम्पराय सरागसयम और अप्रथमसमय–बादरसम्पराय सरागसंयम। अथवा–चरमसमय–बादरसम्पराय सरागसंयम और अचरमसमय–बादरसम्पराय सरागसंयम अथवा–बादरसम्पराय सरागसयम दो प्रकार का है–प्रतिपाती बादरसम्पराय सरागसंयम (नवम गुणस्थान से नीचे गिरने वाले का संयम) और अप्रतिपाती बादरसम्पराय सरागसंयम (नवम गुणस्थान से ऊपर चढने वाले का संयम)।

**110.** *Samyam* (ascetic discipline) is of two kinds—*saraag samyam* (discipline with attachment) and *vitaraag samyam* (discipline with detachment) **111.** *Saraag samyam* (discipline with attachment) is of two kinds—*sukshma samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and subtle passions) and *baadar samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and gross passions) **112.** *Sukshma samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and subtle passions) is of two kinds—*pratham Samaya sukshma samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and subtle passions during the first *Samaya* of attaining the level) and *apratham samaya sukshma samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and subtle passions any time after the first *Samaya* (moment) of attaining the level) Also *charam Samaya sukshma samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and subtle passions during the ultimate *Samaya* before crossing the tenth *Gunasthaan*) and *acharam samaya sukshma samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and subtle passions any time prior to the ultimate *Samaya* before crossing the tenth *Gunasthaan*). Also *sukshma samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and subtle passions) is of two kinds—*samklishyamaan sukshma samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and subtle passions heading towards impurity; this is the discipline of an ascetic falling from eleventh *Gunasthaan* to tenth *Gunasthaan*) and *vishuddhyaman sukshma samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and subtle passions heading towards purity; this is the discipline of an ascetic rising from tenth *Gunasthaan* to higher levels of purity). **113.** *Badar samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and gross passions) is of two kinds—*pratham Samaya badar*

*samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and gross passions during the first *Samaya* of attaining the level) and *apratham Samaya badar samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and gross passions any time after the first *Samaya* of attaining the level) Also *charam Samaya badar samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and gross passions during the ultimate *Samaya* before crossing the tenth *Gunasthaan*) and *acharam Samaya badar samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and gross passions any time prior to the ultimate *Samaya* before crossing the tenth *Gunasthaan*) Also *badar samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and gross passions) is of two kinds—*pratipati badar samparaya saraag samyam* (fading discipline with attachment and gross passions; this is the discipline of an ascetic falling from ninth *Gunasthaan*) and *apratipati badar samparaya saraag samyam* (non-fading discipline with attachment and gross passions, this is the discipline of an ascetic rising from ninth *Gunasthaan* to higher levels of purity)

**वीतराग संयम–पद VITARAG SAMYAM-PAD (SEGMENT OF DISCIPLINE WITH DETACHMENT)**

११४. वीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–उवसंतकसायवीयरागसंजमे चेव, खीणकसायवीयरागसंजमे चेव। ११५. उवसंतकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–पढमसमयउवसंतकसायवीयरागसंजमे चेव, अपढमसमयउवसंतकसायवीयरागसंजमे चेव। अहवा–चरिमसमयउवसंतकसायवीयरागसंजमे चेव, अचरिमपढमसमयउवसंतकसायवीयरागसंजमे चेव। ११६. खीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे चेव, केवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव। ११७. छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–सयंबुद्ध छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे चेव, बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे चेव। ११८. सयंबुद्ध छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–पढमसमयसयंबुद्ध छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे चेव, अपढमसमयसयंबुद्ध छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे चेव। अहवा–चरिमसमयसयंबुद्ध छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे चेव, अचरिमसमयसयंबुद्ध छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे चेव। ११९. बुद्धबोहिय छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–पढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे चेव, अपढमसमयबुद्ध–बोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागसंजमे चेव। अहवा–चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसाय–वीयरागसंजमे चेव, अचरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे चेव।

११४. वीतराग संयम दो प्रकार का है–उपशान्तकषाय वीतरागसंयम और क्षीणकषाय वीतरागसंयम। ११५. उपशान्तकषाय वीतरागसंयम दो प्रकार का है–प्रथमसमय उपशान्तकषाय वीतरागसंयम और अप्रथमसमय उपशान्तकषाय वीतरागसंयम। अथवा चरमसमय उपशान्तकषाय वीतरागसंयम और अचरमसमय उपशान्तकषाय वीतरागसंयम। ११६. क्षीणकषाय वीतरागसयम दो प्रकार का है–छद्मस्थक्षीणकषाय वीतरागसंयम और केवलिक्षीणकषाय वीतरागसंयम। ११७. छद्मस्थक्षीणकषाय वीतरागसयम दो प्रकार का है–स्वयबुद्ध छद्मस्थक्षीणकषाय वीतरागसंयम और बुद्धबोधित छद्मस्थक्षीणकषाय वीतरागसयम। ११८. स्वयबुद्ध छद्मस्थक्षीणकषाय वीतरागसयम दो प्रकार का है–प्रथमसमय स्वयबुद्ध छद्मस्थक्षीणकषाय वीतरागसंयम और अप्रथमसमय स्वयबुद्ध छद्मस्थक्षीणकषाय वीतरागसंयम। अथवा–चरमसमय स्वयंबुद्ध छद्मस्थक्षीणकषाय वीतरागसंयम और अचरमसमय स्वयंबुद्ध छद्मस्थक्षीणकषाय वीतरागसयम। ११९. बुद्धबोधित छद्मस्थक्षीणकषाय वीतरागसंयम दो प्रकार का है–प्रथमसमय बुद्धबोधित छद्मस्थक्षीणकषाय वीतरागसंयम और अप्रथमसमय बुद्धबोधित छद्मस्थक्षीणकषाय वीतरागसयम अथवा चरमसमय बुद्धबोधित छद्मस्थक्षीणकषाय वीतरागसंयम और अचरमसमय बुद्धबोधित छद्मस्थक्षीणकषाय वीतरागसंयम।

**114.** *Vitarag samyam* (discipline with detachment) is of two kinds—*upashant-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and pacified passions) and *ksheen-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and extinct passions). **115.** *Upashant-kashaya Vitarag samyam* is of two kinds—*pratham Samaya upashant-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and pacified passions during the first *Samaya* of attaining the level of eleventh *Gunasthaan)* and *apratham Samaya upashant-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and pacified passions any time after the first *Samaya* of attaining the level) Also *charam Samaya upashant-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and pacified passions during the ultimate *Samaya* before crossing the level) and *acharam Samaya upashant-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and pacified passions any time prior to the ultimate *Samaya* before crossing the level) **116.** *Ksheen-kashaya Vitarag samyam* is of two kinds—*chhadmasth ksheen-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and extinct passions at pre-omniscience level) and *Kevali ksheen-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and extinct passions at omniscience level). **117.** *Chhadmasth ksheen-kashaya Vitarag samyam* is of two kinds—*svayam-buddha chhadmasth ksheen-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and extinct passions at self acquired pre-omniscience level) and *Buddhabodhit chhadmasth ksheen-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and extinct

passions at pre-omniscience level acquired through preaching). 118. *Svayam-buddha chhadmasth ksheen-kashaya Vitarag samyam* is of two kinds—*pratham Samaya svayam-buddha chhadmasth ksheen-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and extinct passions at self acquired pre-omniscience level during the first *Samaya* of attaining the level) and *apratham Samaya svayam-buddha chhadmasth ksheen-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and extinct passions at self acquired pre-omniscience level any time after the first *Samaya* of attaining the level) Also *charam Samaya svayam-buddha chhadmasth ksheen-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and extinct passions at self acquired pre-omniscience level during the ultimate *Samaya* before crossing the level) and *acharam Samaya svayam-buddha chhadmasth ksheen-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and extinct passions at self acquired pre-omniscience level any time prior to the ultimate *Samaya* before crossing the level) 119. *Buddhabodhit chhadmasth ksheen-kashaya Vitarag samyam* is of two kinds—*pratham Samaya Buddhabodhit chhadmasth ksheen-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and extinct passions at preaching-inspired pre-omniscience level during the first *Samaya* of attaining the level) and *apratham Samaya Buddhabodhit chhadmasth ksheen-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and extinct passions at preaching-inspired pre-omniscience level any time after the first *Samaya* of attaining the level) Also *charam Samaya Buddhabodhit chhadmasth ksheen-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and extinct passions at preaching-inspired pre-omniscience level during the ultimate *Samaya* before crossing the level) and *acharam Samaya Buddhabodhit chhadmasth ksheen-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and extinct passions at preaching-inspired pre-omniscience level any time prior to the ultimate *Samaya* before crossing the level).

**केवलि–क्षीणकषाय वीतराग संयम–पद KEVALI KSHEEN-KASHAYA VITARAG-SAMYAM-PAD**

**(SEGMENT OF KEVALI KSHEEN-KASHAYA VITARA-SAMYAM)**

**१२०. केवलिखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव, अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव। १२१. सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–पढमसमय सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव, अपढमसमय सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे**

**चेव। अहवा—चरिमसमय सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव, अचरिमसमय सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव। १२२. अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पढमसमय सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव, अपढमसमय सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव। अहवा—चरिमसमय—अजोगिकेवलिखीणक—सायवीयराग—संजमे चेव, अचरिमसमय अजोगिकेविलखीणकसायवीयरागसंजमे चेव।**

१२०. केवलि–क्षीणकषाय वीतरागसयम दो प्रकार का है–सयोगिकेवलि–क्षीणकषाय वीतरागसयम और अयोगिकेवलि–क्षीणकषाय वीतराग संयम। १२१. सयोगिकेवलि–क्षीणकषाय वीतरागसंयम दो प्रकार का है–प्रथमसमय सयोगिकेवलि–क्षीणकषाय वीतरागसयम और अप्रथमसमय सयोगिकेवलि–क्षीणकषाय वीतरागसयम। अथवा–चरमसमय सयोगिकेवलि–क्षीणकषाय वीतरागसयम और अचरमसमय सयोगिकेवलि–क्षीणकषाय वीतरागसयम। १२२. अयोगिकेवलिद्र–क्षीणकषाय वीतरागसयम दो प्रकार का है–प्रथमसमय अयोगिकेवलि–क्षीणकषाय वीतरागसंयम और अप्रथमसमय अयोगिकेवलि–क्षीणकषाय वीतरागसंयम। अथवा–चरमसमय अयोगिकेवलि–क्षीणकषाय वीतरागसंयम और अचरमसमय अयोगिकेवलि–क्षीणकषाय वीतरागसयम।

**120.** *Kevalı ksheen-kashaya Vıtarag samyam* ıs of two kinds—*sayogı Kevalı ksheen-kashaya Vıtarag samyam* (dıscıplıne wıth detachment and extinct passions at *karma*-associated omnıscıence level) and *ayogı Kevalı ksheen-kashaya Vitarag samyam* (dıscıplıne wıth detachment and extınct passions at omnıscıence level devoıd of *karmıc* assocıatıon). **121.** *Sayogi Kevalı ksheen-kashaya Vitarag samyam* ıs of two kınds—*pratham Samaya sayogı Kevalı ksheen-kashaya Vıtarag samyam* (dıscipline wıth detachment and extinct passıons at *karma*-assocıated omniscıence level during the first *Samaya* of attaining the level) and *apratham Samaya sayogı Kevalı ksheen-kashaya Vıtarag samyam* (dıscıplıne with detachment and extınct passıons at *karma*-assocıated omnıscıence level any tıme after the first *Samaya* of attaining the level) Also *charam Samaya sayogi Kevalı ksheen-kashaya Vıtarag samyam* (dıscıplıne with detachment and extınct passıons at *karma*-assocıated omniscıence level durıng the ultımate *Samaya* before crossing the level) and *acharam Samaya sayogi Kevalı ksheen-kashaya Vıtarag samyam* (dıscıpline wıth detachment and extinct passions at *karma*-associated omniscience level any time prior to the ultımate *Samaya* before crossıng the level) **122.** *Ayogi Kevalı ksheen-kashaya Vitarag samyam* ıs of two kinds—*pratham Samaya ayogi Kevalı ksheen-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and extinct passions at omniscience level devoid of *karmic* assocıation durıng the first *Samaya* of attaınıng the

level) and *apratham Samaya ayogi Kevali ksheen-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and extinct passions at omniscience level devoid of *karmic* association any time after the first *Samaya* of attaining the level) Also *charam Samaya ayogi Kevali ksheen-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and extinct passions at omniscience level devoid of *karmic* association during the ultimate *Samaya* before crossing the level) and *acharam Samaya ayogi Kevali ksheen-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and extinct passions at omniscience level devoid of *karmic* association any time prior to the ultimate *Samaya* before crossing the level).

**विवेचन**—अहिंसादि पच महाव्रतो को धारण करना, मन, वचन, काय को वश में रखना तथा पाँचों इन्द्रियो के विषयो को जीतने की साधना को सयम कहा गया है। उसके मुख्य रूप से दो भेद कहे है–(१) सरागसयम, और (२) वीतरागसयम। दसवे गुणस्थान तक राग कषाय विद्यमान रहता है, अत वहाँ तक के सयम को **सरागसंयम** और उससे ऊपर के गुणस्थानो मे राग का उदय या सत्ता का अभाव हो जाने से **वीतरागसंयम** होता है। राग भी दो प्रकार का होता है–सूक्ष्म और बादर (स्थूल)। दशवे गुणस्थान मे सूक्ष्मराग रहता है, अत वहाँ तक **सूक्ष्मसम्परायसंयम** (जिसमे केवल लोभ कषाय का अंश शेष रहता हो) और छठे गुणस्थान से नवम गुणस्थान तक के सयम को **बादरसम्परायसंयम** कहते हैं (इसमे सज्वलन कषाय का उदय स्थूल रूप से रहता है। पूर्ववर्ती सयम से यह विशुद्धतर होता है)। नवम गुणस्थान के अन्तिम समय मे बादर राग का अभाव होने पर **दशम गुणस्थान में प्रवेश करने वाले जीवों के प्रथम समय के संयम को प्रथमसमय सूक्ष्मसम्पराय** सरागसयम कहते है और उसके सिवाय **शेष समयवर्ती जीवों के संयम को अप्रथमसमय सूक्ष्मसम्पराय सरागसंयम** कहा जाता है। इसी प्रकार दशम गुणस्थान के **अन्तिम समय के संयम को चरम** और उससे **पूर्ववर्ती संयम को अचरम** सूक्ष्मसम्पराय सरागसयम कहा है। आगे सभी सूत्रो मे प्रतिपादित प्रथम और अप्रथम तथा चरम और अचरम का भी इसी प्रकार अर्थ समझना चाहिए।

कषायो का क्षय करके बारहवे गुणस्थान मे प्रवेश करने के प्रथम समय मे और शेष समयों तथा चरम समय और उससे पूर्ववर्ती अचरम समय वाले वीतराग छद्मस्थ जीवो के वीतराग सयम होता है। इस सयम वाला जीव अवश्य ही मोक्ष जाता है।

उपशम श्रेणी चढने वाले जीव के सयम को **विशुद्धयमान** और उपशम श्रेणी करके नीचे गिरने वाले के सयम को **संक्लिश्यमान** कहा गया है।

**Elaboration**—*Samyam* or ascetic-discipline includes accepting five great vows; having control over mind, speech and body; and endeavour towards rising above sensual indulgences It has two main categories—(1) *saraag samyam* or discipline with attachment, and (2) *vitaraag samyam* or discipline with detachment Up to the tenth *Gunasthaan* (level

of purity of soul) attachment and passions exist, therefore the discipline up to this level is called discipline with attachment. Beyond this level there is an absence of fruition or influence of attachment and thus here the discipline is with detachment Attachment is also of two kinds—*sukshma* or subtle and *baadar* or gross. At the tenth *Gunasthaan* only subtle attachment exists, therefore it is the level of *sukshma samparaya samyam* or discipline with subtle passions (where only a minute fraction of greed remains). The discipline from sixth to ninth *Gunasthaan* is called *badar samparaya samyam* or discipline with gross passions (there is gross fruition of inflamed passions but the discipline is still sublime as compared to that at preceding levels). During the last moment of the ninth *Gunasthaan* gross attachment becomes extinct and the souls cross into the tenth *Gunasthaan* At this first *Samaya* of crossing the level it is called *pratham Samaya sukshma samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and subtle passions during the first *Samaya* of attaining the level) and after that it is *apratham Samaya sukshma samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and subtle passions any time after the first *Samaya* of attaining the level). In the same way the discipline during the last moment before crossing the tenth *Gunasthaan* is called *charam Samaya sukshma samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and subtle passions during the ultimate *Samaya* before crossing the tenth *Gunasthaan*) and before that it is called *acharam samaya sukshma samparaya saraag samyam* (discipline with attachment and subtle passions any time prior to the ultimate *Samaya* before crossing the tenth *Gunasthaan*) The terms *pratham, apratham, charam* and *acharam* are to be interpreted in the same way according to the specific level they are used for

Passions are subjugated two ways—*upasham* (pacification) and *kshaya* (extinction) If a being dies in the state of *upashant-kashaya Vitarag samyam* (discipline with detachment and pacified passions) he is reincarnated among the gods of Anuttar Vimaan (gods of a specific celestial vehicle).

The detached *chhadmasth* beings who reach the twelfth *Gunasthaan* are in the state of detached discipline during the moment of attaining the level and after as well as those during the ultimate moment of further transcending and before. A being with this kind of discipline is sure to get liberated.

The *samyam* (ascetic-discipline) of a being gradually rising the levels of pacification of *karmas* is called *vishuddhyaman* or heading towards purity and that of a being falling from the higher levels of pacification of *karmas* is called *samklishyamaan*

***जीव–निकाय–पद (सूक्ष्म–बादर, पर्याप्त–अपर्याप्त, परिणत–अपरिणत)***

**JIVA-NIKAYA-PAD (SEGMENT OF CATEGORIES OF BEINGS)**

**१२३. दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता, तं जहा–सुहुमा चेव, बायरा चेव। १२४. दुविहा आउकाइया पण्णत्ता, तं जहा–सुहुमा चेव, बायरा चेव। १२५. दुविहा तेउकाइया पण्णत्ता, तं जहा–सुहुमा चेव, बायरा चेव। १२६. दुविहा वाउकाइया पण्णत्ता, तं जहा–सुहुमा चेव, बायरा चेव। १२७. दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता, तं जहा–सुहुमा चेव, बायरा चेव।**

**१२८. दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता, तं जहा–पज्जत्तगा चेव, अपज्जत्तगा चेव। १२९. दुविहा आउकाइया पण्णत्ता, तं जहा–पज्जत्तगा चेव, अपज्जत्तगा चेव। १३०. दुविहा तेउकाइया पण्णत्ता, तं जहा–पज्जत्तगा चेव, अपज्जत्तगा चेव। १३१. दुविहा वाउकाइया पण्णत्ता, तं जहा–पज्जत्तगा चेव, अपज्जत्तगा चेव। १३२. दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता, तं जहा–पज्जत्तगा चेव, अपज्जत्तगा चेव।**

**१३३. दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता, तं जहा–परिणया चेव, अपरिणया चेव। १३४. दुविहा आउकाइया पण्णत्ता, तं जहा–परिणया चेव, अपरिणया चेव। १३५. दुविहा तेउकाइया पण्णत्ता, तं जहा–परिणया चेव, अपरिणया चेव। १३६. दुविहा वाउकाइया पण्णत्ता, तं जहा–परिणया चेव, अपरिणया चेव। १३७. दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता, तं जहा–परिणया चेव, अपरिणया चेव।**

१२३. पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के हैं–सूक्ष्म, और बादर। १२४. अप्कायिक जीव दो प्रकार के है–सूक्ष्म और बादर। १२५. तेजस्कायिक जीव दो प्रकार के हैं–सूक्ष्म और बादर। १२६. वायुकायिक जीव दो प्रकार के है–सूक्ष्म और बादर। १२७. वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकार के है–सूक्ष्म और बादर।

१२८. (अन्य अपेक्षा से) पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के है–पर्याप्तक और अपर्याप्तक। १२९. अप्कायिक जीव दो प्रकार के है–पर्याप्तक और अपर्याप्तक। १३०. तेजस्कायिक जीव दो प्रकार के हैं–पर्याप्तक और अपर्याप्तक। १३१. वायुकायिक जीव दो प्रकार के है–पर्याप्तक और अपर्याप्तक। १३२. वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकार के हैं–पर्याप्तक और अपर्याप्तक।

१३३. (अन्य विवक्षा से) पृथ्वीकायिक जीवो के दो प्रकार हैं–परिणत (बाह्य शस्त्रादि कारणों से जो निर्जीव हो गया है) और अपरिणत (जो ज्यों का त्यों सजीव है)। १३४. अप्कायिक जीवों के दो प्रकार है–परिणत और अपरिणत। १३५. तेजस्कायिक जीवों के दो प्रकार हैं–परिणत और अपरिणत।

१३६. वायुकायिक जीवों के दो प्रकार है–परिणत और अपरिणत। १३७. वनस्पतिकायिक जीवों के दो प्रकार हैं–परिणत और अपरिणत।

**123.** *Prithvikayik jiva* (earth-bodied beings) are of two kinds—*sukshma* (minute) and *baadar* (gross). **124.** *Apkayik jiva* (water-bodied beings) are of two kinds—*sukshma and baadar*. **125.** *Tejaskayik jiva* (fire-bodied beings) are of two kinds—*sukshma* and *baadar* **126.** *Vayukayik jiva* (air-bodied beings) are of two kinds—*sukshma* and *baadar*. **127.** *Vanaspatikayik jiva* (plant-bodied beings) are of two kinds—*sukshma* and *baadar*.

(in other context) **128.** *Prithvikayik jiva* (earth-bodied beings) are of two kinds—*paryaptak* (fully developed) and *aparyaptak* (underdeveloped). **129.** *Apkayik jiva* (water-bodied beings) are of two kinds—*paryaptak* and *aparyaptak*. **130.** *Tejaskayik jiva* (fire-bodied beings) are of two kinds—*paryaptak* and *aparyaptak*. **131.** *Vayukayik jiva* (air-bodied beings) are of two kinds—*paryaptak* and *aparyaptak* **132.** *Vanaspatikayik jiva* (plant-bodied beings) are of two *kinds*—*paryaptak* and *aparyaptak*.

**133.** *Prithvikayik jiva* (earth-bodied beings) are of two kinds—*parinat* (transformed or turned lifeless by means of a weapon) and *aparinat* (non-transformed or live). **134.** *Apkayik jiva* (water-bodied beings) are of two kinds—*parinat* and *aparinat*. **135.** *Tejaskayik jiva* (fire-bodied beings) are of two kinds—*parinat* and *aparinat* **136.** *Vayukayik jiva* (air-bodied beings) are of two kinds—*parinat* and *aparinat*. **137.** *Vanaspatikayik jiva* (plant-bodied beings) are of two kinds—*parinat* and *aparinat*.

विवेचन–इन पन्द्रह सूत्रों में पाँच स्थावरों के सूक्ष्म और बादर, पर्याप्तक–अपर्याप्तक, परिणत–अपरिणत, गति प्राप्त–स्थिति प्राप्त तथा अनन्तरावगाढ़–परम्परावगाढ–इस प्रकार दो–दो भेद बताये है।

यहाँ पर सूक्ष्म और बादर का अर्थ अपेक्षा भेद से छोटा या बडा बताना नही है, किन्तु कर्मशास्त्र की दृष्टि से जिनके सूक्ष्म नामकर्म का उदय हो, उन्हें सूक्ष्म और जिनके बादर नामकर्म का उदय हो, उन्हें बादर जानना चाहिए। बादर जीव, पृथ्वी, जल, वनस्पति आदि के आधार से लोक के एक भाग मे रहते है, किन्तु सूक्ष्म जीव बिना किसी आधार के ही समूचे लोक मे व्याप्त है।

प्रत्येक जीव अगले नवीन भव में उत्पन्न होने के साथ अपने शरीर के योग्य पुद्गलो को ग्रहण करता है, जिससे उसके शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा आदि का निर्माण होता है। उन पुद्गलो को ग्रहण करने की शक्ति अन्तर्मुहूर्त में प्राप्त हो जाती है। ऐसी शक्ति से सम्पन्न जीवों को पर्याप्तक और जब तक उस शक्ति की पूर्ण प्राप्ति नहीं होती है, तब तक उन्हें अपर्याप्तक कहा जाता है। इन सूत्रो मे वर्णित परिणत और अपरिणत का अभिप्राय निर्जीव तथा सजीव से है।

**Elaboration**—These fifteen aphorisms list two classes each of five immobile beings in three different contexts—minute and gross, fully developed and underdeveloped, and transformed or turned lifeless by means of a weapon and non-transformed or live

Here the terms *sukshma* (minute) and *baadar* (gross) do not convey comparative physical size In context of the *karma* theory the beings with fruition of *Sukshma Naam Karma* are classified as *sukshma* (minute) and those with fruition of *Baadar Naam Karma* are classified as *baadar* (gross) *Naam Karma* being the *karma* responsible for negating the attribute of formlessness of soul and determining the destinies and body types Gross beings exist only in certain parts of the *Lok* (occupied space) in their respective media, such as earth, water, fire etc But the *sukshma* (minute) beings are spread all over the *Lok* (occupied space) freely

On rebirth every soul acquires matter particles suitable for building various functioning parts of its body, such as body with sense organs and functions like breathing and speaking The power to acquire these particles is developed in *Antarmuhurt* (less than 48 minutes) Beings fully endowed with such power are called *paryaptak* (fully developed) As long as they do not have such power they are called *aparyaptak* (underdeveloped) Here *parinat* simply means lifeless and *aparinat* means with life

## द्रव्य–पद DRAVYA-PAD (SEGMENT OF ENTITY)

१३८. दुविहा दव्वा पण्णत्ता, तं जहा–परिणया चेव, अपरिणया चेव।

१३८. द्रव्य दो प्रकार के है–परिणत (बाह्य कारणो से वर्तमान पर्याय को छोडकर अन्य रूपान्तर को प्राप्त अवस्था), और अपरिणत (अपने स्वाभाविक रूप से अवस्थित)।

**138.** *Dravya* (entities) are of two kinds—*parinat* (transformed from original state or mode to another) and *aparinat* (non-transformed or existing in original state)

## स्थावर जीव–निकाय–पद STHAVAR JIVA-NIKAYA-PAD (SEGMENT OF IMMOBILE CATEGORY OF BEINGS)

१३९. दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता, तं जहा–गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव।

१४०. दुविहा आउकाइया पण्णत्ता, तं जहा–गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव।

१४१. दुविहा तेउकाइया पण्णत्ता, तं जहा–गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव।

१४२. दुविहा वाउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव। १४३. दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता, तं जहा—गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव।

१३९. पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के हैं—गतिसमापन्नक—(एक भव से दूसरे भव में जाते समय अन्तराल गति में वर्तमान) और अगतिसमापन्नक—(वर्तमान भव में अवस्थित)। १४०. इसी प्रकार अप्कायिक जीव। १४१. तेजस्कायिक जीव। १४२. वायुकायिक जीव। १४३. और वनस्पतिकायिक जीव भी दो प्रकार के हैं—गतिसमापन्नक और अगतिसमापन्नक।

**139.** *Prithvikayik jiva* (earth-bodied beings) are of two kinds—*gatisamapannak* (in transitional state while moving from one birth to the next) and *agatisamapannak* (in original or present birth) In the same way... **140.** *Apkayik jiva* (water-bodied beings), **141.** *Tejaskayik jiva* (fire-bodied beings), **142.** *Vayukayik jiva* (air-bodied beings), **143.** and *Vanaspatikayik jiva* (plant-bodied beings) are of also two kinds—*gatisamapannak* and *agatisamapannak*

### *द्रव्य–पद* DRAVYA-PAD (SEGMENT OF ENTITY)

१४४. दुविहा दव्वा पण्णत्ता, तं जहा—गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव।

१४४. द्रव्य दो प्रकार के है—गतिसमापन्नक—(गमन मे प्रवृत्त) और अगतिसमापन्नक—(अवस्थित)।

**144.** *Dravya* (entities) are of two kinds—*gatisamapannak* (mobile) and *agatisamapannak* (stationary)

### *स्थावर जीव–निकाय–पद* STHAVAR JIVA-NIKAYA-PAD (SEGMENT OF IMMOBILE CATEGORY OF BEINGS)

१४५. दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोगाढा चेव, परंपरोगाढा चेव। १४६. दुविहा आउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोगाढा चेव, परंपरोगाढा चेव। १४७. दुविहा तेउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोगाढा चेव, परंपरोगाढा चेव। १४८. दुविहा वाउकाइया पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोगाढा चेव, परंपरोगाढा चेव। १४९. दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोगाढा चेव, परंपरोगाढा चेव।

१४५. पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के है—अनन्तरावगाढ (जिनको किसी आकाश-प्रदेश पर ठहरे हुए एक समय हुआ हो) और परम्परावगाढ़ (जो दो या अधिक समयो से किसी आकाश-प्रदेश में स्थित है)। १४६. अप्कायिक जीव। १४७. तेजस्कायिक जीव। १४८. वायुकायिक जीव। १४९. और वनस्पतिकायिक जीव भी दो प्रकार के है—अनन्तरावगाढ़ और परम्परावगाढ।

**145.** *Prithvikayik jiva* (earth-bodied beings) are of two kinds—*anantaravagadh* (having spent just one *Samaya* since occupying some space-

point) and *paramparavagadh* (having spent two or more *Samayas* since occupying some space-point) In the same way all **146.** *Apkayik jiva* (water-bodied beings), **147.** *Tejaskayik jiva* (fire-bodied beings), **148.** *Vayukayik jiva* (air-bodied beings), **149.** and *Vanaspatikayik jiva* (plant-bodied beings) are also of two kinds—*anantaravagadh* and *paramparavagadh*.

### द्रव्य-पद DRAVYA-PAD (SEGMENT OF ENTITY)

**१५०. दुविहा दव्वा पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोगाढा चेव, परंपरोगाढा चेव। १५१. दुविहे काले पण्णत्ते, तं जहा—ओसप्पिणीकाले चेव, उस्सप्पिणीकाले चेव। १५२. दुविहे आगासे पण्णत्ते, तं जहा—लोगागासे चेव, अलोगागासे चेव।**

१५०. द्रव्य दो प्रकार के है—अनन्तरावगाढ़ (जो आकाश-प्रदेशों पर शृंखलाबद्ध स्थित है) और परम्परावगाढ (जो बीच-बीच में अन्तर पाकर स्थित है)। १५१. काल दो प्रकार का है—अवसर्पिणीकाल और उत्सर्पिणीकाल। १५२. आकाश दो प्रकार का है—लोकाकाश और अलोकाकाश।

**150.** *Dravya* (entities) are of two kinds—*anantaravagadh* (having occupied space-points in continuity without gap) and *paramparavagadh* (having occupied space-points in discontinuity or with gaps). **151.** *Kaal* (time) is of two kinds—*Avasarpini kaal* (regressive half-cycle of time) and *Utsarpini kaal* (progressive half-cycle of time) **152** *Akash* (space) is of two kinds—*lokakash* (occupied space) and *alokakash* (unoccupied space)

### शरीर-पद SHARIRA-PAD (SEGMENT OF BODY)

**१५३. णेरइयाणं दो सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरए कम्मए, बाहिरए वेउव्विए। १५४. देवाणं दो सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरए कम्मए, बाहिरए वेउव्विए। १५५. पुढविकाइयाणं दो सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरगे कम्मए, बाहिरगे ओरालिए जाव वणस्सइकाइयाणं। १५६. बेइंदियाणं दो सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणितबद्धे बाहिरगे ओरालिए। १५७. तेइंदियाणं दो सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणितबद्धे बाहिरगे ओरालिए। १५८. चउरिंदियाणं दो सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणितबद्धे बाहिरगे ओरालिए। १५९. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं दो सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणियण्हारुछिराबद्धे बाहिरगे ओरालिए। १६०. मणुस्साणं दो सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भंतरगे चेव, बाहिरगे चेव। अब्भंतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणियण्हारुछिरा-बद्धे बाहिरगे ओरालिए।**

१५३. नैरयिकों के दो शरीर होते हैं–आभ्यन्तर और बाह्य। आभ्यन्तर कार्मण शरीर (जो सर्वकर्मों का बीजभूत) है, और बाह्य भव धारणीय वैक्रिय शरीर है। १५४. इसी प्रकार देवों के दो शरीर होते हैं–आभ्यन्तर कार्मण शरीर और बाह्य वैक्रिय शरीर। १५५. पृथ्वीकायिक जीवों के दो शरीर होते हैं–आभ्यन्तर कार्मण शरीर और बाह्य औदारिक शरीर। इसी प्रकार अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक जीवों के दो-दो शरीर होते हैं–आभ्यन्तर कार्मण शरीर और बाह्य औदारिक शरीर। १५६. द्वीन्द्रिय जीवों के दो शरीर होते हैं–आभ्यन्तर कार्मण शरीर और बाह्य अस्थि, माँस और रक्तयुक्त औदारिक शरीर। १५७. त्रीन्द्रिय जीवों के दो शरीर होते हैं–आभ्यन्तर कार्मण शरीर और बाह्य अस्थि, माँस और रक्तमय औदारिक शरीर। १५८. इसी प्रकार चतुरिन्द्रिय जीवों के दो शरीर होते हैं–आभ्यन्तर कार्मण शरीर और बाह्य औदारिक शरीर। १५९. पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीवों के दो शरीर होते हैं–आभ्यन्तर कार्मण शरीर और बाह्य अस्थि, माँस, रुधिर, स्नायु एव शिरायुक्त औदारिक शरीर। १६०. मनुष्यो के दो शरीर होते हैं–आभ्यन्तर कार्मण शरीर और बाह्य अस्थि, माँस, रुधिर, स्नायु एव शिरायुक्त औदारिक शरीर।

**153.** The body of a *Nairayik* (infernal being) is of two kinds—*abhyantar* (inner) and *bahya* (outer). Inner is *karman sharira* (*karmic* body which is the aggregate of all *karmas*) and outer is *bhavadharaniya vaikriya sharira* (incarnation sustaining transmutable body). **154.** The body of a *dev* (divine being) is of two kinds—*abhyantar* and *bahya*. Inner is *karman sharira* and outer is *bhavadharaniya vaikriya sharira* **155.** The body of a *prithvikayik jiva* (earth-bodied being) is of two kinds—*abhyantar* and *bahya* Inner body is *karman sharira* (*karmic* body) and outer is *audarik sharira* (gross physical body) (Same is true for water-bodied, fire-bodied, air-bodied and plant-bodied beings). **156.** The body of a *dvindriya jiva* (two sensed being) is of two kinds—*abhyantar* and *bahya* Inner is *karman sharira* and outer is *audarik sharira* (gross physical body) with *asthi* (bones), *maans* (flesh) and *rakt* (blood) **157.** The body of a *trindriya jiva* (three sensed being) is of two kinds—*abhyantar* and *bahya* Inner is *karman sharira* and outer is *audarik sharira* (gross physical body with bones, flesh and blood) **158.** The body of a *chaturindriya jiva* (four sensed being) is of two kinds—*abhyantar* and *bahya*. Inner is *karman sharira* and outer is *audarik sharira* (gross physical body with bones, flesh and blood) **159.** The body of a *panchendriya tiryagyonik jiva* (five sensed animal) is of two kinds—*abhyantar* and *bahya*. Inner is *karman sharira* and outer is *audarik sharira* (gross physical body) with *asthi* (bones), *maans* (flesh), *rakt* (blood), *snayu* (ligaments) and *shira* (veins). **160.** The body of a *manushya* (human being) is of two kinds—*abhyantar* and *bahya*. Inner

is *karman sharıra* and outer is *audarık sharıra* (gross physical body with bones, flesh, blood, ligaments and veins)

**विग्रह-गति-पद VIGRAHA-GATI-PAD (SEGMENT OF OBLIQUE MOVEMENT)**

**१६१. विग्गहगइसमावण्णगाणं णेरइयाणं दो सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा-तेयए चेव, कम्मए चेव। णिरंतरं जाव वेमाणियाणं।**

१६१. विग्रहगति मे वर्तमान नारक जीवो के दो शरीर होते है-तेजस् शरीर और कार्मण शरीर। इसी प्रकार विग्रहगति समापन्नक वैमानिक देवो तक सभी दण्डको मे दो-दो शरीर जानना चाहिए।

**161.** The body of a *vıgraha-gatı samapannak naırayık* (ınfernal being havıng oblıque movement durıng reıncarnatıon) ıs of two kinds—*taıjas sharıra* (fiery body) and *karman sharıra* (*karmıc* body). In the same way the bodıes of each of the beıngs of all *dandaks* (places of sufferıng) up to *Vaımanık devas* (gods dwellıng ın celestıal vehicles) are of the saıd two kınds each

विवेचन-जीव जब पूर्व शरीर को छोडकर नवीन उत्पत्तिस्थान की ओर जाता है तब उसकी बीच की गति दो प्रकार की होती है-ऋजुगति और वक्रगति। समश्रेणि (सीधी श्रेणि) मे गमन करना ऋजुगति है (यह एक समय की होती है)। जब उस जीव का उत्पत्तिस्थान विश्रेणि मे होता है तब वह विग्रहगति-समापन्नक कहलाता है (वक्र विग्रहगति दो समय, तीन समय, चार समय और पाँच समय की भी होती है-देखे चित्र ४)।

पाँच शरीरो मे कार्मण एव तेजस् शरीर आभ्यन्तर तथा औदारिक, वैक्रिय एव आहारक बाह्य शरीर होते है। कार्मण शरीर सभी ससारी जीवो मे रहता है।

**Elaboration**—At the tıme of reıncarnatıon when a soul moves from the exıstıng body to the new place of bırth ıt has two kınds of movement—*rıju gatı* (straıght movement, ıt ıs of a duratıon of one *Samaya*) and *vakra* or *vıgraha gatı* (oblıque movement, ıt ıs of a duratıon of two, three, four or five *Samayas*) When thıs movement ıs oblıque the beıng undergoıng such movement ıs called *vıgraha-gatı samapannak*

Of the five kınds of bodıes *karman* (*karmıc*) and *taıjas* (fiery) are inner bodıes The *audarık* (gross physıcal), *vaıkrıya* (transmutable) and *aharak* (telemıgratory) are outer Every beıng in thıs world has a *karmıc* body.

**१६२. णेरइयाणं दोहिं ठाणेहिं सरीरुप्पत्ती सिया, तं जहा-रागेण चेव, दोसेण चेव जाव वेमाणियाणं। १६३. णेरइयाणं दुट्ठाणाणिव्वत्तिए सरीरे पण्णत्ते, तं जहा-रागणिव्वत्तिए चेव, दोसणिव्वत्तिए चेव जाव वेमाणियाणं।**

चित्र परिचय ४

Illustration No. 4
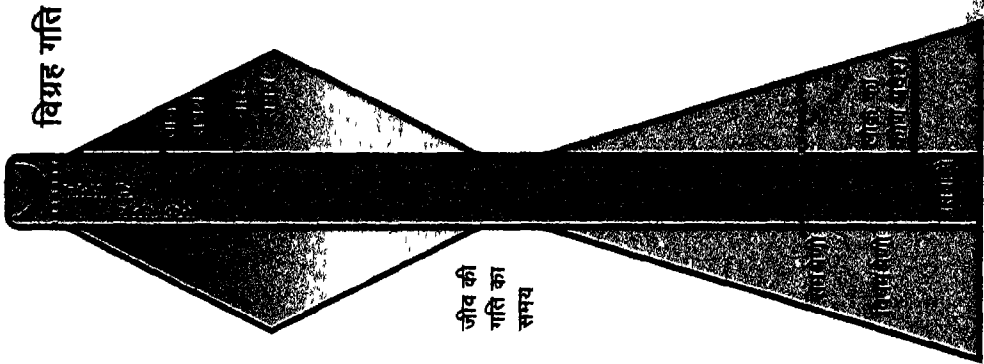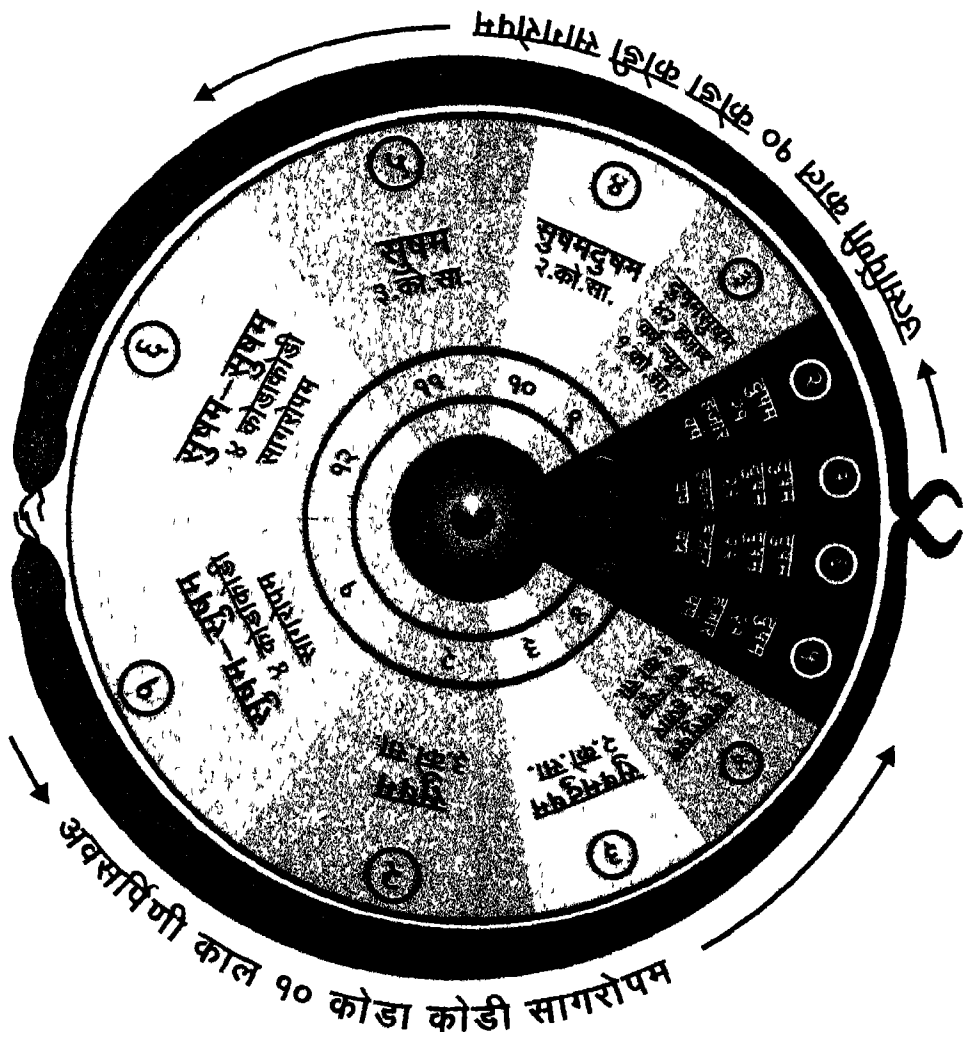
# काल चक्र और विग्रह गति

काल चक्र के मुख्य दो भेद है (I) अवसर्पिणी, और (II) उत्सर्पिणी। दोनो ही १०–१० कोडा-कोडी सागरोपम के है। अवसर्पिणी काल मे जीवो की आयुष्य, शरीर के बल, बुद्धि, सुख आदि तथा पृथ्वी व पदार्थो के रूप, रस, गध आदि क्रमश घटते जाते है तथा उत्सर्पिणी मे इसके विपरीत क्रमश वृद्धि होती जाती है। अवसर्पिणी काल के छह आरे तथा उत्सर्पिणी काल के भी छह आरे यो कुल बारह आरो का एक काल चक्र, २० कोडा कोडी सागरोपम का है। अवसर्पिणी काल के चार आरे क्रमश घटते और उत्सर्पिणी काल के क्रमश बढते जाते है। चित्र मे प्रत्येक आरो के नाम तथा उनकी काल अवधि दर्शायी गई है।

स्थान २ सूत्र ७४

**विग्रह गति–**

जीव जब अपने पूर्व शरीर को छोडकर दूसरी गति मे उत्पन्न होने को जाता है तब उसके बीच की गति विग्रह गति है। यदि वह सीधी समश्रेणी मे होती है तो उसे ऋजु गति कहते है। यह एक समय की होती है और इसमे कही घुमाव नही होता। विषम श्रेणी से आने पर जब गति मे एक घुमाव लेना पडता है, तब वह वक्र गति दो समय की होती है। जब जीव त्रसनाडी के बाहर से आता है तब दो घुमाव की गति मे तीन समय और त्रसनाडी के बाहर से आकर वापस बाहर जाकर उत्पन्न होता है तब तीन घुमाव की गति मे चार समय लगते है। त्रस जीवो की उत्पत्ति त्रसनाडी के बाहर नही होती। चित्र मे लोक के मध्य मे त्रसनाडी मे जीव की विग्रह गति की स्थिति दर्शायी है।

–स्थान २ सूत्र १६१

# KAAL CHAKRA AND VIGRAHA GATI

Time cycle is of two kinds--(I) *Avasarpini* (the period of regressive half-cycle of time), and (II) *Utsarpini* (the period of progressive half cycle of time) Each is ten *Kota koti Sagaropam* long During the regressive half-cycle there is a gradual decline in strength, wisdom, size of the body life-span and other qualities of living beings and form taste, smell and other properties of matter During the progressive half cycle there is gradual improvement in the said qualities Like the spokes in a wheel there are six *aras* each in these half-cycles making a complete cycle of twelve *aras* twenty *Kota koti Sagaropam* long There is a gradual increase in the time span of four *aras* of progressive half-cycle and decrease in four *aras* of regressive half-cycle The illustration shows names and duration of each of these *aras*

--*Sthaan 2, Sutra 74*

**Vigraha Gati—**

At the time of reincarnation when a soul moves from the existing body to the new place of birth its movement is called *vigraha gati* If the movement is in a straight line it is called *riju gati* It is of a duration of one *Samaya* and is absolutely straight When taking an oblique path a turn is involved and that *vakra gati* (oblique movement) is of a duration of two *Samayas* When a soul is coming into *Tras Nadi* from outside two turns are involved and the time taken is three *Samayas* When a soul comes into *Tras Nadi* and is reborn only after going back, three turns are involved and the time taken is four *Samayas* Mobile beings are never born out side *Tras Nadi* The illustration shows the oblique movement of soul related to *Tras Nadi* located at the center of *Lok*

—*Sthaan 2, Sutra 161*

१६२. नारकों के दो स्थानों (कारणों) से शरीर की उत्पत्ति होती है–राग से और द्वेष से। इसी प्रकार वैमानिक देवों तक भी सभी दण्डकों में जानना चाहिए। १६३. नारकों से लेकर वैमानिकों तक सभी दण्डको के जीवो के शरीर की निष्पत्ति (पूर्णता) दो कारणों से होती है–राग से और द्वेष से।

**162.** The bodies of *nairayiks* (infernal beings) are born due to two *sthaans* (causes)—*raag* (attachment) and *dvesh* (aversion). The same is true for beings of all *dandaks* (places of suffering) up to *Vaimanik devas* (gods dwelling in celestial vehicles) **163.** The bodies of *nairayiks* (infernal beings) attain *nishpatti* (complete development) due to two *sthaans* (causes)—*raag* (attachment) and *dvesh* (aversion). The same is true for beings of all *dandaks* (places of suffering) up to *Vaimanik devas* (gods dwelling in celestial vehicles).

### *काय–पद* KAYA-PAD (SEGMENT OF BODIED BEINGS)

**१६४. दो काया पण्णत्ता, तं जहा–तसकाए चेव, थावरकाए चेव। १६५. तसकाए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–भवसिद्धिए चेव, अभवसिद्धिए चेव। १६६. थावरकाए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–भवसिद्धिए चेव, अभवसिद्धिए चेव।**

१६४. काय दो प्रकार के हैं–त्रसकाय और स्थावरकाय। १६५. त्रसकाय दो प्रकार के हैं–भवसिद्धिक (भव्य) और अभवसिद्धिक (अभव्य)। १६६. स्थावरकायिक दो प्रकार के है–भवसिद्धिक और अभवसिद्धिक।

**164.** *Kaya* (bodied beings) are of two kinds—*tras-kaya* (mobile beings) and *sthavar-kaya* (immobile beings) **165.** *Tras-kaya* (mobile beings) are of two kinds—*bhavasiddhik* (worthy of being liberated) and *abhavasiddhik* (unworthy of being liberated) **166.** *Sthavar-kaya* (immobile beings) are of two kinds—*bhavasiddhik* (worthy of being liberated) and *abhavasiddhik* (unworthy of being liberated)

### *दिशा–पद (शुभ दिशा)* DISHA-PAD (SEGMENT OF DIRECTION)

**१६७. दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पव्वावित्तए–पाईणं चेव उदीणं चेव। १६८. दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा–मुंडावित्तए, सिक्खावित्तए, उवट्ठावित्तए संभुंजित्तए, संवासित्तए, सज्झायमुद्दिसित्तए, सज्झायं समुद्दिसित्तए, सज्झायमणुजाणित्तए, आलोइत्तए पडिक्कमित्तए, णिंदित्तए, गरहित्तए, विउट्टित्तए, विसोहित्तए, अकरणयाए अब्भुट्ठित्तए अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जित्तए–पाईणं चेवं, उदीणं चेव। १६९. दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पति णिग्गंथाणं वा णिग्गंथीणं वा अपच्छिम–**

मारणंतियसंलेहणा-जूसणा-जूसियाणं भत्तपाणपडियाइक्खित्ताणं पाओवगत्ताणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तए, तं जहा-पाईणं चेव, उदीणं चेव।

॥ प्रथम उद्देशक समत्तं ॥

१६७. निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियो को पूर्व और उत्तर इन दो दिशाओ की तरफ मुख करके दीक्षित करना कल्पता (विहित) है। १६८. (इसी प्रकार) निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियो को पूर्व और उत्तर दिशा मे मुख करके दीक्षा देना, शिक्षा देना (अध्ययन प्रारम्भ करना), महाव्रतों में स्थापित करना, भोजन-मण्डली मे सम्मिलित करना, एक स्थान पर निवास करना, स्वाध्याय के लिए उद्देश-(स्वाध्याय की प्रेरणा) करना, स्वाध्याय को समुद्देश-(पढे हुए पाठ को स्थिर रखने की प्रेरणा) करना, स्वाध्याय की अनुज्ञा-(पढ़े हुए पाठ को स्मृति मे धारण करने का निर्देश) देना, आलोचना करना, प्रतिक्रमण करना, अतिचारो की गर्हा करना, लगे हुए दोषो का छेदन (प्रायश्चित्त) करना, दोषो की शुद्धि करना, पुन. दोष न करने की प्रतिज्ञा करना, दोष के अनुसार यथायोग्य प्रायश्चित्त रूप तप कर्म स्वीकार करना कल्पता है। १६९. जो निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थियाँ अपश्चिम-मारणान्तिक (अन्तिम) सलेखना की आराधना कर रहे है, जो भक्त पान का प्रत्याख्यान कर चुके है, जो पादोपगम सथारा स्वीकार कर चुके हैं, मरण काल की आकांक्षा नही रखते हुए प्रसन्नतापूर्वक विहर रहे है, उन्हें पूर्व और उत्तर इन दो दिशाओं की ओर मुख करके रहना चाहिए।

**167.** It is proper to initiate *nirgranth* (male ascetics) and *nirgranthi* (female ascetics) when they are facing two directions—east and north **168.** (In the same way) It is proper for *nirgranth* and *nirgranthi* to perform following acts when they face two directions—east and north—to tonsure, to teach (commence lessons), to make them accept great vows, to join them in group-meal and stay at one place, to inspire them to study, to understand lessons, to instruct them to memorize lessons, and help them in self-criticism and critical review, to repent for transgressions in praxis, to condone mistakes committed, to cleanse faults, to resolve not to repeat mistakes and to accept austerities suitable for condoning mistakes **169.** It is proper for *nirgranths* and *nirgranthis* to face two directions—east and north—while indulging in *marunantik samlekhana* (ultimate vow or fasting unto death), *bhakt-paan pratyakhyan* (absolute abstainment from intake of food and water), *padopagam santhara* (observing ultimate vow lying like a log of wood) and happily spending their time without anticipating the moment of death

**विवेचन**-कोई भी शुभ कार्य करते समय पूर्व दिशा और उत्तर दिशा मे मुख करने का विधान प्राचीनकाल से चला आ रहा है। इसके पीछे आध्यात्मिक उद्देश्य तो यह है कि पूर्व दिशा से उदित होने वाला सूर्य जिस प्रकार ससार को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार से दीक्षा आदि कार्य भी मेरे लिए

उत्तरोत्तर प्रकाश देते रहें। तथा उत्तर दिशा मे मुख करने का उद्देश्य यह है कि भरतक्षेत्र की उत्तर दिशा में विदेहक्षेत्र मे सीमन्धर स्वामी आदि २० तीर्थंकर विहरमान हैं, उनका स्मरण मेरा पथ-प्रदर्शक रहे। ज्योतिष ग्रन्थों का कहना है कि पूर्व और उत्तर दिशा की ओर मुख करके शुभ कार्य करने पर ग्रह-नक्षत्र आदि का शरीर और मन पर अनुकूल प्रभाव पडता है और दक्षिण या पश्चिम दिशा में मुख करके कार्य करने पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है। पूर्व दिशा प्रकाश व अभ्युदय की प्रतीक है, उत्तर दिशा धैर्य व समृद्धि की।

भगवतीसूत्र में चारों दिशाओं के चार लोकपालों का उल्लेख है, पूर्व दिशा का लोकपाल सोम, दक्षिण का यम, पश्चिम का वरुण तथा उत्तर दिशा का लोकपाल वैश्रवण है। सोम और वैश्रवण सौम्यदृष्टि तथा धार्मिको की रक्षा करने वाले हैं। हो सकता है इस दृष्टि से भी पूर्व एवं उत्तर दिशा शुभ मानी जाती हो। सभी तीर्थंकर साधना काल मे उक्त दो दिशाओ के अभिमुख होकर साधना करते हैं, तथा समवसरण में प्रवचन भी इन्ही दो दिशाओ की ओर अभिमुख होकर करते है।

दीक्षा के समय शिरोमुण्डन कराकर साधना पथ पर बढने वाले को दो प्रकार की **शिक्षा** दी जाती है-**ग्रहणशिक्षा**-सूत्र और अर्थ को ग्रहण करने की और **आसेवनशिक्षा**-पात्रादि के प्रतिलेखानादि की विधि का ज्ञान।

शास्त्रो में साधुओ की सात मण्डलियो का उल्लेख मिलता है-(१) **सूत्र-मण्डली**-सूत्र पाठ के समय एक साथ बैठना। (२) **अर्थ-मण्डली**-सूत्र के अर्थ-पाठ के समय एक साथ बैठना। (३) **भोजन-मण्डली**-भोजन करते समय एक साथ बैठना, (४) इसी प्रकार **कालप्रतिलेखन-मण्डली**, (५) **प्रतिक्रमण-मण्डली**, (६) **स्वाध्याय-मण्डली**, और (७) **संस्तारक-मण्डली**। इन सभी का निर्देश सूत्र १६८ मे किया गया है।

जीवन के अन्तिम समय मे कषायो को कृश करते हुए काया को कृश करने का नाम **संलेखना** है। मानसिक निर्मलता के लिए कषायो को कृश करना तथा शरीर मे वात-पित्तादि विकारो की शुद्धि के लिए भक्त-पान का त्याग करना, **भक्त-पान प्रत्याख्यान समाधिमरण** है। शरीर की समस्त क्रियाओ को छोडकर कटे हुए वृक्ष की तरह शय्या पर निश्चेष्ट पडा रहना **पादोपगमन** संथारा है। *(अभयदेवसूरिकृत वृत्ति एव टीका, पृ १८४)*

**॥ प्रथम उद्देशक समाप्त ॥**

**Elaboration**—To face east and north direction while performing some auspicious act is an age old custom. In spiritual context the idea behind the custom of facing east is that the specific act may enlighten one's life just as the sun rising in the east enlightens the world In the Videh area, which is to the north of Bharat area, there live twenty *Tirthankars* including Simandhar Swami. The idea behind facing north is that remembrance of these omniscients may become one's guiding factor towards spiritual progress. According to astrology the planets and

constellations cast a favourable influence on body and mind when auspicious tasks are performed facing east or north Whereas the influence is unfavourable when we perform the task facing west or south East represents light and progress, north represents patience and affluence

In *Bhagavati Sutra* the names of the four *lok-paals* (guardian angels) of the four cardinal directions are mentioned—Soma is the *lok-paal* of east, Yam is that of south, Varun is that of west and Vaishraman is that of north Soma and Vaishraman cast soothing influence and are protectors of the religious It is probable that this may be the reason for considering east and north to be auspicious directions. All *Tirthankars* do their spiritual practices facing these two directions They also give their sermon in the *Samavasaran* facing these two directions

At the time of initiation the aspirant is given two instructions—*grahan shiksha* or directions to listen to and understand the scriptures, and *aasevan shiksha*—directions for cleaning and looking after ascetic equipment including the bowls

Mention of seven kinds of ascetic groups (*mandali*) is available in scriptures—(1) *Sutra-mandali*—to be in a group during recitation of scriptures (2) *Arth-mandali*—to be in a group during recitation of the meaning of scriptures (3) *Bhojan-mandali*—to be in a group during taking meals. (4) *Kaal-pratilekhan-mandali*—to be in a group during periodic cleansing. (5) *Pratikraman-mandali*—to be in a group during critical review (6) *Svadhyaya-mandali*—to be in a group during studies (7) *Samstarak-mandali*—to be in a group during making bed Aphorism 168 lists all these

To emaciate the body while subduing passions during the last moments of life is called *samlekhana* To weaken passions for achieving spiritual purity while abstaining from food and water intake for the purpose of cleansing the body of its disorders during the last moments of life is called *bhakt-paan-pratyakhyan samadhimaran* To stop all activities of the body and lie still on the bed like an uprooted tree is called *paadopagaman santhara* (*Vritti* and *Tika* by Abhayadev Suri, p 184)

**● END OF THE FIRST LESSON ●**

## द्वितीय उद्देशक
## SECOND LESSON

**वेदना–पद VEDANA-PAD (SEGMENT OF SUFFERING)**

**१७०. जे देवा उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा चारिट्ठितिया गतिरतिया गतिसमावण्णगा, तेसि णं देवाणं सता समितं जे पावे कम्मे कज्जति, तत्थगताबि एगतिया वेयणं वेदेंति, अण्णत्थगताबि एगतिया वेयणं वेदेंति।**

१७०. ऊर्ध्व लोक मे जो देव, सौधर्म आदि कल्पो मे उत्पन्न हुए है, नौ ग्रैवेयक तथा अनुत्तर विमानो मे उत्पन्न हुए हैं, तथा जो चार–गतिशील है–अढाई द्वीपवर्ती ज्योतिश्चक्र क्षेत्र में उत्पन्न हैं, जो चारस्थितिक है–अर्थात् अढाई द्वीप से बाहर स्थित ज्योतिश्चक्र में उत्पन्न है, और जो गतिशील और सतत गति वाले विमानो में उत्पन्न है, इन देवों के सदा–सर्वदा पाप कर्म का जो बन्ध होता है उसका फल कई देव उसी भव मे भोगा करते है और कई देव अन्य भव–भवान्तर में भी फल भोग करते हैं।

**170.** Gods born in *Saudharm* and other *kalps* (divine dimensions or abodes) of the *Urdhva Lok* (higher sector in space), gods born in nine *Graiveyak* sectors and *Anuttar Vimaan* sectors, moving (within the Adhai Dveep area) and stationary (outside the Adhai Dveep area) gods born in *Jyotish-chakra* (sector of stellar gods) and gods born in constantly moving celestial vehicles, all these gods continuously attract bondage of demeritorious *karmas* Many of these gods suffer the fruits of their *karmic* bondage during that very birth and many during other following births

**१७१. णेरइयाणं सता समियं जे पावे कम्मे कज्जति, तत्थगताबि एगतिया वेदणं वेदेंति, अण्णत्थगताबि एगतिया वेदणं वेदेंति जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं।**

१७१. नारकी तथा द्वीन्द्रिय से लेकर पचेन्द्रियतिर्यग्योनिक तक दण्डको के जीवो के सदा–सर्वदा जो पाप कर्म का बन्ध होता है, वह जीव उसी भव मे उसका फल भोग लेते है, कई उसका अन्य गति मे जाकर भी भोगते है।

**171.** Beings of all *dandaks* (places of suffering) from *nairayiks* and two sensed beings to five sensed animals continuously attract bondage of demeritorious *karmas*. Many of these beings suffer the fruits of their *karmic* bondage during that very birth and many during other following births.

१७२. मणुस्साणं सता समितं जे पावे कम्मे कज्जति, इहगताबि एगतिया वेदणं वेदेंति, अण्णत्थगताबि एगतिया वेदणं वेदेंति। मणुस्सवज्जा सेसा एक्कगमा।

१७२. मनुष्यो के सदा-सर्वदा जो पाप कर्म का बन्ध होता है, कितने ही मनुष्य इसी भव मे उनका फल भोग लेते है और कितने ही यहाँ भी भोगते है और अन्य गति मे जाकर भी भोगते है। मनुष्यो को छोड़कर शेष दण्डको का कथन एक समान है अर्थात् संचित कर्म का इस भव मे वेदन करते है और अन्य भव मे जाकर भी वेदन करते है किन्तु मनुष्य के लिए मणुस्सवज्जा ऐसा शब्द-प्रयोग इसलिए किया है कि वह इसी भव मे सम्पूर्ण कर्म क्षय करके मुक्त भी हो सकता है।

**172.** Human beings continuously attract bondage of demeritorious *karmas* Many of these beings suffer the fruits of their *karmic* bondage during that very birth and many during other following births Except for human beings this statement is same for all other *dandaks*, that is they suffer the fruits of their *karmic* bondage during that very birth as well as during other following births Human beings are exceptions because they can also shed all the acquired *karmas* during that very birth and get liberated.

*गति-आगति-पद* **GATI-AAGATI-PAD (SEGMENT OF BIRTH FROM AND TO)**

**१७३. णेरइया दुगतिया दुयागतिया पण्णत्ता, तं जहा-णेरइए णेरइएसु उववज्जमाणे मणुस्सेहिंतो वा पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वा उववज्जेज्जा। से चेव णं से णेरइए णेरइयत्तं विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए वा पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ताए वा गच्छेज्जा।**

१७३. नैरयिक जीव दो गति मे गमन और दो गति से आगमन वाला होता है। यथा-नरक मे उत्पन्न होने वाले जीव मनुष्यो से अथवा पचेन्द्रियतिर्यग्योनिको मे से आकर उत्पन्न होते है। इसी प्रकार नारक जीव नारक अवस्था को छोडकर मनुष्य अथवा पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिको मे (आकर) उत्पन्न होता है। (अन्य किसी गति मे नहीं जाता)

**173.** A *nairayik* (infernal being) while reincarnating goes to (*gati*) two genuses and comes from (*aagati*) two genuses. It is like this—Coming from humans or five sensed animals they are born as infernal beings. Ending the infernal state they are born as humans or five sensed animals (They do not go to any other genus )

**१७४. एवं असुरकुमारा वि, णवरं-से चेव णं से असुरकुमारे असुरकुमारत्तं विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए वा तिरिक्खजोणियत्ताए, वा गच्छेज्जा। एवं सव्व देवा।**

१७४. असुरकुमार भवनपति देव भी दो गति (मनुष्य एव तिर्यंच) और दो आगति वाले होते है। असुरकुमार देव असुरकुमार-पर्याय को छोडता हुआ मनुष्य-पर्याय मे या तिर्यग्योनि मे जाता है। इसी प्रकार सर्व देवो की गति और आगति जानना चाहिए।

**174.** *Asur Kumar* and *Bhavan-pati* gods while reincarnating go to and come from two genuses (humans and five sensed animals). Ending the infernal state they are born as humans or five sensed animals. Same is true for all divine beings

विवेचन—यहाँ विशेष ज्ञातव्य है कि मनुष्य और सञ्ज्ञी पचेन्द्रिय तिर्यंच ही मरकर देवो मे उत्पन्न होते है, किन्तु भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिष्क तथा ईशानकल्प तक के देव, देव भव पूर्ण कर मनुष्य और पचेन्द्रिय तिर्यंचो के सिवाय एकेन्द्रिय पृथ्वी, जल और वनस्पतिकाय में भी उत्पन्न होते है।

**Elaboration**—It should be noted that only human beings and five sensed animals can reincarnate as divine beings. However, at the end of their divine life span gods of *Bhavanvasi* (abode dwelling), *Vyantar* (interstitial), *Jyotishk* (stellar) and others up to *Ishan Kalp* (divine dimension) can also take birth as one sensed beings of earth-bodied. water-bodied and plant-bodied classes.

**१७५. पुढविकाइया दुगतिया दुयागतिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा णो—पुढविकाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा। से चेव णं से पुढविकाइए पुढविकाइयत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा णो पुढविकाइयत्ताए वा गच्छेज्जा। १७६. एवं जाव मणुस्सा।**

१७५. पृथ्वीकायिक जीवो की दो गति और दो आगति होती है। पृथ्वीकाय मे उत्पन्न होने वाला जीव पृथ्वीकायिको से अथवा अन्य योनियो से आकर उत्पन्न होता है। पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वीकायिक अवस्था को छोडता हुआ पृथ्वीकायिक मे अथवा अन्य अप्कायिकादि मे जाता है। १७६. इसी प्रकार अप्काय से लेकर मनुष्य तक के सभी दण्डक वाले जीव अपने-अपने काय से अथवा अन्य कायो से आकर उस काय मे उत्पन्न होते है और वे अपनी-अपनी अवस्था छोडकर अपने-अपने उसी काय में अथवा अन्य कायों मे जाते है।

**175.** *Prithvikayiks* (earth-bodied beings) have two kinds of *gatis* (reincarnation to) and two *aagatis* (reincarnation from) A being taking birth as an earth-bodied being reincarnates from earth-bodied genus or any of the other genuses. A being leaving the state of an earth-bodied being reincarnates to earth-bodied genus or non-earth-bodied genuses. **176.** In the same way beings of all *dandaks* (places of suffering) from the *apkaya* (water-bodied beings) class to human beings taking birth as beings of a specific genus reincarnate from their own specific genus or any of the other genuses and beings leaving a specific genus reincarnate to that specific genus or any of the other genuses

**विवेचन**—तेजस्कायिक, वायुकाय तथा सातवी नरक से निकला हुआ जीव सीधा मनुष्य गति में नहीं जाता। तथा असख्यात वर्ष आयुष्य वाले मनुष्य एव तिर्यंच भी मनुष्य गति मे नहीं आते।

**Elaboration**—It should be noted that a being leaving the genus of fire-bodied, air-bodied and infernal beings from seventh hell does not directly reincarnate as a human being Also human beings and animals with a life span of innumerable years do not directly reincarnate as human beings.

### *दण्डक-मार्गणा-पद* DANDAK-MARGANA-PAD (SEGMENT OF SUB-CLASSES IN DANDAKS)

**१७७. (१) दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—भवसिद्धिया चेव, अभवसिद्धिया चेव जाव वेमाणिया। १७८. (२) दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोववण्णगा चेव, परंपरोववण्णगा चेव जाव वेमाणिया। १७९. (३) दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—गतिसमावण्णगा चेव, अगतिसमावण्णगा चेव, अपढमसमखओववण्णगा चेव जाव वेमाणिया। १८०. (४) दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमओववण्णगा चेव, अपढमसमओववण्णगा चेव जाव वेमाणिया। १८१. (५) दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—आहारगा चेव, अणाहारगा चेव। एवं जाव वेमाणिया। १८२. (६) दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—उस्सासगा चेव, णो उस्सासगा चेव जाव वेमाणिया। १८३. (७) दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—सइंदिया चेव, अणिंदिया चेव जाव वेमाणिया। १८४. (८) दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा चेव, अपज्जत्तगा चेव जाव वेमाणिया। १८५. (९) दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—सण्णी चेव, असण्णी चेव। एवं पंचेंदिया सव्वे विगलिंदियवज्जा जाव वाणमंतरा। १८६. (१०) दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—भासगा चेव, अभासगा चेव। एवमेगिंदियवज्जा सव्वे। १८७. (११) दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—सम्मद्दिट्ठिया चेव, मिच्छद्दिट्ठिया चेव। एगिंदियवज्जा सव्वे। १८८. (१२) दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—परित्तसंसारिया चेव, अणंतसंसारिया चेव। जाव वेमाणिया। १८९. (१३) दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—संखेज्जकालसमयट्ठितिया चेव, असंखेज्जकालसमयट्ठितिया चेव। एवं—पचेंदिया एगिंदियविगलिंदियवज्जा जाव वाणमंतरा। १९०. (१४) दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—सुलभबोधिया चेव, दुलभबोधिया चेव जाव वेमाणिया। १९१. (१५) दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—कण्हपक्खिया चेव, सुक्कपक्खिया चेव जाव वेमाणिया। १९२. (१६) दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—चरिमा चेव, अचरिमा चेव जाव वेमाणिया।**

१७७. (१) नैरयिक से लेकर वैमानिक देवो पर्यन्त सभी दण्डको में दो-दो तरह के जीव पाये जाते है-भवसिद्धिक-भव्य और अभवसिद्धिक-अभव्य। १७८. (२) अनन्तरोत्पन्न-(प्रति समय

निरन्तर उत्पन्न होने वाले, जैसे पाँच स्थावर) और परंपरोत्पन्न (बीच-बीच में अन्तर से उत्पन्न होने वाले)। १७९. (३) गति समापन्नक-(एक शरीर को छोड़कर उत्पत्तिस्थान को जाने वाले) और अगति समापन्नक (अपने-अपने भव मे स्थित)। १८०. (४) प्रथम समयोपपन्न-(जहाँ उत्पन्न हुए पहला समय हुआ है) और अप्रथम समयोपपन्न-(जहाँ उत्पन्न हुए अनेक समय हो चुके है)। १८१. (५) आहारक-(प्रति समय आहार ग्रहण करने वाले), अनाहारक-(विग्रह गति से भवान्तर मे जाते समय)। १८२. (६) उच्छ्वासक-(श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति से पर्याप्त), नोउच्छ्वासक-(जिसकी श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति पूर्ण नही हुई है)। १८३. (७) सइन्द्रिय-इन्द्रियो वाला), नोइन्द्रिय-(जिनकी इन्द्रियपर्याप्ति अभी पूर्ण नहीं हुई है)। १८४. (८) पर्याप्तक-अपर्याप्तक। १८५. (९) संज्ञी (विकलेन्द्रिय जीवों को छोडकर पचेन्द्रिय दण्डको मे वाणव्यन्तर पर्यन्त मनःपर्याप्ति वाले) और असंज्ञी। १८६. (१०) भाषक-(भाषापर्याप्ति से पर्याप्त), अभाषक-(जिनकी भाषापर्याप्ति अभी अपूर्ण है) एकेन्द्रिय जीवों को छोडकर शेष सभी मे दोनो भेद पाये जाते है। १८७. (११) सम्यग्दृष्टि-मिथ्यादृष्टि। १८८. (१२) परित्तससारी-(जिनका ससार भ्रमण सीमित है), अपरित्तसंसारी-(जिनका भव भ्रमण अनन्त है)। १८९. (१३) सख्येय कालस्थितिक-(सख्यात वर्षायुष्क वाले जैसे एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय), असख्येय कालस्थितिक-एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय एव वाणव्यन्तर को छोडकर। १९०. (१४) सुलभबोधिक-(जिन्हे धर्म की प्राप्ति सुलभ है), दुर्लभबोधिक। १९१. (१५) कृष्णपाक्षिक-अभव्यात्मा (अनन्त काल तक ससार भ्रमण करने वाले) शुक्लपाक्षिक-(भव्यात्मा मोक्षगामी)। १९२. (१६) चरम-(एक भव लेकर मोक्ष जाने वाले) और अचरम। नैरयिको से वैमानिक तक सभी दण्डको मे उक्त भेद जानना चाहिए।

**177.** (1) *Nairayiks* are of two kinds—*bhavasiddhik* (worthy of being liberated) and *abhavasiddhik* (unworthy of being liberated) The same is true for all *dandaks* (places of suffering) up to *Vaimaniks* (celestial vehicle dwelling gods) In the same way all beings from *nairayiks* to *Vaimaniks* are of two kinds—**178.** (2) *Anantarotpanna* (being born continuously without a gap) and *paramparotpanna* (being born with a gap of time) **179.** (3) *Gati samapannak* (in process of reincarnating from one genus to another) and *agati samapannak* (living in their specific genus) **180.** (4) *Pratham samayopapanna* (having spent just one *Samaya* from being born in a specific genus) and *apratham samayopapanna* (having spent more than one *Samaya* from being born in a specific genus). **181.** (5) *Aharak* (having intake every moment) and *anaharak* (having no intake; this happens during the process of reincarnating from one place to another). **182.** (6) *Uchchhavasak* (with fully developed capacity of breathing) and *no-uchchhavasak* (without fully developed capacity of breathing). **183.** (7) *Sa-indriya* (with fully developed sense organs) and *no-*

*indrıya* (without fully developed sense organs) **184.** (8) *Paryaptak* (fully developed ın all respects) and *aparyaptak* (underdeveloped ın any respect) **185.** (9) *Sanjnı* (wıth fully developed mental faculty, sentıent, five-sensed beıngs up to ınterstıtıal gods) and *asanjnı* (without fully developed mental faculty). **186.** (10) *Bhaashak* (with fully developed faculty of speech) and *abhaashak* (without fully developed faculty of speech). **187.** (11) *Samyagdrıshtı* (with rıght perceptıon/faıth) and *mıthyadrıshtı* (wıth wrong perceptıon/faıth) **188.** (12) *Parıtta samsarı* (having lımıted wanderıngs ın cycles of rebırth) and *aparıtta samsarı* (having unlimıted wanderıngs ın cycles of rebirth). **189.** (13) *Samkhyeya kaal sthıtık* (wıth lıfe span of countable years, such as one sensed to four sensed beıngs) and *asamkhyeya kaal sthıtık* (with lıfe span of ınnumerable years, all beıngs except one sensed beıngs, beings wıth two to four sense organs and interstıtıal gods) **190.** (14) *Sulabh bodhık* (for whom righteousness ıs easıly attainable) and *durlabh bodhık* (to whom rıghteousness ıs dıfficult to get) **191.** (15) *Krıshnapakshık* (unworthy of beıng lıberated) and *shuklapakshık* (worthy of beıng lıberated) **192.** (16) *Charam* (to be liberated after one reıncarnatıon) and *acharam* (all others) The above classıficatıon should be understood ın case of all the *dandaks* from ınfernal beings up to *Vaımanık* gods

**विवेचन**—आहार तीन प्रकार के होते है–(१) ओज आहार, (२) लोम आहार, और (३) कवलाहार। अपने स्थान पर उत्पत्ति के समय जीव जो आहार ग्रहण करता है, वह **ओज आहार** है। शरीर के रोम कूपो के द्वारा जो आहार ग्रहण किया जाता है, वह **लोम आहार** है। यह सभी जीवो द्वारा लिया जाता है। कवल (ग्रास) के द्वारा ग्रहण किया जाने वाला **कवलाहार** है। एकेन्द्रिय जीव तथा देव और नारकीय कवलाहार नही लेते। जो जीव इन तीनों मे से किसी भी आहार को लेता है वह **आहारक**, तथा जो किसी भी आहार को नही लेता वह **अनाहारक** होता है। सिद्ध अनाहारक होते है। ससारी जीवो मे अयोगी केवली तथा केवलिसमुद्घात के समय केवली तीन समय तक अनाहारक रहते है।

जो विग्रहगति से भवान्तर में जाते हुए एक मोड या दो मोड करते है, वे एक या दो समय तक अनाहारक रहते है। जो जी  त्रस नाडी से मरकर पुन त्रस नाडी मे ही उत्पन्न होते हैं। वे एक या दो समय अनाहारक रहते है, किन्तु लोक नाडी मे प्रविष्ट हुए एकेन्द्रिय जीवो की अनाहारक अवस्था तीन समय की ही होती है। (विशेष स्पष्टता के लिए देखो सलग्न चित्र)

सूत्र १८५ मे विशेष—विकलेन्द्रिय जीव केवल असज्ञी होते है। ज्योतिष्क और वैमानिक जीव केवल संज्ञी होते हैं। वैमानिक भवनपति और वाणव्यन्तर जीव सज्ञी होते है, किन्तु पूर्व जन्म की अपेक्षा उन्हें दोनों ही कहा है। शेष सभी जीव दोनो होते है।

सूत्र १८६ एकेन्द्रिय जीव अभाषक होते है। शेष सभी दोनो ही होते है।

सूत्र १८७. एकेन्द्रिय को छोडकर शेष सभी जीवों में दोनो भेद पाये जाते है।

सूत्र १८९. एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीव संख्यात वर्ष वाले, ज्योतिष्क एवं वैमानिक असख्यात वर्षायुष्क वाले होते हैं। शेष दोनो प्रकार के होते है। *(आचार्य श्री आत्माराम जी म. कृत टीका, पृष्ठ ११४)*

**Elaboration**—*Ahar* means intake, *aharak* is one who does that and *anaharak* is one who does not. There are three kinds of *ahar*—(1) *oj-ahar* (energy intake), (2) *loam-ahar* (intake through body pores) and (3) *kavalahar* (intake of morsel) The initial intake at the time of conception of a being is called *oj-ahar*. Intake through body pores is called *loam-ahar* These two intakes are applicable to all beings. The intake of food in morsels through mouth is called *kaval-ahar*. One sensed, divine and infernal beings do not do *kaval-ahar* A being that undertakes any of these three kinds of intake is called *aharak* and one that does not do so is *anaharak* *Siddhas* are *anaharak*. Amongst the worldly beings *Ayogi Kevali* (omniscient when, in the instant before death, all his activities cease) and *Kevali* (omniscient) at the time of *kevalisamudghat* remain *anharak* for three *Samayas*

Those who take one or two turns during the process of reincarnation with oblique movement remain *anaharak* for one or two *Samayas*. Beings reincarnating from and to *Tras Naadi* (region of mobile beings) remain *anaharak* for one or two *Samayas* One sensed beings reincarnating in the *Lok Naadi* (occupied space beyond the region of mobile beings) remain *anaharak* for three *Samayas* (For clarity refer to illustration.)

Aph 185 *Vikalendriya* (beings with two to four sense organs) are only *asanjni* (without fully developed mental faculty or non-sentient). *Jyotishk* and *Vaimanik* beings are only *sanjni* (with fully developed mental faculty or sentient). Although infernal beings, abode dwelling gods and interstitial gods are also only *sanjni* but as some of them reincarnate from non-sentient five sensed animals they are also called non-sentient All the remaining beings are sentient and non-sentient both

Aph 186 One sensed beings are *abhaashak* (without fully developed faculty of speech) All the remaining beings are both *bhaashak* (with fully developed faculty of speech) and *abhaashak* (without fully developed faculty of speech).

Aph. 187 Except one sensed beings all other beings are both *Samyagdrishti* (with right perception/faith) and *mithyadrishti* (with wrong perception/faith)

Aph 189 One to four sensed beings are with life span of countable years. *Jyotishk* and *Vaimanik* beings are with life span of innumerable years. Remaining beings are of both types. *(See p 94 of Tika by Acharya Shri Atmaram ji M)*

**अधोऽवधिज्ञान–दर्शन–पद ADHO-AVADHI-JNANA-DARSHAN-PAD (SEGMENT OF ADHO-AVADHI-JNANA-DARSHAN)**

**१९३. दोहिं ठाणेहिं आया अहेलोगं जाणइ पासइ, तं जहा–(१) समोहएणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ, (२) ससमोहएणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ, (३) आहोहि समोहयासमोहएणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ।**

१९३. दो प्रकार से आत्मा अधोलोक को जानता और देखता है–(१) वैक्रिय आदि समुद्घात करके आत्मा अवधिज्ञान द्वारा अधोलोक को जानता–देखता है। (२) वैक्रिय आदि समुद्घात न करके भी आत्मा अवधिज्ञान से अधोलोक को जानता–देखता है। (३) अधोवधिज्ञानी (परमावधिज्ञान से नीचे अवधिज्ञान के जितने भेद है, उनमे से किसी एक प्रकार से) वैक्रिय आदि समुद्घात करके या किये बिना भी अवधिज्ञान से अधोलोक को जानता–देखता है।

**193.** A soul knows and sees *Adho lok* (lower world) two ways—(1) A soul knows and sees lower world through *avadhi-jnana* (extrasensory perception of the physical dimension, something akin to clairvoyance) by undergoing the process of *Samudghat* including *Vaikriya Samudghat* (self controlled transformation or mutation) (2) A soul knows and sees lower world through *avadhi-jnana* even without undergoing the process of *Samudghat* including *Vaikriya Samudghat* (3) *Adho-avadhi-jnani* (one endowed with any of the various types of *avadhi-jnana* lesser than the *param* or ultimate *avadhi-jnana*) knows and sees lower world through *avadhi-jnana* with or without undergoing the process of *Samudghat* including *Vaikriya Samudghat*

**१९४. दोहिं ठाणेहिं आया तिरियलोगं जाणइ–पासइ, तं जहा–(१) समोहएणं चेव अप्पाणेणं आया तिरियलोगं जाणइ पासइ, (२) असमोहएणं चेव अप्पाणेणं आया तिरियलोगं जाणइ पासइ, (३) आहोहि समोहयासमोहएणं चेव अप्पाणेणं आया तिरियलोगं जाणइ पासइ।**

१९४. दो प्रकार से आत्मा तिर्यक्लोक को जानता–देखता है–(१) वैक्रिय आदि समुद्घात करके अवधिज्ञान से तिर्यक्लोक को जानता–देखता है। (२) वैक्रिय आदि समुद्घात न करके भी आत्मा

अवधिज्ञान से तिर्यक्लोक को जानता-देखता है। (३) अधोवधिज्ञानी वैक्रिय आदि समुद्घात करके या बिना किये भी अवधिज्ञान से तिर्यक्लोक को जानता-देखता है।

**194.** A soul knows and sees *Tiryak lok* (middle world) two ways—(1) A soul knows and sees middle world through *avadhi-jnana* by undergoing the process of *Samudghat* including *Vaikriya Samudghat.* (2) A soul knows and sees middle world through *avadhi-jnana* even without undergoing the process of *Samudghat* including *Vaikriya Samudghat*. (3) *Adho-avadhi-jnani* knows and sees middle world through *avadhi-jnana* with or without undergoing the process of *Samudghat* including *Vaikriya Samudghat*

**१९५. दोहिं ठाणेहिं आया उड्ढलोगं जाणइ पासइ, तं जहा-(१) समोहएणं चेव अप्पाणेणं आया उड्ढलोगं जाणइ पासइ, (२) असमोहएणं चेव अप्पाणेणं आया उड्ढलोगं जाणइ पासइ, (३) आहोहि समोहयासमोहएणं चेव अप्पाणेणं आया उड्ढलोगं जाणइ पासइ।**

१९५. दो प्रकार से आत्मा ऊर्ध्वलोक को जानता-देखता है-(१) वैक्रिय आदि समुद्घात करके अवधिज्ञान से ऊर्ध्वलोक को जानता-देखता है। (२) वैक्रिय आदि समुद्घात न करके भी आत्मा अवधिज्ञान से ऊर्ध्वलोक को जानता-देखता है। (३) अधोवधिज्ञानी वैक्रिय आदि समुद्घात करके या किये बिना भी दोनो प्रकार से ऊर्ध्वलोक को जानता-देखता है।

**195.** A soul knows and sees *Urdhva lok* (upper world) two ways—(1) A soul knows and sees upper world through *avadhi-jnana* by undergoing the process of *Samudghat* including *Vaikriya Samudghat* (2) A soul knows and sees upper world through *avadhi-jnana* even without undergoing the process of *Samudghat* including *Vaikriya Samudghat* (3) *Adho-avadhi-jnani* knows and sees upper world through *avadhi-jnana* with or without undergoing the process of *Samudghat* including *Vaikriya Samudghat.*

**१९६. दोहिं ठाणेहिं आया केवलकप्पं लोगं जाणइ पासइ, तं जहा-(१) समोहएणं चेव अप्पाणेणं आया केवलकप्पं लोगं जाणइ पासइ, (२) असमोहएणं चेव अप्पाणेणं आया केवलकप्पं लोगं जाणइ पासइ। (३) आहोहि समोहयासमोहएणं चेव अप्पाणेणं आया केवलकप्पं लोगं जाणइ पासइ।**

१९६. दो प्रकार से आत्मा सम्पूर्ण लोक को जानता-देखता है-(१) वैक्रिय आदि समुद्घात करके तथा (२) वैक्रिय आदि समुद्घात न करके भी आत्मा अवधिज्ञान से सम्पूर्ण लोक को जानता-देखता है। (३) अधोवधिज्ञानी वैक्रिय आदि समुद्घात करके या किये बिना भी अवधिज्ञान से सम्पूर्ण लोक को जानता-देखता है।

196. A soul knows and sees *Sampurna lok* (the whole occupied space) two ways—(1) A soul knows and sees the whole occupied space through *avadhi-jnana* by undergoing the process of *Samudghat* including *Vaikriya Samudghat* (2) A soul knows and sees the whole occupied space through *avadhi-jnana* even without undergoing the process of *Samudghat* including *Vaikriya Samudghat* (3) *Adho-avadhi-jnani* knows and sees the whole occupied space through *avadhi-jnana* with or without undergoing the process of *Samudghat* including *Vaikriya Samudghat*

**१९७. दोहिं ठाणेहिं, आया अहेलोगं जाणइ पासइ, तं जहा–(१) विउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ, (२) अविउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ, (३) आहोहि विउव्वियाविउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ।**

१९७. दो प्रकार से आत्मा अधोलोक को जानता-देखता है-(१) वैक्रिय शरीर का निर्माण करके, तथा (२) वैक्रिय शरीर का निर्माण किये बिना भी अवधिज्ञान से अधोलोक को जानता-देखता है। (३) अधोवधिज्ञानी दोनो ही प्रकार से अधोलोक को जानता-देखता है।

197. A soul knows and sees *Adho lok* (lower world) two ways—(1) A soul knows and sees lower world through *avadhi-jnana* (extrasensory perception of the physical dimension, something akin to clairvoyance) by creating *Vaikriya sharira* (transmutable body). (2) A soul knows and sees lower world through *avadhi-jnana* even without creating transmutable body (3) *Adho-avadhi-jnani* (one endowed with any of the various types of *avadhi-jnana* lesser than the *param* or ultimate *avadhi-jnana*) knows and sees lower world through *avadhi-jnana* with or without creating transmutable body

**१९८. दोहिं ठाणेहिं आया तिरियलोगं जाणइ पासइ, तं जहा–(१) विउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आया तिरियलोगं जाणइ पासइ, (२) अविउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आया तिरियलोगं जाणइ पासइ, (३) आहोहि विउव्वियावउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आया तिरियलोगं जाणइ पासइ।**

१९८. दो प्रकार से आत्मा तिर्यक्लोक को जानता-देखता है-(१) वैक्रिय शरीर का निर्माण करके, तथा (२) वैक्रिय शरीर का निर्माण किये बिना भी अवधिज्ञान से तिर्यक्लोक को जानता-देखता है। (३) अधोवधिज्ञानी दोनो ही प्रकार से तिर्यक्लोक को जानता-देखता है।

198. A soul knows and sees *Tiryak lok* (middle world) in two ways—(1) A soul knows and sees middle world through *avadhi-jnana* by creating transmutable body (2) A soul knows and sees middle world through *avadhi-jnana* even without creating transmutable body

(3) *Adho-avadhi-jnani* knows and sees middle world through *avadhi-jnana* with or without creating transmutable body.

**१९९. दोहिं ठाणेहिं आया उड्ढलोगं जाणइ पासइ, तं जहा—(१) विउव्वितेणं चेव आया उड्ढलोगं जाणइ पासइ, (२) अविउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आया उड्ढलोगं जाणइ पासइ, (३) आहोहि विउव्वियाविउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आया उड्ढलोगं जाणइ पासइ।**

१९९. दो प्रकार से आत्मा ऊर्ध्वलोक को जानता-देखता है-(१) वैक्रिय शरीर का निर्माण करके, तथा (२) वैक्रिय शरीर का निर्माण किये बिना भी अवधिज्ञान से ऊर्ध्वलोक को जानता-देखता है। (३) अधोवधिज्ञानी दोनो प्रकार से ऊर्ध्वलोक को जानता-देखता है।

**199.** A soul knows and sees *Urdhva lok* (upper world) in two ways—(1) A soul knows and sees upper world through *avadhi-jnana* by creating transmutable body (2) A soul knows and sees upper world through *avadhi-jnana* even without creating transmutable body (3) *Adho-avadhi-jnani* knows and sees upper world through *avadhi-jnana* with or without creating transmutable body

**२००. दोहिं ठाणेहिं आया केवलकप्पं लोगं जाणइ पासइ, तं जहा—(१) विउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आया केवलकप्पं लोगं जाणइ पासइ, (२) अविउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आया केवलकप्पं लोगं जाणइ पासइ, (३) आहोहि विउव्वियाविउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आया केवलकप्पं लोगं जाणइ पासइ।**

२००. दो प्रकार से आत्मा सम्पूर्ण लोक को जानता-देखता है-(१) वैक्रिय शरीर का निर्माण करके, तथा (२) वैक्रिय शरीर का निर्माण किये बिना भी अवधिज्ञान से सम्पूर्ण लोक को जानता-देखता है। (३) अधोवधिज्ञानी दोनो प्रकार से सम्पूर्ण लोक को जानता-देखता है।

**200.** A soul knows and sees *Sampurna lok* (the whole occupied space) in two ways—(1) A soul knows and sees the whole occupied space through *avadhi-jnana* by creating transmutable body (2) A soul knows and sees the whole occupied space through *avadhi-jnana* even without creating transmutable body. (3) *Adho-avadhi-jnani* knows and sees the whole occupied space through *avadhi-jnana* with or without creating transmutable body

**विवेचन**—इन सूत्रो मे आत्मा की तपोयोगजनित शक्ति तथा लोक को देखने-जानने की ज्ञान शक्ति का उल्लेख है। जब किसी दिशा में रहे हुए द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की जानकारी के लिए आहारकलब्धि और वैक्रियलब्धि को व्यक्त करके आहारक व वैक्रिय शरीर की रचना की जाती है, वह रचना समुद्घात से होती है। जिनको सुस्पष्ट ज्ञान होता है, वे बिना समुद्घात किये भी जान रहे है। जहाँ मौलिक शरीर गमन

नहीं कर सकता एवं अवधिज्ञान भी दूर देश स्थित विषय को ग्रहण नहीं कर रहा हो, वहाँ चेतनायुक्त उत्तर वैक्रिय शरीर से अथवा आहारक शरीर से जिज्ञासित विषय का ज्ञान किया जा सकता है।

**Elaboration**—The aforesaid aphorisms enumerate the intellectual capacity acquired by a soul through austere spiritual practices, and capcity to see and know the universe When, for the purpose of acquiring information about matter, area, time and state in some specific direction, an *aharak* (telemigratory) or *vaikriya* (transmutable) body is created through *aharak labdhi* or *vaikriya labdhi* (special powers to create telemigratory or transmutable bodies) the process is called *samudghat* Those who are at the higher levels of knowledge perceive and understand even without undergoing the process of *samudghat* Information of an area inaccessible to the original gross body is acquired with the help of the said intellectually sensitive transmutable or telemigratory bodies

### देशतः–सर्वतः–श्रवणादि–पद DESHATAH-SARVATAH-SHRAVANADI-PAD (SEGMENT OF PARTIAL AND COMPLETE LISTENING ETC.)

**२०१. दोहिं ठाणेहिं आया सद्दाइं सुणेति, तं जहा–देसेण वि आया सद्दाइं सुणेति, सव्वेण वि आया सद्दाइं सुणेति। २०२. दोहिं ठाणेहिं आया रूवाइं पासइ, तं जहा–देसेण वि आया रूवाइं पासइ, सव्वेण वि आया रूवाइं पासइ। २०३. दोहिं ठाणेहिं आया गंधाइं अग्घाति, तं जहा–देसेण वि आया गंधाइं अग्घाति, सव्वेण वि आया गंधाइं अग्घाति। २०४. दोहिं ठाणेहिं आया रसाइं आसादेति, तं जहा–देसेणं वि आया रसाइं आसादेति, सव्वेण वि आया रसाइं आसादेति। २०५. दोहिं ठाणेहिं आया फासाइं पडिसंवेदेति, तं जहा–देसेण वि आया फासाइं पडिसंवेदेति, सव्वेण वि आया फासाइं पडिसंवेदेति।**

२०१. दो प्रकार से आत्मा शब्दो को सुनता है–शरीर के एक भाग (एक कान) से भी आत्मा शब्दो को सुनता है और समूचे शरीर से भी आत्मा शब्दो को सुनता है। २०२. दो प्रकार से आत्मा रूपो को देखता है–शरीर के एक भाग (नेत्र) से और समूचे शरीर से भी। २०३. दो प्रकार से आत्मा गन्धो को सूँघता है–शरीर के एक भाग (नासिका) से भी और समूचे शरीर से भी। २०४. दो प्रकार से आत्मा रसो का आस्वाद लेता है–शरीर के एक भाग (रसना) से भी और सम्पूर्ण शरीर से भी। २०५. दो प्रकार से आत्मा स्पर्शों का प्रतिसवेदन (अनुभव) करता है–शरीर के एक भाग से भी और सम्पूर्ण शरीर से भी।

**201.** A soul listens sounds two ways—through a specific part of the body (ear) and also through the whole body. **202.** A soul sees forms two ways—through a specific part of the body (eye) and also through the whole

body. **203.** A soul smells odours two ways—through a specific part of the body (nose) and also through the whole body. **204.** A soul tastes flavours two ways—through a specific part of the body (tongue) and also through the whole body. **205.** A soul experiences touch in two ways—through a specific part of the body (skin) and also through the whole body.

**विवेचन**–टीकाकार ने 'एक देश से सुनता है' का अर्थ 'एक कान की श्रवण शक्ति नष्ट हो जाने पर दूसरे ही कान से सुनता है' और सर्व का अर्थ 'दोनों कानो से सुनता है'–ऐसा किया है। यही बात नेत्र, रसना आदि के विषय में भी जानना चाहिए। साथ ही यह भी लिखा है कि जिस आत्मा को **संभिन्नश्रोतोलब्धि** प्राप्त होती है, वह एक ही इन्द्रिय से सब इन्द्रियो का काम कर सकता है, अर्थात् वह जीव समस्त इन्द्रियों से भी अर्थात् समूचे शरीर से सुनता है। इसी प्रकार रूप, रस, गन्ध और स्पर्श का ज्ञान किसी भी एक इन्द्रिय से और सम्पूर्ण शरीर से कर सकता है।

आवश्यकचूर्णि के अनुसार **संभिन्नश्रोतोलब्धि** सम्पन्न आत्मा शरीर के किसी भी अगोपांग से सब विषयो का ग्रहण कर सकता है। (पृष्ठ ७०)

**Elaboration**—The commentator (*Tika*) has interpreted *desh* (part) hearing as 'to hear from one ear and not both when one of the ears is damaged', and *sarva* (complete) hearing as 'to hear from both ears'. This is true for other sense organs as well At the same time it has also been mentioned that a soul endowed with *sambhinna-shrot-labdhi* can use any one of the sense organ for the work of all other sense organs. In other words it has the capacity to hear from his whole body. In this context he can receive information related to all sense organs, namely sound, form, taste, smell and touch either through one organ or through the whole body

According to *Avashyak Churni* a soul endowed with *sambhinna-shrot-labdhi* can acquire all sensual information through any part of his body (p 70)

**२०६. दोहिं ठाणेहिं आया ओभासति, तं जहा–देसेण वि आया ओभासति, सव्वेण वि आया ओभासति। २०७. एवं–पभासति, विकुव्वति, परियारेति, भासं भासति, आहारेति, परिणामेति, वेदेति, णिज्जरेति। २०८. दोहिं ठाणेहिं देवे सद्दाइं सुणेति, तं जहा–देसेण वि देवे सद्दाइं सुणेति, सव्वेण वि देवे सद्दाइं सुणेति जाव णिज्जेरति।**

२०६. दो स्थानों से आत्मा–अवभास (प्रकाश) करता है–खद्योत के समान शरीर के एक भाग से भी आत्मा अवभास करता है और प्रदीप की तरह समूचे शरीर से भी अवभास करता है। २०७. इसी प्रकार दो स्थानों से आत्मा प्रभास (विशेष प्रकाश) करता है, विक्रिया करता है, प्रवीचार (मैथुन सेवन)

करता है, भाषा बोलता है, आहार करता है, उसका परिणमन करता है, उसका अनुभव करता है और उसका उत्सर्ग करता है। २०८. दो स्थानो से देव शब्द सुनता है–शरीर के एक भाग से भी देव शब्दो को सुनता है और सम्पूर्ण शरीर से भी शब्द सुनता है। इसी प्रकार देव दोनो स्थानो से अवभास करता है, प्रभास करता है, विक्रिया करता है, प्रवीचार करता है, भाषा बोलता है, आहार करता है, उसका परिणमन करता है, उसका अनुभव करता है और उसका उत्सर्ग करता है।

**206.** A soul glows (*avabhas*) two ways—through a specific part of the body (like a glow worm) and also through the whole body (like a lamp) **207.** In the same way a soul does the following two ways—enlighten (*prabhas*); *vikriya* (undergo self mutation), *praveechar* (copulate), speak, eat food, digest it, experience it and excrete it **208.** A *dev* (divine being) listens sounds from two places—through a specific part of the body and also through the whole body In the same way a *dev* (divine being) does the following activities two ways—enlightening (*prabhas*), *vikriya* (undergoing self mutation); *praveechar* (copulating), speaking, eating food, digesting it, experiencing it and excreting it.

**विवेचन**–उक्त सूत्रो में आये अवभास आदि शब्दो का एकदेश तथा सर्वदेश का अन्तर इस प्रकार समझना चाहिए–

यश कीर्ति से चमकना एकदेश से तथा आन्तरिक ज्ञान शक्ति से चमकना सर्वभाग से चमकना है। क्षयोपशमिक ज्ञान से प्रकाश करना एकदेश से तथा क्षायिक ज्ञान से प्रकाश करना सर्वभाग से प्रकाश करना है।

शरीर के एक अंग से वैक्रिय विकुर्वणा करना एकदेश से तथा सर्वांग से प्रति पूर्ण शरीर बनाना सर्वदेश से।

जिह्वा से बोलना या अस्पष्ट बोलना एकदेश से तथा शरीर के सभी स्थानो से शब्दोच्चार करना सर्वभाग से।

मुख से व इन्जेक्शन आदि द्वारा आहार ग्रहण करना एकदेश से तथा ओजाहार एव रोमाहार करना सर्वभाग से।

रोगी अवस्था मे भोजन का परिणमन एकदेश से होता है तथा पूर्ण नीरोग व्यक्ति सम्पूर्ण शरीर से परिणमन करता है।

शरीर के एक भाग विशेष (आँख, कान आदि) से पीडा का वेदन करना एकदेश से तथा शीत ज्वर, दाह ज्वर आदि के रूप में समूचे शरीर से वेदना भोगना सर्व से।

शरीर के एक भाग से (मल–मूत्र की तरह) पुद्गलो का त्याग करना एकदेश से तथा पसीने आदि के रूप में पुद्गल परित्याग करना सर्व से। *(हिन्दी टीका, पृष्ठ २०२)*

**Elaboration**—The difference between partial and complete activity, such as *avabhas* (glow), in context of the aforesaid aphorisms should be understood as follows—

To glow with fame is partial glowing and to glow with power of spiritual knowledge is complete glowing. To enlighten with *kshayopashamik-jnana* (knowledge attained through pacification-cum-extinction of *karmas*) is partial enlightenment and to do that with *kshayik-jnana* (knowledge attained through extinction of *karmas*) is complete enlightenment.

To do self mutation by and of one part of the body is partial self mutation and to do that with whole body and create complete body is complete self mutation

To utter sound with the help of tongue or utter garbled speech is partial speaking and to utter sound with all parts of the body is complete speaking

The intake of food or nutrition through mouth or injection is partial intake (eating) and *oj ahar* (energy intake) or *loam ahar* (intake through body pores or follicle) is complete intake

The digestion of food in ailing conditions is partial digestion and that by a healthy and non-ailing body is complete digestion

To suffer pain in a specific part of body (ear, nose etc ) is partial suffering and to suffer from any kind of fever or other such ailment is complete-body suffering

Excretion through a specific organ (urination, passing stool etc.) is partial excretion and that through whole body, like sweating, is complete-body excretion *(Hindi Tika, p 202)*

### *शरीर–पद* SHARIRA-PAD (SEGMENT OF BODY)

**२०९. मरुया देवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–'एगसरीरी चेव दुसरीरी' चेव। २१०. एवं किण्णरा किंपुरिसा गंधव्वा णागकुमारा सुवण्णकुमारा अग्गिकुमारा वायुकुमारा। २११. देवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–'एगंसरीरी चेव, दुसरीरी' चेव।**

**॥ द्वितीय उद्देशक समत्तं ॥**

२०९. मरुत् देव दो प्रकार के हैं–एक शरीर वाले और दो शरीर वाले। २१०. इसी प्रकार किन्नर, किंपुरुष, गन्धर्व, नागकुमार, सुपर्णकुमार, अग्निकुमार, वायुकुमार ये सभी देव दो–दो प्रकार

के हैं-एक शरीर वाले तथा दो शरीर वाले। २११. अन्य सभी देव दो प्रकार के है-एक शरीर वाले और दो शरीर वाले।

**209.** *Marut Devs* (*Marut* gods) are of two kinds—with one body and with two bodies **210.** In the same way *Kinnar, Kimpurush, Gandharva, Naag Kumar, Suparna Kumar, Agni Kumar* and *Vayu Kumar* gods are of two kinds—with one body and with two bodies **211.** Also all other gods are of two kinds—with one body and with two bodies

**विवेचन**-'मरुत् देव' नोलोकान्तिक देवो का एक भेद है। ये पाँचवे देव लोक के अन्तराल में रहते हैं। भद्र स्वभाव वाले, मंद कषायी होते है। इन पर अन्य देवो का शासन नही रहता, स्वतंत्र होते है।

इसी प्रकार वाणव्यन्तर, भवनवासी, ज्योतिष्क, वैमानिक सभी देव दो शरीर वाले होते है। ये अपने भवधारणीय शरीर की अपेक्षा से अथवा अन्तराल गति मे कार्मण शरीर की अपेक्षा से एकशरीरी है तथा सभी देव भवधारणीय शरीर एव उत्तर वैक्रिय शरीर की अपेक्षा से दोशरीरी कहे गये है। *(हिन्दी टीका, पृष्ठ-२०३)*

॥ द्वितीय उद्देशक समाप्त ॥

**Elaboration**—*Marut Devs* is a class of *No-lokantik Devs* They dwell in the interstices of the fifth divine dimension (heaven) They are of noble character and with mild passions. They are free and independent of the rule of any gods.

In the same way all divine beings including interstitial, abode dwelling, stellar and celestial vehicle dwelling gods have two bodies They are single bodied in terms of their *bhava-dharaniya sharira* (incarnation sustaining body) or genus specific *karmic* body However they are dual bodied in terms of their *bhava-dharaniya sharira* (incarnation sustaining body) and *uttar-vaikriya sharira* (secondary transmuted body) *(Hindi Tika, p 203)*

**● END OF THE SECOND LESSON ●**

## तृतीय उद्देशक
## THIRD LESSON

**शब्द-पद SHABD-PAD (SEGMENT OF SOUND)**

**२१२. दुविहे सद्दे पण्णत्ते, तं जहा—भासासद्दे चेव, णोभासासद्दे चेव। २१३. भासासद्दे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अक्खरसंबद्धे चेव, णोअक्खरसंबद्धे चेव। २१४. णोभासासद्दे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—आउज्जसद्दे चेव, णोआउज्जसद्दे चेव। २१५. आउज्जसद्दे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—तते चेव, वितते चेव। २१६. तते दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—घणे चेव, सुसिरे चेव। २१७. वितते दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—घणे चेव, सुसिरे चेव। २१८. णोआउज्जसद्दे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—भूसणसद्दे चेव, णोभूसणसद्दे चेव। २१९. णोभूसणसद्दे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—तालसद्दे चेव, लत्तियासद्दे चेव। २२०. दोहिं ठाणेहिं सद्दुप्पाते सिया, तं जहा—साहण्णंताणं चेव पोग्गलाणं सद्दुप्पाए सिया, भिज्जंताणं चेव पोग्गलाणं सद्दुप्पाए सिया।**

२१२. शब्द दो प्रकार का होता है—भाषाशब्द और नोभाषाशब्द। २१३. भाषा शब्द दो प्रकार का है—अक्षरसंबद्ध (वर्णात्मक) और नोअक्षरसबद्ध। २१४. नोभाषाशब्द दो प्रकार का है—आतोद्य शब्द और नोआतोद्य शब्द। २१५. आतोद्य शब्द दो प्रकार का है—तत और वितत। २१६. तत शब्द दो प्रकार का है—घन और शुषिर। २१७. वितत शब्द दो प्रकार का है—घन और शुषिर। २१८. नोआतोद्य शब्द दो प्रकार का है—भूषण शब्द और नोभूषण शब्द। २१९. नोभूषण शब्द दो प्रकार का है—ताल शब्द और लत्तिका शब्द। २२०. दो कारणो से शब्द की उत्पत्ति होती है—संघात—पुद्गलो के पारस्परिक घर्षण से और भेद या विघटन से।

**212.** *Shabd* (sound) is of two kinds—*bhasha shabd* and *nobhasha shabd* **213.** *Bhasha shabd* is of two kinds—*akshar sambaddha* and *noakshar sambaddha* **214.** *Nobhasha shabd* is of two kinds—*aatodya shabd* and *no-aatodya shabd.* **215.** *Aatodya shabd* is of two kinds—*tat* and *vitat.* **216.** *Tat shabd* is of two kinds—*ghan* and *sushir.* **217.** *Vitat shabd* is of two kinds—*ghan* and *sushir.* **218.** *No-aatodya shabd* is of two kinds—*bhushan* and *no-bhushan* **219.** *No-bhushan shabd* is of two kinds—*taal shabd* and *lattika shabd.* **220.** *Shabd* (sound) is produced two ways—*sanghat* and *bhed.*

**विवेचन—**सूत्र २१२ से २२० तक में कहे गये विशेष पदों का अर्थ इस प्रकार है—**भाषाशब्द**—जीव के वचनयोग से प्रकट होने वाला शब्द। **नोभाषाशब्द**—वचनयोग के बिना पुद्गल के द्वारा प्रकट होने वाला शब्द। **अक्षरसंबद्ध शब्द**—अकार-ककार आदि वर्णों के द्वारा व्यक्त होने वाला शब्द। **नोअक्षर-संबद्ध शब्द**—अनक्षरात्मक या ध्वन्यात्मक शब्द। **आतोद्य शब्द**—नगाडे आदि बाजों का शब्द। **नोआतोद्य**

शब्द–बाँस आदि के फटने से होने वाला शब्द। तत शब्द–तार–वाले वीणा, सारंगी आदि वाद्यो का शब्द। वितत शब्द–ताररहित बाजो, नगाडा आदि का शब्द। ततघन शब्द–झांझ–मजीरा जैसे बाजो का शब्द। ततशुषिर शब्द–वीणा, सारगी आदि का मधुर शब्द। विततघन शब्द–भाणक बाजे का शब्द। विततशुषिर शब्द–नगाडे, ढोल आदि का शब्द। भूषण शब्द–नूपुर–आदि आभूषणो का शब्द। नोभूषण शब्द–वस्त्र आदि के फटकारने से होने वाला शब्द। ताल शब्द–ताली बजाने से होने वाला शब्द। लत्तिका शब्द–काँसे का शब्द अथवा लात मारने से होने वाला शब्द।

शब्द की उत्पत्ति दो प्रकार से होती है–अनेक पुद्गलस्कन्धो के परस्पर मिलने अथवा घर्षण से भी शब्द की उत्पत्ति होती है, जैसे घडी, मशीन आदि के चलने से, तथा भेद (विस्फोट) से भी शब्द की उत्पत्ति होती है, जैसे–बाँस, वस्त्र आदि के फटने से। (चित्र देखे)

**Elaboration**—The meaning of special technical terms used in aphorisms 212 to 220 are as follows—

*Bhasha shabd*—sound produced through linguistic association of a living being *Nobhasha shabd*—sound produced by matter without any linguistic association *Akshar sambaddha shabd*—sound associated with alphabets *No-akshar sambaddha shabd*—sound not associated with alphabets *Aatodya shabd*—sound produced by drum like percussion instruments *No-aatodya shabd*—sound produced by bursting of bamboo etc *Tat shabd*—sound of stringed instruments like *Veena* and *Sitar* *Vitat shabd*—sound of non-stringed instruments like drums *Tat ghan shabd*—sound of percussion instruments like cymbal *Tat sushir shabd*—sweet sound of musical instruments such as *Veena*. *Vitat ghan shabd*—sound of musical instruments like *bhanak* *Vitat sushir shabd*—melodious sound of drums *Bhushan shabd*—sound of ornaments like *nupur* (anklet with hollow bells) *Nobhushan shabd*—sound produced by whipping or beating of clothes *Taal shabd*—sound of clapping. *Lattika shabd*—sound produced by knocking bronze vessel, also sound produced by kicking with leg.

*Shabd* is produced two ways—*Sanghat* (collision or rubbing together) of matter, for example sound of a clock or a running machine. *Bhed* (breaking, disintegrating or explosion) of matter; for example by breaking of bamboo or tearing of cloth and suchlike

### *पुद्गल–पद* PUDGAL-PAD (SEGMENT OF MATTER)

**२२१. दोहिं ठाणेहिं पोग्गला साहण्णंति, तं जहा–सइं वा पोग्गला साहण्णंति, परेण वा पोग्गला साहण्णंति। २२२. दोहिं ठाणेहिं पोग्गला भिज्जंति, तं जहा–सइं वा पोग्गला भिज्जंति,**

चित्र परिचय ५

Illustration No. 5

# शब्दों के भेद-प्रभेद

भाषात्मक शब्द दो प्रकार के है-(१) **अक्षरात्मक**-जैसे मुँह से कमल आदि शब्द बोलना। (२) **नोअक्षरात्मक (ध्वन्यात्मक)**-जैसे मुंह से सी सी सीटी जैसी आवाज निकालना। तोता, मोर व मेढक आदि की ध्वनि, कुत्ते आदि का भौकना, भौरो आदि का गुजन भी नोअक्षरात्मक है।

नोभाषा शब्द के दो प्रकार है-(१) **आतोद्य**-बैण्ड आदि बाजो की ध्वनि, (२) **नोआतोद्य**-बाजों से अन्य ध्वनियाँ।

**आतोद्य शब्द के भेद**-(I) **तत**-वीणा, सारगी आदि का शब्द, (II) **वितत**-ढोल, नगाडा आदि का शब्द। (I) **घन**-झांझ, झालर आदि का स्वर (II) **शुषिर**-बांसुरी वीणा आदि का शब्द। **भूषण शब्द**-नृत्य करते हुए घुंघुरु आदि का स्वर या चूडियो आदि की खनखनाहट। **नोभूषण शब्द**-**ताल**-ताली बजाना **लतिका**-पैरो की आहट आदि।

शब्दो की उत्पत्ति के दो प्रमुख कारण है-(१) **सघर्षण**-जैसे हवा की टकराहट से वृक्षो की पत्तियो की ध्वनि जल प्रपात की ध्वनि आदि। (२) **विदारण या विस्फोट**-जैसे बम फटने का धमाका, बॉस आदि फटने से, बन्दूक की गोली निकलने से। चित्र मे शब्दो के विविध भेद तथा शब्दोत्पत्ति के कारण दर्शाये है।

-*स्थान २ उ ३, सूत्र २१२*

## CATEGORIES AND SUB-CATEGORIES OF SOUND

*Bhasha shabd* is of two kinds—**(1) Aksharatmak**—to utter words like *'kamal'* from mouth **(2) Noaksharatmak**—to produce whistling sound Variety of sounds produced by parrot, peacock, frog, dog, bumble-bees etc also come in this class

*Nobhasha shabd* is of two kinds—**(1) Aatodya shabd**—sound produced by drum like percussion instruments **(2) Noaatodya shabd**—sounds other than those of musical instruments

**Kinds of Aatodya shabd—(I) Tat**—sound of string instruments like *Veena* and *Sarangi*, **(II) Vitat**—sound of instruments like drums **(I) Ghan**—sound of percussion instruments like cymbal, **(II) Sushir**—sound of *Veena*, flute etc **Bhushan shabd**—sound of ornaments like *nupur*, bracelet etc **Nobhushan shabd—Taal**—sound of clapping, **Lattika**—sound of foot steps etc

Two main causes of origin of sound—**(1) Sangharshan**—sound produced by collision of leaves due to wind, sound of a waterfall **(2) Vidaran** (breaking, disintegrating or explosion) for example explosion of a bomb, breaking of bamboo, firing of a gun etc Illustration shows kinds of sound with its origin

—*Sthaan 2, Lesson 3 Sutra 212*

**परेण वा पोग्गला भिज्जंति। २२३. दोहिं ठाणेहिं परिपडंति, तं जहा—सइं वा पोग्गला परिपडंति, परेण वा पोग्गला परिपडंति। २२४. दोहिं ठाणेहिं पोग्गला परिसडंति, तं जहा—सइं वा पोग्गला परिसडंति, परेण वा पोग्गला परिसडंति। २२५. दोहिं ठाणेहिं पोग्गला विद्धंसति, तं जहा—सइं वा पोग्गला विद्धंसति, परेण वा पोग्गला विद्धंसति।**

२२१. दो कारणो से पुद्‌गल सहत (एकत्र) होते है—स्वयं अपने स्वभाव से (मेघादि के समान) और पुरुष के प्रयत्न आदि दूसरे निमित्तों से भी पुद्‌गल सहत होते है। २२२. दो कारणों से पुद्‌गल विघटित होते है—स्वय अपने स्वभाव से और दूसरे निमित्तो से भी। २२३. द। कारणो से पुद्‌गल नीचे गिरते है—स्वयं अपने स्वभाव से (जैसे—पकने फल) और दूसरे निमित्तो से भी। २२४. दो कारणो से पुद्‌गल विकृत होते है—स्वय अपने स्वभाव से (बासी होने पर खाद्य पदार्थ की तरह) और दूसरे शस्त्र—छेदनादि या रासायनिक निमित्तो से भी विकृत होते है। २२५. दो कारणों से पुद्‌गल विध्वंस (नाश) को प्राप्त होते है—स्वय अपने स्वभाव से (जैसे—जमीन पर पडा पानी) और दूसरे निमित्तो से भी।

**221.** *Pudgals* (matter particles) combine (*samhat*) for two reasons—they combine of their own (like clouds) and also due to outside causes including human effort **222.** *Pudgals* (matter particles) disintegrate (*vighatit*) for two reasons—they disintegrate on their own and also due to outside causes. **223.** *Pudgals* (matter particles) fall for two reasons—they fall on their own (like fruits) and also due to outside causes **224.** *Pudgals* (matter particles) deform or decay (*vikrit*) for two reasons—they deform or decay due to their own nature (like stale food) and also due to outside causes including human effort (through mechanical and chemical processes) **225.** *Pudgals* (matter particles) get destroyed (*vidhvamsa*) for two reasons—they get destroyed on their own (like spilled water) and also due to outside causes

**२२६. दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—भिण्णा चेव, अभिण्णा चेव। २२७. दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—भेउरधम्मा चेव, णोभेउरधम्मा चेव। २२८. दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—परमाणुपोग्गला चेव, णोपरमाणुपोग्गला चेव। २२९. दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमा चेव, बायरा चेव। २३०. दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—बद्धपासपुट्ठा चेव, णोबद्धपासपुट्ठा चेव।**

२२६. सभी पुद्‌गल दो प्रकार के हैं—भिन्न (विघटित) और अभिन्न (संहत)। २२७. पुद्‌गल दो प्रकार के है—भिदुरधर्मा (स्वय ही भेद को प्राप्त होने वाले, जैसे—हवा में रखा बर्फ, कपूर आदि) और नोभिदुरधर्मा (स्वयं भेद को नहीं प्राप्त होने वाले, जैसे—सोना, रत्न आदि)। २२८. पुद्‌गल दो प्रकार के है—परमाणु पुद्‌गल और नोपरमाणु रूप (स्कन्ध) पुद्‌गल। २२९. पुद्‌गल दो प्रकार के हैं—सूक्ष्म और

बादर (परमाणु से लेकर चतु:स्पर्शी पुद्गल सूक्ष्म तथा पाँचस्पर्शी से लेकर आठस्पर्शी तक पुद्गल बादर कहलाते है)। २३०. पुद्गल दो प्रकार के है–बद्ध–पार्श्वस्पृष्ट और नोबद्ध–पार्श्वस्पृष्ट।

**226.** *Pudgals* are of two kinds—*bhinna* (disintegrated) and *abhinna* (integrated) **227.** *Pudgals* are of two kinds—*bhidur-dharmaa* (unstable; naturally disintegrating like ice and camphor placed in open) and *no-bhidur-dharmaa* (stable, not naturally disintegrating like gold and gems) **228.** *Pudgals* are of two kinds—*paramanu pudgal* (ultimate particles of matter) and *no-parmanu pudgal* (*skandh* or aggregate of *paramanus*) **229.** *Pudgals* are of two kinds—*sukshma* (subtle; ultimate particles and aggregates with four attributes of touch) and *badar* (gross, aggregates with five to eight attributes of touch) **230.** *Pudgals* are of two kinds—*baddha parshvasprisht* (bonded and lateral touch oriented) and *no-baddha parshvasprisht* (not bonded and lateral touch oriented)

**विवेचन**–जो पुद्गल शरीर के साथ गाढ सम्बन्ध किये हुए है, वे बद्ध कहलाते है और जो पुद्गल शरीर से चिपके रहते है उन्हे पार्श्वस्पृष्ट कहते है, जैसे–धूलिकण। घ्राणेन्द्रिय से गन्ध, रसनेन्द्रिय से रस और स्पर्शनेन्द्रिय से ग्राह्य स्पर्शरूप पुद्गल **बद्ध–पार्श्वस्पृष्ट** होते है। अर्थात् स्पर्शन, रसना और घ्राणेन्द्रिय के साथ स्पर्श, रस एव गध का गाढ सम्बन्ध होने पर ही इनका ग्रहण–ज्ञान होता है। श्रोत्रेन्द्रिय से ग्राह्य शब्द पुद्गल **नोबद्ध किन्तु पार्श्वस्पृष्ट** है। चक्षुइन्द्रिय से ग्राह्य पुद्गल न बद्ध और न ही पार्श्व स्पृष्ट है, क्योकि चक्षु इन्द्रिय रूप को दूर से ही ग्रहण करती है। नन्दीसूत्र ८५ मे कहा है–

*पुट्ठं सुणेइ सद्द रूवं पुण पासइ अपुट्ठं तु।*
*गंध रसं च फासं च बद्धपुट्ठं वियागरे॥*

श्रोत्रेन्द्रिय स्पृष्ट पुद्गलो को ग्रहण करती है, चक्षुइन्द्रिय बिना स्पर्श किये रूप को ग्रहण करती है तथा घ्राण, रसना, स्पर्शन ये तीन इन्द्रियाँ बद्ध–स्पृष्ट पुद्गलो को ग्रहण करती है।

**Elaboration**—Matter particles intimately attached or bonded with the body are called *baddha* and those loosely and laterally sticking are called *parshvasprisht*, such as sand particles Particles that are carriers of sensations of smell, taste and touch and are acquired by sense organs of smell, taste and touch are *baddha-parshvasprisht* (bonded and lateral touch oriented) This means that these particles convey the sensations of smell, taste and touch only when they are intimately bonded with the respective sense organs. The particles acquired by the sense organ of hearing are *no-baddha parshvasprisht* (not bonded but lateral touch oriented) The particles acquired by the sense organ of seeing are neither *baddha* (bonded) nor *parshvasprisht* (laterally touching) because eyes acquire image only from a distance *Nandi Sutra* (85) states · 'Ears

acquire laterally touching particles, eyes acquire image without touch. Particles carrying sensation of smell, flavour and touch are acquired through lateral touching and bonding.

**२३१. दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा–परियादितच्चेव, अपरियादितच्चेव।**

२३१. पुद्गल दो प्रकार के हैं–परियादित और अपरियादित।

**231.** *Pudgals* are of two kinds—*pariyadit* (transformed) and *apariyadit* (un-transformed).

**विवेचन**–टीकाकार ने 'परियादित' और 'अपरियादित' इन दोनो प्राकृत पदों का सस्कृत रूपान्तर दो-दो प्रकार से किया है–पर्यायातीत और अपर्यायातीत। पर्यायातीत का अर्थ है, जो अपनी पर्याय अवस्था को पार कर चुका है और अपर्यायातीत का अर्थ है अपनी अवस्था में अवस्थित पुद्गल। जैसे दूध, दूध अवस्था मे अपर्यायातीत है, किन्तु जमकर दही बनने पर पर्यायातीत हो जाता है। दूसरा संस्कृत रूप पर्यात्त और अपर्यात्त है। जीव ने जिन पुद्गलो को कर्म, शरीर, भाषा और श्वासोच्छ्वास के रूप में सब ओर से ग्रहण किया है, उन्हे पर्यात्त कहते है तथा जिनको किसी जीव ने ग्रहण नही किया वे अपर्यात्त पुद्गल कहलाते हैं। *(हिन्दी टीका, पृष्ठ २१२)*

**Elaboration**—The commentator (*Tika*) has transliterated these two *Prakrit* terms *pariyadit* and *apariyadit* in two ways. First is *paryayateet* and *aparyayateet*. *Paryayateet* means that which has undergone modal transformation and *aparyayateet* means that which has not undergone modal transformation and is in its orignal state For example milk in its state of milk is *aparyayateet* and when turned into curd it is *paryayateet* The second is *paryatt* and *aparyatt* *Paryatt pudgal* means those matter particles that a soul has acquired from all directions in the form of *karma*, body, speech and breathing *Aparyatt pudgal* means those virgin particles that have not yet been acquired by any soul *(Hindi Tika, p 212)*

**२३२. दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा–अत्ता चेव, अणत्ता चेव।**

२३२. पुद्गल दो प्रकार के है–आत्त (जीव के द्वारा गृहीत) और अनात्त (जीव के द्वारा अगृहीत)।

**232.** *Pudgals* are of two kinds—*aatta* (acquired by soul) and *anaatta* (not acquired by soul).

**२३३. दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा–इट्ठा चेव, अणिट्ठा चेव। कंता चेव, अकंता चेव, पिया चेव, अपिया चेव मणुण्णा चेव, अमणुण्णा चेव। मणामा चेव, अमणामा चेव।**

२३३. पुद्गल दो प्रकार के है–(१) इष्ट और (२) अनिष्ट; (३) कान्त और (४) अकान्त, (५) प्रिय और (६) अप्रिय, (७) मनोज्ञ और (८) अमनोज्ञ, (९) मनाम और (१०) अमनाम।

**233.** *Pudgals* (matter particles) are of two kinds—*isht* (1) and *anisht* (2); *kaant* (3) and *akaant* (4), *priya* (5) and *apriya* (6), *manojna* (7) and *amanojna* (8), *manaam* (9) and *amanaam* (10)

**विवेचन**–सूत्रोक्त पदो का अर्थ इस प्रकार है–**इष्ट**–किसी कार्य के लिए वाछित। **अनिष्ट**–इससे विपरीत। **कान्त**–जो रग-रूप आदि से युक्त सुन्दर हो। **अकान्त**–जो सुन्दर न हो। **प्रिय**–जो मन को प्रीतिकर एव इन्द्रियो को आनन्द जनक हो। **अप्रिय**–जो अप्रीतिकर हो। **मनोज्ञ**–मनोहर। **अमनोज्ञ**–अमनोहर। **मनाम**–जिनके चिन्तन मात्र से मन झूम उठता हो। **अमनाम**–जिनका श्रवण व स्मरण भी मन को अच्छा नही लगता हो।

**Elaboration**—Technical terms *isht*—desirable, *anisht*—not desirable, *kaant*—beautiful, *akaant*—not beautiful, *priya*—lovable; *apriya*—not lovable, *manojna*—attractive, *amanojna*—not attractive, *manaam*—adorable or whose mere thought is exhilarating, *amanaam*—not adorable or whose mere thought is repulsive.

### *इन्द्रिय-विषय-पद* INDRIYA-VISHAYA-PAD (SEGMENT OF SUBJECTS OF SENSE ORGANS)

**२३४. दुविहा सद्दा पण्णत्ता, तं जहा–अत्ता चेव, अणत्ता चेव। इट्ठा चेव, अणिट्ठा चेव। कंता चेव, अकंता चेव। पिया चेव, अपिया चेव। मणुण्णा चेव, अमणुण्णा चेव। मणामा चेव, अमणामा चेव। २३५. दुविहा रूवा पण्णत्ता, तं जहा–अत्ता चेव, अणत्ता चेव। इट्ठा चेव, अणिट्ठा चेव। कंता चेव, अकंता चेव। पिया चेव, अपिया चेव। मणुण्णा चेव, अमणुण्णा चेव। मणामा चेव, अमणामा चेव। २३६. दुविहा गंधा पण्णत्ता, तं जहा–अत्ता चेव, अणत्ता चेव। इट्ठा तेव, अणिट्ठा चेव। कंता चेव, अकंता चेव। पिया चेव, अपिया चेव। मणुण्णा चेव, अमणुण्णा चेव। मणामा चेव, अमणामा चेव। २३७. दुविहा रसा पण्णत्ता, तं जहा–अत्ता चेव, अणत्ता चेव। इट्ठा चेव, अणिट्ठा चेव। कंता चेव, अकंता चेव, पिया चेव अपिया चेव। मणुण्णा चेव, अमणुण्णा चेव। मणामा चेव, अमणामा चेव। २३८. दुविहा फासा पण्णत्ता, तं जहा–अत्ता चेव, अणत्ता चेव। इट्ठा चेव, अणिट्ठा चेव। कंता चेव, अकंता चेव। पिया चेव, अपिया चेव। मणुण्णा चेव, अमणुण्णा चेव। मणामा चेव, अमणामा चेव।**

२३४. शब्द दो प्रकार के है। आत्त और अनात्त, इष्ट और अनिष्ट, कान्त और अकान्त, प्रिय और अप्रिय, मनोज्ञ और अमनोज्ञ, मनाम और अमनाम। २३५. इसी प्रकार रूप के, २३६. गंध के, २३७. रस के, और २३८. स्पर्श के भी आत्त, अनात्त आदि उक्त दस भेद होते है।

**234.** *Shabd* (sound) is of two kinds—*aatta* and *anaatta*; *isht* and *anisht*; *kaant* and *akaant*, *priya* and *apriya; manojna* and *amanojna*; *manaam* and *amanaam* The same is true for—**235.** appearance, **236.** smell, **237.** taste, and **238.** touch; that is, they too have the said ten types each

*आचार–पद (पाँच आचार)* **ACHAR-PAD (SEGMENT OF CONDUCT)**

**२३९. दुविहे आयारे पण्णत्ते, तं जहा—णाणायारे चेव, णोणाणायारे चेव। २४०. णोणाणायारे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दंसणायारे चेव, णोदंसणायारे चेव। २४१. णोदंसणायारे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—चरित्तायारे चेव, णोचरित्तायारे चेव। २४२. णोचरित्तायारे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—तवायारे चेव, वीरियायारे चेव।**

२३९. आचार दो प्रकार का है–ज्ञानाचार और नोज्ञानाचार (दर्शनाचार) २४०. नोज्ञानाचार दो प्रकार का है–दर्शनाचार और नोदर्शनाचार (चारित्राचार)। २४१. नोदर्शनाचार दो प्रकार है–चारित्राचार और नोचारित्राचार (तप–आचार)। २४२. नोचारित्राचार दो प्रकार का है–तप आचार और वीर्याचार।

**239.** *Achar* (conduct) is of two kinds—*jnanachar* (conduct related to *jnana* or knowledge) and *no-jnanachar* (conduct other than that related to *jnana* or knowledge) **240.** *No-jnanachar* is of two kinds—*darshanachar* (conduct related to *darshan* or perception/faith) and *no-darshanachar* (conduct other than that related to *darshan* or perception/faith) **241.** *No-darshanachar* is of two kinds—*charitrachar* (conduct related to *charitra* or ascetic-conduct) and *no-charitrachar* (conduct other than that related to *charitra* or ascetic-conduct) **242.** *No-charitrachar* is of two kinds—*tapah-achar* (conduct related to *tapah* or austerities) and *viryachar* (conduct related to *virya* or potency)

*प्रतिमा–पद* **PRATIMA-PAD (SEGMENT OF SPECIAL CODES)**

**२४३. दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समाहिपडिमा चेव, उवहाणपडिमा चेव। २४४. दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—विवेगपडिमा चेव, विउसग्गपडिमा चेव। २४५. दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—भद्दा चेव, सुभद्दा चेव। २४६. दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—महाभद्दा चेव, सव्वतोभद्दा चेव। २४७. दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—खुड्डिया चेव मोयपडिमा, महल्लिया चेव मोयपडिमा। २४८. दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—जवमज्झा चेव चंदपडिमा, वइरमज्झा चेव चंदपडिमा।**

२४३. प्रतिमा दो प्रकार की है–समाधिप्रतिमा और उपधानप्रतिमा। २४४. प्रतिमा दो प्रकार की है–विवेकप्रतिमा और व्युत्सर्गप्रतिमा। २४५. प्रतिमा दो प्रकार की है–भद्रा और सुभद्रा। २४६. प्रतिमा दो प्रकार की है–महाभद्रा और सर्वतोभद्रा। २४७. प्रतिमा दो प्रकार की है–क्षुद्रक–मोक प्रतिमा और महती–मोक प्रतिमा। २४८. प्रतिमा दो प्रकार की है–यवमध्य–चन्द्र प्रतिमा और वज्रमध्य–चन्द्र प्रतिमा।

**243.** *Pratima* is of two kinds—*samadhi-pratima* and *upadhan-pratima*. **244.** *Pratima* is of two kinds—*vivek-pratima* and *vyutsarg-*

*pratima* **245.** *Pratima* is of two kinds—*bhadraa* and *subhadraa*. **246.** *Pratima* is of two kinds—*mahabhadraa* and *sarvatobhadraa*. **247.** *Pratima* is of two kinds—*kshudrak moak-pratima* and *mahati moak-pratima* **248.** *Pratima* is of two kinds—*yavamadhyachandra-pratima* and *vajramadhyachandra-pratima*

**विवेचन**—आत्मशुद्धि के लिए जो विशिष्ट साधना की जाती है उसे यहाँ 'प्रतिमा' कहा गया है। यह साधना की विविध पद्धतियाँ है। श्रावको की ग्यारह और साधुओ की बारह प्रतिमाएँ प्रसिद्ध हैं। प्रस्तुत छह सूत्रो के द्वारा साधुओ की बारह प्रतिमाओ का दो-दो के रूप मे प्रतिपादन किया गया है। इनका अर्थ इस प्रकार है-

(१) **समाधि प्रतिमा**—मन के समस्त विक्षेपो को दूर कर चित्तवृत्तियो को शुभ ध्यान मे स्थिर करना।

(२) **उपधान प्रतिमा**—उपधान का अर्थ है तपस्या। श्रावको की ग्यारह और साधुओं की बारह प्रतिमाओ मे से अपनी शक्ति के अनुसार उनकी साधना करना उपधान प्रतिमा है।

(३) **विवेक प्रतिमा**—आत्मा और अनात्मा का भेद-चिन्तन करना, स्व और पर का भेद-ज्ञान करना। इससे हेय-उपादेय का विवेक-ज्ञान प्रकट होता है।

(४) **व्युत्सर्ग प्रतिमा**—विवेक प्रतिमा के द्वारा जिन वस्तुओ को हेय अर्थात् छोडने योग्य जाना है, उनका त्याग करना।

(५) **भद्रा प्रतिमा**—पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर-इन चारो दिशाओ मे क्रमश चार-चार प्रहर तक कायोत्सर्ग करना। यह प्रतिमा दो दिन-रात मे दो उपवास के द्वारा सम्पन्न होती है।

(६) **सुभद्रा प्रतिमा**—इसकी साधना भद्रा प्रतिमा से उत्कृष्ट सम्भव है। टीकाकार के समय मे भी इसकी साधना विधि विच्छिन्न या अज्ञात हो गई लगती है।

(७) **महाभद्रा प्रतिमा**—चारों दिशाओं में क्रम से एक-एक अहोरात्र तक कायोत्सर्ग करना। यह प्रतिमा चार दिन-रात मे चार दिन के उपवास के द्वारा सम्पन्न होती है।

(८) **सर्वतोभद्र प्रतिमा**—इस प्रतिमा की आराधना मे चारों दिशाओ, चारो विदिशाओ तथा ऊर्ध्व दिशा और अधोदिशा-इन दसों दिशाओं मे कम से कम एक-एक अहोरात्र तक कायोत्सर्ग किया जाता है। यह प्रतिमा दस दिन के उपवास से दस दिन-रात मे पूर्ण होती है।

(९) **क्षुद्रक-मोक प्रतिमा**—'मोक' का अर्थ प्रस्रवण (पेशाब) है। इस प्रतिमा का साधक शीत या उष्ण ऋतु के प्रारम्भ मे ग्राम से बाहर किसी एकान्त स्थान मे जाकर और भोजन का त्याग कर प्रात काल सर्वप्रथम किये गये प्रस्रवण का पान करता है। यह प्रतिमा यदि भोजन करके प्रारम्भ की जाती है तो छह दिन के उपवास से सम्पन्न होती है और यदि भोजन न करके प्रारम्भ की जाती है तो सात दिन के उपवास से सम्पन्न होती है। इस प्रतिमा की साधना के तीन लाभ बतलाए गये है-(१) सिद्ध होना, (२) महर्द्धिक देवपद पाना, और (३) शरीर रोगमुक्त होकर कनक वर्ण हो जाना। व्यवहारसूत्र, उद्देशक

९ मे इसकी साधना पद्धति का वर्णन है। व्यवहारभाष्य में प्रतिमा पालन के बाद आहार ग्रहण की विस्तृत विधि का वर्णन भी है। वर्तमान मे स्व-मूत्र चिकित्सा पर जो अनेकानेक अनुसंधान व प्रयोग हो रहे हैं उस सन्दर्भ में यह प्रतिमा विशेष महत्त्व रखती है।

(१०) **महती-मोक प्रतिमा**-इसकी विधि क्षुद्रक-मोक प्रतिमा के समान ही है। अन्तर केवल इतना है कि जब वह खा-पीकर स्वीकार की जाती है, तब वह सात दिन के उपवास से पूरी होती है और यदि बिना खाये-पीये स्वीकार की जाती है तो आठ दिन के उपवास से पूरी होती है।

(११) **यवमध्य-चन्द्र प्रतिमा**-जिस प्रकार यव (जौ) का मध्य भाग मोटा और दोनों ओर के भाग पतले होते हैं, उसी प्रकार इस साधना मे मध्य में सबसे अधिक कवल (ग्रास) ग्रहण और आदि-अन्त में सबसे कम ग्रहण किया जाता है। इसकी विधि यह है-इस प्रतिमा का साधक साधु शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को एक कवल आहार लेता है। पुन तिथि के अनुसार एक-एक कवल आहार बढाता हुआ शुक्लपक्ष की पूर्णिमा को पन्द्रह कवल आहार लेता है। पुन. कृष्णपक्ष की प्रतिपदा को १४ कवल आहार लेकर क्रम से एक-एक कवल घटाते हुए अमावस्या को उपवास करता है। चन्द्रमा की एक-एक कला शुक्लपक्ष मे जैसे बढ़ती है और कृष्णपक्ष मे एक-एक घटती है उसी प्रकार इस प्रतिमा में कवलो की संख्या वृद्धि और हानि होने से इसे **यवमध्य चन्द्र प्रतिमा** कहा है।

(१२) **वज्रमध्य-चन्द्र प्रतिमा**-यह यवमध्य चन्द्र प्रतिमा के विपरीत क्रम से चलती है। जिस प्रकार वज्र का मध्य भाग पतला और आदि-अन्त भाग मोटा होता है, उसी प्रकार जिस साधना में आदि-अन्त मे कवल-ग्रहण अधिक और मध्य में एक भी न हो, उसे वज्रमध्य-चन्द्र प्रतिमा कहते है। इसे साधने वाला साधक कृष्णपक्ष की प्रतिपदा को १४ कवल आहार लेकर क्रम से चन्द्रकला के समान एक-एक कवल घटाते हुए अमावस्या को उपवास करता है। पुन शुक्लपक्ष मे प्रतिपदा के दिन एक कवल ग्रहण कर एक-एक कला वृद्धि के समान एक-एक कवल वृद्धि करते हुए पूर्णिमा को १५ कवल आहार ग्रहण करता है। *(विस्तृत वर्णन व चित्र देखे-सचित्र अन्तकृद्दशा सूत्र, परिशिष्ट मे)*

**Elaboration**—Special practice designed to attain purity of soul is called *pratima*. This term covers a variety of spiritual practices More popular among these are the eleven meant for the laity (*shravak-pratimas*) and the twelve meant for the ascetics (*sadhu-pratimas*) These six aphorism list the twelve practices meant for ascetics in sets of two These are explained as follows—

**(1) *Samadhi pratima***—To remove all perversions of mind and divert all mental activities towards noble and pious meditation

**(2) *Upadhan pratima***—*Upadhan* means austerities. To choose one or more from among the eleven *shravak-pratimas* and twelve *sadhu-pratimas* and earnestly practice to the best of one's ability.

(3) ***Vivek pratima***—To contemplate on the difference and duality of soul and non-soul as well as self and non-self. This results in gaining the ability to discern between noble and ignoble or acceptable and rejectable.

(4) ***Vyutsarg pratima***—To abandon or dissociate from rejectable and ignoble things known through practice of *vivek pratima*

(5) ***Bhadraa pratima***—To practice *kayotsarga* (dissociation from one's body, a kind of meditation) facing four cardinal directions (east, south, west and north) for four *prahars* (three hours) in each direction in a sequence This practice is concluded in two days and is done while fasting

(6) ***Subhadraa pratima***—It is a practice possibly more rigorous than *bhadraa pratima* As no details have been mentioned, it appears to have become lost

(7) ***Mahabhadraa pratima***—To practice *kayotsarga* facing four cardinal directions (east, south, west and north) for one *ahoratra* (day and night, 24 hours) per direction in a sequence This practice is concluded in four days and nights and is done while fasting

(8) ***Sarvatobhadraa pratima***—To practice *kayotsarga* facing ten directions, *i e* four cardinal directions (east, south, west and north), four intermediate directions, zenith and nadir, for at least one *ahoratra* (day and night, 24 hours) per direction in a sequence This practice is concluded in ten days and nights and is done while fasting

(9) ***Kshudrak Moak pratima***—*Moak* means urine The aspirant goes in isolation outside the village at the beginning of summer or winter season. He abandons food and drinks his own first urine in the morning If this *pratima* or practice is commenced after taking meals it is concluded after six days of fasting If it is commenced with a fast it concludes after seven days of fasting Three benefits of this *pratima* have been mentioned—(1) it leads to the *Siddha* state, (2) it leads to reincarnation in higher divine realms, and (3) the body becomes free of all ailments and attains a golden glow Detailed procedure of this practice is mentioned in *Vyavahar Sutra*, chapter 9 This practice has acquired special importance these days in light of the ongoing experiments and findings related to auto-urine therapy.

(10) ***Mahati Moak pratima***—This is done exactly as the preceding practice The only difference is that if it is commenced after taking meals it is concluded after seven days of fasting and if commenced with a fast it concludes after eight days of fasting

(11) ***Yavamadhyachandra pratima***—*Yava* is barley seed. The structure of this *pratima* is like a barley seed, thick in the middle and pointed at both ends Maximum number of morsels are eaten at the middle of the full duration of this practice and minimum at the beginning and the end. The procedure is—the aspirant takes only one morsel of food on the first day of the bright half of a month. Increasing one morsel every day, he takes fifteen morsels on the day of full moon. Thereafter he starts reducing one morsel everyday beginning with fourteen morsels on the first day of the dark half of the month and ending with a fast on the dark night As the pattern of this practice follows the gradual increase and decrease of the orb of moon as well as the shape of barley seed it is called *Yavamadhyachandra pratima* (middle of barley-moon practice).

(12) ***Vajramadhyachandra pratima***—This follows a reverse pattern as compared with *Yavamadhyachandra pratima* The shape of *vajra* is like a dumbbell, thin in the middle and thick at the ends In this practice maximum number of morsels are eaten at the beginning and at the end and minimum at the middle The aspirant takes fourteen morsels of food on the first day of the dark half of the month, reducing one morsel every day, he observes fast on the dark night. Now he starts increasing one morsel everyday beginning with one morsel on the first day of the bright half of a month and ending with fifteen morsels on the day of full moon *(for detailed description refer to Illustrated Antakriddasha Sutra, Appendix)*

### *सामायिक–पद* SAMAYIK-PAD (SEGMENT OF SAMAYIK)

**२४९. दुविहे सामाइए पण्णत्ते, तं जहा–अगारसामाइए चेव, अणगारसामाइए चेव।**

२४९. सामायिक दो प्रकार की है–अगार–(श्रावक) सामायिक अर्थात् देशविरति और अनगार–(साधु) सामायिक अर्थात् सर्वविरति।

**249.** *Samayik* (the prescribed Jain meditation aimed at equanimity) is of two kinds—*agaar* (householder) *samayik* which is partial renunciation and *anagaar* (ascetic) *samayik* which is complete renunciation

### *जन्म–मरण–पद (जन्म और मृत्यु के लिए स्थान के अनुसार भिन्न–भिन्न शब्दों का प्रयोग)*
### JANMA-MARAN-PAD (SEGMENT OF BIRTH AND DEATH)

**२५०. दोण्हं उववाए पण्णत्ते, तं जहा–देवाणं चेव, णेरइयाणं चेव। २५१. दोण्हं उव्वट्टणा पण्णत्ता, तं जहा–णेरइयाणं चेव, भवणवासीणं चेव। २५२. दोण्हं चवणे पण्णत्ते, तं जहा–**

**जोइसियाणं चेव, वेमाणियाणं चेव। २५३. दोण्हं गब्भवक्कंती पण्णत्ता, तं जहा—मणुस्साणं चेव, पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव।**

२५०. देवो और नारक जीवों का 'उपपात' कहा जाता है। २५१. नारको और भवनवासी देवो का मरकर ऊपर आना 'उद्वर्तन' कहा गया है। २५२. ज्योतिष्क देवो का और वैमानिक देवो का मरकर ऊपर से नीचे जाना 'च्यवन' कहलाता है। २५३. मनुष्यों और पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिक जीवो का जन्म 'गर्भव्युत्क्रान्ति' कही गई है। (चित्र देखें)

**250.** *Upapat* (instantaneous birth) is of two kinds—of *devs* (gods or divine beings) and of *naarak jivas* (infernal beings). **251.** *Udvartan* (incarnation in higher realms) is of two kinds—of *naaraks* (infernal beings) and *Bhavanvasi devs* (abode dwelling gods) **252.** *Chyavan* (birth in lower realms) is of two kinds—of *Jyotishk devs* (stellar gods) and of *Vaimanik devs* (celestial vehicle dwelling gods) **253.** *Garbha-vyutkranti* (birth from womb) is of two kinds—of *manushyas* (human beings) and of *panchendirya-tiryak-yoni jivas* (five sensed animals).

*गर्भस्थ–पद (गर्भ मे रहे हुए मनुष्य एव तिर्यच की भिन्न–भिन्न गतिविधियों का कथन)*

**GARBHASTH-PAD (SEGMENT OF EMBRYONIC STATE)**

**२५४. दोण्हं गब्भत्थाणं आहारे पण्णत्ते, तं जहा—मणुस्साणं चेव, पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव। २५५. दोण्हं गब्भत्थाणं वुड्ढी पण्णत्ता, तं जहा—मणुस्साणं चेव, पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव। २५६. दोण्हं गब्भत्थाणं—णिवुड्ढी, विगुव्वणा, गतिपरियाए, समुग्घाते, कालसंजोगे, आयाती, मरणे पण्णत्ते, तं जहा—मणुस्साणं चेव, पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव। २५७. दोण्हं छविपव्वा पण्णत्ता, तं जहा—मणुस्साणं चेव, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव। २५८. दो सुक्कसोणितसंभवा पण्णत्ता, तं जहा—मणुस्सा चेव, पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव।**

२५४. मनुष्यो और पचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीवो का गर्भावस्था में आहार लेना कहा है-(इन दो के सिवाय अन्य जीवो का गर्भ होता ही नहीं है)। २५५. मनुष्यो और पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीवो की गर्भ मे रहते हुए शरीरवृद्धि होती है। २५६. मनुष्यो तथा पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिकों की गर्भ में रहते हुए हानि, (निवृद्धि—वात, पित्त आदि दोषो से शरीर की होने वाली क्षति) विक्रिया, **गतिपर्याय**—(गर्भ से आत्म–प्रदेशो का बाहर निकलना), समुद्‌घात, **कालसंयोग**—(काल कृत अवस्थाएँ), गर्भ से निर्गमन और गर्भ मे मरण होता है। २५७. मनुष्यो और पचेन्द्रिय तिर्यग्योनिको के छवि पर्व–त्वचा और सन्धियों (जोडो) के बधन होते है। २५८. मनुष्य और पचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीव शुक्र (वीर्य) और शोणित (रक्त–रज) से उत्पन्न होते हैं।

**254.** In *garbh-avastha* (embryonic state) two kinds of beings have *ahar* (food intake)—*manushyas* (human beings) and *panchendirya-tiryak-yoni jivas* (five sensed animals) (besides these no other beings are

## जन्म-मरण के वाचक भिन्न-भिन्न शब्द

चित्र परिचय ६

Illustration No. 6
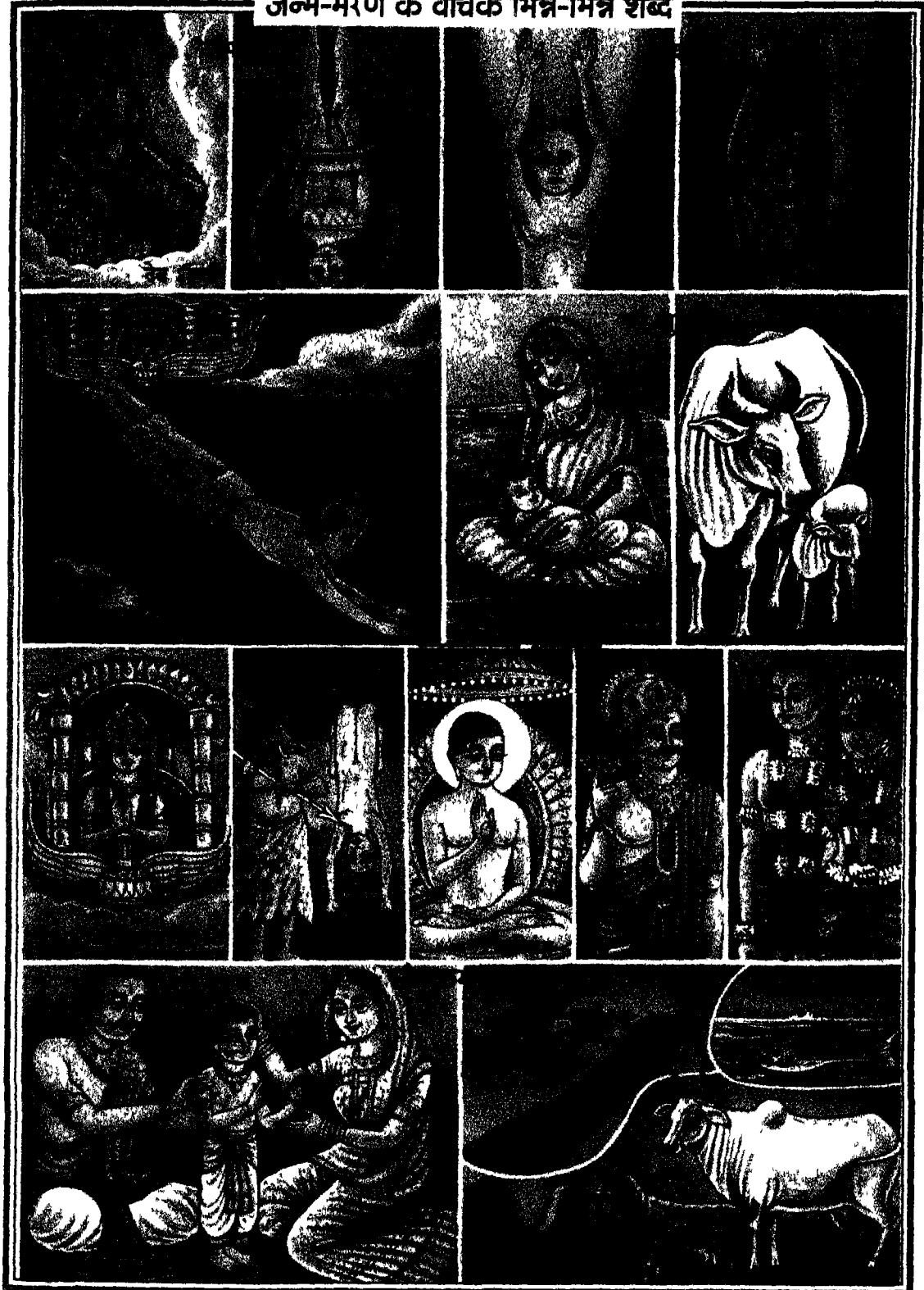
## जन्म-मरण के वाचक भिन्न-भिन्न शब्द

सभी ससारी प्राणियो का जन्म मरण होता है, परन्तु योनि के अनुसार उनके लिए भिन्न-भिन्न शब्दो का प्रयोग किया जाता है। जैसे देवता और नारको के लिए **उपपात**। देवता स्वर्ग मे फूलो की शय्या मे उत्पन्न होते ही ४८ मिनट मे युवा जैसा दीखने लगता है। नारकी जीव कुभी मे उल्टा उत्पन्न होता है।

**उद्वर्तन**–नारकी और भवनवासी देव (तिर्यक लोक मे रहने वाले) आयुष्य पूर्ण कर नीचे से ऊपर जाते है, अत वहाँ से उनका मरण **उद्वर्तन** कहा जाता है।

**च्यवन**–देवता आयुष्य पूर्ण होने पर स्वर्ग विमान छोडकर नीचे तिर्यक लोक मे जाते है, उनका **मरण, च्यवन** (पतन) है। मनुष्य व तिर्यच (पशु) का जन्म **गर्भ व्युत्क्रान्ति**–(गर्भ से बाहर आना) कहा जाता है।

*स्थान २ उ ३ सूत्र २५० २५३*

**निरुपक्रम आयुष्य**–देवता, नारक जीव, तीर्थंकर व चक्रवर्ती आदि शलाकापुरुष एव युगलिया, इनका आयुष्य **निरुपक्रम** होता है, अर्थात अकाल मरण नही होता।

मनुष्य तथा सभी तिर्यच पशु-पक्षी जलचर आदि जीव पूर्णायु भी भोगते है तथा अकाल मृत्यु भी प्राप्त कर सकते है। इनका आयुष्य सोपक्रम है। चित्र मे इन सबको दिखाया है।

*स्थान २ उ २ सूत्र २६६ २६७*

## DIFFERENT WORDS FOR BIRTH AND DEATH

All worldly beings undergo birth and death but based on the specific genus different terms are used for that For example birth of gods or infernal beings is called **Upapat** Gods are born in the divine abode on a bed of flowers and within forty eight minutes their gain their full growth to look young Infernal beings are born upside down in a pitcher

**Udvartan**—*Naaraks* and *Bhavanvasi devs* (living in Tiryaklok) reincarnate in higher realms after their death therefore their death is called **udvartan** (going up)

**Chyavan**—Gods reincarnate in lower realms after their death, therefore their death is called **chyavan** (going down) Birth of humans and animals is called **Garbha vyutkranti** (birth from womb)

*--Sthaan 2 Lesson 3 Sutra 250 253*

**Nirupakram Ayushya**—The life span of Gods, infernal beings, *Tirthankar*, *Chakravarti* and other *Shalakapurush* as well as twins is called **Nirupakram** or without a chance of untimely death

Humans and all animals including birds and aquatic beings may die after completing their normal life span and untimely too Their life span is called *Sopakram* Illustration shows all these

*—Sthaan 2, Lesson 3, Sutra 266 267*

born out of womb). **255.** In embryonic state two kinds of beings have *sharir vriddhi* (bodily growth)—human beings and five sensed animals **256.** In embryonic state two kinds of beings have *nivriddhi* (harm caused due to disturbed body humours), *vikriya* (willful transmutation), *gati paryaya* (shifting out of soul-spacepoints), *samudghat* (special capacity to expand and contract sections of soul), *kaal-samyoga* (temporal states), *ayati* (leaving the womb or birth) and *maran* (death in the womb)—human beings and five sensed animals. **257.** Two kinds of beings have *chhaviparva* (ligatures of skin and bones)—human beings and five sensed animals. **258.** Two kinds of beings are born from *shukra* (semen) and *shonit* (blood, here it means menstrual discharge)—human beings and five sensed animals.

### *स्थिति–पद* STHITI-PAD (SEGMENT OF STATE)

**२५९. दुविहा ठिती पण्णत्ता, तं जहा–कायट्ठिती चेव, भवट्ठिती चेव। २६०. दोण्हं कायट्ठिती पण्णत्ता, तं जहा–मणुस्साणं चेव, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव। २६१. दोण्हं भवट्ठिती पण्णत्ता, तं जहा–देवाणं चेव, णेरइयाणं चेव।**

२५९. स्थिति दो प्रकार की है–कायस्थिति और भवस्थिति। २६०. मनुष्यो और पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिको की कायस्थिति कही है। २६१. देवो और नारकों की भवस्थिति कही है।

**259.** *Sthiti* (state) is of two kinds—*kaya sthiti* (state of body; this means continued reincarnation in same genus or state of body for more than one birth) and *bhava sthiti* (state of birth or genus, this means no continued reincarnation in the same genus) **260.** Two kinds of beings have *kaya sthiti* (state of body)—human beings and five sensed animals **261.** Two kinds of beings have *bhava sthiti* (state of birth or genus)—divine beings and infernal beings

### *आयु–पद* AYU-PAD (SEGMENT OF LIFE SPAN)

**२६२. दुविहे आउए पण्णत्ते, तं जहा–अद्धाउए चेव, भवाउए चेव। २६३. दोण्हं अद्धाउए पण्णत्ते, तं जहा–मणुस्साणं चेव, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव। २६४. दोण्हं भवाउए पण्णत्ते, तं जहा–देवाणं चेव, णेरइयाणं चेव।**

२६२. आयुष्य दो प्रकार का है–अद्धवायुष्य और भवायुष्य। २६३. मनुष्यो का और पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिको का अद्धवायुष्य होता है। २६४. देवों और नारकों का भवायुष्य होता है।

**262.** *Ayushya* (life span) is of two kinds—*addhvayushya* (state-specific life span; life span of a being having continued reincarnation in same

genus or state of body for more than one birth) and *bhavayushya* (birth or genus-specific life span, life span of a being having no continued reincarnation in the same genus). **263.** Two kinds of beings have *addhvayushya*—human beings and five sensed animals **264.** Two kinds of beings have *bhavayushya*—divine beings and infernal beings

**विवेचन**—जो जीव लगातार कई जन्मो तक एक ही जाति या पर्याय मे उत्पन्न होता रहता है, उसकी आयु को **अद्धवायुष्य** अथवा **कायस्थिति** कहा गया है। जैसे–मनुष्य मरकर पुन मनुष्य पर्याय मे उत्पन्न हो सकता है। जिस जाति मे जीव उत्पन्न होता है, उसके आयुष्य को **भवायुष्य** अथवा **भवस्थिति** कहा गया है। देव और नारक जीव आयुष्य पूर्ण कर पुन सीधा उसी भव मे उत्पन्न नही होता। पानी, अग्नि, वायुकाय के जीव अपनी-अपनी योनि मे लगातार असख्यात जन्म धारण कर सकते है। वनस्पतिकायिक जीव वनस्पति योनि मे निरन्तर अनन्त भव धारण कर सकता है।

**Elaboration**—The life span of a being having continued reincarnation in same genus or state of body for more than one birth is called *addhvayushya* (state-specific life span) and this phenomenon is called *kaya sthiti* (period of existence in state of body) For example human beings can reincarnate as human beings again and again The life span of a being born in a particular genus and having no scope of continued reincarnation in the same genus is called *bhavayushya* (birth or genus-specific life span) and this phenomenon is called *bhava sthiti* (state of birth or genus) For example after completing their life span, divine and infernal beings never reincarnate in the same genus Water-bodied, fire-bodied and air-bodied beings can reincarnate continuously in the same genus for innumerable times Plant-bodied beings can reincarnate continuously in the same genus for infinite times

### कर्म–पद KARMA-PAD (SEGMENT OF KARMA)

**२६५. दुविहे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा–पदेसकम्मे चेव, अणुभावकम्मे चेव। २६६. दो अहाउयं पालेंति, तं जहा–देवच्चेव, णेरइयच्चेव। २६७. दोण्हं आउय–संवट्टए पण्णत्ते, तं जहा–मणुस्साणं चेव, पंचेन्दियतिरिक्खजोणियाणं चेव।**

२६५. कर्म दो प्रकार का होता है–**प्रदेश कर्म** (जिस कर्म के प्रदेशो का ही वेदन होता है, रस का नही अर्थात् कर्म उदित होकर फलानुभूति के बिना क्षीण हो जाये), और **अनुभाव कर्म** (जिस कर्म का फल सुख–दु ख की अनुभूति के साथ भोगा जाता है)। २६६. दो यथायु (पूर्णायु) का पालन करते है–देव और नारक। २६७. मनुष्यो का और पचेन्द्रियतिर्यग्योनिक, दो का आयुष्य सवर्तक होता है। (तात्पर्य यह है कि मनुष्य और तिर्यंच दीर्घकालीन आयुष्य को अल्पकाल मे भी भोग लेते है।)

**265.** *Karma* is of two kinds—*pradesh karma* (*karmas* that cause subtle or partial sufferance, in other words *karmas* that are shed after fruition without causing sufferance) and *anubhaava karma* (*karmas* that cause sufferance of pleasure and pain) **266.** Two kinds of beings live their *yathayu* (full life span)—divine beings and infernal beings. **267.** Two kinds of beings have *samvartak ayushya* (variable life span; capacity of shortening life span)—human beings and five sensed animals.

### *क्षेत्र–पद (जम्बूद्वीप की भौगोलिक स्थिति)* KSHETRA-PAD (SEGMENT OF AREA) (THE GEOGRAPHICAL CONDITIONS OF JAMBU CONTINENT)

**२६८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर–दाहिणे णं दो वासा पण्णत्ता–बहुसमतुल्ला अविसेस–मणाणत्ता अण्णमण्णं णातिवट्टंति आयाम–विक्खंभ–संठाण–परिणाहेणं, तं जहा–भरहे चेव, एरवए चेव। २६९. एवमेएणमभिलावेणं–हेमवते चेव, हेरण्णवए चेव। हरिवासे चेव, रम्मयवासे चेव।**

२६८. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर (सुमेरु) पर्वत के उत्तर और दक्षिण में दो क्षेत्र है–दक्षिण मे भरत और उत्तर मे ऐरवत। ये दोनो क्षेत्र–प्रमाण मे सर्वथा सदृश है, नगर–नदी आदि की दृष्टि से उनमे कोई विशेष (भेद) नही है। कालचक्र के परिवर्तन की दृष्टि से उनमे कोई भिन्नता नही है। वे लम्बाई, चौडाई (आकार) और परिधि की अपेक्षा एक–दूसरे का अतिक्रमण नही करते है, समान है। २६९. इसी प्रकार हैमवत और हैरण्यवत तथा हरिवर्ष और रम्यक्वर्ष क्षेत्र भी परस्पर सर्वथा समान है।

**268.** In Jambu continent there are two areas (land masses) north and south of the Mandar or Meru mountain—Bharat (in the south) and Airavat (in the north) These two land masses have the same area There is not much difference in terms of cities, rivers etc In terms of time cycle or weather cycle there is hardly any difference. In terms of length, breadth, circumference and other physical parameters they do not contradict each other and are same **269.** In the same way Haimavat and Hairanyavat continents are similar to each other as also Harivarsh and Ramyakvarsh

**२७०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम–पच्चत्थिमे णं दो खेत्ता पण्णत्ता–बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्णं णातिवट्टंति आयाम–विक्खंभ–संठाण–परिणाहणं, तं जहा–पुव्वविदेहे चेव, अवरविदेहे चेव।**

२७०. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व और पश्चिम मे दो क्षेत्र है–पूर्व विदेह और अपर (पश्चिम) विदेह। ये दोनो क्षेत्र प्रमाण की दृष्टि से सर्वथा सदृश है, नगर–नदी आदि की दृष्टि से उनमे कोई भिन्नता नही है, कालचक्र के परिवर्तन की दृष्टि से भी उनमे कोई भिन्नता नही है। इनकी लम्बाई, चौडाई, आकार और परिधि भी एक–दूसरे के समान है।

270. In Jambu continent there are two areas (land masses) east and west of the Mandar or Meru mountain—Purva Videh (in the east) and Apar Videh (in the west). These two land masses have the same area There is not much difference in terms of cities, rivers etc. In terms of time cycle or weather cycle there is hardly any difference In terms of length, breadth, circumference and other physical parameters also they are same.

**२७१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं दो कुराओ पण्णत्ताओ-बहुसमतुल्लाओ जाव देवकुरा चेव, उत्तरकुरा चेव।**

**तत्थ णं दो महतिमहालया महादुमा पण्णत्ता-बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्णं णाइवट्टंति आयाम-विक्खंभुच्चत्तोव्वेह-संठाण-परिणाहेणं, तं जहा-कूडसामली चेव, जंबू चेव सुदंसणा।**

**तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया महज्जुइया महाणुभागा महायसा महाबला महासोक्खा पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा-गरुले चेव वेणुदेवे अणाढिते चेव जंबुद्दीवाहिवती।**

२७१. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के उत्तर और दक्षिण मे दो कुरु है-उत्तर मे उत्तरकुरु और दक्षिण में देवकुरु। ये दोनो क्षेत्र प्रमाण आदि की दृष्टि से सर्वथा सदृश है और परिधि की अपेक्षा एक-दूसरे के समान है।

देवकुरु में कूटशाल्मली और उत्तरकुरु मे सुदर्शन जम्बू नाम के दो अति विशाल महावृक्ष है। वे दोनो प्रमाण की दृष्टि से सर्वथा सदृश है, उनमे परस्पर कोई विशेषता नही है, कालचक्र के परिवर्तन की दृष्टि से उनमे कोई भिन्नता नही है, वे लम्बाई, चौडाई, ऊँचाई, गहराई, सस्थान और परिधि की अपेक्षा एक-दूसरे का अतिक्रमण नही करते है।

उन पर महान् ऋद्धि वाले, महाद्युति वाले, महाशक्ति वाले, महायश वाले, महाबल वाले, महासौख्य वाले और एक पल्योपम की स्थिति वाले दो देव रहते है-कूटशाल्मली वृक्ष पर सुपर्णकुमार जाति का गरुड वेणुदेव और सुदर्शन जम्बूवृक्ष पर जम्बूद्वीप का अधिपति अनादृतदेव।

**271.** In Jambu continent there are two areas called Kurus—north and south of the Mandar or Meru mountain—Uttar Kuru (North Kuru in the north) and Dev Kuru (Dev Kuru in the south) These two land masses have the same area and other physical parameters

There are two gigantic trees, one in Dev Kuru called Koot-shalmali and the other in Uttar Kuru called Sudarshan Jambu These two trees have exactly same size. There is not much difference in terms of seasonal changes. In terms of length, breadth, height, depth, structure and circumference they do not overlap each other

On these trees reside two gods having great wealth, great radiance, great power, great fame, great strength, great happiness and life span of

one *Palyopam* (a metaphoric unit of time)—Garud Venu Dev of *Suparna Kumar* class on the Koot-shalmali tree and Anadrit Dev, the guardian deity of Jambu continent, on the Sudarshan Jambu tree.

**वर्षधर पर्वत–पद VARSHDHAR PARVAT-PAD (SEGMENT OF VARSHADHAR MOUNTAIN)**

**२७२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर–दाहिणे णं दो वासहरपव्वया पण्णत्ता–बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्णं णातिवट्टंति आयाम–विक्खंभुच्चत्तोव्वेह–संठाण–परिणाहेणं, तं जहा–चुल्लहिमवंते चेव, सिहरिच्चेव। २७३. एवं महाहिमवंते चेव, रुप्पिच्चेव एवं णिसढे चेव, णीलवंते चेव।**

२७२. जम्बूद्वीप द्वीप में मन्दर पर्वत के उत्तर और दक्षिण में दो वर्षधर पर्वत है–दक्षिण में क्षुल्ल हिमवान् और उत्तर मे शिखरी। ये दोनो क्षेत्र–प्रमाण आदि की दृष्टि से सर्वथा सदृश हैं, कालचक्र आदि सभी दृष्टि से और परिधि की अपेक्षा एक–दूसरे के समान है। २७३. इसी प्रकार महाहिमवान् और रुक्मी तथा निषध और नीलवन्त पर्वत भी परस्पर मे क्षेत्र–प्रमाण, कालचक्र–परिवर्तन, आयाम, विष्कम्भ, उच्चत्व, उद्वेध, सस्थान और परिधि मे एक–दूसरे का अतिक्रमण नही करते हैं। (महाहिमवान और निषध पर्वत मेरुपर्वत के दक्षिण में है और नीलवन्त तथा रुक्मी उत्तर में है।)

**272.** In Jambu continent there are two *Varsh-dhar parvats* (mountains) north and south of the Mandar mountain—Kshull Himavan in the south and Shikhari in the north These two have the same size In terms of time cycle or weather cycle there is hardly any difference. In terms of circumference and other physical parameters also they are identical **273.** In the same way Mahahimavan and Rukmi mountains as also Nishadh and Nilavant mountains do not surpass each other in terms of length, breadth, height, depth, structure and circumference (Mahahimavan and Rukmi mountains are in the south of Meru mountain and Nishadh and Nilavant mountains are in the north )

**२७४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर–दाहिणे णं हेमवत–हेरण्णवतेसु वासेसु दो वट्टवेयड्ढपव्वता पण्णत्ता–बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता णातिवट्टंति आयाम–विक्खंभुच्चत्तोव्वेहसंठाण–परिणाहेणं, तं जहा–सद्दावाती चेव, वियडावाती चेव।**

**तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीय परिवसंति, तं जहा–साती चेव, पभासे चेव।**

२७४. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण मे हैमवत और उत्तर मे हैरण्यवत क्षेत्र में दो वृत्त वैताढ्य पर्वत हैं, जो परस्पर क्षेत्र–प्रमाण की दृष्टि से सर्वथा सदृश है, कालचक्र आदि सभी दृष्टियों से उनमे कोई भिन्नता नही है। एक–दूसरे के समान हैं।

उन पर महान् ऋद्धि वाले यावत् एक पल्योपम की स्थिति वाले दो देव रहते हैं–दक्षिण दिशा में स्थित शब्दापाती वृत्त वैताढ्य पर स्वातिदेव और उत्तर दिशा मे स्थित विकटापाती वृत्त वैताढ्य पर प्रभासदेव।

**274.** In Jambu continent there are two *Vritta* (circular) *Vaitadhya* mountains, one towards south of Mandar Mountain in Haimavat area and the other towards north of Mandar mountain in Hairanyavat area These two have the same size In terms of time cycle or weather cycle there is hardly any difference In terms of circumference and other physical parameters also they are identical

On these reside two gods having great wealth, and so on up to. . life span of one *Palyopam* (a metaphoric unit of time)—Swati Dev resides on the Shabdapati *Vritta Vaitadhya* in the south and Prabhas on the Vikatapati *Vritta Vaitadhya* in the north

**२७५. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर–दाहिणे णं हरिवास–रम्मएसु वासेसु दो वट्टवेयड्डपव्वया पण्णत्ता–बहुसमतुल्ला जाव तं जहा–गंधावाती चेव, मालवंतपरियाए चेव।**

**तत्थ णं दो देवा महिड्डिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा–अरुणे चेव, पउमे चेव।**

२७५. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण मे, हरिवास क्षेत्र मे गन्धापाती और उत्तर में रम्यकवास क्षेत्र मे माल्यवान् पर्याय नामक दो वृत्त (गोल आकार वाले) वैताढ्य पर्वत है। दोनो क्षेत्र–प्रमाण की दृष्टि से सर्वथा सदृश है यावत् सभी दृष्टियो मे एक–दूसरे के समान है।

उन पर महान् ऋद्धि वाले यावत् एक पल्योपम की स्थिति वाले दो देव रहते है–गन्धापाती पर अरुणदेव और माल्यवान् पर्याय पर पद्मदेव।

**275.** In Jambu continent there are two *Vritta Vaitadhya* mountains; namely Gandhapati towards south of Mandar Mountain in Harivas area and the other named Malyavanparyaya towards north of Mandar mountain in Ramyakvasa area These two have the same size In terms of time cycle or weather cycle there is hardly any difference. In terms of circumference and other physical parameters also they are exactly the same

On these reside two gods having great wealth, and so on up to . life span of one *Palyopam* (a metaphoric unit of time)—Arun Dev on the Gandhapati and Padma Dev on the Malyavanparyaya.

**२७६. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं देवकुराए कुराए पुव्वावरे पासे, एत्थ णं आसक्खंधग–सरिसा अद्धचंद–संठाण–संठिया दो वक्खारपव्वया पण्णत्ता बहुसमतुल्ला जाव तं जहा–सोमणसे चेव, विज्जुप्पभे चेव।**

२७६. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण में देवकुरु के पूर्व पार्श्व में सौमनस और पश्चिम पार्श्व में विद्युत्प्रभ नाम के दो वक्षार पर्वत है। वे अश्व-स्कन्ध के समान (आरम्भ में नीचे और अन्त में ऊँचे) तथा अर्धचन्द्र के आकार वाले है। वे दोनो क्षेत्र-प्रमाण की दृष्टि से सर्वथा सदृश हैं यावत् आयाम, विष्कम्भ आदि की अपेक्षा एक-दूसरे का अतिक्रमण नही करते है।

**276.** In Jambu continent there are two *Vakshar* mountains towards south of Mandar Mountain; one named Somanas in the eastern side of Dev Kuru and other named Vidyutprabh in the western side of Dev Kuru. They are like shoulders of a horse (low in the beginning and high in the end) and crescent shaped. These two mountains have exactly same size.. and so on up to . In terms of length, breadth, height, depth, structure and circumference they do not overlap each other

**२७७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं उत्तरकुराए कुराए पुव्वावरे पासे, एत्थ णं आसक्खंधग-सरिसा अद्धचंद-संठाण-संठिया दो वक्खारपव्वया पण्णत्ता-बहुसमतुल्ला जाव तं जहा-गंधमायणे चेव, मालवंते चेव।**

२७७. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के उत्तर में स्थित उत्तरकुरु के पूर्व पार्श्व में गन्धमादन और पश्चिम पार्श्व मे माल्यवत नाम के दो वक्षार पर्वत है। वे घोडे के कधे के समान तथा अर्धचन्द्र के आकार वाले है। दोनो ही क्षेत्र-प्रमाण आदि की दृष्टि से सर्वथा सदृश है यावत् एक-दूसरे के सर्वथा समान है।

**277.** In Jambu continent there are two *Vakshar* mountains towards north of Mandar Mountain, one named Gandh-madan in the eastern side of Uttar Kuru and the other named Malyavant in the western side of Uttar Kuru. They are like shoulders of a horse and crescent shaped. These two mountains have exactly same size and so on up to.. In terms of length, breadth, height, depth, structure and circumference they do not overlap each other

**२७८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं दो दीहवेयड्ढपव्वया पण्णत्ता-बहुसमतुल्ला जाव तं जहा-भारहे चेव, दीहवेयड्ढे, एरवते चेव दीहवेयड्ढे।**

२७८. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत से उत्तर और दक्षिण मे दो दीर्घ (लम्बे) वैताढ्य पर्वत है। ये क्षेत्र-प्रमाण आदि की दृष्टि से सर्वथा समान है। उनमे से एक दीर्घ वैताढ्य भरत क्षेत्र मे है और दूसरा दीर्घ वैताढ्य ऐरवत क्षेत्र मे है।

**278.** In Jambu continent there are two *Deergh Vaitadhya parvats* (mountains) north and south of the Mandar mountain In terms of size, circumference and other physical parameters they are same Of these

one *Deergh Vaitadhya* is in Bharat area and the other *Deergh Vaitadhya* is in Airavat area.

### *गुहा–पद* GUHA-PAD

**२७९. भारहए णं दीहवेयड्ढे दो गुहाओ पण्णत्ताओ–बहुसमतुल्लाओ अविसेसमणाणत्ताओ अण्णमण्णं णातिवट्टंति आयाम–विक्खंभुच्चत्त–संठाण–परिणाहेणं, तं जहा–तिमिसगुहा चेव, खंडगप्पवाय–गुहा चेव। तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा–कयमालए चेव, णट्टमालए चेव। २८०. एरवए णं दीहवेयड्ढे दो गुहाओ पण्णत्ताओ जाव तं जहा–कयमालए चेव, णट्टमालए चेव।**

२७९. भरत क्षेत्र के दीर्घ वैताढ्य पर्वत मे तमिस्रा और खण्डप्रपात नाम की दो गुफाएँ है। वे दोनो क्षेत्र–प्रमाण की दृष्टि से सर्वथा सदृश है, उनमे परस्पर कोई विशेष भेद नहीं है। आयाम, विष्कम्भ, उच्चत्व, सस्थान और परिधि की अपेक्षा एक–दूसरे के समान है। वहाँ पर महान् ऋद्धि वाले यावत् एक पल्योपम की स्थिति वाले दो देव रहते है–तमिस्रा गुफा में कृतमालक देव और खण्डप्रपात गुफा मे नृत्तमालक देव। २८०. इसी तरह ऐरवत क्षेत्र के दीर्घ वैताढ्य पर्वत मे तमिस्रा और खण्डप्रपात नाम की दो गुफाएँ हैं। वे दोनो क्षेत्र–प्रमाण आदि की दृष्टि से एक–दूसरे के सर्वथा समान हैं। वहाँ पर महान् ऋद्धि वाले यावत् एक पल्योपम की स्थिति वाले दो देव रहते है–तमिस्रा मे कृतमालक और खण्डप्रपात गुफा मे नृत्तमालक देव।

**279.** On the *Deergh Vaitadhya* in Bharat area there are two caves named Tamisra and Khandprapat. These two caves have exactly same size. There is not much difference in terms of seasonal changes. In terms of length, breadth, height, depth, structure and circumference they do not contradict each other In these caves reside two gods having great wealth, great radiance, great power, great fame, great strength, great happiness and life span of one *Palyopam* (a metaphoric unit of time)—Kritamalak in the Tamisra cave and Nrittamalak Dev in the Khandprapat cave **280.** On the *Deergh Vaitadhya* in Airavat area there are two caves named Tamisra and Khandprapat These two caves have exactly same size and other attributes On these caves reside two gods having great wealth and so on up to life span of one *Palyopam*—Kritamalak in the Tamisra cave and Nrittamalak Dev in the Khandprapat cave

### *कूट–पद* KOOT-PAD (SEGMENT OF PEAKS)

**२८१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं चुल्लहिमवंते वासहरपव्वए दो कूडा पण्णत्ता–बहुसमतुल्ला जाव विक्खंभुच्चत्त–संठाण–परिणाहेणं, तं जहा–चुल्लहिमवंतकूडे चेव, वेसमणकूडे चेव। २८२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं महाहिमवंते वासहरपव्वए दो कूडा पण्णत्ता–**

# जम्बू द्वीप की भौगोलिक स्थिति

चित्र परिचय ८

Illustration No. 8
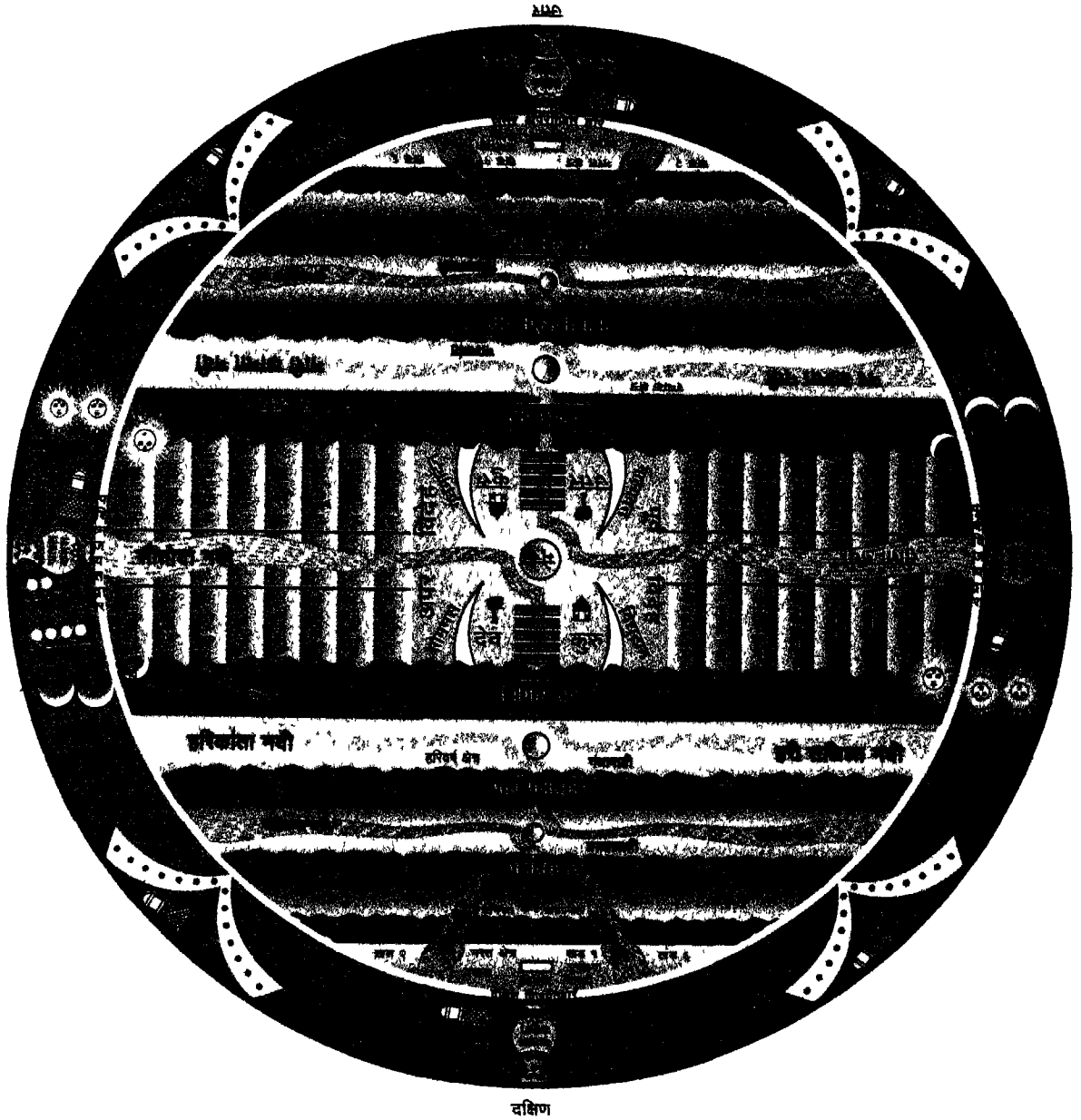
# जम्बूद्वीप का भौगोलिक परिचय

**जम्बूद्वीप**--असख्य द्वीप समुद्रो के वीच गोलाकार मे एक लाख योजन का जम्बूद्वीप है।

**मेरु पर्वत**--जम्बूद्वीप के ठीक मध्य मे मेरु पर्वत स्थित है। मेरु पर्वत पर चार सुरम्य वन हे भद्रशालवन, नदनवन सोमनसवन पडकवन।

**वर्ष**--मेरु पर्वत के **दक्षिण मे**--भरत, हैमवत हरिवर्ष, देवकुरु, **उत्तर मे**--ऐरवत हिरण्यवत रम्यकवर्ष उत्तरकुरु, **पूर्व--पश्चिम** मे पूर्व विदेह, पश्चिम विदेह है। कुल १० वर्ष (मानव क्षेत्र है)।

**वर्षधर पर्वत**--मेरु पर्वत के **उत्तर मे**-(१) नीलवन (२) रुक्मी (३) शिखरी तथा **दक्षिण मे**--(१) चुल्लहिमवत, (२) महाहिमवन, (३) निषध ये छह वर्षधर पर्वत है। चार वृत्त वैताढ्य तथा ३४ दीर्घ वैताढ्य पर्वत है।

**हद (द्रह)**--मेरु पर्वत के **उत्तर मे**--(१) केसरी, (२) महापौंडरीक (३) पौडरीक तथा **दक्षिण मे**--(१) पद्म (२) महापद्म तथा (३) तिगिच्छ द्रह है।

**नदियाँ**--मेरु पर्वत के **उत्तर मे** छह महानदियाँ है नरकाता नारीकाता सुवर्णकला रूप्यकूला रक्ता रक्तवती। **दक्षिण मे** छह महानदियाँ गगा, सिन्धु, रोहिता रोहिताशा हरिसलिला तथा हरिकाता।

**शाश्वत तीर्थ**- मेरु पर्वत के **उत्तर मे** ऐरवत क्षेत्र मे और **दक्षिण मे** भरत क्षेत्र मे मागध वरदाम और प्रभास तीन तीन तीर्थ है। महाविदेह की प्रत्येक विजय मे भी तीन-तीन तीर्थ है। इस प्रकार कुल १०२ ऐसे तीर्थ है।

**लवण समुद्र**--जम्बूद्वीप को चारो तरफ से घेरे हुए विशाल लवण समुद्र है।

**पाताल कलश**--लवण समुद्र मे जम्बूद्वीप की वेदिका से ९५ हजार योजन भीतर घडे के आकार के चार महापाताल कलश है।

**अन्तरद्वीप**--शिखरी और हिमवान वर्षधर पर्वतो से चार विदिशा मे चार चार दाढा निकलकर लवण समुद्र मे गहरी गई है। प्रत्येक दाढा मे सात-सात द्वीप है। इस प्रकार कुल छप्पन अन्तरद्वीप है।

स्थान २ ~ ३

## GEOGRAPHICAL DETAILS OF JAMBUDVFEP

**Jambudveep**—Jambudveep is situated in the middle of innumerable continents and seas

**Meru Mountain**—Exactly at the center of Jambudveep is located the Meru mountain There are four beautiful forests on Meru Bhadrashalavan Nandanavan, Saumanasavan and Pandakavan

**Varsh**—To the **south of Meru**—Bharat Haimavant Harivarsh and Dev kuru To the **north**—Airavat, Hiranyavat, Ramyagvarsh and Uttar kuru In the **east** and **west** are Eastern Videh and Western Videh This makes a total of ten Varshas (areas inhabited by humans)

**Varsh-dhar Mountains**—There are six Varsh dhar mountains three to the **north** of Meru—(1) Nilavant, (2) Rukmi and (3) Shikhari, and three to the **south** (1) Chulla Himavant (2) Mahahimavant and (3) Nishadh mountain There are also four Vritta Vaitadhya mountains and thirty two Deergh Vaitadhya Mountains

**Hrad (draha)**—There are six drahas three to the **north** of Meru (1) Kesari, (2) Mahapaundarik, and (3) Paundarik, and three to the **south** of Meru -(1) Padma, (2) Mahapadma, and (3) Tingichha

**Rivers**—There are twelve great rivers, six to the **north** of Meru Narakanta, Narikanta, Suvarnakula, Rupyakula, Rakta and Raktavat and six to the **south**—Ganga, Sindhu Rohita Rohitansha, Harisalila and Harikanta

**Shashvat Tirtha**—To the **north** of Meru in Airavat area and to the **south** in Bharat area there are three eternal pilgrimages each Magadh, Varadam and Prabhas In every Vijaya of Mahavideh area there are three such centers each Thus there are in total 102 such Tirthas

**Lavan Samudra**—Jambudveep is surrounded by the large Lavan Samudra (ocean)

**Patal Kalash**—Located ninety five thousand Yojans from the vedika of Jambudveep there are four pitcher shaped Mahapatal Kalash in four directions

**Antardveep**—In all the four intermediate directions of Shikhari and Himavan Varsh-dhar mountains there are four branches each extending deep into the Lavan Samudra In each of these branches there are seven antardveeps (middle islands) Thus the total number of middle islands is fifty six

—*Sthaan 2 10*

बहुसमतुल्ला जाव तं जहा–महाहिमवंतकूडे चेव, वेरुलियकूडे चेव। २८३. एवं–णिसढे वासहरपव्वए दो कूडा पण्णत्ता–बहुसमतुल्ला जाव तं जहा–णिसढकूडे चेव, रुयगप्पभे चेव। २८४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं णीलवंते वासहरपव्वए दो कूडा पण्णत्ता–बहुसमतुल्ला जाव तं जहा–णीलवंतकूडे चेव, उवदंसकूडे चेव। २८५. एवं–रुप्पिंमि वासहरपव्वए दो कूडा पण्णत्ता–बहुसमतुल्ला जाव तं जहा–रुप्पिकूडे चेव, मणिकंचणकूडे चेव। २८६. एवं–सिहरिंमि वासहरपव्वते दो कूडा पण्णत्ता–बहुसमतुल्ला जाव तं जहा–सिहरिकूडे चेव, तिगिंछकूडे चेव।

२८१. जम्बूद्वीप द्वीप में मन्दर पर्वत से दक्षिण मे चुल्लहिमवान् वर्षधर पर्वत के ऊपर दो कूट (शिखर) है–चुल्लहिमवानकूट और वैश्रमणकूट। वे दोनो क्षेत्र-प्रमाण आदि की दृष्टि से सर्वथा समान हैं। २८२. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत से दक्षिण मे महाहिमवान् वर्षधर पर्वत के ऊपर दो कूट है। महाहिमवानकूट और वैडूर्यकूट। २८३. इसी प्रकार जम्बूद्वीप द्वीप के मन्दर पर्वत के दक्षिण मे निषध पर्वत के ऊपर दो कूट है–निषधकूट और रुचकप्रभकूट। २८४. जम्बूद्वीप द्वीप के मन्दर पर्वत के उत्तर मे नीलवन्त वर्षधर पर्वत के ऊपर दो कूट है–नीलवन्तकूट और उपदर्शनकूट। २८५. इसी प्रकार जम्बूद्वीप द्वीप के मन्दर पर्वत के उत्तर मे रुक्मी वर्षधर पर्वत के ऊपर दो कूट हैं–रुक्मीकूट और मणिकाचनकूट। २८६. इसी प्रकार जम्बूद्वीप द्वीप के मन्दर पर्वत के उत्तर मे शिखरी वर्षधर पर्वत के ऊपर दो कूट है–शिखरीकूट और तिगिछकूट। उक्त सभी क्षेत्र-प्रमाण आदि की दृष्टि से सर्वथा सदृश तथा आयाम-विष्कम्म-उच्चत्व-सस्थान और परिधि की अपेक्षा एक-दूसरे का अतिक्रमण नही करते।

**281.** In Jambu continent, south of Mandar Mountain on Chullahimavan *Varshadhar* mountain there are two *koots* (peaks)—Chullahimavan *koot* and Vaishraman *koot* These two are exactly same in size and other parameters **282.** In Jambu continent, south of Mandar Mountain on Mahahimavan *Varshadhar* mountain there are two *koots* (peaks)—Mahahimavan *koot* and Vaidurya *koot*. These two are exactly same in size and other parameters **283.** In the same way in Jambu continent, south of Mandar Mountain, on Nishadh mountain there are two *koots* (peaks)—Nishadh *koot* and Ruchakprabh *koot*. These two are exactly same in size and other parameters **284.** In Jambu continent, north of Mandar Mountain, on Neelavant *Varshadhar* mountain there are two *koots* (peaks)—Neelavant *koot* and Upadarshan *koot*. These two are exactly same in size and other parameters. **285.** In the same way in Jambu continent, north of Mandar Mountain, on Rukmi *Varshadhar* mountain there are two *koots* (peaks)—Rukmi *koot* and Manikanchan *koot* These two are exactly same in size and other parameters **286.** In the same way in Jambu continent, north of Mandar Mountain, on Shikhari *Varshadhar* mountain there are two *koots* (peaks)—Shikhari *koot* and Tiginchh *koot*. These two are exactly same in size and other parameters.

## महाद्रह–पद MAHADRAH-PAD (SEGMENT OF GREAT LAKES)

२८७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर–दाहिणे णं चुल्लहिमवंत–सिहरीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा पण्णत्ता–बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्णं णातिवट्टंति आयाम–विक्खंभ–उव्वेहसंठाण–परिणाहेणं, तं जहा–पउमद्दहे चेव, पोंडरीयद्दहे चेव। तत्थ णं दो देवयाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठितीयाओ परिवसंति, तं जहा–सिरी चेव, लच्छी चेव।

२८८. एवं महाहिमवंत–रुप्पीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा पण्णत्ता–बहुसमतुल्ला जाव तं जहा–महापउमद्दहे चेव, महापोंडरीयद्दहे चेव। तत्थ णं दो देवयाओ हिरिच्चेव, बुद्धिच्चेव।

२८७. जम्बूद्वीप द्वीप के मन्दर पर्वत के दक्षिण मे चुल्लहिमवान् वर्षधर पर्वत पर पद्मद्रह और उत्तर मे शिखरी वर्षधर पर्वत पर पौण्डरीकद्रह है। वे दोनो क्षेत्र-प्रमाण की दृष्टि से सर्वथा समान है, उनमें कोई भेद नही है। कालचक्र के परिवर्तन की दृष्टि से उनमे कोई भिन्नता नही है। वे लम्बाई, चौडाई, गहराई, आकार और परिधि मे एक–दूसरे के समान है। वहाँ महान् ऋद्धि वाली यावत् एक पल्योपम की स्थिति वाली दो देवियाँ रहती है–पद्मद्रह मे श्रीदेवी और पौण्डरीकद्रह मे लक्ष्मीदेवी।

२८८. इसी प्रकार दक्षिणवर्ती महाहिमवान् वर्षधर पर्वत पर महापद्मद्रह और उत्तरवर्ती रुक्मी वर्षधर पर्वत पर महापौण्डरीकद्रह नामक दो महाद्रह है। वहाँ दो देवियाँ रहती है–महापद्मद्रह मे ह्री और महापौण्डरीकद्रह मे बुद्धि देवी।

**287.** In Jambu continent, to the south and north of Mandar Mountain there are two *mahadrahas* (great lakes)—on Chullahimavan *Varshadhar* mountain there is Padmadraha (lake Padma) and to the north on Shikhari *Varshadhar* mountain there is Paundareek-draha (lake Paundareek) These two lakes have exactly same size There is not much difference in terms of seasonal changes. In terms of length, breadth, height, depth, structure and circumference they do not contradict each other. On these lakes reside two goddesses having great wealth and so on up to... life span of one *Palyopam*—Shridevi on Padmadraha and Laxmidevi on Paundareek-draha.

**288.** In the same way on Mahahimavan *Varshadhar* mountain in the south there is Mahapadmadraha (lake Mahapadma) and on Rukmi *Varshadhar* mountain in the north there is Mahapaundareek-draha (lake Mahapaundareek). These two great lakes are exactly same in size and other parameters.

On these great lakes reside two goddesses—Hridevi on Mahapadmadraha and Buddhidevi on Mahapaundareek-draha

**२८९. एवं–णिसढ–णीलवंतेसु तिगिंछद्दहे चेव, केसरिद्दहे चेव।**

**तत्थ णं दो देवयाओ धिती चेव, कित्ती चेव।**

२८९. इसी प्रकार मन्दर पर्वत के दक्षिण में निषध पर्वत पर तिगिंछद्रह और उत्तर मे नीलवान् वर्षधर पर्वत पर केसरीद्रह नामक दो महाद्रह है, जो क्षेत्र आदि की दृष्टि से सर्वथा सदृश हैं।

वहाँ दो देवियाँ रहती है–तिगिछद्रह मे धृति और केसरीद्रह मे कीर्ति देवी।

**289.** In the same way to the south of Mandar Mountain on Nishadh mountain there is Tiginchhadraha (lake Tiginchha) and to the north on Neelavan mountain there is Kesaridraha (lake Kesari).

On these great lakes reside two goddesses—Dhritidevi on Tiginchhadraha and Kirtidevi on Kesaridraha.

### *महानदी–पद* MAHANADI-PAD (SEGMENT OF GREAT RIVERS)

**२९०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं महाहिमवंताओ वासहरपव्वयाओ महापउमद्दहाओ दहाओ दो महाणईओ पवहंति, तं जहा–रोहियच्चेव, हरिकंतच्चेव। २९१. एवं–णिसढाओ वासहरपव्वयाओ तिगिंछद्दहाओ दहाओ दो महाणईओ पवहंति, तं जहा–हरिच्चेव, सीतोदच्चेव। २९२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं णीलवंताओ वासहरपव्वताओ केसरिद्दहाओ दहाओ दो महाणईओ पवहंति, तं जहा–सीता चेव, णारिकंता चेव। २९३. एवं–रुप्पीओ वासहरपव्वताओ महापोंडरीयद्दहाओ दहाओ दो महाणईओ पवहंति, तं जहा–णरकंता चेव, रुप्पकूला चेव।**

२९०. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण में महाहिमवान् वर्षधर पर्वत के महापद्मद्रह से रोहिता और हरिकान्ता नाम की दो महानदियाँ प्रवाहित होती (निकलती) है। २९१. इसी प्रकार दक्षिणवर्ती निषध वर्षधर पर्वत के तिगिंछद्रह नामक महाद्रह से हरीत और सीतोदा नाम की दो महानदियाँ प्रवाहित होती हैं। २९२. जम्बूद्वीप द्वीप के मन्दर पर्वत के उत्तर में नीलवान् वर्षधर पर्वत के केसरी महाद्रह से सीता और नारीकान्ता नाम की दो महानदियाँ प्रवाहित होती हैं। २९३. इसी प्रकार रुक्मी वर्षधर पर्वत के महापौण्डरीकद्रह से नरकान्ता और रुप्यकूला नाम की दो महानदियाँ प्रवाहित होती हैं।

**290.** In Jambu continent, south of Mandar Mountain on Mahahimavan *Varshadhar* mountain, from Mahapadmadraha flow two *mahanadis* (great rivers)—Rohita and Harikanta. **291.** In the same way to the south of Mandar Mountain on Nishadh mountain from Tiginchhadraha flow two *mahanadis* (great rivers)—Hareet and Sitoda. **292.** In Jambu continent, north of Mandar Mountain on Neelavan

*Varshadhar* mountain from Kesari-draha flow two *mahanadıs* (great rivers)—Sıta and Narıkanta. **293.** In the same way on Rukmi *Varshadhar* mountaın from Mahapaundareek-draha flow two *mahanadıs* (great rıvers)—Narakanta and Rupyakoola.

**प्रपातद्रह–पद PRAPATADRAH-PAD (SEGMENT OF WATERFALL-LAKES)**

**२९४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं भरहे वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता–बहुसमतुल्ला, तं जहा–गंगप्पवायद्दहे चेव, सिंधुप्पवायद्दहे चेव।**

२९४. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण मे भरत क्षेत्र में दो प्रपातद्रह है–गंगाप्रपातद्रह और सिन्धुप्रपातद्रह। वे दोनों क्षेत्र–प्रमाण की दृष्टि से यावत् एक–दूसरे के सर्वथा समान है।

**294.** In Jambu contınent, south of Mandar Mountaın, ın Bharat area there are two *prapatadrah* (waterfall-lakes)—Ganga *prapatadrah* and Sındhu *prapatadrah*. These two waterfall-lakes have exactly same sıze and so on up to... they do not overlap each other

**२९५. एवं–हेमवए वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता–बहुसमतुल्ला, तं जहा–रोहियप्पवायद्दहे चेव, रोहियंसप्पवायद्दहे चेव।**

२९५. इसी प्रकार हैमवत क्षेत्र मे दो प्रपातद्रह है–रोहितप्रपातद्रह और रोहितांशप्रपातद्रह। वे दोनो क्षेत्र–प्रमाण आदि की दृष्टि से सर्वथा सदृश है।

**295.** In the same way ın Haımavat area there are two *prapatadrah* (waterfall-lakes)—Rohıt *prapatadrah* and Rohıtamsh *prapatadrah* These two waterfall-lakes have exactly same sıze and so on up to they do not overlap each other

**२९६. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं हरिवासे वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता–बहुसमतुल्ला, तं जहा–हरिपवायद्दहे चेव, हरिकंतप्पवायद्दहे चेव।**

२९६. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण मे हरिवर्ष क्षेत्र मे दो प्रपातद्रह है–हरितप्रपातद्रह और हरिकान्तप्रपातद्रह। वे दोनो क्षेत्र–प्रमाण आदि की दृष्टि से सर्वथा सदृश है।

**296.** In Jambu contınent, south of Mandar Mountaın, in Harıvarsh area there are two *prapatadrah* (waterfall-lakes)—Harıt *prapatadrah* and Harıkant *prapatadrah* These two waterfall-lakes have exactly same size.. and so on up to .. they do not overlap each other

**२९७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर–दाहिणे णं महाविदेहे वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता–बहुसमतुल्ला जाव तं जहा–सीतप्पवायद्दहे चेव, सीतोदप्पवायद्दहे चेव।**

२९७. जम्बूद्वीप द्वीप में मन्दर पर्वत के उत्तर-दक्षिण में महाविदेह क्षेत्र में दो महाप्रपातद्रह हैं- सीताप्रपातद्रह और सीतोदाप्रपातद्रह। ये दोनो क्षेत्र-प्रमाण की दृष्टि से सर्वथा सदृश हैं यावत् वे एक-दूसरे का अतिक्रमण नहीं करते हैं।

**297.** In Jambu continent, south and north of Mandar Mountain, in Mahavideh area there are two *prapatadrah* (waterfall-lakes)—Sita *prapatadrah* and Sitoda *prapatadrah*. These two waterfall-lakes have exactly same size and so on up to .. they do not overlap each other

**२९८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं रम्मे वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव तं जहा—णरकंतप्पवायद्दहे चेव, णारिकंतप्पवायद्दहे चेव।**

२९८. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के उत्तर मे रम्यक क्षेत्र मे दो प्रपातद्रह है-नरकान्ताप्रपातद्रह और नारीकान्ताप्रपातद्रह। वे दोनो क्षेत्र-प्रमाण की आदि दृष्टि से सर्वथा सदृश है।

**298.** In Jambu continent, north of Mandar Mountain, in Ramyak area there are two *prapatadrah* (waterfall-lakes)—Narakanta *prapatadrah* and Narikanta *prapatadrah* These two waterfall-lakes have exactly same size .. and so on up to .. they do not overlap each other

**२९९. एवं हेरण्णवते वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव तं जहा—सुवण्णकूलप्पवायद्दहे चेव, रुप्पकूलप्पवायद्दहे चेव।**

२९९. इसी प्रकार हैरण्यवत क्षेत्र मे दो प्रपातद्रह है-स्वर्णकूलाप्रपातद्रह और रूप्यकूलाप्रपातद्रह। वे दोनो क्षेत्र-प्रमाण आदि की दृष्टि से एक-दूसरे के सर्वथा समान है।

**299.** In the same way in Hairanyavat area there are two *prapatadrah* (waterfall-lakes)—Svarnakoola *prapatadrah* and Rupyakoola *prapatadrah*. These two waterfall-lakes have exactly same size and so on up to... they do not overlap each other

**३००. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं एरवए वासे दो पवायद्दहा पण्णत्ता—बहुसमतुल्ला जाव तं जहा—रत्तप्पवायद्दहे चेव, रत्तावईपवायद्दहे चेव।**

३००. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के उत्तर मे ऐरवत क्षेत्र मे दो प्रपातद्रह है-रक्ताप्रपातद्रह और रक्तवतीप्रपातद्रह। वे दोनों क्षेत्र-प्रमाण आदि की दृष्टि से सर्वथा सदृश है।

**300.** In Jambu continent, north of Mandar Mountain, in Airavat area there are two *prapatadrah* (waterfall-lakes)—Rakta *prapatadrah* and Raktavati *prapatadrah* These two waterfall-lakes have exactly same size .. and so on up to... they do not overlap each other

## महानदी–पद MAHANADI-PAD (SEGMENT OF GREAT RIVERS)

**३०१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं भरहे वासे दो महाणईओ पण्णत्ताओ– बहुसमतुल्लाओ जाव तं जहा–गंगा चेव, सिन्धु चेव।**

३०१. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण मे भरत क्षेत्र मे दो महानदियाँ है–गंगा और सिन्धु। वे दोनो क्षेत्र–प्रमाण आदि की दृष्टि से सर्वथा सदृश है।

**301.** In Jambu continent, south of Mandar Mountain, in Bharat area there are two *mahanadis* (great rivers)—Ganga and Sindhu These two rivers have exactly same size and so on up to they do not overlap each other

**३०२. एवं जहा–पवातद्दहा, एवं णईओ भाणियव्वाओ जाव एरवएवासे दो महाणईओ पण्णत्ताओ–बहुसमतुल्लाओ जाव तं जहा–रत्ता चेव, रत्तावती चेव।**

३०२. इसी प्रकार जैसे प्रपातद्रह कहे गये है, उसी प्रकार नदियाँ कहनी चाहिए। यावत् ऐरवत क्षेत्र मे दो महानदियाँ है–रक्ता और रक्तवती। वे दोनो एक–दूसरे के समान है।

**302.** In the same way names of great rivers follow the pattern of aforesaid waterfall-lakes and so on up to in Airavat area there are two great rivers—Rakta and Raktavati These two rivers have exactly same size . and so on up to. they do not overlap each other

**विवेचन**–उक्त ३५ सूत्रो मे जम्बूद्वीप की भौगोलिक स्थिति का सक्षिप्त परिचय दिया है। इनमे आये विशेष शब्दो का अर्थ इस प्रकार है-

**बहुसमतुल्ला**–सर्वथा समान। **अविसेसमणाणत्त**–विशेषता या नानात्व (विविधता) से रहित। **आयाम**–लम्बाई। **विष्कंभ**–चौडाई। **संस्थान**–आकार। **वर्ष**–क्षेत्र। जम्बूद्वीप मे मुख्य सात वर्ष (क्षेत्र) है। **वर्षधर**–क्षेत्र को विभक्त करने वाले पर्वत। इनकी सख्या छह है। **कूट**–शिखर। जम्बूद्वीप मे कुल ३४ कूट है। **वक्षार** (वक्षस्कार)–ये अपने क्षेत्र की मर्यादा बाँधने वाले पर्वत है। हाथी के दाँत की आकृति होने से इन्हे गजदंत गिरि कहते है। इनकी सख्या कुल बीस है। **द्रह (ह्रद)**–जिस जलाशय से महानदियाँ निकलती है। जम्बूद्वीप मे कुल १६ महाद्रह है। **प्रपात**–महानदी पहली बार जिस कुण्ड मे गिरती है। जम्बूद्वीप मे महानदियाँ १४ है। अतः प्रपात कुण्डो की संख्या भी १४ है। सूत्र २९० से २९३ मे आठ तथा सूत्र ३०१–३०२ चार, यो कुल १२ महानदियो का उल्लेख है। जबकि जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, वक्षार ६ में, ६ मेरु पर्वत के दक्षिण मे, ६ उत्तर मे तथा २ महाविदेह क्षेत्र मे; यो १४ महानदियो का उल्लेख है।

**Elaboration**—The aforesaid thirty five aphorisms briefly introduce the geography of Jambu Dveep (Jambu continent). Some technical terms are explained as follows—

*Bahusamtulla*—exactly same *Avisesamanaanatt*—devoid of uniqueness and variations *Aayaam*—length *Vishkambh*—breadth or width. *Samsthan*—shape or structure. *Varsh*—large area of land of continental size Jambu continent has seven *varsh* (areas of continental size) *Varshdhar*—mountains that divide areas of continental size They are six in number *Koot*—peak Jambu continent has thirty four peaks *Vakshaar* (*vakshaskar*)—mountains that mark the boundaries of an area As their shape is like tusks they are also called *gaj-dant giri*. They are twenty in number *Drah* (*hrid*)—large lake, particularly one from which a great river originates Jambu continent has sixteen *mahadrahas* (great lakes) *Prapat*—waterfall from where a great river starts. Jambu continent has fourteen great rivers, thus the number of these waterfalls is also fourteen In aphorisms 290-293 are names of eight great rivers and in aphorisms 301 and 302 four more, making a total of twelve great rivers However in *Jambudveep Prajnapti*, chapter-6 there is a mention of six great rivers south of Meru mountain, six north of that, and two in Mahavideh area, making a total of fourteen great rivers

### कालचक्र–पद KAAL-CHAKRA-PAD (SEGMENT OF TIME CYCLE)

**३०३. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमदूसमाए समाए दो सागरोवम–कोडाकोडीओ काले होत्था। ३०४. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु इमीसे ओसप्पिणीए सुसमदूसमाए समाए दो सागरोवमकोडाकोडीओ काले पण्णत्ते। ३०५. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु आगमिस्साए उस्सप्पिणीए सुसमदूसमाए समाए दो सागरोवमकोडाकोडीओ काले भविस्सति।**

३०३. जम्बूद्वीप द्वीप मे भरत और ऐरवत क्षेत्र मे अतीत (भूतकाल) उत्सर्पिणी के **सुषम–दुषमा** आरे का काल दो कोडा–कोडी सागरोपम था। ३०४. जम्बूद्वीप द्वीप मे भरत और ऐरवत क्षेत्र मे वर्तमान अवसर्पिणी के **सुषम–दुषमा** आरे का काल दो कोडा–कोडी सागरोपम है। ३०५. जम्बूद्वीप द्वीप मे भरत और ऐरवत क्षेत्र मे आगामी **सुषम–दुषमा** आरे का काल दो कोडा–कोडी सागरोपम होगा।

**303.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas the length of *Sukham-dukhama ara* (epoch of more happiness than sorrow) of the past *Utsarpini* (progressive half-cycle of time) was two *koda-kodi Sagaropam* (a metaphoric unit of time) **304.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas the length of *Sukham-dukhama ara* (epoch of more happiness than sorrow) of the current *Avasarpini* (regressive half-cycle of

time) was two *koda-kodi Sagaropam* (a metaphoric unit of time). **305.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas the length of *Sukham-dukhama ara* (epoch of more happiness than sorrow) of the coming *Utsarpini* (progressive half-cycle of time) will be two *koda-kodi Sagaropam* (a metaphoric unit of time).

**३०६. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए मणुया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था, दोण्णि य पलिओवमाइं परमाउं पालइत्था। ३०७. एवमिमीसे ओसप्पिणीए जाव पालइत्था। ३०८. एवमागमेस्साए उस्सप्पिणीए जाव पालयिस्संति।**

३०६. जम्बूद्वीप द्वीप में भरत और ऐरवत क्षेत्र मे अतीत (भूतकाल) उत्सर्पिणी के सुषम–आरे मे मनुष्यों की ऊँचाई दो गव्यूति (गाऊ) की थी और उनकी उत्कृष्ट आयु दो पल्योपम की थी। ३०७. इसी प्रकार जम्बूद्वीप द्वीप मे भरत और ऐरवत क्षेत्र मे वर्तमान अवसर्पिणी के सुषमा नामक आरे मे मनुष्यों की ऊँचाई दो गव्यूति (कोश) की थी और उनकी उत्कृष्ट आयु दो पल्योपम की थी। ३०८. इसी प्रकार यावत् आगामी उत्सर्पिणी के सुषमा नामक आरे मे मनुष्यो की ऊँचाई दो गव्यूति (कोश) और उत्कृष्ट आयु दो पल्योपम की होगी।

**306.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas the height of humans of *Sukhama* ara (epoch of happiness) of the past *Utsarpini* was two *gavyuti* (a unit of two miles) and their maximum life span was two *palyopam* (a metaphoric unit of time) **307.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas the height of humans of *Sukhama ara* (epoch of happiness) of the current Avasarpini was two *gavyuti* (two miles) and their maximum life span was two *palyopam* (a metaphoric unit of time). **308.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas the height of humans of *Sukhama ara* (epoch of happiness) of the coming *Utsarpini* will be two *gavyuti* (two miles) and their maximum life span will be two *palyopam* (a metaphoric unit of time)

### *शलाका–पुरुष–वंश–पद* SHALAKA-PURUSH-VAMSH-PAD (SEGMENT OF LINEAGE OF EPOCH MAKERS)

**३०९. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु 'एगसमये एगजुगे' दो अरहंतवंसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा। ३१०. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो चक्कवट्टिवंसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा। ३११. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो दसारवंसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा।**

३०९. जम्बूद्वीप द्वीप में भरत और ऐरवत क्षेत्र मे एक समय में, एक युग में अरहन्तों के दो वंश उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होगे। ३१०. जम्बूद्वीप द्वीप में भरत और ऐरवत क्षेत्र में एक

समय में, एक युग मे चक्रवर्तियों के दो वंश उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होंगे। ३११. जम्बूद्वीप द्वीप में भरत और ऐरवत क्षेत्र में एक समय मे, एक युग में दो दशार (बलदेव–वासुदेव) वंश उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होंगे।

**309.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas at one time during one era there were, are and will be two lineages of *Arhants*. **310.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas at one time during one era there were, are and will be two lineages of *Chakravartis* **311.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas at one time during one era there were, are and will be two lineages of *Dashars* (*Baladev* and *Vasudev*).

*शलाका–पुरुष–पद* **SHALAKA-PURUSH-PAD (SEGMENT OF EPOCH MAKERS)**

**३१२. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो अरहंता उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा। ३१३. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो चक्कवट्टी उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा। ३१४. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो बलदेवा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा। ३१५. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो वासुदेवा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा।**

३१२. जम्बूद्वीप द्वीप मे भरत और ऐरवत क्षेत्र मे एक समय मे, एक युग मे दो अरहन्त उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होंगे। ३१३. जम्बूद्वीप द्वीप में भरत और ऐरवत क्षेत्र में एक समय मे, एक युग मे दो चक्रवर्ती उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होगे। ३१४. जम्बूद्वीप द्वीप मे भरत और ऐरवत क्षेत्र मे एक समय मे, एक युग मे दो बलदेव उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होंगे। ३१५. जम्बूद्वीप द्वीप मे भरत और ऐरवत क्षेत्र मे एक समय मे, एक युग मे दो वासुदेव उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होगे।

**312.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas at one time during one era there were, are and will be two *Arhants* **313.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas at one time during one era there were, are and will be two *Chakravartis*. **314.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas at one time during one era there were, are and will be two *Baladevas*. **315.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas at one time during one era there were, are and will be two *Vasudevas*

**विवेचन**–सूत्र ३०९ से ३११ का भाव यह है कि जिस समय मे भरत क्षेत्र मे अरिहत, चक्रवर्ती और बलदेव, वासुदेव उत्पन्न होते है, उसी समय ऐरवत क्षेत्र मे भी उत्पन्न होते है। दोनो क्षेत्रो की दृष्टि से दो वंश कहे गये है। भरत क्षेत्र मे तीर्थंकरो के कल्याणकों मे सर्वप्रथम शक्रेन्द्र तथा ऐरवत क्षेत्र मे ईशानेन्द्र सम्मिलित होते है। भरत क्षेत्र मे एक अवसर्पिणी में २४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती, नव बलदेव, नव वासुदेव, नव प्रतिवासुदेव होते हैं।

**Elaboration**—The statement in aphorisms 309 to 311 means that when *Arihant, Chakravarti, Baladev* and *Vasudev* are born in Bharat area at the same time they are also born in Airavat area. Two lineages have been stated in context of these two areas In Bharat area first of all Shakrendra (overlord of gods of first heaven) joins the birth ceremony of *Tirthankars* and in Airavat area the same duty is performed by Ishanendra (overlord of gods of second heaven) In Bharat area 24 *Tirthankars*, 12 *Chakravartis*, 9 *Baladevas*, 9 *Vasudevas* and 9 *Prativasudevas* are born during one *Avasarpini*. (for details about *Shalaka Purush* refer to *Illustrated Kalpasutra*, appendix 5, pp 87-289)

**कालानुभाव-पद KAALANUBHAAVA-PAD (SEGMENT OF TIME-EXPERIENCE)**

**३१६. जंबुद्दीवे दीवे दोसु कुरासु मणुया सया सुसम-सुसममुत्तमं इड्ढिं पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा-देवकुराए चेव, उत्तरकुराए चेव। ३१७. जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया सया सुसममुत्तमं इड्ढिं पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा-हरिवासे चेव, रम्मगवासे चेव। ३१८. जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया सया सुसम-दूसममुत्तममिड्ढिं पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा-हेमवए चेव, हेरण्णवए चेव। ३१९. जंबुद्दीवे दीवे दोसु खेत्तेसु मणुया सया दूसमसुसम-मुत्तममिड्ढिं पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा-पुव्वविदेहे चेव, अवरविदेहे चेव। ३२०. जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा-भरहे चेव, एरवते चेव।**

३१६. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण के देवकुरु और उत्तर मे उत्तरकुरु मे रहने वाले मनुष्य सदा सुषम-सुषमा नामक प्रथम आरे की उत्तम ऋद्धि (सुख आदि) को प्राप्त कर उसका अनुभव करते रहते है। ३१७. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण मे हरिवर्ष और उत्तर मे रम्यकवर्ष मे रहने वाले मनुष्य सदा सुषमा नामक दूसरे आरे की उत्तम ऋद्धि को प्राप्त कर उसका अनुभव करते है। ३१८. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण मे हैमवत क्षेत्र मे और उत्तर के हैरण्यवत क्षेत्र मे रहने वाले मनुष्य सदा सुषम-दुषमा नामक तीसरे आरे की उत्तम ऋद्धि को प्राप्त कर उसका अनुभव करते रहते है। ३१९. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व मे पूर्व विदेह और पश्चिम मे अपर-(पश्चिम) विदेह क्षेत्र मे रहने वाले मनुष्य सदा दुषम-सुषमा नामक चौथे आरे की उत्तम ऋद्धि का अनुभव करते रहते हैं। ३२०. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण मे भरत क्षेत्र और उत्तर मे ऐरवत क्षेत्र मे रहने वाले मनुष्य छहो प्रकार के काल का अनुभव करते हुए जीवन व्यतीत करते है।

**316.** In Jambu continent people living in Dev Kuru and Uttar Kuru, south and north of Mandar Mountain respectively, always beget and experience the excellent attainments (wealth, happiness etc ) prevalent in the first epoch called *Sukham-sukhama* (period of extreme happiness)

**317.** In Jambu continent people living in Harivarsh and Ramyak-varsh, south and north of Mandar Mountain respectively, always beget and experience the excellent attainments (wealth, happiness etc ) prevalent in the second epoch called *Sukhama* (period of happiness). **318.** In Jambu continent people living in Haimavat and Hairanyavat, south and north of Mandar Mountain respectively, always beget and experience the excellent attainments (wealth, happiness etc ) prevalent in the third epoch called *Sukham-dukhama* (period of more happiness than sorrow). **319.** In Jambu continent people living in Purva Videh and Apar (*Pashchim*) Videh, east and west of Mandar Mountain respectively, always beget and experience the excellent attainments (wealth, happiness etc ) prevalent in the fourth epoch called *Dukham-sukhama* (period of less happiness than sorrow) **320.** In Jambu continent people living in Bharat area and Airavat area, south and north of Mandar Mountain respectively, beget and experience conditions prevalent in all the six epochs

### चन्द्र–सूर्य–पद CHANDRA-SURYA-PAD (SEGMENT OF MOON AND SUN)

**३२१. जंबुद्दीवे दीवे—दो चंदा पभासिंसु वा पभासंति वा पभासिस्संति वा। ३२२. दो सूरिआ तविंसु वा तवंति वा तविस्संति वा।**

३२१. जम्बूद्वीप द्वीप मे दो चन्द्र प्रकाश करते थे, प्रकाश करते है और प्रकाश करेगे। ३२२. जम्बूद्वीप द्वीप मे दो सूर्य तपते थे, तपते हैं और तपेंगे। (ये मेरु पर्वत के चारो ओर प्रदक्षिणा करते रहते है)

**321.** In Jambu continent two moons gave, give and will give light **322.** In Jambu continent two suns gave, give and will give heat (They orbit around the Meru Mountain )

### नक्षत्र–पद NAKSHATRA-PAD (SEGMENT OF CONSTELLATIONS

**३२३. दो कित्तियाओ, दो रोहिणीओ, दो मग्गसिराओ, दो अद्दाओ, दो पुणव्वसू, दो पूसा, दो अस्सलेसाओ, दो महाओ, दो पुव्वाफग्गुणीओ, दो उत्तराफग्गुणीओ, दो हत्था, दो चित्ताओ, दो साईओ, दो विसाहाओ, दो अणुराहाओ, दो जेट्ठाओ, दो मूला, दो पुव्वासाढाओ, दो उत्तरासाढाओ, दो अभिईओ, दो सवणा, दो धणिट्ठाओ, दो सयभिसया, दो पुव्वाभद्दवयाओ, दो उत्तराभद्दवयाओ, दो रेवतीओ, दो अस्सिणीओ, दो भरणीओ [ जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा ? ]।**

३२३. जम्बूद्वीप द्वीप में दो कृत्तिका, दो रोहिणी, दो मृगशिरा, दो आर्द्रा, दो पुनर्वसु, दो पुष्य, दो अश्लेषा, दो मघा, दो पूर्वाफाल्गुनी, दो उत्तरफाल्गुनी, दो हस्त, दो चित्र, दो स्वाति, दो विशाखा, दो

अनुराधा, दो ज्येष्ठा, दो मूल, दो पूर्वाषाढी, दो उत्तराषाढा, दो अभिजित, दो श्रवण, दो धनिष्ठा, दो शतभिषा, दो पूर्वाभाद्रपद, दो उत्तराभाद्रपद, दो रेवती, दो अश्विनी, दो भरणी–इन नक्षत्रों ने चन्द्र के साथ योग किया था, योग करते है और योग करेंगे।

**323.** In Jambu continent two Krittika (Eta Tauri or Pleiades), two Rohini (Aldebaran), two Mrigashira (Lambda Orionis), two Ardra (Alpha Orionis), two Punarvasu (Beta Geminorum), two Pushya (Delta Cancri), two Ashlesha (Alpha Hydrae), two Magha (Regulus), two Purva Phalguni (Delta Leonis), two Uttara Phalguni (Beta Leonis), two Hasta (Delta Corvi), two Chitra (Spica Virginis), two Swati (Arcturus), two Vishakha (Alpha Librae), two Anuradha (Delta Scorpii), two Jyeshtha (Antares), two Mula (Lambda Scorpii), two Purva Ashadha (Delta Sagittarii), two Uttara Ashadha (Sigma Sagittarii), two Abhijit (Lyrae), two Shravan (Alpha Aquilae), two Dhanishtha (Belta Delphini), two Shatabhisha (Lambda Aquarii), two Purva Bhadrapad (Alpha Pegasi), two Uttara Bhadrapad (Gama Pegasi), two Revati (Zeta Piscium), two Asvini (Beta Arietis) and two Bharani (35 Arietis), all these constellations did, do and will associate with the moon

### नक्षत्र–देव–पद NAKSHATRA-DEV-PAD (SEGMENT OF GODS OF CONSTELLATIONS)

**३२४. दो अग्गी, दो पयावती, दो सोमा, दो रुद्दा, दो अदिती, दो बहस्सती, दो सप्पा, दो पिती, दो भगा, दो अज्जमा, दो सविता, दो तट्ठा, दो वाऊ, दो इंदग्गी, दो मित्ता, दो इंदा, दो णिरती, दो आऊ, दो विस्सा, दो बम्हा, दो विण्हू, दो वसू, दो वरुणा, दो अया, दो विविद्धी, दो पुस्सा, दो अस्सा, दो यमा।**

३२४. नक्षत्रो के दो–दो देव है, उनके नाम इस प्रकार है–दो अग्नि, दो प्रजापति, दो सोम, दो रुद्र, दो अदिति, दो बृहस्पति, दो सर्प, दो पितृ–देवता, दो भग, दो अर्यमा, दो सविता, दो त्वष्टा, दो वायु, दो इन्द्राग्नि, दो मित्र, दो इन्द्र, दो निऋति, दो अप्, दो विश्वा, दो ब्रह्मा, दो विष्णु, दो वसु, दो वरुण, दो अज, दो विवृद्धि, दो पूषन्, दो अश्व, दो यम।

**324.** There are two gods of each constellation, their names being—two Agni, two Prajapati, two Soma, two Rudra, two Aditi, two Brihaspati, two Sarp, two Pitri, two Bhag, two Aryama, two Savita, two Tvashta, two Vayu, two Indragni, two Mitra, two Indra, two Nirriti, two Ap, two Vishva, two Brahma, two Vishnu, two Vasu, two Varun, two Aja, two Vivriddhi, two Pushan, two Ashva and two Yama

३२५. दो इंगालगा, दो वियालगा, दो लोहितक्खा, दो सणिच्चरा, दो आहुणिया, दो पाहुणिया, दो कणा, दो कणगा, दो कणकणगा, दो कणगवितागणगा, दो कणगसंताणगा, दो सोमा, दो सहिया, दो आसासणा, दो कज्जोवगा, दो कब्बडगा, दो अयकरगा, दो दुंदुभगा, दो संखा, दो संखवण्णा, दो संखवण्णाभा, दो कंसा, दो कंसवण्णा, दो कंसवण्णाभा, दो रुप्पी, दो रुप्पाभासा, दो णीला, दो णीलोभासा, दो भासा, दो भासरासी, दो तिला, दो तिलपुप्फवण्णा, दो दगा, दो दगपंचवण्णा, दो काका, दो कक्कंधा, दो इंदग्गी, दो धूमकेऊ, दो हरी, दो पिंगला, दो बुद्धा, दो सुक्का, दो बहस्सती, दो राहू, दो अगत्थी, दो माणवगा, दो कासा, दो फासा, दो धुरा, दो पमुहा, दो विगडा, दो विसंधी, दो णियल्ला, दो पइल्ला, दो जडियाइलगा, दो अरुणा, दो अग्गिल्ला, दो काला, दो महाकालगा, दो सोत्थिया, दो सोवत्थिया, दो वद्धमाणगा, दो पलंबा, दो णिच्चालोगा, दो णिच्चुज्जोता, दो सयंभा, दो ओभासा, दो सेयंकरा, दो खेमंकरा, दो आभंकरा, दो पभंकरा, दो अपराजिता, दो अरया, दो असोगा, दो विगतसोगा, दो विमला (दो वितता, दो वितत्था), दो विसाला, दो साला, दो सुव्वता, दो अणियट्टी, दो एगजडी, दो दुजडी, दो करकरिगा, दो रायग्गला, दो पुप्फकेतू, दो भावकेऊ [ चारं चरिंसु वा चरंति वा चरिस्संति वा ]।

३२५. जम्बूद्वीप द्वीप मे दो अगारक, दो विकालक, दो लोहिताक्ष, दो शनिश्चर, दो आहुत, दो प्राहुत, दो कन, दो कनक, दो कनकनका, दो कनकवितानक, दो कनकसन्तानक, दो सोम, दो सहित, दो आश्वासन, दो कार्योपग, दो कर्वटक, दो अजकरक, दो दुन्दुभक, दो शख, दो शखवर्ण, दो शखवर्णाभ, दो कस, दो कसवर्ण, दो कसवर्णाभ, दो रुक्मी, दो रुक्माभास, दो नील, दो नीलाभास, दो भस्म, दो भस्मराशि, दो तिल, दो तिलपुष्पवर्ण, दो दक, दो दकपचवर्ण, दो काक, दो कर्कन्ध, दो इन्द्राग्नि, दो धूमकेतु, दो हरि, दो पिगल, दो बुद्ध, दो शुक्र, दो बृहस्पति, दो राहु, दो अगस्ति, दो मानवक, दो काश, दो स्पर्श, दो धुर, दो प्रमुख, दो विकट, दो विसन्धि, दो णियल्ल, दो पइल्ल, दो जडियाइलग, दो अरुण, दो अग्निल, दो काल, दो महाकालक, दो स्वस्तिक, दो सौवस्तिक, दो वर्धमानक, दो प्रलम्ब, दो नित्यालोक, दो नित्योद्योत, दो स्वयप्रभ, दो अवभास, दो श्रेयस्कर, दो क्षेमकर, दो आभकर, दो प्रभकर, दो अपराजित, दो अजरस्, दो अशोक, दो विगतशोक, दो विमल, दो विवत, दो वित्रस्त, दो विशाल, दो शाल, दो सुव्रत, दो अनिवृत्ति, दो एकजटिन्, दो जटिन्, दो करकरिक, दो राजार्गल, दो पुष्पकेतु, दो भावकेतु–इन ८८ महाग्रहो ने चार (सचरण) किया था, चार करते है और चार करेगे। (प्रत्येक चन्द्र के २८ नक्षत्र और प्रत्येक सूर्य के ८८ महाग्रह का परिवार होता है)

**325.** In Jambu continent there are eighty eight great planets (in sets of two) that did, do and will orbit around (each sun). Their names are—two Angarak, two Viakalak, two Lohitaksh, two Shanishchar, two Ahut, two Prahut, two Kan, two Kanak, two Kanakanaka, two Kanakavitanak, two Kanaksantanak, two Soma, two Sahit, two Ashvasan, two Karyopag,

two Karvatak, two Ajakarak, two Dundubhak, two Shankh, two Shankhavarna, two Shankhavarnabh, two Kamsa, two Kamsavarna, two Kamsavarnabh, two Rukmi, two Rukmabhas, two Neel, two Neelabhas, two Bhasm, two Bhasmarashi, two Til, two Tilpushpavarna, two Dak, two Dakpanchavarna, two Kaak, two Karkandh, two Indragni, two Dhoomketu, two Hari, two Pingal, two Buddha, two Shukra, two Brihaspati, two Rahu, two Agasti, two Manavak, two Kaash, two Sharsh, two Dhur, two Pramukh, two Vikat, two Visandhi, two Niyalla, two Pailla, two Jadiyailag, two Arun, two Agnil, two Kaal, two Mahakaalak, two Swastika, two Sauvastika, two Vardhamanak, two Pralamb, two Nityalok, two Nityodyot, two Svayamprabh, two Avabhas, two Shreyaskar, two Kshemankar, two Abhankar, two Prabhankar, two Aparajit, two Ajaras, two Ashoka, two Vigatashoka, two Vimal, two Vivat, two Vitrast, two Vishal, two Shaal, two Suvrat, two Anivritti, two Ekajatin, two Jatin, two Karakarik, two Rajargal, two Pushpaketu and two Bhavaketu (Each moon has a family of 28 constellations and each sun has a family of 88 great planets)

**जम्बूद्वीप–वेदिका–पद JAMBUDVEEP-VEDIKA-PAD**

**(SEGMENT OF PLATEAU OF JAMBU CONTINENT)**

**३२६. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।**

३२६. जम्बूद्वीप द्वीप की वेदिका दो कोश ऊँची कही गई है। (जम्बूद्वीप के चारो ओर परकोटे के आकार की जगती है। उस जगती के ऊपर ठीक मध्य भाग मे एक वेदिका है)

**326.** The *vedika* (central plateau) of Jambu continent is said to be two *Kosh* (four miles) high (There is a parapet-like boundary around Jambu continent at the center of which there is a platform-like plateau )

**लवणसमुद्र–पद LAVAN-SAMUDRA-PAD (SEGMENT OF LAVAN SEA)**

**३२७. लवणे णं समुद्दे दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते। ३२८. लवणस्स णं समुद्दस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।**

३२७. लवणसमुद्र का चक्रवाल विष्कम्भ–(वलयाकार गोलाई का विस्तार) दो लाख योजन है। ३२८. लवणसमुद्र की वेदिका दो कोश ऊँची है।

**327.** The *chakraval vishkambh* (elliptical area) of Lavan sea is two hundred thousand *Yojan* (one *Yojan* is eight miles, thus total area is one million six hundred thousand miles) **328.** The *vedika* (central plateau) of Lavan sea is said to be two *Kosh* (four miles) high.

**३२९. धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर–दाहिणे णं दो वासा पण्णत्ता–बहुसमतुल्ला जाव तं जहा–भरहे चेव, एरवए चेव।**

३२९. धातकीषण्ड द्वीप के पूर्वार्ध मे मन्दर पर्वत के उत्तर–दक्षिण मे दो क्षेत्र है–दक्षिण मे भरत और उत्तर में ऐरवत। वे दोनों क्षेत्र–प्रमाण आदि की दृष्टि से सर्वथा सदृश है यावत् एक–दूसरे का अतिक्रमण नही करते है। (क्षेत्र, वर्षधर पर्वत, कूट, द्रह, नदी आदि सभी जम्बूद्वीप के दुगुने धातकीषण्ड मे तथा उतने ही पुष्करार्ध द्वीप मे होते है)

**329.** In the eastern half of Dhatakikhand continent there are two areas (land masses) north and south of the Mandar mountain—Bharat (in the south) and Airavat (in the north) These two land masses have the same area and so on up to they do not contradict each other. (In Dhatakikhand things like area, *Varshadhar* mountains, peaks, lakes, rivers etc are double in number to that of Jambu continent The same is true for Pushkarardh continent )

**३३०. एवं–जहा जंबुद्दीवे तहा एत्थवि भाणियव्वं जाव दोसु वासेसु मणुया, छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा–भरहे चेव, एरवए चेव, णवरं–कूडसामली चेव, धायइरुक्खे चेव। देवा–गरुले चेव वेणुदेवे, सुदंसणे चेव।**

३३०. इसी प्रकार जैसा (सूत्र २६९ से ३२० तक) जम्बूद्वीप के प्रकरण में वर्णन किया है, वैसा यहाँ पर भी कहना चाहिए यावत् भरत और ऐरवत इन दोनो क्षेत्रो मे मनुष्य छहो ही कालो को अनुभव करते है। विशेष इतना ही है कि यहाँ वृक्ष दो है–कूटशाल्मली और धातकीवृक्ष। कूटशाल्मली वृक्ष पर गरुड़कुमार जाति का वेणुदेव और धातकीवृक्ष पर सुदर्शन देव रहता है।

**330.** In the same way all that has been mentioned about Jambu continent (aphorisms 269-320) should be repeated here (in context of Dhatakikhand continent) up to people living in Bharat area and Airavat area beget and experience conditions prevalent in all the six epochs. The only change is that here the two great trees are Kootshalmali and Dhataki. On Kootshalmali tree resides Venudev, a god belonging to the Garud Kumar class and on Dhataki tree lives Sudarshan Dev.

**३३१. धायइसंडे दीवे पच्चत्थिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर–दाहिणे णं दो वासा पण्णत्ता–बहुसमतुल्ला जाव तं जहा–भरहे चेव, एरवए चेव।**

३३१. धातकीषण्डद्वीप के पश्चिमार्ध में मन्दर पर्वत के उत्तर–दक्षिण में दो क्षेत्र हैं–दक्षिण मे भरत और उत्तर में ऐरवत। वे दोनो क्षेत्र–प्रमाण आदि की दृष्टि से सर्वथा सदृश है।

**331.** In the western half of Dhatakıkhand continent there are two areas (land masses) north and south of the Mandar mountain—Bharat (ın the south) and Aıravat (ın the north) These two land masses have the same area . and so on up to... they do not overlap each other.

**३३२. एवं जहा जंबुद्दीवे तहा एत्थवि भाणियव्वं जाव छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा—भरहे चेव, एरवए चेव, णवरं—कूडसामली चेव, महाधायईरुक्खे चेव। देवा गरुले चेव वेणुदेवे, पियदंसणे चेव।**

३३२. जैसा जम्बूद्वीप के प्रकरण मे वर्णन है, वैसा ही यहाँ पर भी कहना चाहिए, यावत् भरत और ऐरवत इन दोनो क्षेत्रो मे मनुष्य छहो ही कालों का अनुभव करते है। विशेष इतना है कि यहाँ वृक्ष दो हैं—कूटशाल्मली और महाधातकी वृक्ष। कूटशाल्मली पर गरुडकुमार जाति का वेणुदेव और महाधातकी वृक्ष पर प्रियदर्शन देव रहता है।

**332.** In the same way all that has been mentıoned about Jambu contınent should be repeated here (ın context of Dhatakıkhand contınent) up to people lıvıng ın Bharat area and Aıravat area beget and experıence condıtıons prevalent ın all the sıx epochs. The only change ıs that here the two great trees are Kootshalmalı and Mahadhatakı On Kootshalmalı tree lıves Venudev, a god belongıng to the Garud Kumar class and on Mahadhatakı tree lives Prıyadarshan Dev

**३३३. धायइसंडे णं दीवे दो भरहाइं, दो एरवयाइं, दो हेमवयाइं, दो हेरण्णवयाइं, दो हरिवासाइं, दो रम्मगवासाइं, दो पुव्वविदेहाइं, दो अवरविदेहाइं, दो देवकुराओ, दो देवकुरुमहद्दुमा, दो देवकुरुमहद्दुमवासी देवा, दो उत्तरकुराओ, दो उत्तरकुरुमहद्दुमा, दो उत्तरकुरुमहद्दुमवासी देवा। ३३४. दो चुल्लहिमवंता, दो महाहिमवंता, दो णिसढा, दो णीलवंता, दो रुप्पी, दो सिहरी। ३३५. दो सद्दावाती, दो सद्दावातिवासी साती देवा, दो वियडावाती, दो वियडावातिवासी पभासा देवा, दो गंधावाती, दो गंधावातिवासी अरुणा देवा, दो मालवंतपरियागा, दो मालवंतपरियागवासी पउमा देवा।**

३३३. धातकीषण्ड द्वीप मे दो भरत, दो ऐरवत, दो हैमवत, दो हैरण्यवत, दो हरिवर्ष, दो रम्यक्वर्ष, दो पूर्वविदेह, दो अपरविदेह, दो देवकुरु, दो देवकुरुमहाद्रुम, दो देवकुरुमहाद्रुमवासी देव, दो उत्तरकुरु, दो उत्तरुकुरुमहाद्रुम और दो उत्तरुकुरुमहाद्रुमवासी देव है। ३३४. वहाँ दो चुल्लहिमवान्, दो महाहिमवान्, दो निषध, दो नीलवान्, दो रुक्मी और दो शिखरी वर्षधर पर्वत है। ३३५. वहाँ दो शब्दापाती, दो शब्दापातिवासी स्वातिदेव, दो विकटापाती, दो विकटापातिवासी प्रभासदेव, दो गन्धापाती, दो गन्धापातिवासी अरुणदेव, दो माल्यवानपर्याय, दो माल्यवानपर्यायवासी पद्मदेव, ये वृत्त वैताढ्य पर्वत और उन पर रहने वाले देव है।

**333.** In Dhatakikhand continent there are two Bharat (areas), two Airavat (areas), two Haimavat (areas), two Hairanyavat (areas), two Harivarsh (areas), two Ramyakvarsh (areas), two Purva Videh (areas), two Apar Videh (areas), two Dev Kuru (areas), two Dev Kuru-mahadrum, two resident gods of Dev Kuru mahadrum, two Uttar Kuru (areas), two Uttar Kuru mahadrum, two resident gods of Uttar Kuru mahadrum. **334.** Also there are two Chulla Himavan, two Mahahimavan, two Nishadh, two Nilavan, two Rukmi and two Shikhari varshadhar mountains **335.** There are also two Shabdapati mountains, two Swati Devs residing on two Shabdapati mountains, two Vikatapati mountains, two Prabhas Devs residing on two Vikatapati mountains, two Gandhapati mountains, two Arun Devs residing on two Gandhapati mountains, two Malyavanparyaya mountains, two Padma Devs residing on two Malyavanparyaya mountains (these are the details of Vritta Vaitadhya mountains and their resident gods)

**३३६. दो मालवंता, दो चित्तकूडा, दो पम्हकूडा, दो णलिणकूडा, दो एगसेला, दो तिकूडा, दो वेसमणकूडा, दो अंजणा, दो मातंजणा, दो सोमसणा, दो विज्जुप्पभा, दो अंकावती, दो पम्हावती, दो आसीविसा, दो सुहावहा, दो चंदपव्वता, दो सूरपव्वता, दो णागपव्वता, दो देवपव्वता, दो गंधमायणा, दो उसुगारपव्वया, दो चुल्लहिमवंतकूडा, दो वेसमणकूडा, दो महाहिमवंतकूडा, दो वेरुलियकूडा, दो णिसढकूडा, दो रुयगकूडा, दो णीलवंतकूडा, दो उवदंसणकूडा, दो रुप्पिकूडा, दो मणिकंचणकूडा, दो सिहरिकूडा, दो तिगिंछकूडा।**

३३६. धातकीषण्ड द्वीप मे दो माल्यवान्, दो चित्रकूट, दो पद्मकूट, दो नलिनकूट, दो एकशैल, दो त्रिकूट, दो वैश्रमणकूट, दो अंजन, दो माताजन, दो सौमनस, दो विद्युत्प्रभ, दो अकावती, दो पद्मावती, दो आसीविष, दो सुखावह, दो चन्द्रपर्वत, दो सूर्यपर्वत, दो नागपर्वत, दो देवपर्वत, दो गन्धमादन, दो इषुकारपर्वत, दो चुल्लहिमवत्कूट, दो वैश्रमणकूट, दो महाहिमवत्कूट, दो वैडूर्यकूट, दो निषधकूट, दो रुचककूट, दो नीलवत्कूट, दो उपदर्शनकूट, दो रुक्मिकूट, दो मणिकाचनकूट, दो शिखरिकूट, दो तिगिछकूट है।

**336.** In Dhatakikhand continent there are two Malyavan Koots, two Chitra Koots, two Padma Koots, two Nalin Koots, two Ekshail Koots, two Tri Koots, two Vaishraman Koots, two Anjans, two Matanjans, two Saumanases, two Vidyutprabhs, two Ankavatis, two Padmavatis, two Aasivishes, two Sukhavahs, two Chandraparvats, two Suryaparvats, two Naagaparvats, two Devaparvats, two Gandhamadans, two Ishukaraparvats, two Chullahimavat Koots, two Vaishraman Koots,

two Mahahimavat Koots, two Vaidurya Koots, two Nishadh Koots, two Ruchak Koots, two Neelavat Koots, two Upadarshan Koots, two Rukmi Koots, two Manikanchan Koots, two Shikhari Koots, two Tiginchh Koots. (these are the peaks and mountains)

**३३७. दो पउमद्दहा, दो पउमद्दहवासिणीओ सिरीओ देवीओ, दो महापउमद्दहा, दो महापउमद्दहवासिणीओ हिरीओ, एवं जाव दो पुंडरीयद्दहा, दो पोंडरीयद्दहवासिणीओ लच्छीओ देवीओ।**

३३७. धातकीषण्ड द्वीप मे दो पद्मद्रह, दो पद्मद्रहवासिनी श्रीदेवी, दो महापद्मद्रह, दो महापद्मद्रहवासिनी ह्रीदेवी, इसी प्रकार यावत् (दो तिगिछद्रह, दो तिगिंछद्रहवासिनी धृतिदेवी, दो केशरीद्रह, दो केशरीद्रहवासिनी कीर्तिदेवी, दो महापौण्डरीकद्रह, दो महापौण्डरीकद्रहवासिनी बुद्धिदेवी) दो पौण्डरीकद्रह, दो पौण्डरीकद्रहवासिनी लक्ष्मीदेवी है।

**337.** In Dhatakikhand continent there are two Padmadrahas, two Shridevis dwelling on Padmadrahas, two Mahapadmadrahas, two Hridevis dwelling on Mahapadmadraha, . and so on up to (two Tiginchhadrahas, two Dhritidevis dwelling on Tiginchhadrahas, two Kesaridrahas, two Kirtidevis dwelling on Kesaridrahas, two Mahapaundareek-drahas, two Buddhidevis dwelling on Mahapaundareek-draha), two Paundareek-drahas, two Laxmidevis on Paundareek-draha (these are the lakes)

**३३८. दो गंगप्पवायद्दहा जाव दो रत्तावतीपवातद्दहा।**

३३८. धातकीषण्ड द्वीप मे गगाप्रपातद्रह, यावत् (सिन्धुप्रपातद्रह, रोहिताप्रपातद्रह, रोहितांशाप्रपातद्रह, हरितप्रपातद्रह, हरिकान्ताप्रपातद्रह, सीताप्रपातद्रह, सीतोदाप्रपातद्रह, नरकान्ताप्रपातद्रह, नारीकान्ताप्रपातद्रह, सुवर्णकूलाप्रपातद्रह, रुप्यकूलाप्रपातद्रह) रक्ताप्रपातद्रह, रक्तवतीप्रपातद्रह सभी दो-दो हैं।

**338.** In Dhatakikhand continent there are two each of the following *prapat-drahs*—Ganga *prapatadrah*, .and so on up to (Sindhu *prapatadrah*, Rohita *prapatadrah*, Rohitamsha *prapatadrah*, Harit *prapatadrah*, Harikanta *prapatadrah*, Sita *prapatadrah*, Sitoda *prapatadrah*, Narakanta *prapatadrah*, Narikanta *prapatadrah*, Svarnakoola *prapatadrah*, Rupyakoola *prapatadrah*) Rakta *prapatadrah* and Raktavati *prapatadrah* (these are the waterfall-lakes)

**३३९. दो रोहियाओ जाव दो रुप्पकूलाओ, दो गाहवतीओ, दो दहवतीओ, दो पंकवतीओ, दो तत्तजलाओ, दो मत्तजलाओ, दो उम्मत्तजलाओ, दो खीरोयाओ, दो सीहसोताओ, दो अंतोवाहिणीओ, दो उम्मिमालिणीओ, दो फेणमालिणीओ, दो गंभीरमालिणीओ।**

**३३९.** धातकीषण्ड द्वीप में ये सभी नदियाँ दो-दो हैं-रोहिता यावत् (हरिकान्ता, हरीत्, सीतोदा, सीता, नारीकान्ता, नरकान्ता) रुप्यकूला, ग्राहवती, द्रहवती, पंकवती, तप्तजला, मत्तजला, उन्मत्तजला, क्षीरोदा, सिंहस्रोता, अन्तोमालिनी, उर्मिमालिनी, फेनमालिनी और गम्भीरमालिनी।

**339.** In Dhatakikhand continent there are two each of the following rivers—Rohita, ...and so on up to... (Harikanta, Hareet, Sitoda, Sita, Narikanta, Narakanta) Rupyakoola, Grahavati, Drahavati, Pankavati, Taptajala, Mattajala, Unmattajala, Kshiroda, Simhasrota, Antomalini, Urmimalini, Phenamalini and Gambhiramalini.

**३४०. दो कच्छा, दो सुकच्छा, दो महाकच्छा, दो कच्छावती, दो आवत्ता, दो मंगलवत्ता, दो पुक्खला, दो पुक्खलावई, दो वच्छा, दो सुवच्छा, दो महावच्छा, दो वच्छगावती, दो रम्मा, दो रम्मगा, दो रमणिज्जा, दो मंगलावती, दो पम्हा, दो सुपम्हा, दो महपम्हा, दो पम्हगावती, दो संखा, दो णलिया, दो कुमुया, दो सलिलावती, दो वप्पा, दो महावप्पा, दो वप्पगावती, दो वग्गू, दो सुवग्गू, दो गंधिला, दो गंधिलावती।**

**३४०.** धातकीषण्ड द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध-सम्बन्धी विदेहो मे ये विजय क्षेत्र दो-दो है- (१) कच्छ, (२) सुकच्छ, (३) महाकच्छ, (४) कच्छकावती, (५) आवर्त, (६) मगलावर्त, (७) पुष्कल, (८) पुष्कलावती, (९) वत्स, (१०) सुवत्स, (११) महावत्स, (१२) वत्सकावती, (१३) रम्य, (१४) रम्यक, (१५) रमणीय, (१६) मगलावती, (१७) पक्ष्म, (१८) सुपक्ष्म, (१९) महापक्ष्म, (२०) पक्ष्मकावती, (२१) शख, (२२) नलिन, (२३) कुमुद, (२४) सलिलावती, (२५) वप्र, (२६) सुवप्र, (२७) महावप्र, (२८) वप्रकावती, (२९) वल्गु, (३०) सुवल्गु, (३१) गन्धिल, और (३२) गन्धिलावती।

**340.** There are two each of the following Vijaya *kshetras* (state-like subdivisions) in Videh *kshetras* (country-like subdivisions) of eastern and western half of Dhatakikhand continent—(1) Kachchha, (2) Sukachchha, (3) Mahakachchha, (4) Kachchhakavati, (5) Avart, (6) Mangalavart, (7) Pushkal, (8) Pushkalavati, (9) Vatsa, (10) Suvatsa, (11) Mahavatsa, (12) Vatsakavati, (13) Ramya, (14) Ramyak, (15) Ramaniya, (16) Mangalavati, (17) Pakshma, (18) Supakshma, (19) Mahapakshma, (20) Pakshmakavati, (21) Shankha, (22) Nalin, (23) Kumud, (24) Salilavati, (25) Vapra, (26) Suvapra, (27) Mahavapra, (28) Vaprakavati, (29) Valgu, (30) Suvalgu, (31) Gandhil and (32) Gandhilavati.

**३४१. दो खेमाओ, दो खेपुरीओ, दो रिट्ठाओ, दो रिट्ठपुरीओ, दो खग्गीओ, दो मंजुसाओ, दो ओसधीओ, दो पोंडरिगिणीओ, दो सुसीमाओ, दो कुंडलाओ, दो अपराजियाओ, दो**

पभंकराओ, दो अंकावईओ, दो पम्हावईओ, दो सुभाओ, दो रयणसंचयाओ, दो आसपुराओ, दो सीहपुराओ, दो महापुराओ, दो विजयपुराओ, दो अवराजिताओ, दो अवराओ, दो असोयाओ, दो विगयसोगाओ, दो विजयाओ, दो वेजयंतीओ, दो जयंतीओ, दो अपराजियाओ, दो चक्कपुराओ, दो खग्गपुराओ, दो अवज्झाओ, दो अउज्झाओ।

३४१. उपुर्यक्त बत्तीस विजयक्षेत्र में (१) क्षमा, (२) क्षेमपुरी, (३) रिष्टा, (४) रिष्टपुरी, (५) खड्गी, (६) मजूषा, (७) औषधी, (८) पौण्डरीकिणी, (९) सुसीमा, (१०) कुण्डला, (११) अपराजिता, (१२) प्रभंकरा, (१३) अकावती, (१४) पक्ष्मावती, (१५) शुभा, (१६) रत्नसंचया, (१७) अश्वपुरी, (१८) सिंहपुरी, (१९) महापुरी, (२०) विजयपुरी, (२१) अपराजिता, (२२) अपरा, (२३) अशोका, (२४) विगतशोका, (२५) विजया, (२६) वैजयन्ती, (२७) जयन्ती, (२८) अपराजिता, (२९) चक्रपुरी, (३०) खड्गपुरी, (३१) अवध्या, और (३२) अयोध्या विजय क्षेत्र की ये बत्तीस नगरियाँ (राजधानी) दो-दो है।

**341.** In the aforesaid thirty two *Vijaya kshetras* (state-like subdivisions) there are two each of the following capital cities—(1) Kshama, (2) Kshemapuri, (3) Rishta, (4) Rishtapuri, (5) Khadgi, (6) Manjusha, (7) Aushadhi, (8) Paundarikini, (9) Susima, (10) Kundala, (11) Aparajita, (12) Prabhankara, (13) Ankavati, (14) Pakshamavati, (15) Shubha, (16) Ratnasanchaya, (17) Ashvapuri, (18) Simhapuri, (19) Mahapuri, (20) Vijayapuri, (21) Aparajita, (22) Apara, (23) Ashoka, (24) Vigatashoka, (25) Vijaya, (26) Vaijayanti, (27) Jayanti, (28) Aparajita, (29) Chakrapuri, (30) Khadgapuri, (31) Avadhya, and (32) Ayodhya

३४२. दो भद्दसालवणा, दो णंदणवणा, दो सोमणसवणा, दो पंडगवणाइं। ३४३. दो पंडुकंबलसिलाओ, दो अतिपंडुकंबलसिलाओ, दो रत्तकंबलसिलाओ, दो अइरत्तकंबलसिलाओ।

३४२. धातकीषण्ड द्वीप मे मन्दरगिरियो पर भद्रशालवन, नन्दनवन, सौमनसवन और पण्डकवन ये वन दो-दो है। ३४३. उक्त दोनो पण्डकवनो मे पाण्डुकम्बल शिला, अतिपाण्डुकम्बल शिला, रक्तकम्बल शिला और अतिरक्तकम्बल शिला ये भी दो-दो क्रम से चारो दिशाओ मे अवस्थित है।

**342.** In Dhatakikhand continent on Mandar mountains there are two each of the following *vanas* (forests)—Bhadrashalavan, Nandanavan, Saumansavan and Pandakavan **343.** In the said two Pandakavanas there are two sets of four *shilas* (rocks) each in four cardinal directions They are—Pandukambal *shila*, Atipandukambal *shila*, Raktakambal *shila* and Atiraktakambal *shila*

३४४. दो मंदरा, दो मंदरचूलिआओ। ३४५. धायइसंडस्स णं दीवस्स वेदिया दो गाउयाइं उड्ढमुच्चत्तेणं पण्णत्ता। ३४६. कालोदस्स णं समुद्दस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

३४४. धातकीषण्ड द्वीप मे दो मन्दरगिरि है और उनकी दो मन्दरचूलिकाएँ हैं। ३४५. धातकीषण्ड द्वीप की वेदिका दो कोश ऊँची है। ३४६. कालोद समुद्र की वेदिका दो कोश ऊँची है।

**344.** In Dhatakıkhand contınent there are two Mandar mountains and they have two peaks called Mandar-chulika. **345.** The *vedika* (plateau) of Dhatakıkhand continent ıs two *Kosh* (four mıles) hıgh. **346.** The *vedıka* of Kaloda sea is two *Kosh* (four miles) hıgh.

### पुष्करवरद्वीप–पद PUSHKARAVAR DVEEP-PAD (SEGMENT OF PUSHKARAVAR CONTINENT)

**३४७. पुक्खरवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर–दाहिणे णं दो वासा पण्णत्ता बहुसमतुल्ला जाव तं जहा–भरहे चेव, एरवए चेव।**

३४७. अर्धपुष्करद्वीप के पूर्वार्ध मे मन्दर पर्वत के दक्षिण मे भरत और उत्तर मे ऐरवत। ये दो क्षेत्र है। वे दोनो क्षेत्र–प्रमाण आदि की दृष्टि से सर्वथा सदृश है यावत् वे एक–दूसरे का अतिक्रमण नहीं करते है।

**347.** In the eastern half of Ardhapushkaravar contınent there are two areas (land masses) north and south of the Mandar mountain—Bharat (ın the south) and Aıravat (ın the north) These two land masses have the same area and so on up to they do not contradıct each other

**३४८. तहेव जाव दो कुराओ पण्णत्ताओ–देवकुरा चेव, उत्तरकुरा चेव। तत्थ णं दो महतिमहालया महद्दुमा पण्णत्ता, तं जहा–कूडसामली चेव, पउमरुक्खे चेव। देवा–गरुले चेव वेणुदेवे, पउमे चेव जाव छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति।**

३४८. इसी प्रकार (जम्बूद्वीप के प्रकरण मे कहे गये सूत्र २६९–२७१ का सर्व वर्णन यहाँ भी जानना चाहिए) यावत् दो कुरु है। वहाँ दो महातिमहान् महाद्रुम है–कूटशाल्मली और पद्मवृक्ष। उनमे से कूटशाल्मली वृक्ष पर गरुड जाति का वेणुदेव, पद्मवृक्ष पर पद्मदेव रहता है। भरत और ऐरवत इन दोनो क्षेत्रों मे मनुष्य छहो ही कालो का अनुभव करते है।

**348.** In the same way all that has been mentıoned about Jambu continent (aphorısms 269-271) should be repeated here (in context of Ardhapushkaravar contınent).. and so on up to there are two Kurus—Dev Kuru and Uttar Kuru The only change ıs that here the two great trees are Kootshalmali and Padma On Kootshalmalı tree lives Venudev, a god belongıng to the Garud Kumar class and on Padma tree lıves Padma Dev. . and so on up to... people lıvıng ın Bharat area and Aıravat area beget and experience conditions prevalent ın all the six epochs.

**३४९. पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर–दाहिणे णं दो वासा पण्णत्ता। तहेव णाणत्तं–कूडसामली चेव, महापउमरुक्खे चेव। देवा–गरुले चेव वेणुदेवे, पुंडरीए चेव।**

३४९. अर्धपुष्करवरद्वीप के पश्चिमार्ध मे मन्दर पर्वत के दक्षिण में भरत और उत्तर में ऐरवत ये दो क्षेत्र हैं।

[इस प्रकार जम्बूद्वीप, धातकीखण्डद्वीप और आधा पुष्करवरद्वीप–यह ४५ लाख योजन विस्तार वाला मनुष्य क्षेत्र है। इसमे ५ मेरु, ३० वर्षधर, ५ देवकुरु, ५ उत्तरकुरु, ५ हैमवत, ५ हैरण्यवत, ५ हरिवर्ष, ५ रम्यक्वर्ष, ५ भरत, ५ हैरवत और ५ महाविदेह है। सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र, तारे सब इसी मनुष्य क्षेत्र में है।]

**349.** In the western half of Ardhapushkaravar continent there are two areas (land masses) north and south of the Mandar mountain—Bharat (in the south) and Airavat (in the north) Here the two great trees are Kootshalmali and Mahapadma On Kootshalmali tree lives Venudev, a god belonging to the Garud Kumar class and on Mahapadma tree lives Pundareek Dev.

[This total area of human habitation comprising of Jambu, Dhatakikhand and Ardhapushkarvar continents is 45 hundred thousand *Yojans*, one *Yojan* being eight miles This total area contains 5 Meru mountains, 30 Varshadhar mountains, 5 each of Dev Kuru, Uttar Kuru, Haimavat, Hairanyavat, Harivarsh, Ramyakvarsh, Bharat, Airavat and Mahavideh areas. The suns, moons, planets, constellations and stars also belong to this area only]

**३५०. पुक्खरवरदीवड्ढे णं दीवे दो भरहाइं, दो एरवयाइं जाव दो मंदरा, दो मंदरचूलियाओ।**

३५०. अर्धपुष्करवरद्वीप मे भरत, ऐरवत से लेकर यावत् मन्दर और मन्दरचूलिका तक सभी दो–दो है।

**350.** In the western half of Ardhapushkaravar continent there are two each of Bharat, Airavat and so on up to Mandar and Mandar Chulika

**३५१. पुक्खरवरस्स णं दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढमुच्चत्तेणं पण्णत्ता। ३५२. सव्वेसिंपि णं दीवसमुद्दाणं वेदियाओ दो गाउयाइं उड्ढमुच्चत्तेणं पण्णत्ताओ।**

३५१. पुष्करवरद्वीप की वेदिका दो कोश ऊँची है। ३५२. सभी द्वीपो और समुद्रो की वेदिकाएँ दो–दो कोश ऊँची हैं।

**351.** The *vedika* (plateau) of Ardhapushkarvar continent is two *Kosh* (four miles) high **352.** The *vedikas* of all continents and seas are two *Kosh* (four miles) high each

इन्द्र-पद (१० असुरकुमारों के २० इन्द्र) INDRA-PAD (SEGMENT OF OVERLORDS OF GODS)

३५३. दो असुरकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—चमरे चेव, बली चेव। ३५४. दो णागकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—धरणे चेव, भूयाणंदे चेव। ३५५. दो सुवण्णकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—वेणुदेवे चेव, वेणुदाली चेव। ३५६. दो विज्जुकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—हरिच्चेव, हरिस्सहे चेव। ३५७. दो अग्गिकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—अग्गिसिहे चेव, अग्गिमाणवे चेव। ३५८. दो दीवकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—पुण्णे चेव, विसिट्ठे चेव। ३५९. दो उदहिकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—जलकंते चेव, जलप्पभे चेव। ३६०. दो दिसाकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—अमियगति चेव, अमितवाहणे चेव। ३६१. दो वायुकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—वेलंबे चेव, पभंजणे चेव। ३६२. दो थणियकुमारिंदा पण्णत्ता, तं जहा—घोसे चेव, महाघोसे चेव।

३५३. (१) असुरकुमारो के दो इन्द्र है–चमर और बली। ३५४. (२) नागकुमारो के–धरण और भूतानन्द। ३५५. (३) सुपर्णकुमारो के–वेणुदेव और वेणुदाली। ३५६. (४) विद्युत्कुमारो के–हरि और हरिस्सह। ३५७. (५) अग्निकुमारो के–अग्निशिख और अग्निमानव। ३५८. (६) द्वीपकुमारो के–पूर्ण और विशिष्ट। ३५९. (७) उदधिकुमारो के–जलकान्त और जलप्रभ। ३६०. (८) दिशाकुमारो के–अमितगति और अमितवाहन। ३६१. (९) वायुकुमारो के–वेलम्ब और प्रभजन। ३६२. और (१०) स्तनितकुमारो के–घोष और महाघोष। (दस भवनपति देवों के ये बीस इन्द्र है)

**353.** (1) *Asur Kumars* have two *Indras* (overlords)—Chamar and Balı **354.** (2) *Naag Kumars* have two *Indras* (overlords)—Dharan and Bhootanand **355.** (3) *Suparna Kumars* have two *Indras* (overlords)—Venudev and Venudalı **356.** (4) *Vidyut Kumars* have two *Indras* (overlords)—Harı and Harissaha **357.** (5) *Agnı Kumars* have two *Indras* (overlords)—Agnishıkh and Agnımanav **358.** (6) *Dveep Kumars* have two *Indras* (overlords)—Purna and Vıshısht **359.** (7) *Udadhı Kumars* have two *Indras* (overlords)—Jalakant and Jalaprabh **360.** (8) *Dısha Kumars* have two *Indras* (overlords)—Amıt-gatı and Amıt-vahan. **361.** (9) *Vayu Kumars* have two *Indras* (overlords)—Velamb and Prabhanjan. **362.** (10) *Stanıt Kumars* have two *Indras* (overlords)—Ghosh and Mahaghosh (These are the names of the twenty *Indras* of ten abode dwelling gods)

१६ वाण-व्यन्तर देवों के ३२ इन्द्र 32 INDRAS OF 16 VANAVYANTAR DEVS (INTERSTITIAL GODS)

३६३. दो पिसाइंदा पण्णत्ता, तं जहा—काले चेव, महाकाले चेव। ३६४. दो भूइंदा पण्णत्ता, तं जहा—सुरूवे चेव, पडिरूवे चेव। ३६५. दो जक्खिंदा पण्णत्ता, तं जहा—पुण्णभद्दे चेव, माणिभद्दे

चेव। ३६६. दो रक्खसिंदा पण्णत्ता, तं जहा—भीमे चेव, महाभीमे चेव। ३६७. दो किण्णरिंदा पण्णत्ता, तं जहा—किण्णरे चेव, किंपुरिसे चेव। ३६८. दो किंपुरिसिंदा पण्णत्ता, तं जहा—सप्पुरिसे चेव, महापुरिसे चेव। ३६९. दो महोरगिंदा पण्णत्ता, तं जहा—अतिकाए चेव, महाकाए चेव। ३७०. दो गंधव्विंदा पण्णत्ता, तं जहा—गीतरती चेव, गीयजसे चेव।

३६३. (१) पिशाचो के दो इन्द्र है—काल और महाकाल। ३६४. (२) भूतों के—सुरूप और प्रतिरूप। ३६५. (३) यक्षो के—पूर्णभद्र और माणिभद्र। ३६६. (४) राक्षसो के—भीम और महाभीम। ३६७. (५) किन्नरो के—किन्नर और किम्पुरुष। ३६८. (६) किम्पुरुषो के—सत्पुरुष और महापुरुष। ३६९. (७) महोरगो के—अतिकाय और महाकाय। ३७०. (८) गन्धर्वों के—गीतरति और गीतयश।

**363.** (1) *Pishachas* have two *Indras* (overlords)—Kaal and Mahakaal. **364.** (2) *Bhoots* have two *Indras* (overlords)—Suroop and Pratiroop **365.** (3) *Yakshas* have two *Indras* (overlords)—Purnabhadra and Manibhadra. **366.** (4) *Rakshasas* have two *Indras* (overlords)—Bheem and Mahabheem **367.** (5) *Kinnars* have two *Indras* (overlords)—Kinnar and Kimpurush **368.** (6) *Kimpurushas* have two *Indras* (overlords)—Satpurush and Mahapurush **369.** (7) *Mahorags* have two *Indras* (overlords)—Atikaya and Mahakaya **370.** (8) *Gandharvas* have two *Indras* (overlords)—Geetarati and Geetayash

३७१. दो अणपण्णिंदा पण्णत्ता, तं जहा—सण्णिहिए चेव, सामण्णे चेव। ३७२. दो पणपण्णिंदा पण्णत्ता, तं जहा—धाए चेव, विहाए चेव। ३७३. दो इसिवाइंदा पण्णत्ता, तं जहा—इसिच्चेव इसिवालए चेव। ३७४. दो भूतवाइंदा पण्णत्ता, तं जहा—इस्सरे चेव, महिस्सरे चेव। ३७५. दो कंदिंदा पण्णत्ता, तं जहा—सुवच्छे चेव, विसाले चेव। ३७६. दो महाकंदिंदा पण्णत्ता, तं जहा—हस्से चेव, हस्सरती चेव। ३७७. दो कुंभंडिंदा पण्णत्ता, तं जहा—सेए चेव, महासेए चेव। ३७८. दो पतइंदा पण्णत्ता, तं जहा—पत्तए चेव, पतयवई चेव।

३७१. (९) अणपन्नो के दो इन्द्र है—सन्निहित और सामान्य। ३७२. (१०) पणपन्नो के—धाता और विधाता। ३७३. (११) ऋषिवादियो के—ऋषि और ऋषिपालक। ३७४. (१२) भूतवादियो के—ईश्वर और महेश्वर। ३७५. (१३) स्कन्दको के—सुवत्स और विशाल। ३७६. (१४) महास्कन्दको के—हास्य और हास्यरति। ३७७. (१५) कूष्माण्डको के—श्वेत और महाश्वेत। ३७८. (१६) पतगो के दो इन्द्र है—पतग और पतगपति। (ये १६ वाणव्यन्तरो के ३२ इन्द्र हैं)

**371.** (9) *Anapannas* have two *Indras* (overlords)—Sannihit and Samanya **372.** (10) *Panapannas* have two *Indras* (overlords)—Dhata and Vidhata. **373.** (11) *Rishivadis* have two *Indras* (overlords)—Rishi and Rishipalak **374.** (12) *Bhootavadis* have two *Indras* (overlords)—Ishvar and Maheshvar **375.** (13) *Skandaks* have two *Indras* (overlords)—Suvatsa

and Vishal. 376. (14) *Mahaskandaks* have two *Indras* (overlords)—Hasya and Hasyarati 377. (15) *Kushmandaks* have two *Indras* (overlords)—Shvet and Mahashvet 378. (16) *Patags* have two *Indras* (overlords)—Patag and Patagpati. (these are the 32 overlords of 16 interstitial gods)

**३७९. जोइसियाणं देवाणं दो इंदा पण्णत्ता, तं जहा–चंदे चेव, सूरे चेव।**

३७९. ज्योतिष्को के दो इन्द्र हैं–चन्द्र और सूर्य।

**379.** *Jyotishks* (stellar gods) have two *Indras* (overlords)—Chandra and Surya.

*बारह कल्पों के १० इन्द्र* **TEN INDRAS OF TWELVE KALPAS (SPECIFIC DIVINE REALMS)**

**३८०. सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता, तं जहा–सक्के चेव, ईसाणे चेव। ३८१. सणंकुमार–माहिंदेसु कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता, तं जहा–सणंकुमारे चेव, माहिंदे चेव। ३८२. बंभलोग–लंतएसु णं कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता, तं जहा–बंभे चेव, लंतए चेव। ३८३. महासुक्क–सहस्सारेसु णं कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता, तं जहा–महासुक्के चेव, सहस्सारे चेव। ३८४. आणत–पाणत–आरण–अच्चुतेसु णं कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता, तं जहा–पाणते चेव, अच्चुते चेव।**

३८०. (१) सौधर्म और (२) ईशानकल्प के दो इन्द्र है–शक्र और ईशान। ३८१. (३) सनत्कुमार और (४) माहेन्द्रकल्प के दो इन्द्र है–सनत्कुमार और माहेन्द्र। ३८२. (५) ब्रह्मलोक और (६) लान्तककल्प के दो इन्द्र हैं–ब्रह्म और लान्तक। ३८३. (७) महाशुक्र और (८) सहस्रारकल्प के दो इन्द्र है–महाशुक्र और सहस्रार। ३८४. (९) आनत और (१०) प्राणत दोनो कल्पो का एक इन्द्र प्राणत, तथा (११) आरण और (१२) अच्युत दोनो कल्पों का एक इन्द्र अच्युत है।

**380.** (1) *Saudharma* and (2) *Ishan Kalpas* have two *Indras* (overlords)—Shakra and Ishan **381.** (3) *Sanatkumar* and (4) *Mahendra Kalpas* have two *Indras* (overlords)—Sanatkumar and Mahendra. **382.** (5) *Brahmalok* and (6) *Lantak* have two *Indras* (overlords)—Brahma and Lantak. **383.** (7) *Mahashukra* (8) and *Sahasrar* have two *Indras* (overlords)—Mahashukra and Sahasrar **384.** (9) *Anat* and (10) *Pranat* have only one *Indra* (overlord)—Pranat (11) *Aran* and (12) *Achyut* have only one *Indra* (overlord)—Achyut

*विमान–पद* **VIMAN-PAD (SEGMENT OF CELESTIAL VEHICLES)**

**३८५. महासुक्क–सहस्सारेसु णं कप्पेसु विमाणा दुवण्णा पण्णत्ता, तं जहा–हालिद्दा चेव, सुक्किल्ला चेव।**

३८५. महाशुक्र और सहस्रारकल्प मे विमान दो वर्ण के है–हारिद्र–(पीत–) वर्ण और शुक्ल वर्ण।

**385.** The *vimaans* (celestial vehicles) in *Mahashukra* and *Sahasrar Kalp* are of two colours—*haridra* (yellow) and *shukla* (white)

**विवेचन**–(१) सौधर्म और ईशान देवलोक मे पाँच वर्ण के विमान है।

(२) सनत्कुमार और माहेन्द्रकल्प देवलोक मे काला रग छोडकर चार रग के विमान है।

(३) ब्रह्म एवं लान्तककल्प मे काला, नीला छोडकर शेष तीन वर्ण के विमान है।

(४) महाशुक्र और सहस्रारकल्प मे पीत और श्वेत वर्ण के तथा ऊपर के विमान शुक्ल वर्ण के है। *(हिन्दी टीका, पृष्ठ २७३)*

**Elaboration**—Colours of other celestial vehicles are as follows—

(1) The *vimaans* (celestial vehicles) in *Ishan Devlok* are of all the five colours

(2) The *vimaans* (celestial vehicles) in *Sanatkumar* and *Mahendra Kalp* are of four colours leaving aside black

(3) The *vimaans* (celestial vehicles) in *Brahma* and *Lantak Kalp* are of three colours leaving aside black and blue

(4) The *vimaans* (celestial vehicles) in *Mahashukra* and *Sahasrar Kalp* are of two colours yellow and white. Beyond that the *vimaans* are of only white colour *(Hindi Tika, p 273)*

### देव–पद DEV-PAD (SEGMENT OF GODS)

**३८६. गेविज्जगा णं देवा दो रयणीओ उड्ढमुच्चत्तेणं पण्णत्ता।**

३८६ ग्रैवेयक विमानो के देवो की ऊँचाई दो रत्नि (दो हाथ) है।

॥ तृतीय उद्देशक समाप्त ॥

**386.** The height of gods of *Graiveyak Vimaans* is two *Ratnis* (two cubits)

**● END OF THE THIRD LESSON ●**

## चतुर्थ उद्देशक
## FOURTH LESSON

*जीवाजीव-पद* **JIVAJIVA-PAD (SEGMENT OF THE LIVING AND THE NON-LIVING)**

**३८७. समयाति वा आवलियाति वा जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति।**

३८७. समय और आवलिका, ये जीव भी कहे जाते है और अजीव भी कहे जाते है।

**387.** *Samaya* and *Avalıka* are called *jıva* (the living) as well as *ajiva* (the non-living)

**३८८. आणापाणूति वा थोवेति वा जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति। ३८९. खणाति वा लवाति वा जीवाति या आजीवाति या पवुच्चति। एवं-मुहुत्ताति वा अहोरत्ताति वा पक्खाति वा मासाति वा उडूति वा अयणाति वा संवच्छराति वा जुगाति वा वाससयाति वा वाससहस्साइ वा वाससतसहस्साइ वा वासकोडीइ वा पुव्वंगाति वा पुव्वाति वा तुडियंगाति वा तुडियाति वा अडडंगाति वा अडडाति वा अववंगाति वा अववाति वा हूहूअंगाति वा हूहूयाति वा उप्पलंगाति वा उप्पलाति वा पउमंगाति वा पउमाति वा णलिणंगाति वा णलिणाति वा अत्थणिकुरंगाति वा अत्थणिकुराति वा अउअंगाति वा अउआति वा णउअंगाति वा णउआति वा पउतंगाति वा पउताति वा चूलियंगाति वा चूलियाति वा सीसपहेलियंगाति वा सीसपहेलियाति वा पलिओवमाति वा सागरोवमाति वा ओसप्पिणीति वा उस्सप्पिणीति वा-जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति।**

इसी प्रकार-३८८. आनप्राण और स्तोक। ३८९. क्षण और लव, मुहूर्त्त और अहोरात्र, पक्ष और मास, ऋतु और अयन, सवत्सर और युग, वर्षशत और वर्षसहस्र, वर्षशतसहस्र और वर्षकोटि, पूर्वांग और पूर्व, त्रुटिताग और त्रुटित, अडडाग और अडड, अववाग और अवव, हूहूकाग और हूहूक, उत्पलाग और उत्पल, पद्माग और पद्म, नलिनाग और नलिन, अर्थनिकुराग और अर्थनिकुर, अयुताग और अयुत, नयुताग और नयुत, प्रयुतांग और प्रयुत, चूलिकाग और चूलिका, शीर्षप्रहेलिकाग और शीर्षप्रहेलिका, पल्योपम और सागरोपम, अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी, ये सभी जीव भी कहे जाते हैं और अजीव भी कहे जाते है।

In the same way all the following (units of time) are called *jıva* (the living) as well as *ajıva* (the non-living)—

**388.** *Aan-pran* and *Stoka* **389.** *Kshana* and *Lava*, *Muhurt* and *Ahoratra*, *Paksha* and *Maas*, *Rıtu* and *Ayan*, *Samvatsar* and *Yug*, *Varshashat* and *Varshasahasra*, *Varshashatsahasra* and *Varshakotı*, *Purvanga* and *Purva*, *Trutitanga* and *Trutit*, *Adadanga* and

*Adada*, *Avavanga* and *Avava*, *Huhukanga* and *Huhuka*, *Utpalanga* and *Utpala*, *Padmanga* and *Padma*, *Nalınanga* and *Nalına*, *Arthanıkuranga* and *Arthanıkura*, *Ayutanga* and *Ayut*, *Nayutanga* and *Nayuta*, *Prayutanga* and *Prayuta*, *Chulıkanga* and *Chulıka*, *Sheershaprahelıkanga* and *Sheershaprahelıka*, *Palyopam* and *Sagaropam*, *Avasarpını* and *Utsarpını*

**विवेचन**—यद्यपि काल एक स्वतन्त्र द्रव्य है, तथापि वह चेतन जीवों के पर्याय परिवर्तन मे सहकारी है, इस कारण उसे यहाँ पर जीव कहा गया है। इसी प्रकार काल पुद्गलादि द्रव्यो के परिवर्तन मे सहकारी होने से अजीव कहा गया है। काल का सबसे सूक्ष्म अभेद्य और अवयवरहित अश 'समय' है। असख्यात समयो की 'आवलिका' है और सख्यात आवलिका प्रमाण काल 'आन-प्राण' होता है। नीरोग, स्वस्थ व्यक्ति को एक बार श्वास लेने और छोड़ने (निश्वास) मे जो काल लगता है उसे आन-प्राण कहते है। [समय से सागरोपम तक का विस्तृत वर्णन अनुयोगद्वार, भाग १, सूत्र २०२, पृष्ठ २९०-२९२ पर देखना चाहिए।]

**Elaboration**—Although *kaal* (tıme) ıs an ındependant entıty ıt has been ıncluded here ın the classificatıon of *jıva* or 'the beıng' because ıt ıs associated with the modal transformation of sentıent beıngs In the same way it has also been ıncluded ın the classıfication of *ajıva* or 'the non-beıng' because ıt ıs also associated wıth the modal transformatıon of non-beings or matter. The smallest ındıvısıble fractıon of tıme ıs *Samaya* Innumerable *Samayas* make one *Avalıka* and ınnumerable *Avalıkas* make one *Aan-pran* or one ınhalatıon-exhalatıon or a breath The tıme taken by a healthy person ın one ınhalatıon and exhalatıon ıs called *Aan-pran*. [For detaıled descrıptıon of all these unıts from *Samaya* to *Sagaropam* refer to *Illustrated Anuyogadvar Sutra,* Part I, aphorısm 202, pp 290-292]

**३९०. गामाति वा णगराति वा णिगमाति वा रायहाणीति वा खेडाति वा कब्बडाति वा मडंबाति वा दोणमुहाति वा पट्टणाति वा आगराति वा आसमाति वा संबाहाति वा सण्णिवेसाइ वा घोसाइ वा आरामाइ वा उज्जाणाति वा वणाति वा वणसंडाति वा वावीति वा पुक्खरणीति वा सराति वा सरपंतीति वा अगडाति वा तलागाति वा दहाति वा णदीति वा पुढवीति वा उदहीति वा वातखंधाति वा उवासंतराति वा वलयाति वा विग्गहाति वा दीवाति वा समुद्दाति वा वेलाति वा वेइयाति वा दाराति वा तोरणाति वा णेरइयाति वा णेरइयावासाति वा जाव वेमाणियाति वा वेमाणियावासाति वा कप्पाति वा कप्पविमाणावासाति वा वासाति वा वासधरपव्वताति वा कूडाति वा कूडागाराति वा विजयाति वा रायहाणीति वा—जीवाति बा अजीवाति या पवुच्चति।**

३९०. ग्राम, नगर, निगम, राजधानी, खेट, कर्बट, मडंब, द्रोणमुख, पत्तन, आकर, आश्रम, सवाह, सन्निवेश, घोष, आराम, उद्यान, वन, वनषण्ड, वापी, पुष्करिणी, सर, सरपंक्ति, अगड, तालाब, ह्रद, नदी, पृथ्वी, उदधि, वातस्कन्ध, अवकाशान्तर, वलय, विग्रह, द्वीप, समुद्र, वेला, वेदिका, द्वार, तोरण, नारक और नारकावास तथा वैमानिक तक के सभी दण्डक और उनके आवास, कल्प और कल्पविमानावास, वर्ष और वर्षधर पर्वत, कूट और कूटागार, विजय और उनकी राजधानी, ये सभी जीव और अजीव कहे जाते हैं।

**390.** All the following (areas) are called *jiva* (the living) as well as *ajiva* (the non-living)—*gram, nagar, nigam, rajadhani, khet, karbat, madamb, dronmukh, pattan, aakar, ashram, samvah, sannivesh, ghosh, aaraam, udyan, van, vanakhand, vaapi, pushkarini, sar, sarapankti, agad, talab, hrad, nadi, prithvi, udadhi, vaatskandh, avakashantar, valaya, vigraha, dveep, samudra, vela, vedika, dvar, toran, narak, narak-vaas,..* and so on up to. *vaimanik* (all *dandaks* or places of suffering) and their abodes, *kalp* and *kalpaviman-vaas, varsh* and *varshadhar parvat, koot* and *kootagar, vijayaa* and their capitals

**विवेचन**–ग्राम, नगरादि मे रहने वाले जीवो की अपेक्षा उनको जीव कहा गया है और ये ग्राम, नगरादि मिट्टी, पाषाणादि अचेतन पदार्थों से बनाये जाते है, अत उन्हे अजीव भी कहा गया है। सस्कृत टीका अनुसार ग्राम आदि शब्दो का अर्थ इस प्रकार है–

**ग्राम**–किसानो आदि की बस्ती। **नगर**–जहाँ 'कर' नही लगते हो। **निगम**–व्यापार का प्रमुख केन्द्र स्थान। **खेड़ा**–कच्चे परकोटे से घिरी बस्ती। **कुनगर**–ऐसी जीर्ण-शीर्ण पुरानी बस्ती जहाँ विद्याध्ययन व वैद्य आदि की सुविधाएँ सुलभ न हो अथवा **कब्बड** पर्वत के ढलान पर बसी बस्ती।

**मडंब**–जिसके चारो ओर दूर-दूर तक कोई ग्राम एव नगर आदि न हो। **द्रोणमुख**–जहाँ जल एव स्थल दोनो से जाने-आने का मार्ग का हो। **पट्टण (पत्तन)**–**जल पत्तन**–जल का मध्यवर्ती द्वीप। **स्थल पत्तन**–निर्जल भूभाग मे स्थित व्यापार केन्द्र। **आकर**–खानो वाले नगर एव खनिज पदार्थों के व्यापारिक केन्द्र।

**आश्रम**–तीर्थ-स्थान, ऋषि-मुनियो का आवास। **संवाह**–पर्वतो पर बसे ऐसे स्थान जहाँ पर लोग स्वास्थ्य-सवर्धन एवं भ्रमण के लिए जाया करते थे। **सन्निवेश**–व्यापारियो के सार्थवाहो (काफिले) के समूह को ठहरने का स्थान। **घोष**–घोषी या ग्वालों की बस्ती। **आराम**–वृक्षो, लताओं, लता-मण्डपो, कुजों एव सरोवरों आदि से युक्त भ्रमण-स्थल। **उद्यान**–ऐसे कृत्रिम स्थल जहाँ फूलों और फलो के पौधे एवं वृक्ष लगे हों। **वन**–जिस प्राकृतिक स्थान मे एक ही प्रकार के वृक्षों की प्रधानता हो। **वनखण्ड**–विभिन्न प्रकार के वृक्षों एव लताओं आदि से सम्पन्न प्राकृतिक स्थल।

**वापी**–चारों ओर से जल के पास तक पहुँचने के चार कोण वाला निर्मित जलाशय। **पुष्करणी**–कमलो एव कुमुदों से परिपूर्ण विशाल जलाशय। **सर**–ऐसे गहरे जलाशय जिनमे वर्षा-जल और स्रोत-जल दोनो एकत्रित होते हों। **सर-सर-पंक्ति**–अनेक छोटे-बडे जलाशयो की श्रेणी। **अगड**–छोटे-बडे कूप।

तडाग (तडाक)–कृत्रिम पक्के जलाशय। ह्रद (द्रह)–महानदियो को जन्म देने वाली बडी-बडी झीले, प्राकृतिक सरोवर।

वातस्कन्ध–घनवात एव तनुवात आदि वायु के स्कन्ध। अवकाशान्तर–घनवात आदि वातस्कन्धों के नीचे वाला खाली स्थान। वलय–रत्नप्रभा आदि पृथ्वियो के चारो ओर आठ योजन ऊपर की ओर उठा हुआ घनोदधि आदि का वेष्टन। विग्रह–लोकनाडी का घुमाव वाली गति का मध्य भाग। वेला–चन्द्रयोग से समुद्र मे उठने वाली उत्ताल तरगे। वेदिका–जगती पर या अन्य दिव्य स्थानों मे स्थित वैडूर्यमणिमय पद्मवर-वेदिका आदि दिव्य स्थान।

**Elaboration**—Villages, cities and other inhabited places have been classified as *jiva* in context of the humans and other beings living there. These same places have been classified as *ajiva* because they are made up of sand, rocks and other material things The above listed terms have been explained in the *Sanskrit Tika* (commentary) as follows—

***Gram* (village)**—a small settlement of farmers ***Nagar***—city where no tax is levied ***Nigam***—important trade center or commercial city ***Khet* (*kheda*)**—kraal or a settlement with boundary wall made of mud ***Kunagar*** or ***Karbat***—an old settlement devoid of civic facilities or a settlement on the slope of a hill

***Madamb***—an isolated settlement or a borough ***Dronmukh***—a settlement connected with land route as well as water route, a hamlet ***Pattan***—**(*jala*)** harbour or port city, **(*sthala*)** dry harbour. ***Aakar***—settlement near a mine, mineral trading center

***Ashram***—pilgrimage center, hermitage ***Samvah***—settlement in a valley; hill-station ***Sannivesh***—temporary settlement or a camp site for caravans or armies ***Ghosh***—a settlement of cowherds ***Aaraam***—a picnic spot having trees, creepers, green pavilions, flower beds, ponds etc. ***Udyan***—garden with flowering and fruit bearing plants and trees. ***Van***—a forest having one predominant species of trees ***Vanakhand***—a natural lush green area with a variety of trees, creepers etc

***Vaapi***—a square masonry tank with steps. ***Pushkarini***—a large pond filled with lotuses. ***Sar***—deep pool having both underground and rain water sources ***Sarapankti***—a chain of small and large pools and ponds. ***Agad* (*koop*)**—small and large wells ***Tadaag* (*talaab*)**—man made tanks and pools ***Hrad* (*drah*)**—large natural lake from which rivers originate. ***Nadi***—river ***Prithvi***—earth. ***Udadhi***—sea.

***Vaatskandh***—layers of air or air pockets both of dense and rarefied air. ***Avakashantar***—intervening space between two bodies or layers of air.

***Valaya***—the raised periphery around Ratnaprabha and other *Prithvis* (earths) comprising of dense sea and layers of dense and rare air. ***Vigraha***—The curved central portion of *tras-nadi* (the central spine of the *Lok* or occupied space where living beings exist). ***Dveep***—continent. ***Samudra***—seas and oceans ***Vela***—gigantic tidal waves caused by the moon. ***Vedika***—catseye studded divine platforms located on a parapet wall or other divine place. ***Dvar***—gate ***Toran***—ornamental arches

**३९१. छायाति वा आतवाति वा दोसिणाति वा अंधकाराति वा ओमाणाति वा उम्माणाति वा अतियाणगिहाति वा उज्जाणगिहाति वा अवलिंबाति वा सणिप्पवाताति वा—जीवाति वा अजीवाति वा पवुच्चति।**

३९१. छाया और आतप, ज्योत्स्ना और अन्धकार, अवमान और उन्मान, अतियानगृह और उद्यानगृह, अवलिम्ब और सन्निष्प्रवात, ये सभी जीव और अजीव दोनो कहे जाते हैं।

**391.** All the following are called *jiva* (the living) as well as *ajiva* (the non-living)—*chhaaya* and *aatap, jyotsana* and *andhakar, avamaan* and *unmaan, atiyanagriha* and *udyanagriha, avalimb* and *sanishpravat.*

विवेचन—वृक्षादि के द्वारा सूर्य-ताप के निवारण को **छाया**, सूर्य के उष्ण प्रकाश को **आतप**, चन्द्र की शीतल चाँदनी को **ज्योत्स्ना**, प्रकाश के अभाव को **अन्धकार**, हाथ, गज आदि के माप को **अवमान**, तुला आदि से तोलने के मान को **उन्मान**, धर्मशाला, सराय या वाहनों के ठहरने के स्थान को **अतियान-गृह** कहते है। उद्यानो मे निर्मित गृहो (फार्म हाउस) को **उद्यानगृह**। बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ **ओलिंब** अथवा तम्बू शामियाना और धनी व्यक्तियो के विनोद स्थानो पर बने जल के फुव्वारे को **शनैःप्रवात** कहा जाता है। (इनका सदर्भों सहित विस्तृत अर्थ ठाणं-आचार्य महाप्रज्ञ, पृष्ठ १४४ पर देखे)

ये सभी जीवो से सम्बन्ध रखने के कारण जीव और पुद्गलो की पर्याय होने के कारण अजीव कहे जाते है।

**Elaboration**—*Chhaaya*—shade, to get relief from sun *Aatap*—sun; hot sun shine *Jyotsana*—soothing light of the moon *Andhakar*—darkness; absence of light. *Avamaan*—linear measurement such as cubit, yard etc. *Unmaan*—measure of weight *Atiyanagriha*—resting place or place of stay such as boarding house, lodge, guest house etc , also parking area for vehicles *Udyanagriha*—garden house or farm house *Avalimb*—tent. *Sanishpravat*—man made decorative water fountains *(for more details with references see Thanam by Acharya Mahaprajna, p. 144)*

As all these material (the non-being or *ajiva*) things are associated with living beings (the being or *jiva*) they have been classified as *jiva* and *ajiva*.

**३९२. दो रासी पण्णत्ता, तं जहा—जीवरासी चेव, अजीवरासी चेव।**

३९२. राशि दो है–(१) जीवराशि, और (२) अजीवराशि।

**392.** *Rashi* (heap, mass) is of two kinds—(1) *jivarashi* (mass of the living), and (2) *ajivarashi* (mass of non-living or matter)

***कर्म–पद (कर्मबन्ध और कर्मफल भोग)*** **KARMA-PAD**
**(SEGMENT OF KARMA : BONDAGE AND SUFFERING)**

**३९३. दुविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—पेज्जबंधे चेव, दोसबंधे चेव। ३९४. जीवा णं दोहिं ठाणेहिं पावं कम्मं बंधंति, तं जहा—रागेण चेव, दोसेण चेव। ३९५. जीवा णं दोहिं ठाणेहिं पावं कम्मं उदीरेंति, तं जहा—अब्भोवगमियाए चेव वेयणाए, उवक्कमियाए चेव वेयणाए। ३९६. एवं वेदेंति। ३९७. एवं णिज्जरेंति, तं जहा—अब्भोवगमियाए चेव वेयणाए, उवक्कमियाए चेव वेयणाए।**

३९३. बन्ध दो प्रकार का है–प्रेयोबन्ध (राग) और द्वेषबन्ध। ३९४. जीव दो कारणो से पापकर्म का बन्ध करते है–राग से और द्वेष से। ३९५. जीव दो स्थानो से पापकर्म की उदीरणा करते है–आभ्युपगमिकी वेदना से और औपक्रमिकी वेदना से। ३९६. इसी प्रकार जीव दो स्थानो से पापकर्म का वेदन करते है। ३९७. और दो स्थानो से पापकर्म की निर्जरा करते है–आभ्युपगमिकी वेदना से और औपक्रमिकी वेदना से।

**393.** *Bandh* (bondage) is of two kinds—*preyobandh* (bondage caused by attachment) and *dvesh-bandh* (bondage caused by aversion) **394.** There are two causes for a *jiva* (soul) acquiring bondage of *paap-karma* (demeritorious *karma*)—through *raag* (attachment) and through *dvesh* (aversion). **395.** A *jiva* (soul) effects *udirana* (fruition) of *paap-karma* (demeritorious *karma*) in two ways—through *aabhypagamiki vedan* (volitive acceptance of suffering) and *aupakramiki vedan* (natural suffering) **396.** In the same way a *jiva* (soul) effects *vedan* (suffering of fruits) of *paap-karma* (demeritorious *karma*) as also **397.** A *jiva* (soul) effects *nirjara* (shedding) of *paap-karma* (demeritorious *karma*) in two ways—through *aabhyupagamiki vedan* (volitive acceptance of suffering) and *aupakramiki vedan* (natural suffering)

**विवेचना**–कर्म–फल का अनुभव करना वेदन या वेदना है। वह दो प्रकार की होती है–आभ्युपगमिकी और औपक्रमिकी। अभ्युपगम का अर्थ है–स्वय स्वीकार करना। जैसे तपस्या किसी कर्म के उदय से नही होती, किन्तु विधिपूर्वक स्वय स्वीकार की जाती है। तपस्या–काल मे जो वेदना होती है, वह आभ्युपगमिकी वेदना है। उपक्रम का अर्थ है–कर्म की स्वाभाविक क्रम से उदीरणा, शरीर में उत्पन्न होने वाले रोगादि की वेदना औपक्रमिकी वेदना है। दोनो प्रकार की वेदना निर्जरा का कारण है।

**Elaboration**—To experience or suffer the fruits of *karma* is called *vedan* or *vedana*. This is of two kinds—*aabhyupagamiki* and *aupakramiki*. *Abhyupagam* means 'to accept of one's own volition' or volitive acceptance. For example, austerities are not caused by fruition of some *karma* but are formally accepted of one's own volition. The sufferance during observation of austerities is *aabhyupagamiki vedan*. *Upakram* here means fruition of *karma* in natural course. The sufferance due to ailments in the body is *aupakramiki vedan*. Both these sufferances cause *nirjara* (shedding of *karmas*).

### *आत्म–निर्याण–पद (शरीर त्याग की सूक्ष्म गति)* ATMA-NIRYAN-PAD (SEGMENT OF DEPARTURE OF SOUL)

**३९८. दोहिं ठाणेहिं आया सरीरं फुसित्ता णं णिज्जाति, तं जहा–देसेणवि आया सरीरं फुसित्ता णं णिज्जाति, सव्वेणवि आया सरीरगं फुसित्ता णं णिज्जाति। ३९९. एवं फुरित्ताणं। ४००. एवं फुडित्ताणं। ४०१. एवं संवट्टइत्ताणं। ४०२. एवं णिवट्टइत्ता णं णिज्जाति।**

३९८. दो स्थानो से आत्मा शरीर का स्पर्श कर बाहर निकलती है–देश से, कुछ प्रदेशों से या शरीर के किसी भाग से आत्मा शरीर का स्पर्श कर बाहर निकलती है और सर्व प्रदेशों से आत्मा शरीर का स्पर्श कर बाहर निकलती है। ३९९. इसी प्रकार आत्मा शरीर को स्फुरित (स्पन्दित) कर बाहर निकलती है। ४००. इसी प्रकार स्फुटित (शरीर को फोड) कर बाहर निकलती है। ४०१. इसी प्रकार सवर्तित (सकुचित) कर बाहर निकलती है। ४०२. और शरीर को निर्वर्तित (जीव–प्रदेशों से अलग) कर बाहर निकलती है।

**398.** Soul departs after touching the body in two ways—by *desh* (partially) soul departs the body by touching some part of the body with some soul-space-points and by *sarva-pradesh* (fully) . soul departs the body by touching whole body with all its soul-space-points. **399.** In the same way soul departs by vibrating (*sfurit*) the body **400.** In the same way soul departs by bursting (*sfutit*) the body. **401.** In the same way soul departs by squeezing (*samvartit*) the body. **402.** In the same way soul departs by separating the body from soul-space-points (*nirvartit*).

**विवेचन**–मृत्यु के समय जब आत्मा एक शरीर को छोडकर दूसरे शरीर में प्रवेश करता है तब उसकी प्रस्थानगति दो प्रकार की होती है, एक इलिकागति–जैसे लट या कीड़ा अगले स्थान पर पाँव जमाकर फिर पिछला स्थान छोड़ता है। इसी प्रकार शरीर छोडते समय आत्मा के कुछ प्रदेश पहले अगले स्थान का स्पर्श करते हैं, फिर आत्मा के अन्य प्रदेश पूर्व शरीर का त्यागकर सर्वांग रूप में उस शरीर में पहुँचते हैं। दूसरी कन्दुकगति–गेंद की गति, बन्दूक की गोली या धनुष मे छूटे तीर की तरह सभी प्रदेश

एक साथ निकलकर अन्य शरीर मे प्रवेश करते है। मुक्त जीवो के प्रदेशों का निर्गमन सर्वांग से होता है। संसारी जीवों का बहिर्गमन शरीर के किसी एक भाग से होता है।

फुरित्ता–परिस्पन्द, शरीर के किसी एक अग को झकझोरकर बाहर निकलना।

फुडित्ता–शरीर के किसी अंग विशेष को फोडकर बाहर निकलना।

संवट्टइत्ता–जब महाकाय वाले जीव लघुकाय मे जाते समय प्रदेशो का सकुचन करते है।

निब्वट्टइत्ता–एक साथ सर्वांग से निकल जाना।

**Elaboration**—At the tıme of death when a soul leaves one body and enters another ıt moves ın two ways. One way ıs called *ılıkagatı* or the worm-lıke movement where the worm places front legs firmly at the spot ın front and then gradually leaves the place ıt occupıed earlıer In the same way a soul touches the target body with some soul-space-points and then the remaınıng space-poınts leave the earlıer body to shıft fully ınto the new body. Worldly beings abandon theır body through some partıcular part of the body The other way is called *kanduk-gatı* or arrow—like movement where the complete arrow at once leaves for ıts target In the same way all the soul-space-points of a soul at once leave the earlıer body and enter the new body A lıberated soul moves wıth *kanduk-gatı* whereas worldly souls abandon their body through some partıcular part of the body and can use any of these two styles of movement

***Furitta (sfurit)***—to leave body by vıbratıng some specıfic part.

***Fuditta (sfutit)***—to leave body by burstıng some specıfic part

***Samvaddaitta (samvartit)***—When a soul moves from a large body to a smaller body ıt squeezes ıts soul-space-poınts

***Nibbattaitta (nirvartit)***—to move out all the soul-space-poınts at once.

### *क्षय–उपशम–पद* KSHAYA-UPASHAM-PAD

### (SEGMENT OF DESTRUCTION AND PACIFICATION)

४०३. दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, तं जहा–खएण चेव, उवसमेण चेव। ४०४. दोहिं ठाणेहिं आया–केवलं बोधिं बुज्झेज्जा, केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा, केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा, केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, केवलमाभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा, केवलं सुयणाणं उप्पाडेज्जा, केवलं ओहिणाणं उप्पाडेज्जा, केवलं मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा–खएण चेव, उवसमेण चेव।

४०३. दो प्रकार से आत्मा केवलिभाषित धर्म को सुन पाती है–कर्मों के क्षय से और उपशम से। ४०४. इसी प्रकार क्षय से और उपशम से [(१) विशुद्धबोधि का लाभ। (२) सम्पूर्ण ब्रह्मचर्यवास की प्राप्ति। (३) सम्पूर्ण सयम। (४) सम्पूर्ण सवर। (५) विशुद्ध आभिनिबोधिक ज्ञान। (६) विशुद्ध श्रुतज्ञान। (७) विशुद्ध अवधिज्ञान।] यावत् (८) विशुद्ध मन·पर्यव ज्ञान को प्राप्त करती है।

**403.** Two causes make a soul (capable to) listen to the sermon of a *Kevali* (omniscient)—*kshaya* (destruction of *karmas*) and *upasham* (pacification of *karmas*). **404.** In the same way these two causes—destruction of *karmas* and pacification of *karmas*—allow a soul to accomplish following attainments . (1) *Vishuddh bodhi* (sublime enlightenment) (2) *Brahmacharyavaas* (practice of complete continence). (3) *Sampurn Samyam* (complete ascetic-discipline) (4) *Sampurn Samvar* (complete stoppage of inflow of *karmas*) (5) *Vishuddha Abhinibodhik Jnana* or *mati-jnana* (sublime sensory knowledge) (6) *Vishuddha Shrut-jnana* (sublime scriptural knowledge) (7) *Vishuddha Avadhi-jnana* (sublime extrasensory knowledge of the physical dimension; something akin to clairvoyance) (8) *Vishuddha Manahparyav-jnana* (sublime extrasensory perception and knowledge of thought process and thought-forms of other beings, something akin to telepathy)

विवेचन–यहाँ यह ज्ञातव्य है कि उपशम तो केवल मोहकर्म का ही होता है तथा क्षयोपशम चार घातिकर्मों का होता है। उदय को प्राप्त कर्म के क्षय से तथा अनुदय–प्राप्त सत्ता मे रहे कर्म के उपशम से होने वाली विशिष्ट अवस्था को क्षयोपशम कहते है। चार घातिकर्मों का क्षयोपशम होने पर ही आत्मा केवलिभाषित धर्म को सुन पाती है तथा क्रमश मन पर्यवज्ञान को उत्पन्न करती है।

**Elaboration**—It should be noted here that pacification (*upasham*) is done only of *Mohaniya karma* (deluding *karma*) whereas destruction-cum-pacification (*kshayopasham*) is done of all the four vitiating *karmas* (*ghati karmas*). The specific state attained through destruction of *karmas* reaching state of fruition and pacification of *karmas* in bonded state, which are yet to reach the state of fruition, is called the state of destruction-cum-pacification (*kshayopasham*). Only when the destruction-cum-pacification (*kshayopasham*) of four vitiating *karmas* is accomplished, it is possible for a soul to listen to the sermon of the omniscient and then gradually acquire *Manahparyav-jnana*

### औपमिक–काल–पद AUPAMIK-KAAL-PAD (SEGMENT OF METAPHORIC TIME-SCALE)

**४०५. दुविहे अद्धोवमिए पण्णत्ते तं जहा–पलिओवमे चेव, सागरोवमे चेव। से किं तं पलिओवमे ? पलिओवमे–**

जं जोयणविच्छिण्णं, पल्लं एगाहियप्परूढाणं।
होज्ज णिरंतणिचितं, भरितं वालग्गकोडीणं॥१॥

वाससए वाससए, एक्केक्के अवहडंमि जो कालो।
सो कालो बोद्धव्वो, उवमा एगस्स पल्लस्स॥२॥

एएसिं पल्लाणं कोडाकोडी हवेज्ज दस गुणिता।
तं सागरोवमस्स उ, एगस्स भवे परीमाणं॥३॥ संग्रहणी–गाथा

४०५. औपमिक अद्धाकाल दो प्रकार का होता है–(१) पल्योपम, और (२) सागरोपम। पल्योपम किसे कहते है ?

(उदाहरण–) एक योजन विस्तीर्ण गड्ढे को एक दिन से लेकर सात दिन तक के उगे हुए बालाग्रो के खण्डों से ठसाठस भरा जाय। तदनन्तर सौ–सौ वर्षों मे एक–एक बालाग्र खण्ड के निकालने पर जितने काल मे वह गड्ढा खाली होता है, उतने काल को पल्योपम कहा जाता है। दश कोडाकोडी पल्योपमों का एक सागरोपम काल होता है। *(औपमिक काल का विस्तृत वर्णन अनुयोगद्वार, भाग २, पृष्ठ १५७ पर देखे)*

**405.** *Aupamik addhakaal* (metaphoric time) is of two kinds—(1) *Palyopam*, and (2) *Sagaropam*. What is this *Palyopam* ? *Palyopam* is explained as under (a metaphoric explanation)—

Consider a large pit of one *Yojan* (eight miles) volume It is packed with tips of hair grown in one to seven days Once filled, it is emptied by taking out one hair-tip every hundred years The total time taken in emptying the pit in this manner is called one *Palyopam* Ten *koda-kodi* (ten million multiplied by ten million) *Palyopams* make one *Sagaropam*. (for detailed description of metaphoric time scale refer to *Illustrated Anuyogadvar Sutra*, Part II, p 157)

### पाप–पद PAAP-PAD (SEGMENT OF DEMERIT OR SIN)

**४०६. दुविहे कोहे पण्णत्ते, तं जहा–आयपइट्ठिए चेव, परपइट्ठिए चेव। ४०७. दुविहे माणे, दुविहा माया, दुविहे लोभे, दुविहे पेज्जे, दुविहे दोसे, दुविहे कलहे, दुविहे अब्भक्खाणे, दुविहे पेसुण्णे, दुविहे परपरिवाए, दुविहा अरतिरती, दुविहे मायामोसे, दुविहे मिच्छादंसणसल्ले पण्णत्ते, तं जहा–आयपइट्ठिए चेव, परपइट्ठिए चेव। एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं।**

४०६. क्रोध दो प्रकार का है–आत्म–प्रतिष्ठित (स्वय के ही कारण से उत्पन्न) और पर–प्रतिष्ठित। (बाह्य निमित्तो से उत्पन्न)। ४०७. इसी प्रकार मान, माया, लोभ, प्रेयस् (राग), द्वेष, कलह, अभ्याख्यान पैशुन्य, परपरिवाद, अरति–रति, माया–मृषा और मिथ्यादर्शनशल्य; नारको से लेकर वैमानिक पर्यन्त सभी दण्डकों के जीवो मे दो–दो प्रकार के होते है।

**406.** *Krodh* (anger) is of two kinds—*Atma-pratishthit* (self caused) and *par-pratishthit* (caused by outside means). **407.** In the same way in beings belonging to all *dandaks* (places of suffering) from *naaraks* (infernal beings) to *vaimaniks* (celestial vehicle dwelling divine beings) each the following sinful activities is of the said two kinds—*maan* (conceit), *maya* (deceit), *lobha* (greed), *raag* (attachment), *dvesh* (aversion), *kalah* (dispute), *abhyakhyan* (blaming falsely), *paishunya* (inculpating someone), *paraparivad* (slandering), *rati-arati* (inclination towards indiscipline and against discipline) *mayamrisha* (to betray or to tell a lie deceptively) and *mithyadarshan shalya* (the thorn of wrong belief or unrighteousness)

### जीव–पद JIVA-PAD (SEGMENT OF THE BEING)

**४०८. दुविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—तसा चेव, थावरा चेव। ४०९. दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—सिद्धा चेव, असिद्धा चेव। ४१०. दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—सइंदिया चेव, अणिंदिया चेव, सकायच्चेव, अकायच्चेव, सजोगी चेव, अजोगी चेव, सवेया चेव, अवेया चेव, सकसाया चेव, अकसाया चेव, सलेसा चेव, अलेसा चेव, णाणी चेव, अणाणी चेव, सागारोवउत्ता चेव, अणागारोवउत्ता चेव, आहारगा चेव, अणाहारगा चेव, भासगा चेव, अभासगा चेव, चरिमा चेव, अचरिमा चेव, ससरीरी चेव, असरीरी चेव।**

४०८. ससारी जीव दो प्रकार के हैं–त्रस और स्थावर। ४०९. सर्व जीव दो प्रकार के है–सिद्ध और असिद्ध। ४१०. सर्व जीव दो प्रकार के है–सेन्द्रिय (इन्द्रिय–सहित) और अनिन्द्रिय (इन्द्रिय–रहित)। सकाय (शरीर सहित) और अकाय (शरीरमुक्त)। सयोगी और अयोगी, सवेद और अवेद, (नवम गुणस्थान से आगे के सभी जीव अवेदी होते है), सकषाय और अकषाय (जिनका कषाय, उपशान्त या क्षय हो गया है वे वीतराग पुरुष) सलेश्य और अलेश्य (अयोगी केवली तथा सिद्ध आत्मा), ज्ञानी (सम्यक्दृष्टि जीव) और अज्ञानी, साकारोपयोग (ज्ञान) युक्त और अनाकारोपयोग (दर्शनोपयोग) युक्त, आहारक और अनाहारक, भाषक और अभाषक, सशरीरी और अशरीरी।

**408.** *Samsari jivas* (worldly beings) are of two kinds—*tras* (mobile) and *sthavar* (immobile) **409** All beings are of two kinds—*Siddha* (perfected or liberated) and *asiddha* (non-perfected or non-liberated) **410.** All beings are of two kinds—*sendriya* (with sense organs) and *anindriya* (without sense organs), *sakaya* (with a body) and *akaya* (liberated from the body), *sayogi* (with association) and *ayogi* (without association), *saveda* (with sexual desire) and *aveda* (without sexual desire, all beings higher than the ninth *Gunasthan* are *avedi*), *sakashaya* (with passions) and *akashaya* (without passions; the detached beings who have destroyed or pacified their

passions), *saleshya* (with soul-complexion) and *aleshya* (without soul-complexion; *Ayogi Kevalis* and *Siddhas* are *aleshya*), *jnani* (with righteousness) and *ajnani* (without righteousness), *sakaropayoga yukta* (with an inclination towards right knowledge) and *anakaropayoga yukta* (with an inclination towards right perception/faith), *aharak* (having intake) and *anaharak* (having no intake), *bhaashak* (with fully developed faculty of speech) and *abhaashak* (without fully developed faculty of speech) and *sashariri* (with a body) and *ashariri* (liberated from the body)

### मरण-पद MARAN-PAD (SEGMENT OF DEATH)

**४११. दो मरणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णो णिच्चं वण्णियाइं णो णिच्चं कित्तियाइं णो णिच्चं बुइयाइं णो णिच्चं पसत्थाइं णो णिच्चं अब्भणुण्णायाइं भवंति, तं जहा—वलयमरणे चेव, वसट्टमरणे चेव (१)। ४१२. एवं णियाणमरणे चेव तब्भवमरणे चेव (२), गिरिपडणे चेव, तरुपडणे चेव (३), जलप्पवेसे चेव, जलणप्पवेसे चेव (४), विसभक्खणे चेव, सत्थोवाडणे चेव (५)। ४१३. दो मरणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णो णिच्चं वण्णियाइं जाव पसत्थाइं णो णिच्चं अब्भणुण्णायाइं भवंति। कारणे पुण अप्पडिकुट्ठाइं, तं जहा—वेहाणसे चेव, गिद्धपट्ठे चेव (६)। ४१४. दो मरणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं जाव बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चं अब्भणुण्णायाइं भवंति, तं जहा—पाओवगमणे चेव, भत्तपच्चक्खाणे चेव (७)। ४१५. पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—णीहारिमे चेव, अणीहारिमे चेव। णियमं अपडिकम्मे (८)। ४१६. भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—णीहारिमे चेव, अणीहारिमे चेव। णियमं सपडिकम्मे (९)।**

४११. श्रमण निर्ग्रन्थो के लिए ये दो प्रकार के मरण श्रमण भगवान महावीर ने कभी भी वर्णित, कीर्तित, उक्त, प्रशसित और अभ्यनुज्ञात नही किये है—वलन्मरण और वशार्तमरण (१)। ४१२. इसी प्रकार निदानमरण और तद्भवमरण (२), गिरिपतनमरण और तरुपतनमरण (३), जल-प्रवेशमरण और अग्नि-प्रवेशमरण (४), विष-भक्षणमरण और शस्त्रावपाटनमरण (५)। ४१३. किन्तु कारण-विशेष होने पर वैहायस और गिद्धपट्ठ (गृद्धस्पृष्ट) (६) ये दो मरण अभ्यनुज्ञात (स्वीकृत) है। ४१४. श्रमण भगवान महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थो के लिए दो प्रकार के मरण सदा वर्णित, यावत् अभ्यनुज्ञात किये हैं—प्रायोपगमनमरण और भक्तप्रत्याख्यानमरण (७)। ४१५. प्रायोपगमनमरण दो प्रकार का है—निर्हारिम और अनिर्हारिम। प्रायोपगमनमरण नियमत. अप्रतिकर्म होता है (८)। ४१६. भक्तप्रत्याख्यानमरण दो प्रकार का है—निर्हारिम और अनिर्हारिम। भक्तप्रत्याख्यानमरण नियमत· सप्रतिकर्म होता है (९)।

**411.** Shraman Bhagavan Mahavir has never said two kinds of death to be generally mentionable (*varnit*), praiseworthy (*kirtit*), recountable

(*ukta*), noble (*prashast*) and permissible (*abhyanujnat*)—*valan maran* and *vashart maran* (1). **412.** Same is true for—*nidan maran* and *tadbhav maran* (2), *giripatan maran* and *tarupatan maran* (3), *jalapravesh maran* and *agnipravesh maran* (4), *vishabhakshan maran* and *shastravapatan maran* (5). **413.** However under special circumstances two kinds of death are permissible—*vaihayas maran* and *griddhasprisht maran* (6) **414.** Shraman Bhagavan Mahavir has always said two kinds of death to be generally mentionable (*varnit*),. . and so on up to .. and permissible (*abhyanujnat*)—*prayopagaman maran* and *bhaktapratyakhyan maran* (7) **415.** *Prayopagaman maran* is of two kinds—*nirharim* and *anirharim* *Prayopagaman maran* is by rule *apratikarma* (devoid of physical activity) (8). **416.** *Bhaktapratyakhyan maran* is of two kinds—*nirharim* and *anirharim* *Bhaktapratyakhyan maran* is by rule *sapratikarma* (with physical activity) (9)

**विवेचन**—मरण दो प्रकार के होते है—अप्रशस्तमरण और प्रशस्तमरण। कषायावेशपूर्वक जो मरण होता है वह अप्रशस्त है और कषायावेश बिना समभावपूर्वक शरीरत्याग प्रशस्तमरण है। अप्रशस्तमरण के वलन्मरण आदि अनेक प्रकार है। विशेष शब्दो का स्पष्टीकरण इस प्रकार है—

(१) **वलन्मरण**—परिषहो से पीडित या अधीर होने पर संयम छोडकर मरना। **वशार्तमरण**—इन्द्रिय-विषयो के वशीभूत होकर मरना।

(२) **निदानमरण**—ऋद्धि, भोगादि की इच्छा करके मरना। **तद्भवमरण**—वर्तमान भव की ही आयु बाँधकर मरना।

(३) **गिरिपतनमरण**—पर्वत से गिरकर मरना। **तरुपतनमरण**—वृक्ष से गिरकर मरना।

(४) **जल-प्रवेशमरण**—अगाध जल मे प्रवेश कर या नदी मे बहकर मरना। **अग्नि-प्रवेशमरण**—जलती अग्नि मे प्रवेश कर मरना।

(५) **विष-भक्षणमरण**—विष खाकर मरना। **शस्त्रावपाटनमरण**—शस्त्र से घात कर मरना।

(६) **वैहायसमरण**—गले मे फाँसी लगाकर मरना। **गृद्धस्पृष्टमरण**—बृहत्काय वाले हाथी आदि जानवरो के मृत शरीर मे प्रवेश कर मरना। इस प्रकार मरने से गिद्ध आदि पक्षी उस शव के साथ मरने वाले के शरीर को भी नोच-नोचकर खा डालते है।

(७) अपने सामर्थ्य को देखकर अनशनधारी व्यक्ति संस्तारक पर जिस रूप मे पड जाता है, उसे फिर बदलता नही है, किन्तु कटे हुए वृक्ष के समान निश्चेष्ट ही पडा रहता है, इस प्रकार से प्राण-त्याग करने को **प्रायोपगमनमरण** कहते हैं। इसे स्वीकार करने वाला व्यक्ति न स्वयं अपनी वैयावृत्त्य करता है और न दूसरों से ही कराता है। इसी से उसे अप्रतिकर्म अर्थात् शारीरिक प्रतिक्रिया से रहित कहा है। किन्तु **भक्तप्रत्याख्यानमरण** सप्रतिकर्म होता है।

(८) भक्त-पान का क्रम-क्रम से त्याग करते हुए समाधिपूर्वक प्राण-त्याग को भक्तप्रत्याख्यानमरण कहते हैं। इस मरण को अगीकार करने वाला साधक स्वयं उठ-बैठ सकता है, दूसरो के द्वारा उठाये-बैठाये जाने पर उठता-बैठता है और दूसरो के द्वारा की गई वैयावृत्त्य को भी स्वीकार करता है।

(९) मरण-स्थान से मृत शरीर को बाहर ले जाना निर्हारिम है। अनिर्हारिम का अर्थ है-मरण-स्थान पर ही मृत शरीर को छोड देना। जब बस्ती आदि मे समाधिमरण होता है, तब शव को बाहर ले जाकर छोड़ा जा सकता है, या दाह-क्रिया की जा सकती है। किन्तु जब गिरि-कन्दरादि प्रदेश में मरण होता है, तब शव बाहर नही ले जाया जाता।

**Elaboration**—Death is of two kinds—*aprashast maran* (ignoble death) and *prashast maran* (noble death) Death in agitated state of mind due to passions is ignoble death and that in an equanimous state of mind free of passions is noble death. There are various kinds of ignoble death including *valan maran* explained as follows—

(1) ***Valan maran***—to die after abandoning ascetic-discipline in a disturbed state of mind due to pain caused by afflictions ***Vashart maran***—to die after succumbing to indulgence in mundane sensual pleasures

(2) ***Nidan maran***—to die with a desire for wealth and mundane pleasures. ***Tadbhav maran***—to die with a desire to be reborn in the same genus.

(3) ***Giripatan maran***—to die by falling from a hill ***Tarupat maran***—to die by falling from a tree

(4) ***Jalapravesh maran***—to die by drowning in deep water or a river ***Agnipravesh maran***—to die by jumping in flames

(5) ***Vishabhakshan maran***—to die by consuming poison ***Shastravapatan maran***—to die as a consequence of being hit by a weapon

(6) ***Vaihayas maran***—to hang oneself to death ***Griddhasprisht maran***—to die by entering the carcass of a large animal. This results in vultures and other carrion eaters tearing apart and consuming the body of the deceased along with the carcass of the large animal

(7) ***Prayopaga maran*** is when an aspirant after assessing his strength lies down on a bed motionless like an uprooted tree and does not change his posture till death. An ascetic who chooses such death neither cares for his body himself nor does he accept service from others That is why this type of death is called *apratikarma* or devoid of physical activity. ***Bhaktapratyakhyan***, on the other hand, is *sapratikarma* or with physical activity.

मरण के विविध भेद

**चित्र परिचय ७**

**Illustration No. 7**
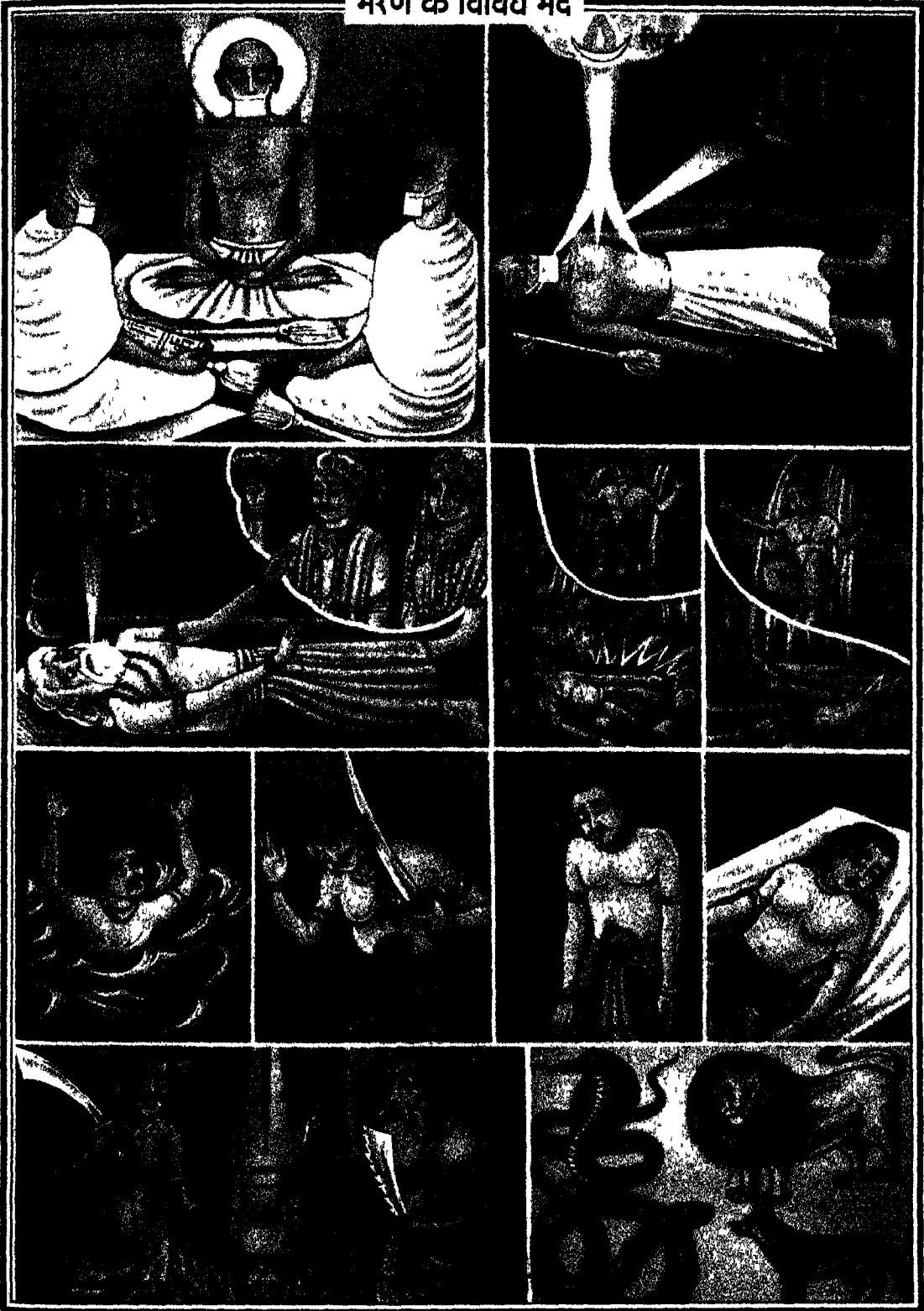
# मरण के विविध भेद

दो प्रकार का मरण प्रशस्त (श्रेष्ठ) होता है -(१) **भक्त प्रत्याख्यान मरण**—साधक पूर्ण समाधि भाव के साथ आहार का त्याग कर स्वाध्याय ध्यान करता हुआ प्राण त्यागता है। इस समय मे अन्य श्रमण शास्त्र सुनाकर तथा विविध प्रकार से परिचर्या कर उसे समाधि पहुँचाते है। (२) **प्रायोपगमन मरण**—कटे वृक्ष की तरह निश्चेष्ट होकर समाधि भाव मे स्थिर हो जाना। इन दोनो मरण वाला आयुष्य पूर्ण कर कल्प विमान मे या सर्व कर्म क्षय कर मोक्ष मे जाता है।

**अप्रशस्त मरण**—यह अनेक प्रकार का है **निदान मरण**—जीवनभर तप करके अन्तिम समय मे स्वर्ग या चक्रवर्ती आदि के भोग-सुखो की कामना रखते हुए मरना। गिरि पतन - तरु पतन, जल प्रवेश, शस्त्र घात, गले मे फाँसी लटकाकर, (वेहायसमरण) विष खाकर इत्यादि आर्त्त- रौद्र ध्यान पूर्वक प्राण त्यागना, अप्रशस्त मरण है। अप्रशस्त मरण वाला मरकर क्रूर तिर्यच गति मे या नरक गति मे उत्पन्न होता है। चित्र मे ऊपर प्रशस्त मरण तथा नीचे अप्रशस्त मरण के विभिन्न प्रकार बताये है।

*स्थान २ सूत्र ४११ ४१६*

## DIFFERENT KINDS OF DEATH

Two kinds of death is noble—**(1) Bhakta-pratykhyan Maran—**The aspirant abandons food with complete serenity and goes into a state of meditation before dying During this period other ascetics recite scriptures and provide care to ensure a peaceful end **(2) Prayopagaman Maran—**the aspirant lies down on a bed motionless like an uprooted tree and commences last meditation These two deaths lead to reincarnation in *Kalp Vimaans* or liberation after shedding all *karmas*

**Ignoble death—**It is of many kinds—*Nidaan maran* is to die with desire for bliss of heaven or pleasures of an emperor as fruits of life spent in austerities Other kinds of ignoble death are- -death in agitated and angry state of mind by falling from a hill or a tree, drowning in water, using a weapon, hanging, consuming poison Ignoble death leads to rebirth as animal or infernal being The illustration shows noble death in the first two frames and ignoble in the rest

*—Sthaan 2, Sutra 411-416*

(8) To gradually abandon food and drinks and embrace death in meditation with equanimity is called ***Bhaktapratyakhyan maran*** An aspirant choosing this kind of death can get up and sit down on his own or with help from others. He is also allowed to accept care and services from others.

(9) To move away the dead body from its place of death is called *nirharim. Anirharim* means to leave the body at the spot of its death When meditational death occurs in some inhabited area like a village the body is taken out to some isolated spot or for cremation but when death occurs at some hilltop, cave or other such forlorn place the body is not moved

***विशेष पदों का अर्थ–***

**वर्णित**–उपादेयरूप से सामान्य वर्णन, समर्थन करना। **कीर्तित**–उपादेय बुद्धि से विशेष कथन करना। **उक्त**–व्यक्त और स्पष्ट वचनों से कहना। **प्रशस्त या प्रशंसित**–श्लाघा या प्रशसा करना। **अभ्यनुज्ञात**–करने की अनुमति, अनुज्ञा या स्वीकृति देना। भगवान ने किसी भी प्रकार के अप्रशस्तमरण की अनुज्ञा नहीं दी है। तथापि सयम एव शील आदि की रक्षा के लिए अपवादस्वरूप वैहायसमरण और गृद्धस्पृष्टमरण की अनुमति दी है।

**TECHNICAL TERMS**

***Varnit*** **(mentionable)**—to generally describe as acceptable. ***Kirtit*** **(praiseworthy)**—to specifically praise as acceptable ***Ukta*** **(recountable)**—to vividly describe as acceptable ***Prashast*** **(noble)**—to praise as noble and worth emulating ***Abhyanujnat*** **(permissible)**—to give instruction or permission to do *Bhagavan* has not given permission for any ignoble kind of death However, as an exception under special circumstances, he has allowed *vaihayas maran* and *griddhasprisht maran* when there is threat to one's honour or ascetic-discipline.

***लोक–पद*** **LOK-PAD (SEGMENT OF OCCUPIED SPACE)**

**४१७. के अयं लोगे ? जीवच्चेव, अजीवच्चेव। ४१८. के अणंता लोगे ? जीवच्चेव, अजीवच्चेव। ४१९. के सासया लोगे ? जीवच्चेव, अजीवच्चेव।**

४१७. यह लोक क्या है ? जीव और अजीव ही लोक है। ४१८. लोक में अनन्त क्या है ? जीव और अजीव ही अनन्त है। ४१९. लोक मे शाश्वत क्या है ? जीव और अजीव ही शाश्वत हैं।

**417.** What is this *lok* (occupied space or universe) ? Only *jiva* (living beings) and *ajiva* (non-living beings) comprise *lok*. **418.** What is *anant* (infinite) in this *lok* ? Only *jiva* (living beings) and *ajiva* (non-living

beings) are *anant* (infinite) in this *lok* 419. What is *shashvat* (eternal) in this *lok* ? Only *jiva* (living beings) and *ajiva* (non-living beings) are *shashvat* (eternal) in this *lok*

**बोधि–पद BODHI-PAD (SEGMENT OF ENLIGHTENMENT)**

**४२०. दुविहा बोधी पण्णत्ता, तं जहा–णाणबोधी चेव, दंसणबोधी चेव।**

**४२१. दुविहा बुद्धा पण्णत्ता, तं जहा–णाणबुद्धा चेव, दंसणबुद्धा चेव।**

४२०. बोधि दो प्रकार की है–ज्ञानबोधि और दर्शनबोधि।

४२१. बुद्ध दो प्रकार के है–ज्ञानबुद्ध और दर्शनबुद्ध।

**420.** *Bodhi* (enlightenment) is of two kinds—*jnana bodhi* (enlightenment related to knowledge) and *darshan bodhi* (enlightenment related to perception/faith)

**421.** *Buddha* (enlightened) is of two kinds—*jnana buddha* (enlightened in terms of knowledge) and *darshan buddha* (enlightened in terms of perception/faith)

**मोह–पद MOHA-PAD (SEGMENT OF ATTACHMENT)**

**४२२. दुविहे मोहे पण्णत्ते, तं जहा–णाणमोहे चेव, दंसणमोहे चेव।**

**४२३. दुविहा मूढा पण्णत्ता, तं जहा–णाणमूढा चेव, दंसणमूढा चेव।**

४२२. मोह दो प्रकार का होता है–ज्ञानमोह और दर्शनमोह।

४२३. मूढ दो प्रकार के होते है–ज्ञानमूढ और दर्शनमूढ।

**422.** *Moha* (attachment) is of two kinds—*jnana moha* (attachment related to wrong knowledge) and *darshan moha* (attachment related to wrong perception/faith)

**423.** *Moodh* (deluded) is of two kinds—*jnana moodh* (deluded due to wrong knowledge) and *darshan moodh* (deluded due to wrong perception/faith)

**कर्म–पद KARMA-PAD (SEGMENT OF KARMA)**

**४२४. णाणावरणिजे कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–देस णाणावरणिज्जे चेव, सव्व णाणावरणिज्जे चेव।**

**४२५. दरिसणावरणिज्जे कम्मे एवं चेव।**

**४२६. वेयणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–सातावेयणिज्जे चेव, असातावेयणिज्जे चेव।**

४२७. मोहणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दंसणमोहणिज्जे चेव, चरित्तमोहणिज्जे चेव।

४२८. आउए कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अद्धाउए चेव, भवाउए चेव।

४२९. णामे कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुभणामे चेव, असुभणामे चेव।

४३०. गोत्ते कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—उच्चागोते चेव, णीयागोते चेव।

४३१. अंतराइए कम्मे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पडुप्पण्णविणासिए चेव, पिहेति य आगामिपहं।

४२४. ज्ञानावरणीय कर्म दो प्रकार का है–देश ज्ञानावरणीय (मति, श्रुत, अवधि, मन पर्यवज्ञान का आवरण) और सर्वज्ञानावरणीय (केवलज्ञानवरण)।

४२५. इसी प्रकार दर्शनावरणीय कर्म दो प्रकार का है।

४२६. वेदनीय कर्म दो प्रकार का है–सातावेदनीय और असातावेदनीय।

४२७. मोहनीय कर्म दो प्रकार का है–दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीय।

४२८. आयुष्यकर्म दो प्रकार का है–अद्धायुष्य (कायस्थिति की आयु) और भवायुष्य (उसी भव की आयु)।

४२९. नामकर्म दो प्रकार का है–शुभनाम और अशुभनाम।

४३०. गोत्रकर्म दो प्रकार का है–उच्चगोत्र और नीचगोत्र।

४३१. अन्तरायकर्म दो प्रकार का है–वर्तमान मे प्राप्त वस्तु का विनाश करने वाला और पिहित–आगामिपथ अर्थात् भविष्य में प्राप्त होने वाले लाभ को रोकने वाला।

**424.** *Jnanavaraniya karma* (knowledge obscuring *karma*) is of two kinds—*desh Jnanavaraniya* (*Mati, Shrut, Avadhi* and *Manahparyav jnana* obscuring *karma*) and *sarva Jnanavaraniya* (*Keval-jnana* obscuring *karma*).

**425.** Same is true for *Darshanavaraniya karma* (perception/faith obscuring *karma*) (*i e* it is also of two kinds)

**426.** *Vedaniya karma* (*karma* that causes feelings of happiness or misery) is of two kinds—*sata vedaniya* (*karma* that causes feelings of pleasure) and *asata vedaniya* (*karma* that causes feelings of pain or grief).

**427.** *Mohaniya karma* (deluding *karma*; *karma* that prevents the true perception of reality and the purity of soul) is of two kinds—*darshan-mohaniya* (perception/faith deluding *karma*) and *charitra-mohaniya* (conduct deluding *karma*).

**428.** *Ayushya karma* (*karma* that defines life span in any specific existence as a living being) is of two kinds—*addhayushya* (life span of a specific body) and *bhavayushya* (life span of a specific birth).

**429.** *Naam karma* (name *karma* or *karma* that determines the destinies and body types) is of two kinds—*shubh-naam* (noble name) and *ashubh naam* (ignoble name)

**430.** *Gotra karma* (*karma* responsible for the higher or lower status of a being) is of two kinds—*uchcha gotra* (higher status) and *neech gotra* (lower status).

**431.** *Antaraya karma* (power obscuring *karma*) is of two kinds—*prattutpanna vinashi* (which destroys the already acquired gains) and *pihitagamipath* (which hinders the future gains).

### मूर्च्छा–पद MURCHCHHA-PAD (SEGMENT OF DELUSION)

**४३२. दुविहा मुच्छा पण्णत्ता, तं जहा–पेज्जवत्तिया चेव, दोसवत्तिया चेव। ४३३. पेज्जवत्तिया मुच्छा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–माया चेव, लोभे चेव। ४३४. दोसवत्तिया मुच्छा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–कोधे चेव, माणे चेव।**

४३२. मूर्च्छा दो प्रकार की है-प्रेयस्प्रत्यया (प्रेम या राग के कारण होने वाली मूर्च्छा) और द्वेषप्रत्यया (द्वेष के कारण होने वाली मूर्च्छा)। ४३३. प्रेयस्प्रत्यया मूर्च्छा दो प्रकार की है-मायारूपा और लोभरूपा। ४३४. द्वेषप्रत्यया मूर्च्छा दो प्रकार की है-क्रोधरूपा और मानरूपा।

**432.** *Murchchha* (delusion) is of two kinds—*preyaspratyaya* (caused by love or attachment) and *dvesh-pratyaya* (caused by aversion) **433.** *Preyaspratyaya* is of two kinds—*maya-rupa* (manifesting as deception) and *lobh-rupa* (manifesting as greed) **434.** *Dvesh-pratyaya* is of two kinds—*krodh-rupa* (manifesting as anger) and *maan-rupa* (manifesting as conceit)

### आराधना–पद ARADHANA-PAD (SEGMENT OF SPIRITUAL PRACTICE)

**४३५. दुविहा आराहणा पण्णत्ता, तं जहा–धम्मियाराहणा चेव, केवलिआराहणा चेव। ४३६. धम्मियाराहणा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–सुयधम्माराहणा चेव, चरित्तधम्माराहणा चेव। ४३७. केवलिआराहणा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–अंतकिरिया चेव, कप्पविमाणोववत्तिया चेव।**

४३५. आराधना दो प्रकार की कही है-धार्मिक आराधना (श्रावक एव साधु जनो के द्वारा की जाने वाली) और कैवलिकी आराधना (केवलियो के द्वारा की जाने वाली)। ४३६. धार्मिकी आराधना दो प्रकार की है-श्रुतधर्म की आराधना और चारित्रधर्म की आराधना। ४३७. कैवलिकी आराधना दो प्रकार की है-अन्तक्रियारूपा और कल्पविमानोपपत्तिका।

**435.** *Aradhana* (spiritual practice) is of two kinds—*dharmik aradhana* (spiritual practice done by *shravak* or layman and *sadhu* or ascetic) and *kaivaliki aradhana* (spiritual practice done by omniscient) **436.** *Dharmik aradhana* is of two kinds—*shrut dharma aradhana* (practice related to scriptures) and *charitra dharma aradhana* (practice related to conduct). **437.** *Kaivaliki aradhana* is of two kinds—*antakriya rupa* (practice related to liberation) and *kalp-vimanopapattika* (practice related to birth in kalp-vimans)

**विवेचन**—यहाँ कैवलिकी आराधना से श्रुतकेवली, अवधिज्ञानी, मनःपर्यवज्ञानी और केवलज्ञानी–इन चारों का ग्रहण किया गया है।

सम्पूर्ण कर्म क्षय करके मुक्त होना अन्तक्रिया आराधना है। ग्रैवेयक, अनुत्तर विमान में उत्पन्न होने योग्य आराधना कल्प विमानोपपत्तिका आराधना है। यह श्रुतकेवली आदि के होती है। *(अभयदेवसूरि कृत वृत्ति, पृष्ठ १६७)*

**Elaboration**—Here *Kaivaliki aradhana* includes the spiritual practice of *Shrut Kevali* (the knower of the complete canon inclusive of the fourteen subtle canon or the *Purvas*), *Avadhi jnani*, *Manahparyav jnani* and *Keval jnani* (those endowed with the specific knowledge).

To get liberated after destroying all *karmas* is *Antakriya aradhana*. *Kalp-vimanopapattika aradhana* is the practice leading to reincarnation in *Graiveyak* and *Anuttar vimaans* (the higher levels of divine dimension). This is done by the aforesaid accomplished sages including *Shrut Kevalis*. *(Vritti by Abhayadev Suri, p 167)*

### *तीर्थंकर–वर्ण–पद* TIRTHANKAR-VARNA-PAD (SEGMENT OF COMPLEXION OF TIRTHANKARS)

**४३८. दो तित्थगरा णीलुप्पलसमा वण्णेणं पण्णत्ता, तं जहा–मुणिसुव्वए चेव, अरिट्ठणेमी चेव। ४३९. दो तित्थगरा पियंगुसमा वण्णेणं पण्णत्ता, तं जहा–मल्ली चेव, पासे चेव। ४४०. दो तित्थगरा पउमगोरा वण्णेणं पण्णत्ता, तं जहा–पउमप्पहे चेव, वासुपुज्जे चेव। ४४१. दो तित्थगरा चंदगोरा वण्णेणं पण्णत्ता, तं जहा–चंदप्पभे चेव, पुप्फदंते चेव।**

४३८. दो तीर्थंकर नीलकमल के समान नीलवर्ण वाले हुए हैं–मुनिसुव्रत (२०) और अरिष्टनेमि। (२२)। ४३९. दो तीर्थंकर प्रियगु (कागनी) के समान श्यामवर्ण वाले हुए है–मल्लिनाथ (१९) और पार्श्वनाथ (२३)। ४४०. दो तीर्थंकर पद्म के समान लाल गौरवर्ण वाले हुए हैं–पद्मप्रभ (६) और वासुपूज्य (१२)। ४४१. दो तीर्थंकर चन्द्र के समान श्वेत गौरवर्ण वाले हुए है–चन्द्रप्रभ (८) और पुष्पदन्त (९)।

438. Two *Tirthankars* had blue complexion like blue lotus—Munisuvrat (20) and Arishtanemi (22) **439.** Two *Tirthankars* had dark complexion like *Priyangu* or *Kangani* (Setaria italica; a herb)—Malli Naath (19) and Parshva Naath (23). **440.** Two *Tirthankars* had bright pinkish complexion like *Padma* lotus—Padmaprabh (6) and Vasupujya (12) **441.** Two *Tirthankars* had white complexion like the moon—Chandraprabh (8) and Pushpadant (Suvidhi Naath) (9).

### पूर्ववस्तु–पद PURVAVASTU-PAD (SEGMENT OF SECTIONS OF PURVAS)

**४४२. सच्चप्पवायपुव्वस्स णं दुवे वत्थू पण्णत्ता।**

४४२. सत्यप्रवाद पूर्व के दो वस्तु (महाधिकार) है।

**442.** *Satyapravad Purva* (one of the fourteen subtle canons) has two *vastus* (sections)

### नक्षत्र–पद NAKSHATRA-PAD (SEGMENT OF CONSTELLATIONS)

**४४३. पुव्वाभद्दवयाणक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते। ४४४. उत्तराभद्दवयाणक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते। ४४५. एवं पुव्वाफग्गुणी। ४४६. एवं उत्तराफग्गुणी।**

४४३. पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के दो तारे है। ४४४. उत्तराभाद्रपद के दो तारे हैं। ४४५. इसी तरह पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के और ४४६. उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के दो तारे है।

**443.** *Purva Bhadrapad* (Alpha Pegasi) constellation has two stars. **444.** *Uttara Bhadrapad* (Gama Pegasi) constellation has two stars **445.** In the same way *Purva Phalguni* (Delta Leonis) constellation has two stars. **446.** *Uttara Phalguni* (Beta Leonis) constellation has two stars

### समुद्र–पद SAMUDRA-PAD (SEGMENT OF SEAS)

**४४७. अंतो णं मणुस्सखेत्तस्स दो समुद्दा पण्णत्ता, तं जहा–लवणे चेव, कालोदे चेव।**

४४७. मनुष्य क्षेत्र के भीतर दो समुद्र है–लवणोद और कालोद। (शेष सभी असंख्य द्वीप–समुद्र मनुष्य लोक से बाहर है)

**447.** In the area inhabited by human beings there are two seas—Lavanod and Kaalod. (All other innumerable continents and seas are beyond the area inhabited by human beings

### चक्रवर्ती–पद CHAKRAVARTI-PAD (SEGMENT OF EMPERORS)

**४४८. दो चक्कवट्टी अपरिचत्तकामभोगा कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए अपइट्ठाणे णरए णेरइयत्ताए उववण्णा, तं जहा–सुभूमे चेव, बंभदत्ते चेव।**

४४८. सुभूम (७) और ब्रह्मदत्त (१२) दो चक्रवर्ती काम-भोगो को छोडे बिना मरणकाल मे मरकर नीचे की ओर सातवी पृथ्वी के अप्रतिष्ठान नरक मे नारकी रूप से उत्पन्न हुए। *(दोनो का विस्तृत कथानक उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन १३ मे देखे)*

**448.** Two *Chakravartis* died without renouncing mundane pleasures at the time of their death and were reborn as *naarakis* (infernal beings) in the Apratishthan *narak* of the seventh infernal land towards Nadir *(for detailed story of these two refer to Illustrated Uttaradhyayan Sutra, chapter 13)*

**देव-पद DEV-PAD (SEGMENT OF GODS)**

**४४९. असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। ४५०. सोहम्मे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ४५१. ईसाणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ४५२. सणंकुमारे कप्पे देवाणं जहण्णेणं दो सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ४५३. माहिंदे कप्पे देवाणं जहण्णेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता।**

**४५४. दोसु कप्पेसु कप्पित्थियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा-सोहम्मे चेव, ईसाणे चेव।**

४४९. असुरकुमारो और उनके चमर एव बलि इन दो असुरेन्द्रो को छोडकर शेष भवनवासी देवो की उत्कृष्ट स्थिति कुछ कम दो पल्योपम की है। ४५०. सौधर्मकल्प मे देवो की उत्कृष्ट स्थिति दो सागरोपम की है। ४५१. ईशानकल्प मे देवो की उत्कृष्ट स्थिति दो सागरोपम से कुछ अधिक है। ४५२. सनत्कुमारकल्प में देवो की जघन्य स्थिति दो सागरोपम है। ४५३. माहेन्द्रकल्प मे देवो की जघन्य स्थिति दो सागरोपम से कुछ अधिक है।

४५४. दो कल्पो मे कल्पस्त्रियाँ (देवियाँ) होती है-सौधर्मकल्प मे और ईशानकल्प मे।

**449.** Besides *Asur Kumars* and their two overlords Chamar and Bali, the maximum life span of all the *Bhavanvasi gods* is a little less than two *Palyopam* (a metaphoric unit of time) **450.** The maximum life span of gods in *Saudharm Kalp* is two *Sagaropam* (a metaphoric unit of time). **451.** The maximum life span of gods in *Ishan Kalp* is a little more than two *Sagaropam* (a metaphoric unit of time) **452.** The minimum life span of gods in *Sanatkumar Kalp* is two *Sagaropam* (a metaphoric unit of time). **453.** The minimum life span of gods in *Mahendra Kalp* is a little more than two *Sagaropam* (a metaphoric unit of time)

**454.** Two *kalps* (a class of divine dimension or heaven) have *kalp-stris* (goddesses)—*Saudharm Kalp* and *Ishan Kalp*

४५५. दोसु कप्पेसु देवा तेउलेस्सा पण्णत्ता, तं जहा—सोहम्मे चेव, ईसाणे चेव। ४५६. दोसु कप्पेसु देवा कायपरियारगा पण्णत्ता, तं जहा—सोहम्मे चेव, ईसाणे चेव। ४५७. दोसु कप्पेसु देवा फासपरियारगा पण्णत्ता, तं जहा—सणंकुमारे चेव, माहिंदे चेव। ४५८. दोसु कप्पेसु देवा रूवपरियारगा पण्णत्ता, तं जहा—बंभलोगे चेव, लंतगे चेव। ४५९. दोसु कप्पेसु देवा सद्दपरियारगा पण्णत्ता, तं जहा—महासुक्के चेव, सहस्सारे चेव। ४६०. दो इंदा मणपरियारगा पण्णत्ता, तं जहा—पाणए चेव, अच्चुए चेव।

४५५. दो कल्पो मे देव तेजोलेश्या वाले होते है—सौधर्मकल्प और ईशानकल्प मे। ४५६. सौधर्म और ईशान—इन दो कल्पो मे देव काय-परिचारक (काय से रति-क्रीडा करने वाले) होते है। ४५७. सनत्कुमारकल्प मे और माहेन्द्रकल्प के देव स्पर्श-परिचारक (देवी के स्पर्शमात्र से कामेच्छा पूर्ति करने वाले) होते है। ४५८. ब्रह्मलोक और लान्तककल्प इन दो कल्पो मे देव रूप-परिचारक (देवी का रूप देखकर कामेच्छा पूर्ति करने वाले) होते हैं। ४५९. महाशुक्रकल्प और सहस्रारकल्प इन दो कल्पो मे देव शब्द-परिचारक (देवी के शब्द सुनकर कामेच्छा पूर्ति करने वाले) होते है। ४६०. दो इन्द्र मन-परिचाक (मन में देवी का स्मरण कर कामेच्छा पूर्ति करने वाले) होते है—प्राणतेन्द्र और अच्युतेन्द्र। *(विस्तृत वर्णन के लिए प्रज्ञापनासूत्र, पद ३४वाँ की मलयगिरि वृत्ति देखे)*

**455.** In two *kalps* gods are endowed with *tejoleshya* (fire power)—*Saudharm Kalp* and *Ishan Kalp* **456.** In two *kalps* gods are *kaya-paricharak* (satisfy their carnal desires with their body)—*Saudharm Kalp* and *Ishan Kalp* **457.** In two *kalps* gods are *sparsh-paricharak* (satisfy their carnal desires by mere touch of the goddess)—*Sanatkumar Kalp* and *Mahendra Kalp* **458.** In two *kalps* gods are *rupa-paricharak* (they satisfy their carnal desires by mere look of the goddess)—*Brahm-lok* and *Lantak Kalp* **459.** In two *kalps* gods are *shabd-paricharak* (satisfy their carnal desires by mere listening to the words of goddess)—*Mahashukra Kalp* and *Sahasrar Kalp* **460.** Two *Indras* (overlords of gods) are *manah-paricharak* (satisfy their carnal desires by mere thought of the goddess)—*Pranatendra* and *Achyutendra* *(for detailed description refer to Malayagiri Vritti of Prajnapana Sutra, verse 34)*

### पाप-कर्म-पद PAAP-KARMA-PAD (SEGMENT OF DEMERITORIOUS KARMAS)

**४६१. जीवाणं दुट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं जहा—तसकायणिव्वत्तिए चेव, थावरकायणिव्वत्तिए चेव।**

४६१. जीवो ने द्विस्थान-निर्वर्तित पुद्‌गलों को पापकर्म के रूप में चय किया है, करते हैं और करेंगे—त्रसकाय-निर्वर्तित (त्रसकाय के रूप मे उपार्जित) और स्थावरकाय-निर्वर्तित (स्थावरकाय के रूप मे उपार्जित)।

**461.** *Jivas* (souls) did, do and will attract (*chaya*) particles in the form of *paap-karma* (demeritorious *karmas*) in two ways—*tras-kaya nirvartit* (earned as mobile beings) and *sthavar-kaya nirvartit* (earned as immobile beings)

**४६२. जीवाणं दुट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए उवचिणिंसु वा उवचिणंति वा उवचिणिस्संति वा, बंधिंसु वा बंधेंति वा बंधिस्संति वा, उदीरिंसु वा उदीरेंति वा उदीरिस्संति वा, वेदेंसु वा वेदेंति वा वेदिस्संति वा, णिज्जरिंसु वा णिज्जरेंति वा णिज्जरिस्संति वा, तं जहा—तसकायणिव्वत्तिए चेव, थावरकायणिव्वत्तिए चेव।**

४६२. जीवों ने द्विस्थान-निर्वर्तित पुद्गलों का पाप-कर्म के रूप में उपचय किया है, करते हैं और करेंगे। उदीरण किया है, करते हैं और करेंगे। वेदन किया है, करते हैं और करेंगे। निर्जरण किया है, करते है और करेंगे, यथा—त्रसकाय-निर्वर्तित और स्थावरकाय-निर्वर्तित।

**462.** *Jivas* (souls) did, do and will augment (*upachaya*), fructify (*udiran*), experience (*vedan*) and shed (*nirjaran*) particles in the form of *paap-karma* (demeritorious *karmas*) in two ways—*tras-kaya nirvartit* (earned as mobile beings) and *sthavar-kaya nirvartit* (earned as immobile beings).

विवेचन—विशेष शब्दों के अर्थ—'चय' आत्म-प्रदेशो द्वारा कर्म परमाणुओं का सग्रह है। उपचय—कर्मों की वृद्धि, बन्ध—आत्मा के साथ कर्मों का बधन। उदीरण—जो कर्म अभी उदय में नही आये हैं, उन्हे उदय में लाना। वेदन—उदय प्राप्त कर्मों का फल भोगना। निर्जरण—फल भोग के पश्चात् कर्मों का आत्मा से पृथक् हो जाना। कर्मों के ये सभी चय-उपचयादि त्रसकाय और स्थावरकाय के जीव ही करते हैं, अत उन्हे त्रसकाय-निर्वर्तित और स्थावरकाय-निर्वर्तित कहा गया है।

**Elaboration**—*Chaya*—acquisition of *karma* particles by soul-space-points. *Upachaya*—augmentation of *karmas*. *Bandh*—bondage of soul with *karmas*. *Udiran*—to cause fruition or precipitation of *karmas* yet to be precipitated. *Vedan*—to suffer consequences of the precipitated *karmas*. *Nirjaran*—separation of soul from *karmas* after suffering the consequences. As all these processes apply only to mobile and immobile beings they are called *tras-kaya nirvartit* (earned as mobile beings) and *sthavar-kaya nirvartit* (earned as immobile beings).

### पुद्गल-पद PUDGAL-PAD (SEGMENT OF MATTER)

**४६३. दुपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता। ४६४. दुपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता। ४६५. एवं जाव दुगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता।**

४६३. द्विप्रदेशी पुद्गल-स्कन्ध अनन्त हैं। ४६४. द्विप्रदेशावगाढ़ (आकाश के दो प्रदेशो में रहे हुए) पुद्गल अनन्त हैं। ४६५. इसी प्रकार दो समय की स्थिति वाले और दो गुण वाले पुद्गल अनन्त कहे हैं, शेष सभी वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श के दो गुण वाले यावत् दो गुण रूक्ष पुद्गल अनन्त-अनन्त कहे है।

॥ चतुर्थ उद्देशक समाप्त ॥

॥ द्वितीय स्थान समाप्त ॥

**463.** There are infinite *Dvipradeshi pudgal-skandhs* (aggregates of two ultimate particles) **464.** There are infinite *Dvipradeshavagadh pudgal-skandhs* (ultimate particles occupying two space-points) **465.** In the same way there are infinite *pudgal-skandhs* (ultimate particles) with two units of each attribute from stability of two *Samayas*, .. and so on up to... attribute of (appearance, smell, taste and touch) (*ruksh sparsh*) rough touch

**● END OF THE FOURTH LESSON ●**

**● END OF PLACE NUMBER TWO ●**

# तृतीय स्थान

*अध्ययन सार*

- तृतीय स्थान में तीन संख्या से सम्बन्धित विविध प्रकार के विषयो का सकलन है। इसमे अनेक विषय समाहित है, जैसे–अध्यात्म, तत्त्वज्ञान, स्वर्ग–नरक, पुद्गल, श्रमणाचार, श्रावक के मनोरथ, नैतिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक एव मनोवैज्ञानिक आदि विविध विषयो का बहुत रोचक और मननीय सकलन है।
- प्रकृति सम्बन्धी प्राचीन लोक धारणाओ का भी इसमे कथन है, जैसे–अल्पवृष्टि महावृष्टि के तीन–तीन कारण। त्रिवर्ग में धर्म, अर्थ एव काम, साम–दण्ड–भेद के रूप में राजनीति की चर्चा है। मनोविज्ञान सम्बन्धी विषयो में मानव की प्रकृति, स्वभाव की तरतमता आदि का रोचक वर्णन भी है, जैसे तीन प्रकार के मनुष्य होते है–सुमनस्क (अच्छे मन वाले), दुर्मनस्क (बुरे मन वाले), तटस्थ (सूत्र १८८)।
- कुछ लोग देकर सुख का अनुभव करते है, जैसे–उदार। कुछ दान देकर दु ख का अनुभव करते है (कजूस) और कुछ दोनों मे (उपेक्षावृत्ति वाले) रहते है (सूत्र २३७)। कुछ लोग भोजन करके सुख का अनुभव करते है (सात्यिक मित आहारी), कुछ खाकर दु ख का अनुभव करते है (स्वादवश अहितकर अधिक भोजन करने वाले), कुछ खाकर भी तटस्थ रहते है (साधक)।
- कही–कही तो धर्म, राजनीति और इतिहास के निचोड रूप बडे गम्भीर सूत्र है, जैसे–कुछ पुरुष युद्ध करने के बाद सुख का अनुभव करते है (राज्यलोभी विजयी राजा)। कुछ पुरुष युद्ध करने के बाद दु ख (पश्चात्ताप) का अनुभव करते है, जैसे–कलिग विजय के बाद अशोक या युद्ध में पराजित होने वाले। कुछ युद्ध के बाद न सुख और न ही दु.ख का अनुभव करते है (वैतनिक सैनिको की तरह)। (सूत्र २६७)
- इसी प्रकार पशु–पक्षी, प्रकृति, भिक्षु–धर्म आदि सैकडो विषयो की सुन्दर विविध त्रिभगियो का सग्रह इस तृतीय स्थान मे हुआ है। तृतीय स्थान के चार उद्देशक है।

## THIRD STHAAN

### INTRODUCTION

- In the Third *Sthaan* or Place Number Three there is a compilation of various topics related to number three. It contains interesting and thought provoking information on numerous subjects such as—spiritualism, metaphysics, heaven and hell, matter, ascetic conduct, desires of a layman, ethics, literature, science and psychology.
- This section also contains ancient beliefs related to nature. For example—three causes each of low and high rainfall Politics has been discussed in the form of triads of *dharma-arth-kaam* (religion-economics-sex) and *saam-dand-bhed* (conciliation-punishment-guile) In the topics related to psychology there is interesting description of human nature, attitude and vagaries, for example there are three types of humans—*sumanask* (good-natured), *durmanask* (bad-natured) and *tatasth* (impartial) (aphorism 188)
- Some people are happy to give namely the charitable, some are unhappy to give viz the stingy and some avoid both, the apathetic (aphorism 237) Some people experience happiness in eating (those who eat nutritious food and avoid over eating), some experience misery in eating (those who eat whatever comes their way just to satiate their taste buds) and some remain impartial (the spiritualists)
- There are some profound aphorisms with apt comments on religion, politics and history An example is—some persons are happy after a war (a king with territorial ambitions), some people are sad (repentant) after a war (like a loser in war or Emperor Ashoka after the Kalinga war) and some are neither happy nor sad (like a paid soldier or mercenary) (aphorism 267)
- This way this third place has a collection of beautiful and varied triads on hundreds of topics including animals, birds, nature, mendicants, religion etc This third place has four lessons.

# तृतीय स्थान
# THIRD STHAAN (Place Number Three)

## प्रथम उद्देशक FIRST LESSON

### *इन्द्र–पद* INDRA-PAD (SEGMENT OF OVERLORDS)

**१. तओ इंदा पण्णत्ता, तं जहा–णामिंदे, ठवणिंदे, दव्विंदे। २. तओ इंदा पण्णत्ता, तं जहा–णाणिंदे, दंसणिंदे, चरित्तिंदे। ३. तओ इंदा पण्णत्ता, तं जहा–देविंदे, असुरिंदे, मणुस्सिंदे।**

१. इन्द्र तीन प्रकार के होते है–(१) नाम इन्द्र (केवल नाम से इन्द्र), (२) स्थापना इन्द्र (किसी मूर्ति आदि मे इन्द्र का आरोपण), और (३) द्रव्य इन्द्र (जो भूतकाल मे इन्द्र था अथवा आगे होगा)। २. इन्द्र तीन प्रकार के होते है–(१) ज्ञान इन्द्र (विशिष्ट श्रुतज्ञानी या केवली), (२) दर्शन इन्द्र (क्षायिकसम्यग्दृष्टि), और (३) चारित्र इन्द्र (यथाख्यातचारित्रवान्)। ३. इन्द्र तीन प्रकार के होते हैं–(१) देवइन्द्र (ज्योतिष्क वैमानिक देवो का अधिपति), (२) असुरइन्द्र (भवनपति एवं वाणव्यन्तर देवों का प्रमुख प्रशासक), और (३) मनुष्यइन्द्र (चक्रवर्ती राजा आदि)।

**1.** *Indras* (overlords) are of three kinds—(1) *Naam Indra* (having *Indra* as name), (2) *Sthapana Indra* (installed as *Indra*, like in some idol), and (3) *Dravya Indra* (physical *Indra*, who was or will be an *Indra*) **2.** *Indras* are of three kinds—(1) *Jnana Indra* (accomplished *Shrut jnani* or omniscient), (2) *Darshan Indra* (having gained righteousness due to destruction of related *karmas*), and (3) *Charitra Indra* (observing *yathakhyat charitra* or conduct conforming to perfect purity). **3.** *Indras* are of three kinds—(1) *Dev Indra* (overlord of gods, such as the stellar gods), (2) *Asur Indra* (overlord of *Bhavan-pati* and *Vanavyantar* gods), and (3) *Manushya Indra* (king or emperor)

### *विकुर्वणा–पद* VIKRIYA-PAD (SEGMENT OF SELF MUTATION)

**४. तिविहा विकुव्वणा पण्णत्ता, तं जहा–बाहिरए पोग्गलए परियादित्ता एगा विकुव्वणा, बाहिरए पोग्गले अपरियादित्ता एगा विकुव्वणा, बाहिरए पोग्गले परियादित्तावि अपरियादित्तावि एगा विकुव्वणा। ५. तिविहा विकुव्वणा पण्णत्ता, तं जहा–अब्भंतरए पोग्गले परियादित्ता एगा विकुव्वणा, अब्भंतरए पोग्गले अपरियादित्ता एगा विकुव्वणा, अब्भंतरए पोग्गले परियादित्ता वि अपरियादित्ता वि एगा विकुव्वणा। ६. तिविहा विकुव्वणा पण्णत्ता, तं जहा–बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियादित्ता एगा विकुव्वणा, बाहिरब्भंतरए पोग्गले अपरियादित्ता एगा विकुव्वणा, बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियादित्तावि अपरियादित्तावि एगा विकुव्वणा।**

४. विक्रिया (विकुर्वणा) तीन प्रकार की है-(१) बाह्य पुद्गलों को ग्रहण करके की जाने वाली विक्रिया। (२) बाह्य पुद्गलो को ग्रहण किये बिना की जाने वाली विक्रिया। (३) बाह्य पुद्गलों को ग्रहण और अग्रहण दोनो के द्वारा की जाने वाली विक्रिया (भवधारणीय शरीर में किंचित् विशेषता उत्पन्न करना)। ५. विक्रिया तीन प्रकार की है-(१) आन्तरिक पुद्गलो को ग्रहण कर की जाने वाली विक्रिया। (२) आन्तरिक पुद्गलो को ग्रहण किये बिना की जाने वाली विक्रिया। (३) आन्तरिक पुद्गलों के ग्रहण और अग्रहण दोनो के द्वारा की जाने वाली विक्रिया। ६. विक्रिया तीन प्रकार की है-(१) बाह्य-आन्तरिक दोनो प्रकार के पुद्गलो को ग्रहण कर की जाने वाली विक्रिया। (२) बाह्य और आन्तरिक दोनो प्रकार के पुद्गलो को ग्रहण किये बिना की जाने वाली विक्रिया। (३) बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार के पुद्गलो को ग्रहण करके और बिना ग्रहण किये की जाने वाली विक्रिया।

**4.** *Vikriya* (self mutation) is of three kinds—(1) *Vikriya* done by acquiring external particles (2) *Vikriya* done without acquiring external particles (3) *Vikriya* done by acquiring as well as without acquiring external particles (to create some special qualities in the incarnation sustaining body) **5.** *Vikriya* (self mutation) is of three kinds—(1) *Vikriya* done by acquiring internal particles (2) *Vikriya* done without acquiring internal particles (3) *Vikriya* done by acquiring as well as without acquiring internal particles. **6.** *Vikriya* (self mutation) is of three kinds—(1) *Vikriya* done by acquiring both external and internal particles (2) *Vikriya* done without acquiring both external and internal particles (3) *Vikriya* done by acquiring as well as without acquiring both external and internal particles

**विवेचन**—अभयदेवसूरि ने विक्रिया का एक अर्थ विभूषा भी किया है। इस अर्थ मे आभूषण आदि प्रसाधन सामग्री से शरीर को विभूषित करना पर्यादाय विकुर्वणा है। बाह्य पुद्गलो को लिए बिना अपने केश-नख आदि को सँवारना अपर्यादाय विकुर्वणा है तथा दोनो का सम्मिलित तीसरा रूप है। आभ्यन्तरिक विक्रिया के सदर्भ में बाह्य पुद्गलो को ग्रहण किये बिना ही जैसे गिरगिट अपने नाना रग बना लेता है। सर्प अपने फणो को नाना-नाना अवस्थाओ मे प्रदर्शित करता है। शरीर व मुख की विभिन्न अवस्थाएँ बनायी जाती है।

**Elaboration**—According to Abhayadev Suri one of the meanings of the term *vikriya* is *vibhusha* (embellishment) also In this context embellishing one's body with ornaments and other beauty aids is embellishment by acquiring outside particles To beautify hair, nails etc without adding any outside matter is embellishment without acquiring outside particles. Doing both these is the aforesaid third form. Mutation with reference to internal particles is something like a chameleon changing its colours or a snake raising its hood in a variety of ways or the variety of postures and shapes displayed by human body and face.

## संचित-पद SANCHIT-PAD (SEGMENT OF COLLECTIVITY)

**७. तिविहा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा—कतिसंचिता, अकतिसंचित्ता, अवत्तव्वगसंचिता। ८. एवमेगिंदियवज्जा जाव वेमाणिया।**

७. नारक तीन प्रकार के होते हैं—(१) कतिसंचित, (२) अकतिसचित, और (३) अवक्तव्यसंचित। ८. इसी प्रकार एकेन्द्रियो को छोडकर वैमानिक देवो तक के सभी दण्डक तीन-तीन प्रकार के होते हैं।

7. *Naarak* (infernal beings) are of three kinds—(1) *katisanchit*, (2) *akatisanchit*, and (3) *avaktavyasanchit*. 8. In the same way except one sensed beings, all beings belonging to *dandaks* (places of suffering) up to *Vaimanik Devs* are of these three kinds

विवेचन—'कति' शब्द सख्यावाचक है। दो से लेकर सख्यात तक की सख्या को कति कहा जाता है। 'अकति' का अर्थ असख्यात और अनन्त है। अवक्तव्य का अर्थ 'एक' है, क्योकि 'एक' की गणना सख्या मे नही की जाती है। किसी सख्या के साथ एक का गुणाकार या भागाकार करने पर वृद्धि-हानि नही होती, वह मूल रूप ही रहती है। अत 'एक' सख्या नही, सख्या का मूल है।

नरकगति मे नारक एक साथ सख्यात भी उत्पन्न होते है और एक साथ असख्यात भी उत्पन्न होते है, अत. उन्हे कति-सचित तथा अकति-सचित कहा गया है। कभी-कभी जघन्य रूप से एक ही नारक नरकगति मे उत्पन्न होता है इस दृष्टि से अवक्तव्य-संचित भी कहा गया है, एकेन्द्रिय जीव प्रतिसमय या साधारण वनस्पति मे अनन्त उत्पन्न होते है, वे केवल अकति-सचित ही होते हैं। उनके तीन विकल्प नही होते। *(विशेष वर्णन देखे भगवती, शतक २०, उ १०)*

**Elaboration**—'*kati*' is a numerical term It covers numbers from two to *samkhyat* (large countable numbers) Beyond countable numbers are numbers like *asankhyat* (innumerable) and *anant* (infinite) These are called *akati* *Avaktavya* here means the numeral 'one' because it is not counted among numbers Any number when divided or multiplied by one remains unchanged Therefore one is not a number but the origin or root of all numbers

In the infernal dimension countable as well as innumerable beings are born at the same time or collectively thus they are called *katisanchit* and *akatisanchit* respectively There are times when just one infernal being is born Then infernal beings are called *avaktavyasanchit* as well Infinite one sensed beings and *sadharan vanaspati* (like algae) are born every moment, thus they are only *akatisanchit* and not belonging to the aforesaid three classes. *(for more details refer to Bhagavati Sutra 20/10)*

## परिचारणा-पद PARICHARANA-PAD (SEGMENT OF SEXUAL GRATIFICATION)

**९. तिविहा परियारणा पण्णत्ता, तं जहा—**

**(१) एगे देवे अण्णे देवे, अण्णेसिं देवाणं देवीओ य अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेति, अप्पणिज्जियाओ देवीओ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेति, अप्पाणमेव अप्पणा बिउव्विय विउव्विय परियारेति।**

**(२) एगे देवे णो अण्णे देवे, णो अण्णेहिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेति, अप्पणिज्जियाओ देवीओ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेति, अप्पाणमेव अप्पणा विउव्विय विउव्विय परियारेति।**

**(३) एगे देवे णो अण्णे देवे, णो अण्णेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेति, णो अप्पणिज्जियाओ देवीओ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेति, अप्पाणमेव अप्पणा विउव्विय विउव्विय परियारेति।**

९. परिचारणा (देवो मे रति क्रीडा) तीन प्रकार की है-(१) कुछ देव अन्य देवों तथा अन्य देवो की देवियो का आलिगन कर-कर परिचारण करते है, कुछ देव अपनी देवियो का बार-बार आलिगन करके परिचारणा करते है और कुछ देव अपने ही शरीर से बनाये हुए विभिन्न रूपो से परिचारणा करते हैं।

(२) कुछ देव अन्य देवो तथा अन्य देवो की देवियो का बार-बार आलिगन करके परिचारणा नही करते, किन्तु अपनी देवियो का आलिगन कर-करके परिचारणा करते है तथा अपने ही शरीर से बनाये हुए विभिन्न रूपो से परिचारणा करते है।

(३) कुछ देव अन्य देवो तथा अन्य देवो की देवियो से आलिगन कर-कर परिचारणा नही करते, अपनी देवियो का भी आलिगन कर-करके परिचारणा नही करते। केवल अपने ही शरीर से बनाये हुए विभिन्न रूपो से परिचारणा करते है।

**9.** *Paricharana* (act of sexual gratification in divine beings) is of three kinds—(1) Some gods indulge in *paricharana* (act of sexual gratification) by repeatedly embracing other gods and goddesses of other gods, some gods indulge in *paricharana* by repeatedly embracing their own goddesses and some gods indulge in *paricharana* with different forms created from their own bodies

(2) Some gods do not indulge in *paricharana* (act of sexual gratification) by repeatedly embracing other gods and goddesses of other gods, but do so by repeatedly embracing their own goddesses and also with different forms created from their own bodies

(3) Some gods neither indulge in *paricharana* (act of sexual gratification) by repeatedly embracing other gods and goddesses of other gods nor by repeatedly embracing their own goddesses but only with different forms created from their own bodies.

### मैथुन-प्रकार-पद MAITHUN-PRAKAR-PAD (SEGMENT OF TYPES OF COPULATION)

**१०. तिविहे मेहुणे पण्णत्ते, तं जहा—दिव्वे, माणुस्सए, तिरिक्खजोणिए। ११. तओ मेहुणं गच्छंति, तं जहा—देवा, मणुस्सा, तिरिक्खजोणिया। १२. तओ मेहुणं सेवंति, तं जहा—इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा।**

१०. मैथुन तीन प्रकार का है-(१) दिव्य, (२) मानुष्य, और (३) तिर्यग्-योनिक। ११. तीन प्रकार के जीव मैथुन करते हैं-(१) देव, (२) मनुष्य, और (३) तिर्यंच। १२. तीन प्रकार के जीव मैथुन का सेवन करते है-(१) स्त्री, (२) पुरुष, और (३) नपुंसक। (वृत्तिकार अभयदेवसूरि ने स्त्री-पुरुष के सात-सात और नपुंसक के दो लक्षण बताये हैं-*वृत्ति, पृष्ठ १८०)*

**10.** *Maithun* (copulation) is of three kinds—(1) *divya* (divine), (2) *maanushya* (of humans), and (3) *tiryak-yonik* (of animals). **11.** Three kinds of beings are capable of *maithun* (copulation)—(1) *divya* (divine beings), (2) *manushya* (humans), and (3) *tiryanch* (animals). **12.** Three kinds of beings indulge in *maithun* (copulation)—(1) *stree* (female), (2) *purush* (male) a and (3) *napumsak* (neuter). (The commentator Abhayadev Suri has mentioned seven features each of male and female and two eunuchs—*Commentary, page 180*)

### योग-पद YOGA-PAD (SEGMENT OF ASSOCIATION)

**१३. तिविहे जोगे पण्णत्ते, तं जहा—मणजोगे, वइजोगे, कायजोगे। एवं णेरइयाणं विगलिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं। १४. तिविहे पओगे पण्णत्ते, तं जहा—मणपओगे, वइपओगे, कायपओगे। जहा जोगो विगलिंदियवज्जाणं जाव तहा पओगोवि।**

१३. योग तीन प्रकार का होता है-(१) मनोयोग, (२) वचनयोग, और (३) काययोग। इसी प्रकार विकलेन्द्रियों-(एकेन्द्रियों से लेकर चतुरिन्द्रियों तक के जीवो) को छोडकर वैमानिक देवों तक के सभी दण्डको में तीन-तीन योग होते हैं। १४. प्रयोग तीन प्रकार का होता है-(१) मनःप्रयोग, (२) वचनयोग, और (३) कायप्रयोग। जैसा योग का कथन है, उसी प्रकार विकलेन्द्रियो को छोडकर शेष सभी दण्डकों मे तीनों ही प्रयोग जानना चाहिए।

**13.** *Yoga* (association) is of three kinds—(1) *manoyoga* (mind association), (2) *vachan-yoga* (speech association), and (3) *kayayoga* (body association). Besides *vikalendriyas* (one sensed to four sensed beings) beings belonging to all *dandaks* (places of suffering) up to *Vaimaniks* have all these three associations. **14.** *Prayoga* (activity) is of three kinds—(1) *manah-prayoga* (mental activity), (2) *vachan-prayoga* (vocal activity), and (3) *kayaprayoga* (physical activity)

**करण-पद KARAN-PAD (SEGMENT OF MEANS)**

**१५. तिविहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं। १६. तिविहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—आरंभकरणे, संरंभकरणे, समारंभकरणे। णिरंतरं जाव वेमाणियाणं।**

१५. करण तीन प्रकार का है—(१) मन करण, (२) वचनकरण, और (३) कायकरण। इसी प्रकार विकलेन्द्रियो को छोडकर शेष सभी दण्डको मे तीनो ही करण होते है। १६. करण तीन प्रकार का कहा है—(१) आरम्भकरण, (२) सरम्भकरण, और (३) समारम्भकरण। ये तीनों ही करण वैमानिकपर्यन्त सभी दण्डको मे होते है।

**15.** *Karan* (means) is of three kinds—*manah-karan* (mental means), (2) *vachan-karan* (vocal means), and (3) *kayakaran* (physical means) Besides *vikalendriyas* (one sensed to four sensed beings) beings belonging to all *dandaks* (places of suffering) up to *Vaimaniks* have all these three means **16.** *Karan* (means or performance) is of three kinds—*aarambh-karan* (destructive performance), (2) *samrambh-karan* (desire to perform), and (3) *samaarambh-karan* (hurtful performance) Besides *vikalendriyas* (one sensed to four sensed beings) beings belonging to all *dandaks* (places of suffering) up to *Vaimaniks* have all these three performances

**विवेचन**—वीर्यान्तराय कर्म के क्षय या क्षयोपशम से उत्पन्न होने वाली जीव की शक्ति या वीर्य को योग कहा जाता है। तत्त्वार्थसूत्र मे मन, वचन और काय की क्रिया को योग कहा है। योग के निमित्त से ही कर्मों का आस्रव और बन्ध होता है। मन की प्राप्ति मनोयोग है, वचन की प्राप्ति वचनयोग और काय की प्राप्ति काययोग होता है। मन, वचन और काय की प्रवृत्ति को प्रयोग कहते है। योगो के सरम्भ-समारम्भादि रूप परिणमन को करण कहते है। जैसे-जीवो के घात का मन मे सकल्प करना सरम्भ है, उक्त जीवो को सन्ताप पहुँचाना समारम्भ है और उनका घात करना आरम्भ है। इस प्रकार योग, प्रयोग और करण इन तीनो के द्वारा जीव कर्मों का आस्रव और बन्ध करते रहते है। साधारणत योग, प्रयोग और करण को एकार्थक भी कहा गया है। *(देखे स्थानाग वृत्ति, पृष्ठ १८३)*

**Elaboration**—The energy or potency (*virya*) emerging in a soul due to destruction or destruction-cum-pacification of *Viryantaraya karma* (potency hindering *karma*) is called *yoga* According to *Tattvarth Sutra* the activities associated with mind, speech and body are called *yoga* The inflow and bondage of *karmas* are caused by *yoga* only Association of mind in an activity is *manoyog*, that of speech is *vachan-yoga* and that of body is *kayayoga*. Indulgence in specific activities of mind, speech and body is called *prayoga*. Performance manifesting through *yoga* is called

*karan*. For example to think of harming and killing beings is *samrambh*, to cause slight harm those beings is *samaarambh* and to kill those beings is *aarambh*. Thus beings cause inflow and bondage of *karmas* through three means *yoga*, *prayoga* and *karan*. These three terms are generally said to by synonymous. *(see Sthananga Vritti, p. 183)*

### आयुष्य–पद AYUSHYA-PAD (SEGMENT OF LIFE SPAN)

**१७. तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—पाणे अतिवातित्ता भवति, मुसं वइत्ता भवति, तहारूवं समणं वा माहणं वा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असण–पाण–खाइम–साइमेणं पडिलाभेत्ता भवति, इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पगरेंति।**

१७. तीन स्थानों से जीव अल्प आयुष्य कर्म का बन्ध करते है–(१) प्राणो का अतिपात (हिंसा) करने से, (२) मृषावाद (असत्य) बोलने से, और (३) तथारूप श्रमण माहन को अप्रासुक, अनेषणीय अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य आहार का दान करने से। इन तीन प्रकारो से जीव अल्प आयुष्य कर्म का बन्ध करते है।

**17.** A soul acquires bondage of *alp-ayushya karma* (*karma* responsible for short life span) in three ways—(1) by *pranatipat* (destroying life), (2) by *mrishavad* (telling a lie), and (3) by giving *aprasuk* (contaminated with living organism) and *aneshaniya* (unacceptable) *ashan, paan, khadya, svadya ahar* (staple food, liquids, general food and savoury food) to a *shraman* or *mahan* (terms for Jain ascetic) as described in scriptures (*tatharupa*) A soul acquires bondage of *karma* responsible for short life span in these three ways

**१८. तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—णो पाणे अतिवातित्ता भवइ, णो मुसं वइत्ता भवइ, तहारूवं समणं वा माहणं वा फासुएणं एसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ, इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति।**

१८. तीन स्थान से जीव दीर्घायुष्य कर्म का बन्ध करते है–(१) प्राणो का अतिपात न करने से, (२) मृषावाद न बोलने से, और (३) तथारूप श्रमण माहन को प्रासुक अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य आहार का दान करने से। इन तीन प्रकारो से जीव दीर्घ आयुष्य कर्म का बन्ध करते हैं।

**18.** A soul acquires bondage of *deergh-ayushya karma* (*karma* responsible for long life span) three ways—(1) by avoiding *pranatipat* (destruction of life), (2) by avoiding *mrishavad* (telling a lie), and (3) by giving *prasuk* (free of living organism) and *eshaniya* (acceptable) *ashan, paan, khadya, svadya ahar* (staple food, liquids, general food and savoury food) to a *shraman* or *mahan* (terms for Jain ascetic) as

described in scriptures (*tatharupa*). A soul acquires bondage of *karma* responsible for long life span these three ways.

**विवेचन**–विशिष्ट पदो का *अर्थ* इस प्रकार है–सयम–साधना के अनुरूप वेष के धारक श्रमण को **तथारूप** कहते हैं। अहिंसा का उपदेश देने वाले को **माहन** कहते है। खानपान की सजीव वस्तुओं को **अप्रासुक** और साधु के लिए अशुद्ध ग्राह्य खाद्य आदि पदार्थ को **अनेषणीय** कहते हैं। दाल, भात, रोटी आदि आहार अशन। पीने के योग्य पदार्थ **पान**, फल, मेवा आदि **खाद्य** तथा लौंग, इलायची आदि स्वाद लेने योग्य पदार्थों को **स्वाद्य** कहा जाता है।

**TECHNICAL TERMS**

*Tatharupa*—a *shraman* suitably dressed for ascetic practices or with an appearance as described in scriptures *Mahan*—one who preaches *ahimsa* *Aprasuk*—food that is contaminated with living organism *Aneshaniya*—food that is impure and unsuitable for an ascetic *Ashan*—staple food such as pulses, rice and bread *Paan*—liquids such as water *Khadya*—general food such as fruits and dry-fruits *Svadya ahar*—savoury food such as one flavoured with clove, cardamom etc

**१९. तिहिं ठाणेहिं जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा–पाणे अतिवातित्ता भवइ, मुसं वइत्ता भवइ, तहारूवं समणं वा माहणं वा हीलित्ता णिंदित्ता खिंसित्ता गरहित्ता अवमाणित्ता अण्णयरेणं अमणुण्णेणं अपीतिकारणएणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ; इच्चेतेहिं तिहि ठाणेहिं जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति।**

१९. तीन प्रकार से जीव अशुभ दीर्घायुष्य कर्म का बन्ध करते है–(१) जीव हिंसा करने से, (२) मृषावाद बोलने से, और (३) तथारूप श्रमण माहन की अवहेलना, निन्दा, अवज्ञा, गर्हा और अपमान कर कोई अमनोज्ञ तथा अप्रीतिकर अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य का प्रतिलाभ करने से। इन तीन प्रकारो से जीव अशुभ दीर्घ आयुष्य कर्म का बन्धन करते है।

**19.** A soul acquires bondage of *ashubh deergh-ayushya karma* (*karma* responsible for ignoble long life span) three ways—(1) by *pranatipat* (destroying life), (2) by *mrishavad* (telling a lie), and (3) by neglecting (*avahelana*), censuring (*ninda*), disrespecting (*avajna*), reproaching (*garha*) and insulting (*apaman*) and then giving repulsive (*amanojna*) and loathsome (*apreetikar*) *ashan, paan, khadya, svadya ahar* (staple food, liquids, general food and savoury food) to a *shraman* or *mahan* (terms for Jain ascetic) as described in scriptures (*tatharupa*). A soul acquires bondage of *karma* responsible for ignoble long life span these three ways

**२०. तिर्हि ठाणेहिं जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—णो पाणे अतिवादित्ता भवइ, णो मुसं वदित्ता भवइ, तहारूवं समणं वा माहणं वा वंदित्ता णमंसित्ता सक्कारित्ता सम्माणित्ता कल्लाणं मंगलं, देवतं चेतितं पज्जुवासेत्ता मणुण्णेणं पीतिकारएणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ; इच्चेतेहिं तिर्हि ठाणेहिं जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति।**

२०. तीन प्रकार से जीव शुभ दीर्घायुष्य कर्म का बन्ध करते हैं–(१) जीव हिंसा न करने से, (२) मृषावाद न बोलने से, और (३) तथारूप श्रमण माहन को वन्दना–नमस्कार कर, उनका सत्कार–सम्मान कर, कल्याण कर, मंगल; देवरूप तथा चैत्यरूप मानकर उनकी पर्युपासना कर उन्हें मनोज्ञ एवं प्रीतिकर अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य आहार का प्रतिलाभ करने से। उक्त तीन प्रकारो से जीव शुभ दीर्घायुष्य कर्म का बन्ध करते है।

**20.** A soul acquires bondage of *shubh deergh-ayushya karma* (*karma* responsible for noble long life span) three ways—(1) by avoiding *pranatipat* (destroying life), (2) by avoiding *mrishavad* (telling a lie), and (3) by offering obeisance and homage, welcoming and respecting, wishing their beatitude and exaltation, offering them worship like a deity and temple and then giving relishable (*manojna*) and delightful (*preetikar*) *ashan, paan, khadya, svadya ahar* (staple food, liquids, general food and savoury food) to *shramans* or *mahans* (terms for Jain ascetic) as described in scriptures (*tatharupa*). A soul acquires bondage of *karma* responsible for long life span these three ways.

### *गुप्ति–अगुप्ति–पद* GUPTI-AGUPTI-PAD (SEGMENT OF RESTRAINT AND IRRESTRAINT)

**२१. तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—मणगुत्ती, वइगुत्ती, कायगुत्ती। २२. संजयमणुस्साणं तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—मणगुत्ती, वइगुत्ती, कायगुत्ती। २३. तओ अगुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—मणअगुत्ती, वइअगुत्ती, कायअगुत्ती। एवं णेरइयाणं जाव थणियकुमाराणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं असंजतमणुस्साणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाणं।**

२१. गुप्ति तीन प्रकार की है–(१) मनोगुप्ति, (२) वचनगुप्ति, और (३) कायगुप्ति। २२. संयत मनुष्य के तीनों गुप्तियाँ होती हैं–(१) मनोगुप्ति, (२) वचनगुप्ति, और (३) कायगुप्ति। २३. अगुप्ति तीन प्रकार की है–(१) मन–अगुप्ति, (२) वचन–अगुप्ति, और (३) काय–अगुप्ति। इस प्रकार नारकों से लेकर यावत् स्तनितकुमारों के, पचेन्द्रियतिर्यग्योनिकों के, असंयत मनुष्यो के, वाणव्यन्तर देवो के, ज्योतिष्क और वैमानिक देवो के तीनो ही अगुप्तियाँ कही गई हैं (मन, वचन, काय के सयम को गुप्ति और सयम न रखने को अगुप्ति कहते हैं)।

**21.** *Gupti* (restraint) is of three kinds—(1) *manogupti* (mental restraint), (2) *vachan-gupti* (vocal restraint), and (3) *kayagupti* (physical

restraint). **22.** A disciplined person has all the three *guptis*—(1) *manogupti* (mental restraint), (2) *vachan-gupti* (vocal restraint), and (3) *kayagupti* (physical restraint) **23.** *Agupti* (irrestraint) is of three kinds—(1) *manah-agupti* (mental irrestraint), (2) *vachan-agupti* (vocal irrestraint), and (3) *kaya-agupti* (physical irrestraint). In the same way all beings from infernal beings to *Stanit Kumars*, five sensed animals, indisciplined humans interstitial gods and celestial vehicle dwelling gods have all these three *aguptis* (irrestraints)—(1) *manah-agupti* (mental irrestraint), (2) *vachan-agupti* (vocal irrestraint), and (3) *kaya-agupti* (physical irrestraint) (Not to have restraint on activities of mind, speech and body is *agupti* or non-restraint)

### दण्ड–पद DAND-PAD (SEGMENT OF EVIL-TENDENCY)

**२४. तओ दंडा पण्णत्ता, तं जहा—मणदंडे, वइदंडे, कायदंडे। २५. णेरइयाणं तओ दंडा पण्णत्ता, तं जहा—मणदंडे, वइदंडे, कायदंडे। विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं।**

२४. दण्ड (योगो की दुष्ट प्रवृत्ति) तीन प्रकार के होते है–(१) मनोदण्ड, (२) वचनदण्ड, और (३) कायदण्ड। २५. नारको मे तीन दण्ड कहे हैं–(१) मनोदण्ड, (२) वचनदण्ड, और (३) कायदण्ड। इसी प्रकार विकलेन्द्रिय जीवो को छोडकर वैमानिक पर्यन्त सभी दण्डको के तीनो ही दण्ड होते है।

24. *Dand* (evil-tendency related to *yoga* or association) is of three kinds—(1) *manodand* (mental evil-tendency), (2) *vachan-dand* (vocal evil-tendency), and (3) *kaya-dand* (physical evil-tendency) **25.** *Naaraks* (infernal beings) have all the three *dands*—(1) *manodand* (mental evil-tendency), (2) *vachan-dand* (vocal evil-tendency), and (3) *kaya-dand* (physical evil-tendency). Except one to four sensed beings all beings belonging to all other *dandaks* (places of suffering) up to Vaimanik gods have three *dands*.

### गर्हा–पद GARHA-PAD (SEGMENT OF REPROACH)

**२६. तिविहा गरहा पण्णत्ता, तं जहा—मणसा वेगे गरहति, वयसा वेगे गरहति, कायसा वेगे गरहति—पावाणं कम्माणं अकरणयाए।**

**अहवा—गरहा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—दीहंपेगे अद्धं गरहति, रहस्संपेगे अद्धं गरहति, कायंपेगे पडिसाहरति, पावाणं कम्माणं अकरणयाए।**

२६. गर्हा–(भूतकाल मे किये गये पापो की निन्दा करना) तीन प्रकार की है–(१) कुछ लोग मन से गर्हा करते है, (२) कुछ लोग वचन से गर्हा करते है, और (३) कुछ लोग काया से गर्हा करते है, पाप–कर्मों को नहीं करने के रूप मे।

अथवा गर्हा तीन प्रकार की है-(१) कुछ लोग दीर्घकाल तक पाप-कर्मों की गर्हा करते है, (२) कुछ लोग अल्पकाल तक पाप-कर्मों की गर्हा करते हैं, और (३) कुछ लोग काया का निरोध कर गर्हा करते हैं-(पाप-कर्मों को नहीं करने के रूप में)।

**26.** *Garha* (to reproach oneself for sins committed in the past) is of three kinds—(1) Some people reproach with mind, (2) Some people reproach with speech, (3) Some people reproach with body, by way of not indulging in sinful activities

Also *garha* (to reproach oneself for sins committed in the past) is of three kinds—(1) Some people reproach themselves for a long period for the sins committed, (2) Some people reproach themselves for a short period for the sins committed, (3) Some people reproach by restraining their body, by way of not indulging in sinful activities

### प्रत्याख्यान-पद PRATYAKHYAN-PAD (SEGMENT OF ABSTAINMENT)

**२७. तिविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा-मणसा वेगे पच्चक्खाति, वयसा वेगे पच्चक्खाति, कायसा वेगे पच्चक्खाति-[ पावाणं कम्माणं अकरणयाए ]।**

**[ अहवा-पच्चक्खाणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा-दीहंपेगे अद्धं पच्चक्खाति, रहस्संपेगे अद्धं पच्चक्खाति, कायंपेगे पडिसाहरति-पावाणं कम्माणं अकरणयाए ]।**

२७. प्रत्याख्यान-(भविष्य मे पाप-कर्मों का त्याग) तीन प्रकार का है-(१) कुछ लोग मन से प्रत्याख्यान करते है, (२) कुछ लोग वचन से प्रत्याख्यान करते है, और (३) कुछ लोग काया से प्रत्याख्यान करते है। [पाप-कर्मों को आगे नही करने के रूप से।

अथवा प्रत्याख्यान तीन प्रकार का है-(१) कुछ लोग दीर्घकाल तक पाप-कर्मों का प्रत्याख्यान करते है, (२) कुछ लोग अल्पकाल तक पाप-कर्मों का प्रत्याख्यान करते है, और (३) कुछ लोग काया का निरोध कर प्रत्याख्यान करते है पाप-कर्मों को आगे नही करने के रूप मे।]

**27.** *Pratyakhyan* (to resolve to abstain from sinful activity) is of three kinds—(1) Some people abstain with mind, (2) Some people abstain with speech, (3) Some people abstain with body, by way of resolving not to indulge in sinful activities in future

Also *pratyakhyan* (to resolve to abstain from sinful activity) is of three kinds—(1) Some people abstain from sinful activity for a long period, (2) Some people abstain from sinful activity for a short period, (3) Some people abstain by restraining their body, by way of resolving not to indulge in sinful activities in future

### उपकार-पद UPAKAR-PAD (SEGMENT OF BENEFICENCE)

**२८. तओ रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा-पत्तोवगे, पुप्फोवगे, फलोवगे।**

**एवामेव तओ पुरिसजाता पण्णत्ता, तं जहा—पत्तोवा रुक्खसमाणे, पुप्फोवा रुक्खसमाणे, फलोवा रुक्खसमाणे।**

२८. वृक्ष तीन प्रकार के होते है। जैसे-(१) पत्तों वाले, (२) पुष्पों वाले, और (३) फलों वाले।

इसी प्रकार पुरुष भी तीन प्रकार के होते है-(१) पत्तो वाले वृक्ष के समान अल्प उपकारी, (२) पुष्पों वाले वृक्ष के समान विशेष उपकारी, और (३) फलो वाले वृक्ष के समान विशिष्टतर उपकारी।

**28.** *Vrikshas* (trees) are of three kinds—(1) those with leaves, (2) those with flowers, and (3) those with fruits

In the same way men are also of three kinds—(1) slightly beneficial like trees with leaves, (2) more beneficial like trees with flowers, and (3) most beneficial like trees with fruits

**विवेचन**—केवल पत्ते वाले वृक्षो से पुष्पो वाले और उनसे भी अधिक फल वाले वृक्ष लोक मे उत्तम माने जाते है। जो पुरुष दु खी पुरुष को आश्रय देते है वे पत्रयुक्त वृक्ष के समान है। जो आश्रय के साथ उसके दुःख दूर करने का आश्वासन भी देते है, वे पुष्पयुक्त वृक्ष के समान है और उसका भरण-पोषण भी करते है वे फलयुक्त वृक्ष के समान है।

**Elaboration**—As compared to the trees having only leaves those with flowers are considered better and those with fruits are the best People who provide shelter to the miserable are like trees with leaves Those who also give assurance to remove their miseries are like flowering trees Those who provide for their subsistence as well are like fruit bearing trees

### *पुरुषजात–पद* PURUSHAJAAT-PAD (SEGMENT OF MAN)

**२९. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—णामपुरिसे, ठवणपुरिसे, दव्वपुरिसे। ३०. तओ पुरिसज्जाया पण्णत्ता, तं जहा—णाणपुरिसे, दंसणपुरिसे, चरित्तपुरिसे। ३१. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदपुरिसे, चिंधपुरिसे, अभिलावपुरिसे। ३२. तिविहा पुरिसा पण्णत्ता, तं जहा—उत्तमपुरिसा, मज्झिमपुरिसा, जहण्णपुरिसा। ३३. उत्तमपुरिसा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मपुरिसा, भोगपुरिसा, कम्मपुरिसा। धम्मपुरिसा अरहंता, भोगपुरिसा चक्कवट्टी, कम्मपुरिसा वासुदेवा। ३४. मज्झिमपुरिसा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उग्गा, भोगा, राइण्णा। ३५. जहण्णपुरिसा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—दासा, भयणा, भाइल्लगा।**

२९. पुरुष तीन प्रकार के होते हैं। जैसे-(१) नामपुरुष, (२) स्थापनापुरुष, और (३) द्रव्यपुरुष। ३०. पुरुषों के तीन प्रकार होते है-(१) ज्ञानपुरुष, (२) दर्शनपुरुष, और (३) चारित्रपुरुष। ३१. पुरुष तीन प्रकार के होते है-(१) वेदपुरुष, (२) चिह्नपुरुष, और (३) अभिलापपुरुष। ३२. पुरुष तीन प्रकार के होते हैं-(१) उत्तम पुरुष, (२) मध्यम पुरुष, और (३) जघन्य पुरुष। ३३. उत्तम पुरुष तीन प्रकार के होते है-(१) धर्मपुरुष (अरहन्त), (२) भोगपुरुष (चक्रवर्ती), और

तीन प्रकार के वृक्ष
तीन प्रकार के उत्तम पुरुष

चित्र परिचय ९

Illustration No. 9
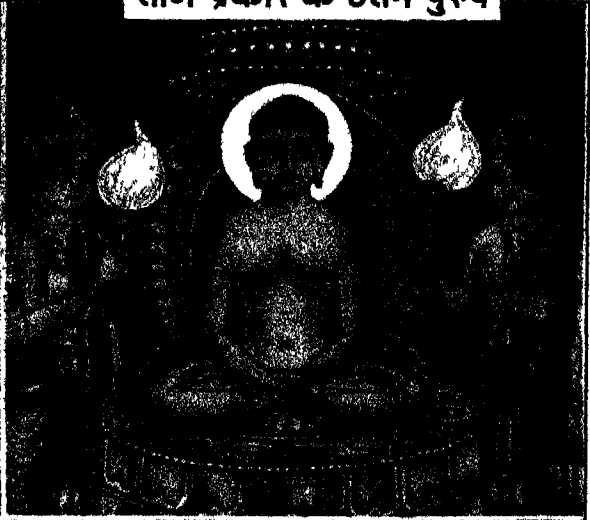
## तीन प्रकार के वृक्ष : तीन प्रकार के उत्तम पुरुष

वृक्ष–

(१) कुछ वृक्ष बहुत सघन पत्तो वाले होत है। जैसे वट का वृक्ष। इसकी छाया मे पशु, पक्षी, मानव आदि आश्रय लेते है किन्तु इससे फल नही मिलता। इसी प्रकार कुछ पुरुष केवल दूसरो को छाया की भाँति थोडा आश्रय मात्र देते है।

(२) कुछ वृक्ष फूलो से भर होते है, उनकी सुगन्ध से बहुतो का तृप्ति व प्रसन्नता मिलती है। इसी प्रकार कुछ मनुष्य दूसगे को थोडा सहयोग कर मधुर वचनो से सान्त्वना देकर सुख पहुँचाते है।

(३) आम की तरह कुछ वृक्ष सघन छाया और मधुर फल देकर बहुतो का उपकार करत है। परोपकारी मनुष्य आम की तरह विविध प्रकार से जनता को लाभ पहुँचात है।

स्थान ३ सूत्र २८

पुरुष–

ससार मे उत्तम पुरुष भी तीन प्रकार के होते है - (१) **उत्तम धर्म पुरुष**–अरिहत देव, धर्म व सद्ज्ञान स सम्पूर्ण ससार का उपकार करते है। (२) **उत्तम भोग पुरुष**–षट्खण्ड चक्रवर्ती सम्राट जो पूर्वोपार्जित पुण्यो स अपार ऐश्वर्य व सुखो का भोग करते है। (३) **उत्तम कर्म पुरुष**–त्रिखण्डाधीश्वर वासुदव। अपन बल-पराक्रम व नीतिमत्ता से ससार मे सज्जनो का सरक्षण व दुर्जनो का विनाश करते है।

-स्थान ३ सूत्र ३३

## THREE KINDS OF TREES THREE KINDS OF NOBLE MEN

**Tree—**

(1) Some trees are very dense such as banyan tree Under its shade animals, birds, humans and other beings take refuge but no fruits are available In the same way some men provide only little help to others

(2) Some trees are filled with flowers, which provide joy and contentment to many In the same way some men please others by a little help and sweet words

(3) Like a mango tree some trees provide shade as well as fruits to benefit many Generous persons benefit masses many ways like a mango tree

—*Sthaan 3, Sutra 28*

**Man—**

Noble persons are also of three kinds—**(1) Uttam Dharma Purush**—*Arihant Dev* benefits the whole world through his religion and right knowledge **(2) Uttam Bhog Purush**—*Shatkhand Chakravarti* (emperor) who enjoy immense grandeur and happiness due to meritorious *karmas* acquired in the past **(3) Uttam Karma Purush**—*Vasudev*, the monarch of three parts of the land They annihilate the evil and protect the noble in the world through their strength, power and justice

—*Sthaan 3, Sutra 33*

(३) कर्मपुरुष (वासुदेव)। ३४. मध्यम पुरुष तीन प्रकार के होते हैं-(१) उग्र, (२) भोग, और (३) राजन्य। ३५. जघन्य पुरुष तीन प्रकार के होते हैं-(१) दास, (२) भृतक, और (३) भागीदार।

**29.** *Purush* (men) are of three kinds—(1) *naam purush* (*Purush* by name), (2) *sthapana purush* (man by installation), and (3) *dravya purush* (physical man) **30.** *Purush* (men) are of three kinds—(1) *jnana purush* (man with knowledge), (2) *darshan purush* (man with perception/faith), and (3) *chaaritra purush* (man with conduct). **31.** *Purush* (men) are of three kinds—(1) *veda purush* (man who experiences masculinity), (2) *chinha purush* (man with signs of masculinity), and (3) *abhilaap purush* (grammatical masculine gender). **32.** *Purush* (men) are of three kinds—(1) *uttam purush* (superior man), (2) *madhyam purush* (mediocre man), and (3) *jaghanya purush* (inferior man) **33.** *Uttam purush* (superior men) are of three kinds—(1) *dharm purush* (*Arhant*), (2) *bhog purush* (*chakravarti*), and (3) *karma purush* (*Vasudev*) **34.** *Madhyam purush* (mediocre men) are of three kinds—(1) *ugra* (ruling class), (2) *bhog* (scholarly people), and (3) *rajanya* (companions of a king). **35.** *Jaghanya purush* (inferior men) are of three kinds—(1) *daas* (slaves), (2) *bhritak* (servants), and (3) *bhaagidar* (labour working on share of produce)

विवेचन-उक्त सूत्रो मे कहे गये विविध प्रकार के पुरुषो का स्पष्टीकरण इस प्रकार है-

नामपुरुष-जिस चेतन या अचेतन वस्तु का 'पुरुष' नाम हो वह। स्थापनापुरुष-पुरुष की प्रतिमा या जिस किसी अन्य वस्तु में 'पुरुष' का आरोपण किया हो वह। द्रव्यपुरुष-पुरुष रूप मे उत्पन्न होने वाला जीव या पुरुष का मृत शरीर।

ज्ञानपुरुष-ज्ञानप्रधान पुरुष। दर्शनपुरुष-सम्यग्दर्शन वाला पुरुष। चारित्रपुरुष-चारित्र से सम्पन्न पुरुष।

वेदपुरुष-पुरुषवेद का अनुभव करने वाला जीव। चिह्नपुरुष-दाढी-मूँछ आदि चिह्नों से युक्त पुरुष। अभिलापपुरुष-लिंगानुशासन (व्याकरण) के अनुसार पुल्लिंग द्वारा कहा जाने वाला शब्द।

उत्तम प्रकार के पुरुषो में भी उत्तम धर्मपुरुष तीर्थंकर अरहत देव होते है। उत्तम प्रकार के मध्यम पुरुषो मे भोगपुरुष चक्रवर्ती माने जाते है और उत्तम प्रकार के जघन्यपुरुषों में कर्मपुरुष वासुदेव होते हैं।

उग्रवंशी या प्रजा-सरक्षण का कार्य करने वालों (आरक्षक वर्ग) को उग्रपुरुष कहा जाता है। भोग या भोजवंशी, गुरु या पुरोहित स्थानीय पुरुषों को भोग या भोजपुरुष कहा जाता है। राजा के मित्र स्थानीय पुरुषों को राजन्यपुरुष कहते हैं।

मूल्य देकर खरीदे गये सेवक को दास (गुलाम), वेतन लेकर काम करने वाले को भृतक तथा जो खेती, व्यापार आदि में तीसरे, चौथे आदि भाग को लेकर कार्य करते हैं, उन्हें भाइल्लक या भागीदार

काढ़ते हैं। (यह व्याख्या भगवान ऋषभदेव के समय मे नियत राज व्यवस्था के अनुसार है। वर्तमान में दासप्रथा समाप्तप्राय है।)

## TECHNICAL TERMS

*Naam purush*—a person or a thing that has been named '*Purush*' *Sthapana purush*—an image or other thing in which some man is installed *Dravya purush*—a being born as human or the body of a deceased human.

*Jnana purush*—a scholarly or enlightened man *Darshan purush*—man with right perception/faith *Chaaritra purush*—a man with right conduct

*Veda purush*—a man who experiences masculinity. *Chinha purush*—a man with signs of masculinity, such as beard and moustache. *Abhilaap purush*—grammatical masculine gender

*Dharm purush*—super most among the superior class is religious man such as *Arhant Bhog purush*—mediocre among the superior class is a man destined to enjoy, such as a *Chakravarti* or an emperor. *Karma purush*—inferior among the superior class is a man of action such as *Vasudev* (epoch maker sovereign of the land)

*Ugra*—those belonging to the *Ugra* clan, those responsible for the protection of people, the ruling class *Bhog*—those belonging to the *Bhoj* clan, those scholarly people who are in teaching profession or those who are priests *Rajanya*—local friends and companions of a king

*Daas*—slaves *Bhritak*—servants or wage earners *Bhaagidar*—farm and other labour working on share of the produce (This interpretation is based on the system of governance prevalent during the times of *Bhagavan Risabhadeva* At present the slave system has almost been eradicated )

## मत्स्य-पद MATSYA-PAD (SEGMENT OF FISH)

**३६. तिविहा मच्छा पण्णत्ता, तं जहा–अंडया, पोयया, संमुच्छिमा। ३७. अंडया मच्छा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा। ३८. पोतया मच्छा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा।**

३६. मत्स्य तीन प्रकार के होते है–(१) अण्डज (अण्डे से उत्पन्न), (२) पोतज (बिना आवरण के उत्पन्न), और (३) सम्मूर्च्छिम (पुद्‌गल-सयोगो से उत्पन्न)। ३७. अण्डज मत्स्य तीन प्रकार के होते है–

(१) स्त्री, (२) पुरुष, और (३) नपुसक वेद वाले। ३८. पोतज मत्स्य तीन प्रकार के होते हैं–(१) स्त्री, (२) पुरुष, और (३) नपुंसक वेद वाले। (संमूर्च्छिम मत्स्य नपुंसक ही होते है।)

**36.** *Matsya* (fish) are of three kinds—(1) *andaj* (born from an egg, such as a swan), (2) *potaj* (born as a fully formed infant, such as an elephant), and (3) *sammurchhım* (produced from asexual origin, such as insects produced in a mixture of cowdung and sand). **37.** *Andaj matsya* are of three kinds—(1) *stree* (female), (2) *purush* (male), and (3) *napumsak* (neuter) **38.** *Potaj matsya* are of three kinds—(1) *stree* (female), (2) *purush* (male),and (3) *napumsak* (neuter). (*Sammurchhım* beings are neuter only)

### पक्षि–पद PAKSHI-PAD (SEGMENT OF BIRDS)

**३९. तिविहा पक्खी पण्णत्ता, तं जहा–अंडया, पोयया, संमुच्छिमा। ४०. अंडया पक्खी तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा। ४१. पोयया पक्खी तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा।**

३९. पक्षी तीन प्रकार के होते है–(१) अण्डज, (२) पोतज, और (३) सम्मूर्च्छिम। ४०. अण्डज पक्षी तीन प्रकार के होते है–(१) स्त्री, (२) पुरुष, और (३) नपुसक वेद वाले। ४१. पोतज पक्षी तीन प्रकार के होते हैं–(१) स्त्री, (२) पुरुष, और (३) नपुंसक वेद वाले।

**39.** *Pakshı* (birds) are of three kinds—(1) *andaj*, (2) *potaj,* and (3) *sammurchhım* **40.** *Andaj pakshı* are of three kinds—(1) female, (2) male, and (3) neuter **41.** *Potaj pakshı* are of three kinds—(1) female) (2) male, and (3) neuter

### परिसर्प–पद PARISARP-PAD (SEGMENT OF REPTILES)

**४२–४४. एवमेतेणं अभिलावेणं उरपरिसप्पा वि भाणियव्वा (३), ४५–४७. भुजपरिसप्पा वि (३)।**

४२–४४. इसी प्रकार उरपरिसर्प के भी तीन-तीन भेद अण्डज, पोतज और सम्मूर्च्छिम तथा प्रत्येक के स्त्री, पुरुष और नपुंसक तीन-तीन भेद जानना चाहिए। ४५–४७. इसी प्रकार भुजपरिसर्प के तीन-तीन प्रकार जानने चाहिए।

**42-44.** In the same way *ur-parisarp* (non-lımbed reptiles) are of three kinds—*andaj, potaj* and *sammurchhim*. And each of *andaj* and *potaj* kinds have three classes—female, male and neuter **45-47.** Same also applies to *bhuj-parisarp* (lımbed reptıles).

विवेचन–उदर, वक्षःस्थल अथवा भुजाओं आदि के बल पर सरकने या चलने वाले जीव परिसर्प कहे जाते है। इनकी मुख्य रूप से दो जातियाँ होती है–(१) उरःपरिसर्प, और (२) भुजपरिसर्प। पेट और छाती के बल पर रेंगने या सरकने वाले साँप आदि उरःपरिसर्प। भुजाओ के बल पर चलने वाले नेउले, गोह आदि भुजपरिसर्प कहलाते हैं। *(विस्तार के लिए देखे हिन्दी टीका, पृष्ठ ३५८)*

**Elaboration**—Reptiles that slither on abdomen, breast and with the help of limbs are called *parısarp* They are mainly of two types—*ur-parisarp* (non-lımbed reptiles) and *bhuj-parısarp* (limbed reptıles). Those slithering on abdomen and without lımbs are *ur-parısarp* (non-lımbed reptiles, such as snakes) and those with lımbs are *bhuj-parısarp* (lımbed reptiles, such as mongoose and lızards) *(for detaıls refer to Hındı Tika, p 358)*

### स्त्री–पद STREE-PAD (SEGMENT OF FEMALES)

**४८. तिविहाओ इत्थीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–तिरिक्खजोणित्थीओ, मणुस्सित्थीओ देवित्थीओ। ४९. तिरिक्खजोणीओ इत्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–जलचरीओ थलचरीओ, खहचरीओ। ५०. मणुस्सित्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–कम्मभूमियाओ, अकम्मभूमियाओ अंतरदीविगाओ।**

४८. स्त्रियाँ तीन प्रकार की है–(१) तिर्यग्योनिक स्त्री, (२) मनुष्य स्त्री, और (३) देव स्त्री। ४९. तिर्यग्योनिक स्त्रियाँ तीन प्रकार की है–(१) जलचरी, (२) स्थलचरी, और (३) खेचरी (आकाश में उडने वाली)। ५०. मनुष्य स्त्रियाँ तीन प्रकार की है–(१) कर्मभूमिजा, (२) अकर्मभूमिजा, और (३) अन्तर्द्वीपजा (छप्पन अन्तर्द्वीपो मे जन्म लेने वाले)।

**48.** *Stree* (females) are of three kınds—(1) *tıryakyonık stree* (female of anımal), (2) *manushya stree* (female of humans), and (3) *deva stree* (female of dıvıne beıngs) **49.** *Tıryakyonık stree* are of three kinds—(1) *jalacharı* (aquatıc), (2) *sthalacharı* (terrestrıal), and (3) *khecharı* (avıan) **50.** *Manushya stree* are of three kınds—(1) *karmabhumija* (belongıng to the land of actıvıty), (2) *akarmabhumıja* (belongıng to the land of non-activity), and (3) *antardveepaja* (belongıng to mıddle ıslands).

### पुरुष–पद PURUSH-PAD (SEGMENT OF MALES)

**५१. तिविहा पुरिसा पण्णत्ता, तं जहा–तिरिक्खजोणियपुरिसा, मणुस्सपुरिसा, देवपुरिसा। ५२. तिरिक्खजोणियपुरिसा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–जलचरा, थलचरा, खहचरा। ५३. मणुस्सपुरिसा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–कम्मभूमिया, अकम्मभूमिया, अंतरदीवगा।**

५१. पुरुष तीन प्रकार के है–(१) तिर्यग्योनिक पुरुष, (२) मनुष्य पुरुष, और (३) देव पुरुष। ५२. तिर्यग्योनिक पुरुष तीन प्रकार के है–(१) जलचर, (२) स्थलचर, और (३) खेचर। ५३. मनुष्य पुरुष तीन प्रकार के है–(१) कर्मभूमिज, (२) अकर्मभूमिज, और (३) अन्तर्द्वीपज।

**51.** *Purush* (males) are of three kinds—(1) *tiryakyonik purush* (male of animal), (2) *manushya purush* (male of humans), and (3) *deva purush* (male divine beings). **52.** *Tiryakyonik purush* are of three kinds—(1) *jalachar* (aquatic), (2) *sthalachar* (terrestrial), and (3) *khechar* (avian). **53.** *Manushya purush* are of three kinds—(1) *karmabhumij*, (2) *akarmabhumij*, and (3) *antardveepaj*.

### नपुंसक-पद NAPUMSAK-PAD (SEGMENT OF NEUTERS)

**५४. तिविहा णपुंसगा पण्णत्ता, तं जहा–णेरइय णपुंसगा, तिरिक्खजोणिय णपुंसगा, मणुस्स णपुंसगा। ५५. तिरिक्खजोणियणपुंसगा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–जलयरा, थलयरा, खहयरा। ५६. मणुस्स णपुंसगा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–कम्मभूमिगा, अकम्मभूमिगा, अंतरदीवगा।**

५४. नपुसक तीन प्रकार के होते है–(१) नैरयिक नपुंसक, (२) तिर्यग्योनिक नपुंसक, और (३) मनुष्य नपुसक। ५५. तिर्यग्योनिक नपुसक तीन प्रकार के होते हैं–(१) जलचर, (२) स्थलचर, और (३) खेचर। ५६. मनुष्य नपुंसक तीन प्रकार के होते है–(१) कर्मभूमिज, (२) अकर्मभूमिज, और (३) अन्तर्द्वीपज (देवगति मे नपुंसक नही होते)।

**54.** *Napumsak* (neuters) are of three kinds—(1) *nairayik napumsak* (neuter infernal beings), (2) *tiryakyonik napumsak* (neuter animal), and (3) *manushya napumsak* (neuter humans) **55.** *Tiryakyonik napumsak* are of three kinds—(1) *jalachar* (aquatic), (2) *sthalachar* (terrestrial), and (3) *khechar* (avian) **56.** *Manushya napumsak* are of three kinds—(1) *karmabhumij*, (2) *akarmabhumij*, and (3) *antardveepaj* (there are no neuters among divine beings)

### तिर्यग्योनिक-पद TIRYAGYONIK-PAD (SEGMENT OF ANIMALS)

**५७. तिविहा तिरिक्खजोणिया पण्णत्ता, तं जहा–इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा।**

५७. तिर्यग्योनिक जीव तीन प्रकार के होते है–(१) स्त्री तिर्यंच, (२) पुरुष तिर्यंच, और (३) नपुंसक तिर्यंच।

**57.** *Tiryakyonik jiva* (animals) are of three kinds—(1) *stree tiryanch* (female animals), (2) *purush tiryanch* (male animals), and (3) *napumsak tiryanch* (neuter animals).

**विवेचन**–नारको में केवल एक नपुंसक वेद होता है। शेष तीन गति के जीवो मे स्त्रियों का होना कहा गया है। तिर्यग्योनि के जीव तीन प्रकार के होते है–(१) जलचर–मत्स्य, मेढक आदि। (२) स्थलचर–बैल, हाथी आदि। (३) खेचर–मोर, कबूतर, बगुला आदि। मनुष्य तीन प्रकार के होते हैं–(१) कर्मभूमिज, (२) अकर्मभूमिज, और (३) अन्तर्द्वीपज। जहाँ पर मषि, असि, कृषि आदि कर्मों के द्वारा जीवननिर्वाह किया जाता है, उसे कर्मभूमि कहते हैं। शेष हैमवत आदि क्षेत्रों मे तथा सुषम-सुषमा आदि तीन कालों

मे उत्पन्न हुए मनुष्य-तिर्यंचों को अकर्मभूमिज या भोगभूमिज कहा जाता है, क्योंकि वहाँ के मनुष्य और तिर्यंच प्रकृति-जन्य कल्पवृक्षो द्वारा प्रदत्त भोगो को भोगते हैं। उक्त दो जाति के अतिरिक्त लवण समुद्रो आदि के भीतर स्थित द्वीपो मे उत्पन्न होने वाले मनुष्यो को अन्तर्द्वीपज कहते हैं।

**Elaboration**—There is only one physical gender (*veda*) among infernal beings—neuter Females exist in all the remaining three genuses. In the animal world there are three kinds of beings—(1) *jalachar* or aquatic, such as fish and frog, (2) *sthalachar* or terrestrial, such as bull and elephant, and (3) *khechar* or avian, such as peacock and pigeon Human beings are of three kinds—(1) *karmabhumij*, (2) *akarmabhumij*, and (3) *antardveepaj* *Karmabhumi* (land of action) is place where people subsist on work, such as farming, branding weapons, writing etc. There are areas like *Haimavat* area and epochs like *Sukham-sukhama* where human beings and even animals survive on things provided by *kalp-vrikshas* (wish fulfilling trees) These humans and animals are called *akarmabhumij* (belonging to the land of no work) or *bhogbhumij* (belonging to the land of enjoyment) Besides these, humans born on islands in the *Lavan* and other *Samudras* (the seas separating continents) are called *antardveepaj* (belonging to the middle islands)

### *लेश्या-पद* LESHYA-PAD (SEGMENT OF SOUL-COMPLEXION)

**५८. णेरइयाणं तओ लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–कण्हलेसा, णीललेसा, काउलेसा। ५९. असुरकुमाराणं तओ लेसाओ संकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–कण्हलेसा, णीललेसा, काउलेसा। ६०. एवं जाव थणियकुमाराणं। ६१. एवं–पुढविकाइयाणं आउ–वणस्सतिकाइयाण वि। ६२. तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं बेइंदयाणं तेइंदयाणं चउरिंदियाणवि तओ लेस्सा, जहा णेरइयाणं। ६३. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं तओ लेसाओ संकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–कण्हलेसा, णीललेसा, काउलेसा। ६४. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं तओ लेसाओ असंकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा। ६५-६६. एवं मणुस्साण वि। ६७. वाणमंतराणं जहा असुरकुमाराणं। ६८. वेमाणियाणं तओ लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा–तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा।**

५८. नैरयिको मे तीन लेश्याएँ होती है-(१) कृष्णलेश्या, (२) नीललेश्या, और (३) कापोतलेश्या। ५९. असुरकुमारो मे तीन अशुभ लेश्याएँ है-(१) कृष्णलेश्या, (२) नीललेश्या, और (३) कापोतलेश्या। ६०. इसी प्रकार स्तनितकुमार तक के सभी भवनवासी देवो मे तीनो अशुभ (सक्लिष्ट) लेश्याएँ हैं। ६१. (१) पृथ्वीकायिक, (२) अप्कायिक, और (३) वनस्पतिकायिक जीवो मे भी तीनो अशुभ लेश्याएँ

होती हैं। ६२. तेजस्कायिक, वायुकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवो में भी नारकों के समान तीनों अशुभ लेश्याएँ होती हैं। ६३. पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीवो मे तीन संक्लिष्ट-अशुभ लेश्याएँ होती हैं-(१) कृष्णलेश्या, (२) नीललेश्या, और (३) कापोतलेश्या। ६४. पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीवों में तीन शुभ लेश्याएँ होती हैं-(१) तेजोलेश्या, (२) पद्मलेश्या, और (३) शुक्ललेश्या। ६५. इसी प्रकार मनुष्यो मे भी तीन अशुभ लेश्याएँ ६६. और तीन शुभ लेश्याएँ होती है। ६७. वाणव्यन्तरो मे असुरकुमारो के समान तीन अशुभ लेश्याएँ होती हैं। ६८. वैमानिक देवो मे तीन शुभ लेश्याएँ होती है-(१) तेजोलेश्या, (२) पद्मलेश्या, और (३) शुक्ललेश्या।

**58.** *Nairayiks* (infernal beings) have three *leshyas* (complexions of soul)—(1) *krishna leshya* (black complexion of soul), (2) *neel leshya* (blue complexion of soul), and (3) *kapot leshya* (pigeon-like complexion of soul). **59.** *Asur Kumars* (a kind of lower gods) have three *sanklisht* (pain causing or gloomy) *leshyas* (complexions of soul)—(1) *krishna leshya* (black complexion of soul), (2) *neel leshya* (blue complexion of soul), and (3) *kapot leshya* (pigeon complexion of soul) **60.** In the same way all *Bhavanvasi* (abode dwelling) gods up to *Stanit Kumars* have these three *sanklisht leshyas* (gloomy complexions of soul) **61.** (1) *Prithvikayik* (earth-bodied beings), (2) *apkayik* (water-bodied beings) and (3) *vanaspatikayik* (plant-bodied beings) too have these three *sanklisht leshyas* (gloomy complexions of soul) **62.** Like infernal beings *tejaskayik* (fire-bodied beings), *vayukayik* (air-bodied beings), *dvindriya* (two sensed beings), *trindriya* (three sensed beings) and *chaturindriya* (four sensed beings) also have these three *sanklisht leshyas* (gloomy complexions of soul). **63.** *Panchendriya tiryakyoniks* (five sensed animals) have three *sanklisht leshyas* (gloomy complexions of soul)—(1) *krishna leshya* (black complexion of soul), (2) *neel leshya* (blue complexion of soul), and (3) *kapot leshya* (pigeon complexion of soul) **64.** *Panchendriya tiryakyoniks* (five sensed animals) have three *asanklisht leshyas* (not pain causing or bright complexions of soul)—(1) *tejoleshya* (fiery complexion of soul), (2) *padma leshya* (yellow complexion of soul), and (3) *shukla leshya* (white complexion of soul) **65-66.** In the same way human beings too have three gloomy and three bright complexions of soul **67.** *Vanavyantars* (interstitial gods) have three gloomy complexions of soul like *Asur Kumars*. **68.** *Vaimanik* gods (celestial vehicle based gods) have three bright complexions of soul—(1) *tejoleshya* (fiery complexion of soul), (2) *padma leshya* (yellow complexion of soul), and (3) *shukla leshya* (white complexion of soul).

विवेचन–शुभ (असक्लिष्ट) लेश्या–(१) तेजो, (२) पद्म, और (३) शुक्ललेश्या। अशुभ (संक्लिष्ट) लेश्या–(१) कृष्ण, (२) नील, और (३) कापोतलेश्या।

**Elaboration**—*Shubh* (auspicious) or *asanklisht* (not pain causing or bright) *leshyas* (complexions of soul)—(1) *tejoleshya* (fiery complexion of soul), (2) *padma leshya* (yellow complexion of soul), and (3) *shukla leshya* (white complexion of soul) *Ashubh* (inauspicious) or *sanklisht* (pain causing or gloomy) *leshyas* (complexions of soul)—(1) *krishna leshya* (black complexion of soul), (2) *neel leshya* (blue complexion of soul), and (3) *kapot leshya* (pigeon complexion of soul)

### *तारारूप–चलन–पद* TARARUPA-CHALAN-PAD OF FORM AND FALL OF STARS)

**६९. तिहिं ठाणेहिं तारारूवे चलेज्जा, तं जहा–विकुव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा, ठाणाओ वा ठाणं संकममाणे तारारूवे चलेज्जा।**

६९. तीन कारणो से तारा चलित होते है–(१) वैक्रिय रूप करते हुए, (२) परिचारणा करते हुए, और (३) एक स्थान से दूसरे स्थान मे सक्रमण करते हुए।

**69.** Due to three reasons *Tara* (stellar gods or stars) appear to be falling—(1) when undergoing self-mutation (*vaikriya rupa*), (2) when indulging in sexual act (*paricharana*), and (3) when shifting from one place to another (*sankraman*)

### *देव–विक्रिया–पद* DEV-VIKRIYA-PAD (SEGMENT OF SELF-MUTATION OF GODS)

**७०. तिहिं ठाणेहिं देवे विज्जुयारं करेज्जा, तं जहा–विकुव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा, तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढिं जुतिं जसं बलं वीरियं पुरिसक्कार–परक्कमं उवदंसेमाणे देवे विज्जुयारं करेज्जा। ७१. तिहिं ठाणेहिं देवे थणियसद्दं करेज्जा, तं जहा–विकुव्वमाणे वा, एवं जहा–विज्जुयारं तहेव थणियसद्दं।**

७०. तीन कारणों से देव विद्युत्कार (विद्युत्प्रकाश) करते है–(१) वैक्रियरूप करते हुए, (२) परिचारणा करते हुए, और (३) तथारूप श्रमण माहन के सामने अपनी ऋद्धि, द्युति, यश, बल, वीर्य, पुरुषकार तथा पराक्रम का प्रदर्शन करते हुए। ७१. तीन कारणो से देव मेघ जैसी गर्जना (स्तनित शब्द) करते हैं–(१) वैक्रिय रूप करते हुए, (२) परिचारणा करते हुए, और (३) तथारूप श्रमण माहन के सामने अपनी ऋद्धि, द्युति, यश, बल, वीर्य, पुरुषकार तथा पराक्रम का प्रदर्शन करते हुए।

**70.** Due to three reasons *devas* (divine beings) appear to be doing *vidyutkar* (emitting spurts of light like lightening)—(1) when undergoing self-mutation (*vaikriya rupa*), (2) when indulging in sexual act (*paricharana*), and (3) when displaying their *riddhi* (opulence), *dyuti*

(radiance), *yash* (fame), *bal* (strength), *virya* (potency), *purushakar* (ego of prowess) and *parakram* (ego of valorous action). **71.** There are three reasons why *devs* (divine beings) appear to be producing *stanit shabd* (thundering sound)—(1) when undergoing self-mutation (*vaikriya rupa*), (2) when indulging in sexual act (*paricharana*), and (3) when displaying their *riddhi* (opulence), *dyuti* (radiance), *yash* (fame), *bal* (strength), *virya* (potency), *purushakar* (ego of prowess) and *parakram* (ego of valorous action)

**पारिभाषिक शब्द**—ऋद्धि विमान एव परिवार आदि का वैभव। द्युति—शरीर और आभूषण आदि की कान्ति। यश—प्रख्याति या प्रसिद्धि। बल—शारीरिक शक्ति। वीर्य—आत्मिक शक्ति। पुरुषकार—पुरुषार्थ करने का अभिमान। पराक्रम—पुरुषार्थजनित अहंकार। *(स्थानाग वृत्ति, पृष्ठ १९५)*

**TECHNICAL TERMS**

*Riddhi*—family wealth including *vimaans* (celestial vehicles); opulence *Dyuti*—radiance of body and adornments. *Yash*—fame. *Bal*—physical strength *Virya*—spiritual power or potency *Purushakar*—ego felt while performing valorous action, ego of prowess *Parakram*—ego felt as a consequence of performing valorous action *(Sthananga Vritti, p 195)*

### *अन्धकार–उद्योत आदि–पद* ANDHAKAR-UDYOT AADI-PAD (SEGMENT OF DARKNESS, LIGHT ETC.)

**७२. तिहिं ठाणेहिं लोगंधयारे सिया, तं जहा—अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं, अरहंत पण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे, पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे। ७३. तिहिं ठाणेहिं लोगुज्जोते सिया, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु।**

७२. तीन कारणो से मनुष्यलोक मे अधकार होता है–(१) अरहतो के विच्छेद (निर्वाण) होने पर, (२) अर्हत–प्ररूपित धर्म के विच्छेद होने पर, और (३) चतुर्दश पूर्वगत श्रुत के विच्छेद होने पर। ७३. तीन कारणों से मनुष्यलोक मे उद्योत (प्रकाश) होता है–(१) अरहन्तो (तीर्थंकरो) का जन्म होने पर, (२) अरहन्तो के प्रव्रजित होने के अवसर पर, और (३) अरहन्तो के केवलज्ञान उत्पन्न होने की महिमा के अवसर पर।

**72.** There are three reasons for spread of darkness in *manushyalok* (human realm or the land inhabited by humans)—(1) on *vichchhed* (extinction or nirvana) of *Arihants* (*Tirthankars*), (2) on *vichchhed* (extinction) of the religion propagated by *Arhat*, and (3) on *vichchhed* (extinction) of *Purvagat Shrut* (the subtle canon) **73.** There are three reasons for spread of light in *manushyalok* (human realm or the land inhabited by humans)—(1) at the time of birth of *Arihants*, (2) at the

time of initiation of *Arihants,* and (3) at the time of celebrating the attainment of *Keval jnana* (omniscience) by *Arihants*.

**७४. तिहिं ठाणेहिं देवंधकारे सिया, तं जहा–अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं, अरहंत पण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे, पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे। ७५. तिहिं ठाणेहिं देवुज्जोते सिया, तं जहा–अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु।**

७४. तीन कारणो से देवलोक मे अधकार होता है–(१) अरहन्तो के विच्छेद होने पर, (२) अर्हत्–प्ररूपित धर्म के विच्छेद होने पर, और (३) पूर्वगत श्रुत के विच्छेद होने पर। ७५. तीन कारणो से देवलोक के भवनो आदि मे उद्योत होता है–(१) अरहन्तों के जन्म लेने के समय, (२) अरहन्तों के प्रव्रजित होने के समय, और (३) अरहन्तो के केवलज्ञान उत्पन्न होने की महिमा के समय।

**74.** There are three reasons for spread of darkness in *devlok* (divine realm or the heavens)—(1) on nirvana of *Arihants*, (2) on extinction of the religion propagated by *Arhat,* and (3) on extinction of the subtle canon. **75.** There are three reasons for spread of light in *devlok* (divine realm)—(1) at the time of birth of *Arihants,* (2) at the time of initiation of *Arihants,* and (3) at the time of celebrating the attainment of omniscience by *Arihants*

**७६. तिहिं ठाणेहिं देवसण्णिवाए सिया, तं जहा–अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु। ७७. एवं देवुक्कलिया। ७८. एवं देवकहकहए। ७९. तिहिं ठाणेहिं देविंदा माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति, तं जहा–अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु। ८०. एवं–सामाणिया, तायत्तीसगा, लोगपाला देवा, अग्गमहिसीओ देवीओ, परिसोववण्णगा देवा, अणियाहिवई देवा, आयरक्खा देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति।**

७६. तीन कारणो से देव-सन्निपात–(देवो का मनुष्यलोक मे आगमन) होता है–(१) अरहन्तो का जन्म होने पर, (२) अरहन्तो के प्रव्रजित होने के अवसर पर, और (३) अरहन्तो के केवलज्ञान उत्पन्न होने की महिमा के प्रसंग पर। ७७. इसी प्रकार देवोत्कलिका (विमानवासी देवताओ का महासमागम), और ७८. देव कह–कह (हर्षवश किया हुआ कल–कल शब्द) भी उक्त तीन कारणो से होता है। ७९. तीन कारणो से देवेन्द्र अति शीघ्र मनुष्यलोक में आते है–(१) अरहन्तो के जन्म होने पर, (२) अरहन्तो के प्रव्रजित होने के अवसर पर, और (३) अरहन्तो के केवलज्ञान उत्पन्न होने का महोत्सव मनाने। ८०. इसी प्रकार सामानिक, त्रायस्त्रिंशक और लोकपाल देव, अग्रमहिषी देवियाँ, पारिषद्य देव, अनीकाधिपति तथा आत्मरक्षक देव उक्त तीन कारणों से शीघ्र मनुष्यलोक मे आते हैं।

**76.** There are three reasons for *dev-sannipat* (descending of gods on the land of humans or earth)—(1) at the time of birth of *Arihants*, (2) at the

time of initiation of *Arihants,* and (3) at the time of celebrating the attainment of omniscience by *Arihants* **77.** In the same way for *devotkalika* (great congregation of *vimaan* dwelling gods) and **78.** *dev-kahakaha* (divine laughter as expression of joy) also there are three aforesaid reasons. **79.** There are three reasons (occasions) for *devendras* (overlords of gods) to rush to the land of humans or earth—(1) at the time of birth of *Arihants*, (2) at the time of initiation of *Arihants,* and (3) at the time of celebrating the attainment of omniscience by *Arihants*. **80.** In the same way for three aforesaid reasons various gods rush to earth. These include—*samanik* gods, *tryastrinshik* gods and *lok-pal* gods, *agramahishi* goddesses, *parishadya* gods, *aneekadhipati* gods and *atmarakshak* gods

**पारिभाषिक शब्द—सामानिक** आज्ञा-ऐश्वर्य के अतिरिक्त स्थान, आयु, शक्ति, परिवार और भोगोपभोग आदि मे इन्द्र के समान वैभव वाले। **त्रायस्त्रिंश**—इन्द्र के मन्त्री और पुरोहित स्थानीय देव। इनकी संख्या ३३ होती है। **लोकपाल**—देवलोक का पालन रक्षण करने वाले। ये सोम आदि दिग्पाल देव है। इन्द्रसभा के सदस्य **पारिषद्य**, देवसेना के स्वामी **अनीकाधिपति** और इन्द्र के अग-रक्षक को **आत्म-रक्षक** कहा जाता है। *(स्थानाग वृत्ति, पृष्ठ १९८)*

**TECHNICAL TERMS**

*Samanik* gods—gods who, except for status and glory, are equal to *Indra* (overlord) in all respects including place, life span, power, retinue, and affluence *Tryastrinshik* gods—gods who hold positions of ministers and priests of *Indra*, they are thirty three in number *Lok-pal* gods—guardian gods of the divine realm They include Som and other directional gods. *Agramahishi* goddesses—chief queens of overlords of gods. *Parishadya* gods—members of *Indras* court *Aneekadhipati* gods—commanders of divine armies *Atmarakshak* gods—personal guards of overlords. (*Sthananga Vritti* p. 198)

**८१. तिहिं ठाणेहिं देवा अब्भुट्ठिज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं जाव तं चेव। ८२. एवं आसणाइं चलेजा। ८३. सीहणायं करेज्जा। ८४. चेलुक्खेवं करेज्जा। ८५. तिहिं ठाणेहिं चेइयरुक्खा चलेज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं तं चेव। ८६. तिहिं ठाणेहिं लोगंतिया देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छेज्जा, तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरहंताणं णाणुप्पायहिमासु।**

८१. तीन कारणों से देव अपने सिंहासन से तत्क्षण उठ खडे होते है-(१) अरहतों के जन्म होने पर, यावत् (२) अरहन्तों के प्रव्रजित होने के समय, और (३) अरहन्तो के केवलज्ञान उत्पन्न होने की महिमा के समय)। ८२. इसी प्रकार 'आसनों' का चलना, ८३. सिंहनाद करना, और ८४. चेलोत्क्षेप करना (वस्त्रों का उछालना) भी जानना चाहिए। ८५. तीन कारणो से देवो के चैत्य वृक्ष (सुधर्मा सभा

के द्वार पर स्थित वृक्ष) चलित होते है–अरहन्तों के जन्म होने पर [अरहन्तो के प्रव्रज्या और केवलज्ञान प्रसंग पर। ८६. तीन कारणों से लोकान्तिक देव (पाँचवे देवलोक मे लोक के अन्त भाग मे रहने वाले) तत्क्षण मनुष्यलोक में आते हैं–(१) अरहन्तों के जन्म होने पर, (२) अरहन्तो के प्रव्रजित होने के अवसर, और (३) अरहन्तो के केवलज्ञान उत्पन्न होने की महिमा के प्रसंग पर।

**81.** There are three reasons (occasions) for gods to get up at once from their thrones—(1) at the time of birth of *Arihants*, (2) at the time of initiation of *Arihants*, and (3) at the time of celebrating the attainment of omniscience by *Arihants* The same is true for the following actions of gods—**82.** movement of thrones, **83.** roaring like a lion (*simhanaad*), and **84.** tossing of dresses (*chelotkshep*) **85.** There are three reasons for swinging of the divine *chaitya vrikshas* (trees located at the gates of *Sudharma sabha* or divine assembly)—at the time of birth of *Arihants* and so on (at the time of initiation of *Arihants* and at the time of celebrating the attainment of omniscience by *Arihants*) **86.** There are three reasons for *Lokantik* gods (gods dwelling at the edge of the universe in the fifth *dev-lok*) for coming to the earth at once—(1) at the time of birth of *Arihants*, (2) at the time of initiation of *Arihants*, and (3) at the time of celebrating the attainment of omniscience by *Arihants*

### दुष्प्रतिकार–पद DUSHPRATIKAR-PAD (SEGMENT OF DIFFICULT RECOMPENSE)

८७. तिण्हं दुप्पडियारं समणाउसो ! तं जहा–अम्मापिउणो, भट्टिस्स, धम्मायरियस्स।

(१) संपातोवि य णं केइ पुरिसे अम्मापियरं सयपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगेत्ता, सुरभिणा गंधट्टएणं उव्वट्टित्ता, तिहिं उदगेहिं मज्जावेत्ता, सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता, मणुण्णं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भोयावेत्ता जावज्जीवं पिट्ठिवडेंसियाए परिवहेज्जा, तेणावि तस्स अम्मापिउस्स दुप्पडियारं भवइ। अहे णं से तं अम्मापियरं केवलिपण्णत्ते धम्मे आघवइत्ता पण्णवइत्ता परूवइत्ता ठावइत्ता भवति, तेणामेव तस्स अम्मापिउस्स सुप्पडियारं भवति समणाउसो !

(२) केइ महच्चे दरिद्दं समुक्कसेज्जा। तए णं से दरिद्दे समुक्किट्ठे समाणे पच्छा पुरं च णं विउलभोगसमितिसमण्णागते यावि विहरेज्जा। तए णं से महच्चे अण्णया कयाइ दरिद्दीहूए समाणे तस्स दरिद्दस्स अंतिए हव्वमागच्छेज्जा। तए णं से दरिद्दे तस्स भट्टिस्स सव्वस्समवि दलयमाणे तेणावि तस्स दुप्पडियारं भवति। अहे णं से तं भट्टिं केवलिपण्णत्ते धम्मे आघवइत्ता पण्णवइत्ता परूवइत्ता ठावइत्ता भवति, तेणामेव तस्स भट्टिस्स सुप्पडियारं भवति।

(३) केइ तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा णिसम्म कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णे। तए णं से देवे तं

**धम्मायरियं दुब्भिक्खाओ वा देसाओ सुभिक्खं देसं साहरेज्जा, कंताराओ वा णिक्कंतारं करेज्जा, दीहकालिएणं वा रोगातंकेणं अभिभूतं समाणं विमोएज्जा, तेणावि तस्स धम्मायरियस्स दुप्पडियारं भवति। अहे णं से तं धम्मायरियं केवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भट्टं समाणं भुज्जोवि केवलिपण्णत्ते धम्मे आघवइत्ता पण्णवइत्ता परूवइत्ता ठावइत्ता भवति, तेणामेव तस्स धम्मायरियस्स सुप्पडियारं भवति।**

८७. भगवान ने कहा–''आयुष्मान् श्रमणो ! ये तीन पद दुष्प्रतिकार है (–इनसे ऋण–मुक्त होना दु शक्य है)–(१) माता–पिता, (२) भर्ता (पालन–पोषण करने वाला स्वामी), और (३) धर्माचार्य।

(१) कोई पुरुष (पुत्र) अपने माता–पिता का प्रात काल होने पर शतपाक और सहस्रपाक तेलो से मालिश कर, सुगन्धित चूर्ण से उबटन कर, सुगन्धित जल, शीतल जल एवं उष्ण जल से स्नान कराकर, सर्व अलकारों से उन्हे विभूषित कर, अठारह प्रकार के स्थाली–पाक शुद्ध व्यंजनो से युक्त भोजन कराकर, जीवन–पर्यन्त **पृष्ठ्यवतंसिका**–(पीठ पर बैठाकर या कावड मे बिठाकर कन्धे से) उनका परिवहन करे, तो भी वह उनके (माता–पिता के) उपकारो से ऋण–मुक्त नही हो सकता। आयुष्मान् श्रमणो ! वह उनसे तभी ऋण–मुक्त हो सकता है जबकि उन माता–पिता को सम्बोधित कर, धर्म का स्वरूप और उसके भेद–प्रभेद बताकर केवलि–प्ररूपित धर्म मे स्थापित करता है।

(२) कोई धनवान व्यक्ति किसी दरिद्र पुरुष का धनादि से समुत्कर्ष करता है। उसे ऊँचा उठाता है। सयोगवश कुछ समय के बाद या शीघ्र ही वह दरिद्र, विपुल भोग–सामग्री से सम्पन्न हो जाता है और वह उपकार करने वाला धनिक किसी समय दरिद्र होकर सहायता की इच्छा से उसके पास आता है। उस समय वह भूतपूर्व दरिद्र अपने पहले वाले स्वामी को सब कुछ अर्पण करके भी उसके उपकारों से ऋण–मुक्त नही हो सकता है। वह उसके उपकार से तभी ऋण–मुक्त हो सकता है जबकि उसे समझाकर, धर्म का स्वरूप और उसके भेद–प्रभेद बताकर केवलि–प्ररूपित धर्म मे स्थिर करता है।

(३) कोई व्यक्ति तथारूप श्रमण माहन के (धर्माचार्य के) पास एक भी श्रेष्ठ धार्मिक सुवचन सुनकर, हृदय मे धारण कर मृत्युकाल मे मरकर, किसी देवलोक मे देव रूप से उत्पन्न होता है। किसी समय वह देव अपने धर्माचार्य को दुर्भिक्ष वाले प्रदेश से सुभिक्ष वाले प्रदेश मे लाकर रख दे, जगल से बस्ती में ले जाये या दीर्घकालीन रोगातक से पीडित होने पर उन्हे उससे मुक्त कर दे, तो भी वह देव उस धर्माचार्य के उपकार से उऋण नहीं हो सकता है। वह उनसे तभी ऋण–मुक्त हो सकता है जब कदाचित् उस धर्माचार्य के केवलि–भाषित धर्म से भ्रष्ट हो जाने पर उसे सम्बोधित कर, धर्म का स्वरूप और उसके भेद–प्रभेद बताकर केवलि–प्ररूपित धर्म मे स्थापित करता है।

**87.** *Bhagavan* said—"Long lived *Shramans* ! Three relations are *dushpratikar* (difficult to recompense)—(1) parents, (2) protector guardian (*bharta*), and (3) religious head.

(1) A person cannot recompense and get free of the obligations of his parents even if he does the following daily throughout his life—in the morning he massages their bodies with *shatapaak* and *sahasrapaak* oils (herbal and perfumed oils), rubs perfumed powders and helps them taking bathe with perfumed cold and hot water After this he adorns them with a variety of ornaments and offers them pure and nourishing freshly cooked dishes with eighteen kinds of flavours. And then takes them around on his back or shoulders "Long lived *Shramans* ! He can get free of their obligation only if he addresses them and explains them the true religion and its subtleties to establish them in the religion propagated by the Omniscient

(2) Some rich person gives financial help to some poor person and ensures his development As time passes the poor person becomes rich and affluent and the rich benefactor becomes poor The benefactor approaches the newly made rich person to seek help At that time even if the ex-poor gives all his wealth to his benefactor, he cannot fully recompense and get free of the obligation He can get free of the obligation only if he explains his benefactor the true religion and its subtleties in order to establish him in the religion propagated by the Omniscient

(3) A person listens to just a single pious word from a *Shraman* preceptor, remembers it at the time of his death and as a consequence reincarnates as a divine being At any time if that god shifts his preceptor from drought stricken area to a well cultivated area, from a jungle to an inhabited place or cures him of some fatal disease even then he cannot get free of the obligation of the preceptor He can get free of the obligation only if he explains his benefactor the true religion and its subtleties to re-establish him in the religion propagated by the Omniscient when the *Shraman* preceptor falls from grace.

**विवेचन**—अभयदेवसूरि ने शतपाक के चार अर्थ किये है–(१) सौ औषधियो के क्वाथ से पकाया गया, (२) सौ औषधियो के साथ पकाया गया, (३) सौ बार पकाया गया, और (४) सौ रुपयों के मूल्य से पकाया गया तैल। इसी प्रकार सहस्रपाक तैल के चार अर्थ किये है। स्थालीपाक का अर्थ है–हाडी, कुडी या वटलोई, भगौनी आदि मे पकाया गया स्वादिष्ट भोजन। अठारह व्यजनों से निष्पन्न का भाव है कि विविध प्रकार के मसालो आदि से बना हुआ भोजन स्वादिष्ट, सुरुचिकर आरोग्यवर्धक, बल-पुष्टिकारक होता है। *(स्थानांग वृत्ति, पृष्ठ २००)*

**Elaboration**—Abhayadev Suri has given four meanings of the term *shatpaak* (hundred cooking)—(1) cooked with broth of one hundred

herbs, (2) cooked with one hundred herbs, (3) cooked one hundred times, and (4) cooked oil costing one hundred rupees. In the same way he has given four meanings of the term *sahasrapaak* (thousand cooking). *Sthalipaak* means food cooked in suitable utensil like pitcher, bowl, small pitcher, deep pan etc Rich with eighteen flavours indicates that such food cooked with a variety of condiments, herbs and flavours is tasty, rich and nutritious *(Sthananga Vritti, p 200)*

**व्यतिव्रजन-पद VYATIVRAJAN-PAD (SEGMENT OF CROSSING)**

**८८. तिहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत-संसारकंतारं वीईवएज्जा, तं जहा—अणिदाणयाए, दिट्ठिसंपण्णयाए, जोगवाहियाए।**

८८. तीन स्थानो से सम्पन्न अनगार (साधु) इस अनादि-अनन्त, अतिविस्तीर्ण चातुर्गतिक ससार अटवी से पार हो जाता है-(१) अनिदानता से (भोग-प्राप्ति के लिए निदान नही करने से), (२) दृष्टिसम्पन्नता से (सम्यग्दर्शन की प्राप्ति से), और (३) योगवाहिता से (तपपूर्वक श्रुताभ्यास करने से)।

**88.** An ascetic endowed with three qualities crosses this beginningless and endless expanse of the wild that is this world of four genuses—(1) with *anidaanata* (lack of desire for mundane pleasures), (2) with *drishtismapannata* (acquisition of right perception/faith), and (3) with *yogavahita* (study of scriptures observing austerities)

विवेचन—अभयदेवसूरि ने योगवाहिता के दो अर्थ किये है-(१) **श्रुतोपधानकारिता** अर्थात् शास्त्राभ्यास के काल मे अल्प निद्रा लेना, अल्प भोजन एव मित--भाषण करना। विकथा, हास्यादि का त्याग करना। (२) **समाधिस्थायिता**—अर्थात् काम-क्रोध आदि का त्याग कर चित्त मे शान्ति और समाधि रखना। इस प्रकार की योगवाहिता के साथ निदानरहित एव सम्यक्त्व-सम्पन्न साधु इस अनादि-अनन्त संसार से पार हो जाता है।

**Elaboration**—Abhayadev Suri has given two meanings of *yogavahita*—(1) *Shrutopadhanakarita* which means to reduce sleep, food intake and speaking during study of scriptures Also to avoid gossip and other types of entertainment (2) *Samadhisthayita*—to abstain from lust, anger and other passions to attain peace and tranquillity. Indulging in study of scriptures this way, an ascetic, free of desires and endowed with righteousness, crosses this beginningless and endless jungle of mundane existence.

**कालचक्र-पद KAAL-CHAKRA-PAD (SEGMENT OF TIME CYCLE)**

**८९. तिविहा ओसप्पिणी पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा। ९०. एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ, जाव दूसम-दूसमा।**

९१. तिविहा उस्सप्पिणी पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा। ९२. एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ जाव सुसम-सुसमा।

८९. अवसर्पिणी तीन प्रकार की है—(१) उत्कृष्ट, (२) मध्यम, और (३) जघन्य। ९०. इसी प्रकार १ सुसम-सुसमा से क्रमश ६ दु षम-दुःषमा तक छहों आरों के उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य यों तीन-तीन भेद जानना चाहिए।

९१. उत्सर्पिणी तीन प्रकार की है—(१) उत्कृष्ट (अन्य अवसर्पिणियो की अपेक्षा उत्तम), (२) मध्यम (सामान्य), और (३) जघन्य (अन्य की अपेक्षा निकृष्टतम)। ९२. इसी प्रकार १ दु षम-दु षमा से क्रमश ६ सुसम-सुसमा तक छहों आरो के उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य भेद जानना चाहिए।

**89.** *Avasarpini* (regressive half-cycle of time) is of three kinds—(1) *utkrisht* (superior), (2) *madhyam* (mediocre), and (3) *jaghanya* (inferior). **90.** In the same way three kinds each—superior, mediocre and inferior—should be read for each of the six *aras* (epochs or divisions of the time cycle) from (1) *Sukham-sukhama* to (6) *Dukham-dukhama*.

**91.** *Utsarpini* (progressive half-cycle of time) is of three kinds—(1) *utkrisht* (superior), (2) *madhyam* (mediocre), and (3) *jaghanya* (inferior) **92.** In the same way three kinds each—superior, mediocre and inferior—should be read for each of the six *aras* (epochs or divisions of the time cycle) from (1) *Dukham-dukhama* to (6) *Sukham-sukhama*

### *अच्छिन्न पुद्गल-चलन-पद* ACHCHHINNA PUDGAL-CHALAN-PAD (SEGMENT OF MOVEMENT OF ATTACHED PARTICLE)

**९३. तिहिं ठाणेहिं अच्छिण्णे पोग्गले चलेज्जा, तं जहा—आहारिज्जमाणे वा पोग्गले चलेज्जा, विकुव्वमाणे वा पोग्गले चलेज्जा, ठाणाओ वा ठाणं संकामिज्जमाणे पोग्गले चलेज्जा।**

९३. अच्छिन्न पुद्गल (स्कन्ध के साथ सलग्न पुद्गल परमाणु) तीन कारणो से चलित—(अपने स्थान से च्युत) होता है—(१) जीवो के द्वारा आहार के लिए चलित किये जाने पर, (२) विक्रियमाण—वैक्रिय शरीरादि का निर्माण किये जाने पर, और (३) एक स्थान से दूसरे स्थान पर संक्रमित होने पर (हाथ आदि द्वारा हटाने पर) चलित होता है।

**93.** *Achchhinna* pudgal (ultimate particle of matter attached to an aggregate or molecule) moves from its place (*chalit*) for three reasons—(1) when it is forced to move by living beings for food intake, (2) during creation of *vaikriya sharira* (transmutable body), and (3) when shifting (or being shifted) from one place to another.

**उपधि–पद UPADHI-PAD (SEGMENT OF MEANS OF SUSTENANCE)**

**९४. तिविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा—कम्मोवही, सरीरोवही, बाहिरभंडमत्तोवही। एवं असुरकुमाराणं भाणियव्वं। एवं—एगिंदियणेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं।**

**अहवा, तिविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा—सचित्ते, अचित्ते, मीसए। एवं—णेरइयाणं णिरंतरं जाव वेमाणियाणं।**

९४. उपधि तीन प्रकार की है–(१) कर्म–उपधि, (२) शरीर–उपधि, और (३) वस्त्र–पात्र आदि बाह्य–उपधि। यह तीनो प्रकार की उपधि एकेन्द्रियों और नारको को छोडकर असुरकुमारों से लेकर वैमानिक पर्यन्त सभी दण्डको में होती है।

अथवा उपधि तीन प्रकार की है–(१) सचित्त, (२) अचित्त, और (३) मिश्र। तीनो प्रकार की उपधि नैरयिकों से लेकर वैमानिको पर्यन्त सभी दडकों मे जानना चाहिए।

**94.** *Upadhı* (means of sustenance) ıs of three kınds—(1) *karma-upadhı* (*karma* as means of sustenance), (2) *sharıra-upadhı* (body as means of sustenance), and (3) *bahya-upadhi* (external means of sustenance, such as garb, bowls etc.) Leavıng asıde one-sensed beings and ınfernal beings these three kınds of means of sustenance are applıcable to beings belonging to all *dandaks* (places of sufferıng) from *Asur Kumars* to *Vaımanık* gods

Also *upadhı* (means of sustenance) is of three kinds—(1) *sachıtt* (lıving), (2) *achıtt* (non-lıving), and (3) *mıshra* (mıxed) These three kinds of means of sustenance are applıcable to all beıngs belonging to all *dandaks* (places of sufferıng) from ınfernal beıngs to *Vaımanık* gods.

विवेचन–जिसइके द्वारा जीव और शरीर आदि का पोषण होता हो, उसे उपधि कहते है। नैरयिक और एकेन्द्रिय जीव के बाह्य–उपकरणरूप उपधि नही होती है। अत· यहाँ उनका निषेध किया है।

**Elaboration**—That whıch helps sustaın or nurture a being or a body ıs called *upadhı*. There is no scope of garb or utensıls or any other outsıde thıng ın cash of ınfernal beıngs and one-sensed beings. Therefore they are excluded here

**परिग्रह–पद PARIGRAHA-PAD (SEGMENT OF POSSESSION)**

**९५. तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—कम्मपरिग्गहे, सरीरपरिग्गहे, बाहिरभंडमत्तपरिग्गहे। एवं—असुरकुमाराणं। एवं—एगिंदियणेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं।**

**अहवा, तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते, तं जहा–सचित्ते, अचित्ते, मीसए। एवं–णेरइयाणं णिरंतरं जाव वेमाणियाणं।**

९५. परिग्रह तीन प्रकार का होता है–(१) कर्म-परिग्रह, (२) शरीर-परिग्रह, और (३) वस्त्र-पात्र आदि बाह्य-परिग्रह। तीनो प्रकार का परिग्रह एकेन्द्रिय और नारको को छोडकर सभी दण्डक वाले जीवों के होता है।

अथवा तीन प्रकार का परिग्रह है–(१) सचित्त (जैसे शरीर अथवा सचेतन वस्तु का ममत्व भाव), (२) अचित्त (धन आदि भोग्य पदार्थ), और (३) मिश्र दोनो पर ममत्व करना। यह तीनों प्रकार का परिग्रह सभी दण्डकों के जीवो के होता है।

**95.** *Parigraha* (desire for possessions) is of three kinds—(1) *karma-parigraha* (desire for possession of *karmas*), (2) *sharira-parigraha* (desire for possession of body), and (3) *bahya-parigraha* (desire for possession of external things, such as garb, bowls etc ) Leaving aside one-sensed beings and infernal beings these three kinds of desire for possessions are applicable to beings belonging to all *dandaks* (places of suffering) from *Asur Kumars* to *Vaimanik* gods

Also *parigraha* (desire for possessions) is of three kinds—(fondness for—) (1) *sachitt* (living), (2) *achitt* (non-living), and (3) *mishra* (mixed). These three kinds of desire for possessions are applicable to all beings belonging to all *dandaks* (places of suffering) from infernal beings to *Vaimanik* gods.

### प्रणिधान–पद PRANIDHAN-PAD (SEGMENT OF CONCENTRATION)

**९६. तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा–मणपणिहाणे, वयपणिहाणे, कायपणिहाणे। एवं–पंचिंदियाणं जाव वेमाणियाणं।**

**९७. तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा–मणसुप्पणिहाणे, वयसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे। ९८. संजयमणुस्साणं तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा–मणसुप्पणिहाणे, वयसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे।**

**९९. तिविहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा–मणदुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे। एवं–पंचिंदियाणं जाव वेमाणियाणं।**

९६. प्रणिधान तीन प्रकार का होता है–(१) मन प्रणिधान, (२) वचनप्रणिधान, और (३) कायप्रणिधान। ये तीनों प्रणिधान पंचेन्द्रियो से लेकर वैमानिक देवो तक सभी दण्डकों में होते हैं।

९७. सुप्रणिधान तीन प्रकार का होता है–(१) मनःसुप्रणिधान, (२) वचनसुप्रणिधान, और (३) कायसुप्रणिधान। ९८. संयत मनुष्यो के तीन सुप्रणिधान होते है–(१) मनःसुप्रणिधान, (२) वचनसुप्रणिधान, और (३) कायसुप्रणिधान।

९९. दुष्प्रणिधान तीन प्रकार का होता है-(१) मनःदुष्प्रणिधान, (२) वचनदुष्प्रणिधान, और (३) कायदुष्प्रणिधान। तीनों दुष्प्रणिधान सभी पचेन्द्रियों में यावत् वैमानिक देवों में होते हैं।

**96.** *Pranidhan* (concentration) is of three kinds—(1) *manah-pranidhan* (mental concentration), (2) *vachan-pranidhan* (vocal concentration), and (3) *kaya-pranidhan* (physical concentration). These three kinds of concentration are applicable to all beings belonging to all *dandaks* (places of suffering) from five-sensed animals to *Vaimanik* gods. **97.** *Supranidhan* (noble concentration) is of three kinds—(1) *manah-supranidhan* (noble mental concentration), (2) *vachan-supranidhan* (noble vocal concentration), and (3) *kaya-supranidhan* (noble physical concentration). **98.** Disciplined persons have three kinds of *supranidhan* (noble concentration)—(1) *manah-supranidhan* (noble mental concentration), (2) *vachan-supranidhan* (noble vocal concentration), and (3) *kaya-supranidhan* (noble physical concentration)

**99.** *Dushpranidhan* (ignoble concentration) is of three kinds—(1) *manah-dushpranidhan* (ignoble mental concentration), (2) *vachan-dushpranidhan* (ignoble vocal concentration), and (3) *kaya-dushpranidhan* (ignoble physical concentration) These three kinds of ignoble concentration are applicable to all beings belonging to all *dandaks* (places of suffering) from five-sensed animals to *Vaimanik* gods

विवेचन-प्रणिधान का अर्थ है-एकाग्रता। एकाग्रता का उपयोग शुभ-अशुभ दोनो कार्यों में होता है, अत शुभ की एकाग्रता सुप्रणिधान, अशुभ की एकाग्रता दुष्प्रणिधान है। एकाग्रता केवल मानसिक ही नही, बल्कि वचन की और काय की भी होती है।

**Elaboration**—*Pranidhan* means focusing or concentration Concentration is applied to both noble and ignoble actions. Thus concentration in noble acts is *shubh pranidhan* and concentration in ignoble acts is *dushpranidhan*. Concentration is not just mental, it is vocal and physical as well.

**योनि-पद YONI-PAD (SEGMENT OF WOMB)**

**१००. तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा-सीता, उसिणा, सीओसिणा। एवं-एगिंदियाणं बिगलिंदियाणं तेउकाइयवज्जाणं संमुच्छिम पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं संमुच्छिम मणुस्साण य। १०१. तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा-सचित्ता, अचित्ता, मीसिया। एवं-एगिंदियाणं**

**विगलिंदियाणं संमुच्छिम पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं संमुच्छिम मणुस्साण य। १०२. तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा–संवुडा, वियडा, संवुड–वियडा।**

१००. योनि तीन प्रकार की होती है–(१) शीत योनि, (२) उष्ण योनि, और (३) शीतोष्ण (मिश्र) योनि। तेजस्कायिक जीवो को छोडकर एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय, सम्मूर्च्छिम पचेन्द्रिय तिर्यंच और सम्मूर्च्छिम मनुष्यो के तीनों ही प्रकार की योनियाँ होती हैं। १०१. योनि तीन प्रकार की होती है–(१) सचित्त, (२) अचित्त, और (३) मिश्र–एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय, सम्मूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंच तथा सम्मूर्च्छिम मनुष्यों के तीनो ही प्रकार की योनियाँ होती है। १०२. योनि तीन प्रकार की होती है–(१) संवृत, (२) विवृत, और (३) सवृत–विवृत।

**100.** *Yoni* (womb or place of birth of beings) is of three kinds—(1) *sheet-yoni* (cold womb), (2) *ushna-yoni* (hot womb), and (3) *sheetoshna-yoni* (cold-hot or mixed womb) Excluding *tejaskayik jivas* (fire-bodied beings) all one sensed beings, *vikalendriya jivas* (two to four sensed beings), *sammurchhim panchendriya tiryanch* (five-sensed animals of asexual origin) and *sammurchhim manushya* (five-sensed humans of asexual origin) have all the three kinds of *yonis*. **101.** *Yoni* (womb or place of birth of beings) is of three kinds—(1) *sachitt* (infested with living organisms), (2) *achitt* (non-living), and (3) *mishra* (mixed) One sensed beings, *vikalendriya jivas* (two to four sensed beings), *sammurchhim panchendriya tiryanch* (five-sensed animals of asexual origin) and *sammurchhim manushya* (five-sensed humans of asexual origin) have all the three kinds of *yonis* **102.** *Yoni* (womb or place of birth of beings) is of three kinds—(1) *samvrit* (covered), (2) *vivrit* (open), and (3) *samvrit-vivrit* (covered and open)

**पारिभाषिक शब्द–जीवस्योत्पत्तिस्थानं योनि**–जीवो का उत्पत्ति स्थान योनि कहा जाता है। **सचित्त योनि**–जहाँ पहले से ही जीव विद्यमान हो। **अचित्त योनि**–जीव प्रदेशो से रहित, जैसे–देव, नैरयिको के उत्पत्ति स्थान। **मिश्र**–गर्भ से उत्पन्न होने वाले जीवो का उत्पत्ति स्थान। **संवृत्त योनि**–ढकी हुई या सँकडी, जैसे–एकेन्द्रिय, देव तथा नारकीय जीवो का उत्पत्ति स्थान। **विवृत**–खुली या चौडी, जैसे–गोबर आदि मे उत्पन्न होने वाले जीव विकलेन्द्रिय विवृत योनिक है। **संवृत–विवृत**–गर्भज जीवो का उत्पत्ति स्थान। *(संस्कृत टीका, पृ. २०८–२०९, हिन्दी टीका, पृ ३८७–३८८)*

**TECHNICAL TERMS**

*Yoni*—place where living beings are born. *Sachitt-yoni*—womb or place already infested with living organisms (2) *achitt*—womb or place not infested with living organisms or which is non-living, for example the

places of birth of infernal and divine beings. *Mishra*—mixed, such as the place of origin or womb of mammalian beings. *Samvrit*—covered or narrow place of origin, like the place of origin of one sensed beings, infernal beings and divine beings. (2) *vivrit*—open or broad, for example the insects born in cowdung are *vivrit yonik* beings. *Samvrit-vivrit*—covered as well as open, such as the place of origin or womb of mammalian beings. *(Sanskrit Tika, pp 208-209, Hindi Tika, pp. 387-388)*

**१०३. तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा—कुम्मुण्णया, संखावत्ता, वंसीवत्तिया।**

**(१) कुम्मुण्णया णं जोणी उत्तमपुरिसमाऊणं। कुम्मुण्णयाए णं जोणिए तिविहा उत्तमपुरिसा गब्भं वक्कमंति, तं जहा—अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेव—वासुदेवा।**

**(२) संखावत्ता णं जोणी इत्थीरयणस्स। संखावत्ताए णं जोणीए बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमंति, विउक्कमंति, चयंति, उववज्जंति, णो चेव णं णिप्फजंति।**

**(३) वंसीवत्तिता णं जोणी पिहज्जणस्स। वंसीवत्तिताए णं जोणिए बहवे पिहज्जणा गब्भं वक्कमंति।**

१०३. योनि तीन प्रकार की होती है–(१) कूर्मोन्नता (कछुए के समान उन्नत),(२) शखावर्ता (शख के समान आवर्त घुमाव वाली), और (३) वंशीपत्रिका (बाँस के पत्ते के आकार वाली)।

(१) कूर्मोन्नता योनि उत्तम पुरुषो की माताओ की होती है। कूर्मोन्नता योनि मे तीन प्रकार के पुरुष उत्पन्न होते है–(१) अरहन्त (तीर्थंकर), (२) चक्रवर्ती, और (३) बलदेव–वासुदेव।

(२) शखावर्ता योनि–चक्रवर्ती के स्त्रीरत्न की होती है। शंखावर्ता योनि मे बहुत से जीव और पुद्गल उत्पन्न और विनष्ट होते रहते हैं, किन्तु निष्पन्न नही होते।

(३) वशीपत्रिका योनि सामान्य जनो की माताओ की होती है। वशीपत्रिका योनि मे अनेक सामान्य जन जन्म लेते है।

**103.** *Yoni* (womb or place of birth of beings) is of three kinds—(1) *kurmonnat* (convex like a tortoise), (2) *shankhavart* (spiraled like a conch-shell), and (3) *vanshipatrika* (bamboo leaf shaped).

(1) The mothers of best among men have *kurmonnat yoni* Three kinds of persons are born from *kurmonnat yoni*—(1) *Arhant (Tirthankar)*, (2) *Chakravarti* (epoch maker supreme monarch of his period), and (3) *Baladev-Vasudev* (epoch maker sovereign of a specific

area). (for more details about epoch makers refer to *Illustrated Tirthankar Charitra*, appendix 12)

(2) The wife of a *chakravarti* has *shankhavart yoni* Within a *shankhavart yoni* numerous living beings are created and destroyed regularly but they do not mature to be born

(3) Mothers of common people have *vanshipatrika yoni* A *vanshipatrika yoni* gives birth to many common men

### तृणवनस्पति–पद TRINAVANASPATI-PAD (SEGMENT OF GRAMINEOUS PLANTS)

**१०४. तिविहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता, तं जहा–संखेज्जजीविका, असंखेज्जजीविका, अणंतजीविका।**

१०४. तृणवनस्पतिकायिक जीव तीन प्रकार के होते है–(१) संख्यात जीवों वाले (नाल से बँधे हुए पुष्प), (२) असंख्यात जीवो वाले (वृक्ष के मूल, कन्द, स्कन्ध, त्वक्–छाल, शाखा और प्रवाल), और (३) अनन्त जीवों वाले (पनक, फफूँदी, लीलन–फूलन आदि)।

**104.** Gramineous plant-bodied beings are of three kinds—(1) with countable beings (flowers with stems), (2) with innumerable beings (roots, bulbous roots, trunks, bark, branches and sprouts of trees), and (3) with infinite beings (moss, fungus, mildew etc )

### तीर्थ–पद TIRTH-PAD (SEGMENT OF PILGRIMAGE)

**१०५. जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे तओ तित्था पण्णत्ता, तं जहा–मागहे, वरदामे, पभासे। १०६. एवं एरवए वि। १०७. जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे एगमेगे चक्कवट्टिविजये तओ तित्था पण्णत्ता, तं जहा–मागहे, वरदामे, पभासे। १०८. एवं–धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धे वि पच्चत्थिमद्धे वि। पुक्खरवरदीवद्धे पुरत्थिमद्धे वि, पच्चत्थिमद्धे वि।**

१०५. जम्बूद्वीप द्वीप के भारतवर्ष मे तीन तीर्थ होते है–(१) मागध, (२) वरदाम, और (३) प्रभास। १०६. ऐरवत क्षेत्र मे भी इसी प्रकार तीन तीर्थ होते है। १०७. जम्बूद्वीप द्वीप के महाविदेह क्षेत्र मे एक–एक चक्रवर्ती के विजयखण्ड मे तीन–तीन तीर्थ होते है–(१) मागध, (२) वरदाम, और (३) प्रभास। १०८. धातकीषण्ड तथा पुष्करार्ध द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध मे भी इसी प्रकार तीन–तीन तीर्थ होते है।

**105.** In Bharat Varsh in Jambu Dveep continent there are three *tirthas* (places of pilgrimage)—(1) Maagadh, (2) Varadam, and (3) Prabhas. **106.** In the same way there are three pilgrimage-places in Airavat area **107.** In

Jambu Dveep continent in *Vijayakhand* of every *Chakravarti* (territory conquered by a *Chakravarti*) in Mahavideh area there are three pilgrimage-places—(1) Maagadh, (2) Varadam, and (3) Prabhas **108.** In the same way there are three pilgrimage-places each in the eastern and western halves of Dhatakikhand and Pushakarardh continents

**विवेचन**—तीर्थ दो प्रकार के होते हैं–सादि–कृत्रिम तथा अनादि। उक्त तीनों तीर्थ अनादि है, देवाधिष्ठित है।

जम्बूद्वीप में भरत मे, ऐरवत तथा महाविदेह–(३२ विजय में) प्रत्येक विजय मे तीन–तीन तीर्थ होते है। यो कुल ३४ × ३ = १०२ तीर्थ है। इसी प्रकार धातकीषण्ड के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध तथा पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्व और पश्चिम मे भी तीन–तीन तीर्थ होते है। इस प्रकार ढाई द्वीप मे ५१० तीर्थ होते है।

षट्खण्ड चक्रवर्ती के राज्य की सीमाएँ पूर्व–दक्षिण और पश्चिम दिशा मे इन तीर्थों तक ही होती है। वहाँ का अधिष्ठाता देव चक्रवर्ती की सीमा का रक्षक होता है। *(देखे–जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, तथा हिन्दी टीका, पृ ३९२)*

**Elaboration**—There are two kinds of *tirth* or place of pilgrimage—*saadi* (man made) and *anadi* (eternal) The aforesaid pilgrimage-places are eternal, established by gods

In Bharat, Airavat and Mahavideh areas of Jambu continent (having 32 *Vijayas*), each *Vijaya* (divisions of sub-continental size) has three pilgrimage-places This makes a total of 102 pilgrimage-places In the same way there are three pilgrimage-places each in the eastern and western halves of Dhatakikhand and Pushakarardh continents. Thus in Adhai Dveep (the total area inhabited by human beings; area including Jambu Dveep, Dhatki Khand, and Ardha Pushkar Dveep) the total number of pilgrimage-places is 510

These pilgrimage-places mark the eastern, southern and western boundaries of the empire of a *Shat-khand Chakravarti* (emperor who has conquered all six divisions of a subcontinent) The ruling deity of the pilgrimage-place is the guardian of the specific border of the *Chakravarti's* empire *(see Jambudveep Prajnapti and Hindi Tika, p 392)*

### *कालचक्र–पद* KAAL-CHAKRA-PAD (SEGMENT OF TIME CYCLE)

**१०९. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ काले होत्था। ११०. एवं इमीसे ओसप्पिणीए। १११. आगमिस्साए**

**उस्सप्पिणीए। ११२. एवं धायइसंडे पुरत्थिमद्धे पच्चत्थिमद्धे वि। एवं–पुक्खरवरदीवद्धे पुरत्थिमद्धे वि कालो भाणियव्वो।**

१०९. जम्बूद्वीप द्वीप के भरत और ऐरवत क्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी के सुषमा नामक आरे का काल तीन कोडाकोडी सागरोपम था। ११०. इसी प्रकार वर्तमान अवसर्पिणी मे। १११. तथा इसी प्रकार आगामी उत्सर्पिणी काल के विषय मे जानना चाहिए। ११२. धातकीषण्ड के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध मे भी तथा पुष्करवरद्वीपार्ध के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध में भी ऐसा ही जानना चाहिए।

**109.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas the length of *Sukhama ara* (epoch of happiness) of the past *Utsarpini* (progressive cycle of time) was three *koda-kodi Sagaropam* (a metaphoric unit of time). **110.** The same is true for the current *Avasarpini* (regressive cycle of time) as well as **111.** the coming *Utsarpini* (progressive cycle of time) **112.** The same is also true for the eastern and western halves of Dhatakikhand and the eastern and western halves of Pushakaravardveepardh continents.

**११३. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए मणुया तिण्णि गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था, तिण्णि पलिओवमाइं परमाउं पालइत्था। ११४. एवं–इमीसे ओसप्पिणीए, आगमिस्साए उस्सप्पिणीए। ११५. जंबुद्दीवे दीवे देवकुरु उत्तरकुरासु मणुया तिण्णि गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता, तिण्णि पलिओवमाइं परमाउं पालयंति। ११६. एवं जाव पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे।**

११३. जम्बूद्वीप द्वीप के भरत और ऐरवत क्षेत्र मे अतीत उत्सर्पिणी के सुषम–सुषमा आरे मे मनुष्यों की ऊँचाई तीन गव्यूति (कोश) की थी और उत्कृष्ट आयु तीन पल्योपम की थी। ११४. इसी प्रकार इस वर्तमान अवसर्पिणी तथा आगामी उत्सर्पिणी मे भी ऐसा ही जानना चाहिए। ११५. जम्बूद्वीप द्वीप के देवकुरु और उत्तरकुरु मे मनुष्यो की ऊँचाई तीन गव्यूति की और उनकी उत्कृष्ट आयु तीन पल्योपम की होती है। ११६. धातकीषण्ड तथा पुष्करवरद्वीपार्ध के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध मे इसी प्रकार जानना चाहिए।

**113.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas the height of humans of *Sukham-sukhama ara* (epoch of extreme happiness) of the past *Utsarpini* (progressive cycle of time) was three *Gavyuti* (size miles) and their maximum life span was three *Palyopam* (a metaphoric unit of time) **114.** The same is true for the current *Avasarpini* (regressive cycle of time) as well as the coming *Utsarpini* (progressive cycle of time). **115.** In Jambu Dveep in Devakuru and Uttar-kuru areas the height of humans is three *Gavyuti* (size miles) and their maximum life span is

three *Palyopam* (a metaphoric unit of time). **116.** The same is also true for the eastern and western halves of Dhatakikhand and Pushakaravardveepardh continents

**शलाकापुरुष-वंश-पद SHALAKA-PURUSH-VAMSH-PAD (SEGMENT OF LINEAGE OF EPOCH MAKERS)**

**११७. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीए तओ वंसाओ उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा, तं जहा-अरहंतवंसे, चक्कवट्टिवंसे, दसारवंसे। ११८. एवं जाव पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे।**

११७. जम्बूद्वीप द्वीप के भरत और ऐरवत क्षेत्र में प्रत्येक अवसर्पिणी तथा उत्सर्पिणी काल मे तीन वंश उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होगे-(१) अरहन्त-वंश, (२) चक्रवर्ती-वश, और (३) दसार-वश। ११८. इसी प्रकार धातकीषण्ड तथा पुष्करवरद्वीपार्ध के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध में तीन वश उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते हैं तथा उत्पन्न होगे।

**117.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas in every *Avasarpini* and *Utsarpini* (half-cycles of time) there were, are and will be three lineages—(1) *Arhant* lineage, (2) *Chakravarti* lineage, and (3) *Dashar* (*Baladev* and *Vasudev*) lineage **118.** The same is also true for the eastern and western halves of Dhatakikhand and Pushakaravardveepardh continents

**शलाकापुरुष-पद SHALAKA-PURUSH-PAD (SEGMENT OF EPOCH MAKERS)**

**११९. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीए तओ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा, तं जहा-अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेव-वासुदेवा। १२०. एवं जाव पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे।**

११९. जम्बूद्वीप द्वीप के भरत और ऐरवत क्षेत्र मे प्रत्येक अवसर्पिणी तथा उत्सर्पिणी में तीन प्रकार के उत्तम पुरुष उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होगे-(१) अरहन्त, (२) चक्रवर्ती, और (३) बलदेव-वासुदेव। १२०. धातकीषण्ड तथा पुष्करवरद्वीपार्ध के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध मे भी इसी प्रकार जानना चाहिए।

**119.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas in every *Avasarpini* and *Utsarpini* (half-cycles of time) there were, are and will be born three kinds of *uttam purush* (best among men)—(1) *Arhant*, (2) *Chakravarti*, and (3) *Baladev* and *Vasudev* **120.** The same is also true for the eastern and western halves of Dhatakikhand and Pushakaravardveepardh continents.

### आयुष्य-पद AYUSHYA-PAD (SEGMENT OF LIFE SPAN)

**१२१. तओ अहाउयं पालयंति, तं जहा—अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेव—वासुदेवा। १२२. तओ मज्झिममाउयं पालयंति, तं जहा—अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेव—वासुदेवा।**

१२१. तीन उत्तम पुरुष अपने समय की पूरी आयु का उपभोग करते है-(१) अरहन्त, (२) चक्रवर्ती, और (३) बलदेव-वासुदेव। १२२. तीनो अपने समय की (अपने युग के अन्य लोगो की अपेक्षा) मध्यम आयु का पालन करते है-(१) अरहन्त, (२) चक्रवर्ती, और (३) बलदेव-वासुदेव।

**121.** Three kinds of *uttam purush* (best among men) enjoy the full or maximum life span of their period (every period has maximum and minimum life spans assigned to various beings)—(1) *Arhant*, (2) *Chakravarti*, and (3) *Baladev* and *Vasudev* **122.** Three kinds of *uttam purush* (best among men) enjoy the medium life span of their period—(1) *Arhant*, (2) *Chakravarti*, and (3) *Baladev* and *Vasudev*

**१२३. बायरतेउकाइयाणं उक्कोसेणं तिण्णि राइंदियाइं ठिती पण्णत्ता। १२४. बायरवाउकाइयाणं उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता।**

१२३. बादर तेजस्कायिक जीवो की उत्कृष्ट स्थिति तीन रात-दिन की है। १२४. बादर वायुकायिक जीवो की उत्कृष्ट स्थिति तीन हजार वर्ष की है।

**123.** The maximum life of *badar* (gross) *tejaskayik jivas* (fire-bodied beings) is three nights and three days **124.** The maximum life of *badar* (gross) *vayukayik jivas* (air-bodied beings) is three thousand years

### योनिस्थिति-पद YONISTHITI-PAD (SEGMENT OF PRODUCTIVE LIFE)

**१२५. अह भंते ! सालीणं वीहीणं गोधूमाणं जवाणं जवजवाणं—एतेसि णं धण्णाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं ओलित्ताणं लित्ताणं लंछियाणं मुद्दियाणं पिहित्ताणं केवइयं कालं जोणी संचिट्ठति ?**

**जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि संवच्छराइं। तेण परं जोणी पमिलायति। तेण परं जोणी पविद्धंसति। तेण परं जोणी विद्धंसति। तेण परं बीए अबीए भवति। तेण परं जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते।**

१२५. (प्रश्न) भगवन् ! शालि, ब्रीहि, गेहूँ, जौ और यवयव (जौ विशेष) इन धान्यो की कोठे मे सुरक्षित रखने पर, पल्य (धान्य भरने की बाँस आदि से बनी टोकरी अथवा पात्र-विशेष) मे सुरक्षित रखने पर, मचान और माले मे डालकर, उनके द्वार-देश को ढक्कन से ढक देने पर, उसे लीप देने पर, चारो ओर से लीप देने पर, रेखादि से चिह्नित कर देने पर, मुद्रा (मोहर) लगा देने पर, अच्छी तरह बन्द रखने पर उनकी योनि-(उत्पादक शक्ति) कितने काल तक रहती है ?

(उत्तर) (हे आयुष्मन् !) जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त और उत्कृष्ट तीन वर्ष तक उनकी योनि रहती है। तत्पश्चात् योनि म्लान हो जाती है, विध्वस्त हो जाती है, विनष्ट हो जाती है, अबीज हो जाती है, योनि का विच्छेद हो जाता है अर्थात् बीज बोने पर उगने योग्य नहीं रहते।

**125.** (Question) *Bhante* ! How long does the *yoni* (productive capacity) of *shali* (rice), *brihi* (a type of rice), *genhun* (wheat), *jau* (barley), *yavayava* (a type of barley) and other grains last once they are stored in *kotha* (silo), *palya* (basket made of bamboo or cane), *machan* (store on a raised wooden platform) and *mala* (store on roof top) and thereafter covered, sealed, marked, stamped and properly closed ?

(Answer) "Long lived one ! Their productive capacity lasts for a minimum period of *antarmuhurt* (less than 48 minutes) and a maximum period of three years After that the *yoni* (productive capacity) gets weak, shattered, destroyed and becomes seedless and sterile In other words the seeds no longer germinate on sowing.

### नरक–पद NARAK-PAD (SEGMENT OF HELL)

**१२६. दोच्चाए णं सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। १२७. तच्चाए णं वालुयप्पभाए पुढवीए जहण्णेणं णेरइयाणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। १२८. पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए तिण्णि णिरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता। १२९. तिसु णं पुढवीसु णेरइयाणं उसिणवेयणा पण्णत्ता, तं जहा—पढमाए, दोच्चाए, तच्चाए। १३०. तिसु णं पुढवीसु णेरइया उसिणवेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा—पढमाए, दोच्चाए, तच्चाए।**

१२६. दूसरी शर्कराप्रभा पृथ्वी में नारको की उत्कृष्ट स्थिति तीन सागरोपम की है। १२७. तीसरी बालुकाप्रभा पृथ्वी में नारकों की जघन्य स्थिति तीन सागरोपम है। १२८. पाँचवी धूमप्रभा पृथ्वी मे तीन लाख नारकावास है। १२९. प्रथम, द्वितीय और तृतीय इन तीन पृथ्वियो मे नारकों के उष्ण वेदना होती है। १३०. प्रथम, द्वितीय और तृतीय इन तीन पृथ्वियो में नारक जीव उष्ण वेदना का अनुभव करते रहते है।

**126.** The maximum life span of *naaraks* (infernal beings) in the second hell called Sharkaraprabha *prithvi* is three *Sagaropam* (metaphoric unit of time) **127.** The minimum life span of *naaraks* (infernal beings) in the third hell called Balukaprabha *prithvi* is three *Sagaropam* (metaphoric unit of time). **128.** In the fifth hell called Dhoom-prabha *prithvi* there are three hundred thousand infernal dwellings. **129.** The infernal beings of the first, second and third hell are said to go

through searing pain 130. The infernal beings of first, second and third hell experience searing pain

**सम-पद SAM-PAD (SEGMENT OF EQUALITY)**

**१३१. तओ लोगे समा सपक्खिं सपडिदिसिं पण्णत्ता, तं जहा—अप्पइट्ठाणे णरए, जंबुद्दीवे दीवे, सव्वट्ठसिद्धे विमाणे।**

१३१. लोक मे तीन क्षेत्र **समान**—(प्रमाण की दृष्टि से एक लाख योजन विस्तीर्ण), **सपक्ष**—(समश्रेणी की दृष्टि से उत्तर-दक्षिण समान पार्श्व वाले) और **सप्रतिदिश**—(विदिशाओ मे समान) है—(१) सातवी पृथ्वी का अप्रतिष्ठान नामक नारकावास, (२) जम्बूद्वीप नामक द्वीप, और (३) सर्वार्थसिद्ध नामक अनुत्तर विमान।

**131.** In *Lok* (universe) three areas are *samaan* (equal in size, one hundred thousand *Yojans* in area), *sapaksh* (having similar sides, left and right) and *sapratidash* (same in intermediate directions)—(1) the Apratishthan section of dwellings in the seventh hell, (2) the continent called Jambudveep, and (3) Sarvarthasiddha Anuttar Vimaan (a specific divine dimension)

**१३२. तओ लोगे समा सपक्खिं सपडिदिसिं पण्णत्ता, तं जहा—सीमंतए णं णरए, समयक्खेत्ते, ईसीपब्भारा पुढवी।**

१३२. लोक में तीन समान—(प्रमाण की दृष्टि से पैतालीस लाख योजन विस्तीर्ण), सपक्ष और सप्रतिदिश होते है—(१) **सीमान्तक**—(पहली नरक भूमि के पहले प्रस्तर का) नारकावास, (२) **समयक्षेत्र**—(मनुष्यक्षेत्र—अढाई द्वीप), और (३) ईषत्प्राग्भारापृथ्वी (सिद्धशिला)।

**132.** In *Lok* (universe) three areas are *samaan* (equal in size, forty five hundred thousand *Yojans* in area), *sapaksh* (having similar sides, left and right) and *sapratidash* (same in intermediate directions)—(1) the Simantak section of dwellings in first level of the first hell, (2) Samayakshetra (area of human habitation or Adhai Dveep), and (3) Ishatpragbhara *Prithvi* (Siddhashila)

**समुद्र-पद SAMUDRA-PAD (SEGMENT OF SEAS)**

**१३३. तओ समुद्दा पगईए उदगरसा पण्णत्ता, तं जहा—कालोदे, पुक्खरोदे, सयंभुरमणे। १३४. तओ समुद्दा बहुमच्छकच्छभाइण्णा पण्णत्ता, तं जहा—लवणे, कालोदे, सयंभुरमणे।**

१३३. तीन समुद्र प्रकृति से उदक रस वाले (पानी जैसे स्वाद वाले) है—(१) कालोद, (२) पुष्करोद, और (३) स्वयभूरमण समुद्र। १३४. तीन समुद्र बहुत मत्स्यो और कछुओ आदि जलचर जीवों से व्याप्त है—(१) लवणोद, (२) कालोद, और (३) स्वयभूरमण समुद्र (अन्य समुद्रो मे जलचर जीव थोडे है)।

**133.** There are three seas with *udak ras* (water like taste)—(1) Kaalod, (2) Pushkarod, and (3) Svayambhuraman Samudra. **134.** There are three seas widely infested with a large number of fish, turtles and other aquatic beings—(1) Kaalod, (2) Pushkarod, and (3) Svayambhuraman Samudra (other seas have fewer aquatic beings).

**१३५. तओ लोगे णिस्सीला णिव्वता णिग्गुणा णिम्मेरा णिप्पच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए अप्पतिट्ठाणे णरए णेरइयत्ताए उववज्जंति, तं जहा–रायाणो, मंडलीया, जे य महारंभा कोडुंबी।**

**१३६. तओ लोगे सुसीला सुव्वया सग्गुणा समेरा सपच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तं जहा–रायाणो परिचत्तकामभोगा, सेणावती, पसत्थारो।**

१३५. लोक मे ये तीन पुरुष–यदि शीलरहित, व्रतरहित, निर्गुणी, मर्यादाहीन, प्रत्याख्यान और पौषधोपवास से रहित होते है तो मृत्यु के समय काल करके नीचे सातवी पृथ्वी के अप्रतिष्ठान नारकवास मे नैरयिक के रूप से उत्पन्न होते है-(१) राजा–(चक्रवर्ती और वासुदेव), (२) माण्डलिक राजा, और (३) महारम्भी गृहस्थ जन।

१३६. लोक मे ये तीन पुरुष जो सुशील, सुव्रती, सद्गुणी, मर्यादा वाले, प्रत्याख्यान और पौषधोपवास करने वाले हो, तो वे मृत्यु के समय मे मृत्यु प्राप्त करके सर्वार्थसिद्ध नामक अनुत्तर विमान मे देवता के रूप से उत्पन्न होते है–(१) काम–भोगो को त्यागने वाले राजा जन, (२) सेनापति, और (३) प्रशास्ता जन–(प्रशासक मत्री आदि या धर्मशास्त्र पाठक, प्राध्यापक आचार्य आदि)।

**135.** In *Lok* (universe) if three kinds of men are devoid of *sheel* (chaste disposition), vows, noble qualities, discipline, *pratyakhyan* (perfect abstainment) and *paushadhopavas* (partial ascetic vow and fasting), at the time of death they depart and are reborn as infernal beings in the Apratishthan section of dwellings in the seventh hell towards Nadir—(1) *Raja* (*Chakravarti* and *Vasudev*), (2) *Mandalik Raja* (regional kings), and (3) highly sinful householders

**136.** In *Lok* (universe) if three kinds of men are endowed with *sheel* (chaste disposition), vows, noble qualities, discipline, *pratyakhyan* (perfect abstainment) and *paushadhopavas* (partial ascetic vow and fasting), at the time of death they depart and are reborn as divine beings in the Sarvarth Siddha Anuttar Vimaan (the highest heaven or divine dimension)—(1) kings who renounce mundane pleasures, (2) commanders, and (3) noble persons (ministers, religious leaders, teachers etc )

**विमान-पद VIMAAN-PAD (SEGMENT OF CELESTIAL VEHICLES)**

**१३७. बंभलोग-लंतएसु णं कप्पेसु विमाणा तिवण्णा पण्णत्ता, तं जहा-किण्णा, णीला, लोहिया।**

१३७. ब्रह्मलोक और लान्तक देवलोक के विमान तीन वर्ण वाले है-(१) कृष्ण, (२) नील, और (३) लोहित (लाल)।

**137.** The celestial vehicles of Brahmalok and Lantak Devlok are of three colours—(1) black, (2) blue, and (3) red

**देव-पद DEV-PAD (SEGMENT OF DIVINE BEINGS)**

**१३८. आणयपाणयारणच्चुतेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारिणज्जसरीरगा उक्कोसेणं तिण्णि रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।**

१३८. (१) आनत, (२) प्राणत, (३) आरण और अच्युत कल्पो मे देवो के भवधारणीय शरीर की उत्कृष्ट ऊँचाई तीन रत्नि-प्रमाण होती है।

**138.** The maximum height of the *bhavadharaniya sharira* (incarnation sustaining body) of gods in (1) Anat, (2) Pranat, and (3) Aran and Achyut *kalps* (specific divine dimension) is three *Ratni*

**प्रज्ञप्ति-पद PRAJNAPTI-PAD (SEGMENT OF EXPLANATORY TEXTS)**

**१३९. तओ पण्णत्तीओ कालेणं अहिज्जंति, तं जहा-चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, दीवसागरपण्णत्ती।**

१३९. तीन प्रज्ञप्तियाँ यथाकाल (प्रथम और अन्तिम पौरुषी में) पढी जाती हैं-(१) चन्द्रप्रज्ञप्ति, (२) सूर्यप्रज्ञप्ति, और (३) द्वीपसागर प्रज्ञप्ति। (वृत्तिकार के अनुसार पाँच प्रज्ञप्ति की प्राचीन मान्यता है, परन्तु यहाँ तीसरा स्थान होने से व्याख्याप्रज्ञप्ति तथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति का उल्लेख नही किया है।)

॥ प्रथम उद्देशक समाप्त ॥

**139.** Three *Prajnaptis* (explanatory texts) are studied at their prescribed time (first and last quarter of the day)—(1) *Chandra Prajnapti*, (2) *Surya Prajnapti*, and (3) *Dveep Sagar Prajnapti*. (According to the author of the *Vritti* the ancient tradition has five *Prajnaptis*. However, as this is the third placement *Vyakhya Prajnapti* and *Jambudveep Prajnapti* have not been included.)

**● END OF THE FIRST LESSON ●**

## द्वितीय उद्देशक
## SECOND LESSON

### लोक-पद LOK-PAD (SEGMENT OF UNIVERSE)

**१४०. तिविहे लोगे पण्णत्ते, तं जहा—णामलोगे, ठवणालोगे, दव्वलोगे। १४१. तिविहे लोगे पण्णत्ते, तं जहा—णाणलोगे, दंसणलोगे, चरित्तलोगे। १४२. तिविहे लोगे पण्णत्ते, तं जहा—उड्ढलोगे, अहोलोगे, तिरियलोगे।**

१४०. लोक तीन प्रकार के हैं-(१) नामलोक, (२) स्थापनालोक, और (३) द्रव्यलोक (षड्द्रव्यात्मक)। १४१. लोक तीन प्रकार के है-(१) ज्ञानलोक, (२) दर्शनलोक (जिसकी लोक पर श्रद्धा हो), और (३) चारित्रलोक (जहाँ चारित्र की आराधना होती हो)। (ये तीनो भावलोक हैं) १४२. लोक तीन प्रकार के है-(१) ऊर्ध्वलोक, (२) अधोलोक, और (३) तिर्यग्लोक (क्षेत्र लोक)।

**140.** *Lok* (universe) is of three kinds—(1) *naam lok* (*lok* as name), (2) *sthapana lok* (*lok* as notional installation), and (3) *dravya lok* (physical *lok* with six entities) **141.** *Lok* (universe) is of three kinds—(1) *jnana lok* (*lok* of knowledge), (2) *darshan lok* (*lok* of perception/faith), and (3) *chaaritra lok* (*lok* of conduct) **142.** *Lok* (universe) is of three kinds—(1) *urdhva lok* (higher lok; heavens), (2) *adho lok* (lower *lok*; hells), and (3) *tiryak lok* (transverse *lok*).

### देव--परिषद्-पद DEV-PARISHAD-PAD (SEGMENT OF DIVINE ASSEMBLY)

**१४३. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समिता, चंडा, जाया। अब्भिंतरिया समिता, मज्झिमिया चंडा, बाहिरिया जाया। १४४. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सामाणियाणं देवाणं तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समिता जहेव चमरस्स। १४५. एवं—तायत्तीसगाणवि। १४६. लोगपालाणं—तुंबा तुडिया पव्वा। १४७. एवं अग्गमहिसीणवि। १४८. बलिस्सवि एवं चेव जाव अग्गमहिसीणं।**

१४३. असुरकुमारों के राजा चमर असुरेन्द्र की तीन परिषद् (सभा) है-(१) समिता, (२) चण्डा, और (३) जाता। आभ्यन्तर परिषद् का नाम समिता है, मध्य की परिषद् का नाम चण्डा है और बाहरी परिषद् का नाम जाता है। १४४. असुरकुमारो के राजा चमर असुरेन्द्र के सामानिक (इन्द्र के समान माननीय) देवों की तीन परिषद् है-(१) समिता, (२) चण्डा, और (३) जाता। १४५. इसी प्रकार चमर असुरेन्द्र के त्रायस्त्रिंशको (मत्री या पुरोहित) की तीन परिषद् है। १४६. चमर असुरेन्द्र के लोकपालको (सीमारक्षक) की तीन परिषद् हैं-(१) तुम्बा, (२) त्रुटिता, और (३) पर्वा। १४७. इसी प्रकार चमर

असुरेन्द्र की अग्रमहिषियो (पटरानियो) की तीन परिषद् हैं-(१) तुम्बा, (२) त्रुटिता, और (३) पर्वा। १४८. वैरोचनेन्द्र बली की तथा उनके सामानिकों और त्रायस्त्रिशको की तीन-तीन परिषद् है-(१) समिता, (२) चण्डा, और (३) जाता। उसके लोकपालो और अग्रमहिषियो की भी तीन-तीन परिषद् है-(१) तुम्बा, (२) त्रुटिता, और (३) पर्वा।

**143.** Chamar Asurendra, the kıng of *Asur Kumar* gods has three *parıshads* (assemblıes)—(1) *Samıta*, (2) *Chanda*, and (3) *Jaata*. The name of the ınner assembly ıs *Samıta*, that of the mıddle one is *Chanda* and that of the outer one ıs *Jaata* **144.** The *Samanık* gods (gods of equal status) of Chamar Asurendra, the kıng of *Asur Kumar* gods, have three *parıshads* (assemblıes)—(1) *Samıta*, (2) *Chanda*, and (3) *Jaata* **145.** In the same way the *Trayastrımshaks* (mınisters or prıests) of Chamar Asurendra have three *parıshads* **146.** The *Lokapalaks* (border guards) of Chamar Asurendra have three *parıshads* (assemblıes)—(1) *Tumba*, (2) *Trutıta*, and (3) *Parvaa*. **147.** The *Agramahıshıs* (chıef queens) of Chamar Asurendra have three *parıshads* (assemblıes)—(1) *Tumba*, (2) *Trutıta*, and (3) *Parvaa* **148.** Vaırochanendra Balı (another kıng of gods) as well as hıs *Samanık* gods and *Trayastrımshaks* have three *parıshads* (assemblıes) each—(1) *Samıta*, (2) *Chanda*, and (3) *Jaata* And his *Lokapalaks* and *Agramahıshıs* too have three *parıshads* (assemblıes) each—(1) *Tumba*, (2) *Trutıta*, and (3) *Parvaa*

**१४९. धरणस्स य सामाणिय-तायत्तीसगाणं च-समिता चंडा जाता। १५०. लोगपालाणं, अग्गमहिसीणं ईसा तुडिया दढरहा। १५१. जहा धरणस्स तहा सेसाणं भवणवासीणं।**

१४९. नागकुमारो के राजा धरण नागेन्द्र तथा उसके सामानिको एव त्रायस्त्रिशको की तीन-तीन परिषद् है-(१) समिता, (२) चण्डा, और (३) जाता। १५०. धरण नागेन्द्र के लोकपालो और अग्रमहिषियो की तीन-तीन परिषद् है-(१) ईषा, (२) त्रुटिता, और (३) दृढरथा। १५१. जैसा धरण की परिषदो का वर्णन है, वैसा ही शेष भवनवासी देवो की परिषदो का भी वर्णन जानना चाहिए।

**149.** Dharan Naagendra, the kıng of *Naag Kumar* gods as well as hıs *Samanık* gods and *Trayastrımshaks* have three *parıshads* (assemblies) each—(1) *Samıta*, (2) *Chanda*, and (3) *Jaata* **150.** *Lokapalaks* and *agramahıshıs* of Dharan Naagendra too have three *parıshads* (assemblıes) each—(1) *Isha*, (2) *Trutıta*, and (3) *Drıdharatha* **151.** The description of the assemblıes of remaınıng abode dwelling gods should be read as that of Dharan Naagendra

१५२. कालस्स णं पिसाइंदस्स पिसायरण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—ईसा तुडिया दढरहा। १५३. एवं—सामाणिय—अग्गमहिसीणं। १५४. एवं जाव गीयरतिगीयजसाणं।

१५२. पिशाचो के राजा काल पिशाचेन्द्र की तीन परिषद् हैं-(१) ईशा, (२) त्रुटिता, और (३) दृढ़रथा। १५३. इसी प्रकार उसके सामानिकों और अग्रमहिषियों की भी तीन-तीन परिषद् हैं। १५४. इसी प्रकार गन्धर्वेन्द्र गीतरति और गीतयश तक के सभी वाणव्यन्तर देवेन्द्रों की तीन-तीन परिषद् हैं।

**152.** Kaal Pishaachendra, the king of *Pishaachas* has three *parishads* (assemblies) each—(1) *Isha*, (2) *Trutita,* and (3) *Dridharatha.* **153.** In the same way his *Samanik* gods and *Agramahishis* too have three *parishads* (assemblies) each **154.** In the same way all kings of gods of *Vanavyantars* (interstitial gods) up to Gitarati and Gitayash, the kings of *Gandharvas*, have three *parishads* (assemblies) each

१५५. चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तुंबा तुडिया पव्वा। १५६. एवं सामाणिय—अग्गमहिसीणं। १५७. एवं—सूरस्सवि।

१५५. ज्योतिष्क देवो के राजा चन्द्र ज्योतिष्केन्द्र की तीन परिषद् है-(१) तुम्बा, (२) त्रुटिता, और (३) पर्वा। १५६. इसी प्रकार उसके सामानिको और अग्रमहिषियो की भी तीन-तीन परिषद् है। १५७. इसी प्रकार सूर्य इन्द्र की और उसके सामानिको तथा अग्रमहिषियो की तीन-तीन परिषद् हैं।

**155.** Chandra Jyotishkendra, the king of *Jyotishk Devs* (stellar gods) has three *prarishads* (assemblies) each—(1) *Tumba*, (2) *Trutita,* and (3) *Parvaa* **156.** In the same way his *Samanik* gods and *Agramahishis* too have three *parishads* (assemblies) each **157.** In the same way Surya Indra and his *Samanik* gods and *Agramahishis* too have three *parishads* (assemblies) each.

१५८. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समिता, चंडा, जाया। १५९. एवं—जहा चमरस्स जाव अग्गमहिसीणं। १६०. एवं जाव अच्चुतस्स लोगपालाणं।

१५८. देवो के राजा शक्र देवेन्द्र की तीन परिषद् है-(१) समिता, (२) चण्डा, और (३) जाता। १५९. इसी प्रकार जैसे चमर की यावत् उसकी अग्रमहिषियो की परिषदों का वर्णन है, उसी प्रकार शक्र देवेन्द्र के सामानिकों और त्रायस्त्रिंशको आदि की तीन-तीन परिषद् है। १६०. इसी प्रकार ईशानेन्द्र से लेकर अच्युतेन्द्र तक के सभी इन्द्रो, उनकी अग्रमहिषियो, सामानिक, लोकपाल और त्रायस्त्रिंशक देवों की भी तीन-तीन परिषद् हैं।

**158.** Shakra Devendra, the king of gods has three *parishads* (assemblies) each —(1) *Tumba*, (2) *Trutita,* and (3) *Parvaa* **159.** In the

same way his *Samanik* gods and so on up to *Agramahishis* too have three *parishads* (assemblies) each as detailed in case of Chamarendra **160.** In the same way all kings of gods from Ishanendra to Achyutendra, their *Samanik* gods . and so on up to *Agramahishis* too have three *parishads* (assemblies) each.

**विवेचन**—आभ्यन्तर परिषद् के देव विशेष सम्माननीय होते है तथा विशेष निमत्रण पर आते हैं। मध्यम परिषद् के देव निमंत्रण पर तथा आवश्यक होने पर बिना निमत्रण के भी उपस्थित होते है। बाह्य परिषद् के देव निर्धारित समय पर स्वत उपस्थित होते है। किसी विशेष विषय पर पहले आभ्यन्तर परिषद् विचार करती है, आभ्यन्तर परिषद् का निर्णय मध्यम परिषद् के समक्ष आता है। उसमे स्वीकृत होने पर बाह्य परिषद् मे उस पर विचार किया जाता है और फिर वहाँ से क्रियान्वित करने के लिए अधिकारी देवो को दिया जाता है। इससे पता चलता है कि देवो की शासन व्यवस्था कितनी सुचारु प्रजातात्रिक है। किसी भी प्रशासकीय विषय पर विचार करने के लिए इन्द्र की प्रमुख परिषद् के अतिरिक्त, सामानिक, त्रायस्त्रिशक, लोकपाल और अग्रमहिषियो की पृथक् परिषदे है। प्रत्येक परिषद् मे विचार निर्णय के अनन्तर उस विषय को इन्द्र के समक्ष प्रमुख सभा में प्रस्तुत किया जाता है। *(हिन्दी टीका, पृष्ठ ४१८)*

**Elaboration**—The gods of the inner assembly are specially honoured and they attend only on special invitation. The gods of the middle assembly generally attend on invitation but when needed they attend without invitation also The gods of the outer assembly attend as a rule at assigned time Any special issue under consideration is first of all placed for deliberation before the inner assembly The decision of the inner assembly is then placed before the middle assembly Once approved it comes to the outer assembly and discussed there After this the final outcome is passed on to the gods responsible for implementation This reveals how efficient and democratic is the system of governance of gods For deliberating on all administrative matters there are independant assemblies of *Samanik, Trayastrimshak* and *Lokapalak* gods as well as *Agramahishis* (chief queens) After deliberations and arriving at a decision, the issue is placed before the king in the main assembly *(Hindi Tika, p 418)*

### याम-पद YAAM-PAD (SEGMENT OF DIVISION OF A DAY)

**१६१. तओ जामा पण्णत्ता, तं जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे। १६२. तिहिं जामेहिं आया केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, तं जहा—पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे। १६३. एवं जाव [ तिहिं जामेहिं आया केवलं बोधिं बुज्झेज्जा, तं जहा—पढमे**

**जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे। १६४. ....केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा। १६५. ....केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा। १६६. ....केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, १६७. ....केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा। १६८. ....केवलमाभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा। १६९. ....केवलं सुयणाणं उप्पाडेज्जा। १७०. ....केवलं ओहिणाणं उप्पाडेज्जा। १७१. ....केवलं मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा। १७२. ....केवलं केवलणाणं उप्पाडेज्जा, तं जहा— पढमे जामे, मज्झिमे जामे, पच्छिमे जामे।**

१६१. तीन याम (प्रहर) कहे है— प्रथम याम, मध्यम याम और पशिचम याम। १६२. तीनों ही यामो में आत्मा केवलि-भाषित धर्म-श्रवण का लाभ प्राप्त करता है-प्रथम याम मे, मध्यम याम में और पशिचम याम मे। १६३. [इन तीनो ही यामो मे आत्मा विशुद्धबोधि को प्राप्त करता है। १६४. इन मुण्डित होकर अगार से अनगारिता मे प्रव्रजित होता है। १६५. आत्मा विशुद्ध ब्रह्मचर्यवास मे निवास करता है। १६७. आत्मा विशुद्ध संवर से सवृत होता है। १६८. आत्मा विशुद्ध आभिनिबोधिक ज्ञान को प्राप्त करता है। १६९. विशुद्ध श्रुतज्ञान को प्राप्त करता है। १७०. विशुद्ध अवधिज्ञान को प्राप्त करता है। १७१. विशुद्ध मन पर्यवज्ञान को प्राप्त करता है। १७२. तथा इन तीनों यामो में आत्मा विशुद्ध केवलज्ञान को प्राप्त करता है।

**161.** *Yaam* (a specific division of the day) is of three kinds—*pratham* (first), *madhyam* (middle) and *pashchim* (last) **162.** During all the three *yaams* soul gains benefit of listening to the religion propagated by the Omniscient—*pratham* (first), *madhyam* (middle) and *pashchim* (last) **163.** In the same way [during all the three *yaams* soul attains pure enlightenment **164.** gets initiated as *anagar* (homeless ascetic) after tonsuring his head and renouncing home **165.** . lives as a perfect celibate. **166.** ...lives with perfect discipline **167.** . attains the level of perfect *samvar* (blocking the inflow of *karmas*) **168.** acquires pure *abhinibodhik jnana* (sensory knowledge) **169.** ..acquires pure *shrut-jnana* (scriptural knowledge). **170.** .acquires pure *avadhi-jnana* (extrasensory perception of the physical dimension, something akin to clairvoyance) **171.** . .acquires pure *manahparyav-jnana* (extrasensory perception and knowledge of thought process and thought-forms of other beings, something akin to telepathy).] **172.** During all the three *yaams* soul attains pure *Keval-jnana* (omniscience).

**विवेचन**—'याम' का प्रसिद्ध अर्थ दिन या रात का चौथा भाग एक प्रहर है। किन्तु यहाँ त्रिस्थान का प्रकरण होने से रात्रि को तथा दिन को तीन यामो में विभक्त करके वर्णन किया है। अर्थात् दिन और रात्रि के तीसरे भाग को याम कहते है। जैसे कि पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न। इस सूत्र का आशय यह है

कि दिन रात का ऐसा कोई भी समय नहीं है, जिसमे आत्मा धर्म-श्रवण से लेकर विशुद्धबोधि आदि यावत् केवलज्ञान को न प्राप्त कर सके।

**Elaboration**—The popular meaning of *yaam* is a quarter of a day (three hours). But being in the third placement here the description is based on three divisions of a day In other words one-third of a day or night is called *yaam* For example *purvanha* (morning), *madhyanha* (noon) and *aparanha* (evening) This aphorism conveys that during the day or night there is no such time when a soul cannot acquire religious knowledge. and so on up to omniscience

**वय:-पद VAYAH-PAD (SEGMENT OF AGE)**

**१७३. तओ वया पण्णत्ता, तं जहा—पढमे वए, मज्झिमे वए, पच्छिमे वए। १७४. तिहिं वएहिं आया केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, तं जहा—पढमे वए, मज्झिमे वए, पच्छिमे वए। १७५. [ एसो चेव गमो णेयव्वो जाव केवलनाणं ति। ]**

१७३. वय (अवस्था) तीन है-प्रथमवय, मध्यमवय और पश्चिमवय। १७४. तीनो ही वयो मे आत्मा केवलि-भाषित धर्म-श्रवण का लाभ प्राप्त करता है-प्रथमवय मे, मध्यमवय मे और पश्चिमवय मे। १७५. [इसी प्रकार तीनों ही वयो मे आत्मा विशुद्धबोधि (सम्यग्दर्शन) को, विशुद्ध अनगारिता को, ब्रह्मचर्यवास सवर, आभिनिबोधिक ज्ञान, मन पर्यवज्ञान यावत् केवलज्ञान को प्राप्त करता है।]

**173.** *Vaya* (age; of a man) is of three kinds—*pratham vaya* (young age), *madhyam vaya* (middle age) and *pashchim vaya* (old age) **174.** During all the three *vayas* soul gains benefit of listening to the religion propagated by the Omniscient—*pratham vaya* (young age), *madhyam vaya* (middle age) and *pashchim vaya* (old age) **175.** [In the same way during all the three *vayas* soul attains pure enlightenment, pure *anagarita* (ascetic life), perfect celibacy, perfect *samvar*, pure *abhinibodhik-jnana*, pure *manahparyav-jnana* and so on up to *Keval-jnana* ]

**विवेचन**—सस्कृत टीकाकार ने एक प्राचीन श्लोक को उद्धृत करके कहा है-"सोलह वर्ष तक बाल्यकाल, सत्तर वर्ष तक .ध्यमकाल और इससे आगे वृद्धकाल होता है। साधु दीक्षा आठ वर्ष के पूर्व नहीं देने का विधान है, अत प्रस्तुत सदर्भ मे प्रथमवय का अर्थ आठ वर्ष से लेकर तीस वर्ष तक का कुमारकाल होना चाहिए। इकतीस वर्ष से लेकर साठ वर्ष तक के समय को युवावस्था या मध्यमवय और उससे आगे की वृद्धावस्था को पश्चिमवय जानना चाहिए। इससे यह सिद्ध होता है कि बाल्यवय मे भी आत्मा केवलज्ञान प्राप्त कर मुक्त हो सकता है।"

**Elaboration**—Quoting an ancient verse, the Sanskrit commentator states that up to sixteen years it is young age, then up to seventy years it

is middle age and after that it is old age. However, as initiation as an ascetic is prohibited before eight years of age, here young age should be interpreted as eight to thirty years of age, thirty one years to sixty years as middle age and beyond that old age. This indicates that one can attain omniscience and get liberated even as a child

### बोधि–पद BODHI-PAD (SEGMENT OF ENLIGHTENMENT)

**१७६. तिविधा बोधी पण्णत्ता, तं जहा–णाणबोधी, दंसणबोधी, चरित्तबोधी। १७७. तिविहा बुद्धा पण्णत्ता, तं जहा–णाणबुद्धा, दंसणबुद्धा, चरित्तबुद्धा।**

१७६. बोधि तीन प्रकार की है–(१) ज्ञानबोधि–(सम्यग्ज्ञान), (२) दर्शनबोधि–(सम्यग्दर्शन), और (३) चारित्रबोधि–(सम्यक्चारित्र)। १७७. बुद्ध तीन प्रकार के है–(१) ज्ञानबुद्ध, (२) दर्शनबुद्ध, और (३) चारित्रबुद्ध।

**176.** *Bodhi* (enlightenment) is of three kinds—(1) *jnana-bodhi* (right knowledge), (2) *darshan-bodhi* (right perception/faith), and (3) *charitra-bodhi* (right conduct) **177.** *Buddha* (enlightened) is of three kinds—(1) *jnana-buddha* (having right knowledge), (2) *darshan-buddha* (having right perception/faith), and (3) *charitra-buddha* (having right conduct)

### मोह–पद MOHA-PAD (SEGMENT OF PERVERSION)

**१७८. एवं मोहे, मूढा [ तिविहे मोहे पण्णत्ते, तं जहा–णाणमोहे, दंसणमोहे, चरित्तमोहे। १७९. तिविहा मूढा पण्णत्ता, तं जहा–णाणमूढा, दंसणमूढा, चरित्तमूढा ]।**

१७८. मोह (बुद्धि का विपर्यास या विपरीतता) तीन प्रकार का है–[(१) ज्ञानमोह, (२) दर्शनमोह, और (३) चारित्रमोह।] १७९. मूढ तीन प्रकार के है–(१) ज्ञानमूढ, (२) दर्शनमूढ और (३) चारित्रमूढ।

**178.** *Moha* (perversion) is of three kinds—(1) *jnana-moha* (pervert knowledge), (2) *darshan-moha* (pervert perception/faith), and (3) *charitra-moha* (pervert conduct) **179.** *Moodh* (perverted) is of three kinds—(1) *jnana-moodh* (having pervert knowledge), (2) *darshan-moodh* (having pervert perception/faith), and (3) *charitra-moodh* (having pervert conduct).

### प्रव्रज्या–पद PRAVRAJYA-PAD (SEGMENT OF ASCETIC-INITIATION)

**१८०. तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा–इहलोगपडिबद्धा, परलोगपडिबद्धा, दुहतो पडिबद्धा। १८१. तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा–पुरतो पडिबद्धा, मग्गतो पडिबद्धा, दुहओ पडिबद्धा। १८२. तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा–तुयावइत्ता, पुयावइत्ता, बुआवइत्ता। १८३. तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता, तं जहा–उववातपव्वज्जा, अक्खातपव्वज्जा, संगारपव्वज्जा।**

१८०. प्रव्रज्या तीन प्रकार की है-(१) **इहलोक प्रतिबद्धा**-(इहलौकिक सुखो की प्राप्ति मे लिए अंगीकार की जाने वाली) प्रव्रज्या, (२) **परलोक प्रतिबद्धा**-(परलोक सम्बन्धी सुखो की प्राप्ति के लिए स्वीकार की जाने वाली) प्रव्रज्या और **द्वयलोक प्रतिबद्धा**-(दोनों लोकों में सुखो की प्राप्ति के लिए ग्रहण की जाने वाली) प्रव्रज्या। १८१. प्रव्रज्या तीन प्रकार की है-(१) **पुरतः प्रतिबद्धा**-(भविष्य में शिष्य आदि की प्राप्ति की कामना से ली जाने वाली) प्रव्रज्या, (२) **पृष्ठतः प्रतिबद्धा**-(पीछे के स्वजनादि के साथ स्नेहसम्बन्ध विच्छेद होने के कारण उनके साथ रहने की भावना से प्रतिबद्ध) प्रव्रज्या, और (३) **उभयतः प्रतिबद्ध**-(आगे के शिष्य आदि और पीछे के स्वजन आदि के स्नेह आदि से प्रतिबद्ध) प्रव्रज्या। १८२. प्रव्रज्या तीन प्रकार की है-(१) **तोदयित्वा**-(डराकर अथवा कष्ट देकर दी जाने वाली) प्रव्रज्या, (२) **प्लावयित्वा**-(दूसरे स्थान पर ले जाकर दी जाने वाली) प्रव्रज्या, और (३) **वाचयित्वा**-(बातचीत करके दी जाने वाली) प्रव्रज्या। १८३. प्रव्रज्या तीन प्रकार की है-(१) **अवपात**-(गुरु-सेवा के लिए ली जाने वाली) प्रव्रज्या, (२) **आख्यात**-(उपदेश से प्रतिबुद्ध होकर ली जाने वाली) प्रव्रज्या, और (३) **संगार**-(परस्पर प्रतिज्ञाबद्ध या शर्त लगाकर ली जाने वाली) प्रव्रज्या।

**180.** *Pravrajya* (ascetic-initiation) is of three kinds—(1) *iha-lok pratibaddha pravrajya* (ascetic-initiation aimed at happiness during this life), (2) *par-lok pratibaddha pravrajya* (ascetic-initiation aimed at happiness during next life), and (3) *dvaya-lok pratibaddha pravrajya* (ascetic-initiation aimed at happiness during both current as well as next life) **181.** *Pravrajya* (ascetic-initiation) is of three kinds—(1) *puratah pratibaddha pravrajya* (ascetic-initiation accepted with a wish to gain disciples and followers in future), (2) *prishthatah pratibaddha pravrajya* (ascetic-initiation accepted with a wish to regain good relations, with relatives and friends, that were terminated in the past), and (3) *ubhayatah pratibaddha pravrajya* (ascetic-initiation accepted with a wish to gain affection of both disciples in future and relatives from the past). **182.** *Pravrajya* (ascetic-initiation) is of three kinds—(1) *todayitva pravrajya* (ascetic-initiation enforced through fear or intimidation), (2) *plavayitva pravrajya* (ascetic-initiation enforced after shifting to other place), and (3) *vachayitva pravrajya* (ascetic-initiation given after talking and convincing) **183.** *Pravrajya* (ascetic-initiation) is of three kinds—(1) *avapaat pravrajya* (ascetic-initiation accepted in order to serve the guru), (2) *akhyaat pravrajya* (ascetic-initiation accepted after getting enlightened by a discourse), and (3) *sangaar pravrajya* (ascetic-initiation accepted by commitment or a wager).

**विवेचन**-टीकाकार अभयदेवसूरि ने तोदयित्वा प्रव्रज्या के लिए 'सागरचन्द्र' का, प्लावयित्वा दीक्षा के लिए आर्यरक्षित का और वाचयित्वा दीक्षा के लिए गौतमस्वामी से वार्त्तालाप कर दीक्षा लेने वाले हालिक किसान का उल्लेख किया है। इसी प्रकार आख्यातप्रव्रज्या के लिए फल्गुरक्षित का और

संगारप्रव्रज्या के लिए मेतार्य के नाम का उल्लेख किया है। *(दशवें स्थान, सूत्र १५ में दस प्रकार की प्रव्रज्या का वर्णन है। इसके परिशिष्ट मे सम्बन्धित टीका के उदाहरण भी दिये हैं। देखे–परिशिष्ट)*

**Elaboration**—Abhayadev Suri, the commentator (*Tika*), has given examples of Sagar Chandra for *todayitva pravrajya*, Arya Rakshit for *plavayitva pravrajya*; and Halik farmer, who got initiated after a discussion with Gautam Swami, for *vachayitva pravrajya* In the same way he has mentioned the name of Phalgurakshit for *akhyaat pravrajya* and Metarya for *sangaar pravrajya*. *(for these stories refer to Sthananga Sutra-I edited by Muni Jambuvijaya ji, appendix 1, pp 10-16)*

***निर्ग्रन्थ–पद*** **NIRGRANTH-PAD (SEGMENT OF ACCOMPLISHED ASCETICS)**

**१८४. तओ णियंठा णोसण्णोवउत्ता पण्णत्ता, तं जहा–पुलाए, णियंठे, सिणाए। १८५. तओ णियंठा सण्णा–णोसण्णोवउत्ता पण्णत्ता, तं जहा–बउसे, पडिसेवणाकुसीले, कसायकुसीले।**

१८४. तीन प्रकार के निर्ग्रन्थ नोसज्ञा से उपयुक्त होते है–(१) पुलाक, (२) निर्ग्रन्थ, और (३) स्नातक। १८५. तीन प्रकार के निर्ग्रन्थ सज्ञा और नोसज्ञा, इन दोनो से उपयुक्त होते है–(१) बकुश, (२) प्रतिसेवनाकुशील, और (३) कषायकुशील।

**184.** Three kinds of *nirgranthas* (accomplished ascetics) are *no-sanjnopayukt* (endowed with *no-sanjna* or freedom from desires and perversions)—(1) *pulaak*, (2) *nirgranth*, and (3) *snatak* **185.** Three kinds of *nirgranthas* (accomplished ascetics) are both *no-sanjnopayukt* (endowed with *no-sanjna* or freedom from desires and perversions) and *sanjnopayukt* (encumbered with *sanjna* or desires and perversions)—(1) *bakush*, (2) *pratisevanakusheel*, and (3) *kashayakusheel*.

**विवेचन**–आहार आदि की अभिलाषा या मनोविकार को **संज्ञा** कहते है। जो इस प्रकार की सज्ञा से युक्त होते है उन्हे **संज्ञोपयुक्त** और जो इस प्रकार की संज्ञा से मुक्त होते है, उन्हें **नो संज्ञोपयुक्त** कहते हैं। इन दोनो प्रकार के निर्ग्रन्थो का स्वरूप इस प्रकार है–

(१) **पुलाक निर्ग्रन्थ**–तपस्या द्वारा लब्धि प्राप्त होने पर क्रोधादि वश होकर उसका उपयोग करके अपने सयम को धान्यरहित भूसी के समान सारहीन करने वाले साधु।

(२) **निर्ग्रन्थ**–जिसके मोह–कर्म उपशान्त हो गया है, ऐसे ग्यारहवे गुणस्थानवर्ती और जिसका मोहकर्म क्षय हो गया है ऐसे बारहवें गुणस्थानवर्ती मुनि निर्ग्रन्थ कहे जाते है।

(३) **स्नातक**–घनघाति चारों कर्मों का क्षय करने वाले तेरहवे और चौदहवे गुणस्थानवर्ती अरहन्तो को स्नातक (विशुद्ध) कहते हैं। इन तीनो को नोसज्ञोपयुक्त कहा गया है–

(१) **बकुश**–शरीर और उपकरण की विभूषा के लिए अपने चारित्र मे दोष लगाने वाले।

(२) प्रतिसेवनाकुशील–किसी मूल गुण की विराधना करने वाले।

(३) कषायकुशील–क्रोधादि कषायो के आवेश में आकर अपने शील (चारित्र) को कुत्सित करने वाले।

साधारण रूप से तो ये आहारादि की अभिलाषा से रहित नोसज्ञोपयुक्त होते हैं, किन्तु किसी निमित्त विशेष के मिलने पर आहार, भय आदि सज्ञाओ से उपयुक्त भी हो जाते हैं।

**Elaboration**—Desire for food and other things as also mental aberrations are called *sanjna* Those who are encumbered with such *sanjna* are called *sanjnopayukt*. Those who are free of such *sanjna* are called *no-sanjnopayukt* Details about these two types of accomplished ascetics are as follows—

(1) ***Pulaak nirgranth***—These are the ascetics who turn their ascetic-discipline worthless like grainless chaff by employing, under influence of anger or other passions, their special powers acquired through rigorous austerities

(2) ***Nirgranth***—These are the ascetics at eleventh and twelfth *Gunasthan* with pacified *Mohakarma* (deluding *karma*) and extinct *Mohakarma* respectively

(3) ***Snatak***—The accomplished ascetics (*arhants*) at the thirteenth and fourteenth *Gunasthans* who have destroyed all the four vitiating *karmas* are called *snataks* (pure) These three are included in the *no-sanjnopayukt* class—

(1) ***Bakush***—These are the ascetics who tarnish their conduct for embellishing their bodies and equipment

(2) ***Pratisevanakusheel***—These are the ascetics who transgress some basic ascetic-quality (*mool-guna*)

(3) ***Kashayakusheel***—Agitated under the influence of anger and other passions, these ascetics tarnish their conduct These three are normally free of desire for food etc and *no-sanjnopayukt*. But under certain circumstances they come under the influence of passions and turn into *sanjnopayukt* or encumbered with shortcomings like desire for food and fear.

### शैक्षभूमि-पद SHAIKSH-BHUMI-PAD (SEGMENT OF PERIOD OF TRAINING)

**१८६. तओ सेहभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा। उक्कोसा छम्मासा, मज्झिमा चउमासा, जहण्णा सत्त राइंदिया।**

१८६. तीन शैक्षभूमियाँ हैं–(१) उत्कृष्ट, छह मास की, (२) मध्यम, चार मास की, और (५) जघन्य, सात दिन–रात की।

**186.** *Shaiksh-bhumi* (period of training) is of three kinds— (1) maximum of six months, (2) medium of four months, and (3) minimum of seven days and nights

**विवेचन**–सामायिक चारित्र ग्रहण करने वाला नवदीक्षित साधु 'शैक्ष' है और उसके अभ्यास–काल को 'शैक्षभूमि' कहा जाता है। दीक्षा–ग्रहण करने के समय सर्व सावद्य प्रवृत्ति का त्याग करके सामायिक चारित्र अगीकार किया जाता है। सामायिक चारित्र दो प्रकार का है–(१) **यावत्कथिक**–(जीवन पर्यन्त) यह मध्यवर्ती २२ तीर्थंकरो के शासन मे होता है। (२) **इत्वरिक**–यह प्रथम, अन्तिम तीर्थंकरो के शासन मे होता है। इत्वरिक सामायिक चारित्र छेदोपस्थापनीय चारित्र की पूर्व भूमिका है। उसमे निपुणता प्राप्त कर लेने पर छेदोपस्थापनीय चारित्र स्वीकार किया जाता है। प्रस्तुत सूत्र मे सामायिक चारित्र की तीन भूमियाँ बतलाई है–(१) छह मास की उत्कृष्ट शैक्षभूमि के पश्चात् निश्चित रूप से छेदोपस्थापनीय चारित्र स्वीकार करना आवश्यक होता है। यह मन्दबुद्धि शिष्य की भूमिका है। उसे दीक्षित होने के छह मास के भीतर साधु समाचारी का भली–भाँति अभ्यास कर लेना चाहिए। (२) जो इससे अधिक बुद्धिमान शिष्य होता है, वह उक्त कर्त्तव्यो का चार मास मे अभ्यास कर लेता है और उसके पश्चात् छेदोपस्थापनीय चारित्र अगीकार करता है। यह शैक्ष की मध्यम भूमिका है। (३) जो नवदीक्षित प्रबल बुद्धि एव प्रतिभावान् होता है वह उक्त कार्यों को सात दिन मे ही सीखकर छेदोपस्थानीय चारित्र को धारण कर लेता है, यह शैक्ष की जघन्य भूमिका है। *(व्यवहारभाष्य, उ २, गा ५३–५४)*

**Elaboration**—A newly initiated ascetic who has accepted the *samayik-chaaritra* (ascetic-conduct) is called *shaiksh* and the period of his training is called *shaiksh-bhumi* At the time of initiation all sinful tendency and activity is abandoned before accepting *samayik-chaaritra* Ascetic conduct or *samayik-chaaritra* is of two kinds—(1) *yavatkathit* (lifelong) which is applicable only to the periods of influence of twenty two *Tirthankars* besides the first and the last (2) *Itvarik* (for a specific period of time or temporary) which is applicable to the periods of influence of the first and the last *Tirthankars* *Itvarik samayik-chaaritra* is preparatory practice for qualifying to accept *Chhedopasthaniya Chaaritra* (conduct of re-initiation after rectifying faults) In this aphorism three durations of training at the *Samayik chaaritra* level have been mentioned—(1) It is mandatory to accept *Chhedopasthaniya Chaaritra* after a maximum period of training of six months This duration is meant for a dull disciple. He should properly complete his training of the ascetic praxis (*sadhu-samachari*) within six months of initiation (2) Slightly more intelligent disciples complete this training

within four months and then accept *Chhedopasthaniya Chaaritra* This is the medium training period (3) A new initiate who is highly intelligent and talented completes this training in seven days and accepts *Chhedopasthaniya Chaaritra* This is the minimum training period. *(Vyavahar Bhashya 2/53-54)*

**थेरभूमि-पद THERABHUMI-PAD (SEGMENT OF CLASS OF SENIOR ASCETIC)**

**१८७. तओ थेरभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–जातिथेरे, सुयथेरे, परियायथेरे। सट्ठिवासजाए समणे णिग्गंथे जातिथेरे, ठाणसमवायधरे णं समणे णिग्गंथे सुयथेरे, वीसवासपरियाए णं समणे णिग्गंथे परियायथेरे।**

१८७. तीन स्थविरभूमियाँ है–(१) जातिस्थविर, (२) श्रुतस्थविर, और (३) पर्यायस्थविर। साठ वर्ष का श्रमण निर्ग्रन्थ जातिस्थविर–(वय स्थविर) है। स्थानाग और समवायाग का धारक श्रमण श्रुतस्थविर है और बीस वर्ष की दीक्षापर्याय वाला श्रमण निर्ग्रन्थ पर्यायस्थविर है।

**187.** There are three kinds of *sthavir-bhumi* (classes of senior ascetic)—(1) *jati sthavir*, (2) *shrut sthavir*, and (3) *paryaya sthavir* A sixty year old *shraman nirgranth* (Jain ascetic) is *jati sthavir* (senior in terms of age) An ascetic who has thoroughly studied *Sthananga* and *Samvayanga* is *shrut sthavir* (senior in terms of canonical knowledge) An ascetic who has spent twenty years as an ascetic is *paryaya sthavir* (senior in terms of period of initiation)

***सुमन-दुर्मनादि-पद [ मनोवृत्ति के अनुरूप मानव चरित्र का विश्लेषण ]***

**SUMAN-DURMANADI-PAD (SEGMENT OF GOOD TEMPERED, BAD TEMPERED ETC.)**

**१८८. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सुमणे, दुम्मणे, णोसुमणे–णोदुम्मणे।**

**१८९. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–गंता णामेगे सुमणे भवइ, गंता णामेगे दुम्मणे भवइ, गंता णामेगे णोसुमणे णोदुम्मणे भवइ। १९०. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–जामीतेगे सुमणे भवइ, जामीतेगे दुम्मणे भवइ, जामीतेगे णोसुमणे–णोदुम्मणे भवइ। १९१. एवं जाइस्सामीतेगे सुमणे भवइ (३)।**

**१९२. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–अगंता णामेगे सुमणे भवइ (३)।**

**१९३. तओ पुरिस जाया पण्णत्ता, तं जहा–ण जामि एगे सुमणे भवइ (३)।**

**१९४. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–ण जाइस्सामि एगे सुमणे भवइ (३)।**

**१९५. एवं आगंता णामेगे सुमणे भवइ (३)। १९६. एमीतेगे सुमणे भवइ (३)। १९७. एस्सामीति एगे सुमणे भवइ (३)।**

**एवं एएणं अभिलावेणं—**

**१९८. १. गंता य अगंता (य), २. आगंता खलु तहा अणागंता।**
**३. चिट्ठित्तमचिट्ठित्ता, ४. णिसिइत्ता चेव नो चेव॥**
**५. हंता य अहंता य, ६. छिंदित्ता खलु तहा अच्छिंदित्ता।**
**७. बूइत्ता अबूइत्ता, ८. भासित्ता चेव णो चेव॥**
**९. दच्चा य अदच्चा य, १०. भुंजित्ता खलु तहा अभुंजित्ता।**
**११. लंभित्ता अलंभित्ता, १२. पिइत्ता चेव णो चेव॥**
**१३. सुइत्ता असुइत्ता, १४. जुज्झित्ता खलु तहा अजुज्झित्ता।**
**१५. जइत्ता अजयित्ता य, १६. पराजिणित्ता य चेव नो चेव॥**
**१७. सद्दा, १८. रूवा।**
**१९. गंधा, २०. रसा य।**
**२१. फासा तहेव ठाणा य। (२१ × ६ = १२६ + १ = १२७)**

**निस्सीलस्स गरहिता, पसत्था पुण सीलवंतस्स।**

**एवमिक्केक्के तिन्नि उ तिन्नि उ आलावगा भाणियव्वा।**

**सद्दं सुणेत्ता णामेगे सुमणे भवइ (३)। एवं सुणेमीति. (३), सुणिस्सामीति. (३)।**

**एवं असुणेत्ता. णामेगे सुमणे भवइ। न सुणेमीति। न सुणिस्सामीति। एवं रूवाइं, गंधाइं, रसाइं, फासाइं, एक्केक्के छ–छ आलावगा भाणियव्वा।**

१८८. तीन प्रकार के पुरुष होते है, जैसे–(१) सुमनस्क–सुन्दर मन वाले, (२) दुर्मनस्क–असुन्दर मन वाले, और (३) न सुन्दर न असुन्दर मन वाले (मध्यस्थ वृत्ति रखने वाले)।

१८९. (विभिन्न प्रसगों की अपेक्षा से) तीन प्रकार के पुरुष होते है, जैसे–(१) कोई पुरुष कहीं जाकर हर्षित होता है, (२) कोई कहीं जाकर दु:खित होता है, और (३) कोई न हर्षित होता है न दु:खी होता है (तटस्थ रहता है)।.(ये अतीतकाल के तीन भग है।) १९०. तीन प्रकार के पुरुष होते है, जैसे–(१) कोई मै जाता हूँ, ऐसा विचार कर प्रसन्न होता है, (२) कोई मै जाता हूँ, इस विचार से दु.खी होता है, और (३) कोई मैं जाता हूँ, इससे न सुखी और न दु खी होता है। (ये वर्तमान क्रिया के तीन भंग हैं।) १९१. इसी प्रकार कोई पुरुष किसी स्थान पर जाऊँगा, ऐसा विचार करने पर सुमन होता है, दुर्मन होता है कोई समभावयुक्त रहता है। (ये भविष्यत् काल के तीन भंग हैं।)

१९२. तीन प्रकार के पुरुष होते है, जैसे--कोई अमुक स्थान पर नहीं गया, ऐसा विचार कर सुमन, कोई दुर्मन और कोई समभाव रहता है (३)।

१९३. तीन प्रकार के पुरुष होते है, जैसे--कोई पुरुष मै नही जाता हूँ, ऐसा विचारने से सुमन और कोई दुर्मन तथा कोई न सुमन न दुर्मन होता है (३)।

१९४. तीन प्रकार के पुरुष होते है, जैसे--मै नही जाऊँगा, ऐसा विचारने से कोई सुमन, कोई दुर्मन और कोई तटस्थभावयुक्त रहता है (३)।

१९५. इसी प्रकार कोई पुरुष (भूतकाल मे) अमुक स्थान पर आया था, यह विचार कर सुमन, कोई दुर्मन और कोई समभावयुक्त रहता है।

१९६. अमुक स्थान पर आता हूँ, यह विचार कर कोई सुमन, कोई दुर्मन और कोई मध्यस्थ भाव युक्त होता है।

१९७. इसी प्रकार कोई व्यक्ति अमुक स्थान पर (भविष्यत् काल) आऊँगा, ऐसा विचारने से सुमन, कोई दुर्मन और कोई तटस्थ रहता है। इसी अभिलाप से निम्नलिखित गाथाओ को जानना चाहिए, जैसे--

१९८. (१) अमुक स्थान पर जाकर और न जाकर (३)।

(२) अमुक स्थान पर आकर और न आकर (३)।

(३) अमुक स्थान पर ठहरकर और न ठहरकर (३)।

(४) अमुक स्थान मे बैठकर और न बैठकर (३)।

(५) अमुक व्यक्ति को मारकर और न मारकर (३)।

(६) अमुक का छेदन कर और न छेदन कर (३)।

(७) अमुक पद--वाक्यादि बोलकर और न बोलकर (३)।

(८) अमुक से सभाषण वार्त्तालाप कर और न कर (३)।

(९) अमुक को देकर और न देकर (३)।

(१०) अमुक वस्तु खाकर और न खाकर (३)।

(११) अमुक वस्तु प्राप्त कर और न प्राप्त कर (३)।

(१२) अमुक पेय पीकर और न पीकर (३)।

(१३) अमुक समय व स्थान पर सोकर और न सोकर।

(१४) अमुक से युद्ध करके और न करके।

(१५) अमुक को जीतकर और न जीतकर।

(१६) अमुक से पराजित होकर और न होकर।

(१७) शब्द, (१८) रूप, (१९) गन्ध, (२०) रस, और (२१) स्पर्श, इनका अनुभव करके सुमन, दुर्मन और तटस्थ रहने के उक्त प्रकार से तीन-तीन रूप भूत, वर्तमान व भविष्य काल के जान लेने चाहिए।

ऊपर कहे गये सभी स्थान शील-व्रत-विहीन पुरुष के लिये गर्हित होते है और शीलवान व्यक्ति के लिये प्रशस्त होते है, इसी प्रकार एक-एक पद के तीन-तीन आलापक जानने चाहिये। जैसे कि-

कोई पुरुष शब्द को सुनकर सुमना, दुर्मना होता है और एक मध्यस्थ वृत्ति रहता है। (१)

कोई शब्द को सुनता हूँ, इस विचार से हर्षित, एक अप्रसन्न और एक मध्यस्थ रहता है। (२)

कोई शब्द को सुनूँगा, ऐसा विचारने पर सुमन, कोई दुर्मन और कोई मध्यस्थ रहता है। (३)

इसी प्रकार कोई व्यक्ति शब्द न सुनकर सुमन, कोई दुर्मन और कोई समभावयुक्त करता है। (४)

शब्द नही सुनता, यह सोचकर कोई व्यक्ति सुमन, कोई दुर्मन और कोई समभावयुक्त होता है। (५)

शब्द नही सुनूँगा ऐसा विचारने पर कोई सुमन, कोई दुर्मन और कोई एक मध्यस्थ होता है। (६)

इसी प्रकार रूप, गन्ध, रस और स्पर्श के भी एक-एक के छ -छ आलापक कथन करने चाहिये।

इस तरह उक्त २१ आलापक का प्रत्येक के ६ भेद करने पर कुल १२७ भेद हो जाते है।

**188.** Men are of three kinds—(1) *sumanask* (good tempered), (2) *durmanask* (bad tempered), and (3) *nosumanask-nodurmanask* (neither good nor bad tempered)

In context of different circumstances—**189.** Men are of three kinds—(1) a man is happy having gone some place, (2) a man is unhappy having gone some place, and (3) a man is neither happy nor unhappy having gone some place (remains neutral) (These are three facets related to the past ) **190.** Men are of three kinds—(1) a man is happy thinking that he goes some place, (2) a man is unhappy thinking that he goes some place, and (3) a man is neither happy nor unhappy thinking that he goes some place (These are three facets related to the present ) **191.** In the same way a man is happy, unhappy or neutral thinking that he will go some place. (These are three facets related to the future )

**192.** Men are of three kinds—a man is happy, another is unhappy and yet another is neutral thinking that he did not go to some place

**193.** Men are of three kinds—a man is happy, another is unhappy and yet another is neutral thinking that he does not go to some place

**194.** Men are of three kinds—a man is happy, another is unhappy and yet another is neutral thinking that he will not go to some place

**195.** In the same way a man is happy, another is unhappy and yet another is neutral thinking that he had come to some place

**196.** A man is happy, another is unhappy and yet another is neutral thinking that he comes to some place.

**197.** In the same way a man is happy, another is unhappy and yet another is neutral thinking that he will come to some place.

The same alternatives should be applied to the following statements—

**198.** (1) Going or not going to some place

(2) Coming or not coming to some place

(3) Staying or not staying at some place.

(4) Sitting or not sitting at some place.

(5) Killing or not killing some person

(6) Piercing or not piercing some thing

(7) Uttering or not uttering some sentence

(8) Talking or not talking to some person

(9) Giving or not giving to some person

(10) Eating or not eating some thing

(11) Getting or not getting some thing

(12) Killing or not killing some person

(13) Drinking or not drinking some liquid.

(14) Fighting or not fighting with some person

(15) Conquering or not conquering some person

(16) Losing or not losing to some person

Three facets each related to past, present and future with regard to being happy, unhappy and neutral on experiencing (17) sound, (18) appearance, (19) smell, (20) taste and (21) touch should also be noted.

All the above said *sthaans* (alternatives) are detrimental for a person devoid of code of good conduct or righteousness and beneficial for one following code of good conduct or righteousness Accordingly three facet of each statement should be noted For example—

A man is happy, another is unhappy and yet another is neutral having heard a sound

A man is happy, another is unhappy and yet another is neutral thinking that he hears a sound

A man is happy, another is unhappy and yet another is neutral thinking that he will hear a sound.

A man is happy, another ıs unhappy and yet another is neutral having not heard a sound.

A man ıs happy, another is unhappy and yet another is neutral thinking that he does not hear a sound

A man is happy, another ıs unhappy and yet another ıs neutral thinkıng that he wıll not hear a sound

In the same way six facets each of appearance, smell, taste and touch should be noted

Thus six dıvısions each of aforesaid twenty one statements make a total of 127 dıvısions

**विवेचन**–सूत्र १८८ से १९७ तक तथा उसके आगे के आलापको में **पुरिसजात** शब्द मनुष्य मात्र के स्वभाव की विभिन्नता व विचित्रता का सूचक है। ससार में मनुष्य विविध प्रकार की रुचि एव मनोवृत्ति वाले होते है। एक ही घटना, प्रसग, अनुभूति तथा प्रवृत्ति से कोई मनुष्य प्रसन्न होता है, कोई अप्रसन्न होता है और कोई तटस्थ रहता है। प्रसन्नता, हर्ष व आनन्द का अनुभव करना सुमनस्कता है। विषाद, खेद व अप्रसन्नता अनुभव करना दुर्मनस्कता है जो उनके प्रति उपेक्षा, उदासीनता, तटस्थता या समभाव रखता है वह न सुमनस है न ही दुर्मन है। सुमनस्कता राग, दुर्मनस्कता द्वेष और तटस्थता समभाव का सूचक है।

उदाहरणस्वरूप–कोई उदार वृत्ति वाला मनुष्य दान देकर प्रसन्न होता है। कजूस वृत्ति वाला देकर दु खी होता है। तटस्थ रहने वाला कर्त्तव्य भाव से देकर उस पर न हर्षित होता है और न ही दु खी।

कोई अमुक भोजन करके सुख अनुभव करता है, कोई दु:ख तथा कोई समभाव रखता है।

उक्त सपूर्ण विवेचन का सारभूत निष्कर्ष बताते हुए सूत्रकार ने कहा है–**निस्सीलस्स गरहिता पसत्था पुण सीलवंतस्स**–प्रत्येक क्रिया, शीलरहित, दु:शील, अव्रती व मिथ्यादृष्टि के लिए गर्हित (दु खदायी) हो जाती है किंतु शीलवान (सदाचारी) व्रतयुक्त सम्यग्दृष्टि के लिए वही क्रिया प्रशस्त व लाभकारी सिद्ध होती है। मनुष्य के सुख–दु ख की अनुभूति का आधार वस्तु नहीं, उसका भाव, दृष्टि या चरित्र होता है। शब्द, रूप आदि का भोग शीलरहित के लिए दु ख का कारण है तो शीलवान व्यक्ति के लिए वही सुख के कारण बन जाते है।

उक्त सूत्रों में प्रत्येक क्रिया के तीन–तीन रूप बताये है। भूतकाल की पूरक क्रिया (जाकर) वर्तमान काल की (जाता हूँ) और भविष्यत् काल की (जाऊँगा)। इस प्रकार प्रत्येक क्रिया के साथ तीन प्रकार की अनुभूति से जीव सुमन, दुर्मन और नोसुमन–नोदुर्मन होता है। शब्द, रूप, रस, गध और स्पर्श के सम्बन्ध में भी उसी प्रकार तीनो काल की तीन प्रकार की अनुभूति होती है। इस प्रकार सुमन, दुर्मन नोसुमन–नोदुर्मन के ४२ विकल्पो के तीन काल सबधी ४२ × ३ = १२६ + १ = १२७ विकल्प होते है।

उक्त आलापक का पाठ स्थानांगसूत्र अभयदेववृत्ति में इसी प्रकार है। आचार्य श्री आत्माराम जी म. ने यही पाठ मान्य रखा है तथा आगमो की अनेक प्राचीन प्रतियों का अनुसधान करने वाले मुनि जम्बूविजय जी ने भी यह पाठ मान्य रखा है। हमने आचार्य श्री आत्माराम जी म की प्रति का पाठ यहाँ दिया है। जैन विश्व भारती, लाडनू तथा आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर की प्रतियों मे सभी के विस्तृत पूरक पाठ दिये गये है। विस्तृत पाठ के इच्छुक उन प्रतियो को देखे।

**Elaboration**—In aphorisms 188 to 197 and still further the term *purisjaat* covers common human nature and its variations and vagaries In this world there are men with varied interests and attitudes One particular incident, occasion, experience and tendency pleases one person, displeases another and yet another remains neutral To experience pleasure, happiness and joy is to be *sumanask* or good tempered To experience displeasure, unhappiness and sadness is to be *durmanask* or bad tempered To ignore, be apathetic, neutral and equanimous is to be neither *sumanask* nor *durmanask* Good temper is sign of attachment, bad temper that of aversion and neutrality that of equanimity

For example a generous person is happy after giving charity A stingy person is unhappy after giving charity A neutral person does charity as his duty and is neither happy nor sad

Some one is pleased to eat a particular food, another person is displeased and yet another remains neutral

Giving the gist of the aforesaid discussion the author states that every action is detrimental for a person devoid of code of good conduct and righteousness but the same action is beneficial for one following code of good conduct and righteousness The basis of the experience of pleasure or pain for a person is not the thing but his feelings, perspective and disposition The enjoyment of sound, appearance and other sensual experiences is cause of misery for one devoid of righteousness but the same becomes the cause of happiness for the righteous

In the aforesaid aphorisms every action has been presented three ways—past (having gone), present (go) and future (will go) Thus with every action a being reflects good temper, bad temper and neutral temper with three kinds of experience In the same way there are three kinds of experience related to three periods with regard to sound, appearance, taste, smell and touch. This way there are 127 divisions of the 21 actions and their opposites (42) for three periods (past, present and future) ($42 \times 3 = 126 + 1 = 127$)

The same reading of this text is available in the Abhayadev *Vritti* of *Sthananga Sutra*. Acharya Shri Atmamarm ji M. has accepted this very reading. Muni Shri Jambuvijaya ji, who has done research on many ancient manuscripts of *Agams*, has also accepted this reading. We have therefore accepted this reading only. The editions from Jain Vishva Bharati, Ladnu and Agam Prakashan Samiti, Beawar have also included additional complementary texts. Readers interested in these detailed texts may refer to those editions.

### गर्हित–स्थान–पद GARHIT-STHAAN-PAD (SEGMENT OF CONDEMNED PLACES)

**१९९. तओ ठाणा णिस्सीलस्स णिग्गुणस्स णिम्मेरस्स णिप्पच्चक्खाणपोसहोववासस्स गरहिता भवंति, तं जहा—अस्सिं लोगे गरहिते भवति, उववाते गरहिते भवति, आयाती गरहिता भवति।**

१९९. शीलरहित, गुणरहित, मर्यादाहीन एवं प्रत्याख्यान तथा पौषधोपवास से विमुख पुरुष के तीन स्थान गर्हित होते हैं–(१) **इहलोक** (वर्तमान भव) गर्हित होता है, (२) **उपपात** (देव और नरक गति का जन्म) गर्हित होता है। (क्योंकि अकामनिर्जरा आदि कारणों से देवभव पाकर भी वह किल्विषिक जैसे निकृष्ट देवों मे उत्पन्न होता है), तथा (३) **आगामी** जन्म (देव या नरक गति के पश्चात् होने वाला मनुष्य या तिर्यंचभव) भी गर्हित होता है, वहाँ भी उसे निम्न अवस्था प्राप्त होती है।

**199.** Three places of a person devoid of *sheel* (chaste disposition), *guna* (noble qualities), *maryada* (discipline), *pratyakhyan* (perfect abstainment) and *paushadhopavas* (partial ascetic vow and fasting) are *garhit* (condemned)—(1) *ihalok* (present life) is condemned, (2) *upapat* is condemned (instantaneous birth in divine or infernal dimensions), and (3) *agami* is condemned (birth after next, *i.e.* as man or animal)

### प्रशस्त–स्थान–पद PRASHAST-STHAAN-PAD (SEGMENT OF GLORIOUS PLACES)

**२००. तओ ठाणा सुसीलस्स सुव्वयस्स सगुणस्स समेरस्स सपच्चक्खाणपोसहोववासस्स पसत्था भवंति, तं जहा—अस्सिं लोगे पसत्थे भवति, उववाए पसत्थे भवति, आयाती पसत्था भवति।**

२००. सुशील, सुव्रती, सद्‌गुणी, मर्यादायुक्त एव प्रत्याख्यान–पौषधोपवास की आराधना करने वाले पुरुष के तीन स्थान प्रशस्त होते हैं–(१) **इहलोक**–(वर्तमान भव) प्रशस्त होता है, (२) **उपपात**–(आगामी देवभव) प्रशस्त होता है, एवं (३) उससे भी आगे का जन्म प्रशस्त होता है।

**200.** Three places of a person endowed with *sheel* (chaste disposition), *guna* (noble qualities), *maryada* (discipline), *pratyakhyan* (perfect abstainment) and *paushadhopavas* (partial ascetic vow and fasting) are *prashast* (glorious)—(1) *ihalok* (present life) is glorious, (2) *upapat* (instantaneous birth in divine or infernal dimensions) is glorious, and (3) *agami* (birth after next, i.e. as man or animal) is glorious

## जीव वर्गीकरण-पद JIVA VARGIKARAN-PAD (SEGMENT OF CLASSIFICATION OF BEINGS)

**२०१. तिविधा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा-इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा। २०२. तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा-सम्मद्दिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी। अहवा-तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा-पज्जत्तगा, अपज्जत्तगा, णोपज्जत्तगा-णोऽपज्जत्तगा एवं सम्मद्दिट्ठी, परित्ता, पज्जत्तगा, सुहुम, सन्नि, भविया य।**

२०१. ससारी जीव तीन प्रकार के है-(१) स्त्री, (२) पुरुष, और (३) नपुंसक। २०२. अथवा सभी जीव तीन प्रकार के है-(१) सम्यग्दृष्टि, (२) मिथ्यादृष्टि, और (३) सम्यग्मिथ्यादृष्टि। अथवा सब जीव तीन प्रकार के हैं-(१) पर्याप्त, (२) अपर्याप्त, एव (३) न पर्याप्त और न अपर्याप्त (सिद्ध)। इसी प्रकार सम्यग्दृष्टि, परीत (एक शरीर में एक जीव वाला), अपरीत (एक शरीर मे अनन्त जीव वाला), नोपरीत-नोअपरीत (सिद्ध), सूक्ष्म, बादर, नोसूक्ष्म-नोबादर (सिद्ध), संज्ञी, असज्ञी, नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी (सिद्ध), भव्य, अभव्य, नोभव्य-नोअभव्य भी (सिद्ध) जानना चाहिए।

**201.** *Sansari jiva* (worldly beings) are of three kinds—(1) *stree* (female), (2) *purush* (male), and (3) *napumsak* (neuter) **202** Also all beings are of three kinds—(1) *samyagdrishti* (beings with right perception/faith), (2) *mithyadrishti* (beings with wrong perception/faith), and (3) *samyagmithyadrishti* (beings with right-wrong or mixed perception/faith) Also all beings are of three kinds—(1) *paryapt* (fully developed), (2) *aparyapt* (underdeveloped), and (3) *noparyapt-noaparyapt* (neither fully developed nor underdeveloped; *Siddha*) Like *samyagdrishti* the same is true for—*pareet* (one soul in one body), *nopareet* (multiple souls in one body) and *pareet-nopareet* (*Siddha*); *sukshma* (minute), *badar* (gross) and *nosukshma-nobadar* (*Siddha*), *sanjni* (sentient), *asanjni* (non-sentient) and *nosanjni-noasanjni* (*Siddha*) and *bhavya* (worthy of being liberated), *abhavya* (unworthy of being liberated) and *nobhavya-noabhavya* (*Siddha*)

## लोक-स्थिति-पद LOKASTHITI-PAD (SEGMENT OF STRUCTURE OF UNIVERSE)

**२०३. तिविहा लोगठिती पण्णत्ता, तं जहा-आगासपइट्ठिए वाते, वातपइट्ठिए उदही, उदहीपइट्ठिया पुढवी।**

२०३. लोक-स्थिति तीन प्रकार की है-आकाश पर घनवात तथा तनुवात प्रतिष्ठित है। घनवात और तनुवात पर घनोद (हिम समुद्र) प्रतिष्ठित है और घनोदधि पर पृथ्वी प्रतिष्ठित-स्थित है।

**203.** *Lokasthiti* (structure of universe) is three tiered—*ghanavaat* (dense air) and *tanuvaat* (rarefied air) are located over *akash* (space) *Ghanod* (dense or frozen water) is located over *ghanavaat* and *tanuvaat* *Prithvi* (earth) is located over *Ghanod*

लोक स्थिति
देव विमान

चित्र परिचय १०

Illustration No. 10
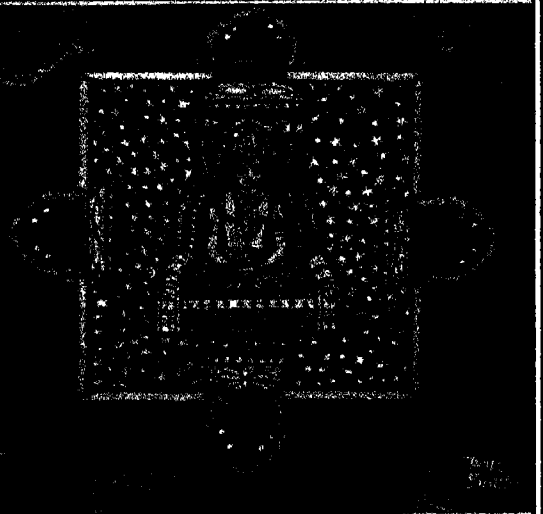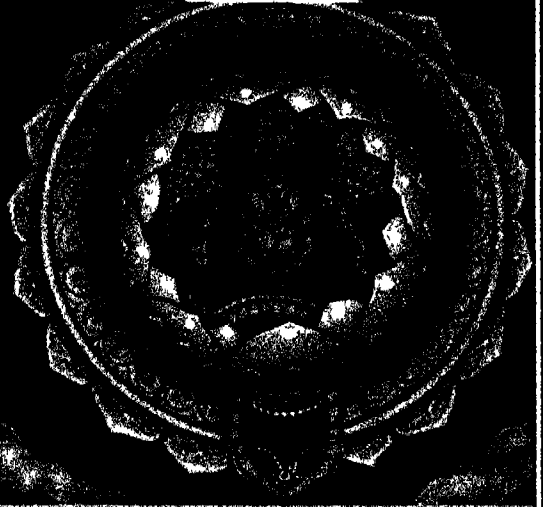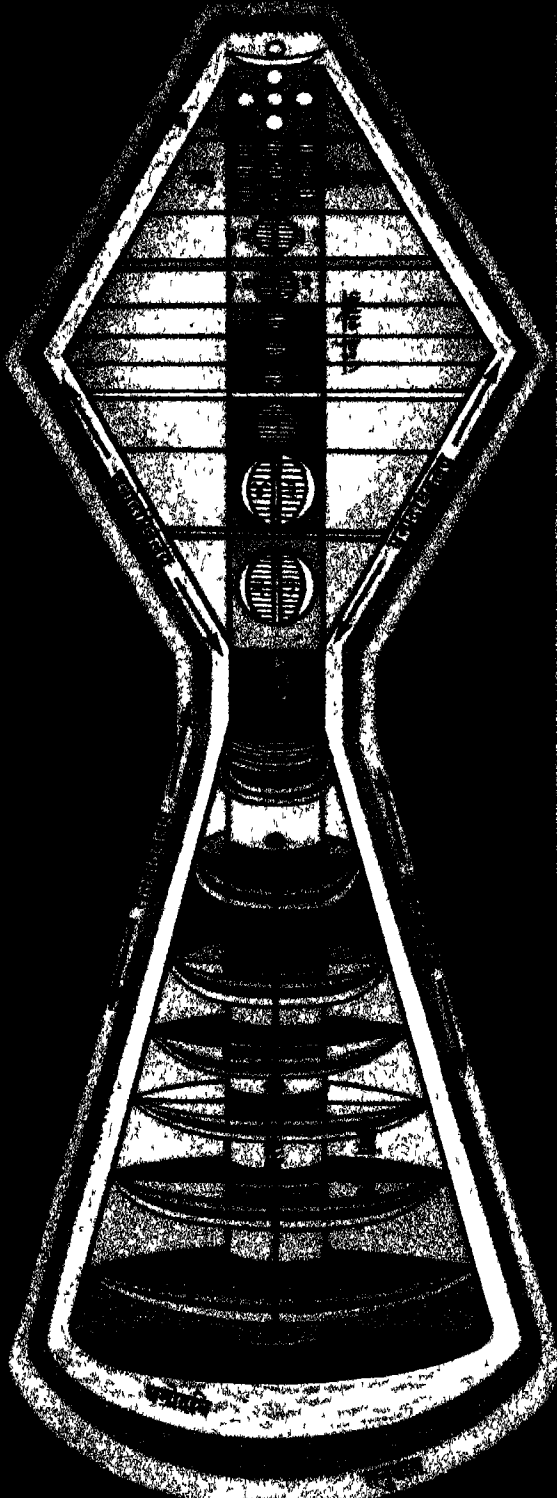
# लोकस्थिति और देव विमान

यह १४ राजू प्रमाण सम्पूर्ण लोक तीन भागो मे विभक्त है (१) **अधोलोक**–सात नरक भूमियाँ है। (२) **मध्यलोक**–बीच मे मनुष्य लोक है। (३) **ऊर्ध्वलोक**–इसमे १२ कल्पविमान, ९ नवग्रैवेयक विमान, ५ अनुत्तर विमान और उन सबसे ऊपर सिद्ध शिला (मोक्ष स्थान) है।

सात नरक भूमियो के नीचे सबसे नीचे आकाश है। आकाश पर **तनुवात**, उस पर **घनवात**, उस पर **घनोदधि** है। घनोदधि पर यह समस्त लोक स्थित है।

सम्पूर्ण लोक के बाहर चारो तरफ तनुवात, घनवात तथा घनोदधि के तीन वलय है।

*स्थान ३ सूत्र २०३, २५१, ४०७*

**देव विमानो का आकार–**

देव विमान तीन प्रकार के आकार मे है- (१) कुछ खिले हुए कमल की तरह गोलाकार, उनके चारो तरफ परकोटा है तथा एक द्वार है। (२) कुछ **त्रिकोणाकार** है, उनके दो तरफ परकोटा और तीन द्वार है। (३) कुछ विमान **चतुष्कोण** (चौकार) होते है, उनके चारो तरफ वेदिका है और चार द्वार है।

चित्र मे एक तरफ लोक की स्थिति तथा दूसरी ओर देव विमानो की आकृति दर्शायी है।

*-स्थान ३ सूत्र २५०*

## STRUCTURE OF LOK AND CELESTIAL VEHICLES

This complete *Lok* with 14 *Rajju* spread is divided into three sections— **(1) Adholok**—seven infernal worlds **(2) Madhyalok**—the middle world or the land of humans **(3) Urdhvalok**—It has 12 *Kalp Vimaans*, 9 *Nav agraiveyak Vimaans*, 5 *Anuttar Vimaans* and above all *Siddha Shila* or the land of the liberated

Below the seven infernal worlds there is space intervened by three layers Above space is **tanuvat**, above **tanuvat** is **ghanavat** and above that is **ghanodadhi** Over *ghanodadhi* rests this entire *Lok*

Outside and around the entire *Lok* also there are three rings of *tanuvat*, *ghanavat* and *ghanodadhi*

*—Sthaan 3, Sutra 203, 251, 407*

**Celestial Vehicles—**

*Dev Vimaans* (celestial vehicles) have three shapes—(1) Some are round like a lotus in bloom They have a surrounding parapet wall and a gate (2) Some are **triangular** These have parapet walls on two sides and three gates (3) Some are **square shaped** On their four sides there are raised platforms They have four gates

In the illustration on the left is structure of the *Lok* and on the right the shapes of celestial vehicles

*—Sthaan 3, Sutra 250*

**विवेचन**—आकाश सब द्रव्यों का आधारभूत है। रत्नप्रभा आदि सात पृथ्वियों के नीचे प्रत्येक पृथ्वी के नीचे बीच-बीच में तीन वलय हैं। सबसे नीचे **तनुवात** जो सूक्ष्म पवन है, उस पर **घनवात** यह पिघले हुए घी के समान कुछ ठोस पवन है, उस पर **घनोदधि** बर्फ के रूप मे जमा हुआ जल, जो जमे हुए घी के समान ठोस है। उस पर रत्नप्रभा आदि पृथ्वियाँ स्थित हैं। *(भगवतीसूत्र, शतक १२/१)*

**Elaboration**—Space is the base of all entities. Under each of the seven *prithvis* (hells) or in the intervening space between each of the seven *prithvis*, that are located one above the other, are three rings. Lowest is *tanuvaat* that is rarefied air. Over it is *ghanavaat* that is butter-like dense air Over this is *ghanod* that is dense or frozen water. Over these three rings rests each *prithvi* *(Bhagavati Sutra 12/1)*

### *दिशा-पद* DISHA-PAD (SEGMENT OF DIRECTIONS)

**२०४. तओ दिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उड्ढा, अहा, तिरिया। २०५. तिहिं दिसाहिं जीवाणं गती पवत्तति—उड्ढाए, अहाए, तिरियाए। २०६. एवं तिहिं दिसाहिं जीवाणं—आगती, वक्कंती, आहारे, वुड्ढी, णिवुड्ढी, गतिपरियाए, समुग्घाते, कालसंजोगे, दंसणाभिगमे, णाणाभिगमे, जीवाभिगमे। २०७. तिहिं दिसाहिं जीवाणं अजीवाभिगमे पण्णत्ते, तं जहा—उड्ढाए, अहाए, तिरियाए। २०८. एवं—पंचिंदियतिरिक्ख जोणियाणं। २०९. एवं मणुस्साणवि।**

२०४. दिशाएँ तीन हैं—ऊर्ध्वदिशा, अधोदिशा और तिर्यग्दिशा। २०५. तीनो दिशाओ मे जीवो की (१) गति होती है—ऊर्ध्वदिशा मे, अधोदिशा मे और तिर्यग्दिशा मे। २०६. इसी प्रकार तीनों दिशाओ से जीवो की (२) **आगति**—(आगमन), (३) **अवक्रान्ति**—(उत्पत्ति), (४) आहार, (५) वृद्धि, (६) निवृद्धि (हानि), (७) गति-पर्याय, (८) समुद्घात, (९) कालसयोग, (१०) दर्शनाभिगम—(प्रत्यक्षदर्शन से होने वाला बोध), (११) ज्ञानाभिगम—(प्रत्यक्षज्ञान के द्वारा होने वाला बोध), और (१२) जीवाभिगम—(जीव-विषयक बोध) होता है। २०७. तीनो दिशाओ मे अजीवाभिगम होता है—ऊर्ध्वदिशा मे, अधोदिशा में और तिर्यग्दिशा मे। २०८. इसी प्रकार पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनि वाले जीवो की गति, आगति आदि तीनो दिशाओ मे होती है। २०९. इसी प्रकार मनुष्यों की भी गति, आगति आदि तीनो ही दिशाओ मे होती है।

**204.** There are three *dishas* (directions)—*urdhva disha* (upper direction or zenith), *adho disha* (lower direction or nadir) and *tiryak disha* (transverse direction). **205.** *Jivas* (beings or souls) have (1) *gati* (movement) in all the three directions—*urdhva disha, adho disha* and *tiryak disha* **206.** In the same way *jivas* have the following in all the three directions—(2) *aagati* (arrival from), (3) *avakranti* (origination), (4) *ahar* (food intake), (5) *vriddhi* (growth), (6) *nivriddhi* (decay), (7) *gati-paryaya* (physical movement), (8) *samudghat* (bursting, the process employed for transmutation and transformation), (9) *kaal-samyog* (time association, such as time of death etc ), (10) *darshanabhigam* (knowledge

acquired through direct perception), (11) *jnanabhigam* (knowledge acquired through self realization), (12) *jivabhigam* (knowledge of beings and soul). **207.** *Ajivabhigam* is in all the three directions—*urdhva disha, adho disha* and *tiryak disha* **208.** In the same way *gati, agati* etc of five-sensed animals is in all the three directions **209.** In the same way *gati, agati* etc. of human beings is in all the three directions

**त्रस-स्थावर-पद TRAS-STHAVAR-PAD (SEGMENT OF MOBILE AND IMMOBILE)**

**२१०. तिविहा तसा पण्णत्ता, तं जहा-तेउकाइया, वाउकाइया, उराला तसा पाणा। २११. तिविहा थावरा पण्णत्ता, तं जहा-पुढविकाइया, आउकाइया, वणस्सकाइया।**

२१०. त्रसजीव तीन प्रकार के होते है-तेजस्कायिक, वायुकायिक और उदार त्रसप्राणी (द्वीन्द्रियादि)। २११. स्थावर जीव तीन प्रकार के होते है-पृथ्वीकायिक, अप्कायिक और वनस्पतिकायिक।

**210.** *Tras jiva* (mobile beings) are of three kinds—*tejaskayik* (fire-bodied), *vayukayik* (air-bodied) and *udaar tras prani* (willfully moving beings) **211.** *Sthavar jiva* (immobile beings) are of three kinds—*prithvikayik* (earth-bodied), *apkayik* (water-bodied) and *vanaspatikayik* (plant-bodied)

**विवेचन**-प्रस्तुत सूत्र मे तेजस्कायिक और वायुकायिक को गति की अपेक्षा त्रस कहा गया है। पर उनके स्थावर नामकर्म का उदय है अत वे वास्तव मे स्थावर ही है।

**Elaboration**—In this aphorism fire-bodied and air-bodied beings have been classified as mobile beings because of their natural physical movement but not willful movement However, due to fruition of *sthavar naam karma* (*karma* responsible for immobile origin with absence of willful movement) they are in fact immobile

**अच्छेद्य-आदि-पद ACHCHHEDYADI-PAD (SEGMENT OF IMPENETRABILITY ETC.)**

**२१२. तओ अच्छेज्जा (१) पण्णत्ता, तं जहा-समए, पदेसे, परमाणू। २१३. एवमभेज्जा, (२) अडज्झा, (३) अगिज्झा, (४) अणड्ढा, (५) अमज्झा, (६) अपएसा (७)। तओ अभेज्जा पण्णत्ता, तं जहा-समए, पदेसे, परमाणू। २१४. तओ अणज्झा पण्णत्ता, तं जहा-समए, पदेसे, परमाणू। २१५. तओ अगिज्झा पण्णत्ता, तं जहा-समए, पदेसे, परमाणू। २१६. तओ अणड्ढा पण्णत्ता, तं जहा-समए, पदेसे, परमाणू। २१७. तओ अमज्झा पण्णत्ता, तं जहा-समए, पदेसे, परमाणू। २१८. तओ अपएसा पण्णत्ता, तं जहा-समए, पदेसे, परमाणू। २१९. तओ अविभाइमा पण्णत्ता, तं जहा-समए, पदेसे, परमाणू।**

२१२. तीन अच्छेद्य (जिनका छेदन नही हो सकता) होते हैं-(१) समय (काल का सबसे छोटा भाग) (२) प्रदेश (आकाश आदि द्रव्यो का सबसे छोटा भाग) और (३) परमाणु (पुद्गल का सबसे छोटा भाग)। २१३. इसी प्रकार तीन अभेद्य, अदाह्य, अग्राह्य, अनर्ध, अमध्य और अप्रदेशी होता है। जैसे अभेद्य (भेदन करने के अयोग्य है-समय प्रदेश और परमाणु। २१४ तीन अदाह्य (दाह करने के

अयोग्य) होते हैं—समय, प्रदेश और परमाणु। २१५. तीन अग्राह्य (ग्रहण करने के अयोग्य) होते हैं—समय, प्रदेश और परमाणु। २१६. तीन अनर्ध (अर्ध भाग से रहित) होते है—समय, प्रदेश और परमाणु। २१७. तीन अमध्य (मध्य भाग से रहित) होते हैं—समय, प्रदेश और परमाणु। २१८. तीन अप्रदेशी (प्रदेशो से रहित) होते है—समय, प्रदेश और परमाणु। २१९. तीन अविभाज्य (विभाजन के अयोग्य) हैं—समय, प्रदेश और परमाणु।

**212.** Three things are *achchhedya* (cannot be pierced; impenetrable)—(1) *Samaya* (smallest fraction of time), (2) *pradesh* (smallest fraction of space; space-point) and (3) *paramanu* (smallest fraction of matter, ultimate particle) **213.** In the same way three things are *abhedya* (cannot be disintegrated), *adahya* (cannot be burnt), *agrahya* (cannot be taken or confined), *anardh* (cannot be halved), *amadhya* (without a center or middle), and *apradeshi* (without sections). For example three things are *abhedya* (cannot be disintegrated)—*Samaya, pradesh* and *paramanu* **214.** Three things are *adahya* (cannot be burnt)—*Samaya, pradesh* and *paramanu* **215.** Three things are *agrahya* (cannot be taken or confined)—*Samaya, pradesh* and *paramanu* **216.** Three things are *anardh* (cannot be halved)—*Samaya, pradesh* and *paramanu* **217.** Three things are *amadhya* (without a center or middle)—*Samaya, pradesh* and *paramanu* **218.** Three things are *apradeshi* (without sections)—*Samaya, pradesh* and *paramanu* **219.** Three things are *avibhajya* (indivisible)—*Samaya, pradesh* and *paramanu*

### दुःख-पद DUHKHA-PAD (SEGMENT OF MISERY)

२२०. अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे गोयमादी समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी—किं भया पाणा समणाउसो ?

गोयमादी समणा णिग्गंथा समणं भगवं महावीरं उवसंकमंति, उवसंकमित्ता वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—णो खलु वयं देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं जाणामो वा पासामो वा। तं जदि णं देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं णो गिलायंति परिकहित्तए, तमिच्छामो णं देवाणुप्पियाणं अंतिए एयमट्ठं जाणित्तए।

अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे गोयमादी समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी—दुक्खभया पाणा समणाउसो !

से णं भंते ! दुक्खे केण कडे ? जीवेणं कडे पमादेणं।

से णं भंते ! दुक्खे कहं वेइज्जति ? अप्पमाएणं।

२२०. श्रमण भगवान महावीर ने गौतम आदि श्रमण निर्ग्रन्थो को आमंत्रित करके इस प्रकार कहा—"आयुष्मन् !

श्रमणो ! जीव किससे भय खाते हैं ?"

गौतम आदि श्रमण निर्ग्रन्थ भगवान महावीर के समीप आये, वन्दन नमस्कार किया। वन्दन नमस्कार कर इस प्रकार बोले—"देवानुप्रिय ! हम इस अर्थ को नही जान रहे है, नही देख रहे हैं। यदि देवानुप्रिय को इस अर्थ का परिकथन प्रवचन करने (बताने) मे कष्ट न हो, तो हम आप देवानुप्रिय से इसे जानने की इच्छा रखते है।"

"आर्यो !" श्रमण भगवान महावीर ने गौतम आदि श्रमण निर्ग्रन्थो को सम्बोधित कर कहा—"जीव दु ख से भय खाते है।"

(प्रश्न) तो भगवन् ! दु ख किसके द्वारा उत्पन्न किया गया है ? (उत्तर) जीवो के द्वारा, अपने प्रमाद से उत्पन्न किया गया है।

(प्रश्न) तो भगवन् ! दु.खो का वेदन (क्षय) कैसे किया जाता है ? (उत्तर) जीवो के द्वारा, अपने ही अप्रमाद से किया जाता है।

**220.** Shraman Bhagavan Mahavir called Gautam and other *shraman nirgranths* (ascetics) and asked—"Long lived *Shramans* ! What is it that *jivas* (beings) are afraid of ?"

Gautam and other *shraman nirgranths* approached Bhagavan Mahavir and paid homage and obeisance After paying homage and obeisance they submitted—"Beloved of gods ! We neither know nor see this Beloved of gods ! If it is not inconvenient for you to explain this, we wish to know it from you."

"*Aryas* !" Shraman Bhagavan Mahavir addressed Gautam and other *shraman nirgranths*—"Beings are afraid of misery"

(Question) *Bhagavan* ! Who has created misery ? (Answer) It has been created by beings in their *pramad* (stupor)

(Question) *Bhagavan* ! How can we end miseries ? (Answer) Miseries are brought to an end by beings through their own *apramad* (non-stupor or alertness)

**विवेचन**—यहाँ प्रमाद का अर्थ आलस्य नही किन्तु आचार्य अभयदेवसूरि ने प्रमाद के आठ अर्थ बताये है—(१) अज्ञान, (२) सशय, (३) मिथ्याज्ञान, (४) राग, (५) द्वेष, (६) मतिभ्रश, (७) धर्म का आचरण न करना, धर्म मे अनादर या अनुत्साह, और (८) योगो की अशुभ प्रवृत्ति, अकुशल योग। *(संस्कृत टीका, पृ २२०)*

**Elaboration**—Here *pramad* does not just mean lethargy Abhayadev Suri has given eight meanings of *pramad*—(1) *ajnana* (ignorance), (2) *samshaya* (doubt), (3) *mithya-jnana* (false knowledge), (4) *raag* (attachment), (5) *dvesh* (aversion), (6) *matibhransh* (delusion or madness), (7) not following religious conduct, having disrespect for

religion and lack of enthusiasm in religion, and (8) indulgence in wrong association. *(Sanskrit Tika, p 220)*

**२२१. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवं आइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेंति एवं परूवेंति कहण्णं समणाणं णिग्गंथाणं किरिया कज्जति ?**

**(१) तत्थ जा सा कडा कज्जइ, णो तं पुच्छंति।**

**(२) तत्थ जा सा कडा णो कज्जति, णो तं पुच्छंति।**

**(३) तत्थ जा सा अकडा णो कज्जति, णो तं पुच्छंति।**

**(४) तत्थ जा सा अकडा कज्जति, तं पुच्छंति।**

**से एवं वत्तव्वं सिया ?**

**अकिच्चं दुक्खं, अफुसं दुक्खं, अकज्जमाणकडं दुक्खं। अकट्टु-अकट्टु पाणा भूया जीवा सत्ता वेयणं वेदेंतित्ति वत्तव्वं।**

**जे ते एवमाहंसु, मिच्छा ते एवमाहंसु।**

**अहं पुण एवमाइक्खामि एवं भासामि एवं पण्णवेमि एवं परूवेमि-किच्चं दुक्खं, फुसं दुक्खं, कज्जमाणकडं दुक्खं। कट्टु-कट्टु पाणा भूया जीवा सत्ता वेयणं वेयंतित्ति वत्तव्वयं सिया।**

**॥ द्वितीय उद्देशक समत्त ॥**

२२१. भदन्त ! कुछ अन्ययूथिक (दूसरे मत वाले) ऐसा आख्यान करते है, ऐसा भाषण करते है, ऐसा प्रज्ञापन करते है, ऐसा प्ररूपण करते है कि क्रिया करने के विषय मे श्रमण निर्ग्रन्थों का क्या अभिमत है-

(१) जो क्रिया कृत (की हुई) होती है, उसका यहाँ प्रश्न नही है।

(२) जो क्रिया की हुई नही होती, उसके विषय मे भी यहाँ प्रश्न नही है।

(३) जो क्रिया नही की हुई होती, उसका भी यहाँ प्रश्न नही है।

(४) किन्तु जो नही की हुई है, उसका यहाँ प्रश्न है।

उनका वक्तव्य इस प्रकार है-

(१) दु खरूप कर्म अकृत्य है (आत्मा के द्वारा नही किया जाता)।

(२) दुःख अस्पृश्य है (आत्मा से उसका स्पर्श नही होता)।

(३) दुःख अक्रियमाण कृत है (वह आत्मा के द्वारा नही किये जाने पर होता है)।

उसे बिना किये ही प्राण, भूत, जीव, सत्त्व, वेदना का वेदन करते है।

उत्तर-आयुष्मान् श्रमणो ! जो ऐसा कहते है, वे मिथ्या कहते है। किन्तु मै ऐसा आख्यान करता हूँ, भाषण करता हूँ, प्रज्ञापन करता हूँ और प्ररूपण करता हूँ कि-

(१) दुःख कृत्य है-(आत्मा के द्वारा उपार्जित किया जाता है।)

(२) दुःख स्पृश्य है-(आत्मा से उसका स्पर्श होता है।)

(३) दुःख क्रियमाण कृत है-(वह आत्मा के द्वारा किये जाने पर होता है।)

उसे करके ही प्राण, भूत, जीव, सत्त्व उसकी वेदना का वेदन करते हैं। ऐसा मेरा वक्तव्य है।

**221.** *Bhante* ! Some people belonging to other schools say, speak, establish and explain thus regarding the views of *Shraman Nirgranths* (Jain ascetics) about performing an act—

(1) Performed action with consequence is not in question here

(2) Performed action without consequence is not in question here.

(3) Not performed action without consequence is not in question here

(4) Not performed action with consequence is in question here

They state—

(1) Misery as action cannot be performed (it is not performed by soul)

(2) Misery is untouchable (soul does not touch it)

(3) Misery is a non-performed act (it manifests without any action by soul)

*Pran, bhoot, jiva* and *sattva* (beings, organisms, souls and entities) suffer it without indulging in action

(Answer) "Long lived *Shramans* ! Those who say thus are telling a lie I say, speak, establish and explain that—

(1) Misery as action is performed (it is earned by soul through action)

(2) Misery is touchable (soul touches it)

(3) Misery is a performed act (it manifests through an action by soul)

*Pran, bhoot, jiva* and *sattva* (beings, organisms, souls, and entities) suffer it only through indulging in action. So I say

**विवेचन**-उक्त सूत्र का स्पष्टीकरण करते हुए आचार्य श्री आत्माराम जी म. लिखते है कि किये हुए कर्म के फल के विषय में यहाँ चार भग कहे गये है। अन्य सप्रदाय वाले पूछते है-

(१) जो क्रिया रूप कर्म किया हुआ भोगा जाता है, उसके विषय मे तो हमारा कोई प्रश्न नही है। क्योंकि जो कर्म किया है उसे तो भोगना ही पडता है। यह सब मानते है।

(२) जो क्रिया रूप किया हुआ कर्म भोगने मे नही आता, उस विषय मे भी हम नहीं पूछते। क्योंकि तप के द्वारा उस कर्म को भस्म कर देने पर उसमे फल देने की शक्ति नही रहती।

(३) जो क्रिया रूप कर्म नही किया है, वह भोगने मे नहीं होता उस विषय मे भी हमारा प्रश्न नहीं है। क्योंकि कर्म किये बिना दुःख नही होता।

(४) किन्तु जो क्रिया रूप कर्म पूर्वकाल में नहीं किया है, किन्तु भोगने मे आता है, अर्थात् जिसने कर्म नही किया, उसे भी फल रूप दुःख भोगना पडता है। जैसे कोई तपस्वी वर्षों से एकान्त मे तप कर रहा है। पापो से दूर है, परन्तु किसी शिकारी द्वारा छोड़ा गया बाण उसे लगता है और उसका प्राणान्त हो जाता है। उसे यह प्राणान्त की वेदना रूप कर्म फल कृत कर्म को नही अपितु अकृत कर्म को भोगना पडा। उसी विषय मे हमारा प्रश्न है।

इस विषय मे भगवान महावीर का स्पष्ट उत्तर है कि–आत्मा द्वारा किये जाने पर ही दु ख रूप फल होता है। भले ही वह इस जन्म में नही किया हो, पूर्व जन्म कृत हो। जैसे भगवान महावीर ने पूर्व जन्मोपार्जित कर्मों का फल भोगकर क्षय किया। *(हिन्दी टीका, पृ. ४६६)*

॥ द्वितीय उद्देशक समाप्त ॥

**Elaboration**—Explaining this aphorism Acharya Shri Atmamarm ji M. states that four alternatives of fruits of action have been mentioned here People from other schools ask—

(1) We do not question suffering of fruits of *karma* entailing an action This is because every one accepts that consequences of every performed action have to be suffered

(2) We do not question absence of suffering of fruits of *karma* entailing an action This is because if that *karma* is burnt through austerities it looses its power of fruition.

(3) We do not question absence of suffering of fruits of *karma* in absence of an action This is because without action there is no suffering.

(4) But suffering of fruits of *karma* in absence of an action is in question here A person suffers misery even when he is not involved in a consequence bearing action For example a hermit is involved in solitary penance for many years He is far away from any sinful activity but coincidentally he is struck by an arrow launched by a hunter and dies He had to suffer the pain of death not as the fruit of *karma* entailing some action by him but as the fruit of *karma* not entailing any of his action Our question is about this only.

About this *Bhagavan* explicitly states that fruits in the form of misery are essentially as a consequence of some action by soul It is irrespective of whether that action was performed during this birth or during the past birth. For example Bhagavan Mahavir shed the *karmas* acquired during past births by suffering the fruits during this birth. *(Hindi Tika, p 466)*

**● END OF THE SECOND LESSON ●**

## तृतीय उद्देशक
## THIRD LESSON

**आलोचना–पद (आलोचना नही करने व करने के कारण) ALOCHANA-PAD (SEGMENT OF CRITICISM)**

**२२२. तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु णो आलोएज्जा, णो पडिक्कमेज्जा, णो णिंदेज्जा, णो गरिहेज्जा, णो विउट्टेज्जा, णो विसोहेज्जा, णो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, णो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेज्जा, तं जहा–अकरिंसु वाहं, करेमि वाहं, करिस्सामि वाहं।**

२२२. मायावी माया करके भी निम्न तीन कारणो से उसकी आलोचना नहीं करता, प्रतिक्रमण नही करता, आत्मसाक्षी से निन्दा नही करता, गुरुसाक्षी से गर्हा नही करता, व्यावर्तन (उस सम्बन्धी अध्यवसाय से निवर्तन) नहीं करता, उसकी शुद्धि नहीं करता, "पुन नही करूँगा"–ऐसा सकल्प नही करता और यथायोग्य प्रायश्चित्त एवं तप कर्म अगीकार नही करता (क्योंकि)–(१) मैने अकरणीय किया है। (अब कैसे उसकी निन्दादि करूँ ?) (२) मै अकरणीय कर रहा हूँ। (तो कैसे उसकी निन्दादि करूँ ?) (३) मै अकरणीय करूँगा। (तो फिर उसकी निन्दादि कैसे करूँ ?)

**222.** For three reasons a fraud, even after cheating, does not criticize (*alochana*) the act, do critical review (*pratikraman*), reprove (*ninda*) (before self), reproach (*garha*) (before the guru), refrain from doing the act (*vyavartan*), purge himself (*shuddhi*), resolve not to repeat, or accept suitable atonement and penance (because)—(1) I have committed a misdeed. (Now how can I criticize that ?) (2) I am committing a misdeed (So how can I criticize it ?) (3) I will commit a misdeed (How then will I criticize it ?)

**२२३. तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु णो आलोएज्जा, णो पडिक्कमेज्जा, णो णिंदेज्जा, णो गरिहेज्जा, णो विउट्टेज्जा, णो विसोहेज्जा, णो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा, णो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेज्जा, तं जहा–अकित्ती वा मे सिया, अवण्णे वा मे सिया, अविणए वा मे सिया।**

२२३. मायावी माया करके भी निम्न तीन कारणो से उसकी आलोचना नही करता, प्रतिक्रमण नहीं करता, निन्दा नही करता, गर्हा नही करता, व्यावर्तन नही करता, उसकी शुद्धि नही करता, पुन नहीं करने के लिए सकल्पबद्ध नही होता और यथायोग्य प्रायश्चित्त एव तपःकर्म अंगीकार नहीं करता–(ऐसा करने से)–(१) मेरी अपकीर्ति होगी। (२) मेरा अवर्णवाद होगा। (३) दूसरो के द्वारा मेरा अविनय (अवेहलना) होगा।

**223.** For three reasons a fraud, even after cheating, does not criticize (*alochana*) the act, do critical review (*pratikraman*), reprove (*ninda*)

(before self), reproach (*garha*) (before the guru), refrain from doing the act (*vyavartan*), purge himself (*shuddhi*), resolve not to repeat, or accept suitable atonement and penance (as by doing so)—(1) I will become disreputable (*apkirti*). (2) I will be dishonoured (*avarnavad*). (3) Others will ignore me (*avinaya*).

**२२४. तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु णो आलोएज्जा, जाव पडिवज्जेज्जा, तं जहा–कित्ती वा मे परिहाइस्सति, जसो वा मे परिहाइस्सति, पूयासक्कारे वा मे परिहाइस्सति।**

२२४. मायावी माया करके भी निम्न तीन कारणो से उसकी आलोचना नही करता यावत् यथायोग्य प्रायश्चित्त एव तप.कर्म अगीकार नहीं करता–(ऐसा करने से)–(१) मेरी कीर्ति (एक प्रदेश मे फैली प्रसिद्धि) कम होगी। (२) मेरा यश (सब प्रदेशों मे व्याप्त प्रसिद्धि) कम होगा। (३) मेरा पूजा–सत्कार (सन्मान और प्रतिष्ठा) कम होगा।

**224.** For three reasons a fraud, even after cheating, does not criticize (*alochana*) the act, . and so on up to... accept suitable atonement and penance (as by doing so)—(1) It will reduce my *kirti* (fame in a specific area) (2) It will reduce my *yash* (fame all around). (3) It will belittle my honour and status

**२२५. तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा, जाव पडिवज्जेज्जा, तं जहा–माइस्स णं अस्सिं लोगे गरहिए भवति, उववाए गरहिए भवति, आयाती गरहिया भवति।**

२२५. मायावी माया करके तीन कारणो से उसकी आलोचना करता है, यावत् यथायोग्य प्रायश्चित्त एव तप कर्म अगीकार करता है–(क्योंकि)–(१) मायावी का यह लोक (वर्तमान जीवन) गर्हित हो जाता है। (२) मायावी का उपपात (अगला जन्म) गर्हित हो जाता है। (३) मायावी की आजाति (अग्रिम भव से आगे का जन्म) गर्हित हो जाता है।

**225.** For three reasons a fraud, after cheating, does criticize (*alochana*) the act, ... and so on up to . accept suitable atonement and penance (because)—(1) This life (*ihalok*) of a fraud is condemned (2) Next life (*upapat*) of a fraud is condemned. (3) Next to next life (*aajati*) of a fraud is condemned.

**२२६. तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा, जाव पडिवज्जेज्जा, तं जहा–अमाइस्स णं अस्सिं लोगे पसत्थे भवति, उववाते पसत्थे भवति, आयाती पसत्था भवति।**

२२६. मायावी माया करके तीन कारणों से उसकी आलोचना करता है, यावत् यथायोग्य प्रायश्चित्त एवं तपःकर्म अंगीकार करता है–(१) मायाचार नहीं करने वाले का यह लोक प्रशस्त होता है, (२) उपपात प्रशस्त होता है, और (३) आजाति प्रशस्त होती है।

**226** . For three reasons a fraud, after cheating, does criticize (*alochana*) the act, .. and so on up to accept suitable atonement and penance (because)—(1) This life (*ihalok*) of one who is not a fraud is glorious (2) Next life (*upapat*) of one who is not a fraud is glorious (3) Next to next life (*aajati*) of one who is not a fraud is glorious

**२२७. तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा, जाव पडिवज्जेज्जा, तं जहा–णाणट्ठयाए, दंसणट्ठयाए, चरित्तट्ठयाए।**

२२७. तीन कारणो से मायावी माया करके उसकी आलोचना करता है, यावत् यथायोग्य प्रायश्चित्त एव तप कर्म अगीकार करता है–(१) ज्ञान की प्राप्ति के लिए, (२) दर्शन की प्राप्ति के लिए, (३) चारित्र की प्राप्ति के लिए।

**227.** For three reasons a fraud, after cheating, does criticize (*alochana*) the act, . and so on up to . accept suitable atonement and penance—(1) In order to acquire *jnana* (right knowledge) (2) In order to acquire *darshan* (right perception/faith) (3) In order to acquire *chaaritra* (right conduct)

**विवेचन**–दोष सेवन या भूल होना सहज है, किन्तु उसकी विशुद्धि, प्रायश्चित्त यदि नही किया जाये तो वह शल्य की तरह खटकता है। आत्मा की शुद्धि नही होती और बिना आलोयणा-प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त किये यदि काल प्राप्त करता है तो वह विराधक होता है। भगवतीसूत्र १०/२ मे स्पष्ट कहा है कि दोष की आलोयणा आदि किये बिना मृत्यु प्राप्त करने वाला विराधक तथा दोष विशुद्धि करने वाला आराधक होता है। विराधक का यह जन्म तो गर्हित होता ही है, अगला जन्म और उससे अगला जन्म भी गर्हिततहीन होता है। अत दोष की विशुद्धि करना अत्यन्त आवश्यक है।

**Elaboration**—It is natural to commit a fault or mistake but if it is not purged and atoned for, it stings like a thorn The perpetrator does not attain spiritual purity and if he dies without critical review and atonement he becomes a *viradhak* (errant or transgressor of codes) It is explicitly mentioned in *Bhagavati Sutra* (10/2) that a person dying without criticizing his fault (etc ) is a *viradhak* (errant or transgressor of codes) and one who purges and atones is a follower of the codes or a true aspirant Not only this life but also the next life of a *viradhak* (errant or transgressor of codes) is condemned Therefore it is essential to atone for one's faults.

**श्रुतधर–पद SHRUTDHAR-PAD (SEGMENT OF SCHOLAR OF SCRIPTURES)**

**२२८. तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सुत्तधरे, अत्थधरे, तदुभयधरे।**

२२८. श्रुतधर (शास्त्रज्ञाता) पुरुष तीन प्रकार के होते हैं-(१) सूत्रधर (सूत्र को कण्ठस्थ करने वाले), (२) अर्थधर (अर्थ के ज्ञाता व चिन्तक), और (३) तदुभयधर (सूत्र और अर्थ दोनों के ज्ञाता)।

विशेष-सूत्रधर में ज्ञान की विशेषता होती है, अर्थधर दर्शन की गहराई मे चला जाता है तथा दोनो का ज्ञाता चारित्र की उपलब्धि भी कर लेता है।

**228.** *Shrut-dhar* (scholar of scriptures) is of three kinds—(1) *sutradhar* (one who memorizes the text), (2) *arth-dhar* (one who knows the meaning and ponders over it), and (3) *tadubhayadhar* (scholar of both text and its meaning).

***Note—Sutradhar*** specializes in knowledge, *arth-dhar* goes deeper into perception and faith, and a scholar of both acquires right conduct as well

### उपधि-पद UPADHI-PAD (SEGMENT OF MEANS OF SUSTENANCE)

**२२९. कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा तओ वत्थाइं धारित्तए वा परिहरित्तए वा, तं जहा-जंगिए, भंगिए, खोमिए।**

२२९. निर्ग्रन्थ (साधुओ) व निर्ग्रन्थिनी (साध्वियो) को तीन प्रकार के वस्त्र रखना और पहनना कल्पता है-१. जांगिक (ऊनी), (२) भांगिक (अलसी या सन-निर्मित), (३) क्षौमिक (कपास-रुई-निर्मित)।

**229.** It is prescribed (*kalpana*) for *nirgranth* (Jain male ascetic) and *nirgranthini* (Jain female ascetic) to keep and wear three kinds of cloth—(1) *jangik* (woolen), (2) *bhangik* (made of *alsi* or flax and *san* or hemp fibres), and (3) *kshaumik* (cotton)

**२३०. कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा तओ पायाइं धारित्तए वा परिहरित्तए वा, तं जहा-लाउयपाए वा, दारुपाए वा मट्टियापाए वा।**

२३०. निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थिनियो को तीन प्रकार के पात्र रखना और उनका उपयोग करना कल्पता है-(१) अलाबु-(तुम्बा) पात्र, (२) दारु-पात्र, और (काष्ठ) (३) मृत्तिका-पात्र (मिट्टी का)।

**230.** It is prescribed (*kalpana*) for *nirgranth* (Jain male ascetic) and *nirgranthini* (Jain female ascetic) to keep and use three kinds of bowl—(1) *alabu* (gourd) bowl, (2) *daru* (wooden) bowl, and (3) *mrittika* (earthen) bowl.

**२३१. तिहिं ठाणेहिं वत्थं धरेज्जा, तं जहा-हिरिपत्तियं, दुगुंछापत्तियं परीसहपत्तियं।**

२३१. निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थिनियाँ तीन कारणो से वस्त्र धारण कर सकती है-(१) ह्रीप्रत्यय से (लज्जा-निवारण के लिए), (२) जुगुप्साप्रत्यय से (निन्दा या घृणा निवारण के लिए), (३) परीषहप्रत्यय से (शीतादि परीषह निवारण के लिए)।

**231.** *Nirgranth* (Jain male ascetic) and *nirgranthini* (Jain female ascetic) wear clothes for three reasons—(1) *hri-pratyaya* (to avoid immodesty), (2) *jugupsa-pratyaya* (to avoid censure and revulsion), and (3) *parishah-pratyaya* (to avoid afflictions like cold).

*आत्म-रक्षक-पद* **ATMARAKSHAK-PAD (SEGMENT OF SPIRITUAL PROTECTORS)**

**२३२. तओ आयरक्खा पण्णत्ता, तं जहा–धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएत्ता भवति, तुसिणीए वा सिया, उट्ठित्ता वा आयाए एगंतमंतमवक्कमेज्जा।**

२३२. तीन आत्मरक्षक है–(१) अकरणीय कार्य मे प्रवृत्त व्यक्ति को धर्म कार्य मे प्रवृत्ति की प्रेरणा देने वाला, (२) प्रेरणा न देने की स्थिति मे मौन धारण करने वाला, (३) मौन और उपेक्षा न करने की स्थिति मे वहाँ से उठकर एकान्त मे जाने वाला।

**232.** There are three *atmarakshaks* (spiritual protectors)—(1) A person who inspires and steers someone indulging in misdeeds towards religious activities (2) A person who remains silent when he is unable to inspire and guide (3) A person who retires into solitude when he is unable even to avoid or remain silent

*विकट-दत्ति-पद* **VIKAT-DATTI-PAD (SEGMENT OF POTABLE WATER)**

**२३३. णिग्गंथस्स णं गिलायमाणस्स कप्पंति तओ वियडदत्तीओ पडिग्गाहित्तते, तं जहा– उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा।**

२३३. ग्लान (रुग्ण) निर्ग्रन्थ साधु को तीन प्रकार की दत्तियाँ (प्रासुक जल) लेनी कल्पती है–(१) उत्कृष्ट दत्ति–पर्याप्त जल या कलमी चावल की काजी। (२) मध्यम दत्ति–अनेक बार किन्तु अपर्याप्त जल और साठी चावल की काजी। (३) जघन्य दत्ति–एक बार पी सके उतना जल, तृण धान्य की काजी या उष्ण जल।

**233.** It is mandatory for a *glaan* (ailing) *nirgranth* to accept three kinds of *datti* (potable water)—(1) *Utkrisht datti* (maximum quantity of water)—ample quantity of water or good quality rice soup (2) *Madhyam datti* (average quantity of water)—numerous servings of meager quantity of water or average quality rice soup (3) *Jaghanya datti* (minimum quantity of water)—just one serving of meager quantity of water, husk soup or boiled water.

**विवेचन**–धारा टूटे बिना एक धार में जितना जल आदि मिले, उसे एक दत्ति कहते हैं। जितने जल से सारा दिन निकल जाय, उतना जल लेना उत्कृष्ट दत्ति है। उससे कम लेना मध्यम दत्ति है तथा एक बार ही प्यास बुझ सके, इतना जल लेना जघन्य दत्ति है। *(संस्कृत टीका, भाग २, पृष्ठ २३५)*

**Elaboration**—One pouring, without a break, of water or other liquid is called a *datti*. The quantity that will last a whole day to quench thirst of one person is called *utkrisht datti*, a little less than that is *madhyam datti* and that just enough to quench thirst just once is *jaghanya datti*. *(Tika by Abhayadev Suri, p. 235)*

### विसंभोग-पद VISAMBHOG-PAD (SEGMENT OF OSTRACIZING)

**२३४. तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे साहिम्मयं संभोगियं विसंभोगियं करेमाणे णातिक्कमइ, तं जहा–सयं वा दट्ठुं, सड्ढयस्स वा णिसम्म, तच्चं मोसं आउट्टति, चउत्थं णो आउट्टति।**

२३४. तीन कारणो से श्रमण निर्ग्रन्थ अपने साधर्मिक, साम्भोगिक साधु को विसम्भोगिक करता हुआ (भगवान की) आज्ञा का अतिक्रमण नही करता है–(१) स्वय किसी को सामाचारी के प्रतिकूल आचरण करता देखकर। (२) श्राद्ध (विश्वासपात्र व्यक्ति) से सुनकर। (३) तीन बार मृषा (अनाचार) का प्रायश्चित्त देने के बाद चौथी बार प्रायश्चित्त का विधान नही होने के कारण।

**234.** For three reasons a *Shraman nirgranth* not transgressing the word (of the Omniscient) ostracizes a *sambhogik sadhu* (ascetic of the same group or those following the same codes)—(1) Himself seeing someone following conduct against *samachari* (ascetic-praxis). (2) Hearing that from a confidant. (3) After three atonements for misconduct, as there is no provision for a fourth atonement

**विवेचन**–जिन साधुओं का परस्पर आहारादि के आदान-प्रदान का व्यवहार होता है उन्हे साम्भोगिक कहा जाता है। कोई साम्भोगिक साधु यदि साधु-सामाचारी के विरुद्ध आचरण करता है, उसके उस कार्य को संघ का नेता साधु स्वय देख ले, या किसी विश्वस्त साधु या सद्गृहस्थ से सुन ले तथा उसको उसी अपराध की शुद्धि के लिए तीन बार प्रायश्चित्त भी दिया जा चुका हो, फिर भी यदि वह चौथी बार उसी अपराध को करे तो संघ का नेता आचार्य आदि अपनी साम्भोगिक साधु-मण्डली से पृथक् कर सकता है। पृथक् किये गये साधु को विसम्भोगिक कहते है। अन्य समूह के साधु संन्यासी असंभोगिक कहे जाते हैं।

**Elaboration**—The ascetics who have relationship of mutual exchange of food and other ascetic-equipment are called *sambhogik* (this generally means ascetic of the same group or those following the same codes) If the leader of a group himself finds some *sambhogik* ascetic going against *samachari* (ascetic-praxis) or comes to know from a reliable ascetic or layman, he prescribes atonement On repeating the misconduct atonement can be prescribed for a maximum of three times. Even then if the ascetic commits mistake for the fourth time the leader can expel that *sambhogik* ascetic from his group. Such ostracized ascetic is called *visambhogik sadhu*. Ascetic belonging to other groups are called *asambhogik sadhus*.

अनुज्ञादि-पद ANUJNADI-PAD (SEGMENT OF APPROVAL)

**२३५. तिविहा अणुण्णा पण्णत्ता, तं जहा—आयरियत्ताए, उवज्झायत्ताए, गणित्ताए। २३६. तिविहा समणुण्णा पण्णत्ता, तं जहा—आयरियत्ताए, उवज्झायत्ताए, गणित्ताए। २३७. एवं उवसंपया एवं २३८. विजहणा।**

२३५. अनुज्ञा तीन प्रकार की होती है-(१) आचार्यपद की, (२) उपाध्यायपद की, और (३) गणिपद की। २३६. समनुज्ञा तीन प्रकार की होती है-(१) आचार्यपद की, (२) उपाध्यायपद की, और (३) गणिपद की। २३७. इसी प्रकार उपसम्पदा तीन प्रकार की है। २३८. विहान (परित्याग) तीन प्रकार का है।

**235.** *Anujna* (approval) is of three kinds—(1) for *acharyapad* (status of *acharya*), (2) for *upadhyayapad* (status of *upadhyaya*), and (3) for *ganipad* (status of *gani*) **236.** *Samanujna* ( special approval) is of three kinds—(1) for *acharyapad* (status of *acharya*), (2) for *upadhyayapad* (status of *upadhyaya*), and (3) for *ganipad* (status of *gani*) **237.** In the same way *upasampada* (study under outside guru) is of three kinds **238.** *Vihan* (resignation) is of three kinds

**विवेचन**—श्रमण-सघ मे आचार्य, उपाध्याय और गणी (गण-नायक) ये तीन महत्त्वपूर्ण पद है। प्राचीन परम्परा के अनुसार ये तीनो पद या तो आचार्यों के द्वारा दिये जाते थे अथवा स्थविरो के अनुमोदन (अधिकार प्रदान) से प्राप्त होते थे। यह अनुमोदन सामान्य और विशिष्ट दोनो प्रकार का होता था। सामान्य अनुमोदन को 'अनुज्ञा' और विशिष्ट अनुमोदन को 'समनुज्ञा' कहते है। उक्त पद प्राप्त करने वाला व्यक्ति यदि उस पद के योग्य सम्पूर्ण गुणो से युक्त हो तो उसे दिये जाने वाले अधिकार को 'समनुज्ञा' और यदि वह समग्र गुणो से युक्त नही हो, तब उसे दिये जाने वाले अधिकार को 'अनुज्ञा' कहा जाता है। प्राचीनकाल मे ज्ञान-दर्शन-चारित्र की विशेष प्राप्ति के लिए अपने गण के आचार्य, उपाध्याय या गणी को छोडकर दूसरे गण के आचार्य, उपाध्याय या गणी के पास जाकर उनका शिष्यत्व स्वीकार करने की परम्परा थी, इसे 'उपसम्पदा' कहते है। विशेष प्रयोजन होने पर आचार्य, उपाध्याय या गणी अपने पद का त्याग कर देते थे, अथवा किसी को सघ से बाहर किया जाना हो तो उसे **विहान** कहते है। *(विशेष विवरण के लिए देखे ठाणं, पृष्ठ २७४ तथा हिन्दी टीका पृष्ठ ४८०)*

**Elaboration**—In the ascetic organization (*Shraman Sangh*) there are three important positions of authority—*acharya* (head of the *sangh*), *upadhyaya* (teacher of scriptures or ascetic preceptor) and *gani* (leader of a group). According to the ancient tradition these positions were awarded either by *acharyas* or on approval of *sthavirs* (senior ascetics). This approval was normal as well as special. Normal approval is called *anujna* and special approval is called *samanujna*. If the person being awarded these positions is fully qualified in all respects the approval is

called *samanujna* and if he is not fully qualified it is called *anujna*. In ancient times there was a tradition of going to an *acharya, upadhyaya* or *gani* of other group and becoming his disciple in order to acquire expertise in knowledge, perception/faith and conduct. This is called *upasampada* There was a provision of *acharya, upadhyaya* and *gani* resigning from or being divested of their position for some special purpose This is called *vihan* *(for more details see Thanam, p 274 and Hindi Tika, p 480)*

**वचन–पद VACHAN-PAD (SEGMENT OF SPEECH)**

**२३९. तिविहे वयणे पण्णत्ते, तं जहा—तव्वयणे, तदण्णवयणे, णोअवयणे।**

**२४०. तिविहे अवयणे पण्णत्ते, तं जहा—णोतव्वयणे, णोतदण्णवयणे, अवयणे।**

२३९. वचन तीन प्रकार का है–(१) **तद्वचन**–यथार्थ कथन करना, जैसे अग्नि को ज्वलन, घट को घट कहना। (२) **तदन्यवचन**–विवक्षित वस्तु से भिन्न वस्तु का कथन, जैसे घट को पट कहना। (३) **नोअवचन**–अर्थहीन वचन अथवा निषेधात्मक वचन।

२४०. अवचन तीन प्रकार का है–(१) **नोतद्वचन**–विवक्षित वस्तु का अकथन, जैसे घट को पट कहना। (२) **नोतदन्यवचन**–विवक्षित वस्तु का कथन, जैसे घट को घट कहना। (३) **अवचन**–वचन-निवृत्ति मौन अथवा सावद्य वचन भी इसी मे आता है।

**239.** *Vachan* (speech) is of three kinds—(1) *tadvachan*—to state truth or reality, such as to call a fire a fire and a pot a pot (2) *Tadanyavachan*—to give a false statement or call a thing what it is not, such as to call a bowl a screen. (3) *No-avachan*—meaningless statement or prohibitive statement

**240.** *Avachan* (negative speech) is of three kinds—(1) *no-tadvachan*—not to state truth or reality, such as to call a bowl a screen. (2) *No-tadanyavachan*—not to give a false statement; in other words to call a thing what it is, to call a pot a pot (3) *Avachan*—no statement or silence. This also means sinful or abhorrent statement.

**मन–पद MANAH-PAD (SEGMENT OF MIND)**

**२४१. तिविहे मणे पण्णत्ते, तं जहा—तम्मणे, तयण्णमणे, णोअमणे।**

**२४२. तिविहे अमणे पण्णत्ते, तं जहा—णो तम्मणे, णो तयण्णमणे, अमणे।**

२४१. मन तीन प्रकार का होता है–(१) **तन्मन**–लक्ष्य मे लगा हुआ मन। (२) **तदन्यमन**–लक्ष्य के विपरीत अन्यत्र लगा मन। (३) **नोअमन**–मन का लक्ष्य-हीन व्यापार। सकल्प-विकल्प में उलझा मन।

२४२. अमन तीन प्रकार का होता है-(१) नोतन्मन-लक्ष्य मे नही लगा हुआ मन। (२) नोतदन्यमन-अलक्ष्य में नही लगा अर्थात् लक्ष्य में लगा हुआ मन। (३) अमन-मन की अप्रवृत्ति (सुषुप्ति या मूर्च्छित दशा मे पडा मन)।

**241.** *Man* (mind) is of three kinds—(1) *tanman*—mind involved with a goal. (2) *Tadanyaman*—mind involved away from goal (3) *No-aman*—aimless mind or a mind caught in ambiguities

**242.** *Aman* (negative mind) is of three kinds—(1) *no-tanman*—mind not involved with a goal (2) *No-tadanyaman*—mind not involved away from goal, in other words mind involved with a goal (3) *Aman*—inactivity of mind (state of slumber or unconsciousness).

### *वृष्टि-पद (अल्पवृष्टि एवं महावृष्टि के कारण)*

### VRISHTI-PAD (SEGMENT OF RAIN—CAUSE OF LIGHT AND HEAVY RAINFALL)

**२४३. तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठीकाए सिया, तं जहा–**

**(१) तस्सिं च णं देसंसि वा पदेसंसि वा णो बहवे उदगजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताते वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति।**

**(२) देवा णागा जक्खा भूता णो सम्ममाराहिता भवंति, तत्थ समुट्ठियं उदगपोग्गलं परिणतं वासितुकामं अण्णं देसं साहरंति।**

**(३) अब्भवद्दलगं च णं समुट्ठितं परिणतं वासितुकामं वाउकाए विधुणति।**

**इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठिकाए सिया।**

२४३. तीन कारणो से अल्पवृष्टि होती है–

(१) जब उस देश या प्रदेश मे बहुत से उदक योनिक जीव और पुद्‌गल उदक रूप में उत्पन्न नही हुए हों।

(२) जब देव, नाग, यक्ष या भूत सम्यक् प्रकार से आराधित न किये गये हो, तब उस देश मे उत्पन्न, वर्षा मे परिणत तथा बरसने ही वाले उदक-पुद्‌गलो (मेघो) का उनके द्वारा अन्य देश मे संहरण कर लेने से।

(३) जब बरसने को तैयार हुए बादलो को वायुकाय छिन्न-भिन्न कर देता हो।

**243.** There are three reasons of *alpavrishti* (light rainfall)—

(1) When in that country or state not many water-bodied beings and particles are born or created in the form of water.

(2) When not properly worshipped gods, *naag, yaksh* or *bhoot* sweep away the water particles created in that area and transformed into rain clouds

(3) When air-bodied beings disperse the rain bearing clouds about to rain.

२४४. तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठीकाए सिया, तं जहा–

(१) तस्सिं च णं देसंसि वा पदेसंसि वा बहवे उदगजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति।

(२) देवा णागा जक्खा भूता सम्ममाराहित भवंति, अण्णत्थ समुट्ठितं उदगपोग्गलं परिणयं वासितुकामं तं देसं साहरंति।

(३) अब्भवद्दलगं च णं समुट्ठितं परिणयं वासितुकामं णो वाउआए विधुणति।

इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठिकाए सिया।

२४४. तीन कारणों से महावृष्टि होती है–

(१) जब उस देश या प्रदेश में बहुत से उदक योनिक जीव और पुद्गल अप्काय योनि मे उत्पन्न होते हैं।

(२) जब उस देश य प्रदेश मे देव, नाग, यक्ष या भूतो की सम्यक् प्रकार से आराधना होने पर वे अन्य देश मे उठे हुए वर्षा मे परिणत तथा बरसने ही वाले उदक–पुद्गलो को उस देश मे संहरण कर लेते हैं।

(३) जब बरसने के लिए परिणत बादलो को वायुकाय विध्वंस नही करता।

244. There are three reasons of *mahavrishti* (heavy rainfall)—

(1) When in that country or state many water-bodied beings and particles are born or created in the form of water

(2) When properly worshipped gods, *naag, yaksh* or *bhoot* sweep in the water particles created in other areas and transformed into rain clouds

(3) When air-bodied beings do not disperse the rain bearing clouds about to rain

### *अधुनोपपन्न–देव–आगमन–पद* ADHUNOPAPANNA-DEV-AAGAMAN-PAD (SEGMENT OF COMING OF NEWBORN GODS)

२४५. तिहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए, तं जहा–

(१) अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे, से णं माणुस्सए कामभोगे णो आढाइ, णो परियाणाइ, णो अट्ठं बंधइ, णो णियाणं पगरेइ, णो ठिइपकप्पं पगरेइ।

(२) अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे, तस्स णं माणुस्सए पेम्मे वोच्छिण्णे दिव्वे संकंते भवति।

(३) अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे तस्स णं एवं भवति–इण्हिं गच्छं मुहुत्तं गच्छं, तेणं कालेणमप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति।

इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए।

२४५. देवलोक मे तत्काल उत्पन्न देव शीघ्र ही मनुष्यलोक मे आना चाहता है, किन्तु इन तीन कारणो से आ नही सकता–

(१) देवलोक मे तत्काल उत्पन्न देव दिव्य काम–भोगो मे मूर्च्छित (मोहग्रस्त), गृद्ध (अतृप्त), बद्ध (स्नेह से बँधा) एव अत्यन्त आसक्त होकर मानवीय काम–भोगो को न आदर देता है, न उन्हे अच्छा जानता है, न उनसे प्रयोजन रखता है, न निदान–(उन्हे पाने का सकल्प) करता है और न स्थिति–प्रकल्प–(उनके बीच मे रहने की इच्छा) करता है।

(२) देवलोक मे तत्काल उत्पन्न, दिव्य काम–भोगो मे मूर्च्छित, गृद्ध एव आसक्त देव का मानवीय–प्रेम टूट जाता है तथा उसमे दिव्य देव सम्बन्धी प्रेम सक्रान्त हो जाता है।

(३) देवलोक मे तत्काल उत्पन्न, दिव्य काम–भोगों मे मूर्च्छित, (गृद्ध, बद्ध) तथा आसक्त देव सोचता है–मै मनुष्य लोक मे अभी नही, थोडी देर मे, एक मुहूर्त्त के बाद जाऊँगा, इस प्रकार उसके सोचते रहने के समय मे ही अल्प आयु का धारक मनुष्य (जिनके लिए वह जाना चाहता था) कालधर्म को प्राप्त हो जाते हैं।

इन तीन कारणो से देवलोक मे तत्काल उत्पन्न देव शीघ्र ही मनुष्यलोक मे आना चाहता है, किन्तु आ नहीं सकता।

**245.** A newly born god in the divine realm soon wants to come to the land of humans but he cannot come for three reasons—

(1) A newly born god in the divine realm gets attracted to (*murchhit*), infatuated with (*griddha*), captivated by (*baddha*) and obsessed with (*aasakt*) divine pleasures, and does not have regard, liking, concern and desire for human pleasures He does not even have *sthiti-prakalp* or wish to live among them (humans)

(2) The love for humans of a newly born god in the divine realm, getting attracted to (*murchhit*), and so on up to. obsessed with (*aasakt*) divine pleasures, shatters and he is infused with love for divine pleasures

(3) A newly born god in the divine realm gets fond of (*murchhit*), . and so on up to... obsessed with (*aasakt*) divine pleasures, and thinks—I will not go to the land of humans just now but after some time, after one *muhurt*, and so on During this period of indecision the short lived man (for whom he desired to visit) dies.

For these three reasons a newly born god in the divine realm wishing to come to the land of humans cannot come

**२४६. तिर्हि ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, संचाएइ हव्वमागच्छित्तए—**

**(१) अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववण्णे, तस्स णमेवं भवति—अत्थि णं मम माणुस्सए भवे आयरिएति वा उवज्झाएति वा पवत्तीति वा थेरेति वा गणीति वा गणधरेति वा गणावच्छेदेति वा, जेसिं पभावेणं मए इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी, दिव्वा देवजुती, दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागते, तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि।**

**(२) अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु अणज्झोववण्णे, तस्स णं एवं भवति—एस णं माणुस्सए भवे णाणीति वा तवस्सीति वा अतिदुक्करदुक्करकारगे, तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि णमंसामि जाव पज्जुवासामि।**

**(३) अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु [ दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए ] अणज्झोववण्णे, तस्स णमेवं भवति—अत्थि णं मम माणुस्सए भवे मातांति वा [ पियाति वा भायाति वा भगिणीति वा भज्जाति वा पुत्ताति वा धूयाति वा ] सुण्हाति वा, तं गच्छामि णं तेसिमंतियं पाउब्भवामि, पासंतु ता मे इमं एतारूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभावं लद्धं पत्तं अभिसमण्णागयं।**

**इच्चेतेहिं तिर्हि ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए संचाएति हव्वमागच्छित्तए।**

२४६. तीन कारणो से देवलोक मे तत्काल उत्पन्न देव शीघ्र ही मनुष्यलोक मे आना चाहता है और आ भी सकता है-

(१) देवलोक मे तत्काल उत्पन्न, दिव्य काम-भोगो मे अमूर्च्छित, अगृद्ध, अबद्ध एव अनासक्त देव सोचता है—मनुष्यलोक मे मेरे मनुष्य भव के आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक, स्थविर, गणी, गणधर और गणावच्छेदक है, जिनके प्रभाव से मुझे यह इस प्रकार की दिव्य देव-ऋद्धि, दिव्य देव-द्युति और दिव्य देवानुभाव (वैक्रियादि शक्ति) मिला है, प्राप्त हुआ है, अभिसमन्वागत (भोग के लिए प्राप्त) हुआ है। अत मै जाऊँ और उन भगवन्तो को वन्दना नमस्कार करूँ, उनका सत्कार, सम्मान करूँ तथा उन कल्याणकर, मगलमय, देव और चैत्यस्वरूप भगवन्तो की पर्युपासना करूँ।

(२) देवलोक मे तत्काल उत्पन्न, दिव्य काम-भोगों मे अमूर्च्छित (अगृद्ध, अबद्ध) एवं अनासक्त देव सोचता है कि—मनुष्य भव मे अनेक ज्ञानी, तपस्वी और अति दुष्कर तपस्या करने वाले हैं। अत मै जाऊँ और उन भगवन्तो को वन्दन करूँ, नमस्कार करूँ, उन भगवन्तो की पर्युपासना करूँ।

(३) देवलोक में तत्काल उत्पन्न एव अनासक्त देव सोचता है—मेरे मनुष्य भव के माता (पिता, भाई, बहिन, स्त्री, पुत्र, पुत्री) और पुत्र-वधू है, अत मै उनके पास जाऊँ और उनके सामने प्रकट होऊँ, जिससे ये मेरी इस प्रकार की दिव्य देवऋद्धि, दिव्य देव-द्युति और दिव्य देवानुभाव को—जो मुझे मिली है, प्राप्त हुई है, अभिसमन्वागत हुई है, उसे देखे।

इन तीन कारणो से देवलोक मे तत्काल उत्पन्न देव शीघ्र ही मनुष्यलोक मे आना चाहता है और आने मे समर्थ भी होता है।

**246.** A newly born god in the divine realm wants to come soon to the land of humans and he can, indeed, come for three reasons—

(1) A newly born god in the divine realm not fond of (*murchhit*), infatuated with (*griddha*), captivated by (*baddha*) and obsessed with (*aasakt*) divine pleasures thinks—In the land of humans live my *acharya, upadhyaya, pravartak, sthavir, gani, ganadhar* and *ganavachhedak* of past human birth under whose influence I attained, acquired, possessed (for enjoyment) such divine opulence, radiance and divine powers Therefore I should go to pay homage and obeisance to them, offer them honour and respect Doing that I should worship the beatific and auspicious *Bhagavants* (*Tirthankars*) in their divine grandeur.

(2) A newly born god in the divine realm not fond of (*murchhit*), infatuated with (*griddha*), captivated by (*baddha*) and obsessed with (*aasakt*) divine pleasures thinks—In the land of humans live many *jnanis* (sages), *tapasvis* (ascetics observing austerities) and those observing extremely rigorous austerities Therefore I should go to pay homage and obeisance to them, and so on up to worship the auspicious *Bhagavants* (*Tirthankars*)

(3) A newly born god in the divine realm not fond of (*murchhit*), infatuated with (*griddha*), captivated by (*baddha*) and obsessed with (*aasakt*) divine pleasures thinks—In the land of humans live my mother (father, brothers, sisters, wife, son, daughter) and daughter-in-law of my past human birth Therefore I should go there and appear before them to enable them to see this divine opulence, radiance and divine power I have attained, acquired, possessed (for enjoyment)

For these three reasons a newly born god in the divine realm soon wants to come to the land of humans and can, indeed, come

विवेचन–आगम के अर्थ की वाचना देने वाले एव दीक्षागुरु तथा संघ के स्वामी आचार्य होते हैं। आगम सूत्रो की वाचना देने वाले को उपाध्याय एवं वैयावृत्य, तपस्या आदि मे साधुओ की नियुक्ति करने वाले को प्रवर्तक कहते हैं। संयम मे स्थिर करने वाले एवं वृद्ध साधु स्थविर तथा गण के नायक गणी। तीर्थंकर के प्रमुख शिष्य गणधर होते है। साध्वियो के विहार आदि की व्यवस्था करने वाले को भी गणधर कहते है। आचार्य की अनुज्ञा लेकर गण के उपकार के लिए वस्त्र–पात्रादि के निमित्त कुछ साधुओं को साथ लेकर ग्राम, नगरादि मे अन्यत्र विहार करने वाले गणावच्छेदक होते हैं।

**Elaboration**—*Acharya* is the head of the ascetic organization, the formal initiator guru and preceptor who explains the meaning of the *Agams*. *Upadhyaya* is the preceptor who teaches the text of *Agams*. *Pravartak* is responsible for the management of various ascetic duties like care of ascetics as well as austerities to be observed. The senior ascetics who affirm juniors in asceticdiscipline are called *sthavir*. Group leaders are called *gani*. The chief disciples of a *Tirthankar* are called *ganadhar*. Ascetics who go around in a group from one village and city to another with permission of the *acharya* and for collecting alms like garb and bowls for the benefit of the group are called *ganavachhedak*.

**देव–मनःस्थिति–पद DEV-MANAHSTHITI-PAD (SEGMENT OF MENTAL STATE OF GODS)**

**२४७. तओ ठाणाइं देवे पीहेज्जा, तं जहा–माणुस्सगं भवं, आरिए खेत्ते जम्मं, सुकुलपच्चायातिं।**

२४७. देवता तीन स्थानो की इच्छा रखते हैं–(१) मनुष्य भव, (२) आर्य क्षेत्र में जन्म, और (३) सुकुल (उत्तम धार्मिक कुल) में उत्पन्न होना।

**247.** *Devs* (divine beings) have desire for three places—(1) of *manushya bhava* (birth as a human beings), (2) of being born in *Arya Kshetra* (the land of Aryas), and (3) of being born in a *sukul* (noble religious family)

**२४८. तिहिं ठाणेहिं देवे परितप्पेज्जा, तं जहा–**

**(१) अहो ! णं मए संते बले संते वीरिए संते पुरिसक्कार–परक्कमे खेमंसि सुभिक्खंसि आयरिय–उवज्झाएहिं विज्जमाणेहिं कल्लसरीरेणं णो बहुए सुए अहीए।**

**(२) अहो ! णं मए इहलोगपडिबद्धेणं परलोगपरंमुहेणं विसयतिसिएणं णो दीहे सामण्णपरियाए अणुपालिते।**

**(३) अहो ! णं मए इड्ढि–रस–साय–गरुएणं भोगासंसगिद्धेणं णो विसुद्धे चरित्ते फासिते।**

**इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं देवे परितप्पेज्जा।**

२४८. तीन कारणो से देवता पश्चात्ताप करता है–

(१) अहो ! मैने बल, वीर्य, पुरुषकार, पराक्रम, क्षेम–(सब अनुकूलताएँ) सुभिक्ष, आचार्य और उपाध्याय की उपस्थिति तथा नीरोग शरीर के होते हुए भी श्रुतज्ञान का पर्याप्त अध्ययन नहीं किया।

(२) अहो ! मैंने इस लोक–सम्बन्धी विषयों–(मान–सन्मान) की तृष्णा फँसकर तथा परलोक से पराङ्मुख होकर, दीर्घकाल तक श्रमण धर्म का पालन नहीं किया।

(३) अहो ! मैने ऋद्धि, रस एव साता गौरव से युक्त होकर, अप्राप्त भोगो की आकांक्षा कर और भोगों मे गृद्ध होकर विशुद्ध (निरतिचार-उत्कृष्ट) चारित्र का पालन नही किया।

इन तीन कारणो से देव परितप्त होता है।

**248.** For three reasons a *dev* (god) repents—

(1) Alas ! In spite of having strength, potency, *purushakar* (human form), *kshem* (favourable conditions), good weather conditions, presence of *acharya* and *upadhyaya*, and healthy body I failed to absorb enough *shrut-jnana* (knowledge of the scriptures)

(2) Alas ! Caught in the trap of desire for mundane achievements related to this life (status, honour etc ) I failed to follow *Shraman Dharma* (Jain religion) for an extended period

(3) Alas ! Enamoured with opulence and pride of possessing means of comforts and pleasure I hankered for unknown pleasures, got infatuated with available pleasures and failed to observe pure conduct without transgressions

For these three reasons a *dev* (god) repents

**२४९. तिहिं ठाणेहिं देवे चइस्सामित्ति जाणइ, तं जहा–विमाणाभरणाइं णिप्पभाइं पासित्ता, कप्परुक्खगं मिलायमाणं पासित्ता, अप्पणो तेयलेस्सं परिहायमाणिं जाणित्ता–इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं देवे चइस्सामित्ति जाणइ।**

२४९. तीन कारणो से देव यह जान लेता है कि मै च्युत होऊँगा-(आयुष्य पूर्ण कर अन्यत्र जाऊँगा) -

(१) विमान और आभूषणो को निष्प्रभ (कान्तिहीन) देखकर। (२) कल्पवृक्ष को मुर्झाया हुआ देखकर। (३) अपनी तेजोलेश्या (शरीर कान्ति) को क्षीण होती देखकर।

इन तीन कारणो से देव यह जान लेता है कि मै च्युत होऊँगा।

**249.** For these three reasons a *dev* (god) knows that he is going to descend (*chyut*, reincarnate after concluding his life span)—

(1) by seeing the faded glitter of his *vimaan* (celestial vehicle) and ornaments (2) by seeing wilted *kalpavriksha* (wish fulfilling tree) (3) by seeing his fading *tejoleshya* (fire power and aura)

For these three reasons a *dev* (god) knows that he is going to descend for reincarnation

**२५०. तिहिं ठाणेहिं देवे उव्वेगमागच्छेज्जा, तं जहा–**

**(१) अहो ! णं मए इमाओ एतारूवाओ दिव्वाओ देविड्ढीओ दिव्वाओ देवजुतीओ दिव्वाओ देवाणुभावाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमण्णागताओ चइयव्वं भविस्सति।**

(२) अहो ! णं मए माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभयसंसट्ठं तप्पढमयाए आहारो आहारेयव्वो भविस्सति।

(३) अहो ! णं मए कलमल–जंबालाए असुईए उव्वेयणियाए भीमाए गब्भवसहीए वसियव्वं भविस्सइ।

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं देवे उव्वेगमागच्छेज्जा।

२५०. (च्यवन काल निकट आने पर) तीन कारणों से देव उद्वेग को प्राप्त होता है–

(१) अहो ! मुझे इस प्रकार की उपार्जित, प्राप्त एवं हाथ आई हुई दिव्य देव–ऋद्धि, दिव्य देव–द्युति और दिव्य देवानुभाव को छोड़ना पड़ेगा।

(२) अहो ! मुझे सर्वप्रथम माता के ओज (रज) और पिता के शुक्र (वीर्य) का सम्मिश्रण रूप आहार लेना होगा।

(३) अहो ! मुझे कलमल–जम्बाल (कीचड़) वाले अशुचि उद्वेग उत्पन्न करने वाले और भयानक गर्भाशय में रहना होगा।

इन तीनों कारणो से देव उद्वेग को प्राप्त होता है।

**250.** For these three reasons a *dev* (god) gets disturbed when the time of his descent approaches—

(1) Alas ! I will have to abandon such earned, acquired and possessed divine opulence, radiance and powers.

(2) Alas ! My first food intake will be in the form of the mixture of mother's menstrual discharge and father's semen.

(3) Alas ! I will have to live in a slimy, soiled, repulsive and horrifying womb.

For these three reasons a *dev* (god) gets disturbed.

### *विमान–पद* VIMAAN-PAD (SEGMENT OF CELESTIAL VEHICLE)

२५१. तिसंठिया विमाणा पण्णत्ता, तं जहा–वट्टा, तंसा, चउरंसा।

(१) तत्थ णं जे ते वट्टा विमाणा, ते णं पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिया सव्वओ समंता पागारपरिक्खित्ता एगदुवारा पण्णत्ता।

(२) तत्थ णं जे ते तंसा विमाणा, ते णं सिंघाडगसंठाणसंठिया दुहतोपागारपरिक्खित्ता एगतो वेइया–परिक्खित्ता तिदुवारा पण्णत्ता।

(३) तत्थ णं जे ते चउरंसा विमाणा, ते णं अक्खाडगसंठाणसंठिया सव्वतो समंता वेइयापरिक्खित्ता चउदुवारा पण्णत्ता।

२५१. विमान तीन प्रकार के संस्थान–(आकार) वाले होते है–(१) वृत्त, (२) त्रिकोण, और (३) चतुष्कोण।

(१) जो विमान वृत्त होते है वे खिले हुए कमल के आकार के गोलाकार होते है, सर्व दिशाओं और विदिशाओ में प्राकार (परकोटा) से घिरे होते है तथा उनको एक द्वार होता है।

(२) जो विमान त्रिकोणाकार होते है वे सिंघाडे के आकार मे होते हैं, दो ओर से परकोटे से घिरे हुए तथा एक ओर से वेदिका से घिरे होते है तथा उनके तीन द्वार होते है।

(३) जो विमान चतुष्कोण होते है वे अखाडे या चौपड के आकार के होते हैं, सर्व दिशाओ और विदिशाओं मे वेदिकाओ से घिरे होते है तथा वे चार द्वार वाले होते है।

**251.** *Vimaan* (celestial vehicle) has three kinds of *samsthan* (structure; shape)—(1) *vritta* (circular), (2) *trikone* (triangular), and (3) *chatushkone* (square or quadrangular)

(1) The circular *vimaans* resemble the shape of a blooming lotus. They are fully surrounded by a parapet wall and have one gate

(2) The triangular *vimaans* resemble the shape of a *singhada* (water-chestnut). They are surrounded by a parapet wall on two sides and a *vedika* (raised platform) on the third. They have three gates.

(3) The square or quadrangular *vimaans* resemble the shape of a boxing-ring or a chess board They are surrounded by *vedikas* (raised platforms) in all cardinal and intermediate directions They have four gates.

**२५२. तिपतिट्ठिया विमाणा पण्णत्ता, तं जहा–घणोदधिपइट्ठिता, घणवातपइट्ठिता, ओवासंतरपइट्ठिता।**

**२५३. तिविहा विमाणा पण्णत्ता, तं जहा–अवट्ठिता, वेउव्विता, पारिजाणिया।**

२५२. विमान त्रिप्रतिष्ठित (तीन आधारो से अवस्थित) होते है-घनोदधि-प्रतिष्ठित, घनवात-प्रतिष्ठित और अवकाशान्तर-(आकाश-) प्रतिष्ठित।

२५३. विमान तीन प्रकार के होते हैं-

(१) **अवस्थित**–देवताओ के स्थायी निवास वाले। (२) **वैक्रिय**–भोगादि के लिए बनाये गये अस्थायी। (३) **पारियानिक**–मध्यलोक मे आने-जाने हेतु यातायात के लिए बनाये गये।

**252.** *Vimaans* rest on three kinds of bases—(1) *ghanodadhi-pratishthit* (resting on dense water), (2) *ghanavaat-pratishthit* (resting on dense air), and (3) *avakashantar-pratishthit* (resting in empty space).

**253.** *Vimaans* are of three kinds—(1) *avasthit*—the permanent abodes of gods, (2) *vaikriya*—temporary, its means made for entertainment and enjoyments, and (3) *paariyanik*—made for commuting to the middle world.

*दृष्टि–पद* **DRISHTI-PAD (SEGMENT OF PERCEPTION/FAITH)**

**२५४. तिविधा णेरइया पण्णत्ता, तं जहा–सम्मादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी। २५५. एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं।**

२५४. नारकी जीव तीन प्रकार के हैं–(१) सम्यग्दृष्टि, (२) मिथ्यादृष्टि, और (३) सम्यग्मिथ्या (मिश्र) दृष्टि। २५५. इसी प्रकार विकलेन्द्रियों को छोडकर सभी दण्डको में तीनो प्रकार की दृष्टि वाले जीव जानना चाहिए।

**254.** *Naaraki jivas* are of three kinds—(1) *samyagdrishti* (with right perception/faith), (2) *mithyadrishti* (with wrong perception/faith), and (3) *samyagmithyadrishti* (with right-wrong or mixed perception/faith) **255.** In the same way excluding *vikalendriyas* (two to four sensed beings) all beings belonging to all *dandaks* (places of suffering) should be read as of these three kinds.

*दुर्गति–सुगति–पद* **DURGATI-SUGATI-PAD**
**(SEGMENT OF GOOD AND BAD REALMS OF BIRTH)**

**२५६. तओ दुग्गतीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–णेरइयदुग्गती, तिरिक्खजोणियदुग्गती, मणुयदुग्गती।**

**२५७. तओ सुगतीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–सिद्धसोगती, देवसोगती, मणुस्ससोगती।**

२५६. तीन दुर्गतियाँ है–(१) नरकदुर्गति, (२) तिर्यग्योनिकदुर्गति, और (३) मनुजदुर्गति (दीन-हीन दु.खी अवस्था प्राप्त मनुष्यो की अपेक्षा से)।

२५७. तीन सुगतियाँ हैं–(१) सिद्धसुगति, (२) देवसुगति और (३) मनुष्यसुगति (सुखी जीवन की अपेक्षा।)

**256.** There are three *durgatis* (bad realms of birth)—(1) *narak durgati* (bad realm of hell), (2) *tiryagyonik durgati* (bad realm of animals), and (3) *manuj durgati* (bad realm of humans, in context of destitutes and miserable people)

**257.** There are three *sugatis* (good realms of birth)—(1) *Siddha sugati* (good realm of the liberated), (2) *dev sugati* (good realm of divine beings), and (3) *manuj sugati* (good realm of humans, in context of happy people).

**२५८. तओ दुग्गता पण्णत्ता, तं जहा–णेरइयदुग्गता, तिरिक्खजोणियदुग्गता, मणुस्सदुग्गता।**

**२५९. तओ सुगता पण्णत्ता, तं जहा–सिद्धसुगता, देवसुग्गता, मणुस्ससुग्गता।**

२५८. दुर्गत (दुर्गति को प्राप्त जीव) तीन प्रकार के हैं–(१) नैरयिकदुर्गत, (२) तिर्यग्योनिकदुर्गत, और (३) मनुष्यदुर्गत।

२५९. सुगत (सुगति को प्राप्त जीव) तीन प्रकार के है-(१) सिद्धसुगत, (१) देवसुगत, और (३) मनुष्यसुगत।

**258.** There are three *durgats* (born in bad realms of birth)—(1) *narak durgat* (born in bad realm of hell), (2) *tiryagyonik durgat* (born in bad realm of animals), and (3) *manuj durgat* (born in bad realm of humans, in context of destitute and miserable people)

**259.** There are three *sugats* (born in good realms of birth)—(1) *Siddha sugat* (born in good realm of the liberated), (2) *dev sugat* (born in good realm of divine beings), and (3) *manuj sugat* (born in good realm of humans, in context of happy people)

### तपःपानक-पद TAPAHPAANAK-PAD (SEGMENT OF DRINKS DURING AUSTERITIES)

**२६०. चउत्थभत्तियस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए, तं जहा-उस्सेइमे, संसेइमे, चाउलधोवणे। २६१. छट्ठभत्तियस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए, तं जहा-तिलोदए, तुसोदए, जवोदए। २६२. अट्ठमभत्तियस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए, तं जहा-आयामए, सोवीरए, सुद्धवियडे।**

२६०. चतुर्थभक्त (एक उपवास) करने वाले भिक्षु को तीन प्रकार के पानक (धोवन तथा गर्म जल) ग्रहण करना कल्पता है-(१) उत्स्वेदिम-आटे का धोवन। (२) संसेकिम-सिझाये हुए कैर आदि का धोवन। (३) तन्दुल-धोवन-चावलो का धोवन। २६१. षष्ठभक्त (दो उपवास) करने वाले भिक्षु को तीन प्रकार के पानक ग्रहण करना कल्पता है-(१) तिलोदक-तिलो का धोवन जल। (२) तुषोदक-तुष-भूसे का धोवन जल। (३) यवोदक-जौ का धोवन जल। २६२. अष्टमभक्त (तीन उपवास) करने वाले भिक्षु को तीन प्रकार के पानक लेना कल्पता है-(१) आयामक (आचामक)-उबाले हुए चावलो का माड, दाल का धोवन अथवा छाछ के ऊपर का पानी। (२) सौवीरक-कांजी का धोवन। (३) शुद्ध विकट-शुद्ध उष्ण जल।

**260.** It is proper for an ascetic observing *chaturbhakt* (one day fast) to accept three kinds of *paanak* (wash and boiled water)—(1) *utsvedim*—wash of flour, (2) *samsekim*—wash of boiled vegetables like *Kair* (*Kareel*; Capparis decidua), and (3) *tandul-dhovan*—wash of rice **261.** It is proper for an ascetic observing *shashthabhakt* (two day fast) to accept three kinds of *paanak* (wash and boiled water)—(1) *tilodak*—wash of sesame seeds, (2) *tushodak*—wash of husk, and (3) *yavodak*—wash of barley **262.** It is proper for an ascetic observing *ashtambhakt* (three day fast) to accept three kinds of *paanak* (wash and boiled water)—(1) *aayamak*—rice soup, wash of lentils or whey, (2) *sauvirak*—a kind of vinegar, and (3) *shuddha vikat*—pure boiled water

पिण्डैषणा-पद PINDAISHANA-PAD (SEGMENT OF SEARCH FOR FOOD)

**२६३. तिविहे उवहडे पण्णत्ते, तं जहा—फलिओवहडे, सुद्धोवहडे, संसट्ठोवहडे।**

**२६४. तिविहे ओग्गहिते पण्णत्ते, तं जहा—जं च ओगिण्हति, जं च साहरति, जं च आसगंसि पक्खिवति।**

२६३. जहाँ गृहस्थ भोजन करते हों वहाँ लाया हुआ उपहृत—भोजन तीन प्रकार का होता है—(१) फलिकोपहृत—थाली आदि में रखा हुआ भोजन। (२) शुद्धोपहृत—लेपरहित सूखा भोजन। जैसे भुने हुए चने आदि। (३) संसृष्टोपहृत—अनेक वस्तु मिश्रित किन्तु अनुच्छिष्ट भोजन। जैसे—दाल—चावल।

२६४. अवगृहीत—(भोजन ग्रहण के सम्बन्ध में विशेष अभिग्रहयुक्त) आहार तीन प्रकार का होता है—(१) गृहस्थ द्वारा परोसने के लिए हाथ मे उठाया हुआ। (२) एक बर्तन से दूसरे बर्तन मे रखा जाता भोजन। (३) परोसने से बचा हुआ और पुनः पात्र में डाला हुआ। *(ये दोनों सूत्र अभिग्रहधारी मुनि की अपेक्षा से है)*

**263.** The food brought for serving (*upahrit*) where householders eat is of three kinds—(1) *falikopahrit*—food placed in plates and other utensils, (2) *shuddhopahrit*—dry food without any curry such as roasted gram, and (3) *samsrishtopahrit*—food with mixed ingredients but not leftovers, for example rice mixed with curry

**264.** *Avagraheet* food (food to be taken with some specific resolution about acceptance) is of three kinds—(1) food taken in hand by a householder for serving, (2) food being transferred from one vessel to another, and (3) unserved food replaced in the serving pot (These two aphorisms are meant for an ascetic with *abhigraha* or special resolve)

अवमोदरिका-पद AVAMODARIKA-PAD (SEGMENT OF CURTAILMENT)

**२६५. तिविधा ओमोदरिया पण्णत्ता, तं जहा—उवगरणोमोदरिया भत्तपाणोमोदरिया, भावोमोदरिया।**

**२६६. उवगरणोमोदरिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगे वत्थे, एगे पाते, चियत्तोवहिसाइज्जणया।**

२६५. अवमोदरिका—(आवश्यकता से कम भक्त—पात्रादि ग्रहण करना ऊणोदरी) तीन प्रकार की है—(१) उपकरण—अवमोदरिका—उपकरणों को कम करना। (२) भक्त—पान—अवमोदरिका—खान—पान की वस्तुओं को कम लेना। (३) भाव—अवमोदरिका—राग—द्वेषादि दुर्भावों को मंद करना।

२६६. उपकरण—अवमोदरिका तीन प्रकार की होती है—(१) एक वस्त्र रखना। (२) एक पात्र रखना। (३) साधना में आगम—सम्मत आवश्यक उपकरण रखना।

**265.** *Avamodarika* (curtailment) is of three kinds—(1) *upakaran-avamodarika*—curtailing the need of ascetic-equipment, (2) *bhakt-paan-avamodarika*—curtailing the need of food and drinks, and (3) *bhaava-avamodarika*—curtailing bad attitudes like attachment and aversion.

**266.** *Upakaran-avamodarika* (curtailing the need of ascetic-equipment) is of three kinds—(1) to have one dress only, (2) to have one bowl only, and (3) to have required equipment as prescribed in the *Agams*.

### निर्ग्रन्थ–चर्या–पद NIRGRANTH-CHARYA-PAD (SEGMENT OF ASCETIC PRAXIS)

**२६७. तओ ठाणा णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा अहियाए असुभाए अखमाए अणिस्सेसाए अणाणगामियत्ताए भवंति, तं जहा–कूअणता, कक्करणता, अवज्झाणता।**

**२६८. तओ ठाणा णिग्गंथाण वा निग्गंथीण वा हिताए सुहाए खमाए णिस्सेसाए आणुगामिअत्ताए भवंति, तं जहा–अकूअणता, अकक्करणता, अणवज्झाणता।**

२६७. निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियो के लिए तीन स्थान अहितकर, अशुभ, अक्षम (अनुपयुक्त), अनिश्रेयस (अकल्याणकर), अनानुगामिक–(भवान्तर मे अशुभ बधन के हेतु) होते है–(१) **कूजनता**–आर्त्तस्वर मे करुण क्रन्दन करना। (२) **कर्करणता**–शय्या, उपधि आदि के दोष प्रकट करने के लिए प्रलाप करना। (३) **अपध्यानता**–आर्त्त और रौद्रध्यान करना।

२६८. निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियो के लिए तीन स्थान हितकर, शुभ, क्षम, नि श्रेयस एवं आनुगामिक–(परलोक मे मुक्ति–प्राप्ति) के लिए होते है–(१) **अकूजनता**–आर्त्तस्वर नही करना। (२) **अकर्करणता**–प्रलाप नही करना। (३) **अनपध्यानता**–दुर्ध्यान नही करना।

**267.** Three *sthaans* (activities) are *ahitkar* (harmful), *ashubh* (bad), *aksham* (improper), *anihshreyash* (disadvantageous) and *ananugamik* (cause of demeritorious bondage for future life) for *nirgranthas* and *nirgranthis* (male and female ascetics)—(1) *koojanata*—to weep pitifully in distressful voice, (2) *karkaranata*—to lament complaining about faults of bed, equipment and other things, and (3) *apadhyanata*—to brood distressingly and angrily.

**268.** Three *sthaans* (activities) are *hitakar* (beneficial), *shubh* (good), *ksham* (proper), *nihshreyash* (advantageous) and *anugamik* (cause of liberation in future life) for *nirgranthas* and *nirgranthis* (male and female ascetics)—(1) *akoojanata*—not to weep pitifully in distressful voice, (2) *akarkaranata*—not to lament complaining about faults of bed, equipment and other things, and (3) *anapadhyanata*—not to brood distressingly and angrily.

*शल्य-पद* **SHALYA-PAD (SEGMENT OF THORN)**

**२६९. तओ सल्ला पण्णत्ता, तं जहा—मायासल्ले, णियाणसल्ले, मिच्छादंसणसल्ले।**

२६९. शल्य तीन प्रकार के हैं-(१) मायाशल्य, (२) निदानशल्य, और (३) मिथ्यादर्शनशल्य।

**269.** *Shalya* is of three kinds—(1) *maya shalya* (thorn of deceit), (2) *nidan shalya* (thorn of desire), and (3) *mithyadarshan shalya* (thorn of false or wrong perception/faith)

*तेजोलेश्या-पद* **TEJOLESHYA-PAD (SEGMENT OF FIRE POWER)**

**२७०. तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे संखित्त-विउलतेउलेस्से भवति, तं जहा—आयावणयाए, खंतिखमाए, अपाणगेणं तवोकम्मेणं।**

२७०. तीन कारणों से श्रमण निर्ग्रन्थ को संक्षिप्त विपुल तेजोलेश्या उत्पन्न होती हैं-

(१) आतापना लेने से-सूर्य की प्रचण्ड किरणो द्वारा उष्णता सहन करने से।

(२) क्षान्ति-क्षमा धारण करने से-बदला लेने के लिए समर्थ होते हुए भी क्रोध पर विजय पाने से।

(३) अपानक तपःकर्म से-निर्जल-तपश्चरण करने से।

**270.** For three reasons a *Shraman nirgranth* acquires *sankshipt vipul tejoleshya* (controlled potent fire power)—

(1) by enduring terrible heat of scorching sun rays (*aataapana*)

(2) by forbearance and forgiveness (*kshanti-kshama*), for example to control one's anger in spite of having power to avenge

(3) by observing austerities without consuming water

**विवेचन**—विपुल तेजोलेश्या एक प्रकार की सहारक महा ज्वाला है। तपस्वी अनगार इसे अपने भीतर समाहित (सक्षिप्त) कर, दमन करके रखता है।

**Elaboration**—*Vipul tejoleshya* is a kind of destructive fire power An austere ascetic keeps it absorbed and controlled within himself.

*भिक्षु-प्रतिमा-पद* **BHIKSHU-PRATIMA-PAD (SEGMENT OF BHIKSHU-PRATIMA)**

**२७१. तिमासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स कप्पंति तओ दत्तीओ भोअणस्स पडिगाहेत्तए, तओ पाणगस्स।**

२७१. त्रैमासिक भिक्षु प्रतिमा को स्वीकार करने वाले अनगार के लिए तीन दत्तियाँ भोजन की और तीन दत्तियाँ पानक की ग्रहण करना कल्पता है।

**271.** For an ascetic observing *bhikshu-pratima* (special codes and resolutions for an ascetic) of three month duration it is proper to take three *dattis* (servings) of food and three servings of drinks.

**२७२. एगरातियं भिक्खुपडिमं सम्मं अणणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे तओ ठाणा अहिताए असुभाए अखमाए अणिस्सेयसाय अणाणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा—उम्मायं वा लभिज्जा, दीहकालियं वा रोगातंकं पाउणेज्जा, केवलीपण्णत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा।**

२७२. एकरात्रिकी भिक्षु-प्रतिमा का सम्यक् प्रकार से पालन नहीं करने वाले अणगार को तीन प्रकार के उपद्रव हो सकते हैं, अर्थात् ये तीन स्थान अहितकर, अशुभ, अक्षम, अनिःश्रेयसकारी और अनानुगामिता (परलोक मे दुःख) के कारण होते हैं–

(१) या तो वह अनगार उन्माद को प्राप्त हो जाता है। (२) या दीर्घकालिक रोग या आतंक से ग्रसित हो जाता है। (३) अथवा केवलिप्रज्ञप्त धर्म से भ्रष्ट हो जाता है।

**272.** If an ascetic does not properly observe *bhikshu-pratima* of one night duration he may suffer three kinds of afflictions, also these three *sthaans* (afflictions) are *ahitakar* (harmful), *ashubh* (bad), *aksham* (improper), *anihshreyash* (disadvantageous) and *ananugamik* (cause of demeritorious bondage for future life)—

(1) that ascetic either becomes mad, (2) or suffers from a chronic ailment and apprehension, (3) or drifts away from the path shown by the Omniscient

**२७३. एगरातियं भिक्खुपडिमं सम्मं अणुपालेमाणस्स अणगारस्स तओ ठाणा हिताए सुभाए खमाए णिस्सेसाए आणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा—ओहिणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा, मणपज्जवणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा, केवलणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा।**

२७३. एकरात्रिकी भिक्षु-प्रतिमा का सम्यक् प्रकार से यथाविधि पालन करने वाले अनगार को तीन विशेष उपलब्धियाँ होती है अर्थात् ये स्थान हितकर, शुभ, क्षेम, निःश्रेयसकारी और अनुगामिता के कारण होते है–

(१) या तो उक्त अनगार को अवधिज्ञान उत्पन्न होता है। (२) अथवा मनःपर्यवज्ञान प्राप्त होता है। (३) अथवा केवलज्ञान प्राप्त हो जाता है।

**273.** If an ascetic properly following prescribed procedure observes *bhikshu-pratima* of one night duration he may beget three special attainments, also these three *sthaans* (afflictions) are *hitckar* (beneficial), *shubh* (good), *ksham* (proper), *nihshreyash* (advantageous) and *ananugamik* (cause of liberation in future life)—

(1) that ascetic either acquires *avadhi-jnana*, (2) or *manahparyava-jnana*, (3) or *keval-jnana*

**कर्मभूमि-पद KARMABHUMI-PAD (SEGMENT OF LAND OF ENDEAVOUR)**

**२७४. जंबुद्दीवे दीवे तओ कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—भरहे, एरवए, महाविदेहे। २७५. एवं—धायइसंडे दीवे पुरित्थिमद्धे जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे।**

२७४. जम्बूद्वीप द्वीप में तीन कर्मभूमियाँ हैं-(१) भरत-कर्मभूमि, (२) ऐरवत-कर्मभूमि, और (३) महाविदेह-कर्मभूमि। २७५. इसी प्रकार धातकीषण्ड के पूर्वार्ध (३) और पश्चिमार्ध (३) में तथा अर्धपुष्करवरद्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध में भी तीन-तीन (कुल पन्द्रह) कर्मभूमियाँ हैं।

**274.** In the continent called Jambu Dveep there are three *karmabhumis* (lands of endeavour)—(1) Bharat-*karmabhumi*, (2) Airavat-*karmabhumi*, and (3) Mahavideh-*karmabhumi*. **275.** In the same way in the eastern half and western half of Dhatkikhand continent and the eastern half and western half of Ardhapushkaravar Dveep continent there are three *karmabhumis* (lands of endeavour) each (making a total of fifteen).

**दर्शन-पद DARSHAN-PAD (SEGMENT OF PERCEPTION/FAITH)**

**२७६. तिविहे दंसणे पण्णत्ते, तं जहा—सम्मद्दंसणे, मिच्छद्दंसणे, सम्मामिच्छद्दंसणे।**

**२७७. तिविहा रुई पण्णत्ता, तं जहा—सम्मरुई, मिच्छरुई, सम्ममिच्छरुई।**

**२७८. तिविहे पओगे पण्णत्ते, तं जहा—सम्मपओगे, मिच्छपओगे, सम्मामिच्छपओगे।**

२७६. दर्शन तीन प्रकार का है-(१) सम्यग्दर्शन, (२) मिथ्यादर्शन, और (३) सम्यग्मिथ्यादर्शन।

२७७. रुचि (श्रद्धा) तीन प्रकार की है-(१) सम्यग्रुचि, (२) मिथ्यारुचि, और (३) सम्यग्मिथ्यारुचि।

२७८. प्रयोग (प्रवृत्ति) तीन प्रकार का होता है-(१) सम्यक्प्रयोग, (२) मिथ्याप्रयोग, और (३) सम्यग्मिथ्याप्रयोग।

**276.** *Darshan* (perception/faith) is of three kinds—(1) *samyagdarshan* (right perception/faith), (2) *mithyadarshan* (false or wrong perception/faith), and (3) *samyagmithyadarshan* (right and wrong or mixed perception/faith).

**277.** *Ruchi* (inclination) is of three kinds—(1) *samyagruchi* (right inclination), (2) *mithyaruchi* (false or wrong inclination), and (3) *samyagmithyaruchi* (right and wrong or mixed inclination)

**278.** *Prayog* (indulgence) is of three kinds—(1) *samyagprayog* (right indulgence), (2) *mithyaprayog* (false or wrong indulgence), and (3) *samyagmithyaprayog* (right and wrong or mixed indulgence).

विवेचन–उक्त तीन सूत्रों का अभिप्राय यह है कि यदि जीव मे सम्यग्दर्शन उत्पन्न हो गया है तो उसकी रुचि भी सम्यक् होगी और तदनुसार उसके मन, वचन, काय की प्रवृत्ति भी सम्यक् होगी। दर्शन के मिथ्या या मिश्रित होने पर उसकी रुचि एव प्रवृत्ति भी मिथ्या एवं मिश्रित होती है।

**Elaboration**—The aforesaid three aphorisms convey that if a being has attained right perception he will have right inclinations and accordingly right indulgence of mind, speech and body If perception is false or mixed his inclination and indulgence will also be mixed

**व्यवसाय–पद VYAVASAYA-PAD (SEGMENT OF PURSUIT)**

**२७९. तिविहे ववसाए पण्णत्ते, तं जहा–धम्मिए ववसाए, अधम्मिए ववसाए, धम्मिया धम्मिए ववसाए।**

**अहवा–तिविहे ववसाए पण्णत्ते, तं जहा–पच्चक्खे, पच्चइए, आणुगामिए।**

**अहवा–तिविहे ववसाए पण्णत्ते, तं जहा–इहलोइए, परलोइए, इहलोइए–परलोइए।**

२७९. व्यवसाय–(निर्णय अथवा कार्य की सिद्धि के लिए किया जाने वाला उद्यम, अनुष्ठान आदि) तीन प्रकार का है–(१) धार्मिक व्यवसाय, (२) अधार्मिक व्यवसाय, और (३) धार्मिकाधार्मिक व्यवसाय।

अथवा व्यवसाय तीन प्रकार का है–(१) प्रत्यक्ष व्यवसाय, (२) प्रात्ययिक (व्यवहार–प्रत्यक्ष) व्यवसाय, और (३) अनुगामिक (आनुमानिक अनुमान के आधार पर किया जाने वाला व्यवसाय)।

अथवा व्यवसाय तीन प्रकार का है–(१) इहलौकिक, (२) पारलौकिक, और (३) इहलौकिक–पारलौकिक (दोनों लोको से सम्बन्धित)।

**279.** *Vyavasaya* (pursuit of desired accomplishment or decision) is of three kinds—(1) *dharmik vyavasaya* (religious pursuit), (2) *adharmik vyavasaya* (irreligious pursuit), and (3) *dharmik-adharmik vyavasaya* (mixed pursuit)

Also *vyavasaya* is of three kinds—(1) *pratyaksh vyavasaya* (spiritually direct pursuit), (2) *pratyayik vyavasaya* (practically direct pursuit), and (3) *anugamik vyavasaya* (pursuit based on estimates).

*Vyavasaya* is of three kinds—(1) *ihalaukik* (related to this life), (2) *paaralaukik* (related to next life), and (3) *ihalaukik-paaralaukik* (related to both).

**२८०. इहलोइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते, तं जहा–लोइए, वेइए, सामइए।**

२८०. इहलौकिक व्यवसाय तीन प्रकार का है–लौकिक, वैदिक और सामयिक–सिद्धान्त के अनुसार।

**280.** *Ihalaukik vyavasaya* is of three kinds—*laukik* (worldly), *Vedic* (according to the *Vedas*) and *samayik* (according to the word of the Omniscient; the Jain way).

**२८१. लोइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—अत्थे, धम्मे, कामे।**

२८१. लौकिक व्यवसाय तीन प्रकार का है–अर्थव्यवसाय, धर्मव्यवसाय और कामव्यवसाय।

**281.** *Laukik vyavasaya* is of three kinds—*arth vyavasaya* (pursuit of money), *dharma vyavasaya* (pursuit of religion) and *kama vyavasaya* (pursuit of carnal pleasures)

**२८२. वेइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—रिउव्वेदे, जउव्वेदे, सामवेदे।**

२८२. वैदिक व्यवसाय तीन प्रकार का है–ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद व्यवसाय (अर्थात् इन वेदों के अनुसार किया जाने वाला अनुष्ठान।)

**282.** *Vedic vyavasaya* is of three kinds—Rituals performed according to—*Rigved*, *Yajurved* and *Saamved*.

**२८३. सामइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—णाणे, दंसणे, चरित्ते।**

२८३. सामयिक (श्रमणों का) व्यवसाय तीन प्रकार का है–(१) ज्ञान, (२) दर्शन, और (३) चारित्र व्यवसाय।

**283.** *Samayik vyavasaya* is of three kinds—pursuit of (1) *jnana* (right knowledge), (2) *darshan* (right perception/faith), and (3) *chaaritra* (right conduct).

**अर्थ-योनि-पद ARTH-YONI-PAD (SEGMENT OF ACQUISITION OF WEALTH)**

**२८४. तिविहा अत्थजोणी पण्णत्ता, तं जहा—सामे, दंडे, भेदे।**

२८४. अर्थयोनि तीन प्रकार की है–(१) सामयोनि, (२) दण्डयोनि, और (३) भेदयोनि।

**284.** *Arth-yoni* (means of acquisition of wealth) is of three kinds—(1) *saam-yoni* (conciliation), (2) *dand-yoni* (threat), and (3) *bhed-yoni* (guile).

विवेचन–राज्य व लक्ष्मी आदि की प्राप्ति के लिए जो उपाय किये जाते हैं, उन्हे अर्थयोनि कहते है। राजनीति में इसके लिए साम, दाम, दण्ड और भेद इन चार उपायों का उपयोग प्रसिद्ध है। प्रस्तुत सूत्र में दाम को छोड़कर शेष तीन उपायों का उल्लेख किया है। यदि प्रतिपक्षी अपने से अधिक बलवान व समर्थ हो तो उसके साथ साम‌नीति का प्रयोग किया जाता है।

वृत्तिकार ने तत्कालीन प्रचलित नीतियो का सग्रह करके साम के पाँच भेद बताये हैं–

(१) परस्परोपकार दर्शन–परस्पर किये हुए उपकार का वर्णन करना।

(२) गुण कीर्तन–प्रतिपक्षी के गुणों का वर्णन करना।

(३) सम्बन्ध समाख्यान–अपने कुल क्रमागत स्नेह सम्बन्धों का उल्लेख करना।

(४) आयति संप्रकाशन–भविष्य के सुनहरे स्वप्न दिखाना।

(५) अर्पण–प्रतिपक्षी के सामने समर्पण कर देना या पारस्परिक एकता बताना।

साम नीति सफल न होने पर दण्ड नीति का प्रयोग किया जाता है। दण्ड के तीन भेद हैं–(१) वध–शत्रु का वध करना, (२) परिक्लेश–अन्य उपायों से क्लेश पहुँचाना, (३) धनहरण–शत्रु अधिक दुर्बल हो तो उसका धन हरण कर लेना।

भेद नीति के तीन प्रकार है–(१) स्नेहरागापनय–शत्रु से प्रेम सम्बन्ध तोड़ना। (२) संहर्षोत्पादन–प्रतिस्पर्धा पैदा करना। (३) संतर्जन–शत्रु की तर्जना या भर्त्सना करना।

कुछ प्रतियों में 'दण्ड' के स्थान पर 'प्रदान' पाठ मिलता है। प्रतिपक्षी को किसी प्रकार का यथोचित पुरस्कार सन्मान, अर्थलाभ आदि देना प्रदान है। इस सदर्भ में टीकाकार ने प्राचीन नीति का एक श्लोक भी उद्धृत किया है–

*उत्तमं प्रणिपातेन शूरं भेदेन योजयेत्।*
*नीचमल्पप्रदानेन समं तुल्य पराक्रमैः।*

–बड़ों को नमस्कार से, वीर को भेद डालकर, नीच को कुछ देकर तथा बराबर वाले को युद्ध करके वश मे करना चाहिए।

**Elaboration**—The means employed for gaining territory and wealth are called *arth-yoni*. There are four popular means employed in political pursuits—*saam, daam, dand* and *bhed*. This aphorism ignores *daam* (bribery) out of the four If the adversary is strong and powerful, policy of *saam* (conciliation) is employed

The commentator (*Vritti*) has compiled the then prevalent ethical norms and found five methods of conciliation (*saam*)—

(1) *Parasparopakar darshan*—mention of mutual obligations.

(2) *Guna kirtan*—to sing in praise of the adversary.

(3) *Sambandh samakhyan*—to mention about harmonious and amicable family relationship

(4) *Aayati samprakashan*—to show golden dreams of future.

(5) *Arpan*—to surrender or enumerate mutual unity.

Policy of threat (*dand*) is employed when efforts of conciliation fail. Threat is of three kinds—(1) *vadh*—to kill the enemy, (2) *pariklesh*—to

cause pain by other means, and (3) *dhan-haran*—to deprive the enemy of his wealth if he is comparatively weak.

Policy of guile (*bhed*) is of three kinds—(1) *sneharagapan*—breaking amicable relationship, (2) *samharshotpadan*—provoking competition, and (3) *samtarjan*—use of insult and threat.

In some copies of the text, *pradan* is mentioned in place of *dand* *Pradan* means to reward, honour, cause financial gains or other such benefits to the adversary. In this context the commentator has also quoted an ancient verse from ethical works—"One should win over seniors or strong by bowing, braves by sowing dissension, lowly or weak by rewarding and equals by fighting."

### *पुद्गल–पद* PUDGAL-PAD (SEGMENT OF MATTER)

**२८५. तिविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा–पओगपरिणता, मीसापरिणता, वीससापरिणता।**

२८५. पुद्गल तीन प्रकार के है–(१) **प्रयोग–परिणत**–जीव के द्वारा ग्रहण किये हुए पुद्गल, (२) **मिश्र–परिणत**–जीव के प्रयोग (प्रयत्न) तथा स्वाभाविक रूप से परिणत पुद्गल, और (३) **विस्रसा**–स्वभाव से परिणत पुद्गल।

**285.** *Pudgal* (matter) is of three kinds—(1) *prayog-parinat*—transformed through absorption or consumption by beings, (2) *mishra-parinat*—transformed by efforts of a being as well as naturally transformed, and (3) *visrasa*—naturally transformed.

### *नरक–पद* NARAK-PAD (SEGMENT OF HELL)

**२८६. तिपतिट्ठिया णरगा पण्णत्ता, तं जहा–पुढविपतिट्ठिया, आगासपतिट्ठिया, आयपइट्ठिया। णेगम–संगह–ववहाराणं पुढविपतिट्ठिया, उज्जुसुतस्स आगासपतिट्ठिया, तिण्हं सद्दणयाणं आयपतिट्ठिया।**

२८६. नरक त्रिप्रतिष्ठित (तीन पर आश्रित) है–(१) पृथ्वी–प्रतिष्ठित, (२) आकाश–प्रतिष्ठित, और (३) आत्म–प्रतिष्ठित।

(१) (व्यवहार दृष्टि) नैगम, संग्रह और व्यवहारनय की अपेक्षा से नरक पृथ्वी पर प्रतिष्ठित हैं।

(२) (नय दृष्टि) ऋजुसूत्रनय की अपेक्षा से वे आकाश–प्रतिष्ठित है।

(३) (शुद्ध दृष्टि) शब्द, समभिरूढ तथा एवम्भूतनय की अपेक्षा से आत्म–प्रतिष्ठित हैं। क्योंकि शुद्ध नय की दृष्टि से प्रत्येक वस्तु अपने स्व–भाव मे ही रहती है।

**286.** *Narak* (hells) rest on three—(1) *prithvi-pratishthit* (resting on earth), (2) *akash-pratishthit* (resting in space), and (3) *atma-pratishthit* (resting on self).

(1) (Practically speaking) In context of *naigam, samgraha* and *vyavahar naya* (co-ordinated, generalized and particularized viewpoints) hells rest on earth

(2) (Momentarily speaking) In context of *rijusutra naya* (precisionistic viewpoint or that related to specific point or period of time) hells rest in space

(3) (Realistically speaking) In context of *shabd, samabhirudha* and *evambhoot naya* (verbal, conventional and etymological viewpoints) hells rest on self. This is because according to these realistic standpoints everything is dependent on itself and conform to its intrinsic nature.

**मिथ्यात्व-पद MITHYATVA-PAD (SEGMENT OF MISDEEDS)**

**२८७. तिविहे मिच्छत्ते पण्णत्ते, तं जहा—अकिरिया, अविणए, अण्णाणे।**

२८७. मिथ्यात्व तीन प्रकार का है-(१) अक्रियारूप, (२) अविनयरूप, और (३) अज्ञानरूप।

**287.** *Mithyatva* (misdeeds) are of three kinds—(1) *akriya rupa* (ignoble activity), (2) *avinaya rupa* (disrespect of sages), and (3) *ajnana rupa* (wrong knowledge)

**विवेचन**—यहाँ मिथ्यात्व का अभिप्राय विपरीत श्रद्धान रूप मिथ्यादर्शन नही है, किन्तु की जाने वाली क्रियाओं की अनुपयुक्तता से है। जो क्रियाएँ मोक्ष की साधक नही है उनका आचरण **अक्रिया मिथ्यात्व है।** सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र तथा उनके धारक पुरुषो की विनय नही करना **अविनय-मिथ्यात्व है।** सम्यग्ज्ञान के सिवाय शेष समस्त प्रकार का लौकिक ज्ञान **अज्ञान-मिथ्यात्व है।**

**Elaboration**—Here the term *mithyatva* does not convey the conventional meaning of wrong knowledge or unrighteousness Here it means improper activity or misdeed. Indulgence in activities that do not lead to liberation is *akriya mithyatva* or ignoble activity To show disrespect to sages who have attained right perception-knowledge-conduct is *avinaya mithyatva* Other than right knowledge all mundane knowledge is *ajnana mithyatva.*

**२८८. अकिरिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—पओगकिरिया, समुदाणकिरिया, अण्णाणकिरिया।**

२८८. **अक्रिया**-(दूषित क्रिया) तीन प्रकार की है-(१) प्रयोगक्रिया, (२) समुदानक्रिया, और (३) अज्ञानक्रिया।

**288.** *Akriya* (ignoble activity) is of three kinds—(1) *prayog kriya* (activity leading to *karmic* bondage), (2) *samudan kriya* (undergoing qualitative bondage), and (3) *ajnana kriya* (action out of ignorance).

**विवेचन**—मन, वचन और काय योग द्वारा कर्म-बन्ध कराने वाली प्रवृत्ति प्रयोग क्रिया है। कर्म-पुद्गलों का प्रकृतिबन्धादि रूप से आदान-समुदान क्रिया है। यही क्रिया जन्म-मरण की परम्परा का हेतु है। अज्ञान से की जाने वाली प्रवृत्ति अज्ञान क्रिया है।

**Elaboration**—Activity that leads to bondage of *karmas* through mind, speech and body association is *prayog kriya* Acquisition of *karmas* in the form of *prakriti bandha* (qualitative bondage) is *samudan kriya*; this is the process leading to cycles of rebirth. Action out of ignorance is *ajnana kriya*.

**२८९. पओगकिरिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—मणपओगकिरिया, वइपओगकिरिया, कायपओगकिरिया।**

२८९. (प्रवृत्ति रूप) प्रयोगक्रिया तीन प्रकार की है-(१) मन.प्रयोग क्रिया, (२) वचनप्रयोग क्रिया, और (३) कायप्रयोग क्रिया।

**289.** *Prayog kriya* (activity leading to *karmic* bondage) is of three kinds—(1) *Manah-prayog* (mental action), (2) *vachan-prayog* (vocal action), and (3) *kaya-prayog* (physical action)

**२९०. समुदाणकिरिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरसमुदाणकिरिया, परंपरसमुदाणकिरिया, तदुभयसमुदाणकिरिया।**

२९०. समुदानक्रिया तीन प्रकार की है-(१) अनन्तर-समुदानक्रिया, (२) परम्पर-समुदानक्रिया, और (३) तदुभय-समुदानक्रिया।

**290.** *Samudan kriya* (undergoing qualitative bondage) is of three kinds—(1) *anantar samudan kriya*, (2) *parampar samudan kriya*, and (3) *tadubhaya samudan kriya*

**विवेचन**-(१) बिना किसी व्यवधान के निरन्तर अशुभ एव दुष्ट क्रिया मे प्रवृत्ति करना **अनन्तर समुदानक्रिया** है। (२) कुछ काल व्यवधान के पश्चात् पुन उसी क्रिया मे प्रवृत्त होना **परम्पर समुदानक्रिया** है। (३) कभी व्यवधान के, कभी बिना व्यवधान के अशुभ कार्य मे प्रवृत्ति करना **तदुभय समुदानक्रिया** है। *(हिन्दी टीका, पृष्ठ ५५४)*

**Elaboration**—(1) To indulge in ignoble and evil activities continuously without a break is *anantar samudan kriya* (2) To indulge in ignoble and evil activities with breaks is *parampar samudan kriya*. (3) To indulge in ignoble and evil activities sometimes continuously and at others with a break is *tadubhaya* (both) *samudan kriya*. *(Hindi Tika, p 554)*

**२९१. अण्णाणकिरिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—मतिअण्णाणकिरिया, सुतअण्णाणकिरिया, विभंगअण्णाणकिरिया।**

**२९२. अविणए तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—देसच्चाई, णिरालंबणता, णाणापेज्जदोसे।**

**२९३. अण्णाणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—देसण्णाणे, सव्वण्णाणे, भावण्णाणे।**

२९१. अज्ञानक्रिया (मोक्ष मार्ग के विपरीत क्रिया) तीन प्रकार की है—(१) मति–अज्ञानक्रिया, (२) श्रुत–अज्ञानक्रिया, और (३) विभंग–अज्ञानक्रिया।

२९२. अविनय तीन प्रकार का है—(१) **देशत्यागी**—गुरु अथवा स्वामी आदि की सेवा करने के डर से देश को छोडकर चले जाना। (२) **निरालम्बन**—गच्छ या कुटुम्ब को छोड देना या उससे अलग हो जाना। (३) **नानाप्रेयोद्वेषी**—उपकारीजनो से द्वेष तथा असज्जनो से राग करना।

२९३. अज्ञान तीन प्रकार का है—(१) **देश–अज्ञान**—ज्ञातव्य वस्तु के किसी एक अश को न जानना। (२) **सर्व–अज्ञान**—ज्ञातव्य वस्तु को सर्वथा समग्र रूप मे नही जानना। (३) **भाव–अज्ञान**—विपरीत दृष्टि के कारण मिथ्यादृष्टि का ज्ञान।

**291.** *Ajnana kriya* (action out of ignorance or going against the path of liberation is of three kinds—(1) *mati-ajnana kriya* (related to sensory knowledge), (2) *shrut-ajnana kriya* (related to scriptural knowledge), and (3) *vibhang-ajnana kriya* (related to pervert knowledge).

**292.** *Avinaya* (disrespect of sages) is of three kinds—(1) *desh-tyagi*—to abscond from the country for fear of serving the guru or master, (2) *niralamban*—to abandon or severe ties with religious organization or family, and (3) *nanaprayodveshi*—to have aversion for benefactors and attachment for rogues

**293.** *Ajnana* (ignorance) is of three kinds—(1) *desh-ajnana*—to know a thing partially, (2) *sarva-ajnana*—to be completely ignorant of a thing in every context, and (3) *bhaava-ajnana*—to have false knowledge because of antithetical viewpoint

### धर्म–पद DHARMA-PAD (SEGMENT OF VIRTUES)

**२९४. तिविहे धम्मे पण्णत्ते, तं जहा—सुयधम्मे, चरित्तधम्मे, अत्थिकायधम्मे।**

२९४. धर्म तीन प्रकार का है—(१) **श्रुत–धर्म**—(शास्त्रो का स्वाध्याय करना), (२) **चारित्र–धर्म**—(सयम का परिपालन करना), (३) **अस्तिकाय–धर्म**—प्रदेश वाले द्रव्यो को अस्तिकाय कहते हैं और उनके स्वभाव को अस्तिकाय–धर्म कहा जाता है।

**294.** *Dharma* (inherent or absorbed virtues) are of three kinds—(1) *Shrut dharma* (to study the canon and scriptures), (2) *chaaritra dharma* (observation of ascetic-discipline), and (3) *astikaya dharma* (entities with conglomerate of units of space, matter etc. are called *astikaya*; their intrinsic nature is called *astikaya dharma*).

**उपक्रम-पद UPAKRAM-PAD (SEGMENT OF COMMENCEMENT)**

**२९५. तिविहे उवक्कमे पण्णत्ते, तं जहा—धम्मिए उवक्कमे, अधम्मिए उवक्कमे, धम्मियाऽधम्मिए उवक्कमे।**

**अहवा—तिविहे उवक्कमे पण्णत्ते, तं जहा—आओवक्कमे, परोवक्कमे, तदुभयोवक्कमे।**

२९५. **उपक्रम**—(उपायपूर्वक कार्य का आरम्भ करना) तीन प्रकार का है—(१) **धार्मिक-उपक्रम**—श्रुत और चारित्ररूप धर्म की प्राप्ति के लिए प्रयास करना। (२) **अधार्मिक-उपक्रम**—असंयमवर्धक आरम्भ-कार्य करना। (३) **धार्मिकाधार्मिक-उपक्रम**—संयम और असंयमरूप कार्य करना।

अथवा उपक्रम तीन प्रकार का है—(१) **आत्मोपक्रम**—अपनी आत्म-शक्ति के विकास के लिए प्रयत्न करना। (२) **परोपक्रम**—दूसरों के लिए प्रयत्नशील होना। (३) **तदुभयोपक्रम**—अपने और दूसरो के लिए कार्य करना। *(उपक्रम का विस्तृत वर्णन अनुयोगद्वार, भाग १, पृष्ठ ११६ पर देखे)*

**295.** *Upakram* (to commence with necessary preparation) is of three kinds—(1) *dharmik upakram* (to commence efforts to follow religion of scriptures and right conduct), (2) *adharmik upakram* (to commence indisciplined and sinful activity), and (3) *dharmik-adharmik upakram* (to commence both disciplined and indisciplined activity)

Also *upakram* is of three kinds—(1) *atmopakram*—to commence efforts for one's spiritual uplift, (2) *paropakram*—to commence altruistic activity, and (3) *tadubhayopakram*—to do that for both, self and others *(for more details about upakram refer to Illustrated Anuyogadvar Sutra, Part 1, p. 116)*

**वैयावृत्यादि-पद VAIYAVRITYA-PAD (SEGMENT OF SERVICE)**

**२९६. एवं वेयावच्चे। अणुग्गहे। २९७. अणुसट्ठी। उवालंभे एवमेक्केके तिन्नि आलावगा जहेव उवक्कमे।**

२९६. इसी प्रकार **वैयावृत्य**—(सेवा तीन प्रकार की है—(१) आत्मवैयावृत्य, (२) पर-वैयावृत्य, और (३) तदुभयवैयावृत्य। **अनुग्रह** (उपकार) तीन प्रकार का है। २९७. अनुशिष्टि (अनुशासन) तीन प्रकार का है—(१) **आत्मानुशिष्टि**—(आत्मा पर अनुशासन), (२) **परानुशिष्टि**—दूसरो को हित शिक्षा देना), और (३) तदुभयानुशिष्टि। उपालम्भ (उलाहना) भी तीन प्रकार का है। एक-एक के तीन आलापक उपक्रम की तरह समझना चाहिए।

**296.** In the same way *vaiyavritya* (service) is of three kinds—(1) *atma-vaiyavritya* (service of self), (2) *par-vaiyavritya* (service of

others), and (3) *tadubhaya-vaiyavritya* (service of both self and others). *Anugraha* (help or favour) is of three kinds. **297.** *Anushisht* (discipline) is of three kinds—(1) *atma-anushist* (discipline of self), (2) *par-anushist* (to inspire others towards discipline), and (3) *tadubhaya-anushist* (work for discipline of both self and others) *Upalambh* (reproach or complaint) is also of three kinds The pattern of three readings of *upakram* should be followed for each of these

### त्रिवर्ग पद TRIVARG-PAD (SEGMENT OF THREE CLASSES)

**२९८. तिविहा कहा पण्णत्ता, तं जहा—अत्थकहा, धम्मकहा, कामकहा।**

**२९९. तिविहे विणिच्छए पण्णत्ते, तं जहा—अत्थविणिच्छए, धम्मविणिच्छए, कामविणिच्छए।**

२९८. कथा तीन प्रकार की है-(१) अर्थकथा, (२) धर्मकथा, और (३) कामकथा।

२९९. विनिश्चय (कारणो की मीमासा) तीन प्रकार का है-(१) अर्थ-विनिश्चय-(अर्थ सम्बन्धी), (२) धर्म-विनिश्चय-(धर्म सम्बन्धी), और (३) काम-विनिश्चय-(काम भोग-सम्बन्धी)।

**298.** *Katha* (story or discourse) is of three kinds—(1) *arth katha* (discourse about money), (2) *dharma katha* (discourse about religion), and (3) *kama katha* (discourse about carnal pleasures)

**299.** *Vinishchaya* (analysis of reasons) is of three kinds—(1) *arth vinishchaya* (related to money), (2) *dharma vinishchaya* (related to religion), and (3) *kama vinishchaya* (related to carnal pleasures)

### श्रमण-उपासना-फल FRUITS OF ASCETIC PRACTICE

**३००. तहारूवं णं भंते ! समणं वा माहणं वा पज्जुवासमाणस्स किं फला पज्जवासणया ? सवणफला।**

**से णं भंते सवणे किं फले ? णाणफले।**

**से णं भंते णाणे किं फले ? विण्णाणफले।**

**[ से णं भंते ! विण्णाणे किं फले ? पच्चक्खाणफले।**

**से णं भंते ! पच्चक्खाणे किं फले ? संजमफले।**

**से णं भंते ! संजमे किं फले ? अणण्हयफले।**

**से णं भंते ! अणण्हए किं फले ? तवफले।**

**से णं भंते ! तवे किं फले ? वोदाणफले।**

**से णं भंते ! वोदाणे किं फले ? अकिरियफले ]।**

**से णं भंते ! अकिरिया किं फला ? णिव्वाणफला।**

**से णं भंते ! णिव्वाणे किं फले ? सिद्धिगइ–गमण–पज्जवसाण–फले समणाउसो !**

३००. (प्रश्न)–तथारूप श्रमण–माहन की पर्युपासना करने का क्या फल है? (उत्तर)–आयुष्मन् ! पर्युपासना का फल धर्म–श्रवण है।

(प्रश्न)–भन्ते ! धर्म–श्रवण का क्या फल है? (उत्तर)–धर्म–श्रवण का फल ज्ञान–प्राप्ति है।

(प्रश्न)–भन्ते ! ज्ञान–प्राप्ति का क्या फल है? (उत्तर)–ज्ञान–प्राप्ति का फल विज्ञान (हेय–उपादेय का विवेक) है।

[(प्रश्न)–भते ! विज्ञान का क्या फल है? (उत्तर)–विज्ञान–प्राप्ति का फल प्रत्याख्यान (पाप का त्याग करना) है।

(प्रश्न)–भन्ते ! प्रत्याख्यान का क्या फल है? (उत्तर)–प्रत्याख्यान का फल सयम है।

(प्रश्न)–भन्ते ! संयम का क्या फल है? (उत्तर)–संयम–धारण का फल अनास्रव (कर्मों के आस्रव का निरोध) है।

(प्रश्न)–भन्ते ! अनास्रव का क्या फल है? (उत्तर)–अनास्रव का फल तप है।

(प्रश्न)–भन्ते ! तप का क्या फल है? (उत्तर)–तप का फल व्यवदान (कर्म–निर्जरा) है।

(प्रश्न)–भन्ते ! व्यवदान का क्या फल है? (उत्तर)–व्यवदान का फल अक्रिया अर्थात् मन–वचन–काय की हलन–चलन रूप क्रिया या प्रवृत्ति का पूर्ण निरोध है।]

(प्रश्न)–भन्ते ! अक्रिया का क्या फल है? (उत्तर)–अक्रिया का फल निर्वाण है।

(प्रश्न)–भन्ते ! निर्वाण का क्या फल है? (उत्तर)–निर्वाण का फल सिद्धगति को प्राप्त कर ससार–परिभ्रमण का अन्त करना है।

॥ तृतीय उद्देशक समाप्त ॥

**300.** (Question) *Bhante* ! What is the fruit of *paryupasana* (ascetic practices) done by a *tatharupa Shraman-mahan* (Jain ascetic as described in the scriptures) ? (Answer) "Long lived one ! The fruit of ascetic practices is *dharma shravan* (listening to the sermon).

(Question) *Bhante* ! What is the fruit of *dharma shravan* ? (Answer) The fruit of *dharma shravan* is *jnana prapti* (acquisition of knowledge)

(Question) *Bhante* ! What is the fruit of *jnana prapti* ? (Answer) The fruit of *jnana prapti* is *vijnana* (capacity to discern between acceptable and rejectable).

[(Question) *Bhante* ! What is the fruit of *vijnana* ? (Answer) The fruit of *vijnana* is *pratyakhyan* (to renounce sinful activity)

(Question) *Bhante* ! What is the fruit of *pratyakhyan* ? (Answer) The fruit of *pratyakhyan* is *samyam* (discipline)

(Question) *Bhante* ! What is the fruit of *samyam* ? (Answer) The fruit of *samyam* is *anasrava* (blockage of inflow of *karmas*)

(Question) *Bhante* ! What is the fruit of *anasrava* ? (Answer) The fruit of *anasrava* is *tap* (austerities)

(Question) *Bhante* ! What is the fruit of *tap* ? (Answer) The fruit of *tap* is *vyavadan* (shedding of *karmas*).

(Question) *Bhante* ! What is the fruit of *vyavadan* ? (Answer) The fruit of *vyavadan* is *akriya* (complete cessation of all activity and inclination of mind, speech and body) ]

(Question) *Bhante* ! What is the fruit of *akriya* ? (Answer) The fruit of *akriya* is *nirvana*

(Question) *Bhante* ! What is the fruit of *nirvana* ? (Answer) The fruit of *nirvana* is to attain the state of *Siddha* and terminate cycles of rebirth

**● END OF THE THIRD LESSON ●**

## उपासना का फल

चित्र परिचय ११

Illustration No. 11

## उपासना का फल

श्रमण माहन-(गुरुजनो की सेवा का फल क्रमश इस प्रकार मिलता है-

(१) उनसे धर्म श्रवण का लाभ मिलता है।

(२) धर्म सुनने से ज्ञान की प्राप्ति होती है।

(३) प्राप्त ज्ञान का चिन्तन-मनन करने से हेय-उपादेय का विशेष ज्ञान होता है।

(४) हेय-उपादेय का ज्ञान होने पर प्रत्याख्यान की भावना जगती है।

(५) प्रत्याख्यान करते हुए पूर्ण सयम की भी प्राप्ति होती है।

(६) सयम करने वाला कर्मो के आस्रवो का निरोध कर सवर को प्राप्त होता है।

(७) सवर से तप की सिद्धि होती है।

(८) तप से पूर्व सचित कर्मो का क्षय होने लगता है।

(९) कर्म-क्षय करने का अन्तिम फल है सर्व क्रियाओं का निरोध कर निर्वाण की प्राप्ति। चित्र की नौ आकृतियो मे क्रमश उपासना का फल बताया है।

*स्थान ३, सूत्र ३००*

## FRUITS OF ASCETIC SERVICE

The fruits of serving ascetics follow the following sequence--

(1) The fruit of serving ascetics is the opportunity of listening to the sermon (*dharma shravan*)

(2) The fruit of *dharma shravan* is acquisition of knowledge (*jnana*)

(3) On contemplating and pondering over the acquired knowledge capacity to discern between acceptable and rejectable is acquired (*vijnana*)

(4) The fruit of *vijnana* is *pratyakhyan* (to renounce sinful activity)

(5) The fruit of *pratyakhyan* is *samyam* (discipline)

(6) The fruit of *samyam* is *anasrava* or *samvar* (blockage of inflow of *karmas*)

(7) The fruit of *anasrava* is *tap* (austerities)

(8) The fruit of *tap* is *vyavadan* (shedding of *karmas*)

(9) The fruit of *vyavadan* is *akriya* (complete cessation of all activity and inclination of mind, speech and body) leading to *nirvana* The nine illustrations show these fruits

*—Sthaan 3, Sutra 300*

## चतुर्थ उद्देशक
## FOURTH LESSON

*प्रतिमा-पद* **PRATIMA-PAD (SEGMENT OF SPECIAL ASCETIC-CODES)**

**३०१. पडिमापडिवण्णस्स णं अणगारस्स कप्पंति तओ उवस्सया पडिलेहित्तए, तं जहा—अहे आगमणगिहंसि वा, अहे वियडगिहंसि वा, अहे रुक्खमूलगिहंसि वा। ३०२. एवं अणुण्णवेत्तए। ३०३. एवं उवाइणित्तए।**

३०१. प्रतिमा-प्रतिपन्न-(मासिकी आदि प्रतिमाओ को धारण करने वाले) अनगार को तीन प्रकार के उपाश्रयो का प्रतिलेखन-(निवास के लिए) करना कल्पता है।

(१) **आगमनगृह**—यात्रियो के ठहरने का स्थान, प्याऊ, धर्मशाला, सराय आदि। (२) **विवृतगृह**—अनाच्छादित-ऊपर से ढका एक-दो या चारो ओर से खुला। (३) **वृक्षमूलगृह**—वृक्ष के नीचे या वहाँ बनी पर्णकुटी आदि।

३०२. इसी प्रकार उक्त तीन प्रकार के उपाश्रयो की अनुज्ञा (उनके स्वामियों की आज्ञा या स्वीकृति) लेनी चाहिए। ३०३. आज्ञा लेकर उक्त तीन प्रकार के उपाश्रयो मे रहना चाहिए।

**301.** *Pratima-pratipanna* (observer of special codes and resolutions for an ascetic) *anagar* (homeless ascetic) should inspect (*pratilekhan*) three kinds of *upashrayas* (places of stay for ascetics) They are—

(1) *Aagaman-griha*—place of stay for travelers, *pyau* (water-hut), *dharmashala* (rest-house for pilgrims), *saraya* (inn) etc. (2) *Vivrit-griha*—a covered place open from one, two or all sides. (3) *Vrikshamula-griha*—abode under a tree or a hut under a tree.

**302.** In the same way he should seek permission for stay from the owner of aforesaid three kinds of places. **303** After that he should stay at aforesaid three kinds of places

**३०४. पडिमापडिवण्णस्स णं अणगारस्स कप्पंति तओ संथारगा पडिलेहित्तए, तं जहा—पुढविसिला, कट्ठसिला, अहासंथडमेव। ३०५. एवं अणुण्णवेत्तए। ३०६. एवं उवाइणित्तए।**

३०४. प्रतिमा-प्रतिपन्न अनगार को तीन प्रकार के संस्तारकों (बैठने-सोने का आसन) का प्रतिलेखन करना कल्पता है।

(१) **पृथ्वीशिला**—समतल भूमि या पाषाण-शिला। (२) **काष्ठशिला**—काठ का समतल भाग, तख्त आदि। (३) **यथासंस्तृत**—घास, पलाल आदि जो उपयोग के योग्य हो।

३०५. इसी प्रकार उक्त तीन प्रकार के संस्तारको की अनुज्ञा लेना चाहिए। ३०६. उक्त तीन प्रकार के सस्तारकों का उपयोग करना कल्पता है।

**304.** *Pratima-pratipanna anagar* (ascetic observing special codes) should inspect (*pratilekhan*) three kinds of *samstarak* (seat or bed). They are—

(1) *Prithvishila*—level land or rock (2) *Kashth shila*—flat block or plank of wood (3) *Yathasamsrit*—hay, straw or other such suitable things.

**305.** In the same way he should seek permission for use from the owner of aforesaid three kinds of seat or bed. **306.** After that he should use aforesaid three kinds of seat or bed

## काल–पद KAAL-PAD (SEGMENT OF TIME)

**३०७. तिविहे काले पण्णत्ते, तं जहा–तीए, पडुप्पण्णे, अणागए। ३०८. तिविहे समए पण्णत्ते, तं जहा–तीए, पडुप्पण्णे, अणागए। ३०९. एवं आवलिया आणापाणू थोवे लवे मुहुत्ते अहोरत्ते जाव वाससतसहस्से पुव्वंगे पुव्वे जाव ओसप्पिणी। ३१०. तिविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तं जहा–तीते, पडुप्पण्णे, अणागए।**

३०७. काल तीन प्रकार का है–(१) अतीत (भूतकाल), (२) प्रत्युत्पन्न (वर्तमान) काल, और (३) अनागत (भविष्य) काल। ३०८. समय तीन प्रकार का है–(१) अतीत, (२) वर्तमान, और (३) अनागत। ३०९. आवलिका, आन–प्राण (श्वासोच्छ्वास) स्तोक, लव, मुहूर्त्त, अहोरात्र (दिन–रात) यावत् लाख वर्ष, पूर्वांग, पूर्व यावत् अवसर्पिणी सभी तीन–तीन प्रकार का जानना चाहिए। ३१०. पुद्गल–परावर्त तीन प्रकार का है–(१) अतीत–पुद्गल–परावर्त, (२) प्रत्युत्पन्न–पुद्गल–परावर्त, और (३) अनागत–पुद्गल–परावर्त। *(विस्तृत वर्णन के लिए अनुयोगद्वारसूत्र, भाग २, सूत्र ५३२ तथा हिन्दी टीका, पृष्ठ ५५० देखे)*

**307.** *Kaal* (time) is of three kinds—(1) *ateet kaal* (past), (2) *pratyutpanna kaal* (present), and (3) *anaagat kaal* (future). **308.** *Samaya* (smallest fraction of time) is of three kinds—(1) past, (2) present, and (3) future **309.** In the same way *Avalika, Aan-pran* (inhalation-exhalation), *Lava, Muhurt, Ahoratra* (day and night), and so on up to. *Varshashatsahasra, Purvanga* and *Purva*.. and so on up to *Avasarpini* and *Utsarpini* should be read as of aforesaid three kinds. **310.** *Pudgal paravart* (a hypothetical unit of time) is of three kinds—(1) past *Pudgal paravart*, (2) present *Pudgal paravart*, and (3) future *Pudgal paravart* *(for details of Pudgal paravart refer to Anuyogadvar Sutra, Part 2, aphorism 532 and Hindi Tika, p 550)*

**वचन–पद VACHAN-PAD (SEGMENT OF GRAMMATICAL NUMBER, GENDER AND TENSE)**

**३११. तिविहे वयणे पण्णत्ते, तं जहा—एगवयणे, दुवयणे, बहुवयणे।**

**अहवा—तिविहे वयणे पण्णत्ते, तं जहा—इत्थिवयणे, पुंवयणे, णपुंसगवयणे।**

**अहवा—तिविहे वयणे पण्णत्ते, तं जहा—तीतवयणे, पडुप्पण्णवयणे, अणागयवयणे।**

३११. वचन के तीन प्रकार हैं–एकवचन, द्विवचन और बहुवचन।

अथवा वचन के तीन प्रकार हैं–स्त्रीवचन, पुरुषवचन और नपुसकवचन।

अथवा वचन के तीन प्रकार है–अतीत–वचन, प्रत्युत्पन्न–वचन और अनागत–वचन।

**311.** *Vachan* (grammatical number) is of three kinds—*ek-vachan* (singular), *dvi-vachan* (dual), and *bahu-vachan* (plural)

Also *vachan* (grammatical gender) is of three kinds—*stree-vachan* (feminine gender), *purush-vachan* (masculine gender), and *napumsak-vachan* (neuter gender)

Also *vachan* (grammatical tense) is of three kinds—*ateet-vachan* (past tense), *pratyutpanna-vachan* (present tense), and *anaagat-vachan* (future tense)

**प्रज्ञापना–सम्यक्–पद PRAJNAPANA-SAMYAK-PAD (SEGMENT OF EXPLANATION)**

**३१२. तिविहा पण्णवणा पण्णत्ता, तं जहा—णाणपण्णवणा, दंसणपण्णवणा, चरित्तपण्णवणा।**

**३१३. तिविहे सम्मे पण्णत्ते, तं जहा—णाणसम्मे, दंसणसम्मे, चरित्तसम्मे।**

३१२. प्रज्ञापना (प्ररूपणा–विवेचन) तीन प्रकार की है–(१) ज्ञान की प्रज्ञापना, (२) दर्शन की प्रज्ञापना, और (३) चारित्र की प्रज्ञापना।

३१३. सम्यक् (मोक्ष–प्राप्ति के अनुकूल साधन) तीन प्रकार का है–(१) ज्ञान–सम्यक्, (२) दर्शन–सम्यक्, और (३) चारित्र–सम्यक्।

**312.** *Prajnapana* (explanation or elaboration) is of three kinds—(1) *jnana-prajnapana* (elaboration related to knowledge), (2) *darshan-prajnapana* (elaboration related to perception/faith), and (3) *chaaritra-prajnapana* (elaboration related to conduct)

**313.** *Samyak* (right; means of liberation) is of three kinds—(1) *jnana-samyak* (that related to knowledge), (2) *darshan samyak* (that related to perception/faith), and (3) *chaaritra-samyak* (that related to conduct).

## विशोधि–पद VISHODHI-PAD (SEGMENT OF EXPIATION)

**३१४. तिविहे उवघाते पण्णत्ते, तं जहा—उग्गमोवघाते, उप्पायणोवघाते, एसणोवघाते।**

३१४. उपघात (दोष) तीन प्रकार का है—

(१) उद्गम–उपघात—आहार की निष्पत्ति से सम्बन्धित भिक्षा–दोष, जो दाता–गृहस्थ के द्वारा किया जाता है।

(२) उत्पादन–उपघात—आहार के ग्रहण करने से सम्बन्धित भिक्षा–दोष, जो साधु द्वारा किया जाता है।

(३) एषणा–उपघात—आहार लेने के समय होने वाला भिक्षा–दोष, जो साधु और गृहस्थ दोनों के द्वारा किया जाता है।

**314.** *Upaghat* (fault) is of three kinds—

(1) *Udgam-upaghat*—origin related fault in alms, committed by a donor

(2) *Utpadan-upaghat*—fault related to taking alms, committed by an ascetic

(3) *Eshana-upaghat*—fault committed by both donor and seeker during process of alms giving and alms taking

**३१५. एवं तिविहा विसोही पण्णत्ता [ तं जहा—उग्गमविसोही, उप्पायणविसोही, एसणाविसोही ]।**

३१५. इसी प्रकार विशोधि उक्त तीन प्रकार की है–[ (१) उद्गम–विशोधि–उद्गम–सम्बन्धी भिक्षा दोषो की निवृत्ति। (२) उत्पादन–विशोधि–उत्पादन–सम्बन्धी भिक्षा–दोषो की निवृत्ति। (३) एषणा–विशोधि–गोचरी–सम्बन्धी दोषो की निवृत्ति।]

**315.** In the same way *vishodhi* (expiation of faults) is of three kinds—(1) *Udgam-vishodhi*—expiation of origin related fault in alms, committed by a donor (2) *Utpadan-vishodhi*—expiation of fault related to taking alms, committed by an ascetic (3) *Eshana-vishodhi*—expiation of fault committed by both donor and seeker during alms giving

## आराधना–पद ARADHANA-PAD (SEGMENT OF ENDEAVOUR FOR LIBERATION)

**३१६. तिविहा आराहणा पण्णत्ता, तं जहा—णाणाराहणा, दंसणाराहणा, चरित्ताराहणा।**

**३१७. णाणाराहणा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा। ३१८. एवं दंसणाराहणा। ३१९. एवं चरित्ताराहणा।**

३१६. आराधना तीन प्रकार की है–(१) ज्ञान–आराधना, (२) दर्शन–आराधना, और (३) चारित्र–आराधना।

३१७. ज्ञान–आराधना तीन प्रकार की है–(१) उत्कृष्ट, (२) मध्यम, और (३) जघन्य। ३१८. इसी तरह दर्शन–आराधना। और ३१९. चारित्र–आराधना तीन प्रकार की है।

**316.** *Aradhana* (endeavour) is of three kinds—(1) *jnana-aradhana* (endeavour related to knowledge), (2) *darshan-aradhana* (endeavour related to perception/faith), and (3) *chaaritra-aradhana* (endeavour related to conduct).

**317.** *Jnana-aradhana* (endeavour related to knowledge) is of three kinds—(1) *utkrisht* (best), (2) *madhyam* (average), and (3) *jaghanya* (minimum). The same is true for **318.** *darshan-aradhana* (endeavour related to perception/faith), and **319.** *chaaritra-aradhana* (endeavour related to conduct).

**विवेचन**–आराधना अर्थात् मोक्ष मार्ग के अनुकूल आचरण। स्वाध्याय काल मे ज्ञानाराधना के आठों अंगो का निरतिचार पालन करना **उत्कृष्ट ज्ञानाराधना** है। किसी दो–एक अग के बिना ज्ञानाभ्यास करना **मध्यम ज्ञानाराधना** है। सातिचार ज्ञानाभ्यास करना **जघन्य ज्ञानाराधना** है। इसी प्रकार निरतिचार सम्यग्दर्शन को धारण करना उत्कृष्ट दर्शनाराधना है। दो–एक अग के बिना सम्यक्त्व को धारण करना मध्यम दर्शनाराधना है। सातिचार सम्यक्त्व को धारण करना जघन्य दर्शनाराधना है। चारित्र का निरतिचार परिपालन करना उत्कृष्ट चारित्राराधना है। कुछ हीन चारित्र का पालन करना मध्यम चारित्राराधना है और सातिचार चारित्र का पालन करना जघन्य चारित्राराधना है। *(इस सम्बन्ध मे भगवतीसूत्र, शतक ८ मे विस्तृत वर्णन है)*

**Elaboration**—*Aradhana* means endeavour aimed at liberation. To strictly adhere to the eight codes of the prescribed procedure of learning during the allotted time of studies, avoiding any possible transgressions or faults, is best or excellent endeavour related to knowledge Studies adhering to one or two codes short of the prescribed eight codes of the procedure of learning is average endeavour related to knowledge Committing transgressions during studies is minimum endeavour related to knowledge. In the same way to observe right perception/faith avoiding any possible transgressions or faults is best endeavour related to right perception/faith. To observe adhering to one or two codes short of the prescribed procedure is average endeavour related to perception/faith. Committing transgressions during observation is minimum endeavour related to perception/faith. In the same way to observe right conduct avoiding any possible transgressions or faults is best endeavour related to conduct. To observe right conduct with very little faults is average endeavour related to conduct. Committing

transgressions during observation is minimum endeavour related to conduct *(for detailed discussion refer to Bhagavati Sutra, Shatak 8)*

### संक्लेश–असंक्लेश–पद SANKLESH-ASANKLESH-PAD (SEGMENT OF PERTURBED AND UNPERTURBED STATE OF MIND)

**३२०. तिविहे संकिलेसे पण्णत्ते, तं जहा—णाणसंकिलेसे, दंसणसंकिलेसे, चरित्तसंकिलेसे। ३२१. [तिविहे असंकिलेसे पण्णत्ते, तं जहा—णाणअसंकिलेसे, दंसणअसंकिलेसे, चरित्तअसंकिलेसे।]**

३२०. संक्लेश तीन प्रकार का है—(१) ज्ञान-संक्लेश, (२) दर्शन-संक्लेश, और (३) चारित्र-संक्लेश। [३२१. असंक्लेश भी तीन प्रकार का है—(१) ज्ञान-असंक्लेश, (२) दर्शन-असंक्लेश, और (३) चारित्र-असंक्लेश।]

**320.** *Sanklesh* (perturbed state of mind) is of three kinds—(1) *jnana-sanklesh* (that related to knowledge), (2) *darshan-sanklesh* (that related to perception/faith), and (3) *chaaritra-sanklesh* (that related to conduct) **321.** [*Asanklesh* (unperturbed state of mind) is of three kinds—(1) *jnana-asanklesh* (that related to knowledge), (2) *darshan-asanklesh* (that related to perception/faith), and (3) *chaaritra-asanklesh* (that related to conduct).]

विवेचन—कषायो की तीव्रता से उत्पन्न होने वाली मन की मलिनता को संक्लेश तथा कषायो की मन्दता से होने वाली मन की विशुद्धि को असंक्लेश कहते हैं।

**Elaboration**—Perturbed state of mind caused by intense passions and leading to spiritual impurity is called *sanklesh* Unperturbed state of mind caused by mild passions and leading to spiritual purity is called *asanklesh*

### अतिक्रमादि–पद ATIKRAMADI-PAD (SEGMENT OF VIOLATION ETC.)

**३२२. एवं अतिक्कमे वि। ३२३. वइक्कमे वि। ३२४. अइयारे वि। ३२५. अणायारे वि।**

३२२. अतिक्रम तीन प्रकार का है—(१) ज्ञान-अतिक्रम (२) दर्शन-अतिक्रम, और (३) चारित्र-अतिक्रम। ३२३. इसी प्रकार व्यतिक्रम भी तीन प्रकार का है। ३२४. अतिचार भी तीन प्रकार का है। ३२५. अनाचार भी तीन प्रकार का है।

**322.** *Atikram* (thought of violation) is of three kinds—(1) *jnana-atikram* (that related to knowledge), (2) *darshan-atikram* (that related to perception/faith), and (3) *chaaritra-atikram* (that related to conduct). In the same way **323.** *vyatikram* (preparation for violation, **324.** *atichaar* (mild transgression, and **325.** *anachaar* (total violation) are also of the aforesaid three kinds each

**विवेचन**—ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आगम विहित आराधना के प्रतिकूल आचरण करने का मन में विचार आना अतिक्रम है। इसके पश्चात् प्रतिकूल आचरण का प्रयास करना व्यतिक्रम है। इससे आगे बढ़कर आंशिक रूप में विरुद्ध आचरण करना अतिचार और पूर्ण रूप से व्रत की विराधना या दोष का सेवन अनाचार कहा जाता है।

**Elaboration**—To think of violating the procedure of endeavour related to right knowledge, perception/faith and conduct prescribed in *Agams* is called *atikram*. After this to make efforts of violating is called *vyatikram* Then partial violation is *atichaar* and complete violation of the codes and vows is *anachaar*.

**३२६. तिण्हमतिक्कमाणं—अलोएज्जा, पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरहेज्जा, जाव पडिवज्जेज्जा, तं जहा—णाणातिक्कमस्स, दंसणातिक्कमस्स, चरित्तातिक्कमस्स। ३२७. एवं वइक्कमाणं वि। ३२८. एवं अइयाराणं। ३२९. अणायाराणं।**

३२६. ज्ञानातिक्रम, दर्शनातिक्रम और चारित्रातिक्रम, इन तीनों प्रकार के अतिक्रमों की आलोचना करनी चाहिए, प्रतिक्रमण करना चाहिए, निन्दा करनी चाहिए, गर्हा करनी चाहिए, दोषो की निवृत्ति के लिए यथोचित प्रायश्चित्त एवं तप कर्म स्वीकार करना चाहिए। ३२७. इसी प्रकार इन तीनों प्रकार के व्यतिक्रमों की। ३२८. तीनो प्रकार के अतिचारों की, और ३२९. उक्त तीनो प्रकारो के अनाचारो की आलोचना आदि करनी चाहिए।

**326.** One should criticize (*alochana*), do critical review (*pratikraman*), reprove (*ninda*), reproach (*garha*)... and so on up to and accept suitable atonement and penance for committing the three kinds of aforesaid *atikram*, *i.e jnana-atikram*, *darshan-atikram* and *chaaritra-atikram* The same should be done for committing, **327.** *vyatikram*, **328.** *atichaar*, and **329.** *anachaar*.

### *प्रायश्चित्त-पद* PRAYASHCHIT-PAD (SEGMENT OF ATONEMENT)

**३३०. तिविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा—आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे।**

३३०. प्रायश्चित्त तीन प्रकार का है–(१) आलोचना के योग्य, (२) प्रतिक्रमण के योग्य, और (३) तदुभय (आलोचना और प्रतिक्रमण) के योग्य।

**330.** *Prayashchit* (atonement) is of three kinds—(1) requiring *alochana* (criticism), (2) requiring *pratikraman* (critical review), and (3) *tadubhaya* (requiring both *alochana* and *pratikraman*).

**विवेचन**—भिक्षाचर्या आदि मे लगे दोषो को सरल भाव से गुरु के समक्ष प्रकट करना आलोचना है। 'मिच्छामि दुक्कडं' लेना प्रतिक्रमण है। आलोचना और प्रतिक्रमण दोनों करने को तदुभय कहते हैं।

**Elaboration**—*Alochana* means to reveal frankly the faults committed during alms collection and other such routine activity. To earnestly wish '*michchhami dukkadam*' (may my improper actions be without consequence or may my faults be undone) after a critical review of faults is *pratikraman* To do both is *tadubhaya*

### अकर्मभूमि-पद AKARMA-BHUMI-PAD (SEGMENT OF LAND OF NO WORK)

**३३१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं तओ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—हेमवते, हरिवासे, देवकुरा। ३३२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं तओ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उत्तरकुरा, रम्मगवासे, हेरण्णवए।**

३३१. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण भाग में तीन अकर्मभूमियाँ है (यहाँ युगलिया रहते हैं)-(१) हैमवत, (२) हरिवर्ष, और (३) देवकुरु। ३३२. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के उत्तर भाग मे तीन अकर्मभूमियाँ है-(१) उत्तरकुरु, (२) रम्यक्वर्ष, और (३) हैरण्यवत।

**331.** In Jambu continent, to the south of Mandar mountain, there are three *akarma-bhumis* (where *yugaliyas* or twins, growing to be mates, live) namely—(1) Haimavat, (2) Harivarsh, and (3) Devakuru **332.** In Jambu continent, to the north of Mandar mountain, there are three *akarma-bhumis*—(1) Uttar-kuru, (2) Ramyak-varsh, and (3) Hairanyavat

### वर्ष-(क्षेत्र)-पद VARSH-PAD (SEGMENT OF VARSH)

**३३३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं तओ वासा पण्णत्ता, तं जहा—भरहे, हेमवए, हरिवासे। ३३४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं तओ वासा पण्णत्ता, तं जहा—रम्मगवासे, हेरण्णवते, एरवए।**

३३३. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण भाग मे तीन वर्ष (क्षेत्र) है-(१) भरत, (२) हैमवत, और (३) हरिवर्ष। ३३४. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के उत्तर भाग मे तीन वर्ष है-(१) रम्यक्वर्ष, (२) हैरण्यवत, और (३) ऐरवत।

**333.** In Jambu continent, to the south of Mandar mountain, there are three *Varshas* (land areas of sub-continental size)—(1) Bharat, (2) Haimavat, and (3) Harivarsh. **334.** In Jambu continent, to the north of Mandar mountain, there are three *Varshas*—(1) Ramyak-varsh, (2) Hairanyavat, and (3) Airavat.

### वर्षधर-पर्वत-पद VARSHDHAR-PARVAT-PAD (SEGMENT OF VARSHADHAR MOUNTAIN)

**३३५. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं तओ वासहरपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—चुल्लहिमवंते, महाहिमवंते, णिसढे। ३३६. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं तओ वासहरपव्वत्ता पण्णत्ता, तं जहा—णीलवंते, रुप्पी, सिहरी।**

३३५. जम्बूद्वीप द्वीप में मन्दर पर्वत के दक्षिण भाग मे तीन वर्षधर पर्वत हैं-(१) चुल्लहिमवान्, (२) महाहिमवान्, और (३) निषधपर्वत। ३३६. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के उत्तर भाग मे तीन वर्षधर पर्वत हैं-(१) नीलवान्, (२) रुक्मी, और (३) शिखरी पर्वत।

**335.** In Jambu continent there are three *Varsh-dhar parvats* (mountains) to the south of the Mandar Mountain—(1) *Chulla Himavan*, (2) *Mahahimavan*, and (3) *Nishadh* Mountains **336.** In Jambu continent there are three *Varsh-dhar parvats* (mountains) to the north of the Mandar mountain—(1) Nilavaan, (2) Rukmi, and (3) Shikhari

### महाद्रह–पद MAHADRAH-PAD (SEGMENT OF GREAT LAKES)

**३३७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं तओ महादहा पण्णत्ता, तं जहा–पउमदहे, महापउमदहे, तिगिंछदहे। तत्थ णं तओ देवताओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठितीओ परिवसंति, तं जहा–सिरी, हिरी, धिती। ३३८. एवं उत्तरे णं वि, नवरं–केसरिदहे, महापोंडरीयदहे, पोंडरीयदहे। देवताओ–कित्ती, बुद्धी, लच्छी।**

३३७. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण भाग मे तीन महाद्रह है-(१) पद्मद्रह, (२) महापद्मद्रह, और (३) तिगिंछद्रह। इन द्रहों पर एक पल्योपम की स्थिति वाली तीन देवियाँ निवास करती है-(१) श्रीदेवी, (२) ह्रीदेवी, और (३) धृतिदेवी। ३३८. इसी प्रकार मन्दर पर्वत के उत्तर भाग मे भी तीन महाद्रह है-(१) केशरीद्रह, (२) महापुण्डरीकद्रह, और (३) पुण्डरीकद्रह। इन द्रहो पर तीन देवियाँ निवास करती है-(१) कीर्तिदेवी, (२) बुद्धिदेवी, और (३) लक्ष्मीदेवी।

**337.** In Jambu continent, to the south of Mandar mountain, there are three *mahadrahas* (great lakes)—(1) Padmadraha (lake Padma), (2) Mahapadmadraha (lake Mahapadma), and (3) Tingichhadraha (lake Tingichha) On these great lakes reside three goddesses with a life span of one *Palyopam*—(1) Shridevi, (2) Hridevi, and (3) Dhritidevi **338.** In the same way there are three *mahadrahas* (great lakes) to the north of Mandar Mountain—(1) Kesaridraha (lake Kesari), (2) Mahapaundareek-draha (lake Mahapaundareek), and (3) Paundareek-draha (lake Paundareek). On these great lakes reside three goddesses—(1) Kirtidevi, (2) Buddhidevi, and (3) Laxmidevi

### नदी–पद NADI-PAD (SEGMENT OF RIVER)

**३३९. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं चुल्लहिमवंताओ, वासधरपव्वताओ पउमदहाओ महादहाओ तओ महाणदीओ पवहंति, तं जहा–गंगा, सिंधू, रोहितंसा। ३४०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं सिहरीओ वासहरपव्वताओ पोंडरीयद्दहाओ**

**महाद्दहाओ तओ महाणदीओ पवहंति, तं जहा—सुवण्णकूला, रत्ता, रत्तवती। ३४१. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उत्तरे णं तओ अंतरणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—गाहावती, दहवती, पंकवती।**

३३९. जम्बूद्वीप द्वीप में मन्दर पर्वत के दक्षिण में चुल्लहिमवान् वर्षधर पर्वत के पद्मद्रह नामक महाद्रह से तीन महानदियाँ प्रवाहित होती है–(१) गगा, (२) सिन्धु, और (३) रोहिताशा। ३४०. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के उत्तर मे शिखरी पर्वत के पुण्डरीक महाद्रह से तीन महानदियाँ प्रवाहित होती है–(१) सुवर्णकूला, (२) रक्ता, और (३) रक्तवती। ३४१. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व भाग मे सीता महानदी के उत्तर भाग में तीन अन्तर्नदियाँ है–(१) ग्राहवती, (२) द्रहवती, और (३) पंकवती।

**339.** In Jambu continent, to the south of Mandar Mountain on Chullahimavan *Varshadhar* mountain, from great lake Padmadraha flow three *mahanadis* (great rivers)—(1) Ganga, (2) Sindhu, and (3) Rohitamsha **340.** In Jambu continent, to the north of Mandar Mountain on Shikhari *Varshadhar* mountain, from great lake Pundareek flow three *mahanadis* (great rivers)—(1) Suvarnakoola, (2) Rakta, and (3) Raktavati **341.** In Jambu continent, to the east of Mandar Mountain on the north of great river Sita flow three *antarnadis* (intermediate rivers)—(1) Grahavati, (2) *Drahavati*, and (3) Pankavati

**३४२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए दाहिणे णं तओ अंतरणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तत्तजला, मत्तजला, उम्मत्तजला। ३४३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोदाए महाणदीए दाहिणे णं तओ अंतरणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—खीरोदा, सीहसोता, अंतोवाहिणी। ३४४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीतोदाए महाणदीए उत्तरे णं तओ अंतरणदीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उम्मिमालिणी, फेणमालिनी, गंभीरमालिणी।**

३४२. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व भाग में सीता महानदी के दक्षिण भाग मे तीन अन्तर्नदियाँ है–(१) तप्तजला, (२) मत्तजला, और (३) उन्मत्तजला। ३४३. जम्बूद्वीप द्वीप में मन्दर पर्वत के पश्चिम मे सीतोदा महानदी क उत्तर भाग मे तीन अन्तर्नदियाँ है–(१) क्षीरोदा, (२) सिहस्रोता, और (३) अन्तर्वाहिनी। ३४४. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के पश्चिम मे सीतोदा महानदी के दक्षिण भाग में तीन अन्तर्नदियाँ है–(१) ऊर्मिमालिनी, (२) फेनमालिनी, और (३) गम्भीरमालिनी। *(विशेष स्पष्टता के लिए चित्र संख्या ७, स्थान ३, सूत्र २६८ पर देखें)*

**342.** In Jambu continent, to the east of Mandar Mountain on the south of great river Sita flow three intermediate rivers—(1) Taptajala,

(2) Mattajala, and (3) Unmattajala. **343.** In Jambu continent, to the west of Mandar Mountain on the north of great river Sitoda flow three intermediate rivers—(1) Kshiroda, (2) Simhasrota, and (3) Antarvahini. **344.** In Jambu continent, to the west of Mandar Mountain on the south of great river Sitoda flow three intermediate rivers—(1) Urmimalini, (2) Phenamalini, and (3) Gambhiramalini. *(for clarity see illustration No. 7, Sthaan 3, aphorism 268)*

### *धातकीखंड–पुष्करवर–पद* DHATAKIKHAND-PUSHKARVAR-PAD (SEGMENT OF DHATAKIKHAND-PUSHKARVAR)

**३४५. एवं धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धेवि अकम्मभूमीओ आढवेत्ता जाव अंतरणदीओत्ति णिरवसेसं भाणियव्वं जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे तहेव णिरवसेसं भाणियव्वं।**

३४५. इसी प्रकार धातकीषण्ड तथा अर्धपुष्करवरद्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध में जम्बूद्वीप के समान तीन–तीन अकर्मभूमियाँ तथा अन्तर्नदियाँ आदि समस्त पद कहना चाहिए।

**345.** In the same way all the aforesaid details about three *akarmabhumis, antarnadis* and other geographical features of Jambu continent should be repeated for Dhatakikhand as well as eastern and western halves of Ardhapushkarvar continent.

### *भूकंप–पद (भूकम्प के मुख्य कारण)* BHUKAMP-PAD (SEGMENT OF EARTHQUAKE)

**३४६. तिहिं ठाणेहिं देसे पुढवीए चलेज्जा, तं जहा–**

**(१) अहे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उराला पोग्गला णिवतेज्जा। तते णं उराला पोग्गला णिवतमाणा देसं पुढवीए चलेज्जा। (२) महोरगे वा महिड्ढीए जाव महेसक्खे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे उम्मज्ज–णिमज्जियं करेमाणे देसं पुढवीए चलेज्जा। (३) णागसुवण्णाण वा संगामंसि वट्टमाणंसि देसं पुढवीए चलेज्जा।**

**इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं देसे पुढवीए चलेज्जा।**

३४६. तीन कारणो से पृथ्वी का एक देश (एक भाग) चलित (कम्पित) होता है–

(१) इस रत्नप्रभा नाम की पृथ्वी के निचले भाग में जब स्वभाव–परिणत स्थूल पुद्गल आकर टकराते हैं, तब उनके टकराने से पृथ्वी का एक देश चलित हो जाता है। (२) महर्द्धिक, महाद्युति, महाबल तथा महानुभाव महेश नामक महोरग व्यन्तरदेव रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे उन्मज्जन–निमज्जन (ऊपर–नीचे आवागमन) करता हुआ पृथ्वी के एक देश को चलायमान कर देता है। (३) नागकुमार और सुपर्णकुमार जाति के भवनवासी देवों का परस्पर सग्राम होने पर पृथ्वी का एक देश चलायमान हो जाता है।

**346.** For three reasons some part of the earth trembles—

(1) In the lower part of this Ratnaprabha *Prithvi* when naturally transformed gross aggregates of matter collide together, this collision makes some part of earth tremble (2) When Mahesh, a highly prosperous, radiant, powerful and proud *Vyantar Dev* (interstitial god) of *Mahorag* class, moves up and down under the Ratnaprabha *Prithvi*, this movement makes some part of earth tremble (3) When Abode dwelling gods of *Naag Kumar* and *Suparna Kumar* classes join in battle, some part of earth trembles.

**३४७. तिहिं ठाणेहिं केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा, तं जहा–**

**(१) अधे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणवाते गुप्पेज्जा। तए णं से घणवाते गुविते समाणे घणोदहिमेएज्जा। तए णं से घणोदही एइए समाणे केवलकप्पं पुढविं चालेज्जा।**

**(२) देवे वा महिड्ढिए जाव महेसक्खे तहारूवस्स समणस्स माहणस्स वा इड्ढिं जुतिं जसं बलं वीरियं पुरिसक्कार–परक्कमं उवदंसेमाणे केवलकप्पं पुढविं चालेज्जा।**

**(३) देवासुरसंगामंसि वा वट्टमाणंसि केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा।**

**इच्चेतेहिं तिहिं ठाणेहिं केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा।**

३४७. तीन कारणो से केवल–कल्पा (सम्पूर्ण या प्राय सम्पूर्ण) पृथ्वी चलित होती है–

(१) इस रत्नप्रभा पृथ्वी के निचले भाग मे घनवात क्षुब्ध होता है। वह घनवात क्षुब्ध होता हुआ घनोदधिवात को क्षोभित करता है। तत्पश्चात् वह घनोदधिवात क्षोभित होता हुआ समूची पृथ्वी को चलायमान कर देता है।

(२) कोई महर्धिक, महाद्युति, महाबल तथा महानुभाव महेश नामक देव तथारूप श्रमण माहन को अपनी ऋद्धि, द्युति, यश, बल, वीर्य, पुरुषकार और पराक्रम दिखाता हुआ सम्पूर्ण पृथ्वी को चलायमान कर देता है।

(३) देवो और असुरो के परस्पर सग्राम होने पर सम्पूर्ण पृथ्वी चलित हो जाती है। इन तीन कारणो से सारी पृथ्वी चलित होती है।

**347.** For three reasons the whole (*keval-kalpa*) earth trembles—

(1) In the lower part of this Ratnaprabha *Prithvi ghanavaat* (dense air) gets agitated. This agitated *ghanavaat* in turn agitates *ghanodadhi* (dense water). Then this agitated *ghanodadhi* makes the whole earth tremble

(2) When Mahesh, a highly prosperous, radiant, powerful and proud *Vyantar Dev* (interstitial god) of *Mahorag* class, makes the whole earth

tremble in order to display his *riddhi* (opulence), *dyuti* (radiance), *yash* (fame), *bal* (strength), *virya* (potency), *purushakar* (ego of prowess) and *parakram* (ego of valorous action).

(3) When *Devs* (gods) and *Asurs* (demons) join in battle, the whole earth trembles.

For these three reasons the whole earth trembles

**देवस्थिति–पद DEV-STHITI-PAD (SEGMENT OF LIFE SPAN OF GODS)**

**३४८. तिविहा देवकिब्बिसिया पण्णत्ता, तं जहा–तिपलिओवमट्ठितीया, तिसागरोवमट्ठितीया तेरससागरोवमट्ठितीया।**

**(१) कहि णं भंते ! तिपलिओवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति ?**

**उप्पिं जोइसियाणं, हिट्ठिं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु, एत्थ णं तिपलिओवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति।**

**(२) कहि णं भंते ! तिसागरोवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति ?**

**उप्पिं सोहम्मीसाणाणं कप्पाणां, हेट्ठिं सणंकुमार–माहिंदेसु कप्पेसु, एत्थ णं तिसागरोवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति।**

**(३) कहि णं भंते ! तेरससागरोवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति ?**

**उप्पिं बंभलोगस्स कप्पस्स, हेट्ठिं लंतगे कप्पे, एत्थ णं तेरससागरोवमट्ठितीया देवकिब्बिसिया परिवसंति।**

३४८. किल्विषिक देव (देवताओ मे एक प्रकार के अस्पृश्य देव) तीन प्रकार के है–(१) तीन पल्योपम की स्थिति वाले, (२) तीन सागरोपम की स्थिति वाले, और (३) तेरह सागरोपम की स्थिति वाले।

(१) प्रश्न–भंते ! तीन पल्योपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव कहाँ निवास करते है ?

(उत्तर)–आयुष्मन् ! ज्योतिष्क देवो के ऊपर तथा सौधर्म–ईशानकल्पो के नीचे, तीन पल्योपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव निवास करते है।

(२) प्रश्न–भंते ! तीन सागरोपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव कहाँ निवास करते है ?

(उत्तर)–आयुष्मन् ! सौधर्म और ईशान कल्पों के ऊपर तथा सनत्कुमार माहेन्द्रकल्पो से नीचे, तीन सागरोपम की स्थिति वाले देव निवास करते हैं।

(३) (प्रश्न)–भंते ! तेरह सागरोपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव कहाँ निवास करते है ?

(उत्तर)–आयुष्मन् ! ब्रह्मलोककल्प के ऊपर तथा लान्तककल्प के नीचे तेरह सागरोपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव निवास करते है।

**348.** *Kilvishik Devs* (a kind of untouchable gods) are of three kinds—(1) with a life span of three *Palyopam*, (2) with a life span of three *Sagaropam*, and (3) with a life span of thirteen *Sagaropam*

**(1) (Question)** Bhante ! Where do the *Kilvishik* gods with a life span of three *Palyopam* dwell ?

**(Answer)** Long lived one ! Above the *Jyotishk Devs* (stellar gods) and below *Saudharm-Ishan Kalps* dwell the *Kilvishik* gods with a life span of three *Palyopam*

**(2) (Question)** *Bhante* ! Where do the *Kilvishik* gods with a life span of three *Sagaropam* dwell ?

**(Answer)** Long lived one ! Above the *Saudharm-Ishan Kalps* and below *Sanatkumar-Mahendra Kalps* dwell the *Kilvishik* gods with a life span of three *Sagaropam*

**(3) (Question)** *Bhante* ! Where do the *Kilvishik* gods with a life span of thirteen *Sagaropam* dwell ?

**(Answer)** Long lived one ! Above the *Brahmalok Kalp* and below *Lantak Kalp* dwell the *Kilvishik* gods with a life span of thirteen *Sagaropam*

**३४९. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो बाहिरपरिसाए देवाणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। ३५०. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अब्भिंतरपरिसाए देवीणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। ३५१. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो बाहिरपरिसाए देवीणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता।**

३४९. देवेन्द्र, देवराज शक्र की बाह्य परिषद् के देवो की स्थिति तीन पल्योपम की है। ३५०. देवेन्द्र, देवराज शक्र की आभ्यन्तर परिषद् की देवियो की स्थिति, तथा ३५१. देवेन्द्र, देवराज ईशान की बाह्य परिषद् की देवियो की स्थिति भी तीन पल्योपम की है।

**349.** The life span of the gods of the outer assembly of *Devendra* Shakra (the overlord of gods) is three *Palyopam* (a metaphoric unit of time). **350.** The life span of the goddesses of the inner assembly of *Devendra* Shakra (the overlord of gods), and **351.** that of the goddesses of the outer assembly of *Devendra* Ishan is also three *Palyopam*.

### प्रायश्चित्त-पद PRAYASCHIT-PAD (SEGMENT OF ATONEMENT)

**३५२. तिविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा—णाणपायच्छित्ते, दंसणपायच्छित्ते, चरित्तपायच्छित्ते।**

३५२. प्रायश्चित्त (ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की विशुद्धि के लिए किया जाने वाला प्रायश्चित्त) तीन प्रकार का है–(१) ज्ञानप्रायश्चित्त, (२) दर्शनप्रायश्चित्त, और (३) चारित्रप्रायश्चित्त।

**352.** *Prayashchit* (atonement) is of three kinds—(1) *jnana-prayaschit* (atonement related to knowledge), (2) *darshan-prayaschit* (atonement related to perception/faith), and (3) *chaaritra-prayaschit* (atonement related to conduct).

**३५३. तओ अणुग्घातिमा पण्णत्ता, तं जहा–हत्थकम्मं करेमाणे, मेहुणं सेवेमाणे, राईभोयणं भुंजमाणे।**

३५३. तीन अनुद्घात्य (गुरु या कठोर प्रायश्चित्त के भागी) होते है–(१) हस्त–कर्म करने वाला, (२) मैथुन सेवन करने वाला, और (३) रात्रिभोजन करने वाला।

**353.** Three are *anudghatya* (those who deserve heavy or rigorous atonement)—(1) who do amorous by activity, (2) who indulge in sexual act, and (3) who eat during night.

**३५४. तओ पारंचिता पण्णत्ता, तं जहा–दुट्ठे पारंचिते, पमत्ते पारंचिते, अण्णमण्णं करेमाणे पारंचिते।**

३५४. तीन पारचित प्रायश्चित्त (सघ से बहिष्कृत करने योग्य प्रायश्चित्त) के भागी होते है–(१) **दुष्ट पारांचित** (तीव्रतम कषाय दोष से दूषित तथा विषयदुष्ट साध्वी), (२) **प्रमत्त पारांचित** (स्त्यानर्द्धि निद्रा वाला), और (३) अन्योन्य (समलैंगिक) मैथुन सेवन करने वाला।

**354.** Three are *paranchit* (those who deserve atonement by being expelled from the organization)—(1) *dusht-paranchit*—female ascetic intoxicated by intense passions and lust, (2) *pramatt-paranchit*—ascetic in *styanagriddhi-nidra* (comatose state), and (3) *anyonya-paranchit*—who indulges in sodomy.

**३५५. तओ अणवट्ठप्पा पण्णत्ता, तं जहा–साहम्मियाणं तेणियं करेमाणे, अण्णधम्मियाणं तेणियं करेमाणे, हत्थातालं दलयमाणे।**

३५५. तीन **अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त**–(तपस्यापूर्वक पुन दीक्षा) के योग्य होते है–(१) साधर्मिकों की चोरी करने वाला, (२) अन्यधार्मिकों की चोरी करने वाला, और (२) हस्तताल देने वाला (मारक प्रहार करने वाला)।

**355.** Three are *anavasthapya* (those who deserve to be re-initiated after specified austerities)—(1) who steal from a co-religionist, (2) who steal from people following other religions, and (3) who give fatal blow.

**विवेचन**–किस प्रकार के दोष सेवन से कौन–सा प्रायश्चित्त दिया जाता है, इसका विशद विवेचन बृहत्कल्प आदि छेदसूत्रो मे देखना चाहिए।

**Elaboration**—What type of atonement is prescribed in *Agam* for specific category of fault has been discussed in great detail in *Vrihatkalp* and other *Chheda Sutras*.

**अयोग्यता-पद AYOGYATA-PAD (SEGMENT OF DISQUALIFICATION)**

**३५६. तओ णो कप्पंति पव्वावेत्तए, तं जहा—पंडए, वातिए, कीवे। ३५७. एवं मुंडावित्तए, सिक्खावित्तए, उवट्ठावेत्तए, संभुंजित्तए, संवासित्तए।**

३५६. तीन को प्रव्रजित नही करना चाहिए–(१) नपुंसक, (२) वातिक (तीव्र वात रोग से पीडित), और (३) क्लीव (वीर्य–धारण मे अशक्त) को। ३५७. इसी प्रकार उक्त तीन को मुण्डित करना, शिक्षण देना, महाव्रतो मे आरोपित करना, उनके साथ सभोगिक सम्बन्ध रखना और साथ–साथ रहना नही चाहिए।

**356.** Three should not be initiated (*pravrajit*)—(1) *napumsak* (eunuch), (2) *vaatik* (gravely suffering from disturbed air, one of the three body-humours), and (3) weak and impotent **357.** In the same way the aforesaid three are disqualified to be head-tonsured, taught, initiated into great vows, made friends and accepted into a group to live together

**३५८. तओ अवायणिज्जा पण्णत्ता, तं जहा—अविणीए, विगईपडिबद्धे, अविओसवियपाहुडे। ३५९. तओ कप्पंति वाइत्तए, तं जहा—विणीए, अविगइपडिबद्धे, विओसवियपाहुडे।**

३५८. (१) **अविनीत**–उद्दण्ड। (२) **विकृति–प्रतिबद्ध**–दूध, घी आदि रसो के सेवन मे आसक्त। (३) **अव्यवशमितप्राभृत**–कलह को शान्त नही करने वाला, ये तीनो वाचना देने के अयोग्य है। ३५९. (१) विनीत, (२) विकृति–अप्रतिबद्ध, और (३) व्यवशमितप्राभृत ये तीनो वाचना देने के योग्य है।

**358.** Three do not deserve to be given *vaachana* (lessons of scriptures)—(1) *avineet*—immodest and insolent, (2) *vikrit-pratibaddha*—gourmet with extreme liking for milk and milk products, and (3) *avyavashamitaprabhrit*—one who is unable to pacify his pugnacious tendency **359.** Three deserve to be given *vaachana* (recitation of scriptures)—(1) *vineet*—modest, (2) *vikrit-apratibaddha*—not enslaved of to special liking for tasty food, and (3) *vyavashamitaprabhrit*—one who pacifies his pugnacious tendency

**३६०. तओ दुसण्णप्पा पण्णत्ता, तं जहा—दुट्ठे, मूढे, वुग्गाहिते। ३६१. तओ सुसण्णप्पा पण्णत्ता, तं जहा—अदुट्ठे, अमूढे, अवुग्गाहिते।**

३६०. (१) दुष्ट, (२) मूढ (विवेकशून्य), और (३) व्युद्ग्राहित–कदाग्रही के द्वारा भड़काया हुआ, ये तीन दुःसज्ञाप्य (दुर्बोध्य) है। ३६१. (१) अदुष्ट, (२) अमूढ, और (३) अव्युद्ग्राहित, तीन सुसंज्ञाप्य (सुबोध्य) है।

वाचनीय
अवाचनीय

**चित्र परिचय १२** | **Illustration No. 12**

# वाचनीय-अवाचनीय

(१) गुरु सभी शिष्यो को ज्ञान व विद्या दान करते है। परन्तु जो विनयशील शिष्य होते है, वे ज्ञान के पात्र होते है, वे शीघ्र ही ज्ञान प्राप्त कर लेते है। उन पर विद्या देवता भी शीघ्र प्रसन्न होती है। जो अहकारी और बातूनी होते है, वे ज्ञानी गुरु से भी ज्ञान प्राप्त नही कर पाते। वे ज्ञान के अपात्र होते है। विद्या देवता उन पर विमुख रहती है।

(२) जो शिष्य व छात्र इन्द्रिय-सयमी और खाने-पीने के लोलुप नही होते, उन्हे गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान शीघ्र ही प्राप्त होता है। किन्तु जो खाने-पीने के लोभी व इन्द्रिय-विषयो मे आसक्त रहते है उनको गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान व्यर्थ ही जाता है। वे रसलोलुप विद्या प्राप्त नही कर सकते।

(३) जो छात्र व विद्यार्थी गुरु के अनुशासन मे रहते है। परस्पर प्रेम और सद्भावपूर्वक पढते है। अध्यापक का सन्मान करते है। व वास्तव मे विद्या के पात्र होते है। किन्तु जो आपस मे कलह, लडाई करते रहते है, गुरुजनो का अनुशासन नही मानते वे ज्ञान प्राप्ति के योग्य नही होते। उन पर कभी विद्या देवता प्रसन्न नही होती। चित्र मे ज्ञान के पात्र व अपात्र शिष्यो की वृत्तियो का दिग्दर्शन कराया है।

स्थान ३ सूत्र ३५८-३५९

## VAACHANIYA-AVAACHANIYA

(1) A guru imparts knowledge and learning to all his disciples The modest ones are deserving and they acquire knowledge soon The goddess of learning is also soon pleased with them The conceited and insolent cannot acquire knowledge even from a learned guru They are undeserving and the goddess of learning is also averse to them

(2) The disciples who are not given to special liking for tasty food and command control over senses, soon acquire knowledge from the guru Those who are gourmet and obsessed with sensual pleasures waste the knowledge they acquire from the guru Such obsessed ones fail to acquire knowledge

(3) The disciples or students who follow the discipline prescribed by the guru and study with amity and goodwill among co-students are the genuinely deserving ones Those who frequently quarrel among themselves and are not disciplined are the undeserving ones The goddess of learning is never pleased with them The illustrations shows the activities of the deserving and undeserving students

*—Sthaan 3, Sutra 358-359*

**360.** Three are *duhsanjapya* (hard to teach)—(1) *dusht* (wicked), (2) *moodh* (irrational), and (3) *vyudgrahit*—one provoked by a dogmatic person. **361.** Three are *susanjapya* (easy to teach)—(1) *adusht* (not wicked), (2) *amoodh* (rational), and (3) *avyudgrahit*—one not provoked by a dogmatic person.

***माण्डलिक-पर्वत-पद*** **MANDALIK-PARVAT-PAD (SEGMENT OF CIRCULAR MOUNTAINS)**

**३६२. तओ मंडलिया पव्वता पण्णत्ता, तं जहा—माणुसुत्तरे, कुंडलवरे, रुयगवरे।**

३६२. तीन माण्डलिक (वलयाकार वाले) पर्वत है-(१) मानुषोत्तर, (२) कुण्डलवर, और (३) रुचकवर पर्वत।

**362.** There are three *mandalik-parvat* (circular mountains)—(1) Manushottar, (2) Kundalavar, and (3) Ruchakavar

***महतिमहालय-पद*** **MAHATIMAHALAYA-PAD (SEGMENT OF THE GREATEST)**

**३६३. तओ महतिमहालया पण्णत्ता, तं जहा—जंबुद्दीवए मंदरे मंदरेसु, सयंभूरमणे समुद्दे समुद्देसु, बंभलोए कप्पे कप्पेसु।**

३६३. तीन महतिमहालय (अपनी-अपनी कोटि मे सबसे बडे) होते है-(१) मन्दर पर्वतो मे जम्बूद्वीप का सुमेरु पर्वत, (२) समुद्रो मे **स्वयम्भूरमण समुद्र**, और (३) कल्पो मे **ब्रह्मलोककल्प**।

**363.** There are three *mahatimahalaya* (the greatest among their category)—(1) Sumeru mountain of Jambu continent among Mandar mountains, (2) Svaymbhuraman sea among seas, and (3) Brahmalok *Kalp* among *Kalps* (divine dimensions)

***कल्पस्थिति-पद*** **KALPASTHITI-PAD (SEGMENT OF PRAXIS OBSERVATION)**

**३६४. तिविधा कप्पठिती पण्णत्ता, तं जहा—सामाइयकप्पठिती, छेदोवट्ठावणियकप्पठिती, णिव्विसमाणकप्पठिती।**

**अहवा—तिविहा कप्पठिती पण्णत्ता, तं जहा—णिव्विट्ठकप्पट्ठिती, जिणकप्पट्ठिती, थेरकप्पट्ठिती।**

३६४. कल्पस्थिति तीन प्रकार की है-(१) सामायिक कल्पस्थिति, (२) छेदोपस्थापनीय कल्पस्थिति, और (३) निर्विशमान कल्पस्थिति।

अथवा कल्पस्थिति तीन प्रकार की है-(१) निर्विष्टकल्पस्थिति, (२) जिनकल्पस्थिति, और (३) स्थविरकल्पस्थिति।

**364.** *Kalpasthiti* (praxis observation) is of three kinds—(1) *Samayik kalpasthiti*, (2) *Chhedopasthapaniya kalpasthiti*, and (3) *Nirvishamaan kalpasthiti*.

Also *Kalpasthiti* (praxis observation) is of three kinds—(1) *Nirvisht kalpasthiti*, (2) *Jinakalpasthiti*, and (3) *Sthavirakalpasthiti*

**विवेचन**—अपनी सामर्थ्य के अनुसार आचार-मर्यादा का पालन करना **कल्पस्थिति** है। उक्त कल्पस्थितियों का स्पष्टीकरण इस प्रकार है-

(१) **सामायिक कल्पस्थिति**—सामायिक चारित्र की काल-मर्यादा को सामायिक कल्पस्थिति कहते हैं। यह कल्पस्थिति प्रथम और अन्तिम तीर्थंकर के समय में स्वल्पकाल की (इत्वरिक) होती है, क्योंकि वहाँ छेदोपस्थापनीय कल्पस्थिति विहित है। शेष बाईस तीर्थंकरों के समय मे तथा महाविदेह मे जीवन-पर्यन्त **(यावत्कथित)** होती है।

इस कल्प के अनुसार (१) शय्यातर-पिण्ड-परिहार, (२) चातुर्यामधर्म का पालन, (३) पुरुषज्येष्ठत्व, और (४) कृतिकर्म, ये चार कल्प आवश्यक होते है तथा (१) **अचेलकत्व**—वस्त्र का निषेध या अल्प वस्त्र ग्रहण, (२) **औद्देशिकत्व**—एक साधु के उद्देश्य से बनाये गये आहार का दूसरे साम्भोगिक द्वारा अग्रहण, (३) राजपिण्ड का अग्रहण, (४) नियमित प्रतिक्रमण, (५) मासकल्प विहार, और (६) पर्युषणाकल्प-ये छह कल्प वैकल्पिक होते है।

(२) **छेदोपस्थानीय कल्पस्थिति**—प्रथम और अन्तिम तीर्थंकर के समय मे ही होती है।

(३) **निर्विशमान कल्पस्थिति**—परिहारविशुद्धि सयम की साधना करने वाले तपस्यारत साधुओ की आचार-मर्यादा।

(४) **निर्विष्टकल्प स्थिति**—परिहारविशुद्धि सयम की साधना सम्पन्न कर चुकने वाले साधुओ की स्थिति। *(इसका विस्तृत वर्णन सचित्र अनुयोगद्वार, भाग २, पृष्ठ ३०९ पर किया गया है।)*

(५) **जिन कल्पस्थिति**—अधिक प्रखर सयम की साधना करने के लिए गण, गच्छ आदि से निकलकर जो एकाकी विचरते हुए एकान्तवास करते है, उनकी आचार-मर्यादा।

(६) **स्थविर कल्पस्थिति**—जो आचार्यादि के गण-गच्छ मे स्थिर रहकर संयम की साधना करते है, उनकी आचार-मर्यादा।

**Elaboration**—To observe the discipline of ascetic praxis to the best of one's abilities is called *kalpasthiti* The aforesaid *kalpasthitis* are explained as follows—

**(1) Samayik kalpasthiti**—The periodicity of *Samayik chaaritra* (*Samayik* conduct) is called *Samayik kalpasthiti* This *kalpasthiti* is of a very short duration (*itvarik*) during the period of influence of first and last *Tirthankars* This is because during that period *Chhedopasthapaniya Charitra* (conduct of re-initiation after rectifying faults) is prevalent During the period of influence of the remaining

twenty two *Tirthankars* and also in *Mahavideh* area it is lifelong (*yavatkathit*).

This *kalp* (discipline of ascetic praxis) includes four essential codes and six optional codes. The four essentials are—(1) *shayyatar-pind-parihar* (austerity of not taking food from a house that provides facilities for staying overnight), (2) *chaturyaam-dharma palan* (following the religion of fourfold restraint), (3) *purush-jyeshthatva* (male seniority), and (4) *kritikarma* (to offer homage and obeisance to seniors, gods and *Tirthankars* in prescribed manner) The six optionals are—(1) *achelakatva* (garb renunciation or nakedness), (2) *Auddeshikatva* (non-acceptance of food meant for another ascetic), (3) *Rajapind-agrahan* (non-acceptance of food from king's kitchen or state kitchen), (4) *niyamit pratikraman* (doing critical review with strict regularity), (5) *maas-kalp vihar* (not to stay at a place for more than a month), and (6) *Paryushana kalp* (to follow monsoon stay codes and procedures).

**(2) Chhedopasthapaniya kalpasthiti**—It is applicable only during the periods of influence of first and last *Tirthankars*

**(3) Nirvishamaan kalpasthiti**—praxis discipline prescribed for the ascetics observing the special austerities of *Parihar-vishuddhi kalp*

**(4) Nirvisht kalpasthiti**—complementary praxis discipline prescribed for the ascetics successfully concluding the special austerities of *Parihar-vishuddhi kalp (for detailed description refer to Illustrated Anuyoga Dvar Sutra, part 2, p. 309)*

**(5) Jina kalpasthiti**—praxis discipline of accomplished ascetics who leave their group and organization to go in isolation for higher and more rigorous practices

**(6) Sthavira kalpasthiti**—praxis discipline of accomplished ascetics who observe higher and more rigorous practices remaining in the group under an *acharya* or other leader

### शरीर–पद SHARIR-PAD (SEGMENT OF BODY)

**३६५. णेरइयाणं तओ सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—वेउव्विए, तेयए, कम्मए। ३६६. असुरकुमाराणं तओ सरीरगा पण्णत्ता, एवं चेव। ३६७. एवं सव्वेसिं देवाणं। ३६८. पुढविकाइयाणं तओ सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए, तेयए, कम्मए। ३६९. एवं—वाउकाइयवज्जाणं जाव चउरिंदियाणं।**

३६५. नारक जीवो के तीन शरीर होते है-(१) वैक्रिय शरीर, (२) तेजस् शरीर, और (३) कार्मण शरीर। ३६६. नारको की तरह ही असुरकुमारो के तीन शरीर होते है। ३६७. इसी प्रकार सभी देवो के तीन शरीर होते है। ३६८. पृथ्वीकायिक जीवो के तीन शरीर होते हैं-(१) औदारिक शरीर (औदारिक पुद्गल वर्गणाओ से निर्मित अस्थि-माँसमय शरीर), (२) तेजस्, और (३) कार्मण शरीर। ३६९. इसी प्रकार वायुकायिक जीवो को छोडकर चतुरिन्द्रिय तक के सभी जीवो के तीन शरीर होते है। (वायुकायिको के चार शरीर होने से उन्हे छोड़ दिया गया है।)

**365.** The *sharır* (body) of *naarak jıvas* (ınfernal beıngs) is of three kınds—(1) *Vaıkrıya sharır* (transmutable body), (2) *Taıjas sharır* (fiery body), and (3) *Karman sharır* (karmıc body) **366.** Lıke ınfernal beıngs *Asur Kumars* (a kınd of dıvıne beıngs) too have three kınds of body **367.** In the same way all the dıvine beıngs have three kınds of body **368.** The *sharır* (body) of *prıthvıkayık jıvas* (earth-bodied beıngs) ıs of three kınds—(1) *Audarık sharır* (gross physıcal body made of gross matter partıcles and havıng bones and flesh), (2) *Taıjas sharır* (fiery body), and (3) *Karman sharır* (karmıc body) **369.** In the same way, besıdes *vayukayık jıvas* (aır-bodied beıngs), all beıngs up to four sensed beıngs have three kınds of body (aır-bodıed beıngs have been excluded because they have four kınds of body)

### प्रत्यनीक-पद PRATYANEEK-PAD (SEGMENT OF NON-CONFORMIST)

**३७०. गुरुं पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा-आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए, थेरपडिणीए। ३७१. गतिं पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा-इहलोगपडिणीए, परलोगपडिणीए, दुहओलोगपडिणीए। ३७२. समूहं पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा-कुलपडिणीए, गणपडिणीए, संघपडिणीए। ३७३. अणुकंपं पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा-तवस्सिपडिणीए, गिलाणपडिणीए, सेहपडिणीए। ३७४. भावं पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा-णाणपडिणीए, दंसणपडिणीए, चरित्तपडिणीए। ३७५. सुयं पडुच्च तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा-सुत्तपडिणीए, अत्थपडिणीए, तदुभयपडिणीए।**

३७०. गुरु की अपेक्षा से तीन प्रत्यनीक (प्रतिकूल व्यवहार करने वाले) होते है-(१) आचार्य-प्रत्यनीक, (२) उपाध्याय-प्रत्यनीक, और (३) स्थविर-प्रत्यनीक। ३७१. गति की अपेक्षा से तीन प्रत्यनीक होते हैं-(१) इहलोक-प्रत्यनीक, (२) परलोक-प्रत्यनीक, और (३) उभयलोक-प्रत्यनीक। ३७२. समूह की अपेक्षा से तीन प्रत्यनीक होते है-(१) कुल-प्रत्यनीक, (२) गण-प्रत्यनीक, और (३) सघ-प्रत्यनीक। ३७३. अनुकम्पा की अपेक्षा से तीन प्रत्यनीक होते हैं-(१) तपस्वी-प्रत्यनीक, (२) ग्लान-प्रत्यनीक, और (३) शैक्ष-प्रत्यनीक। ३७४. भाव की अपेक्षा से तीन प्रत्यनीक होते हैं-

(१) ज्ञान-प्रत्यनीक, (२) दर्शन-प्रत्यनीक, और (३) चारित्र-प्रत्यनीक। ३७५. श्रुत की अपेक्षा से तीन प्रत्यनीक होते हैं-(१) सूत्र-प्रत्यनीक, (२) अर्थ-प्रत्यनीक, और (३) तदुभय-प्रत्यनीक।

**370.** With reference to guru (preceptor) there are three kinds of *pratyaneek* (non-conformist)—(1) *acharya-pratyaneek* (opposed to *acharya*), (2) *upadhyaya-pratyaneek* (opposed to *upadhyaya*), and (3) *sthavir-pratyaneek* (opposed to *sthavir*). **371.** With reference to *gati* (incarnation) there are three kinds of *pratyaneek* (non-conformist)—(1) *ihaloka-pratyaneek* (contrary to this life), (2) *paralok-pratyaneek* (contrary to next life), and (3) *ubhayalok-pratyaneek* (contrary to this as well as next life) **372.** With reference to *samuha* (group) there are three kinds of *pratyaneek* (non-conformist)—(1) *kula-pratyaneek* (opposed to the group of disciples of same *acharya*), (2) *gana-pratyaneek* (opposed to *gana*), and (3) *sangh-pratyaneek* (opposed to the religious organization) **373.** With reference to *anukampa* (compassion) there are three kinds of *pratyaneek* (non-conformist)—(1) *tapasvi-pratyaneek* (pathetic to hermits or those observing austerities), (2) *glan-pratyaneek* (pathetic to the ailing), and (3) *shaiksh-pratyaneek* (pathetic to neo-initiates) **374.** With reference to *bhaava* (attitude) there are three kinds of *pratyaneek* (non-conformist)—(1) *jnana-pratyaneek* (opposed to right knowledge), (2) *darshan-pratyaneek* (opposed to right perception/faith), and (3) *chaaritra-pratyaneek* (opposed to right conduct) **375.** With reference to *shrut* (canon) there are three kinds of *pratyaneek* (non-conformist)—(1) *Sutra-pratyaneek* (opposed to text), (2) *arth-pratyaneek* (opposed to meaning), and (3) *tadubhaya-pratyaneek* (opposed to both text and its meaning)

**विवेचन**-प्रत्यनीक शब्द का अर्थ है मर्यादा विरुद्ध या प्रतिकूल आचरण करने वाला। दीक्षा देने वाला आचार्य और शिक्षा (ज्ञान) देने वाला उपाध्याय गुरु है। स्थविर भी वय, तप एवं ज्ञान-गरिमा की अपेक्षा गुरु तुल्य है। जो इन तीनो के प्रतिकूल आचरण करता है, उनकी यथोचित विनय नही करता, उनका अवर्णवाद करता और उनका छिद्रान्वेषण करता है उसे **गुरु-प्रत्यनीक** कहा जाता है।

इस लोक सम्बन्धी प्रचलित व्यवहार के प्रतिकूल आचरण करने वाला **इहलोक प्रत्यनीक** है। परलोक के योग्य सदाचरण न करके दुराचरण करने वाला **परलोक-प्रत्यनीक** होता है। दोनो लोको के प्रतिकूल आचरण करने वाला **उभयलोक-प्रत्यनीक** कहा जाता है।

साधुओं के लघु-समुदाय को अथवा एक आचार्य की शिष्य-परम्परा को **कुल** कहते है। परस्पर-सापेक्ष तीन कुलो का समुदाय **गण** तथा सयम-साधना करने वाले सभी साधुओ का समुदाय **संघ** कहा जाता है। इनकी निन्दा या अवहलेना करना प्रत्यनीकता है।

मासोपवास आदि प्रखर तपस्या करने वाला तपस्वी, रोगादि से पीडित साधु ग्लान और नव-दीक्षित साधु शैक्ष कहलाता है। ये तीनो ही अनुकम्पा के पात्र होते है। जो उनके प्रतिकूल आचरण करता है, वह अनुकम्पा की अपेक्षा प्रत्यनीक होता है।

ज्ञान-दर्शन-चारित्रात्मक भाव कर्म-मुक्ति एवं आत्मिक सुख-शान्ति के कारण है, उनकी विपरीत प्ररूपणा करने वाला भाव-प्रत्यनीक है।

श्रुत (शास्त्राभ्यास) के तीन अंग है-सूत्र, उसका अर्थ तथा दोनो का समन्वित अभ्यास। इन तीनों के प्रतिकूल श्रुत की अवज्ञा करने वाला श्रुत-प्रत्यनीक होता है।

**Elaboration**—*Pratyaneek* means one who goes against or behaves contrary to the prescribed discipline or codes *Acharya* is one who initiates, *Upadhyaya* is one who teaches and *Sthavir* is almost like a guru as he is senior in terms of age, period of initiation, austerities and profundity of knowledge One who goes against them, does not show proper modesty, criticizes them and finds faults is called *guru-pratyaneek*.

On who behaves contrary to the established social norms is *ihaloka-pratyaneek*. One who has evil conduct and not good and pious conduct conducive to a good next life is *paraloka-pratyaneek*

A small group of ascetics or that consisting of disciples of just one *acharya* is called *kula* A larger group consisting of disciple of three *acharyas* following same codes is called *gana* The mass of all ascetics following the same codes is called *sangh* To criticize or go against these is to be a *pratyaneek*

Hermits or those observing rigorous austerities, such as month long fasting, are *tapasvis* Ailing ascetics are called *glan* and newly initiated ascetics are called *shaiksh* They deserve sympathy and compassion One who ill-treats them or is antipathetic to them is *pratyaneek* (non-conformist) with reference to *anukampa* (compassion)

Attitude leading to right knowledge-perception/faith-conduct is caused by inner bliss and tranquillity One who preaches and goes against this is *bhaava-pratyaneek*

There are three parts of study of the canon—text, meaning and assimilation of the two. One who neglects this or goes against it is *shrut-pratyaneek*.

## मातृ–पितृ–अंग–पद MATRI-PITRI-ANGA-PAD (SEGMENT OF ANATOMICAL INHERITANCE FROM PARENTS)

**३७६. तओ पितियंगा पण्णत्ता, तं जहा—अट्ठी, अट्ठिमिंजा, केसमंसुरोमणहे।**

**३७७. तओ माउयंगा पण्णत्ता, तं जहा—मंसे, सोणिते, मत्थुलिंगे।**

३७६. तीन अंग पितृ–अंग (पिता के वीर्य से बनने वाले) होते हैं–(१) अस्थि, (२) मज्जा, और (३) केश–दाढ़ी–मूँछ, रोम एवं नख।

३७७. तीन अंग मातृ–अंग होते हैं–(१) माँस, (२) शोणित (रक्त), और (३) मस्तुलिंग (मस्तिष्क)।

**376.** There are three *pitri-anga* (parts of the body made of father's semen)—(1) *asthi* (bones), (2) *majja* (marrow), and (3) *kesh-beard-moonchh, roam* and *nakh* (hair, beard, moustache, body-hair and nails).

**377.** There are three *matri-anga* (parts of the body made of mother's menstrual discharge)—(1) *mansa* (flesh), (2) *shonit* (blood), and (3) *mastuling* (brain)

## मनोरथ–पद MANORATH-PAD (SEGMENT OF WISH)

**३७८. तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तं जहा—**

**(१) कया णं अहं अप्पं वा बहुयं सुयं अहिज्जिस्सामि ? (२) कया णं अहं एकल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरिस्सामि ? (३) कया णं अहं अपच्छिममारणंतियसंलेहणा–झूसणा–झूसिते भत्तपाणपडियाइक्खिते पाओवगते कालं अणवकंखमाणे विहरिस्सामि ?**

**एवं समणसा सवयसा सकायसा पागडेमाणे समणे निग्गंथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति।**

३७८. तीन प्रकार की शुभ भावना करने से श्रमण निर्ग्रन्थ महानिर्जरा और महापर्यवसान वाला होता है–

(१) कब मैं अल्प या बहुत श्रुत का अध्ययन करूँगा ! (२) कब मैं एकलविहारप्रतिमा को स्वीकार कर विहार करूँगा ! (३) कब मैं (जीवन के अन्तिम समय मे) अपश्चिम मारणान्तिक संलेखना की आराधना करता हुआ, भक्त–पान का परित्याग कर पादोपगमन संथारा स्वीकार कर मृत्यु की आकाक्षा नहीं करता हुआ विचरूँगा ?

मन, वचन, काय से उक्त भावना करता हुआ श्रमण निर्ग्रन्थ महानिर्जरा तथा महापर्यवसान वाला होता है।

**378.** Three good wishes of a *Shraman nirgranth* lead to *mahanirjara* (maximum shedding of *karmas*) and *mahaparyavasaan* (sublime departure or death)—

(1) When will I study a little or more of the canon ! (2) When will I accept *ekal-vihar-pratima* (the special practice of living in solitude) and proceed to observe that ! (3) When will I observe the *apaschim maaranantik samlekhana* (irrevocable ultimate vow till death), abandon all food and drinks, accept *padopagaman santhara* (lifelong fasting keeping the body motionless like a fallen tree) and spend time peacefully without the desire of death !

**३७९. तिहिं ठाणेहिं समणोवासए महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तं जहा—**

**(१) कया णं अहं अप्पं वा बहुयं वा परिग्गहं परिचइस्सामि ? (२) कया णं अहं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारितं पव्वइस्सामि ? (३) कया णं अहं अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिते भत्तपाणपडियाइक्खिते पाओवगते कालं अणवकंखमाणे विहरिस्सामि ?**

**एवं समणसा सवयसा सकायसा पागडेमाणे समणोवासए महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति।**

३७९. तीन प्रकार की शुद्ध भावनाओ से श्रमणोपासक (गृहस्थ श्रावक) महानिर्जरा और महापर्यवसान वाला होता है-

(१) कब मै अल्प या बहुत परिग्रह का परित्याग करूँगा? (२) कब मै मुण्डित होकर अगार (गृहस्थ दशा) से अनगारिता मे प्रव्रजित होऊँगा? (३) कब मै अपश्चिम मारणान्तिक सलेखना की आराधना करता हुआ भक्त-पान का परित्याग कर, पादोपगमन सथारा स्वीकार कर मृत्यु की आकाक्षा नही करता हुआ विचरूँगा?

मन, वचन, काय से उक्त शुभ भावना करता हुआ श्रमणोपासक महानिर्जरा और महापर्यवसान वाला होता है।

**379.** Three good wishes of a *Shramanopasak* (Jain layman) lead to *mahanirjara* (maximum shedding of *karmas*) and *mahaparyavasaan* (sublime departure or death)—

(1) When will I renounce a little or more of the desire to possess ! (2) When will I tonsure my head and from the *aagaar* (householder) state get initiated into the *anagaar* (ascetic) state ! (3) When will I observe the *apaschim maaranantik samlekhana* (irrevocable ultimate vow till death), abandon all food and drinks, accept *padopagaman santhara* (lifelong fasting keeping the body motionless like a fallen tree) and spend time peacefully without the desire of death !

Wishing thus mentally, vocally and physically a *Shramanopasak* (Jain layman) accomplishes *mahanirjara* (maximum shedding of *karmas*) and *mahaparyavasaan* (great departure or death).

**विवेचन**—निर्जरा का अर्थ है—बँधे हुए कर्मों का क्षीण होना। भावनाओ की उच्चतम स्थिति में पहुँचने पर विपुल व सघन मात्रा मे कर्मों का क्षीण होना **महानिर्जरा** है। **महापर्यवसान** के दो अर्थ होते हैं—समाधिमरण और अपुनर्मरण—मोक्ष। जिस व्यक्ति के कर्मों की महानिर्जरा होती है, वह समाधिमरण को प्राप्त होकर उत्तम देवगति मे जाता है अथवा कर्ममुक्त होकर जन्म-मरण के चक्र से छूटकर सिद्ध हो जाता है।

एकलविहार प्रतिमा का अर्थ है—अकेला रहकर आत्म-साधना करना।

**Elaboration**—*Nirjara* means shedding or destroying bonded *karmas* Achieving that in large volume on attaining higher purity of feelings is called *Mahanirjara* *Mahaparyavasan* has two meanings—meditational death (*samadhimaran*) and liberation (*apunarmaran*). A person attaining large shedding of *karmas* embraces meditational death and either reincarnates in higher divine realms or attains liberation after shedding all *karmas*

*Ekalvihar pratima* means to do spiritual practices in isolation.

### *पुद्गल-प्रतिघात-पद* PUDGAL-PRATIGHAT-PAD (SEGMENT OF SLOWING DOWN OF MATTER)

**३८०. तिविहे पोग्गलपडिघाते पण्णत्ते, तं जहा—परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलं पप्प पडिहण्णिज्जा, लुक्खत्ताए वा पडिहण्णिज्जा, लोगंते वा पडिहण्णिज्जा।**

३८०. तीन कारणो से पुद्गलो का प्रतिघात (गति मे अवरोध) होता है—

(१) एक पुद्गल-परमाणु दूसरे पुद्गल-परमाणु से टकराकर प्रतिघात को प्राप्त होता है।

(२) अथवा रूक्ष होने पर (स्नेहरहित होने से गति रुक जाती है)।

(३) अथवा लोकान्त मे जाकर प्रतिहत हो जाता है (क्योकि आगे गतिसहायक धर्मास्तिकाय नहीं है।)

**380.** For three reasons matter (particles of matter) undergoes *pratighat* (reduction of speed)—

(1) By collision of one matter particle with another.

(2) Due to friction when they become dry

(3) When they reach the edge of universe (*lokant*) (since there is absence of *dharmastikaya* or entity of motion beyond that point)

### *चक्षुः-पद* CHAKSHU-PAD (SEGMENT OF VISION)

**३८१. तिविहे चक्खू पण्णत्ते, तं जहा—एगचक्खू, बिचक्खू, तिचक्खू।**

छउमत्थे णं मणुस्से एगचक्खू, देवे बिचक्खू, तहारूवे समणे वा माहणे वा उप्पण्णणाणदंसणधरे तिचक्खुत्ति वत्तव्वं सिया।

३८१. चक्षुष्मान् (नेत्र वाले) तीन प्रकार के है-(१) एकचक्षु, (२) द्विचक्षु, और (३) त्रिचक्षु।

(१) छद्मस्थ मनुष्य एक चक्षु होता है। (२) देव द्विचक्षु होते हैं, क्योंकि उनके द्रव्य नेत्र के साथ अवधिज्ञान रूप दूसरा भी नेत्र होता है। (३) केवलज्ञान और केवलदर्शन का धारक श्रमण-माहन त्रिचक्षु होते है।

**381.** People having vision are of three kinds—(1) *ekachakshu* (single vision), (2) *dvichakshu* (double vision), and (3) *trichakshu* (triple vision)

(1) A *chhadmasth* (a person in the state of bondage) is *ekachakshu* because he only has physical means of vision, i e eyes (2) A *dev* (divine being) is *dvichakshu* because besides eyes he also has *avadhijnana* as another means of vision (3) An ascetic with *keval-jnana* and *keval-darshan* is *trichakshu* because besides eyes he has these two faculties.

### *अभिसमागम-पद* ABHISAMAGAM-PAD (SEGMENT OF RIGHT KNOWLEDGE)

३८२. तिविहे अभिसमागमे पण्णत्ते, तं जहा—उड्ढं, अहं, तिरियं।

जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जति, से णं तप्पढमताए उड्ढमभिसमेति, ततो तिरियं, ततो पच्छा अहे। अहोलोगे णं दुरभिगमे पण्णत्ते समणाउसो !

३८२. अभिसमागम-(वस्तु-स्वरूप का यथार्थज्ञान, सम्यग्ज्ञान) तीन प्रकार का होता है-(१) ऊर्ध्वअभिसमागम, (२) तिर्यक्अभिसमागम, और (३) अध अभिसमागम।

तथारूप श्रमण-माहन को जब अतिशययुक्त ज्ञान-दर्शन (अवधिज्ञान) उत्पन्न होता है, तब वह सर्वप्रथम ऊर्ध्वलोक को जानता है। तत्पश्चात् तिर्यक्लोक को और उसके पश्चात् अधोलोक को जानता है।

हे आयुष्मन् श्रमणो ! अधोलोक सबसे अधिक दुरभिगम, कठिनाई से जाना जाता है।

**382.** *Abhisamagam* (the factual knowledge of the true form of things or right knowledge) is of three kinds—(1) *urdhva-abhisamagam* (right knowledge of the upper world), (2) *tiryak-abhisamagam* (right knowledge of the transverse world), and (3) *adho-abhisamagam* (right knowledge of the lower world)

When an ascetic as described in scriptures acquires miraculous knowledge and perception (*avadhi-jnana*) he first of all knows and understands the *urdhva lok* (upper world), then the *tiryak lok* (transverse world) and last of all the *adho lok* (lower world)

O Long lived *Shramans* ! The lower world is the most difficult to comprehend.

### ऋद्धि-पद RIDDHI-PAD (SEGMENT OF WEALTH)

**३८३. तिविहा इड्ढी पण्णत्ता, तं जहा—देविड्ढी, राइड्ढी, गणिड्ढी।**

३८३. ऋद्धि (ऐश्वर्य) तीन प्रकार की होती है-(१) देव-ऋद्धि, (२) राज्य-ऋद्धि, और (३) गणि-(आचार्य) ऋद्धि।

**383.** *Riddhi* (wealth) is of three kinds—(1) *dev-riddhi* (divine wealth), (2) *rajya-riddhi* (state wealth) and (3) *gani-riddhi* (preceptor's wealth).

**३८४. देविड्ढी तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—विमाणिड्ढी, विगुव्वणिड्ढी, परियारणिड्ढी।**

**अहवा—देविड्ढी तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—सचित्ता, अचित्ता, मीसिता।**

३८४. देव-ऋद्धि तीन प्रकार की है-(१) विमान-ऋद्धि, (२) वैक्रिय-ऋद्धि, और (३) परिचारणा-ऋद्धि (काम क्रीडा की शक्ति)।

अथवा देव-ऋद्धि तीन प्रकार की है-(१) **सचित्त-ऋद्धि** (देवी-देवादि का परिवार), (२) **अचित्त ऋद्धि**-(वस्त्र-आभूषणादि), और (३) **मिश्र-ऋद्धि**-(वस्त्राभरणभूषित देवी आदि)।

**384.** *Dev-riddhi* (divine wealth) is of three kinds—(1) *vimaan-riddhi* (wealth of celestial vehicles), (2) *vaikriya-riddhi* (power of transmutation), and (3) *paricharana-riddhi* (power of sexual indulgence).

Also *dev-riddhi* (divine wealth) is of three kinds—(1) *sachitta-riddhi* (living wealth, such as retinue of gods and goddesses), (2) *achitta-riddhi* (non-living wealth, such as garb, ornaments etc ), and (3) *mishra-riddhi* (mixed, such as adorned goddesses)

**३८५. राइड्ढी तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—रण्णो अतियाणिड्ढी, रण्णो णिजाणिड्ढी, रण्णो बल-वाहण-कोस-कोट्ठागारिड्ढी।**

**अहवा—राइड्ढी तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—सचित्ता, अचित्ता, मीसिता।**

३८५. राज्य-ऋद्धि तीन प्रकार की होती है-

(१) **अतियान-ऋद्धि**-राजा या राजा के विशिष्ट अतिथि के नगर प्रवेश के समय की जाने वाली तोरण-द्वारादि रूप सजावट। (२) **निर्याण-ऋद्धि**-नगर से बाहर निकलने पर उनके साथ चलने वाला वैभव। (३) **कोष-कोष्ठागार-ऋद्धि**-सेना, वाहन, खजाना और धान्य-भाण्डारादि रूप।

अथवा राज्य-ऋद्धि तीन प्रकार की होती है-

(१) सचित्त–ऋद्धि–रानी, सेवक, परिवारादि। (२) अचित्त–ऋद्धि–वस्त्र, आभूषण, अस्त्र–शस्त्रादि। (३) मिश्र–ऋद्धि–अस्त्र–शस्त्र धारक रोना आदि।

**385.** *Rajya-riddhi* (state wealth) is of three kinds—

(1) *atiyaan-riddhi*—The elaborate decoration of a city including making of ornamental gates etc on the occasion of entry of a king or a special guest (2) *niryaan-riddhi*—the accompanying display of grandeur when a king goes out of the city (3) *kosh-koshtagar-riddhi*—army, vehicles, treasury and granary etc

Also *rajya-riddhi* (state wealth) is of three kinds—(1) *sachitta-riddhi* (living wealth, such as queen, family and retinue), (2) *achitta-riddhi* (material wealth, such as garb, ornaments, weapons etc ), and (3) *mishra-riddhi* (mixed, such as guards and army equipped with armament)

**३८६. गणिड्ढी तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–णाणिड्ढी, दंसणिड्ढी, चरित्तिड्ढी।**

**अहवा–गणिड्ढी तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–सचित्ता, अचित्ता, मीसिता।**

३८६. गणि–ऋद्धि (आचार्य की ऋद्धि) तीन प्रकार की होती है–(१) ज्ञान–ऋद्धि–विशिष्ट श्रुत–सम्पदा की प्राप्ति तथा गण मे विशिष्ट ज्ञानी श्रमण। (२) दर्शन–ऋद्धि–निर्ग्रन्थ प्रवचन मे नि शकितादि गुण एव प्रभावक प्रवचनशक्ति सम्पन्न शिष्य परिवार। (३) चारित्र–ऋद्धि–निरतिचार चारित्र प्रतिपालना करने वाले श्रमण।

अथवा गणि–ऋद्धि तीन प्रकार की होती है–(१) सचित्त–ऋद्धि–शिष्य–परिवार आदि। (२) अचित्त–ऋद्धि–वस्त्र, पात्र, शास्त्र–सग्रहादि। (३) मिश्र–ऋद्धि–वस्त्र–पात्रादि से युक्त शिष्य–परिवारादि।

**386.** *Gani-riddhi or acharya-riddhi* (wealth of a preceptor) is of three kinds—(1) *jnana-riddhi*—acquisition of profound knowledge of scriptures and also the wealth of highly talented disciples (2) *darshan-riddhi*—the capacity of eloquent and unambiguous discourse and wealth of impressive speakers among disciples (3) *chaaritra-riddhi*—following of unblemished code of conduct and having wealth of such ascetic followers

Also *gani-riddhi* (preceptor's wealth) is of three kinds—(1) *sachitta-riddhi* (living wealth, such as family of disciples), (2) *achitta-riddhi* (material wealth, such as garb, bowls, scriptures etc ), and (3) *mishra-riddhi* (mixed, such as disciples with garb and ascetic equipment)

**गौरव–पद GAURAV-PAD (SEGMENT OF CONCEIT)**

**३८७. तओ गारवा पण्णत्ता, तं जहा–इड्ढीगारवे, रसगारवे, सातागारवे।**

३८७. गौरव तीन प्रकार का होता है–(१) **ऋद्धि–गौरव**–लौकिक व लोकोत्तर पूज्यता का अभिमान। (२) **रस–गौरव**–दूध, घृत, मिष्ठान रसादि की प्राप्ति का अभिमान। (३) **साता–गौरव**–सुखशीलता, सुकुमारता सम्बन्धी गौरव।

**387.** *Gaurav* (conceit) is of three kinds—(1) *riddhi-gaurav* (conceit of mundane and super mundane adoration), (2) *rasa-gaurav* (conceit of acquisition of milk, butter, sweets and other tasty things), and (3) *sata-gaurav* (conceit of being happy, comfortable etc.).

**करण–पद KARAN-PAD (SEGMENT OF RITUALS)**

**३८८. तिविहे करणे पण्णत्ते, तं जहा–धम्मिए करणे, अधम्मिए करणे, धम्मियाधम्मिए करणे।**

३८८. करण (क्रिया अनुष्ठान) तीन प्रकार का है–(१) **धार्मिक–करण**–संयमधर्म के अनुकूल अनुष्ठान। (२) **अधार्मिक–करण**–संयमधर्म के प्रतिकूल आचरण। (३) **धार्मिकाधार्मिक–करण**–मिश्रित धर्माचरण और अधर्माचरणरूप प्रवृत्ति।

**388.** *Karan* (rituals) are of three kinds—(1) *dharmik-karan* (rituals conforming to the ascetic-discipline), (2) *adharmik-karan* (rituals against the ascetic discipline), and (3) *dharmikadharmik-karan* (mixed rituals).

**धर्म–स्वरूप–पद (धर्म के तीन अंग) DHARMA-SVAROOP-PAD (SEGMENT OF FORM OF RELIGION)**

**३८९. तिविहे भगवया धम्मे पण्णत्ते, तं जहा–सुअहिज्झिए, सुज्झाइए, सुतवस्सिए। जहा सुअहिज्झियं भवति तदा सुज्झाइयं भवति, जया सुज्झाइयं भवति तदा सुतवस्सियं भवति, से सुअहिज्झिए सुज्झाइए सुतवस्सिए सुयक्खाए णं भगवता धम्मे पण्णत्ते।**

३८९. भगवान ने तीन प्रकार का धर्म कहा है–(१) **सु–अधीत** (समीचीन रूप से अध्ययन किया गया), (२) **सु–ध्यात** (समीचीन रूप से चिन्तन किया गया), और (३) **सु–तपस्यित** (सु–आचरित)।

जब धर्म सु–अधीत होता है, तब वह सु–ध्यात होता है। जब वह सु–ध्यात होता है, तब वह सु–तपस्यित होता है। सु–अधीत, सु–ध्यात और सु–तपस्यित धर्म को भगवान ने स्वाख्यात धर्म (सम्यक् रूप मे कथित) कहा है। (अध्ययन, ध्यान और तप, धर्म आराधना का यह क्रमबद्ध स्वरूप है)

**389.** *Bhagavan* has stated three kinds of *dharma* (religion)—(1) *su-adheet* (properly studied), (2) *su-dhyat* (properly contemplated), and (3) *su-tapasyit* (properly followed in conduct).

When religion is properly studied then only it is properly contemplated When it is properly contemplated then only it is properly followed in conduct *Bhagavan* has rightly and comprehensively stated the *su-adheet* (properly studied), *su-dhyat* (properly contemplated) and *su-tapasyit* (properly followed in conduct) religion (This is the proper sequence of religious practice—study, meditation and austerities)

**ज्ञ–अज्ञ–पद JNA-AJNA-PAD (SEGMENT OF AWARENESS AND UNAWARENESS)**

**३९०. तिविहा वावत्ती पण्णत्ता, तं जहा–जाणू, अजाणू, वितिगिच्छा। [ ३९१. एवं अज्झोववज्जणा। ३९२. एवं परियावज्जणा। ]**

३९०. **व्यावृत्ति** (पापरूप कार्यों से निवृत्ति) तीन प्रकार की है–(१) ज्ञानपूर्वक, (२) अज्ञानपूर्वक, और (३) विचिकित्सा (सशयादि) पूर्वक। [ ३९१. इसी तरह **अध्युपपादन** (इन्द्रिय–विषयों मे आसक्ति एवं मूर्च्छा) तीन प्रकार की है। ३९२. **पर्यापादन** (विषयो का सेवन) भी उक्त तीन प्रकार का है।]

**390.** *Vyavritti* (release from sinful indulgence) is of three kinds—(1) *jnana-purvak* (with awareness), (2) *ajnana-purvak* (without awareness), and (3) *vichikitsa-purvak* (doubtfully) [**391.** In the same way *adhyupapadan* (obsession and fondness for sensual pleasures) is of three kinds **392.** *Paryapadan* (indulgence in sensual pleasures) is also of aforesaid three kinds ]

**अन्त–पद ANT-PAD (SEGMENT OF COMPREHENSION)**

**३९३. तिविहे अंते पण्णत्ते, तं जहा–लोगंते, वेयंते, समयंते।**

३९३. अन्त (रहस्य का निर्णय) तीन प्रकार का होता है–

(१) **लोकान्त निर्णय**–लौकिक शास्त्रो के रहस्य का निर्णय। (२) **वेदान्त निर्णय**–वैदिक शास्त्रो के रहस्य का निर्णय। (३) **समयान्त निर्णय**–जैनसिद्धान्तो के रहस्य का निर्णय (समय का अर्थ यहाँ स्व–सिद्धान्त है)।

**393.** *Ant* (comprehending the secrets) is of three kinds—

(1) *Lokant nirnaya*—comprehending the secrets of mundane scriptures, (2) *Vedant nirnaya*—comprehending the secrets of Vedic scriptures, and (3) *samayant nirnaya*—comprehending the secrets of Jain scriptures (*samaya* here means one's own scriptures)

*जिन–पद* JINA-PAD (SEGMENT OF JINA)

**३९४. तओ जिणा पण्णत्ता, तं जहा—ओहिणाणजिणे, मणपज्जवणाणजिणे, केवलणाणजिणे। ३९५. तओ केवली पण्णत्ता, तं जहा—ओहिणाणकेवली, मणपज्जवणाणकेवली, केवलणाणकेवली। ३९६. तओ अरहा पण्णत्ता, तं जहा—ओहिणाणअरहा, मणपज्जवणाणअरहा, केवलणाणअरहा।**

३९४. जिन तीन प्रकार के होते है–(१) अवधिज्ञानी जिन, (२) मन.पर्यवज्ञानी जिन, और (३) केवलज्ञानी जिन। ३९५. केवली तीन प्रकार के होते है–(१) अवधिज्ञानी केवली, (२) मन पर्यवज्ञान केवली, और (३) केवलज्ञान केवली। ३९६. अर्हन्त तीन प्रकार के होते है–(१) अवधिज्ञानी अर्हन्त, (२) मन.पर्यवज्ञानी अर्हन्त, और (२) केवलज्ञानी अर्हन्त।

(यहाँ अतीन्द्रियज्ञान की अपेक्षा तीनों का कथन है। जो अवधिज्ञानी और मन.पर्यवज्ञानी उसी भव मे केवलज्ञान प्राप्त करते है यहाँ उनका कथन है।)

**394.** *Jina* (the conqueror of attachment and aversion) are of three kinds—(1) *avadhi-jnani jina*, (2) *manahparyava-jnani jina,* and (3) *keval-jnani jina* **395.** *Kevali* (the omniscient) are of three kinds—(1) *avadhi-jnani kevali*, (2) *manahparyava-jnani kevali,* and (3) *keval-jnani kevali* **396.** *Arhant* (*Tirthankar*) are of three kinds—(1) *avadhi-jnani Arhant*, (2) *manahparyava-jnani Arhant,* and (3) *keval-jnani Arhant*. (This statement is in context of super-natural powers This includes the *avadhi-jnanis* and *manahparyava-jnanis* who attain *keval-jnana* (omniscience) during the very same birth )

*लेश्या–पद* LESHYA-PAD (SEGMENT OF COMPLEXION OF SOUL)

**३९७. तओ लेसाओ दुब्भिगंधाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेसा, णीललेसा, काउलेसा। ३९८. तओ लेसाओ सुब्भिगंधाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा। ३९९. तओ लेसाओ दोग्गतिगामिणीओ, संकिलिट्ठाओ अमणुण्णाओ, अविसुद्धाओ, अप्पसत्थओ, सीतलुक्खाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेसा, णीणलेसा, काउलेसा। ४००. तओ लेसाओ सोगतिगामिणीओ, असंकिलिट्ठाओ मणुण्णाओ, विसुद्धाओ, पसत्थाओ, णिद्धण्हाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा।]**

३९७. तीन लेश्याएँ दुरभिगंध (दुर्गन्धयुक्त पुद्गलो) वाली होती है–(१) कृष्णलेश्या, (२) नीललेश्या, और (३) कापोतलेश्या। ३९८. तीन लेश्याएँ सुरभिगध (सुगन्ध) वाली होती है–(१) तेजोलेश्या, (२) पद्मलेश्या, और (३) शुक्ललेश्या। ३९९. [पहली तीन लेश्याएँ, जीव को दुर्गति में ले जाने वाली, सक्लिष्ट–(क्लेशयुक्त परिणाम वाली), अमनोज्ञ अविशुद्ध, अप्रशस्त और शीत–रूक्ष होती है। ४००. अन्तिम तीन लेश्याएँ जीव को सुगति मे ले जाने वाली; असक्लिष्ट, मनोज्ञ, विशुद्ध, प्रशस्त और स्निग्ध–उष्ण होती है।]

**397.** Three *leshyas* are *durabhigandh* (having stinking particles)—(1) *krishna leshya* (black complexion of soul), (2) *neel leshya* (blue complexion of soul), and (3) *kapot leshya* (pigeon complexion of soul) **398.** Three *leshyas* are *surabhigandh* (having fragrant particles)—(1) *tejo leshya* (fiery complexion of soul), (2) *padma leshya* (yellow complexion of soul), and (3) *shukla leshya* (white complexion of soul). **399.** [(first three *leshyas* are—) *Durgatigamini* (leading to bad birth), *sanklisht* (painful), *amanojna* (detestable), *avishuddh* (impure), *aprashast* (ignoble) and cold-rough **400.** (last three *leshyas* are—) *Sugatigamini* (leading to good birth), *asanklisht* (not painful), *manojna* (attractive), *vishuddh* (pure), *prashast* (noble) and warm-smooth

### मरण-पद MARAN-PAD (SEGMENT OF DEATH)

**४०१. तिविहे मरणे पण्णत्ते, तं जहा–बालमरणे, पंडियमरणे बालपंडियमरणे। ४०२. बालमरणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा–ठितलेस्से, संकिलिट्ठलेस्से, पज्जवजातलेस्से। ४०३. पंडियमरणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा–ठितलेस्से, असंकिलिट्ठलेस्से, पज्जवजातलेस्से। ४०४. बालपंडियमरणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा–ठितलेस्से, असंकिलिट्ठलेस्से, अपज्जवजातलेस्से।**

४०१. मरण तीन प्रकार का होता है–(१) बालमरण (असयमी का मरण), (२) पडितमरण (संयमी का मरण), और (३) बाल-पडितमरण (सयमासयमी-श्रावक का मरण)। ४०२. बालमरण तीन प्रकार का होता है–(१) **स्थितलेश्य** (जिस सक्लिष्ट लेश्या मे है, उसी मे मरण करना), (२) **संक्लिष्टलेश्य** (सक्लेशवृद्धि से युक्त अशुभ लेश्या), और (३) **पर्यवजातलेश्य** (एक लेश्या से कुछ विशुद्ध दूसरी लेश्या मे मरण प्राप्त करना)। ४०३. पण्डितमरण तीन प्रकार का है–(१) **स्थितलेश्य** (स्थिर विशुद्ध लेश्या वाला), (२) **असंक्लिष्टलेश्य** (सक्लेश से रहित लेश्या वाला), और (३) **पर्यवजातलेश्य** (प्रवर्धमान विशुद्ध लेश्या वाला)। ४०४. बाल-पण्डितमरण तीन प्रकार का होता है–(१) स्थितलेश्य, (२) असंक्लिष्टलेश्य, और (३) अपर्यवजातलेश्य (हानि वृद्धि से रहित लेश्या वाला)। *(विस्तृत विवेचन के लिए देखे, हिन्दी टीका, पृष्ठ ६२०)*

**401.** *Maran* (death) is of three kinds—(1) *baal-maran* (death of an indisciplined), (2) *pundit-maran* (death of a disciplined), and (3) *baal-pundit-maran* (death of one who is partially disciplined and partially indisciplined both) **402.** *Baal-maran* (death of an indisciplined) is of three kinds—(1) *sthit-leshya* (to die in the same painful *leshya* or state of soul), (2) *sanklisht-leshya* (to die with further deterioration in the painful *leshya*), and (3) *paryavajat-leshya* (to die with an improvement from the painful *leshya*) **403.** *Pundit-maran* (death of a disciplined) is of three kinds—(1) *sthit-leshya* (to die in the same pure *leshya* or state of soul),

(2) *asanklisht-leshya* (to die without any deterioration in the purity of *leshya*), and (3) *paryavajat-leshya* (to die with an improvement in purity of *leshya*). **404.** *Baal-pundit-maran* (death of one who is both disciplined and indisciplined) is of three kinds—(1) *sthit-leshya* (to die in the same *leshya* or state of soul), (2) *asanklisht-leshya* (to die without any deterioration in the painful *leshya*), and (3) *aparyavajat-leshya* (to die without an improvement in purity of *leshya*)

### अश्रद्धावान्–पराभव–पद ASHRADDHAVAN-PARABHAV-PAD (SEGMENT OF DEFEAT OF NON-BELIEVER)

**४०५. तओ ठाणा अव्ववसितस्स अहिताए असुभाए अखमाए अणिस्सेसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा–**

**(१) से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए णिग्गंथे पावयणे संकिते कंखिते वितिगिच्छिते भेदसमावण्णे कलुससमावण्णे णिग्गंथं पावयणं णो सद्दहति णो पत्तियति णो रोएति, तं परिस्सहा अभिजुंजिय–अभिजुंजिय–अभिभवंति, णो से परिस्सहे अभिजुंजिय–अभिजुंजिय अभिभवइ।**

**(२) से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए पंचहिं महव्वएहिं संकिते जाव कलुससमावण्णे पंच महव्वयाइं णो सद्दहति जाव णो से परिस्सहे अभिजुंजिय–अभिजुंजिय अभिभवति।**

**(३) से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए छहिं जीवणिकाएहिं जाव अभिभवति।**

४०५. अव्यवस्थित (अश्रद्धावान् या अस्थिरचित्त) निर्ग्रन्थ के लिए तीन स्थान अहित, अशुभ, अक्षम, अनिःश्रेयस और अनानुगामिता के कारण होते है–

(१) वह मुण्डित हो, तथा अगार से अनगार धर्म मे प्रव्रजित होकर निर्ग्रन्थ प्रवचन मे शंकाशील, संशयग्रस्त, विचिकित्सायुक्त, भेदसमापन्न और कलुषित मन होकर निर्ग्रन्थ–प्रवचन पर श्रद्धा नही करता, प्रतीति नही करता, रुचि नही करता। उसे परीषह उपस्थित होकर अभिभूत कर देते हैं, वह परीषहों से जूझ–जूझकर उन्हें अभिभूत (पराजित) नही कर पाता।

(२) वह मुण्डित तथा अगार से अनगार धर्म मे प्रव्रजित होकर पाँच महाव्रतो मे शकाशील यावत् कलुषसमापन्न होकर पाँच महाव्रतो पर श्रद्धा नही करता और परीषहों से जूझ–जूझकर उन्हें अभिभूत नही कर पाता।

(३) वह मुण्डित हो अगार से अनगार धर्म मे प्रव्रजित होकर छह जीव–निकाय पर श्रद्धा नही करता, प्रतीति नही करता। उसे परीषह प्राप्त होकर अभिभूत कर देते है, वह उन्हे अभिभूत नहीं कर पाता।

**405.** Three dispositions of an *avyavasthit* (non-believer or fickle minded) ascetic are *ahitkar* (harmful), *ashubh* (bad), *aksham* (improper), *anihshreyash* (disadvantageous) and *ananugamik* (cause of demeritorious bondage for future life) for him—

(1) On getting tonsured and getting initiated as a homeless ascetic after renouncing his household, he does not have belief, awareness and interest in the ascetic-sermon out of suspicion, misgiving, doubt, distrust and perversion. Then afflictions overpower him He is unable to confront and overpower afflictions

(2) On getting tonsured and getting initiated as a homeless ascetic after renouncing his household, he does not have belief, and so on up to perversion in the five great vows Then afflictions overpower him He is unable to confront and overpower afflictions

(3) On getting tonsured and getting initiated as a homeless ascetic after renouncing his household, he does not have belief, and so on up to . perversion in the six *jiva-nikaya* (six life-forms) Then afflictions overpower him He is unable to confront and overpower afflictions

**विवेचन**—प्रस्तुत सूत्र मे बताये हुए जिन तीन स्थानो पर श्रद्धा आदि नही करने पर अनगार परीषहो से अभिभूत होता है, वे हैं-(१) निर्ग्रन्थ प्रवचन, (२) पच महाव्रत, और (३) छह जीव-निकाय। निर्ग्रन्थ को इन तीनो स्थानो पर श्रद्धा करना अत्यन्त आवश्यक है, जो श्रद्धा नही करता उसकी सारी प्रव्रज्या उसी के लिए दु:खदायिनी हो जाती है। पारिभाषिक शब्दो का अर्थ इस प्रकार है-

**अक्षम**—असमर्थता। **अनिःश्रेयस**—अकल्याणकर। **अनानुगामिकता**—भविष्य के लिए अशुभ। **कांक्षित**—मतान्तर की आकाक्षा रखने वाला। **विचिकित्सा**—फल के प्रति सदेह रखना। **भेदसमापन्न**—दुविधा मे फँसा, निष्ठाहीन। **कलुषसमापन्न**—कलुषित मन वाला।

**Elaboration**—The three dispositions enumerated in this aphorism regarding disbelief which lead to subjugation by afflictions are (1) ascetic-sermon, (2) five great vows, and (3) six life forms It is vital for an ascetic to have faith in them failing which his ascetic life becomes a source of misery. The technical terms used are explained as follows—

*Aksham*—improper, leading to inability to handle. *Anihshreyash*—disadvantageous *Ananugamik*—cause of demeritorious bondage for future life *Kankshit*—inclination to drift to other school, distrust. *Vichikitsa*—doubt in assured result. *Bhedasampannata*—caught in quandary and distrust. *Kalush sampannata*—perversion

## श्रद्धावान्–विजय–पद SHRADDHAVAN-VIJAYA-PAD
## (SEGMENT OF VICTORY OF THE BELIEVER)

**४०६. तओ ठाणा ववसियस्स हियाए जाव आणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा–**

**(१) से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए णिग्गंथे पावयणे णिस्संकिते णिक्कंखिते जाव णो कलुससमावण्णे णिग्गंथं पावयणं सद्दहति पत्तियति रोएति। से परिस्सहे अभिजुंजिय–अभिजुंजिय अभिभवति, णो तं परिस्सहा अभिजुंजिय–अभिजुंजिय अभिभवंति।**

**(२) से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पंचहिं महव्वएहिं णिस्संकिए णिक्कंखिए जाव परिस्सहे अभिजुंजिय–अभिजुंजिय अभिभवइ, णो तं परिस्सहा अभिजुंजिय–अभिजुंजिय अभिभवंति।**

**(३) से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए छहिं जीवणिकाएहिं णिस्संकिते जाव परिस्सहे अभिजुंजिय–अभिजुंजिय अभिभवति, णो तं परिस्सहा अभिजुंजिय–अभिजुंजिय अभिभवंति।**

४०६. व्यवसित (श्रद्धावान् स्थितप्रज्ञ) निर्ग्रन्थ के लिए तीन स्थान हित, शुभ और अनुगामिता के कारण होते है–

(१) जो व्यक्ति मुण्डित हो घर त्यागकर अनगार धर्म मे प्रव्रजित होकर निर्ग्रन्थ प्रवचन मे शकारहित, नि काक्षित, निर्विचिकित्सित, अभेदसमापन्न यावत् प्रसन्न भाव युक्त होकर निर्ग्रन्थ प्रवचन मे श्रद्धा करता है, प्रीति करता है, उसमे मन लगाता है, वह परीषहो से युद्ध कर उन्हे अभिभूत कर देता है, किन्तु परीषह उसे अभिभूत नही कर पाते।

(२) जो मुण्डित हो, अनगार धर्म मे प्रव्रजित होकर पाँच महाव्रतों मे शकारहित, काक्षारहित, पाँच महाव्रतो में श्रद्धा करता है, प्रीति करता है, रुचि करता है। वह परीषहो से युद्ध कर उन्हे पराजित कर देता है, उसे परीषह पराजित नही कर पाते।

(३) जो मुण्डित हो अनगार धर्म मे प्रव्रजित होकर छह जीवनिकायो के विषय में शंकारहित आदि होकर उनमे श्रद्धा करता है, वह परीषहो से लडकर उन्हे पराजित कर देता है, किन्तु उसे परीषह पराभूत नहीं कर पाते।

**406.** Three dispositions of a *vyavasthit* (believer or resolute) ascetic are *hitkar* (beneficial), *shubh* (good), ... and so on up to... *anugamik* (cause of meritorious bondage for future life) for him—

(1) On getting tonsured and getting initiated as a homeless ascetic after renouncing his household, he has belief, awareness and interest in the ascetic-sermon without any suspicion, misgiving, doubt, distrust and

perversion. Then he confronts and overpowers afflictions. Afflictions never overpower him.

(2) On getting tonsured and getting initiated as a homeless ascetic after renouncing his household, he has belief, and so on up to . perversion in the five great vows Then he confronts and overpowers afflictions Afflictions never overpower him

(3) On getting tonsured and getting initiated as a homeless ascetic after renouncing his household, he has belief, and so on up to perversion in the six *jiva-nikaya* (six life-forms) Then he confronts and overpowers afflictions Afflictions never overpower him

**पृथ्वी-वलय-पद PRITHVI-VALAYA-PAD (SEGMENT OF RINGS AROUND EARTH)**

**४०७. एगमेगा णं पुढवी तिहिं वलएहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता, तं जहा—घणोदधिवलएणं, घणवातवलएणं, तणुवायवलएणं।**

४०७. रत्नप्रभादि सातो पृथ्वियाँ प्रत्येक तीन-तीन वलयो के द्वारा चारो ओर से घिरी हुई है—(१) **घनोदधिवलय**—(हिम-शिला के समान घन रूप मे जमा हुआ जल) से, (२) **घनवातवलय**—(घन रूप ठोस वायु) से, और (३) **तनुवातवलय**—(घन की अपेक्षा पतली वायु) से।

**407.** Each of the seven *prithvis* (hells) are surrounded by three *valayas* (rings)—(1) *ghanodadhi-valaya* (ring of frozen water, like a block of ice), (2) *ghanavaat-valaya* (ring of dense air), and (3) *tanuvaat-valaya* (ring of rarefied air, as compared to the aforesaid dense air)

**विग्रहगति-पद VIGRAHA-GATI-PAD (SEGMENT OF REINCARNATION-MOVEMENT)**

**४०८. णेरइया णं उक्कोसेणं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जंति। एगिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं।**

४०८. एकेन्द्रियो को छोडकर नैरयिको से वैमानिक देवो तक के सभी दण्डको के जीव उत्कृष्ट तीन समय वाले विग्रहगति से उत्पन्न होते है।

**408.** Besides one sensed beings all beings belonging to all *dandaks* (places of suffering) from hell beings to *Vaimanik* gods are born with an oblique movement of upto three *Samayas*

**विवेचन**—जब जीव मरकर अगले जन्म मे शरीर-धारण करने के लिए जाता है, उसके बीच की गति को विग्रहगति कहते है। यह दो प्रकार की होती है—ऋजुगति और वक्रगति। ऋजगति सीधी समश्रेणी वाले स्थान पर उत्पन्न होने वाले जीव की होती है और उसमे एक समय लगता है। जब जीव मरकर विषम श्रेणी वाले स्थान पर उत्पन्न होता है तब उसे मुडकर के नियत स्थान पर जाना पडता है। इसलिए

वह वक्रगति कही जाती है। जिस विग्रह या वक्रगति में एक मोड लेना पडता है, उसे पाणिमुक्ता गति कहते है। इस गति में दो समय लगते है। लागल नाम हल का है, जैसे हल के दो मोड होते है, उसी प्रकार जिस वक्रगति में दो मोड़ लेने पड़ते हैं, उसे लांगलिका गति कहते है। इस गति मे तीन समय लगते है। बैल चलते हुए जैसे मूत्र (पेशाब) करता जाता है तब भूमि पर पतित मूत्र–धारा मे अनेक मोड़ पड जाते हैं, इसी प्रकार तीन मोड वाली गति को गोमूत्रिका गति कहते है। इस गति में तीन मोड और चार समय लगते हैं।

एकेन्द्रिय जीवों के सिवाय सभी दण्डको के जीव किसी भी स्थान से मरकर किसी भी स्थान मे दो मोड लेकर के तीसरे समय मे नियत स्थान पर उत्पन्न हो जाते है, क्योंकि सभी त्रस जीव त्रसनाडी के भीतर ही उत्पन्न होते और मरते है। किन्तु स्थावर एकेन्द्रिय जीव त्रसनाडी के बाहर भी समस्त लोकाकाश मे कही से भी मरकर कही भी उत्पन्न हो सकते है। अत· जब कोई एकेन्द्रिय जीव लोक के कोण प्रदेश से मरकर दूसरे कोण प्रदेश मे, क्षेत्र मे उत्पन्न होता है, तब उसे तीन मोड लेने पडते है और उसमे चार समय लगते है। अत 'एकेन्द्रिय को छोडकर' ऐसा सूत्र मे कहा गया है। *(स्पष्ट समझने के लिए चित्र सख्या ७ देखे)*

**Elaboration**—At the time of reincarnation when a soul moves from the existing body to the new place of birth, this movement is called *vigrah-gati* (reincarnation-movement) It is of two kinds—*riju gati* (straight movement), which is of a duration of one *Samaya* and is applicable to a soul destined to a place at the same level When a soul is destined to a place at a different level it has to take a turn to reach the destination. Therefore it is called *vakra gati* (oblique movement) When one turn is involved it is called *panimukta-gati* and is of a duration of two *Samayas*. *Langal* means plough Oblique movement where plough-like two turns are involved is called *langalik-gati* and it is of a duration of three *Samayas* Oblique movement where three turns are involved is called *gaumutrika-gati* because it resembles the mark of urine of a walking cow The duration of this movement is four *Samayas*.

Except one sensed beings all other beings reincarnate after a movement in third *Samaya* with two turns irrespective of the place of death and reincarnation This is because all *tras* (mobile) beings die and reincarnate in *tras-nadi* (the central spine of the occupied space where mobile beings dwell) However, the one sensed *sthavar* (immobile) beings can die and reincarnate anywhere in the occupied space, even outside *tras-nadi* Therefore, when a one sensed being dies at one end of occupied space and reincarnates at another end the movement involves three turns and four *Samayas* That is the reason for the exclusion of one sensed beings from this norm *(for clarity refer to Illustration No 7)*

**क्षीणमोह-पद KSHEEN-MOHA-PAD (SEGMENT OF DESTRUCTION OF MOHA KARMA)**

**४०९. खीणमोहस्स णं अरहओ तओ कम्मंसा जुगवं खिज्जंति, तं जहा—णाणावरणिज्जं, दंसणावरणिज्जं, अंतराइयं।**

४०९. क्षीण मोह वाले (बारहवें गुणस्थानवर्ती) अर्हन्त के तीन कर्मांश-(कर्म-प्रकृतियाँ) एक साथ क्षीण होते है-(१) ज्ञानावरणीय, (२) दर्शनावरणीय, और (३) अन्तराय कर्म।

**409.** *Arhant* having *ksheen-moha* (destroyed deluding *karma*) undergoes destruction of three *karmansh* (*karma prakriti* or species of *karma* by qualitative segregation) at once—(1) *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring *karma*), (2) *Darshanavaraniya* (perception obscuring *karma*), and (3) *Antaraya* (power hindering *karma*)

**नक्षत्र-पद NAKSHATRA-PAD (SEGMENT OF CONSTELLATIONS)**

**४१०. अभिईणक्खत्ते तितारे पण्णत्ते। ४११. एवं-सवणे अस्सिणी, भरणी, मगसिरे, पूसे, जेट्ठा।**

४१०. अभिजित नक्षत्र तीन तारा वाला है, ४११. इसी प्रकार श्रवण, अश्विनी, भरणी, मृगशिर, पुष्य और ज्येष्ठा भी तीन-तीन तारा वाले है।

**410.** There are three stars in Abhijit *nakshatra* (Lyrae, the 22nd lunar asterism) **411.** In the same way there are three stars each in Shravan (Alpha Aquilae, the 23rd lunar asterism), Bharani (35 Arietis; the 2nd), Pushya (Delta Cancri, the 8th) and Jyeshtha (Antares; the 18th)

**तीर्थंकर-पद TIRTHANKAR-PAD (SEGMENT OF TIRTHANKAR)**

**४१२. धम्माओ णं अरहाओ संती अरहा तिहिं सागरोवमेहिं तिचउब्भागपलिओवमऊणएहिं वीतिक्कंतेहिं समुप्पण्णे।**

**४१३. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जाव तच्चाओ पुरिसजुगाओ जुगंतकरभूमी।**

**४१४. मल्ली णं अरहा तिहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए। ४१५. [ एवं पासे वि अरहा पव्वइए। ]**

**४१६. समणस्स णं भगवतो महावीरस्स तिण्णिसया चउद्दसपुव्वीणं अजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसण्णिवातीणं जिण इव अवितहं वागरमाणाणं उक्कोसिया चउद्दसपुव्वि संपया हुत्था।**

**४१७. तओ तित्थयरा चक्कवट्टी होत्था, तं जहा-संती, कुंथू, अरो।**

४१२. धर्मनाथ तीर्थंकर के पश्चात् शान्तिनाथ तीर्थंकर तीन सागरोपमों मे से चौथाई भाग कम पल्योपम बीत जाने पर समुत्पन्न हुए।

४१३. श्रमण भगवान महावीर के पश्चात् तीसरे पुरुषयुग जम्बूस्वामी तक युगान्तकर भूमि, अर्थात् निर्वाणगमन का क्रम चलता रहा है।

४१४. मल्ली अर्हत् तीन सौ पुरुषों के साथ मुण्डित होकर प्रव्रजित हुए। ४१५. इसी प्रकार पार्श्व अर्हत् भी तीन सौ पुरुषो के साथ प्रव्रजित हुए।

४१६. श्रमण भगवान महावीर के तीन सौ शिष्य चौदह पूर्वधर थे। वे जिन नही होते हुए भी जिन के समान थे। सर्वाक्षर-सन्निपाती तथा भगवान के समान यथार्थ व्याख्यान करने वाले थे। यह भगवान महावीर की चतुर्दशपूर्वी उत्कृष्ट शिष्य-सम्पदा थी।

४१७. तीन तीर्थंकर चक्रवर्ती हुए-शान्ति, कुन्थु और अरनाथ।

**412.** Shantinaath *Tirthankar* was born after a passage of three quarters of a *Palyopam* less three Sagaropam

**413** After Bhagavan Mahavir the sequence of liberations (*yugantkar bhumi*) continued till the third head of the order (*purush-yug*) Jambuswami

**414** Malli Arhat got tonsured and initiated along with three hundred persons. **415.** In the same way Parshva Arhat also got initiated along with three hundred persons.

**416.** Three hundred disciples of Shraman Bhagavan Mahavir had the knowledge of fourteen *Purvas* (subtle canon). Although not Jina, they were like a Jina They were *sarvakshar-sannipati* and stated truth and reality like *Bhagavan* himself. This was the maximum expert category of Bhagavan Mahavir's fourteen-*Purva*-knowing disciples.

**417.** Three *Tirthankars* were *Chakravartis* (emperors)—Shanti, Kunthu and Ara Naath.

**विवेचन**—वर्णमाला के चौसठ अक्षरो के संयोग-सन्निपात असंख्य प्रकार के होते हैं। असंख्यात भेदो को जानने वाला ज्ञानी सर्वाक्षर-सन्निपाती श्रुतधर कहलाता है।

**Elaboration**—There are innumerable different combinations of the sixty four letters of the alphabet. A scholar who knows all these innumerable combinations is called *sarvakshar-sannipati*

## ग्रैवेयक–विमान–पद GRAIVEYAK-VIMAAN-PAD
### (SEGMENT OF GRAIVEYAK CELESTIAL VEHICLES)

**४१८. तओ गेविज्ज–विमाण–पत्थडा पण्णत्ता, तं जहा–हेट्ठिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे, मज्झिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे, उवरिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे।**

४१८. ग्रैवेयक विमान के तीन प्रस्तर है–अधस्तन (नीचे का) ग्रैवेयक विमान प्रस्तर, मध्यम (बीच का) ग्रैवेयक विमान प्रस्तर और उपरिम (ऊपर का) ग्रैवेयक विमान प्रस्तर।

**418.** There are three *prastars* (levels) of *Graiveyak vimaans* (*Graiveyak* celestial vehicles)—*adhastan* (lower) *Graiveyak vimaan prastar*, *madhyam* (middle) *Graiveyak vimaan prastar* and *uparim* (upper) *Graiveyak vimaan prastar*

**४१९. हिट्ठिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा–हेट्ठिम–हेट्ठिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे, हेट्ठिम–मज्झिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे, हेट्ठिम–उवरिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे। ४२०. मज्झिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा–मज्झिम–हेट्ठिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे, मज्झिम–मज्झिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे, मज्झिम–उवरिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे। ४२१. उवरिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा–उवरिम–हेट्ठिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे, उवरिम–मज्झिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे, उवरिम–उवरिम–गेविज्ज–विमाण–पत्थडे।**

४१९. अधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर तीन प्रकार का है–(१) अधस्तन–अधस्तन–ग्रैवेयक–विमान–प्रस्तर, (२) अधस्तन–मध्यम–ग्रैवेयक–विमान–प्रस्तर, और (३) अधस्तन–उपरिम–ग्रैवेयक–विमान–प्रस्तर। ४२०. मध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तर तीन प्रकार का है–(१) मध्यम–अधस्तन–ग्रैवेयक–विमान प्रस्तर, (२) मध्यम–मध्यम–ग्रैवेयक–विमान–प्रस्तर, और (३) मध्यम–उपरिम–ग्रैवेयक–विमान–प्रस्तर। ४२१. उपरिम ग्रैवेयक विमान प्रस्तर तीन प्रकार का है–(१) उपरिम–अधस्तन–ग्रैवेयक–विमान–प्रस्तर, (२) उपरिम–मध्यम–ग्रैवेयक–विमान–प्रस्तर, और (३) उपरिम–उपरिम–ग्रैवेयक–विमान–प्रस्तर।

**419.** *Adhastan* (lower) *Graiveyak vimaan prastar* is of three kinds—(1) *Adhastan-adhastan* (lower-lower) *Graiveyak viman prastar*, (2) *Adhastan-madhyam* (lower-middle) *Graiveyak viman prastar*, and (3) *Adhastan-adhastan* (lower-upper) *Graiveyak viman prastar* **420.** *Madhyam* (middle) *Graiveyak vimaan prastar* is of three kinds—(1) *Madhyam-adhastan* (middle-lower) *Graiveyak viman prastar*, (2) *Madhyam-madhyam* (middle-middle) *Graiveyak viman prastar*, and (3) *Madhyam-adhastan* (middle-upper) *Graiveyak viman prastar*.

**421.** *Uparim* (upper) *Graiveyak vimaan prastar* is of three kinds—(1) *Uparim-adhastan* (upper-lower) *Graiveyak viman prastar*, (2) *Uparim-madhyam* (upper-middle) *Graiveyak viman prastar*, and (3) *Uparim-uparim* (upper-upper) *Graiveyak viman prastar*.

**विवेचन**—बारहवे देवलोक से ऊपर नौ ग्रैवेयक विमान हैं। लोक पुरुष के ग्रीवा (गर्दन) स्थान पर अवस्थित होने के कारण इन्हें **ग्रैवेयक विमान** कहा जाता है।

ग्रैवेयक विमान सब मिलकर नौ है और वे एक-दूसरे के ऊपर अवस्थित है। उन्हें पहले तीन विभागो में कहा गया है-नीचे का त्रिक, बीच का त्रिक और ऊपर का त्रिक। तत्पश्चात् एक-एक त्रिक के तीन-तीन विकल्प किए गये है।

**Elaboration**—There are nine *Graiveyak vimaans* above the twelfth dimension of gods In the human model of universe these are located near the neck (*griva*) that is why they are called *Graiveyak vimaans*

There is a total number of nine *Graiveyak vimaans* located one above the other. First they have been grouped into three triads—lower triad, middle triad and upper triad After that three levels of every triad have been stated

### पापकर्म-पद PAAP-KARMA-PAD (SEGMENT OF DEMERITORIOUS KARMAS)

**४२२. जीवाणं तिट्ठाणणिव्वत्तिते पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसुं वा चिणंति वा चिणिस्संति वा, तं जहा-इत्थिणिव्वत्तिते, पुरिसणिव्वत्तिते, णपुंसगणिव्वत्तिते।**

**एवं-चिण-उवचिण-बंध उदीर-वेद तव णिज्जरा चेव।**

४२२. जीवो ने तीन स्थानों मे उत्पन्न होकर पुद्‌गलो का पाप कर्मरूप से संचय किया है, सचय करते है और सचय करेगे-

(१) स्त्रीनिर्वर्तित (स्त्री-रूप मे उत्पन्न होकर)। (२) पुरुषनिर्वर्तित (पुरुष-रूप मे उत्पन्न होकर)। (३) नपुंसकनिर्वर्तित (नपुसक-रूप मे उत्पन्न होकर)।

इसी प्रकार जीवो ने इन तीन स्थानो मे उत्पन्न होकर पुद्‌गलो का कर्मरूप से उपचय, बन्ध, उदीरण, वेदन तथा निर्जरण किया है, करते है और करेंगे।

**422.** Beings did, do and will acquire *pudgals* (matter particles) in the form of *paap-karma* (demeritorious *karmas*) after taking birth in three forms—(1) *stri-nivartit* (being born as a female), (2) *purush-nivartit* (being born as a male), and (3) *napumsak-nivartit* (being born as a neuter). In the same way, after taking birth in the said three forms a

being did, does and will augment (*upachaya*), fructify (*udiran*), experience (*vedan*) and shed (*nirjaran*) particles in the form of *paap-karma* (demeritorious *karmas*)

**पुद्गल–पद PUDGAL-PAD (SEGMENT OF MATTER)**

**४२३. तिपदेसिया खंधा अणंता पण्णत्ता।**

४२३. त्रि–प्रदेशी (तीन प्रदेश वाले) पुद्गल स्कन्ध अनन्त है।

**423.** There are infinite *tripradeshi pudgal-skandhs* (aggregates of three ultimate particles)

**४२४. एवं जाव तिगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता।**

४२४. इसी प्रकार तीन प्रदेशावगाढ, तीन समय की स्थिति वाले और तीन गुण वाले पुद्गल स्कन्ध अनन्त हैं तथा शेष सभी वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श के तीन–तीन गुण वाले पुद्गल–स्कन्ध अनन्त है।

॥ चतुर्थ उद्देशक समाप्त ॥

॥ तृतीय स्थान समाप्त ॥

**42..** In the same way there are infinite *tripradeshavagadh pudgal-skandhs* (ultimate particles having an existence of three smallest units of time and those occupying three space-points) and *pudgal-skandhs* (ultimate particles) with three units of each attribute from stability of two *Samayas* and so on up to . attribute of (appearance, smell, taste and touch) rough touch (*ruksh sparsh*)

**● END OF THE FOURTH LESSON ●**

**● END OF PLACE NUMBER THREE ●**

# चतुर्थ स्थान

*अध्ययन सार*

- चतुर्थ स्थान में चार की सख्या से सम्बन्ध रखने वाले अनेक प्रकार के विषय संकलित है। यद्यपि इस स्थान में सैद्धान्तिक, भौगोलिक, प्राकृतिक और मनोविश्लेषक आदि अनेक विषयों के चार-चार भंगों की चतुर्भंगियाँ वर्णित हैं। इनमे वृक्ष, फल, मेघ, घट, वस्त्र, गज, अश्व आदि व्यावहारिक प्रतीको के माध्यम से पुरुषो की मनोवृत्तियो का सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है। यह प्रतीकात्मक वर्णन रोचक होने के साथ ही भिन्न-भिन्न प्रकार की जीवन-शैली का दिग्दर्शन भी कराता है। इसमे वर्णित वृक्ष, फल, घट, मेघ आदि को उपमान बनाकर मानव (पुरुष) को उपमेय बनाया गया है और उनके द्वारा मनुष्यो के व्यवहार और स्वभाव-शील तथा आन्तरिक गुणो का उद्घाटन किया है। इन चतुर्भंगियों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि जैनदर्शन प्रत्येक वस्तु के विषय में अनेकांतदृष्टि से, विविध पक्षो पर चिन्तन करता है।
- अध्ययन का प्रारम्भ अन्तक्रिया के वर्णन से होता है। अन्तक्रिया के चार प्रकारो का वर्णन करते हुए प्रथम अन्तक्रिया मे भरत चक्री का, द्वितीय अन्तक्रिया में गजसुकुमाल का, तीसरी में सनत्कुमार चक्री का और चौथी मे मरुदेवी का दृष्टान्त दिया गया है।
- विकथा, कथापद, कषायपद मे उनके प्रकारो का दृष्टान्त-सहित वर्णन कर उनमे वर्तमान जीवों के दुर्गति-सुगतिगमन का वर्णन बडा उद्बोधक है।
- चार प्रकार के पुत्र व चार प्रकार के पुरुषो के वर्णन बहुत रोचक और ज्ञानवर्द्धक है। टीकाकार ने उनसे सम्बन्धित अनेक दृष्टान्तो का सकेत किया है।
- भौगोलिक वर्णन मे जम्बूद्वीप, धातकीषण्ड और पुष्करवरद्वीप आदि का वर्णन है। नन्दीश्वरद्वीप का विस्तृत वर्णन तो चित्त को चमत्कृत करने वाला है।
- सैद्धान्तिक वर्णन मे महाकर्म-अल्पकर्म वाले निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी एव श्रमणोपासक-श्रमणोपासिका का, ध्यान-पद मे चारों ध्यानो के भेद-प्रभेदो का वर्णन मननीय है।
- साधुओ की दु:खशय्या और सुखशय्या के चार-चार प्रकार प्रत्येक साधक के लिए बडे उद्बोधक है। आचार्य और अन्तेवासी के प्रकार भी उनकी मनोवृत्तियों के परिचायक है।
- यदि सक्षेप मे कहा जाय तो यह स्थान ज्ञान-सम्पदा एव लोकानुभव का विशाल भण्डार है।

## FOURTH STHAAN

### INTRODUCTION

- A variety of topics connected with the numeral four are compiled in the Fourth Sthaan In general this chapter contains quads related to numerous subjects including ontology, geography, nature and psychology At the same time it also contains subtle analysis of human psychology using physical metaphors like trees, fruits, clouds, pot, dress, elephant, horse etc This symbolic treatment is not just interesting, it also reveals a variety of life styles. Taking trees, fruits, clouds and pots and others as objects of comparison and man as subject, human behaviour, nature, character and inner attributes have been enumerated An analysis of these quads makes it evident that Jain philosophy looks at everything from various angles with a relative viewpoint (*Anekant drishti*)
- The chapter starts with the discussion of *ant-kriya* (last action or ending cycles of death) The four kinds of *ant-kriya* have been explained with the examples of—Bharat Chakravarti for the first, Gajasukumal for the second, Sanatkumar Chakravarti for the third and that of Marudevi for the fourth
- In the segments of *vikatha, katha* and *kashaya* there is an enlightening description of their kinds with examples of beings consequently destined to a good or bad reincarnation
- Also interesting and edifying is the description of four kinds of sons and persons The commentator has pointed at numerous examples of these
- Geographical descriptions include descriptions of *Jambudveep, Dhatakikhand* and *Pushkaravar Dveep* etc. The detailed description of *Nandishvar Dveep* is astonishing
- Among the ontological topics the details about the ascetics and lay persons encumbered with excessive and mild *karmas* and the categories and sub-categories of meditation in the segment of meditation are worth pondering
- The information about four kinds each of miserable and comfortable beds is very instructive for every aspirant The kinds of *acharya* and his disciples are informative about their mind-reflections.
- To sum up, it would be appropriate to say that this placement is a rich compendium of knowledge as well as general experience ●●

# चतुर्थ स्थान
# FOURTH STHAAN (Place Number Four)

## प्रथम उद्देशक FIRST LESSON

*अन्तक्रिया-पद* **ANT-KRIYA-PAD (SEGMENT OF ANT-KRIYA)**

**१. चत्तारि अंतकिरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–**

**(१) तत्थ खलु इमा पढमा अंतकिरिया–अप्पकम्मपच्चायाते यावि भवति। से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले लूहे तीरट्ठी उवहाणवं दुक्खक्खवे तवस्सी। तस्स णं णो तहप्पगारे तवे भवति, णो तहप्पगारा वेयणा भवति। तहप्पगारे पुरिसजाते दीहेणं परियाएणं सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाति सव्वदुक्खाणमंतं करेइ, जहा से भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी; पढमा अंतकिरिया।**

**(२) अहावरा दोच्चा अंतकिरिया–महाकम्मपच्चायाते यावि भवति। से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए संजमबहुले संवरबहुले जाव उवहाणवं दुक्खक्खवे तवस्सी। तस्स णं तहप्पगारे तवे भवति, तहप्पगारा वेयणा भवति। तहप्पगारे पुरिसजाते निरुद्धेणं परियाएणं सिज्झति जाव अंतं करेति, जहा--से गयसूमाले अणगारे; दोच्चा अंतकिरिया।**

**(३) अहावरा तच्चा अंतकिरिया–महाकम्मपच्चायाते यावि भवति। से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए जहा दोच्चा नवरं। दीहेणं परियाएणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेति, जहा से सणंकुमारे राया चाउरंतचक्कवट्टी; तच्चा अंतकिरिया।**

**(४) अहावरा चउत्था अंतकिरिया–अप्पकम्मपच्चायाते यावि भवति। से णं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए संजमबहुले जाव। तस्स णं णो तहप्पगारे तवे भवति, णो तहप्पगारा वेयणा भवति। तहप्पगारे पुरिसजाते निरुद्धेणं परियाएणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेति, जहा सा मरुदेवी भगवती; चउत्था अंतकिरिया।**

१. अन्तक्रिया चार प्रकार की होती है–

(१) **प्रथम अन्तक्रिया**–कोई पुरुष अल्प कर्मों के साथ मनुष्य-जन्म को प्राप्त होता है। फिर वह मुण्डित होकर, घर त्यागकर, अनगार रूप मे प्रव्रजित हो संयम-बहुल, सवर-बहुल और समाधि-बहुल होकर रूक्ष (भोजन करता हुआ) तीर का अर्थी (ससार-समुद्र पार जाने का इच्छुक), उपधान तप करने वाला, दुःख को खपाने वाला तपस्वी होता है। उसके न तो उस प्रकार का घोर तप होता है और न उस प्रकार की घोर वेदना होती है। इस प्रकार का पुरुष दीर्घकाल तक साधु-पर्याय का

पालन कर सिद्ध होता है, बुद्ध होता है, मुक्त होता है, परिनिर्वाण को प्राप्त होता है और सर्व दुःखो का अन्त करता है। जैसे कि चक्रवर्ती भरत राजा हुआ। यह प्रथम अन्तक्रिया है।

(२) **दूसरी अन्तक्रिया**—कोई पुरुष बहुत भारी कर्मों के साथ मनुष्य-भव को प्राप्त होता है। पुन. वह मुण्डित होकर, घर त्यागकर, प्रव्रजित हो, सयम-बहुल, सवर-बहुल और उपधान करने वाला, दुःख को खपाने वाला तपस्वी होता है। वह विशेष प्रकार का घोर तप करता है और विशेष प्रकार की घोर वेदना अनुभव करता है। इस प्रकार का पुरुष अल्पकालिक साधु-पर्याय का पालन करके सिद्ध होता है। यावत् सर्व दुःखों का अन्त करता है। जैसे कि गजसुकुमार अनगार। यह दूसरी अन्तक्रिया है।

(३) **तीसरी अन्तक्रिया**—कोई पुरुष बहुत कर्मों के साथ मनुष्य-भव को प्राप्त होता है। पुन· वह मुण्डित होकर, घर त्यागकर, अनगार व्रत को धारण कर प्रव्रजित होता है। दीर्घकालिक साधु-पर्याय का पालन करता हुआ घोर तप करके घोर वेदना भोगकर सिद्ध होता है और सर्व दु खों का अन्त करता है। जैसे कि चक्रवर्ती सनत्कुमार राजा। यह तीसरी अन्तक्रिया है।

(४) **चौथी अन्तक्रिया**—कोई पुरुष अल्प कर्मों के साथ मनुष्य-जन्म को प्राप्त होता है। पुन· वह मुण्डित होकर प्रव्रजित हो सयम-बहुल, यावत् तपस्वी होता है। उसके न तो उस प्रकार का घोर तप होता है और न उस प्रकार की घोर वेदना होती है। इस प्रकार का पुरुष अल्पकालिक साधु-पर्याय का पालन कर सिद्ध होता है और सर्व दु.खो का अन्त करता है। जैसे कि भगवती मरुदेवी। यह चौथी अन्तक्रिया है।

**1.** *Ant-kriya* (last action or ending cycles of death) is of four kinds—

(1) First *ant-kriya*—A person is born as a human being with meager quantum of *karmas* He then gets tonsured, renounces household and gets initiated as *anagar* (ascetic) After that, becoming *samyam-bahul* (one who practices extensive discipline), *samvar-bahul* (one who practices extensive blocking of inflow of *karmas*) and *samadhi-bahul* (one who practices extensive meditation) he turns himself into a consumer of drab and dry food, *tirarthi* (aspirant of crossing the ocean of mundane existence), observer of *upadhan tap* (a specific austerity) and an ascetic observing austerities in order to shed *karmas* He has to neither undergo extreme austerities nor suffer extreme pain Leading a long ascetic life such person becomes a *Siddha* (perfected), *buddha* (enlightened), *mukta* (liberated) and attains *parinirvana* (ultimate departure) to end all miseries For example Chakravarti Bharat This is first *ant-kriya*.

(2) Second *ant-kriya*—A person is born as a human being with large quantum of *karmas* He then gets tonsured, renounces household and gets initiated as *anagar* (ascetic). After that, becoming *samyam-bahul* (one who practices extensive discipline), *samvar-bahul* (one who

चार प्रकार की अन्तक्रिया

**चित्र परिचय १३** | **Illustration No. 13**
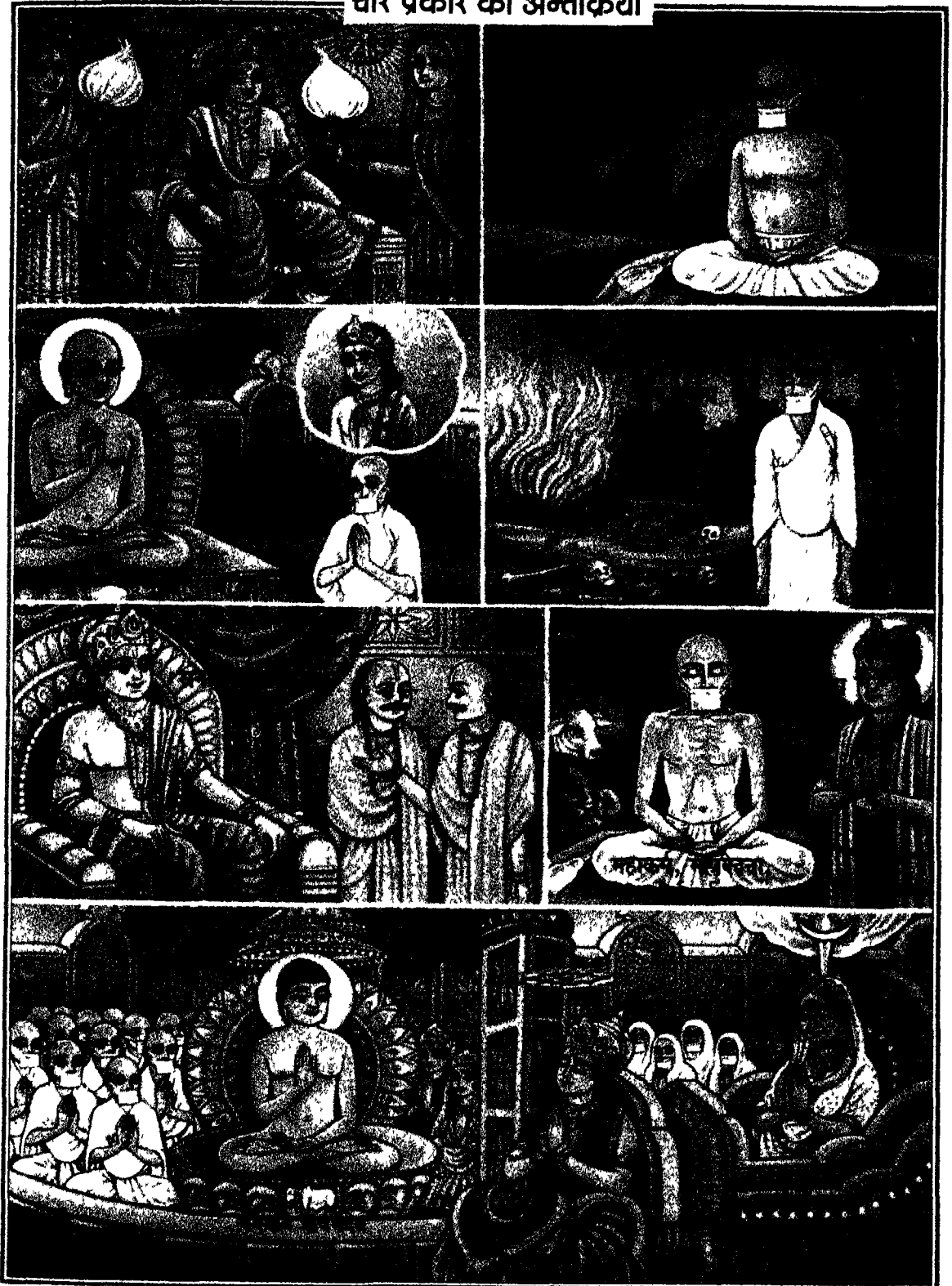
# चार प्रकार की अन्तक्रिया

(१) **अल्पकर्म–अल्पवेदना–दीर्घ सयम पर्याय**–जिस प्रकार भरत चक्रवर्ती ने पूर्वजन्म मे किये हुए महान् तप के कारण कर्मो का भार बहुत अल्प रह जाने से आरीसा भवन मे बढे हुए भावो की विशुद्धि के कारण सयम व केवलज्ञान प्राप्त किया और बहुत अल्प वेदना के साथ ही दीर्घकाल तक सयम पालते हुए सुखपूर्वक सिद्धगति प्राप्त की।

(२) **भारी कर्म–भारी वेदना–अल्प सयम पर्याय**–जिस प्रकार गजसुकुमाल मुनि ने पूर्व भवोपार्जित अत्यधिक वेदनीय कर्मो के कारण, एक ही रात की सयम पर्याय मे महाभयानक वेदना भोगकर समस्त कर्मों का क्षय किया।

(३) **भारी कर्म–भारी वेदना–दीर्घ दीक्षा पर्याय**–जिस प्रकार सनत्कुमार चक्रवर्ती ब्राह्मण वेषधारी देवो द्वारा प्रतिबुद्ध होकर दीर्घकाल तक घोर तप–सयम की आराधना करके महान वेदना भोगते हुए निर्वाण को प्राप्त हुए।

(४) **अल्पकर्म–अल्पवेदना–अल्पकालिक पर्याय**–जैसे मरुदेवी माता ने हाथी पर बैठे हुए ही भगवान ऋषभदेव के दर्शन करते-करते सयम का स्पर्श कर अत्यन्त अल्प वेदना व अल्पकालिक सयम पर्याय पालकर सिद्धगति प्राप्त की।

*स्थान ४ सूत्र १*

## FOUR KINDS OF ANTAKRIYA

(1) **Alpakarma-Alpavedana-Deergha samyam paryaya**—Bharat Chakravarti had very little load of *karmas* due to the extreme austerities he observed during his previous birth As a result he attained spiritual purity leading to ascetic-discipline and omniscience in his mirror palace He lead a long ascetic life with least discomfort and attained the *Siddha* state peacefully

(2) **Bhaarikarma-Bhaarivedana-Alpa samyam paryaya**—Ascetic Gajasukumal acquired extreme *Vedaniya karmas* during his previous birth As a result he shed all his *karmas* within one night of getting initiated but after enduring extreme agony

(3) **Bhaarikarma-Bhaarivedana-Deergha samyam paryaya**—Sanatkumar Chakravarti attained nirvana after getting enlightened by gods in the garb of Brahmins and observing rigorous austerities for a long time

(4) **Alpakarma-Alpavedana-Alpakalik paryaya**—Mother Marudevi attained the *Siddha* state within a very short period of spiritual discipline and enduring very little pain while sitting on an elephant she beheld Bhagavan Risabhadeva

*—Sthaan 4, Sutra 1*

practices extensive blocking of inflow of *karmas*) and *samadhi-bahul* (one who practices extensive meditation). and so on up to... observer of *upadhan tap* (a specific austerity) and an ascetic observing austerities in order to shed *karmas* He undergoes extreme austerities and suffers extreme pain Leading a short ascetic life such person becomes a *Siddha* (perfected).. and so on up to... to end all miseries. For example ascetic Gajasukumar. This is second *ant-kriya*.

(3) Third *ant-kriya*—A person is born as a human being with large quanta of *karmas*. He then gets tonsured, renounces household and gets initiated as *anagar* (ascetic) and so on up to. Leading a long ascetic life such person becomes a *Siddha* (perfected). and so on up to to end all miseries For example Chakravarti Sanatkumar. This is third *ant-kriya*.

(4) Fourth *ant-kriya*—A person is born as a human being with meager quanta of *karmas*. He then gets tonsured, renounces household and gets initiated as *anagar* (ascetic). After that, becoming *samyam-bahul* (one who practices extensive discipline).. and so on up to. and an ascetic observing austerities in order to shed *karmas* He has to neither undergo extreme austerities nor suffer extreme pain Leading just a short ascetic life such person becomes a *Siddha* (perfected) and so on up to . to end all miseries For example Bhagavati Marudevi. This is fourth *ant-kriya*

विवेचन–जन्म–मरण की परम्परा का अन्त करने वाली, स्थूल एव सूक्ष्म शरीरो को त्यागकर सर्व कर्मों का क्षय करने वाली अन्तिम क्रिया को **अन्तक्रिया** कहते है। अन्तक्रिया करने वालो की कर्मों की अल्पता व बहुलता के आधार पर इसके चार भेद होते है। उपर्युक्त चारो क्रियाओ में पहली अन्तक्रिया अल्पकर्म के साथ जन्म लेकर दीर्घकाल तक साधु–पर्याय पालने वाले पुरुष की है। दूसरी अन्तक्रिया भारी कर्मों के साथ जन्म लेकर अल्पकाल तक साधु–पर्याय पालने वाले की है। तीसरी अन्तक्रिया गुरुतर कर्मों के साथ जन्म लेकर दीर्घकाल तक साधु–पर्याय पालने वाले पुरुष की है और चौथी अन्तक्रिया अल्पकर्म के साथ जन्म लेकर अल्पकाल तक साधु–पर्याय पालने वाले व्यक्ति की है। जितने भी व्यक्ति आज तक कर्ममुक्त होकर सिद्ध–बुद्ध हुए है और आगे होगे, वे सब उक्त चार प्रकार की अन्तक्रियाओ मे से कोई एक अन्तक्रिया करके ही मुक्त हुए है और आगे होंगे। (१) भरत, (२) गजसुकुमाल, (३) सनत्कुमार चक्रवर्ती, और (४) मरुदेवी के कथानक कथानुयोग, भाग १ तथा हिन्दी टीका, पृ. ५४३ पर देखने चाहिए।

**Elaboration**—The act of ending the cycles of birth and death through the process of abandoning subtle and gross bodies after shedding all *karmas* is called *ant-kriya* (last action). There are four categories of individuals undergoing the process of *ant-kriya* (last action) on the basis

of less or more quantum of *karmas* Of the aforesaid four *ant-kriya* (last action) the first one is related to a person born with meager quantum of *karmas* and leading a long ascetic life. The second one is related to a person born with large quantum of *karmas* and leading a short ascetic life. The third one is related to a person born with large quantum of *karmas* and leading a long ascetic life. And the fourth one is related to a person born with meager *karmas* and leading a short ascetic life All people who got, get and will get liberated of bondage of *karmas* to become enlightened and perfected did, do and will go through one of the aforesaid four kinds of *ant-kriya* For stories of (1) Bharat, (2) Gajasukumar, (3) Sanatkumar Chakri, and (4) Marudevi refer to *Kathanuyog*, part 1 and Hindi *Tika*, p 543

***विशेष पदो के अर्थ–***

(१) **संजमबहुले**–सत्रह प्रकार के सयम की साधना करने वाले। (२) **संवरबहुले**–मिथ्यात्व आदि अशुभ योगों से पूर्णत· निवृत्त। (३) **समाहिबहुले**–राग-द्वेष आदि विक्षेप/विकारो से मुक्त समाधि मे स्थित। (४) **लूहे**–रूक्ष, उदासीन वृत्ति। (५) **तीरट्ठी**–ससार-समुद्र के पार जाने को तैयार। (६) **उवहाणवं**–विविध प्रकार के तपोनुष्ठान मे सलग्न। (७) **दुक्खक्खवे**–दु खो का क्षय करने को उद्यत। (८) **तवस्सी**–बारह प्रकार के तपश्चरण मे सलीन।

**TECHNICAL TERMS**

(1) *Samyam-bahul*—one who practices extensive discipline of all the seventeen kinds (2) *Samvar-bahul*—one who practices extensive blocking of inflow of *karmas* by absolute renouncing of *mithyatva* (false perception or belief) and *ashubh yoga* (ignoble association). (3) *Samadhi-bahul*—one who practices extensive meditation freeing himself of attachment, aversion and other perversions (4) *Loohe* (*ruksha*)—consumer of drab dry food, also having attitude of disinterest (5) *Tiratthi* (*tirarthi*)—aspirant of crossing the ocean of mundane existence (6) *Uvahanavam* (*upadhan*)—engaged in observing a variety of austerities (*tap*) (7) *Dukkhakkhave*—ready to destroy miseries (8) *Tavassi* (*tapasvi*)—engaged in observing twelve kinds of austerities

***उन्नत-प्रणत-पद (उन्नत-प्रणत के दस विकल्प)*** **UNNAT-PRANAT-PAD**

**(SEGMENT OF SUPERIOR AND INFERIOR)**

२. (१) **चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा–उण्णते णाममेगे उण्णते, उण्णते णामेगे पणते, पणते णाममेगे उण्णते, पणते णाममेगे पणते।**

एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पण्णत्ता, तं जहा–उण्णते णामेगे उण्णते, तहेव जाव [ [1]उण्णते णाममेगे पणते, पणते णाममेगे उण्णते ] पणते णाममेगे पणते।

३. (२) चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा–उण्णते णाममेगे उण्णतपरिणते, उण्णते णाममेगे पणतपरिणते, पणते णाममेगे उण्णतपरिणते, पणते णाममेगे पणतपरिणते।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाता पण्णत्ता, तं जहा–उण्णते णाममेगे उण्णतपरिणते, चउभंगो [ उण्णते णाममेगे पणतपरिणते, पणते णाममेगे उण्णतपरिणते, पणते णाममेगे पणतपरिणते ]।

४. (३) चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा–उण्णते णाममेगे उण्णतरूवे, तहेव चउभंगो [ उण्णते णाममेगे पणतरूवे, पणते णाममेगे उण्णतरूवे, पणते णाममेगे पणतरूवे ]।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–उण्णते णाममेगे उण्णतरूवे, [ उण्णते णाममेगे पणतरूवे, पणते णाममेगे उण्णतरूवे, पणते णाममेगे पणतरूवे ]।

२. (१) वृक्ष चार प्रकार के होते है। जैसे–(१) कोई वृक्ष (शरीर आदि की अपेक्षा) भी उन्नत होता है और जाति व गुण आदि से भी उन्नत होता है, (जैसे–शाल, आम आदि वृक्ष)। (२) कोई वृक्ष शरीर (द्रव्य) से उन्नत, किन्तु जाति (भाव) से प्रणत (हीन) होता है, (जैसे–नीम आदि)। (३) कोई वृक्ष शरीर से प्रणत, किन्तु जाति से उन्नत होता है, (जैसे–अशोक, इलायची, लवग आदि)। (४) कोई वृक्ष शरीर से प्रणत (हीन) और जाति से भी प्रणत (हीन) होता है, (जैसे–खैर, बबूल, बेर की झाडियाँ आदि)।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के कहे गये है। जैसे–(१) कोई पुरुष शरीर (या ऐश्वर्य) से भी उन्नत होता है और ज्ञानादि गुणो से भी उन्नत होता है, जैसे–भरत। (२) [कोई पुरुष शरीर से उन्नत होता है, किन्तु गुणो से प्रणत (हीन) होता है, (जैसे–ब्रह्मदत्त)। (३) कोई पुरुष शरीर से प्रणत और गुणो से उन्नत होता है, (जैसे–हरिकेश बल)। (४)] कोई शरीर से भी प्रणत होता है और गुणो से भी प्रणत होता है, (जैसे–कालशौकरिक)।

३. (२) वृक्ष चार प्रकार के होते है। जैसे–(१) कोई वृक्ष शरीर से उन्नत और उन्नत–परिणत [रस आदि से युक्त] होता है, (२) कोई वृक्ष उन्नत होकर भी प्रणत–परिणत [अशुभ रसादि से युक्त], (३) कोई वृक्ष द्रव्य से प्रणत और भाव की दृष्टि से उन्नत–परिणत, और (४) कोई वृक्ष द्रव्य से प्रणत और भाव से प्रणत–परिणत होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है, जैसे–(१) कोई पुरुष शरीर से उन्नत और उन्नत भाव से ज्ञानादि गुणो से परिणत होता है। वृक्ष की तरह चार भग होते हैं–(२) [कोई शरीर से उन्नत और

---

१ [ ] इस कोष्ठक मे दिये गये सूत्र पाठ पुराने सस्करणो मे नही है, किन्तु आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर तथा जैन विश्व भारती, लाडनू के संस्करणो मे है।

1 [ ] The text within these brackets is not available in old editions, it is available in editions published from Agam Prakashan Samiti, Beawar and Jain Vishvabharati, Ladnu

प्रणत भाव से परिणत है, (३) कोई शरीर से प्रणत और उन्नत भाव से परिणत, और (४) कोई शरीर से प्रणत और प्रणत भाव से भी परिणत होता है।]

४. (३) वृक्ष चार प्रकार के होते है। जैसे-(१) कोई वृक्ष उन्नत और उन्नत (उत्तम) रूप वाला होता है, (२) कोई उन्नत, किन्तु प्रणत रूप वाला (कुरूप), (३) कोई प्रणत, किन्तु उन्नत रूप वाला, और (४) कोई वृक्ष प्रणत और प्रणत रूप वाला होता है।

पुरुष भी चार प्रकार के होते है, जैसे-(१) कोई पुरुष शरीर से उन्नत और उन्नत रूप वाला होता है, (२) कोई शरीर से उन्नत किन्तु प्रणत रूप वाला, (३) कोई शरीर से प्रणत किन्तु उन्नत रूप वाला, और (४) कोई शरीर से प्रणत और प्रणत रूप वाला होता है।

**2.** (1) Trees are of four kinds—(1) Some tree is *unnat* (superior) in physical terms (parameters of size) and in terms of class (parameters of quality) as well (for example *saal* and mango). (2) Some tree is superior in physical terms but *pranat* (inferior) in terms of class (for example Neem etc ) (3) Some tree is inferior in physical terms but superior in terms of class (for example Ashoka, cardamom, clove etc.) (4) Some tree is inferior in physical terms and in terms of class as well (for example bushes of *Khair* or catechu, *Babool* or acacia, *Ber* or jujube etc )

In the same way men are also of four kinds—(1) Some man is *unnat* (superior) in physical terms (body and wealth) and in terms of class (parameters of quality, such as knowledge) as well (for example Bharat Chakravarti) (2) [Some man is superior in physical terms but *pranat* (inferior) in terms of class (for example Brahmadatt) (3) Some man is inferior in physical terms but superior in terms of class (for example Harikesh Bal) (4)] Some man is inferior in physical terms and in terms of class as well (for example Kaalashaukarik)

**3.** (2) Trees are of four kinds—(1) Some tree is *unnat* (superior) in physical terms (parameters of size) and *unnat parinat* (superior in parameters of acquired or attained qualities) as well (2) Some tree is superior in physical terms but *pranat parinat* (inferior in parameters of acquired or attained qualities) (3) Some tree is inferior in physical terms but superior in parameters of acquired or attained qualities (4) Some tree is inferior in physical terms and in parameters of acquired or attained qualities as well

In the same way men are of four kinds—(1) Some man is *unnat* (superior) in physical terms (parameters of size) and *unnat parinat* (superior in parameters of acquired or attained qualities, such as knowledge) as well. (2) Some man is superior in physical terms but

*pranat parinat* (inferior in parameters of acquired or attained qualities) (3) Some man is inferior in physical terms but superior in parameters of acquired or attained qualities (4) Some man is inferior in physical terms and in parameters of acquired or attained qualities as well.

4. (3) Trees are of four kinds—(1) Some tree is *unnat* (superior) in physical terms (parameters of size) and *unnat rupa* (superior in appearance) as well. (2) Some tree is superior in physical terms but *pranat rupa* (inferior in appearance) (3) Some tree is inferior in physical terms but superior in appearance. (4) Some tree is inferior in physical terms and in appearance as well

In the same way men are of four kinds—(1) Some man is *unnat* (superior) in physical terms (parameters of size) and *unnat rupa* (superior in appearance) as well (2) Some man is superior in physical terms but *pranat rupa* (inferior in appearance) (3) Some man is inferior in physical terms but superior in appearance (4) Some man is inferior in physical terms and in appearance as well

५. (४) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतमणे, [ उण्णते णाममेगे पणतमणे, पणते णाममेगे उण्णतमणे, पणते णाममेगे पणतमणे ]।

(५) एवं संकप्पे, (६) पण्णे, (७) दिट्ठी, (८) सीलाचारे, (९) ववहारे, (१०) परक्कमे। एगे पुरिसजाए पडिवक्खो नत्थि।

६. (५) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतसंकप्पे, उण्णते णाममेगे पणतसंकप्पे, पणते णाममेगे उण्णतसंकप्पे, पणते णाममेगे पणतसंकप्पे। ]

७. (६) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतपण्णे, उण्णते णाममेगे पणतपण्णे, पणते णाममेगे उण्णतपण्णे, पणते णाममेगे पणतपण्णे। ]

८. (७) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतदिट्ठी, उण्णते णाममेगे पणतदिट्ठी, पणते णाममेगे उण्णतदिट्ठी, पणते णाममेगे पणतदिट्ठी। ]

९. (८) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतसीलाचारे, उण्णते णाममेगे पणतसीलाचारे, पणते णाममेगे उण्णतसीलाचारे, पणते णाममेगे पणतसीलाचारे। ]

१०. (९) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतववहारे, उण्णते णाममेगे पणतववहारे, पणते णाममेगे उण्णतववहारे, पणते णाममेगे पणतववहारे। ]

११. (१०) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उण्णते णाममेगे उण्णतपरक्कमे, उण्णते णाममेगे पणतपरक्कमे, पणते णाममेगे उण्णतपरक्कमे, पणते णाममेगे पणतपरक्कमे। ]

५. (४) पुरुष चार प्रकार के होते है, जैसे-(१) कोई पुरुष ऐश्वर्य से उन्नत और उन्नत मन वाला (उदार) होता है (राजा विक्रम की तरह) [(२) कोई ऐश्वर्य से उन्नत, किन्तु प्रणत मन वाला, (३) कोई ऐश्वर्य से प्रणत (हीन), किन्तु उन्नत मन वाला (कवि माघ की तरह), और (४) कोई ऐश्वर्य से प्रणत और मन से भी प्रणत होता है।

चौथे विकल्प मन के साथ, (५) सकल्प, (६) प्रज्ञा, (७) दृष्टि, (८) शीलाचार, (९) व्यवहार और (१०) पराक्रम, इनमे केवल पुरुष के विषय मे ही चार भग के कथन है, वृक्ष के विषय मे नहीं, क्योंकि उनमे मन आदि नही होते।

६. (५) संकल्प आदि की दृष्टि से चतुर्भंगी इस प्रकार बनती है-(१) कोई पुरुष ऐश्वर्य से उन्नत और उन्नत सकल्प वाला होता है (पुण्डरीक मुनि की तरह), (२) कोई ऐश्वर्य से उन्नत, किन्तु प्रणत (हीन) सकल्प वाला (कुण्डरीक की तरह), (३) कोई ऐश्वर्य से प्रणत, किन्तु उन्नत सकल्प वाला (पूणिया श्रावक की तरह), और (४) कोई ऐश्वर्य से प्रणत और सकल्प से भी प्रणत होता है (निर्धन और ईर्ष्यालु पुरुष की तरह)।

७. (६) (१) कोई पुरुष ऐश्वर्य से उन्नत और उन्नत प्रज्ञा वाला (बुद्धिमान्) होता है (अभयकुमार की तरह), (२) कोई ऐश्वर्य से उन्नत, किन्तु प्रणत प्रज्ञा वाला, (३) कोई ऐश्वर्य से प्रणत, किन्तु उन्नत प्रज्ञा वाला (रोहक की तरह), और (४) कोई ऐश्वर्य से प्रणत और प्रज्ञा से भी प्रणत होता है।

८. (७) (१) कोई पुरुष ऐश्वर्य से उन्नत और उन्नत दृष्टि वाला होता है (विजयकुमार विजया सेठानी की तरह), (२) कोई ऐश्वर्य से उन्नत और प्रणत दृष्टि वाला (भर्तृहरि की रानी पिगला की तरह), (३) कोई ऐश्वर्य से प्रणत, किन्तु उन्नत दृष्टि वाला, और (४) कोई ऐश्वर्य से प्रणत और प्रणत दृष्टि वाला होता है।

९. (८) (१) कोई पुरुष ऐश्वर्य से उन्नत और उन्नत शील-आचार वाला होता है (चेलना रानी की तरह), (२) कोई ऐश्वर्य से उन्नत, किन्तु प्रणत (हीन) शील-आचार वाला, (३) कोई ऐश्वर्य से प्रणत, किन्तु उन्नत शील-आचार वाला, और (४) कोई ऐश्वर्य से प्रणत और प्रणत शील-आचार वाला होता है।

१०. (९) (१) कोई पुरुष ऐश्वर्य से उन्नत और उन्नत व्यवहार वाला होता है, (२) कोई ऐश्वर्य से उन्नत, किन्तु प्रणत व्यवहार वाला, (३) कोई ऐश्वर्य से प्रणत, किन्तु उन्नत व्यवहार वाला, और (४) कोई ऐश्वर्य से प्रणत और प्रणत व्यवहार वाला होता है।

११. (१०) (१) कोई पुरुष ऐश्वर्य से उन्नत और उन्नत पराक्रम वाला होता है (बाहुबली की तरह), (२) कोई ऐश्वर्य से उन्नत, किन्तु प्रणत पराक्रम वाला, (३) कोई ऐश्वर्य से प्रणत, किन्तु उन्नत पराक्रम वाला, और (४) कोई ऐश्वर्य से प्रणत और प्रणत पराक्रम वाला होता है। *(पुरुषो के व्यवहार सम्बन्धी विविध उदाहरणो के लिए ठाण आचार्य महाप्रज्ञ जी का परिशिष्ट तथा हिन्दी टीका, पृष्ठ ६५०-६५४ देखें)*

**5.** (4) Men are of four kinds—(1) Some man is *unnat* (superior) in wealth and *unnat man* (superior in mind, noble minded or generous) as well like king Vikram (2) Some man is superior in wealth but *pranat*

*man* (inferior in mind, ignoble or cruel) (3) Some man is inferior in wealth but superior in mind like Maagh, the poet. (4) Some man is inferior in wealth and in mind as well.

The same (as in case of mind) is also true for qualities like (5) *sankalp* (intent or resolve), (6) *prajna* (wisdom), (7) *drishti* (perception and faith), (8) *sheelachaar* (righteousness and conduct), (9) *vyavahar* (behaviour), and (10) *parakram* (endeavour) Here the quads are about man only and not about tree because mind does not exist there

The four alternatives in context of *sankalp* etc. are as follows—

**6.** (5) Men are of four kinds—(1) Some man is *unnat* (superior) in wealth and *unnat sankalp* (superior in resolve) as well (like ascetic Pundareek). (2) Some man is superior in wealth but *pranat sankalp* (inferior in resolve) (like Kundareek) (3) Some man is inferior in wealth but superior in resolve (like Punia Shravak) (4) Some man is inferior in wealth and in resolve as well (like a poor and jealous person).

**7.** (6) Men are of four kinds—(1) Some man is *unnat* (superior) in wealth and *unnat prajna* (superior in wisdom) as well (like Abhayakumar) (2) Some man is superior in wealth but *pranat prajna* (inferior in wisdom) (3) Some man is inferior in wealth but superior in wisdom (like Rohak) (4) Some man is inferior in wealth and in wisdom as well

**8.** (7) Men are of four kinds—(1) Some man is *unnat* (superior) in wealth and *unnat drishti* (superior in perception/faith) as well (like Vijaya Kumar and Vijayaa Sethani) (2) Some man is superior in wealth but *pranat drishti* (inferior in perception/faith) (like Bhartrihari's queen Pingala) (3) Some man is inferior in wealth but superior in perception/faith (4) Some man is inferior in wealth and in perception/faith as well.

**9.** (8) Men are of four kinds—(1) Some man is *unnat* (superior) in wealth and *unnat sheelachar* (superior in character and conduct) as well (like Queen Chelana) (2) Some man is superior in wealth but *pranat sheelachar* (inferior in character and conduct) (3) Some man is inferior in wealth but superior in character and conduct. (4) Some man is inferior in wealth and in character and conduct as well.

**10.** (9) Men are of four kinds—(1) Some man is *unnat* (superior) in wealth and *unnat vyavahar* (superior in behaviour) as well (2) Some

man is superior in wealth but *pranat vyavahar* (inferior in behaviour) (3) Some man is inferior in wealth but superior in behaviour (4) Some man is inferior in wealth and in behaviour as well

**11.** (10) Men are of four kinds—(1) Some man is *unnat* (superior) in wealth and *unnat parakram* (superior in endeavour) as well (like Bahubali) (2) Some man is superior in wealth but *pranat parakram* (inferior in endeavour) (3) Some man is inferior in wealth but superior in endeavour (4) Some man is inferior in wealth and in endeavour as well. *(for numerous examples regarding disposition of men refer to the appendix of Thanam by* Acharya Mahaprajna *and Hindi Tika, pp 650-654)*

**विवेचन**—इन सूत्रो मे रूप, मन, सकल्प, शील, दृष्टि, प्रज्ञा, व्यवहार और पराक्रम आदि दस विकल्पो की चतुर्भंगियाँ बताई है। प्रथम कथन वस्तु के द्रव्य, ऐश्वर्य, जाति, वैभव, शरीर, रूप आदि बाह्य दृष्टि से है और दूसरा कथन उसमे रहे भाव, गुण अथवा अन्य आन्तरिक विशेषताओ को लक्ष्य मे रखकर किया है।

जैसे-एक वृक्ष उन्नत है और प्रणत है, यहाँ प्रथम कथन-उसके शरीर के भार, व आकार की अपेक्षा है। जबकि दूसरा कथन उसके गुण, स्वाद, मूल्य, आरोग्य आदि की दृष्टि से है। मनुष्य के पक्ष मे प्रथम कथन उसके जाति, नाम, कुल आदि तथा दूसरे कथन मे उसके ज्ञान, स्वभाव, चारित्र, परोपकारिता आदि गुणो के लिए समझना चाहिए।

**Elaboration**—The aforesaid aphorisms enumerate quads of ten qualities including appearance, mind, resolve, perception, wisdom, behaviour and endeavour First part of the statement relates to outer qualities like size, wealth, class, glory, body, appearance etc The second part relates to inner conditions, qualities and other attributes

For example 'a tree is superior and inferior' Here the first statement refers to its physical mass and height The second statement refers to its inner qualities, taste, price, effects etc In context of man the first statement refers to physique, caste, name, family etc. and the second to his knowledge, nature, character, generosity and other such virtues.

### *ऋजु–वक्र–पद (ऋज–वक्र के दस विकल्प)* RIJU-VAKRA-PAD (SEGMENT OF STRAIGHT AND CROOKED)

**१२. (१) चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा–उज्जू णाममेगे उज्जू, उज्जू णाममेगे वंके, चउभंगो ४। एवं जहा उन्नतपणतेहि गमो तहा उज्जू वंकेहि वि भाणियव्वो। जाव परक्कमे [ वंके णाममेगे उज्जू, वंके णाममेगे वंके ]।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जू ४, [ उज्जू णाममेगे वंके, वंके णाममेगे उज्जू, वंके णाममेगे वंके ]।**

**१३. (२) चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुपरिणते, उज्जु णाममेगे वंकपरिणते, वंके णाममेगे उज्जुपरिणते, वंके णाममेगे वंकपरिणते। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुपरिणते, उज्जू णाममेगे वंकपरिणते, वंके णाममेगे उज्जुपरिणते, वंके णाममेगे वंकपरिणते।**

**१४. (३) चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुरूवे, उज्जु णाममेगे वंकरूवे, वंके णाममेगे उज्जुरूवे, वंके णाममेगे वंकरूवे। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुरूवे, उज्जू णाममेगे वंकरूवे, वंके णाममेगे उज्जुरूवे, वंके णाममेगे वंकरूवे।**

१२. वृक्ष चार प्रकार के होते हैं। जैसे-(१) कोई वृक्ष शरीर (या द्रव्य) से ऋजु (सरल-सीधा) होता है और गुण व कार्य से भी ऋजु होता है (यथासमय फलादि देता है)। (२) कोई वृक्ष शरीर से ऋजु, किन्तु कार्य से वक्र होता है (यथासमय फलादि नही देता है)। [(३) कोई वृक्ष शरीर से वक्र (टेढा-मेढा), किन्तु कार्य से ऋजु (फल देने वाला) होता है। (४) कोई वृक्ष शरीर से भी वक्र और कार्य से भी वक्र होता है। ये चार भग जानने चाहिए।

इसी तरह पुरुष भी चार प्रकार के होते है, जैसे-(१) कोई पुरुष बाहर (शरीर, गति, चेष्टादि) से ऋजु और अन्तरग या भाव से भी ऋजु होता है, (२) कोई बाहर से ऋजु, किन्तु अन्तरग से वक्र होता है, [(३) कोई बाहर से वक्र (कुटिल शरीर वाला), किन्तु अन्तरग से ऋजु (अष्टावक्र ऋषि की तरह), और (४) कोई बाहर से भी वक्र और अन्तरग से भी वक्र होता है।

इसी प्रकार जैसे उन्नत-प्रणत के सम्बन्ध मे उन्नत-प्रणत, परिणत आदि जितने विकल्प कहे है, उसी प्रकार यहाँ ऋजु और वक्र के विषय मे भी जान लेना चाहिए।

१३. वृक्ष चार प्रकार के होते है-(१) कोई वृक्ष शरीर से ऋजु और ऋजु-परिणत (बढने मे भी सहज) होता है, (२) कोई वृक्ष शरीर से ऋजु, किन्तु वक्र-परिणत होता है, (३) कोई वृक्ष शरीर से वक्र, किन्तु ऋजु-परिणत, और (४) कोई वृक्ष शरीर से वक्र और वक्र-परिणत होता है। इसी तरह पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं। जैसे-(१) कोई पुरुष शरीर से ऋजु और ऋजु-परिणत (व्यवहार मे) होता है, (२) कोई शरीर से ऋजु, किन्तु वक्र-परिणत, (३) कोई शरीर से वक्र, किन्तु ऋजु-परिणत, और (४) कोई शरीर से वक्र और वक्र-परिणत होता है।

१४. वृक्ष चार प्रकार के होते है-(१) कोई वृक्ष शरीर से ऋजु और ऋजु रूप (दीखने में आकर्षक) होता है, (२) कोई शरीर से ऋजु, किन्तु वक्र रूप वाला, (३) कोई शरीर से वक्र, किन्तु ऋजु रूप, और (४) कोई शरीर से वक्र और वक्र रूप होता है। इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष शरीर से ऋजु और ऋजु रूप (आकर्षक) होता है। (२) कोई शरीर से ऋजु, किन्तु वक्र रूप, (३) कोई शरीर से वक्र, किन्तु ऋजु रूप, और (४) कोई शरीर से वक्र और वक्र रूप होता है।

**12.** (1) Trees are of four kinds—(1) Some tree is *riju* (straight) in physical terms and *riju* in terms of quality and work (yields fruits regularly). (2) Some tree is straight in physical terms but *vakra* (crooked) in terms of quality and work (does not yield fruits regularly). (3) Some tree is crooked in physical terms but straight in terms of quality and work (4) Some tree is crooked in physical terms and in terms of quality and results as well

In the same way men are of four kinds—(1) Some man is *riju* (straight) in physical terms (body, movement, action etc.) and *riju* (straight and simple) in terms of disposition (2) Some man is straight in physical terms but *vakra* (crooked) in terms of disposition (3) Some man is crooked in physical terms but straight in terms of disposition (like sage *Ashtavakra*) (4) Some man is crooked in physical terms and in terms of disposition as well.

In the same way all the alternatives mentioned in context of *unnat* and *pranat*, such as *parinat* should be read in context of *riju* and *vakra*

**13.** Trees are of four kinds—(1) Some tree is *riju* (straight) in physical terms and *riju parinat* (straight in attained qualities) as well, such as having natural growth (2) Some tree is straight in physical terms but *vakra parinat* (crooked in attained qualities) (3) Some tree is crooked in physical terms but straight in attained qualities (4) Some tree is crooked in physical terms and in attained qualities as well In the same way men are of four kinds—(1) Some man is *riju* (straight) in physical terms and *riju parinat* (straight in attained qualities, such as behaviour) as well. (2) Some man is straight in physical terms but *vakra parinat* (crooked in attained qualities) (3) Some man is crooked in physical terms but straight in attained qualities (4) Some man is crooked in physical terms and in attained qualities as well

**14.** Trees are of four kinds—(1) Some tree is *riju* (straight) in physical terms and *riju rupa* (straight or attractive in appearance) as well. (2) Some tree is straight in physical terms but *vakra rupa* (crooked in appearance) (3) Some tree is crooked in physical terms but straight in appearance. (4) Some tree is crooked in physical terms and in appearance as well In the same way men are of four kinds—(1) Some man is *riju* (straight) in physical terms and *riju rupa* (straight or attractive in appearance) as well (2) Some man is straight in physical terms but *vakra rupa* (crooked in appearance). (3) Some man is crooked

in physical terms but straight in appearance. (4) Some man is crooked in physical terms and in appearance as well

१५. (४) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुमणे, उज्जु णाममेगे वंकमणे, वंके णाममेगे उज्जुमणे, वंके णाममेगे वंकमणे। ]

१६. (५) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुसंकप्पे, उज्जु णाममेगे वंकसंकप्पे, वंके णाममेगे उज्जुसंकप्पे, वंके णाममेगे वंकसंकप्पे। ]

१७. (६) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुपण्णे, उज्जु णाममेगे वंकपण्णे, वंके णाममेगे उज्जुपण्णे, वंके णाममेगे वंकपण्णे। ]

१८. (७) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुदिट्ठी, उज्जु णाममेगे वंकदिट्ठी, वंके णाममेगे उज्जुदिट्ठी, वंके णाममेगे वंकदिट्ठी। ]

१९. (८) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुसीलाचारे, उज्जु णाममेगे वंकसीलाचारे, वंके णाममेगे उज्जुसीलाचारे, वंके णाममेगे वंकसीलाचारे। ]

२०. (९) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुववहारे, उज्जु णाममेगे वंकववहारे, वंके णाममेगे उज्जुववहारे, वंके णाममेगे वंकववहारे। ]

२१. (१०) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उज्जू णाममेगे उज्जुपरक्कमे, उज्जु णाममेगे वंकपरक्कमे, वंके णाममेगे उज्जुपरक्कमे, वंके णाममेगे वंकपरक्कमे। ]

१५. [पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष शरीर से (गति, वाणी, चेष्टा आदि से) ऋजु और ऋजु मन होता है (साधु पुरुष की तरह), (२) कोई शरीर से ऋजु, किन्तु वक्र मन है (धूर्त्त की तरह), (३) कोई शरीर से वक्र, किन्तु ऋजु मन (चतुर शासक की तरह), और (४) कोई शरीर से वक्र और वक्र मन होता है (दुर्जन की तरह)।]

१६. [पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष शरीर से ऋजु और ऋजु सकल्प (सकल्प पूर्ति मे सहज) होता है, (२) कोई शरीर से ऋजु, किन्तु वक्र सकल्प, (३) कोई शरीर से वक्र, किन्तु ऋजु सकल्प, और (४) कोई शरीर से वक्र और वक्र संकल्प होता है।]

१७. [पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष शरीर से ऋजु और ऋजुप्रज्ञ (तीक्ष्ण बुद्धि) होता है, (२) कोई शरीर से ऋजु, किन्तु वक्र प्रज्ञा, (३) कोई शरीर से वक्र, किन्तु ऋजु प्रज्ञा वाला, और (४) कोई शरीर से वक्र और वक्र प्रज्ञा वाला होता है।]

१८. [पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष शरीर से ऋजु और ऋजु दृष्टि वाला होता है, (२) कोई शरीर से ऋजु, किन्तु वक्र दृष्टि वाला, (३) कोई शरीर से वक्र, किन्तु ऋजु दृष्टि वाला, और (४) कोई शरीर से वक्र और वक्र दृष्टि वाला होता है।]

१९. [पुरुष चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष शरीर से ऋजु और ऋजु शील-आचार वाला होता है, (२) कोई शरीर से ऋजु, किन्तु वक्र शील-आचार वाला, (३) कोई शरीर से वक्र, किन्तु ऋजु शील-आचार वाला, और (४) कोई शरीर से वक्र और वक्र शील-आचार वाला होता है।]

२०. [पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष शरीर से ऋजु और ऋजु व्यवहार वाला होता है, (२) कोई शरीर से ऋजु, किन्तु वक्र व्यवहार वाला, (३) कोई शरीर से वक्र, किन्तु ऋजु व्यवहार वाला, और (४) कोई शरीर से वक्र और वक्र व्यवहार वाला होता है।]

२१. [पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष शरीर से ऋजु और ऋजु पराक्रम वाला होता है, (२) कोई शरीर से ऋजु, किन्तु वक्र पराक्रम वाला, (३) कोई पुरुष शरीर से वक्र, किन्तु ऋजु पराक्रम वाला, और (४) कोई शरीर से वक्र और वक्र पराक्रम वाला होता है।]

**15.** [Men are of four kinds—(1) Some man is *riju* (straight) in physical terms (movement, speech, action etc ) and *riju man* (straight or simple in mind) as well (such as a *sage*) (2) Some man is straight in physical terms but *vakra man* (crooked in mind, like a crafty person) (3) Some man is crooked in physical terms but straight in mind (like a clever ruler) (4) Some man is crooked in physical terms and in mind as well (like a rogue) ]

**16.** [Men are of four kinds—(1) Some man is *riju* (straight) in physical terms and *riju sankalp* (straightforward in resolve) as well (2) Some man is straight in physical terms but *vakra sankalp* (crooked in resolve) (3) Some man is crooked in physical terms but straightforward in resolve (4) Some man is crooked in physical terms and in resolve as well ]

**17.** [Men are of four kinds—(1) Some man is *riju* (straight) in physical terms and *riju prajna* (straight in wisdom or sharp wit) as well. (2) Some man is straight in physical terms but *vakra prajna* (crooked in wisdom) (3) Some man is crooked in physical terms but straight in wisdom (4) Some man is crooked in physical terms and in wisdom as well.]

**18.** [Men are of four kinds—(1) Some man is *riju* (straight) in physical terms and *riju drishti* (straight in perception/faith) as well (2) Some man is straight in physical terms but *vakra drishti* (crooked in perception/faith). (3) Some man is crooked in physical terms but straight in perception/faith (4) Some man is crooked in physical terms and in perception/faith as well ]

**19.** [Men are of four kinds—(1) Some man is *riju* (straight) in physical terms and *riju sheel-achaar* (straight in character and conduct) as well. (2) Some man is straight in physical terms but *vakra sheel-achaar*

(crooked in character and conduct). (3) Some man is crooked in physical terms but straight in character and conduct. (4) Some man is crooked in physical terms and in character and conduct as well.]

**20.** [Men are of four kinds—(1) Some man is *riju* (straight) in physical terms and *riju vyavahar* (straight in behaviour) as well. (2) Some man is straight in physical terms but *vakra vyavahar* (crooked in behaviour). (3) Some man is crooked in physical terms but straight in behaviour. (4) Some man is crooked in physical terms and in behaviour as well.]

**21.** [Men are of four kinds—(1) Some man is *riju* (straight) in physical terms and *riju parakram* (straight in endeavour) as well (2) Some man is straight in physical terms but *vakra parakram* (crooked in endeavour). (3) Some man is crooked in physical terms but straight in endeavour. (4) Some man is crooked in physical terms and in endeavour as well.]

### भिक्षु-भाषा-पद BHIKSHU-BHASHA-PAD (SEGMENT OF ASCETIC SPEECH)

**२२. पडिमापडिवण्णस्स णं अणगारस्स कप्पंति चत्तारि भासाओ भासित्तए, तं जहा—जायणी, पुच्छणी, अणुण्णवणी, पुट्ठस्स वागरणी।**

२२. भिक्षु-प्रतिमाओं के धारक अनगार को चार भाषाएँ बोलना कल्पता है, जैसे-(१) **याचनी भाषा**-वस्त्रादि की याचना के लिए, (२) **प्रच्छनी भाषा**-सूत्र का अर्थ अथवा मार्ग आदि पूछने के लिए, (३) **अनुज्ञापनी भाषा**-स्थान आदि की आज्ञा लेने के लिए, और (४) **प्रश्नव्याकरणी भाषा**-पूछे गये प्रश्न का उत्तर देने के लिए बोलना।

**22.** It is obligatory for an ascetic observing *bhikshu-pratimas* (special codes and resolutions for an ascetic) to use only four types of *bhasha* (speech; here manner of speech)—(1) *yachani bhasha*—manner of speech suited to seek alms, (2) *prachchhani bhasha*—manner of speech suited to seeking meaning of scriptures or a path, (3) *anujnapani bhasha*—manner of speech suited to seeking permission for a place to stay etc., and (4) *prashnavyakarani bhasha*—manner of speech suited to answering questions

**२३. चत्तारि भासाजाता पण्णत्ता, तं जहा—सच्चमेगं भासज्जायं, बीयं मोसं, तइयं सच्चमोसं, चउत्थं असच्चमोसं।**

२३. भाषा चार प्रकार की है-(१) सत्य भाषा। (२) मृषा भाषा। (३) सत्य-मृषा भाषा-मिश्रित भाषा। (४) असत्यामृषा भाषा-व्यवहार भाषा।

**23.** *Bhasha* (speech) is of four kinds—(1) *satya bhasha* (speaking truth), (2) *mrisha bhasha* (telling a lie), (3) *satya-mrisha bhasha*

(speaking truth mixed with lie), and (4) *asatyamrısha bhasha* (speaking neither truth nor lie; customary speech)

### शुद्ध–अशुद्ध वस्त्र–पद SHUDDHA-ASHUDDHA VASTRA-PAD (SEGMENT OF PURE AND IMPURE CLOTH)

**२४. (१) चत्तारि वत्था पण्णत्ता, तं जहा–सुद्धे णामं एगे सुद्धे, सुद्धे णामं एगे असुद्धे, असुद्धे णामं एगे सुद्धे, असुद्धे णामं एगे असुद्धे। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सुद्धे णामं एगे सुद्धे, [ सुद्धे णामं एगे असुद्धे, असुद्धे णामं एगे सुद्धे, असुद्धे णामं एगे असुद्धे। ]**

**२५. (२) चत्तारि वत्था पण्णत्ता, तं जहा–सुद्धे णामं एगे सुद्धपरिणए, सुद्धे णामं एगे असुद्धपरिणए, असुद्धे णामं एगे सुद्धपरिणए, असुद्धे णामं एगे असुद्धपरिणए। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सुद्धे णामं एगे सुद्धपरिणए, सुद्धे णामं एगे असुद्धपरिणए, असुद्धे णामं एगे सुद्धपरिणए, असुद्धे णामं एगे असुद्धपरिणए।**

**२६. (३) चत्तारि वत्था पण्णत्ता, तं जहा–सुद्धे णामं एगे सुद्धरूवे, सुद्धे णामं एगे असुद्धरूवे, असुद्धे णामं एगे सुद्धरूवे, असुद्धे णामं एगे असुद्धरूवे। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सुद्धे णामं एगे सुद्धरूवे, सुद्धे णामं एगे असुद्धरूवे, असुद्धे णामं एगे सुद्धरूवे, असुद्धे णामं एगे असुद्धरूवे।**

२४. चार प्रकार के वस्त्र होते है, जैसे–(१) कोई वस्त्र प्रकृति से (शुद्ध तन्तु आदि से निर्मित) शुद्ध है और स्थिति से (ऊपर से मलिन नही होने के कारण वर्तमान) भी शुद्ध होता है, (२) कुछ वस्त्र प्रकृति से (प्रारम्भ से) शुद्ध, किन्तु स्थिति से (उपयोग मे आने के बाद) अशुद्ध होते है, (३) कुछ वस्त्र प्रकृति से अशुद्ध, किन्तु स्थिति से शुद्ध होते है, और (४) कुछ वस्त्र प्रकृति से अशुद्ध और स्थिति से भी अशुद्ध होते है। पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष जाति से (कुल, वंश आदि से) भी शुद्ध और गुण से (आचार, चारित्र व ज्ञान आदि से) भी शुद्ध होते है, (२) कुछ जाति से तो शुद्ध, किन्तु गुण से अशुद्ध होते है, (३) कुछ जाति से अशुद्ध, किन्तु गुण से शुद्ध होते है, और (४) कुछ जाति से अशुद्ध और गुण से भी अशुद्ध होते है।

२५. वस्त्र चार प्रकार के होते है–(१) कोई वस्त्र प्रकृति से शुद्ध और शुद्ध–परिणत (बनने पर भी शुद्ध) होता है, (२) कोई वस्त्र प्रकृति से शुद्ध, किन्तु अशुद्ध–परिणत, (३) कोई वस्त्र प्रकृति से अशुद्ध, किन्तु शुद्ध–परिणत, और (४) कोई वस्त्र प्रकृति से अशुद्ध और अशुद्ध–परिणत होता है। पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष जाति से शुद्ध और शुद्ध–परिणत (जीवन–पर्यन्त) होता है, (२) कोई पुरुष जाति से तो शुद्ध, किन्तु अशुद्ध–परिणत, (३) कोई पुरुष जाति से अशुद्ध, किन्तु शुद्ध–परिणत, और (४) कोई पुरुष जाति से भी अशुद्ध और परिणति से भी अशुद्ध होता है।

२६. वस्त्र चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई वस्त्र प्रकृति से शुद्ध और शुद्ध रूप वाला (दीखने में भी सुन्दर) होता है, (२) कोई वस्त्र प्रकृति से शुद्ध, किन्तु अशुद्ध रूप वाला, (३) कोई प्रकृति से अशुद्ध,

किन्तु शुद्ध रूप वाला, और (४) कोई वस्त्र प्रकृति से अशुद्ध और अशुद्ध रूप वाला होता है। पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष प्रकृति से शुद्ध और शुद्ध रूप वाला (सुदर्शन व्यक्तित्व वाला) होता है, (२) कोई प्रकृति से तो शुद्ध, किन्तु अशुद्ध रूप वाला, (३) कोई प्रकृति से भी अशुद्ध, किन्तु शुद्ध रूप वाला, और (४) कोई प्रकृति से अशुद्ध और अशुद्ध रूप वाला होता है।

**24.** Cloths are of four kinds—(1) Some cloth is *shuddha* (pure) originally (made of pure fibres) and *shuddha* in present condition (not dirty) (2) Some cloth is pure originally but *ashuddha* (impure) in present condition (made dirty by use) (3) Some cloth is impure originally but pure in present condition (4) Some cloth is impure originally and in present condition as well In the same way men are of four kinds—(1) Some man is *shuddha* (pure) in terms of caste (family and lineage) and *shuddha* in terms of qualities (conduct, character, knowledge etc.) (2) Some man is pure in terms of caste but *ashuddha* (impure) in terms of qualities. (3) Some man is impure in terms of caste but pure in terms of qualities (4) Some man is impure in terms of caste and in terms of qualities as well

**25.** Cloths are of four kinds—(1) Some cloth is *shuddha* (pure) originally and *shuddha parinat* (pure in transformed condition). (2) Some cloth is pure originally but *ashuddha parinat* (impure in transformed condition). (3) Some cloth is impure originally but pure in transformed condition (4) Some cloth is impure originally and in transformed condition as well In the same way men are of four kinds—(1) Some man is *shuddha* (pure) in terms of caste (family and lineage) and *shuddha parinat* (pure in transformed state all his life). (2) Some man is pure in terms of caste but *ashuddha parinat* (impure in transformed state) (3) Some man is impure in terms of caste but pure in transformed state (4) Some man is impure in terms of caste and in transformed state as well

**26.** Cloths are of four kinds—(1) Some cloth is *shuddha* (pure) originally and *shuddha rupa* (pure in appearance) (2) Some cloth is pure originally but *ashuddha rupa* (impure in appearance (3) Some cloth is impure originally but pure in appearance (4) Some cloth is impure originally and in appearance as well. In the same way men are of four kinds—(1) Some man is *shuddha* (pure) by nature and *shuddha rupa* (pure in appearance all his life). (2) Some man is pure by nature but *ashuddha rupa* (impure in appearance) (3) Some man is impure by nature but pure in appearance. (4) Some man is impure by nature and in appearance as well.

**२७. (४) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सुद्धे णामं एगे सुद्धमणे, [ सुद्धे णामं एगे असुद्धमणे, असुद्धे णामं एगे सुद्धमणे, असुद्धे णामं एगे असुद्धमणे।**

**२८. (५) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सुद्धे णामं एगे सुद्धसंकप्पे, सुद्धे णामं एगे असुद्धसंकप्पे, असुद्धे णामं एगे सुद्धसंकप्पे, असुद्धे णामं एगे असुद्धसंकप्पे।**

**२९. (६) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सुद्धे णामं एगे सुद्धपण्णे, सुद्धे णामं एगे असुद्धपण्णे, असुद्धे णामं एगे सुद्धपण्णे, असुद्धे णामं एगे असुद्धपण्णे।**

**३०. (७) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सुद्धे णामं एगे सुद्धदिट्ठी, सुद्धे णामं एगे असुद्धदिट्ठी, असुद्धे णामं एगे सुद्धदिट्ठी, असुद्धे णामं एगे असुद्धदिट्ठी।**

**३१. (८) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सुद्धे णामं एगे सुद्धसीलाचारे, सुद्धे णामं एगे असुद्धसीलाचारे, असुद्धे णामं एगे सुद्धसीलाचारे, असुद्धे णामं एगे असुद्धसीलाचारे।**

**३२. (९) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सुद्धे णामं एगे सुद्धववहारे, सुद्धे णामं एगे असुद्धववहारे, असुद्धे णामं एगे सुद्धववहारे, असुद्धे णामं एगे असुद्धववहारे।**

**३३. (१०) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सुद्धे णामं एगे सुद्धपरक्कमे, सुद्धे णामं एगे असुद्धपरक्कमे, असुद्धे णामं एगे सुद्धपरक्कमे, असुद्धे णामं एगे असुद्धपरक्कमे।**

**२७.** पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष जाति से शुद्ध और शुद्ध मन वाला होता है, (२) कोई जाति से तो शुद्ध, किन्तु अशुद्ध मन वाला, (३) कोई जाति से अशुद्ध और शुद्ध मन वाला, और (४) कोई जाति से अशुद्ध और अशुद्ध मन वाला होता है।

**२८.** पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष जाति से शुद्ध और शुद्ध सकल्प (पवित्र प्रतिज्ञा) वाला होता है, (२) कोई जाति से शुद्ध, किन्तु अशुद्ध सकल्प वाला, (३) कोई जाति से अशुद्ध, किन्तु शुद्ध संकल्प वाला, और (४) कोई जाति से अशुद्ध और अशुद्ध सकल्प वाला होता है।

**२९.** पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष जाति से शुद्ध और शुद्ध प्रज्ञा वाला होता है, (२) कोई जाति से शुद्ध, किन्तु अशुद्ध प्रज्ञा वाला, (३) कोई जाति से अशुद्ध, किन्तु शुद्ध प्रज्ञा वाला, और (४) कोई जाति से अशुद्ध और अशुद्ध प्रज्ञा वाला होता है।

**३०.** पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष जाति से शुद्ध और शुद्ध दृष्टि वाला होता है, (२) कोई जाति से शुद्ध, किन्तु अशुद्ध दृष्टि वाला, (३) कोई पुरुष जाति से अशुद्ध, किन्तु शुद्ध दृष्टि वाला, और (४) कोई जाति से अशुद्ध और अशुद्ध दृष्टि वाला होता है।

**३१.** पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष जाति से (जन्म से) शुद्ध और शुद्ध शील-आचार वाला होता है, (२) कोई जाति से शुद्ध, किन्तु अशुद्ध शील-आचार वाला, (३) कोई

जाति से अशुद्ध, किन्तु शुद्ध शील-आचार वाला, और (४) कोई जाति से अशुद्ध और अशुद्ध शील-आचार वाला होता है।

३२. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष जाति से शुद्ध और शुद्ध व्यवहार वाला होता है, (२) कोई पुरुष जाति से तो शुद्ध, किन्तु अशुद्ध व्यवहार वाला होता है, (३) कोई पुरुष जाति से अशुद्ध, किन्तु शुद्ध व्यवहार वाला होता है, और (४) कोई पुरुष जाति से अशुद्ध और अशुद्ध व्यवहार वाला होता है।

३३. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष जाति से शुद्ध और शुद्ध पराक्रम वाला होता है, (२) कोई जाति से शुद्ध, किन्तु अशुद्ध पराक्रम वाला, (३) कोई जाति से अशुद्ध, किन्तु शुद्ध पराक्रम वाला, और (४) कोई जाति से अशुद्ध और अशुद्ध पराक्रम वाला होता है।

**27.** Men are of four kinds—(1) Some man is *shuddha* (pure) by caste and *shuddha man* (pure in mind) as well. (2) Some man is pure by caste but *ashuddha man* (impure in mind). (3) Some man is impure by caste but pure in mind. (4) Some man is impure by caste and in mind as well.

**28.** Men are of four kinds—(1) Some man is *shuddha* (pure) by caste and *shuddha sankalp* (pure in resolve) as well (2) Some man is pure by caste but *ashuddha sankalp* (impure in resolve) (3) Some man is impure by caste but pure in resolve. (4) Some man is impure by caste and in resolve as well.

**29.** Men are of four kinds—(1) Some man is *shuddha* (pure) by caste and *shuddha prajna* (pure in wisdom) as well (2) Some man is pure by caste but *ashuddha prajna* (impure in wisdom) (3) Some man is impure by caste but pure in wisdom (4) Some man is impure by caste and in wisdom as well.

**30.** Men are of four kinds—(1) Some man is *shuddha* (pure) by caste and *shuddha drishti* (pure in perception/faith) as well (2) Some man is pure by caste but *ashuddha drishti* (impure in perception/faith). (3) Some man is impure by caste but pure in perception/faith (4) Some man is impure by caste and in perception/faith as well

**31.** Men are of four kinds—(1) Some man is *shuddha* (pure) by caste and *shuddha sheel-achaar* (pure in character and conduct) as well (2) Some man is pure by caste but *ashuddha sheel-achaar* (impure in character and conduct) (3) Some man is impure by caste but pure in character and conduct (4) Some man is impure by caste and in character and conduct as well.

**32.** Men are of four kinds—(1) Some man is *shuddha* (pure) by caste and *shuddha vyavahar* (pure in behaviour) as well. (2) Some man is pure by caste but *ashuddha vyavahar* (impure in behaviour) (3) Some man is impure by caste but pure in behaviour (4) Some man is impure by caste and in behaviour as well.

**33.** Men are of four kinds—(1) Some man is *shuddha* (pure) by caste and *shuddha parakram* (pure in endeavour) as well (2) Some man is pure by caste but *ashuddha parakram* (impure in endeavour). (3) Some man is impure by caste but pure in endeavour (4) Some man is impure by caste and in endeavour as well

### *सुत-पद* SUT-PAD (SEGMENT OF SON)

**३४. चत्तारि सुता पण्णत्ता, तं जहा—अतिजाते, अनुजाते, अवजाते, कुलिंगाले।**

३४. सुत (पुत्र) चार प्रकार के होते है, जैसे-(१) कोई सुत अतिजात—पिता से भी अधिक समृद्ध और श्रेष्ठ होता है (जैसे—श्रीकृष्ण आदि)। (२) कोई सुत अनुजात—पिता के समान समृद्धि वाला होता है (भरत चक्रवर्ती)। (३) कोई सुत अपजात—पिता से हीन समृद्धि वाला होता है। (४) कोई सुत कुलाङ्गार—कुल मे अगार के समान—कुल को दूषित करने वाला होता है (दुर्योधन आदि की तरह)।

**34.** *Sut* (son) is of four kinds—(1) *atijaat*—more wealthy and accomplished than father (like Shrikrishna), (2) *anujaat*—as wealthy as father (Bharat Chakravarti), (3) *apajaat*—less wealthy than father and (4) *kulaangaar*—a cinder-like black spot on the family (like Duryodhan)

### *सत्य-असत्य-पद (दस विकल्प)* SATYA-ASATYA-PAD (SEGMENT OF TRUTH AND LIE)

**३५. (१) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सच्चे णामं एगे सच्चे, सच्चे णामं एगे असच्चे, [ असच्चे णामं एगे सच्चे, असच्चे णामं एगे असच्चे। ] एवं परिणते जाव परक्कमे।**

**३६. (२) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सच्चे णामं एगे सच्चपरिणते, सच्चे णामं एगे असच्चपरिणते, असच्चे णामं एगे सच्चपरिणते, असच्चे णामं एगे असच्चपरिणते।**

**३७. (३) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सच्चे णामं एगे सच्चरूवे, सच्चे णामं एगे असच्चरूवे, असच्चे णामं एगे सच्चरूवे, असच्चे णामं एगे असच्चरूवे।**

**३८. (४) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सच्चे णामं एगे सच्चमणे, सच्चे णामं एगे असच्चमणे, असच्चे णामं एगे सच्चमणे, असच्चे णामं एगे असच्चमणे।**

**३९. (५) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सच्चे णामं एगे सच्चसंकप्पे, सच्चे णामं एगे असच्चसंकप्पे, असच्चे णामं एगे सच्चसंकप्पे, असच्चे णामं एगे असच्चसंकप्पे।**

**४०. (६) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सच्चे णामं एगे सच्चपण्णे, सच्चे णामं एगे असच्चपण्णे, असच्चे णामं एगे सच्चपण्णे, असच्चे णामं एगे असच्चपण्णे।**

**४१. (७) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सच्चे णामं एगे सच्चदिट्ठी, सच्चे णामं एगे असच्चदिट्ठी, असच्चे णामं एगे सच्चदिट्ठी, असच्चे णामं एगे असच्चदिट्ठी।**

**४२. (८) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सच्चे णामं एगे सच्चसीलाचारे, सच्चे णामं एगे असच्चसीलाचारे, असच्चे णामं एगे सच्चसीलाचारे, असच्चे णामं एगे असच्चसीलाचारे।**

**४३. (९) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सच्चे णामं एगे सच्चववहारे, सच्चे णामं एगे असच्चववहारे, असच्चे णामं एगे सच्चववहारे, असच्चे णामं एगे असच्चववहारे।**

**४४. (१०) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सच्चे णामं एगे राच्चपरक्कमे, सच्चे णामं एगे असच्चपरक्कमे, असच्चे णामं एगे सच्चपरक्कमे, असच्चे णामं एगे असच्चपरक्कमे।**

३५. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष पहले भी सत्य (वादी) होता है और पीछे भी सत्य (वादी) होता है, [(२) कोई पहले सत्य (वादी), किन्तु पीछे असत्य (वादी), (३) कोई पहले असत्य (वादी), किन्तु पीछे सत्य (वादी), और (४) कोई पहले भी असत्य (वादी) और पीछे भी असत्य (वादी) होता है।] परिणत से लेकर पराक्रम पर्यन्त चार-चार भंग जानने चाहिए।

३६. [पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष सत्य (सत्यवादी-प्रतिज्ञापालक की अपेक्षा) और सत्य-परिणत (क्रिया या व्यवहार की अपेक्षा) होता है, (२) कोई सत्य, किन्तु असत्य-परिणत, (३) कोई असत्य (असत्यभाषी), किन्तु सत्य-परिणत, और (४) कोई असत्य और असत्य-परिणत होता है।

३७. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष सत्य (व्रत आदि की दृष्टि से) और सत्य (यथार्थ) रूप वाला होता है, (२) कोई सत्य, किन्तु असत्य रूप वाला, (३) कोई असत्य (असत्यभाषी), किन्तु सत्य रूप वाला, और (४) कोई असत्य और असत्य रूप वाला होता है।

३८. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष सत्य और सत्य मन वाला होता है, (२) कोई सत्य, किन्तु असत्य मन वाला, (३) कोई असत्य, किन्तु सत्य मन वाला, और (४) कोई असत्य और असत्य मन वाला होता है।

३९. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष सत्य और सत्य सकल्प वाला होता है, (२) कोई सत्य, किन्तु असत्य सकल्प वाला, (३) कोई असत्य, किन्तु सत्य सकल्प वाला, और (४) कोई असत्य और असत्य सकल्प वाला होता है।

४०. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष सत्य और सत्य प्रज्ञा वाला होता है, (२) कोई सत्य, किन्तु असत्य प्रज्ञा वाला होता है, (३) कोई पुरुष असत्य, किन्तु सत्य प्रज्ञा वाला, और (४) कोई पुरुष असत्य और असत्य प्रज्ञा वाला होता है।

४१. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष सत्य और सत्य दृष्टि वाला होता है, (२) कोई सत्य, किन्तु असत्य दृष्टि वाला, (३) कोई असत्य, किन्तु सत्य दृष्टि वाला, और (४) कोई असत्य और असत्य दृष्टि वाला होता है।

४२. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष सत्य और सत्य शील–आचार वाला होता है, (२) कोई सत्य, किन्तु असत्य शील–आचार वाला, (३) कोई असत्य, किन्तु सत्य शील–आचार वाला, और (४) कोई असत्य और असत्य शील–आचार वाला होता है।

४३. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष सत्य और सत्य व्यवहार वाला होता है, (२) कोई सत्य, किन्तु असत्य व्यवहार वाला, (३) कोई असत्य, किन्तु सत्य व्यवहार वाला, और (४) कोई असत्य और असत्य व्यवहार वाला होता है।

४४. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष सत्य और सत्य पराक्रम वाला होता है, (२) कोई सत्य, किन्तु असत्य पराक्रम वाला, (३) कोई असत्य, किन्तु सत्य पराक्रम वाला, और (४) कोई असत्य और असत्य पराक्रम वाला होता है।

**35.** Men are of four kinds—(1) Some man is *satya-vadi* (truth speaking or true) to begin with and *satya-vadi* later as well [(2) Some man is *satya-vadi* (true) to begin with and *asatya-vadi* (speaking untruth or untrue) later (3) Some man is *asatya-vadi* (untrue) to begin with and *satya-vadi* later (4) Some man is *asatya-vadi* to begin with and *asatya-vadi* later as well From *parinat* to *parakram* four quads each should be read as in aforesaid aphorisms

**36.** Men are of four kinds—(1) Some man is *satya* (true in intent) and *satya parinat* (true is having transformed intent into practice, *i e* actually speaking truth) (2) Some man is *satya* (true in intent) but *asatya parinat* (speaking untruth or untrue in transformed state) (3) Some man is *asatya* (in intent) but *satya parinat* (true in transformed state) (4) Some man is *asatya* and *asatya parinat* as well

**37.** Men are of four kinds—(1) Some man is *satya* (true in intent) and *satya rupa* (true in appearance or practice) as well (2) Some man is true in intent but *asatya rupa* (untrue in appearance). (3) Some man is untrue in intent but true in appearance (4) Some man is untrue in intent and untrue in appearance as well.

**38.** Men are of four kinds—(1) Some man is *satya* (true in intent) and *satya man* (true in mind) as well (2) Some man is true in intent but *asatya man* (untrue in mind). (3) Some man is *asatya* (untrue in intent) but true in mind (4) Some man is untrue in intent and untrue in mind as well.

**39.** Men are of four kinds—(1) Some man is *satya* (true in intent) and *satya sankalp* (true in resolve) as well (2) Some man is true in intent but *asatya sankalp* (untrue in resolve) (3) Some man is untrue in intent but true in resolve. (4) Some man is untrue in intent and in resolve as well.

**40.** Men are of four kinds—(1) Some man is *satya* (true in intent) and *satya prajna* (true in wisdom) as well (2) Some man is true in intent but *asatya prajna* (untrue in wisdom). (3) Some man is untrue in intent but true in wisdom. (4) Some man is untrue in intent and in wisdom as well.

**41.** Men are of four kinds—(1) Some man is *satya* (true in intent) and *satya drishti* (true in perception/faith) as well (2) Some man is true in intent but *asatya drishti* (untrue in perception/faith). (3) Some man is untrue in intent but true in perception/faith. (4) Some man is untrue in intent and in perception/faith as well

**42.** Men are of four kinds—(1) Some man is *satya* (true in intent) and *satya sheel-achaar* (true in character and conduct) as well (2) Some man is true in intent but *asatya sheel-achaar* (untrue in character and conduct) (3) Some man is untrue in intent but true in character and conduct. (4) Some man is untrue in intent and in character and conduct as well

**43.** Men are of four kinds—(1) Some man is *satya* (true in intent) and *satya vyavahar* (true in behaviour) as well (2) Some man is true in intent but *asatya vyavahar* (untrue in behaviour) (3) Some man is untrue in intent but true in behaviour (4) Some man is untrue in intent and in behaviour as well.

**44.** Men are of four kinds—(1) Some man is *satya* (true in intent) and *satya parakram* (true in endeavour) as well (2) Some man is true in intent but *asatya parakram* (untrue in endeavour) (3) Some man is untrue in intent but true in endeavour (4) Some man is untrue in intent and in endeavour as well

**विवेचन**—सूत्र ३६ के द्वितीय तथा तृतीय भग के विषय मे प्रश्न होता है, सत्यभाषी असत्य परिणत कैसे हो सकता है ? और असत्यभाषी सत्य परिणत कैसे हो सकता है ? इसका समाधान यह है कि कोई व्यक्ति पहले तो कहता है, मै असत्य वचन नहीं बोलूँगा, सौगध खाता है, किन्तु आगे चलकर अपने व्यवहार में वह अप्रामाणिक हो जाता है। इसी प्रकार कोई पहले किसी विषय में असत्य कथन करता रहता है, परन्तु सत्य बोलने की प्रतिज्ञा लेने के बाद क्रिया पक्ष मे सत्य परिणत हो जाता है। आचार्य श्री आत्माराम जी म. के अनुसार हिंसात्मक, स्वार्थपूर्ति के लिए या मिथ्यान्वी का सत्य वचन केवल द्रव्य सत्य है। भाव या परिणति की दृष्टि असत्य कोटि मे ही है।

**Elaboration**—In the second and third alternative of aphorism 36 questions may arise that how can a person speaking truth can transform to be untrue and how a person speaking untruth can transform to be true ? The answer is that some person initially says that he will not tell a lie and promises to do so but later he actually becomes false or unauthentic. In the same way a person tells a lie about something but once he promises to utter truth he actually puts it into action turning true According to Acharya Shri Atmamarm ji M the truth uttered by an unrighteous person for selfish and violent purpose is *dravya satya* (material truth or mere utterance of truth). In terms of attitude or actual action it falls in the category of untruth

### *शुचि-अशुचि-पद (दस विकल्प)* SHUCHI-ASHUCHI-PAD (SEGMENT OF CLEAN AND UNCLEAN)

**४५. (१) चत्तारि वत्था पण्णत्ता, तं जहा—सुई णामं एगे सुई, सुई णामं एगे असुई, चउभंगो ४। [ असुई णामं एगे सुई, असुई णामं एगे असुई ]।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुई णामं एगे सुई, चउभंगो। एवं जहेव सुद्धे णं वत्थेणं भणितं तहेव सुईणा जाव परक्कमे। [ सुई णामं एगे असुई, असुई णामं एगे सुई, असुई णामं एगे असुई ]।**

**४६. (२) चत्तारि वत्था पण्णत्ता, तं जहा—सुई णामं एगे सुइपरिणते, सुई णामं एगे असुइपरिणते, असुई णामं एगे सुइपरिणते, असुई णामं एगे असुइपरिणते।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुई णामं एगे सुइपरिणते, सुई णामं एगे असुइपरिणते, असुई णामं एगे सुइपरिणते, असुई णामं एगे असुइपरिणते।**

**४७. (३) चत्तारि वत्था पण्णत्ता, तं जहा—सुई णामं एगे सुइरूवे, सुई णामं एगे असुइरूवे, असुई णामं एगे सुइरूवे, असुई णामं एगे असुइरूवे।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुई णामं एगे सुइरूवे, सुई णामं एगे असुइरूवे, असुई णामं एगे सुइरूवे, असुई णामं एगे असुइरूवे।**

४५. वस्त्र चार प्रकार के होते है-(१) कोई वस्त्र प्रकृति से शुचि (स्वच्छ) और परिष्कार-सफाई से शुचि होता है, [(२) कोई प्रकृति से शुचि, किन्तु अपरिष्कार-सफाई न होने से अशुचि, (३) कोई प्रकृति से अशुचि, किन्तु परिष्कार से शुचि, और (४) कोई वस्त्र प्रकृति से अशुचि और अपरिष्कार से भी अशुचि होता है।]

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष शरीर से शुचि और स्वभाव से शुचि होता है, (२) कोई शरीर से शुचि, किन्तु स्वभाव से अशुचि, (३) कोई शरीर से अशुचि, किन्तु स्वभाव से शुचि, और (४) कोई शरीर से अशुचि और स्वभाव से भी अशुचि होता है।

वस्त्र की तरह पुरुष के साथ भी शुचि की चतुर्भंगी परिणत से लेकर पराक्रम पर्यन्त वृक्ष के भंग की तरह योजना कर लेना चाहिए।

४६. वस्त्र चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई वस्त्र प्रकृति से शुचि और शुचि-परिणत होता है, (२) कोई वस्त्र प्रकृति से शुचि, किन्तु अशुचि-परिणत, (३) कोई वस्त्र प्रकृति से अशुचि, किन्तु शुचि-परिणत, और (४) कोई वस्त्र प्रकृति से अशुचि और अशुचि-परिणत होता है।

इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष शरीर से शुचि और शुचि-परिणत होता है, (२) कोई शरीर से शुचि, किन्तु अशुचि-परिणत, (३) कोई शरीर से अशुचि, किन्तु शुचि-परिणत, और (४) कोई शरीर से अशुचि और अशुचि-परिणत होता है।

४७. वस्त्र चार प्रकार के होते है-(१) कोई वस्त्र प्रकृति से शुचि और शुचि रूप वाला होता है, (२) कोई प्रकृति से शुचि, किन्तु अशुचि रूप वाला, (३) कोई प्रकृति से अशुचि, किन्तु शुचि रूप वाला, और (४) कोई प्रकृति से अशुचि और अशुचि रूप वाला होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष स्वभाव से शुचि (पवित्र) और शुचि रूप वाला होता है, (२) कोई स्वभाव से शुचि, किन्तु अशुचि रूप वाला, (३) कोई स्वभाव से अशुचि, किन्तु शुचि रूप वाला, और (४) कोई स्वभाव से अशुचि और अशुचि रूप वाला होता है।

**45.** Cloths are of four kinds—(1) Some cloth is *shuchi* (clean) originally (made of clean fibres) and *shuchi* in present condition (after cleaning) (2) Some cloth is clean originally but *ashuchi* (unclean) in present condition (made dirty by use) (3) Some cloth is unclean originally but clean in present condition (4) Some cloth is unclean originally and in present condition as well.

In the same way men are of four kinds—(1) Some man is *shuchi* (clean) physically and *shuchi* in attitude as well. (2) Some man is clean physically but *ashuchi* (unclean) in attitude (3) Some man is unclean physically but clean in attitude. (4) Some man is unclean physically and in attitude as well.

Like cloth the information about cleanliness of man also follows the same pattern. From *parinat* to *parakram* four quads each should be read as in case of tree.

**46.** Cloths are of four kinds—(1) Some cloth is *shuchi* (clean) originally and *shuchi parinat* (clean in transformed condition) (2) Some cloth is clean originally but *ashuchi parinat* (unclean in transformed condition (3) Some cloth is unclean originally but clean in transformed condition. (4) Some cloth is unclean originally and in transformed condition as well

In the same way men are of four kinds—(1) Some man is *shuchi* (clean) physically and *shuchi parinat* (clean in transformed state). (2) Some man is clean physically but *ashuchi parinat* (unclean in transformed state) (3) Some man is unclean physically but clean in transformed state. (4) Some man is unclean physically and in transformed state as well

**47.** Cloths are of four kinds—(1) Some cloth is *shuchi* (clean) originally and *shuchi rupa* (in appearance). (2) Some cloth is clean originally but *ashuchi rupa* (unclean in appearance). (3) Some cloth is unclean originally but clean in appearance (4) Some cloth is unclean originally and in appearance as well

In the same way men are of four kinds—(1) Some man is *shuchi* (clean) by nature and *shuchi rupa* (clean in appearance) (2) Some man is clean by nature but *ashuchi rupa* (unclean in appearance) (3) Some man is unclean by nature but clean in appearance. (4) Some man is unclean by nature and in appearance as well

**४८. (४) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सुई णामं एगे सुइमणे, सुई णामं एगे असुइमणे, असुई णामं एगे सुइमणे, असुई णामं एगे असुइमणे।**

**४९. (५) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सुई णामं एगे सुइसंकप्पे, सुई णामं एगे असुइसंकप्पे, असुई णामं एगे सुइसंकप्पे, असुई णामं एगे असुइसंकप्पे।**

**५०. (६) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सुई णामं एगे सुइपण्णे, सुई णामं एगे असुइपण्णे, असुई णामं एगे सुइपण्णे, असुई णामं एगे असुइपण्णे।**

**५१. (७) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सुई णामं एगे सुइदिट्ठी, सुई णामं एगे असुइदिट्ठी, असुई णामं एगे सुइदिट्ठी, असुई णामं एगे असुइदिट्ठी।**

**५२. (८) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सुई णामं एगे सुइसीलाचारे, सुई णामं एगे असुइसीलाचारे, असुई णामं एगे सुइसीलाचारे, असुई णामं एगे असुइसीलाचारे।**

**५३. (९) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सुई णामं एगे सुइववहारे, सुई णामं एगे असुइववहारे, असुई णामं एगे सुइववहारे, असुई णामं एगे असुइववहारे।**

**५४. (१०) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–सुई णामं एगे सुइपरक्कमे, सुई णामं एगे असुइपरक्कमे, असुई णामं एगे सुइपरक्कमे, असुई णामं एगे असुइपरक्कमे।**

४८. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष शरीर से शुचि और मन से भी शुचि होता है, (२) कोई शरीर से शुचि, किन्तु अशुचि मन वाला, (३) कोई शरीर से अशुचि, किन्तु शुचि मन वाला, और (४) कोई शरीर से अशुचि और अशुचि मन वाला होता है।

४९. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष शरीर से शुचि और शुचि संकल्प वाला होता है, (२) कोई शरीर से शुचि, किन्तु अशुथि सकल्प वाला, (३) कोई पुरुष शरीर से अशुचि, किन्तु शुचि संकल्प वाला, और (४) कोई शरीर से अशुचि और अशुचि संकल्प वाला होता है।

५०. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष शरीर से शुचि और प्रज्ञा से भी शुचि होता है, (२) कोई शरीर से शुचि, किन्तु अशुचि प्रज्ञा वाला, (३) कोई शरीर से अशुचि, किन्तु शुचि प्रज्ञा वाला, और (४) कोई शरीर से अशुचि और अशुचि प्रज्ञा वाला होता है।

५१. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष शरीर से शुचि और शुचि दृष्टि वाला होता है, (२) कोई शरीर से शुचि, किन्तु अशुचि दृष्टि वाला, (३) कोई शरीर से अशुचि, किन्तु शुचि दृष्टि वाला, और (४) कोई शरीर से अशुचि और अशुचि दृष्टि वाला होता है।

५२. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष शरीर से शुचि और शुचि शील–आचार वाला होता है, (२) कोई शरीर से शुचि, किन्तु अशुचि शील–आचार वाला, (३) कोई शरीर से अशुचि, किन्तु शुचि शील–आचार वाला, और (४) कोई शरीर से अशुचि और अशुचि शील–आचार वाला होता है।

५३. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष शरीर से शुचि और शुचि व्यवहार वाला होता है, (२) कोई शरीर से शुचि, किन्तु अशुचि व्यवहार वाला, (३) कोई पुरुष शरीर से अशुचि, किन्तु शुचि व्यवहार वाला, और (४) कोई पुरुष शरीर से अशुचि और अशुचि व्यवहार वाला होता है।

५४. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष शरीर से शुचि और शुचि पराक्रम वाला होता है, (२) कोई शरीर से शुचि, किन्तु अशुचि पराक्रम वाला, (३) कोई शरीर से अशुचि, किन्तु शुचि पराक्रम वाला, और (४) कोई शरीर से अशुचि और अशुचि पराक्रम वाला होता है।

**48.** Men are of four kinds—(1) Some man is *shuchi* (clean in body) and *shuchi man* (clean in mind) as well (2) Some man is clean in body but *ashuchi man* (unclean in mind) (3) Some man is *ashuchi* (unclean in body) but clean in mind (4) Some man is unclean in body and unclean in mind as well

**49.** Men are of four kinds—(1) Some man is *shuchi* (clean in body) and *shuchi sankalp* (clean in resolve) as well (2) Some man is clean in body but *ashuchi sankalp* (unclean in resolve) (3) Some man is unclean in body but clean in resolve (4) Some man is unclean in body and in resolve as well.

**50.** Men are of four kinds—(1) Some man is *shuchi* (clean in body) and *shuchi prajna* (clean in wisdom) as well (2) Some man is clean in body but *ashuchi prajna* (unclean in wisdom) (3) Some man is unclean in body but clean in wisdom (4) Some man is unclean in body and in wisdom as well

**51.** Men are of four kinds—(1) Some man is *shuchi* (clean in body) and *shuchi drishti* (clean in perception/faith) as well (2) Some man is clean in body but *ashuchi drishti* (unclean in perception/faith). (3) Some man is unclean in body but clean in perception/faith. (4) Some man is unclean in body and in perception/faith as well

**52.** Men are of four kinds—(1) Some man is *shuchi* (clean in body) and *shuchi sheel-achaar* (clean in character and conduct) as well. (2) Some man is clean in body but *ashuchi sheel-achaar* (unclean in character and conduct). (3) Some man is unclean in body but clean in character and conduct. (4) Some man is unclean in body and in character and conduct as well

**53.** Men are of four kinds—(1) Some man is *shuchi* (clean in body) and *shuchi vyavahar* (clean in behaviour) as well (2) Some man is clean in body but *ashuchi vyavahar* (unclean in behaviour) (3) Some man is unclean in body but clean in behaviour. (4) Some man is unclean in body and in behaviour as well

**54.** Men are of four kinds—(1) Some man is *shuchi* (clean in body) and *shuchi parakram* (clean in endeavour) as well (2) Some man is clean in body but *ashuchi parakram* (unclean in endeavour) (3) Some man is unclean in body but clean in endeavour (4) Some man is unclean in body and in endeavour as well

**विवेचन**—शुचि का अर्थ है–पवित्रता। वह दो प्रकार की होती है–(१) स्वभाव से, और (२) सस्कार से। जैसे मूल रूप से स्वच्छ वस्त्र स्वभाव से शुचि माना जाता है। धोने व प्रेस करने पर या सुगधित बनाने पर वह सस्कारजन्य पवित्र होता है। पुरुष के सदर्भ मे स्नान आदि करने पर बाहरी (द्रव्य) पवित्रता आती है तथा शिक्षा व धर्म के द्वारा सस्कारित होने से मन, विचार और व्यवहार की पवित्रता भाव पवित्रता है।

**Elaboration**—*Shuchi* means cleanliness or purity It is of two kinds—(1) by *svabhaava* (nature or attitude), and (2) by *samskar* (by cleaning or lustrating) For example originally clean cloth is *shuchi* by nature. After washing, ironing and applying perfume it becomes *shuchi* by cleaning or lustrating In case of man, taking a bath leads to a clean body and education and influence of religion leads to cleanliness or purity of mind, thought and behaviour

### कोरक–पद KORAK-PAD (SEGMENT OF BUD)

**५५. चत्तारि कोरवा पण्णत्ता, तं जहा–अंबपलंबकोरवे, तालपलंबकोरवे, वल्लिपलंबकोरवे, मेंढविसाणकोरवे।**

**एवमेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अंबपलंबकोरवसमाणे, तालपलंबकोरवसमाणे, वल्लिपलंबकोरवसमाणे, मेंढविसाणकोरवसमाणे।**

५५. कोरक (कलि) चार प्रकार के होते है, जैसे–(१) **आम्रप्रलम्ब कोरक**–आम के फल की कलिका। (२) **तालप्रलम्ब कोरक**–ताड़ के फल की कलिका। (३) **वल्लीप्रलम्ब कोरक**–वल्ली (लता) के फल वाली कलिका। (४) **मेंढ्रविषाण कोरक**–मेंढे के सींग के समान फल वाली वनस्पति–(जो केवल दीखने मे सुन्दर होती है) की कलिका।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है, जैसे–(१) **आम्रप्रलम्ब–कोरक समान**–जो सेवा करने वाले को उचित अवसर पर उचित उपकाररूप फल प्रदान करे। (२) **तालप्रलम्ब–कोरक समान**–जो दीर्घकाल तक खूब सेवा करने वाले को उपकाररूप फल प्रदान करे। (३) **वल्लीप्रलम्ब–कोरक समान**–जो सेवा करने पर शीघ्र और सरलता से फल प्रदान करे। (४) **मेंढ्रविषाण–कोरक समान**–जो सेवा करने पर भी केवल मीठे वचन ही बोले, किन्तु कोई उपकार न करे।

**55.** *Korak* (bud) is of four kinds—(1) *amrapralamb korak*—mango bud, (2) *taalapralamb korak*—pine bud, (3) *vallipralamb korak*—creeper bud, and (4) *mendhravishan korak*—a bud resembling horns of a ram (which is beautiful only to look at).

In the same way men are also of four kinds—(1) like *amrapralamb korak* (mango bud)—one who rewards service properly and timely, (2) *like taalapralamb korak* (pine bud)—one who rewards only prolonged service, (3) *vallipralamb korak* (creeper bud)—one who rewards service easily and quickly, and (4) like *mendhravishan korak* (a bud resembling horns of a ram)—one who rewards service simply by sweet words and not materially

### *भिक्षाक–पद* BHIKSHAAK-PAD (SEGMENT OF ALMS EATER)

**५६. चत्तारि घुणा पण्णत्ता, तं जहा—तयक्खाए, छल्लिक्खाए, कट्ठक्खाए, सारक्खाए।**

**एवामेव चत्तारि भिक्खागा पण्णत्ता, तं जहा—तयक्खायसमाणे, जाव [ छल्लिक्खायसमाणे कट्ठक्खायसमाणे ] सारक्खायसमाणे। (१) तयक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स सारक्खायसमाणे तवे पण्णत्ते। (२) सारक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स तयक्खायसमाणे तवे पण्णत्ते। (३) छल्लिक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स कट्ठक्खायसमाणे तवे पण्णत्ते। (४) कट्ठक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स छल्लिक्खायसमाणे तवे पण्णत्ते।**

५६. घुण (काष्ठ–भक्षक कीडे) चार प्रकार के होते है, जैसे–(१) **त्वक्–खाद**–वृक्ष की ऊपरी छाल को खाने वाला। (२) **छल्ली–खाद**–छाल के भीतरी भाग को खाने वाला। (३) **काष्ठ–खाद**–काष्ठ को खाने वाला। (४) **सार–खाद**–काष्ठ के मध्यवर्ती सार को खाने वाला।

इसी प्रकार भिक्षाक (भिक्षा-भोजी साधु) चार प्रकार के होते हैं। जैसे-(१) **त्वक्-खाद समान**-नीरस, रूक्ष, अन्त-प्रान्त आहारभोजी साधु। (२) **छल्ली-खाद समान**-लेपरहित रूक्ष आहारभोजी साधु। (३) **काष्ठ-खाद समान**-दूध, दही, घृतादि से रहित (विगयरहित) आहारभोजी साधु। (४) **सार-खाद समान**-दूध, दही, घृतादि से परिपूर्ण आहारभोजी साधु।

(१) **त्वक्-खाद** समान (नीरसभोजी) भिक्षुक का तप **सार-खाद-घुण** के समान प्रखरतर होता है। (२) **सार-खाद** समान (सरसभोजी) भिक्षुक का तप **त्वक्-खाद-घुण** के समान अल्पतर होता है। (३) **छल्ली-खाद** समान (लेपरहित भोजी) भिक्षुक का तप **काष्ठ-खाद-घुण** के समान प्रखर कहा गया है। (४) **काष्ठ-खाद** समान (विगयरहित) भिक्षुक का तप छल्ली-खाद-घुण के समान (सामान्य) होता है।

**56.** *Ghun* (wood-worm) are of four kinds—(1) *tvak-khaad*—that consumes outer part or skin of bark, (2) *chhalli-khaad*—that consumes inner part of bark, (3) *kaasth-khaad*—that consumes wood, and (4) *saar-khaad*—that consumes just the central core of wood.

In the same way *bhikshaak* (alms eater ascetics) are of four kinds—(1) like *tvak-khaad* worm—one who consumes tasteless, dry and leftover food, (2) like *chhalli-khaad* worm—one who consumes curry-less dry food, (3) like *kaasth-khaad* worm—one who consumes food free of proscribed things like milk, curd, butter etc , and (4) like *saar-khaad* worm—one who consumes food saturated with rich ingredients like milk, curd, butter etc

(1) Austerity of an ascetic eating like *tvak-khaad* worm is very intense like *saar-khaad* worm (2) Austerity of an ascetic eating like *saar-khaad* worm is ineffective like *tvak-khaad* worm (3) Austerity of an ascetic eating like *chhalli-khaad* worm is intense like *kaasth-khaad* worm (4) Austerity of an ascetic eating like *kaasth-khaad* worm is ordinary like *chhalli-khaad* worm

**विवेचन**-भिक्षा से जीवन निर्वाह करने वाले को **भिक्खाग** कहा जाता है। सूत्रकृताग (१६) मे जितेन्द्रिय, ममत्वरहित, स्थितप्रज्ञ और परदत्तभोजी आदि गुणो से युक्त मुनि को भिक्षु कहा है। यहाँ घुण के साथ भिक्षु की तुलना की है। जिस घुण कीट के मुख की भेदन-शक्ति जितनी अल्प या अधिक होती है, उसी के अनुसार वह त्वचा, छाल, काठ या सार को भीतर तक खाता है। (१) सबसे प्रखर भेदन शक्ति वाला घुण वृक्ष के सार तक पहुँच जाता है। जो भिक्षु प्रान्त (बचा-खुचा) स्वल्प-रूखा-सूखा आहार करता है, उसके कर्म-क्षय करने वाले तप की शक्ति सार को खाने वाले घुण के समान सबसे अधिक होती है। (२) जो भिक्षु दूध, दही आदि विकृतियो से परिपूर्ण आहार करता है, उसके कर्म-क्षय करने वाले तप की शक्ति त्वचा को खाने वाले घुण के समान अत्यल्प होती है। (३) जो भिक्षु लेपरहित आहार करता है, उसकी कर्म-क्षय करने की शक्ति काठ को खाने वाले घुण के समान होती है।

चार प्रकार के वृक्ष
चार प्रकार के पुरुष

चित्र परिचय १४

Illustration No. 14

## चार प्रकार के वृक्ष : चार प्रकार के पुरुष

(१) **आम्र वृक्ष के समान–उदार पुरुष**–आम जैसे सेवा करने वालो को मधुर फल, शीतल छाया और विपुल काष्ठ आदि देकर तृप्त करता है। उसी प्रकार कुछ उदारमना पुरुष होते है, जो सेवा करने वालो को भरपूर धन, वस्त्र आदि देकर प्रसन्न कर देते है।

(२) **ताड़ वृक्ष के समान–दीर्घ सेवा अल्प फल**–ताड वृक्ष की लम्बे समय तक सेवा- सँभाल करनी पडती है, फिर भी वह बडी कठिनाई से थोडा-थोडा फल देता है। उसी प्रकार कुछ पुरुष ऐसे होते है, जो जीवनभर सेवा करने वालो को भी थोडा-सा उपहार-पुरस्कार देकर खुश करना चाहते है।

(३) **लता फल के समान–अति उदार पुरुष**–खरबूजा, तरबूजा आदि की लताएँ साधारण-सी सेवा करने वालो को बडी सरलता से अति शीघ्र भरपूर फल देती है। उसी प्रकार कुछ अति उदार वृत्ति के पुरुष होते है जो थोडी-सी सेवा करने वाले को दिल खोलकर पुरस्कार देते है।

(४) **मेढ़ विषाण वृक्ष के समान–अनुदार पुरुष**–टढी-मेढी छोटी-छोटी फलियो वाला एक वृक्ष होता है मेढ़ विषाण उसकी फलियाँ देखने मे तो सुन्दर दीखती है, परन्तु खाने मे काम नही आती। उसी प्रकार कुछ अनुदार प्रकृति के, किन्तु मधुरभाषी पुरुष होते है, जो सेवा करने वाले को केवल मीठा वचन बोलकर खुश कर देते है, देते कुछ नही।

स्थान ४ सूत्र ५५

## FOUR KINDS OF TREES : FOUR KINDS OF NOBLE MEN

**(1) Generous person like a mango tree**—A mango tree rewards those who take its care with sweet fruits, cool shade and ample wood In the same way generous persons reward services to them with ample wealth, dresses etc

**(2) Long service with least reward like a palm tree**—A palm tree requires care for a long duration and even then it rarely provides but a few fruits In the same way are there some persons who try to please even those who serve them all their life with meager rewards

**(3) Very generous like creepers**—Creepers of fruits like melon and water melon require very little care and easily yield large quantity of fruits In the same way there are some extremely generous persons who give generous rewards even to those who have done little service to them

**(4) Ungenerous like Mendhra vishan trees**—There is a tree with small twisted seed pods resembling horns of a ram These pods are attractive but not edible In the same way there are ungenerous sweet-speaking persons who reward services simply with charming words and nothing material

*—Sthaan 4, Sutra 55*

(४) जो भिक्षु दूध, दही आदि विगययुक्त आहार करता है, उसकी कर्म-क्षय की शक्ति ऊपर की छाल को खाने वाले घुण के समान अल्प होती है। उक्त चारों मे त्वक्-खाद समान भिक्षु का तप सर्वश्रेष्ठ उत्तम है। छल्ली-खाद समान भिक्षु का तप मध्यम है। काष्ठ-खाद समान भिक्षु का तप जघन्य है और सार-खाद समान भिक्षु का तप जघन्यतर श्रेणी का है। *(स्थानांग वृत्ति, भाग १, पृ ३१३ तथा हिन्दी टीका, पृ ६६६-६६७)*

**Elaboration**—One who lives on alms is called *bhikshaak* According to *Sutrakritanga* a *bhikshu* is an ascetic who has conquered his senses (*jitendriya*), is free of attachment, is absolutely unperturbed and survives on donated food Here *bhikshu* is compared with wood-worm Depending on its boring capacity a wood worm consumes wood from specific sections of a tree, such as skin, bark, wood or the central core. (1) A worm with maximum boring capacity reaches the core of a tree The intensity of the power of destroying *karmas* of an ascetic who eats leftover, dry and drab food is very high like the boring capacity of a wood-worm that consumes the central core (2) Such intensity in case of an ascetic who consumes food saturated with proscribed ingredients, such as milk, curd, butter etc. is very low like that of skin eating worm. (3) Such intensity in case of an ascetic who consumes curry-less dry food is high like that of wood eating worm. (4) Such intensity in case of an ascetic who consumes food containing proscribed ingredients like milk, curd, butter etc. is ordinary like that of bark eating worm Of these four the austerity of an ascetic like *tvak-khaad* worm is of highest order, that of an ascetic like *chhalli-khaad* worm is of high order, that of an ascetic like *kaasth-khaad* worm is of low order and that of an ascetic like *saar-khaad* worm is of lowest order *(Sthananga Vritti, p 313 and Hindi Tika, pp 666-667)*

### *तृण-वनस्पति-पद* TRINA-VANASPATI-PAD (SEGMENT OF GRAMINEOUS PLANTS)

**५७. चउव्विहा तण-वणस्सतिकाइया पण्णत्ता, तं जहा-अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया, खंधबीया।**

५७. (बादर वनस्पति) तृण-वनस्पतिकायिक जीव चार प्रकार के है-(१) **अग्रबीज**-जिस वनस्पति का अग्र भाग बीज हो, जैसे-गेहूँ आदि। (२) **मूलबीज**-जिस वनस्पति का मूल ही बीज हो, जैसे-कमल, जमीकन्द आदि। (३) **पर्वबीज**-जिस वनस्पति का पर्व ही बीज हो, जैसे-ईख आदि। (४) **स्कन्धबीज**-जिस वनस्पति का स्कन्ध ही बीज हो, जैसे-चमेली वृक्ष आदि।

**57.** *Trin* or *badar-vanaspatikayik jiva* (gramineous or gross plant-bodied beings are of three kinds—(1) *agra-beej*—those which grow when

the tip is planted, such as wheat (2) *mool-beej*—those which grow when the root-bulb is planted like lotus and potatoes. (3) *parva-beej*—those which grow when the knot is planted like sugar-cane, and (4) *skandh-beej*—those which grow when the branch is planted like roses.

### अधुनोपपन्न-नैरयिक-पद ADHUNOPAPANNA-NAIRAYIK-PAD (SEGMENT OF NEWBORN INFERNAL BEINGS)

**५८. चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे णेरइए णिरयलोगंसि इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए–**

**(१) अहुणोववण्णे णेरइए णिरयलोगंसि समुब्भूयं वेयणं वेयमाणे इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए। (२) अहुणोववण्णे णेरइए णिरयलोगंसि णिरयपालेहिं भुज्जो-भुज्जो अहिट्ठिज्जमाणे इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए। (३) अहुणोववण्णे णेरइए णिरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अणिज्जिण्णंसि इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए। (४) [ अहुणोववण्णे णेरइए णिरयाउअंसि कम्मंसि जाव अक्खीणंसि जाव अवेइयंसि अणिज्जिण्णंसि इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए ] णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए।**

**इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे णेरइए [ णिरयलोगंसि इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए ] णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए।**

५८. नरकलोक मे तत्काल उत्पन्न हुआ नैरयिक चार कारणो से शीघ्र ही मनुष्यलोक मे आना चाहता है, किन्तु आ नहीं सकता-

(१) तत्काल उत्पन्न नैरयिक नरकलोक मे होने वाली वेदना का अनुभव करता है तब वह शीघ्र ही मनुष्यलोक मे आने की इच्छा करता है, किन्तु आ नही सकता। (२) तत्काल उत्पन्न नैरयिक नरकलोक में नरकपालों के द्वारा बार-बार पीडित होता हुआ शीघ्र ही मनुष्यलोक मे आने की इच्छा करता है, किन्तु आ नही सकता। (३) तत्काल उत्पन्न नैरयिक शीघ्र ही मनुष्यलोक मे आने की इच्छा करता है, किन्तु नरकलोक मे भोगने योग्य कर्मों के क्षीण हुए बिना, उन्हे भोगे बिना, उनके निर्जीर्ण हुए बिना आ नही सकता। (४) तत्काल उत्पन्न नैरयिक शीघ्र ही मनुष्यलोक मे आने की इच्छा करता है, किन्तु नारक सम्बन्धी आयुष्य के क्षीण हुए बिना, उसको भोगे बिना, उसके निर्जीर्ण हुए बिना आ नहीं सकता।

उक्त चार कारणो से नरकलोक मे तत्काल उत्पन्न नैरयिक शीघ्र मनुष्यलोक में आने की इच्छा करता है, किन्तु आ नही सकता।

**58.** A newly born infernal being in the infernal realm soon wants to come to the land of humans but he is unable to come for four causes/reasons—

(1) When a newly born infernal being suffers the pain of the infernal realm he soon wants to come to the land of humans, but he cannot come. (2) When a newly born infernal being is tortured time and again by the guards of the infernal realm he soon wants to come to the land of humans, but he cannot come. (3) A newly born infernal being soon wants to come to the land of humans, but he is unable to come as long as the *karmas* causing infernal sufferance are not destroyed, suffered and shed. (4) A newly born infernal being soon wants to come to the land of humans, but he is unable to come as long as the infernal-life span determining *karmas* are not destroyed, suffered and shed.

For these four causes/reasons a newly born infernal being in the infernal realm soon wants to come to the land of humans but he cannot come

### संघाटी-पद SANGHATI-PAD (SEGMENT OF SARI)

**५९. कप्पंति णिग्गंथीणं चत्तारि संघाडीओ धारित्तए वा परिहरित्तए वा, तं जहा-एगं दुहत्थवित्थारं, दो तिहत्थवित्थारा, एगं चउहत्थवित्थारं।**

५९. निर्ग्रन्थी साध्वियाँ चार संघाटियाँ (साडियाँ) रख व ओढ सकती हैं-

(१) दो हाथ विस्तार वाली एक संघाटी-जो उपाश्रय मे ओढने के काम आती है। (२) तीन हाथ विस्तार वाली दो संघाटी-उनमें से एक भिक्षा लेने जाते समय ओढने के लिए होती है। (३) दूसरी शौच जाते समय ओढने के लिए। (४) चार हाथ विस्तार वाली एक संघाटी-व्याख्यान-परिषद् मे जाते समय ओढने के काम आती है।

**59.** *Nirgrinthis* (female ascetics) can keep and wear four kinds of *sanghatis* (*sari*, dress of Indian female)—

(1) One *sanghati* of two yard length used for wearing while in *upashraya* or place of stay (2) Two *sanghatis* of three yard each in length—one used for wearing while going to seek alms, and (3) the other used for wearing while going to relieve oneself. (4) One *sanghati* of four yard length used for wearing while going to attend a discourse.

### ध्यानस्वरूप-पद DHYANA SVAROOP-PAD (SEGMENT OF MENTAL STATE)

**६०. चत्तारि झाणा पण्णत्ता, तं जहा-अट्टे झाणे, रोद्दे झाणे, धम्मे झाणे, सुक्के झाणे।**

६०. ध्यान (किसी विषय सम्बन्धी एकाग्र चिन्तन, तल्लीनता) चार प्रकार के होते हैं- (१) आर्त्तध्यान-दुःख व शोकग्रस्त मन का चिन्तन। (२) रौद्रध्यान-हिंसादि भावों से सम्बन्धित क्रूर

मानसिक विचारधारा। (३) धर्म्यध्यान-श्रुतधर्म और चारित्रधर्म सम्बन्धी एकाग्र चिन्तन। (४) शुक्लध्यान-कर्म-क्षय के कारणभूत शुद्धोपयोग मे लीनता।

**60.** *Dhyana* (engrossed mental state) is of four kinds—(1) *Arttadhyana*—mental state engrossed in sorrow and grief. (2) *Raudradhyana*—mental state engrossed in cruelty and violence (3) *Dharmadhyana*—mental state engrossed in scriptures and related conduct. (4) *Shukladhyana*—mental state engrossed in spiritual meditation leading to shedding of *karmas*

**६१. अट्टेझाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा–**

**(१) अमणुण्ण-संपओग-संपउत्ते, तस्स विप्पओग-सति-समण्णागते यावि भवति।**

**(२) मणुण्ण-संपओग-संपउत्ते, तस्स अविप्पओग-सति-समण्णागते यावि भवति।**

**(३) आतंक-संपओग-संपउत्ते, तस्स विप्पओग-सति-समण्णागते यावि भवति।**

**(४) परिजुसित-काम-भोग-संपओग-संपउत्ते, तस्स अविप्पओग-सति-समण्णागते यावि भवति।**

६१. आर्त्तध्यान चार प्रकार का होता है। जैसे-(१) अमनोज्ञ (अप्रिय) वस्तु का सयोग होने पर उसे दूर करने की निरन्तर चिन्ता करना। (२) मनोज्ञ (प्रिय) वस्तु का सयोग होने पर उसका वियोग न हो, बार-बार ऐसी चिन्ता करना। (३) आतंक (घातक रोग) होने पर उसको दूर करने की बार-बार चिन्ता करना। (४) प्रीति कारक काम-भोग का सगम होने पर उसका वियोग न हो, बार-बार ऐसी चिन्ता करना।

**61.** *Artadhyana* is of four kinds—(1) On association with *amanojna* (undesired) thing to remain continuously worried about terminating it. (2) On association with *manojna* (desired) thing to remain continuously worried about not dissociating with that (3) On being afflicted with *atank* (fatal disease) to remain continuously worried about removing it (4) On association with joyous carnal pleasures (*pritikarak kaam-bhog*) to remain continuously worried about avoiding termination of that

**६२. अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा–कंदणता, सोयणता, तिप्पणता, परिदेवणता।**

६२. आर्त्तध्यान के चार लक्षण है-(१) क्रन्दनता–आक्रन्द करना। (२) शोचनता–शोक करना। (३) तेपनता–आँसू बहाना। (४) परिदेवनता–विलाप करना।

**62.** There are four signs of *artadhyana*—(1) *krandanata*—to weep, (2) *shochanata*—to grieve, (3) *tepanata*—to shed tears, and (4) *parivedanata*—to lament.

**६३. रोद्दे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा–हिंसाणुबंधि, मोसाणुबंधि, तेणाणुबंधि, सारक्खणाणुबंधि।**

६३. रौद्रध्यान चार प्रकार का है–(१) **हिंसानुबन्धी**–हिंसक प्रवृत्ति में तन्मयता। (२) **मृषानुबन्धी**–असत्य भाषण सम्बन्धी एकाग्रता। (३) **स्तेनानुबन्धी**–चोरी करने-कराने की प्रवृत्ति सम्बन्धी तन्मयता। (४) **संरक्षणानुबन्धी**–परिग्रह के अर्जन और सरक्षण सम्बन्धी तन्मयता।

**63.** *Raudradhyana* is of four kinds—(1) *himsanubandhi*—engrossment in violent activities, (2) *mrishanubandhi*—engrossment in uttering lies, (3) *stenanubandhi*—engrossment in stealing and allied activities, and (4) *samrakshnanubandhi*—engrossment in hoarding things and protecting them

**६४. रुद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा–ओसण्णदोसे, बहुदोसे, अण्णाणदोसे, आमरणंतदोसे।**

६४. रौद्रध्यान के चार लक्षण है–(१) **उत्सन्नदोष**–हिंसादि किसी एक पाप मे निरन्तर संलग्न रहना। (२) **बहुदोष**–हिंसादि सभी पापो मे संलग्न रहना। (३) **अज्ञानदोष**–अज्ञान के कारण हिंसादि अधार्मिक कार्यों मे प्रवृत्त होना। (४) **आमरणान्तदोष**–मरणकाल तक भी हिंसादि करने का अनुताप/पश्चात्ताप न होना।

[आर्त्तध्यान को तिर्यग्गति का कारण और रौद्रध्यान को नरकगति का कारण कहा है। ये दोनों ही अप्रशस्त या अशुभ ध्यान हैं।]

**64.** There are four signs of *raudradhyana*—(1) *utsannadosh*—to be ever indulgent in one specific sin including violence, (2) *bahudosh*—to be ever indulgent in every sin, (3) *ajnanadosh*—to indulge in irreligious acts like violence out of ignorance, and (4) *amaranantadosh*—not to be repentant for sinful violent actions even till the time of death.

[*Artadhyana* is said to be the cause of rebirth as animal and *raudradhyana* as that of rebirth as infernal being. Both these are ignoble or bad states of mind.]

**६५. धम्मे झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, तं जहा–आणाविजए, अवायविजए, विवागविजए, संठाणविजए।**

६५. धर्मध्यान चार प्रकार का है। वह (स्वरूप, लक्षण, आलम्बन और अनुपेक्षा) इन चार पदों मे समाविष्ट होता है–(१) **आज्ञाविचय**–जिन प्रवचन के चिन्तन में संलग्न रहना। (२) **अपायविचय**–

संसार-भ्रमण के कारणों का विचार करना। (३) विपाकविचय-कर्मों के शुभाशुभ फल का विचार करना। (४) संस्थानविचय-लोक के स्वरूप का चिन्तन करना।

**65.** *Dharmadhyana* is of four kinds. It is summed up in four steps (*svarupa* or form, *lakshan* or signs, *alamban* or support, and *anupreksha* or contemplation)—(1) *ajnavichaya*—contemplation on the teachings of the *Jina*, (2) *apayavichaya*—contemplation on the causes of *samsar-bhraman* (cycle of rebirth), (3) *vipaakvichaya*—contemplation on the good and bad forms of *karma* and their fruition, and (4) *samsthanvichaya*—contemplation on the structure of universe.

**६६. धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा-आणारुई, णिसग्गरुई, सुत्तरुई, ओगाढरुई।**

६६. धर्म्यध्यान के चार लक्षण है-(१) आज्ञारुचि-जिन प्रवचन के मनन-चिन्तन मे रुचि व श्रद्धा रखना। (२) निसर्गरुचि-धर्मकार्यों मे स्वाभाविक रुचि रखना। (३) सूत्ररुचि-शास्त्रो के पठन-पाठन मे रुचि रखना। (४) अवगाढ़रुचि-द्वादशाग वाणी के गहन अवगाहन मे प्रगाढ रुचि रखना।

**66.** There are four signs of *dharmadhyana*—(1) *ajna-ruchi*—to have faith and interest in study and contemplation of the teachings of the *Jina*, (2) *nisarg-ruchi*—to have natural or spontaneous interest in religion, (3) *sutra-ruchi*—to have interest and faith in reading and teaching the scriptures, and (4) *avagadh-ruch*—to have profound faith and interest in deeper study of *Dvadashanga* sermon (the twelve limbed sermon of *Tirthankar*)

**६७. धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता, तं जहा-वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा।**

६७. धर्म्यध्यान के चार आलम्बन (आधार) है-(१) वाचना-सूत्र आदि का पठन करना। (२) प्रतिप्रच्छना-शका-निवारणार्थ गुरुजनो से प्रश्न पूछना। (३) परिवर्तना-सूत्रो का पुनरावर्तन करना। (४) अनुप्रेक्षा-गहराई से अर्थ का चिन्तन करना।

**67.** There are four supports of *dharmadhyana*—(1) *Vaachana*—to take lessons of or read *Agams* and other scriptures (2) *Pratiprichhana*—to seek clarification and elaboration from the learned ones. (3) *Pariwartana*—to revise and repeat what has been learnt (4) *Anupreksha*—to ponder over the meaning profoundly

**६८. धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा-एगाणुप्पेहा, अणिच्चाणुप्पेहा, असरणाणुप्पेहा, संसाराणुप्पेहा।**

धर्म ध्यान के चार आलम्बन
अनित्यानुप्रेक्षा—

चित्र परिचय १५

Illustration No. 15
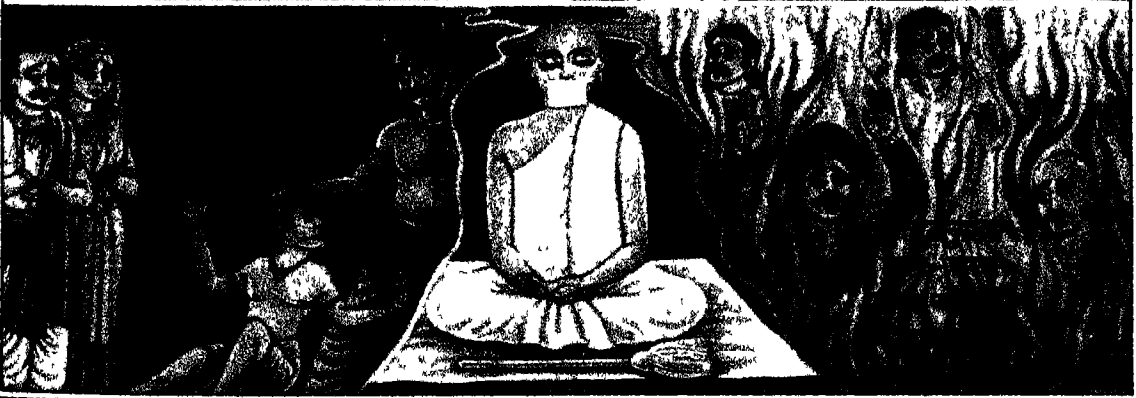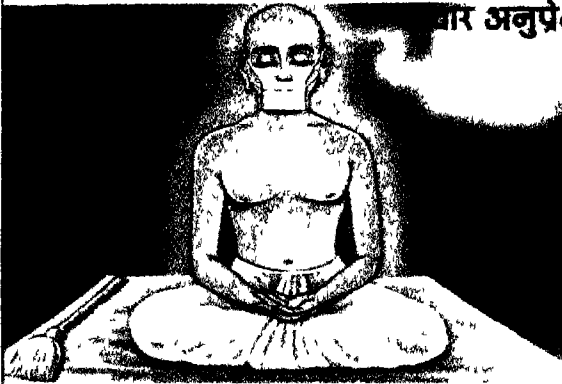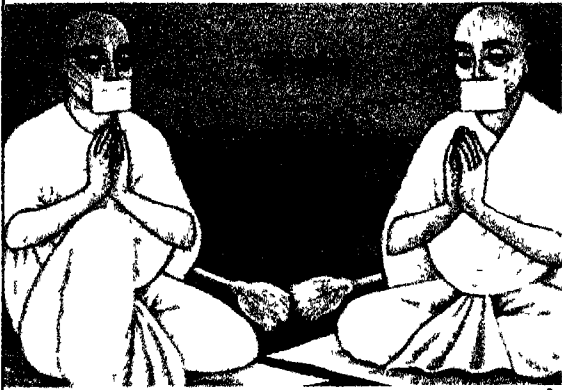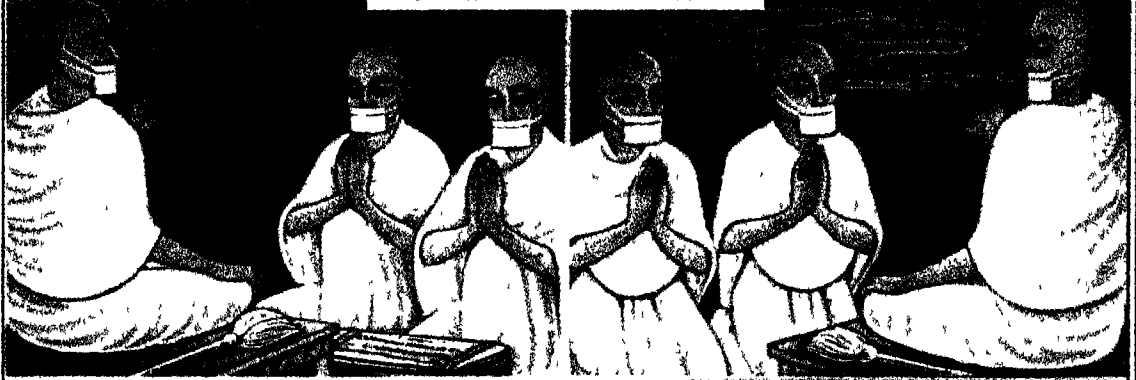
# धर्म्यध्यान के आलम्बन और अनुप्रेक्षा

**धर्म्यध्यान के चार आलम्बन–**

चार कारणो से धर्म्यध्यान की स्थिरता तथा वृद्धि होती है (१) **वाचना**–गुरुजनो के पास शास्त्र आदि का अध्ययन करना। (२) **पृच्छना**–पढे हुए शास्त्रो के विषय मे जिज्ञासा कर गुरुजनो से समाधान प्राप्त करना। (३) **परिवर्तना**–गुरु से जो-जो शास्त्र पढा है, उसका पुन पुन स्मरण पुन स्मरण करते रहना (४) **अनुप्रेक्षा**–गुरुजनो से जो ज्ञान प्राप्त किया है, उसके अर्थ व भाव पर गहराई के साथ चिन्तन मनन करते रहना।

**चार अनुप्रेक्षाएँ–**

अनुप्रेक्षा से चित्त की निर्मलता व स्थिरता बढती है। अनुप्रेक्षा मुख्यत चार प्रकार की है (१) **एकत्वानुप्रेक्षा**–"आत्मा अकेला ही कर्मबन्ध करता है। अकेला ही सुख-दु ख रूप फल भोगता है- मेरा चिन्मयस्वरूप आत्मा अकेला है।" इस प्रकार का गहरा चिन्तन करना। (२) **अनित्यानुप्रेक्षा**–यह शरीर, धन, परिवार आदि सभी वस्तुएँ अनित्य है। क्षण-क्षण परिवर्तनशील है। नन्हा शिशु बडा होकर युवक बनता है, युवक बूढा और बूढा एक दिन मर जाता है इसी प्रकार सब कुछ अनित्य है। (३) **अशरणानुप्रेक्षा**–ससार म माता-पिता, पति-पत्नी कोई भी दु ख बुढापा और मृत्यु से किसी की रक्षा नही कर सकते। मृत्यु आने पर कोई शरणदाता नही है। (४) **ससारानुप्रेक्षा**–यह समूचा ससार जन्म-मरण की लपटो म जल रहा है। तृष्णा और कषायो की आग सभी को जला रही है। इन भावो के चिन्तन से वैराग्य का जन्म होता है। धर्म्यध्यान की वृद्धि होती है।

स्थान ४ सूत्र ६६ ६७

## SUPPORTS OF DHARMADHYANA AND ANUPREKSHA

**Four supports of dharmadhyana—**

There are four things that enhance concentration and duration of *dharmadhyana*—(1) Vaachana—to take lessons of or read *Agams* and other scriptures (2) ***Prichhana***—to seek clarification and elaboration from the learned ones (3) ***Parivartana***—to revise and repeat what has been learnt (4) ***Anupreksha***—to ponder over the learned text and meaning profoundly

**Four Anupreckshas—**

*Anupreksha* or contemplations enhances the purity and stability of mind It is of four kinds—(1) ***Ekatvanupreksha***—to revolve around the thought that "Soul is alone in *karmic* bondage and suffering pleasure and pain My sublime soul too is alone" (2) ***Anityanupreksha***—to revolve around the thought that mundane things like body, wealth and family are ephemeral They transform every moment A child grows to be a young man A youth becomes old and dies one day—this way everything is transitory (3) ***Asharananupreksha***—to revolve around the thought that there is no succour and refuge from misery, dotage and death including parents and spouse At the time of death there is no refuge (4) ***Samsaranupreksha***—to revolve around the thought about the all consuming fire-like state of cycles of rebirth The fire of desires and passions is burning everyone These thoughts give rise to detachment enhancing pious meditation

*—Sthaan 4, Sutra 66 67*

६८. धर्म्यध्यान की (स्थिरता के लिए) चार अनुप्रेक्षाएँ हैं-(१) एकात्वानुप्रेक्षा-संसार परिभ्रमण और सुख-दुःख भोगने में आत्मा के एकाकीपन का चिन्तन करना। (२) अनित्यानुप्रेक्षा-सांसारिक पदार्थों की अनित्यता का चिन्तन करना। (३) अशरणानुप्रेक्षा-धन परिवार आदि कोई जीव का शरणदाता नहीं, इस विषय का चिन्तन करना। (४) संसारानुप्रेक्षा-चतुर्गति रूप संसार की दशा का चिन्तन करना।

**68.** There are four kinds of contemplations for (the stability of) *dharmadhyana*—(1) *Ekatvanupreksha*—to revolve around the thought that the soul is alone in suffering pleasure and pain. (2) *Anityanupreksha*—to revolve around the thought that mundane things are ephemeral. (3) *Asharananupreksha*—to revolve around the thought that there is no succour and refuge of soul through wealth and family (4) *Samsaranupreksha*—to revolve around the thought about the state of cycle of rebirth in the four genuses.

**विवेचन**-ध्यान की योग्यता प्राप्त करने के लिए चित्त की निर्मलता आवश्यक होती है, इस स्थिति की प्राप्ति के लिए चार अनुप्रेक्षाओं का निर्देश किया गया है।

**धर्म्यध्यान का शब्दार्थ**-जो धर्म से युक्त होता है, उसे धर्म्य कहा जाता है। धर्म शब्द के भिन्न-भिन्न अपेक्षाओं से भिन्न-भिन्न अर्थ होते है, जैसे-आत्मा की निर्मल परिणति, मोह और क्षोभरहित परिणाम। धर्म का दूसरा अर्थ है-सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र। धर्म का तीसरा अर्थ है-वस्तु का स्वभाव। इन विषयों से सम्बन्धित चिन्तन की तन्मयता धर्म्यध्यान है।

**धर्म्यध्यान के अधिकारी**-अविरत, देशविरत, प्रमत्तसयति और अप्रमत्तसयति-इन सबको धर्म्यध्यान करने की योग्यता प्राप्त हो सकती है।

**Elaboration**—Purity of mind is essential for gaining the ability to meditate Four kinds of *anupreksha* (contemplation) have been prescribed for this.

Meaning of *dharmyadhyana*—That which is inclusive of *dharma* is called *dharmya. Dharma* has varied meanings depending on the context. One meaning is purity of soul leading to the state free of attachment and aversion. Another meaning is combination of right perception, knowledge and conduct Third meaning is the intrinsic qualities or nature of a thing. Engrossment in contemplation related to all these topics is *dharmadhyana*

Qualification—*Avirat* (not detached), *deshavirat* (partially detached), *pramattsamyati* (accomplished but negligent), and *apramattasamyati* (accomplished and alert) are those who are said to be qualified for *dharmadhyana*.

**६९. सुक्के झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, तं जहा–पुहुत्तवितक्के सवियारी, एगत्तवितक्के अवियारी, सुहुमकिरिए अणियट्टी, समुच्छिण्णकिरिए अप्पडिवाती।**

६९. शुक्लध्यान चार प्रकार का है। वह (स्वरूप, लक्षण, आलम्बन और अनुप्रेक्षा) इन चार पदों मे अवतरित है, जैसे–

(१) **पृथक्त्ववितर्क सविचारी**, (२) **एकत्ववितर्क अविचारी**, (३) **सूक्ष्मक्रिय–अनिवृत्ति**, और (४) **समुच्छिन्नक्रिय–अप्रतिपाति**।

**69.** *Shukladhyana* is of four kinds It is summed up in four steps (*svarupa* or form, *lakshan* or signs, *alamban* or support, and *anupreksha* or contemplation)—(1) *Prithaktvavitark-savichari*, (2) *Ekatvavitark-avichari*, (3) *Sukshmakriya-aniwritti*, and (4) *Samuchchhinnakriya-apratipati*.

**विवेचन**–परम विशुद्ध अति उज्ज्वल सर्वश्रेष्ठ भावधारा का नाम शुक्लध्यान है। वीतरागदशा मे ही शुक्लध्यान सम्भव है। जब जीव की मोहनीय कर्म की प्रकृतियाँ सर्वथा प्रशान्त या क्षीण हो जाती है तब शुक्लध्यान होता है।

शुक्लध्यान के चार चरण हैं। उनमे प्रथम दो चरणो–पृथक्त्ववितर्क–सविचार और एकत्ववितर्क–अविचार–के अधिकारी श्रुतकेवली (चतुर्दशपूर्वी) होते है। इस ध्यान मे सूक्ष्म द्रव्यों और पर्यायो का आलम्बन लिया जाता है, इसलिए सामान्य श्रुतधर इसे प्राप्त नही कर सकते।

(१) **पृथक्त्ववितर्क–सविचारी**–जब एक द्रव्य के अनेक पर्यायो का अनेक दृष्टियो व नयो से पृथक्–पृथक् चिन्तन किया जाता है और पूर्व–श्रुत का आलम्बन लिया जाता है तथा शब्द से अर्थ मे और अर्थ से शब्द मे एव मन, वचन और काय योगो मे से एक–दूसरे मे संक्रमण किया जाता है, शुक्लध्यान की उस स्थिति को **पृथक्त्ववितर्क–सविचारी** कहा जाता है।

(२) **एकत्ववितर्क–अविचारी**–जब एक द्रव्य के किसी एक पर्याय का अभेद दृष्टि से चिन्तन किया जाता है और पूर्व–श्रुत का आलम्बन लिया जाता है तथा जहाँ शब्द, अर्थ एव मन, वचन, काय योगो में से एक–दूसरे में सक्रमण नही किया जाता है, शुक्लध्यान की उस स्थिति को **एकत्ववितर्क–अविचारी** कहा जाता है।

(३) **सूक्ष्मक्रिय–अनिवृत्ति**–जब मन और वाणी के योग का पूर्ण निरोध हो जाता है और काया के योग का पूर्ण निरोध नही होता–श्वासोच्छ्वास जैसी सूक्ष्म क्रिया शेष रहती है, उस अवस्था को **सूक्ष्मक्रिय** कहा जाता है। इसका निवर्तन–ह्रास नहीं होता, इसलिए यह अनिवृत्ति है।

(४) **समुच्छिन्नक्रिय–अप्रतिपाति**–जब सूक्ष्म क्रिया का भी निरोध हो जाता है, उस अवस्था को **समुच्छिन्नक्रिय** कहा जाता है। इसका पतन नही होता, इसलिए यह अप्रतिपाति है।

## शुक्ल ध्यान तालिका

| संख्या | गुणस्थान की स्थिति | ध्यान का कालमान | ध्यानावस्था में मृत्यु होने पर |
|---|---|---|---|
| १. | दशवाँ गुणस्थान | अन्तर्मुहूर्त्त | अनुत्तर विमान |
| २ | बारहवाँ गुणस्थान | केवलज्ञान की तरफ | मृत्यु नही होती |
| ३. | १३वे से १४वें गुण मे प्रवेश करने से पूर्व | कैवल्यदशा | मृत्यु नहीं होती |
| ४ | १४वाँ गुणस्थान की अयोगी अवस्था | – | मोक्ष–प्राप्ति |

**Elaboration**—The absolutely pure very sublime and supreme flow of thoughts is called *shukladhyana* It is possible only in the absolutely detached state. When all the qualitative forms of *mohaniya karma* (deluding *karma*) are either pacified or extinct then only *shukladhyana* is possible.

There are four steps of *shukladhyana. Shrutakevalis* (scholars of fourteen subtle canons) are qualified for the first two steps, namely *Prithaktvavitark-savichar* and *Ekatvavitark-avichar*. In this kind of meditation the contemplation is based on the subtle entities and their modes Therefore it is beyond a common scholar of the canon.

(1) *Prithaktvavitark-savichar*—When many modes of an entity are studied from various viewpoints and standpoints separately and based on the profound knowledge compiled in the scriptures; when the contemplation shifts from words to meanings and meanings to words; and the process of mutual indulgence and influence among mind, speech and body is employed, the process is called *Prithaktvavitark-savichar* This is the first step of *shukladhyana*.

(2) *Ekatvavitark-avichar*—When a single mode of an entity is studied from singular viewpoint based on the profound knowledge compiled in the scriptures; when the contemplation does not shift from words to meanings and meanings to words; and the process of mutual indulgence and influence among mind, speech and body is not employed the process is called *Ekatvavitark-avichar*.

(3) *Sukshmakriya-anivritti*—When the association of soul with mind and speech is completely terminated, only association with the body remains in the form of subtle activities of the body, such as minimal breathing (*sukshmakriya*). Once this level is reached there is no scope of retraction (*anivritti*).

(4) *Samuchchhinnakriya-apratipati*—When even the subtle activity (breathing) also ceases it is called *Samuchchhinnakriya* Once this level is reached there is no scope of a fall (*apratipati*).

**TABLE OF SHUKLADHYANA**

| S. No. | level | duration | on death |
|---|---|---|---|
| 1. | tenth *Gunasthan* | *antarmuhurt* | reincarnation in *Anuttar Vimaan* |
| 2 | twelfth *Gunasthan* | transition to *Keval jnana* | no death |
| 3 | just before transition from 13th to 14th *Gunasthan* | state of *kaivalya* | no death |
| 4. | dissociated state of 14th *Gunasthan* | — | liberation |

**७०. सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—अव्वहे, असम्मोहे, विवेगे, विउस्सग्गे।**

**७१. सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता, तं जहा—खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे।**

**७२. सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—अणंतवित्तियाणुप्पेहा, विप्परिणामाणुप्पेहा, असुभाणुप्पेहा, अवायाणुप्पेहा।**

७०. शुक्लध्यान के चार लक्षण है–(१) **अव्यथ**–व्यथा से–परिषह या उपसर्गादि से पीडित होने पर क्षोभित नहीं होना। (२) **असम्मोह**–देवादिकृत माया से मोहित नही होना। (३) **विवेक**–सभी संयोगो को आत्मा से भिन्न मानना। (४) **व्युत्सर्ग**–शरीर और उपधि से ममत्व का त्याग कर पूर्ण नि सग होना।

७१. शुक्लध्यान के चार आलम्बन है–(१) क्षान्ति (क्षमा), (२) मुक्ति (निर्लोभता), (३) आर्जव (सरलता), और (४) मार्दव (मृदुता)।

७२. शुक्लध्यान की चार अनुप्रेक्षाएँ है–(१) **अनन्तवृत्तितानुप्रेक्षा**–ससार मे परिभ्रमण की अनन्तता का विचार करना। (२) **विपरिणामानुप्रेक्षा**–वस्तुओ के विविध परिणमनो का विचार करना। (३) **अशुभानुप्रेक्षा**–ससार, देह और भोगो की अशुभता का विचार करना। (४) **अपायानुप्रेक्षा**–राग-द्वेष से होने वाले दोषो का विचार करना। *(विस्तार के लिए हिन्दी टीका, पृ ६८० से ६९० देखें)*

**70.** There are four signs of *shukladhyana*—(1) *Avyatha*—not to get disturbed by any affliction or distress (2) *Asammoha*—not to be deluded by any illusions created by gods (3) *Vivek*—the realization that soul and other things including body are separate entities. (4) *Vyutsarg*—to renounce body and ascetic-equipment with total detachment.

**71.** There are four supports of *shukladhyana*—(1) *Kshanti*—endurance and forgiveness (2) *Mukti*—freedom from greed and

other feelings of attachments. (3) *Arjava*—simplicity and honesty. (4) *Mardava*—tenderness, gentleness and absence of pride

**72.** There are four kinds of *anupreksha* (contemplation) of *shukladhyana*—(1) *Anantavrittitanupreksha*—to contemplate again and again about the eternality of the cycles of rebirth. (2) *Viparinamanupreksha*—to contemplate again and again about the incessantly transforming state of things. (3) *Ashubhanupreksha*—to contemplate again and again about the ills and evils of the world, body and pleasures (4) *Apayanupreksha*—to contemplate again and again about the faults caused by attachment and aversion. *(for more details refer to Hindi Tika, pp 680-690)*

### *देवस्थिति-पद* DEV-STHITI-PAD (SEGMENT OF STATUS OF GODS)

**७३. चउव्विहा देवाण ठिती पण्णत्ता, तं जहा–देवे णाममेगे, देवसिणाए णाममेगे, देवपुरोहिए णाममेगे, देवपज्जलणे णाममेगे।**

७३. देवों की स्थिति (पद-मर्यादा) चार प्रकार की है-(१) देव–सामान्य देव। (२) देव–स्नातक–प्रधान देव अथवा मत्री–स्थानीय देव। (३) देव–पुरोहित–शान्तिकर्म करने वाले पुरोहित स्थानीय देव। (४) देव–प्रज्वलन–मंगल-पाठक चारण-स्थानीय देव।

**73.** *Dev-sthiti* (status of gods) is of four kinds—(1) *Dev*—ordinary god, (2) *Dev-snatak*—chief-god or minister-god, (3) *Dev-purohit*—priest-god who conduct ritual pacification, and (4) *Dev-prajvalan*—bard-god who sing auspicious songs

### *संवास-पद* SAMVAS-PAD (SEGMENT OF SEXUAL GRATIFICATION)

**७४. चउव्विहे संवासे पण्णत्ते, तं जहा–देवे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छेज्जा, देवे णाममेगे छवीए सद्धिं संवासं गच्छेज्जा, छवी णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छेज्जा, छवी णाममेगे छवीए सद्धिं संवासं गच्छेज्जा।**

७४. संवास (काम क्रीडा) चार प्रकार का है-(१) कोई देव देवी के साथ सवास करता है। (२) कोई देव छवि–(औदारिक शरीरी मनुष्यनी या तिर्यंचनी) के साथ सवास करता है। (३) कोई छवि–(मनुष्य या तिर्यंच) देवी के साथ संवास करता है। (४) कोई छवि–(मनुष्य या तिर्यंच) छवी–(मनुष्यनी या तिर्यंचनी) के साथ संवास करता है। [ज्ञातासूत्र ९ में रत्नादेवी और जिनपाल की कथा, वैदिक ग्रथों में भीम-अर्जुन-कर्ण आदि का जन्म, रभा, मेनका और विश्वामित्र की कथाएँ उक्त तथ्य की ओर संकेत करती हैं।]

**74.** *Samvas* (sexual gratification) is of four kinds—(1) Some god copulates with a goddess (2) Some god copulates with a *chhavi* (human

female or animal female having gross physical body) (3) Some goddess copulates with a *chhavi* (human male or animal male). (4) Some *chhavi* (god acquiring male human or animal form) copulates with a *chhavi* (human female or animal female). [The story of Ratnadevi and Jinapal from *Jnata Sutra* and those of births of Bheem, Arjuna and Karna; Rambha, Menaka and Vishwamitra point at this postulation.]

### कषाय-पद KASHAYA-PAD (SEGMENT OF PASSIONS)

**७५. चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा—कोहकसाए, माणकसाए, मायाकसाए, लोभकसाए। एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं।**

७५. कषाय चार प्रकार के है-(१) क्रोधकषाय, (२) मानकषाय, (३) मायाकषाय, और (४) लोभकषाय। नारकों से लेकर वैमानिको तक के सभी दण्डको मे ये चारो कषाय होते हैं।

**75.** *Kashaya* (passions) are of four kinds—(1) *krodh-kashaya* (anger), (2) *maan-kashaya* (conceit), (3) *maya-kashaya* (deceit), and (4) *lobh-kashaya* (greed). All *dandaks* (places of suffering) from infernal beings to *Vaimanik* gods have these four *kashayas*

**७६. चउपतिट्ठिते कोहे पण्णत्ते, तं जहा—आयपइट्ठिए, परपइट्ठिए, तदुभयपइट्ठिए, अपइट्ठिए। एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं।**

७६. क्रोधकषाय चतु:प्रतिष्ठित-चार प्रकार से उत्पन्न होता है-(१) **आत्मप्रतिष्ठित**-अपने ही दोषो के कारण अपने ऊपर क्रोध आना। (२) **परप्रतिष्ठित**-पर के निमित्त से क्रोध आना। (३) **तदुभयप्रतिष्ठित**-स्व और पर दोनो के निमित्त से क्रोध आना। (४) **अप्रतिष्ठित**-किसी बाह्य निमित्त के बिना ही क्रोधकषाय के उदय से क्रोध आना। इसी प्रकार सभी दण्डको मे क्रोधोत्पत्ति के ये चार कारण होते हैं।

**76.** *Krodh-kashaya* is *chatuhpratishthit* (dependent on four causes)—(1) *atma-pratishthit*—anger caused by one's own faults, (2) *par-pratishthit*—anger caused by others, (3) *tadubhaya-pratishthit*—anger caused by both self and others, and (4) *apratishthit*—anger rising due to fruition of anger causing *karmas* and without any outside cause All these four causes are applicable to all *dandaks*

**७७. एवं माणे, ७८. माया, ७९. जाव लोभे। एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं।**

७७. इसी प्रकार मान, ७८. इसी प्रकार माया, और ७९. लोभकषाय के सम्बन्ध में नारकीय जीवो से लेकर वैमानिक देवों तक सभी दण्डकों में कषायोत्पत्ति के सम्बन्ध में जानना चाहिए।

In the same way the causes of other passions **77.** *maan* (conceit), **78.** *maya* (deceit), and **79.** *lobha* (greed) should be read as aforesaid for all *dandaks* (places of suffering) from infernal beings to *Vaimanik* gods.

**८०. चउहिं ठाणेहिं कोहुप्पत्ती सिया, तं जहा—खेत्तं पडुच्च, वत्थुं पडुच्च, सरीरं पडुच्च, उवहिं पडुच्च। एवं—णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं।**

८०. चारों कारणों से क्रोध की उत्पत्ति होती है–(१) क्षेत्र (खेत-भूमि) के कारण, (२) वास्तु (घर आदि) के कारण, (३) शरीर (रोग व रूप आदि शारीरिक कारणों से), (४) उपधि (उपकरणादि) के कारण। नारकों से लेकर वैमानिक तक के सभी दण्डकों में उक्त चार कारणों से क्रोध की उत्पत्ति होती है।

**80.** There are four reasons for rise of *krodh* (anger)—(1) for *kshetra* (farm or land), (2) for *vaastu* (house, property etc.), (3) for *sharira* (disease, appearance and other physiological reasons), and (4) for *upadhi* (equipment and other possessions). Anger rises for these four reasons in all *dandaks* (places of suffering) from infernal beings to *Vaimanik* gods.

**८१. [ चउहिं ठाणेहिं माणुप्पत्ती सिया, तं जहा—खेत्तं पडुच्च, वत्थुं पडुच्च, सरीरं पडुच्च, उवहिं पडुच्च। एवं—णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं। ८२. चउहिं ठाणेहिं मायुप्पत्ती सिया, तं जहा—खेत्तं पडुच्च, वत्थुं पडुच्च, सरीरं पडुच्च, उवहिं पडुच्च। एवं—णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं। ८३. चउहिं ठाणेहिं लोभुप्पत्ती सिया, तं जहा—खेत्तं पडुच्च, वत्थुं पडुच्च, सरीरं पडुच्च, उवहिं पडुच्च। एवं—णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं। ]**

८१. चार कारणों से मान की उत्पत्ति होती है–(१) क्षेत्र, (२) वास्तु, (३) शरीर, और (४) उपधि के कारण। नारको से लेकर वैमानिक तक मे उक्त चार कारणों से मान की उत्पत्ति होती है। ८२. चार कारणो से माया की उत्पत्ति होती है–(१) क्षेत्र, (२) वास्तु, (३) शरीर, और (४) उपधि के कारण। नारको से लेकर वैमानिक तक में उक्त चार कारणो से माया की उत्पत्ति होती है। ८३. चार कारणों से लोभ की उत्पत्ति होती है–(१) क्षेत्र, (२) वास्तु, (३) शरीर, और (४) उपधि के कारण। नारको से लेकर वैमानिक तक मे उक्त चार कारणों से लोभ की उत्पत्ति होती है।

**81.** There are four reasons for rise of *maan* (conceit)—(1) for *kshetra*, (2) for *vaastu*, (3) for *sharira*, and (4) *upadhi* Conceit rises for aforesaid four reasons in all *dandaks* from infernal beings to *Vaimanik* gods. **82.** There are four reasons for rise of *maya* (deceit)—(1) for *kshetra*, (2) for *vaastu*, (3) for *sharira*, and (4) *upadhi*. Deceit rises for aforesaid four reasons in all *dandaks* (places of suffering) from infernal beings to *Vaimanik* gods. **83.** There are four reasons for rise of *lobh* (greed)—(1) for *kshetra*, (2) for *vaastu*, (3) for *sharira*, and (4) *upadhi* Greed rises for aforesaid four reasons in all *dandaks* (places of suffering) from infernal beings to *Vaimanik* gods.

**८४. चउव्विहे कोहे पण्णत्ते, तं जहा—अणंताणुबंधी कोहे, अपच्चक्खाणकसाए कोहे, पच्चक्खाणावरणे कोहे, संजलणे कोहे। एवं—णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं। ८५-८७. एवं जाव लोहे। जाव वेमाणियाणं।**

८४. क्रोध चार प्रकार का होता है-(१) **अनन्तानुबन्धी क्रोध**—ससार की अनन्त परम्परा को बढ़ाने वाला। (२) **अप्रत्याख्यानकषाय क्रोध**—देशविरति (श्रावक व्रत) का अवरोधक। (३) **प्रत्याख्यानावरण क्रोध**—सर्वविरति (चारित्र) का अवरोधक। (४) **संज्वलन क्रोध**—यथाख्यात चारित्र का अवरोधक। यह चारो प्रकार का क्रोध नारको से लेकर वैमानिक तक के सभी दण्डको मे पाया जाता है। ८५. क्रोध की तरह मान, ८६. माया और ८७. लोभ कषाय भी चार प्रकार का होता है। यह चारो नैरयिको से लेकर वैमानिक देवो तक सभी दण्डकों के जीवो मे पाया जाता है।

**84.** *Krodh* (anger) is of four kinds—(1) *anantanubandhi krodh*—that which enhances the unending cycles of rebirth, (2) *apratyakhyan kashaya krodh*—that which impedes observation of *desh-virati* (partial renunciation or householder's vows), (3) *pratyakhyanavaran krodh*—that which impedes observation of *sarva-virati* (complete renunciation or ascetic's vows), and (4) *sanjvalan krodh*—that which impedes *yathakhyat charitra* (conduct conforming to perfect purity) These four kinds of anger are applicable to all *dandaks* (places of suffering) from infernal beings to *Vaimanik* gods Like anger **85.** *maan*, **86.** *maya,* and **87.** *lobh* are also of the aforesaid four kinds. These four passions are applicable to all *dandaks* (places of suffering) from infernal beings to *Vaimanik* gods

**८८. चउव्विहे कोहे पण्णत्ते, तं जहा—आभोगणिव्वत्तिते, अणाभोगणिव्वत्तिते, उवसंते, अणुवसंते। एवं—णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं।**

**८९-९१. एवं जाव लोहे। जाव वेमाणियाणं।**

८८. क्रोध चार प्रकार का होता है-(१) आभोगनिर्वर्तित, (२) अनाभोगनिर्वर्तित, (३) उपशान्त क्रोध, (४) अनुपशान्त क्रोध। यह चारो प्रकार का क्रोध नारको से लेकर वैमानिक तक के सभी दण्डको मे पाया है।

८९. क्रोध की तरह मान, ९०. माया, और ९१. लोभ कषाय के भेद और भी अर्थ समझना चाहिए।

**88.** *Krodh* (anger) is of four kinds—(1) *aabhoganirvartit krodh*, (2) *anabhoganirvartit krodh*, (3) *upashant krodh,* and (4) *anupashant krodh*. These four kinds of anger are applicable to all *dandaks* (places of suffering) from infernal beings to *Vaimanik* gods.

The kinds of other passions, **89.** *maan* (conceit), **90.** *maya* (deceit), and **91.** *lobh* (greed), should also be read like those of *krodh* (anger).

**विवेचन**—(१) **आभोगनिर्वर्तित**—क्रोध के दुष्फल या कटु परिणाम को जानते हुए भी क्रोध करना। *(अभयदेवसूरि स्थानांग टीका, पत्र १८२)*। दूसरे के अपराध को भलीभाँति जान लेने पर भी उसको सुधारने के लिए या सीख देने के लिए कृत्रिम रोष प्रकट करना। *(मलयगिरि प्रज्ञापना वृत्ति, पद १४ पत्र २९१)*

(२) **अनाभोग निर्वर्तित**—(१) क्रोध के कटु फल को नही जानकर अज्ञान दशा में क्रोध करना। (अभयदेव.), (२) प्रयोजन के बिना ही अपनी आदतों के वश क्रोध करना। (मलयगिरि )

(३) **उपशान्त क्रोध**—उदय में नहीं आया, किन्तु सत्ता मे अवस्थित क्रोध।

(४) **अनुपशान्त क्रोध**—उदय प्राप्त क्रोध।

*(इसी प्रकार मान, माया और लोभ कषाय की भी व्याख्या समझनी चाहिए। देखें हिन्दी टीका, पृष्ठ ६९९)*

**अनन्तानुबन्धी—क्रोध, मान, माया, लोभ की तालिका**

| | कषाय | अवरोध | आयुबन्ध होवे तो | उत्कृष्ट स्थिति |
|---|---|---|---|---|
| (१) | अनन्तानुबन्धी | सम्यक्त्व | नरकगति | जीवन—पर्यन्त |
| (२) | अप्रत्याख्यानावरण | श्रावक धर्म | तिर्यंचगति | एक वर्ष |
| (३) | प्रत्याख्यानावरण | साधु धर्म | मनुष्यगति | चार मास |
| (४) | संज्वलन | यथाख्यात चारित्र | देवगति | पन्द्रह दिन |

**Elaboration**—(1) *Aabhoganirvartit krodh*—to be angry in spite of knowing about the bad consequences and bitter fruits of anger *(Sthananga Sutra Tika by Abhayadev Suri, leaf 182)*. To pose to be angry in order to correct or teach someone after fully understanding his mistake *(Prajnapana Vritti by Malayagiri, verse 14, leaf 291)*

(2) *Anabhoganirvartit krodh*—To be angry in a state of ignorance of the bitter consequences of anger (*Abhayadev Suri*) To be angry just out of habit and not for any purpose (*Malayagiri*).

(3) *Upashant krodh*—Dormant anger that exists but has not come into action

(4) *Anupashant krodh*—Anger that has come into action and is dormant no more.

*(All these elaborations also apply to conceit, deceit and greed Refer to Hindi Tika, p 699)*

**Table of Anantanubandhi anger, conceit, deceit and greed**

| passion | impeding factor | on life span bondage | maximum duration |
|---|---|---|---|
| 1. *Anantanubandhi* | righteousness | birth in hell | lifelong |
| 2. *Apratyakhyanavaran* | householder's codes | birth as animal | one year |
| 3 *Pratyakhyanavaran* | ascetic codes | birth as humans | four months |
| 4 *Sanjvalan* | conduct conforming to perfect purity | birth in divine realm | fifteen days |

### कर्म-प्रकृति-पद KARMA-PRAKRITI-PAD (SEGMENT OF KARMA-SPECIES)

**९२. जीवा णं चउहिं ठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ चिणिंसु (१) तं जहा—कोहेणं, माणेणं, मायाए, लोभेणं। एवं जाव वेमाणियाणं। ९३. एवं चिणंति एस दंडओ। ९४. एवं चिणिस्संति एस दंडओ, एवमेतेणं तिण्णि दंडगा।**

९२. जीवो ने चार कारणो से आठो कर्म-प्रकृतियो का भूतकाल मे सचय किया है। जैसे-(१) क्रोध से, (२) मान से, (३) माया से, और (४) लोभ से। वैमानिक तक के सभी दण्डक वाले जीवो ने भूतकाल में आठो कर्म-प्रकृतियो का संचय किया है। ९३. इसी प्रकार आठों कर्म-प्रकृतियो का वर्तमान मे सचय कर रहे है। ९४. भविष्य मे आठो कर्म-प्रकृतियो का सचय करेगे। वैमानिक तक के सभी दण्डक वाले जीवो के सम्बन्ध मे यह कथन समझना चाहिए।

**92.** There are four causes due to which beings have acquired (*sanchaya*) all the eight *karma-prakritis* (species of *karma* by qualitative segregation) in the past—(1) through *krodh* (anger), (2) through *maan* (conceit), (3) through *maya* (deceit), and (4) through *lobha* (greed) In the same way beings belonging to all *dandaks* (places of suffering) up to *Vaimanik* gods have acquired all these eight *karma-prakritis* **93.** In the same way they are acquiring all eight *karma-prakritis* in the present, and **94.** will acquire all eight *karma-prakritis* in the future. This is applicable to all *dandaks* up to *Vaimanik* gods

**९५. एवं (२) उवचिणिंसु उवचिणंति उवचिणिस्संति, (३) बंधिंसु बंधंति बंधिस्संति, (४) उदीरिंसु उदीरिंति उदीरिस्संति, (५) वेदेंसु वेदेंति वेदिस्संति, (६) णिज्जरेंसु णिज्जरेंति णिज्जरिस्संति, जाव वेमाणियाणं। [ एवमेकेक्कपदे तिन्नि तिन्नि दंडगा भाणियव्वा ]।**

९५. (२) इसी प्रकार नैरयिक से वैमानिक तक के सभी दण्डक वाले जीवो ने आठों कर्म-प्रकृतियों का उपचय किया है, कर रहे हैं और करेगे। (३) आठो कर्म-प्रकृतियो का बन्ध किया है, कर रहे है और

करेंगे। (४) आठों कर्म-प्रकृतियों की उदीरणा की है, कर रहे हैं और करेंगे। (५) आठों कर्म-प्रकृतियों को भोगा है, भोग रहे हैं और भोगेंगे, तथा (६) आठों कर्म-प्रकृतियों की निर्जरा की है, कर रहे हैं और करेंगे। वैमानिक तक सभी जीवों में एक-एक पद में निर्जरा तक तीन-तीन दण्डक जानना चाहिए।

**95.** In the same way all beings belonging to all *dandaks* (places of suffering) from infernal beings to *Vaimanik* gods did, do and will augment (*upachaya*) (2) all the eight *karma-prakritis*; did, do and will enter bondage (*bandh*) (3) of all the eight *karma-prakritis*; did do and will undergo fructification (*udirana*) (4) of all the eight *karma-prakritis*; did, do and will experience (*bhog*) (5) all the eight *karma-prakritis*, and did, do and will shed (*nirjaran*) (6) all the eight *karma-prakritis* With respect to all beings up to *Vaimanik* gods in every statement three *dandaks* (with respect to time, *i.e.* past, present and future) are applicable.

**विवेचन**-विशेष पदो का अर्थ-(१) चय-कषाययुक्त जीव द्वारा कर्मों का ग्रहण। (२) उपचय-ग्रहीत कर्म-पुद्‌गलो का ज्ञानावरण आदि रूपो मे परिणत होना। (३) बंध-ज्ञानावरणादि रूप मे ग्रहीत पुद्‌गलो का पुनः कषाय विशेष से निकाचन होना, यह प्रकृति, स्थिति, अनुभाग व प्रदेश के रूप में चार प्रकार का है। (४) उदय-कर्म-प्रकृति का स्वत फल परिपाक रूप भोग मे आना। (५) वेदन-कर्मफल भोग की अनुभूति को वेदन कहते है। (६) निर्जरा-आत्म-प्रदेशो से कर्मों का पृथक् होना। (७) उदीरणा-जो कर्म अभी उदय मे नही आये, परन्तु साधना विशेष द्वारा उन्हे उदय मे लाना। सूत्र ९३ से ९५ तक मे प्रथम छह विकल्पो का ही कथन है।

**TECHNICAL TERMS**

(1) *Chaya* (*sanchaya*)—acquisition of *karmas* by a being afflicted by passions (2) *Upachaya*—augmentation and maturing into species like *Jnanavaran* etc. (3) *Bandh*—maturing of the acquired *karma* particles into passion-specific bondage with four attributes of *prakriti* (qualitative), *sthiti* (duration), *anubhag* (potency) and *pradesh* (space-point or sectional). (4) *Udaya*—natural fructification of *karma* species in the form of suffering (5) *Vedan* (*bhog*)—experience of the fruits of *karmas*. (6) *Nirjara*—shedding of *karmas* or separation of *karmas* from soul-space-points (7) *Udirana*—to cause fructification, by special spiritual practices, of *karma* species that have not yet fructified naturally. In aphorisms 93-95 only first six processes have been stated

### प्रतिमा-पद PRATIMA-PAD (SEGMENT OF SPECIAL CODES)

**९६. चत्तारि पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा-समाहिपडिमा, उवहाणपडिमा, विवेगपडिमा, विउस्सग्गपडिमा। ९७. चत्तारि पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा-भद्दा, सुभद्दा, महाभद्दा,**

सव्वतोभद्दा। ९८. चत्तारि पडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—खुड्डिया मोयपडिमा, महल्लिया मोयपडिमा, जवमज्झा, वइरमज्झा।

९६. प्रतिमा चार प्रकार की हैं—(१) समाधिप्रतिमा, (२) उपधानप्रतिमा, (३) विवेकप्रतिमा, (४) व्युत्सर्गप्रतिमा। ९७. प्रतिमा चार प्रकार की है—(१) भद्रा, (२) सुभद्रा, (३) महाभद्रा, (४) सर्वतोभद्रा। ९८. प्रतिमा चार प्रकार की हैं—(१) छोटी मोकप्रतिमा, (२) बडी मोकप्रतिमा, (३) यवमध्या, (४) वज्रमध्या।

इन सभी प्रतिमाओ का विवेचन दूसरे स्थान के तृतीय उद्देशक, सूत्र २४८ मे किया जा चुका है।

**96.** *Pratima* (special codes) are of four kinds—(1) *samadhi-pratima*, (2) *upadhan-pratima*, (3) *vivek-pratima*, and (4) *vyutsarg-pratima*. **97.** *Pratima* (special codes) are of four kinds—(1) *bhadraa*, (2) *subhadraa*, (3) *mahabhadraa*, and (4) *sarvatobhadraa*. **98.** *Pratima* (special codes) are of four kinds—(1) *kshudrak moak-pratima*, (2) *mahati moak-pratima*, (3) *yavamadhyaa*, and (4) *vajramadhyaa* These special codes have already been discussed in details in aphorism 248 of Third Lesson of Second *Sthaan*

### *अस्तिकाय–पद* ASTIKAYA-PAD (SEGMENT OF AGGLOMERATIVE ENTITY)

**९९. चत्तारि अत्थिकाया अजीवकाया पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए। १००. चत्तारि अत्थिकाया अरूविकाया पण्णत्ता, तं जहा— धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए।**

९९. चार अस्तिकाय द्रव्य अजीवकाय होते हैं—(१) धर्मास्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्तिकाय, (४) पुद्गलास्तिकाय। १००. चार अस्तिकाय द्रव्य अरूपीकाय होते है— (१) धर्मास्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्तिकाय, (४) जीवास्तिकाय।

**99.** Four *astikaya dravyas* (agglomerative entities) are *ajivakaya* (life-less)—(1) *Dharmastikaya* (motion entity), (2) *Adharmastikaya* (inertia entity), (3) *Akashastikaya* (space entity), and (4) *Pudgalastikaya* (matter entity) **100.** Four *astikaya dravyas* (agglomerative entities) are *arupikaya* (form-less)—(1) *Dharmastikaya* (motion entity), (2) *Adharmastikaya* (inertia entity), (3) *Akashastikaya* (space entity), and (4) *Jivastikaya* (soul entity).

विवेचन—ये चारो द्रव्य तीनों कालो मे विद्यमान रहने से 'अस्ति' कहलाते है और बहुप्रदेशी होने से **'काय'** कहे जाते हैं। अस्तिकाय अर्थात् प्रदेशो का समूह रूप द्रव्य। जिनमे रूप, रसादि पाये जाते हैं, ऐसे पुद्गल द्रव्यरूपी होते हैं। धर्मास्तिकाय आदि चारों द्रव्यो में रूपादि नही होने से ये अरूपी काय हैं।

**Elaboration**—All these four entities are called *'asti'* because they exist in all the three periods (past, present and future); in other words they have eternal existence. As they are constituted of multiple units or agglomerates they are called *'kaya'*. Thus *astikaya* means agglomerative entity. The entities having forms, taste and other physical properties are called *rupi dravya* or entities with form, such as matter. As the second group of aforesaid four entities including *Dharmastikaya* have no form they are *arupikaya*.

### *आम–पक्व–पद* AAM-PAKVA-PAD (SEGMENT OF RIPE MANGO)

**१०१. चत्तारि फला पण्णत्ता, तं जहा–आमे णाममेगे आममहुरे, आमे णाममेगे पक्कमहुरे, पक्के णाममेगे आममहुरे, पक्के णाममेगे पक्कमहुरे।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–आमे णाममेगे आममहुरफलसमाणे, आमे णाममेगे पक्कमहुरफलसमाणे, पक्के णाममेगे आममहुरफलसमाणे, पक्के णाममेगे पक्कमहुरफलसमाणे।**

१०१. फल चार प्रकार के होते है–(१) कोई फल आम (कच्चा) होकर भी आम-मधुर (थोडा मधुर) होता है। (२) कोई फल आम होकर के भी पक्व-मधुर (पके फल के समान बहुत मीठा) होता है। (३) कोई फल पक्व (पका) होकर भी आम-मधुर (थोडा मधुर) होता है। (४) कोई फल पक्व (पका) होकर के पक्व-मधुर (बहुत मीठा) होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष आम-(अवस्था और श्रुताभ्यास की अपेक्षा अपक्व) होने पर भी उपशम आदि गुणो मे अल्प-मधुर स्वभाव वाला होता है। (२) कोई पुरुष (अवस्था और श्रुताभ्यास से) परिपक्व न होने पर भी उत्कृष्ट उपशम भाव वाला और अत्यन्त मधुर स्वभावी होता है। (३) कोई पुरुष पक्व (वयोवृद्ध और ज्ञानवृद्ध) होने पर भी अल्प-उपशम भाव वाला और अल्प मधुर स्वभावी होता है। (४) कोई पुरुष पक्व (वय और श्रुत से परिपुष्ट) होकर प्रकृष्ट उपशम वाला और अत्यन्त मधुर स्वभावी होता है।

**101.** Fruits are of four kinds—(1) some fruit is unripe and is slightly sweet, (2) some fruit although unripe is very sweet (almost like a ripe fruit), (3) some fruit although ripe is only slightly sweet, and (4) some fruit is ripe and is very sweet.

In the same way men are of four kinds—(1) some man is unripe (in terms of age and study of scriptures) and is slightly sweet (in terms of nature and virtues like tranquillity), (2) some man although unripe in age and study of scriptures is very sweet in nature and tranquillity, (3) some man although ripe in terms of age and study of scriptures is only slightly sweet in nature and tranquillity and (4) some man is ripe in age and study of scriptures and is very sweet in nature and tranquillity.

**सत्य-मृषा-पद SATYA-MRISHA-PAD (SEGMENT OF TRUTH AND UNTRUTH)**

**१०२. चउव्विहे सच्चे पण्णत्ते, तं जहा—काउज्जुयया, भासुज्जुयया, भावुज्जुयया, अविसंवायणाजोगे।**

**१०३. चउव्विहे मोसे पण्णत्ते, तं जहा—कायअणुज्जुयया, भासअणुज्जुयया, भावअणुज्जुयया, विसंवादणाजोगे।**

१०२. सत्य चार प्रकार का है। (१) **काय-ऋजुता**—काया की सरलता। (२) **भाषा-ऋजुता**—वचन की सरलता अथवा वाणी से सत्य कथन करना। (३) भाव-ऋजुता—मन मे सरलता, सत्य कहने का भाव रखना। (४) **अविसंवादना-योग**—विसवादरहित, किसी को धोखा न देने वाली मन, वचन, काया की परस्पर अविरोधी प्रवृत्ति।

१०३. मृषा (असत्य) चार प्रकार का है-(१) **काय-अनृजुकता**—काय के द्वारा सत्य को छिपाने वाला संकेत करना। (२) **भाषा-अनृजुकता**—वचन के द्वारा असत्य का प्रतिपादन करना। (३) **भाव-अनृजुकता**—मन में कुटिलता रखकर असत्य कहने का भाव रखना। (४) **विसंवादना-योग**—विसंवादयुक्त, दूसरो को धोखा देने वाली मन, वचन, काय की परस्पर विरोधी प्रवृत्ति रखना।

**102.** *Satya* (truth) is of four kinds—(1) *kaya-rijuta*—physical simplicity or to present truth in gestures, (2) *bhasha-rijuta*—vocal simplicity or to speak truth, (3) *bhaava-rijuta*—mental simplicity or to have attitude of speaking truth, and (4) *avisamvadana-yoga*—absence of untruth and deceit or to have uniform mental, vocal and physical attitude of not deceiving anyone

**103.** *Mrisha* (untruth) is of four kinds—(1) *kaya-anrijukata*—physical complexity or to conceal truth by gestures, (2) *bhasha-anrijukata*—vocal complexity or to speak untruth, (3) *bhaava-anrijukata*—mental complexity or to have attitude of speaking untruth, and (4) *avisamvadana-yoga*—association with untruth and deceit or to have contradictions in mental, vocal and physical attitude with an intent to deceive

**प्रणिधान-पद PRANIDHAN-PAD (SEGMENT OF CONCENTRATION)**

**१०४. चउव्विहे पणिधाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणपणिधाणे, वइपणिधाणे, कायपणिधाणे, उवकरणपणिधाणे। एवं—णेरइयाणं पंचिंदियाणं जाव वेमाणियाणं। १०५. चउव्विहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा मणसुप्पणिहाणे, जाव [ वइसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे ], उवगरणसुप्पणिहाणे, एवं—संजयमणुस्सण वि।**

१०४. प्रणिधान (मन आदि की एकाग्रता, स्थिरता) चार प्रकार का है-(१) मन-प्रणिधान, (२) वाक्-प्रणिधान, (३) काय-प्रणिधान, (४) उपकरण-प्रणिधान (वस्त्र-पात्र आदि उपकरणो का प्रयोग)।

ये चारों प्रणिधान नारकों से लेकर वैमानिक तक के सभी (संज्ञी) पंचेन्द्रिय दण्डकों में होते हैं। १०५. सुप्रणिधान (मन आदि का शुभ प्रवर्तन) चार प्रकार का है-(१) मन-सुप्रणिधान, (२) वाक्-सुप्रणिधान, (३) काय-सुप्रणिधान, (४) उपकरण-सुप्रणिधान। ये चारों सुप्रणिधान संयमी मनुष्यों के होते हैं।

**104.** *Pranidhan* (concentration) is of four kinds—(1) *manah-pranidhan* (mental concentration), (2) *vak-pranidhan* (vocal concentration), (3) *kaya-pranidhan* (physical concentration), and (4) *upakaran-pranidhan*—(use of equipment including cloths and bowls). These four kinds of concentration are applicable to all *sanjni panchendriyas* (five sensed sentient beings) belonging to all *dandaks* (places of suffering) from infernal beings to *Vaimanik* gods. **105.** *Supranidhan* (noble concentration) is of four kinds—(1) *manah-supranidhan* (noble mental concentration), (2) *vachan-supranidhan* (noble vocal concentration), (3) *kaya-supranidhan* (noble physical concentration), and (4) *upakaran-supranidhan*—(good use of equipment including cloths and bowls) Disciplined persons have all these four kinds of *supranidhan* (noble concentration)

**१०६. चउव्विहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा मणुदुप्पणिहाणे, जाव [ वइदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे ] उवकरणदुप्पणिहाणे, एवं-पंचिंदियाणं जाव वेमाणियाणं।**

१०६. दुष्प्रणिधान (असंयम मे मन आदि का प्रवर्तन व चचलता) चार प्रकार का है। (१) मन-दुष्प्रणिधान, (२) वाक्-दुष्प्रणिधान, (३) काय-दुष्प्रणिधान, (४) उपकरण-दुष्प्रणिधान। ये चारो दुष्प्रणिधान नारकों से लेकर वैमानिक तक के सभी पचेन्द्रिय दण्डको में होते है।

**106.** *Dushpranidhan* (ignoble concentration) is of four kinds—(1) *manah-dushpranidhan* (ignoble mental concentration), (2) *vachan-dushpranidhan* (ignoble vocal concentration), (3) *kaya-dushpranidhan* (ignoble physical concentration), and (4) *upakaran-pranidhan*—(use of equipment including cloths and bowls). These four kinds of ignoble concentration are applicable to all *sanjni panchendriyas* (five sensed sentient beings) belonging to all *dandaks* (places of suffering) from infernal beings to *Vaimanik* gods.

### *आपात-संवास-पद* AAPAAT-SAMVAS-PAD (SEGMENT OF INTRODUCTION AND LIVING TOGETHER)

**१०७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-आवातभद्दए णाममेगे णो संवासभद्दए, संवासभद्दए णाममेगे णो आवातभद्दए, एगे आवातभद्दए वि संवास भद्दए वि, एगे णो आवातभद्दए णो संवासभद्दए।**

१०७. पुरुष चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष आपात-भद्रक होता है, संवास-भद्रक नही। (प्रारम्भ मे मिलने पर भला दिखता है, किन्तु साथ रहने पर भला नहीं लगता)। (२) कोई संवास-भद्रक होता है, आपात-भद्रक नही। (प्रारम्भ मे मिलने पर भला नही दिखता, किन्तु साथ रहने पर भला लगता है)। (३) कोई आपात-भद्रक भी होता है और संवास-भद्रक भी। (४) कोई न आपात-भद्रक होता है और न संवास-भद्रक ही होता है।

**107.** Men are of four kinds—(1) Some man is *aapaat-bhadrak* (appears noble on introduction) and not *samvas-bhadrak* (appears noble when living together) (2) Some man is *samvas-bhadrak* noble when lives together and not *aapaat-bhadrak* noble initially, (3) Some man is *aapaat-bhadrak* and *samvas-bhadrak* as well (4) Some man is neither *aapaat-bhadrak* nor *samvas-bhadrak*

### वर्ज्य-पद VARJYA-PAD (SEGMENT OF FAULTS)

**१०८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-अप्पणो णाममेगे वज्जं पासति णो परस्स, परस्स णाममेगे वज्जं पासति णो अप्पणो, एगे अप्पणो वि वज्जं पासति परस्स वि, एगे णो अप्पणो वज्जं पासति णो परस्स।**

**१०९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-अप्पणो णाममेगे वज्जं उदीरेइ णो परस्स, (४) [ परस्स णाममेगे वज्जं उदीरेइ णो अप्पणो, एगे अप्पणोवि वज्जं उदीरेइ परस्सवि, एगे णो अप्पणो वज्जं उदीरेइ णो परस्स। ]**

**११०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-अप्पणो णाममेगे वज्जं उवसामेति णो परस्स। (४) [ परस्स णाममेगे वज्जं उवसामेति णो अप्पणो, एगे अप्पणोवि वज्जं उवसामेति परस्सवि, एगे णो अप्पणो वज्जं उवसामेति णो परस्स। ]**

१०८. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष अपना वर्ज्य (अवद्य/दोष) देखता है, दूसरे का नही (साधक या सज्जन पुरुष)। (२) कोई दूसरे का वर्ज्य देखता है, अपना नही (दुर्जन या अहंकारी)। (३) कोई अपना भी वर्ज्य देखता है और दूसरे का भी (सरल चित्त)। (४) कोई न अपना वर्ज्य देखता है और न दूसरे का देखता है (अज्ञानी, मूर्ख)।

१०९. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष अपने अवद्य (पाप या दोष) की उदीरणा करता है अपना दोष प्रकट करता है या स्वीकारता है। दूसरे के अवद्य की नही। सूत्र १०८ की तरह चार विकल्प यहाँ भी समझे।

११०. इसी तरह पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष अपने वर्ज्य (कषाय या दोष) को उपशान्त (निवारण) करता है, दूसरे के वर्ज्य को नही। यहाँ भी सूत्र १०८ की तरह चार विकल्प होते है।

**108.** Men are of four kinds—(1) Some man looks at his own *varjya* (faults) and not at others' faults (such as a spiritualist or a noble person)

(2) Some man looks at others' *varjya* (faults) and not his own faults (such as an egotist or an ignoble person). (3) Some man looks at his own *varjya* (faults) as well as at others' faults (such as simple minded person). (4) Some man looks neither at his own *varjya* (faults) nor at others' faults (such as an ignorant or a fool)

**109.** Men are of four kinds—(1) Some man causes fructification (*udirana*) or reveals and accepts his own *varjya* (faults) and not others' faults. Read all the four alternatives as in aphorism 108

**110.** Men are of four kinds—(1) Some man pacifies (*upashant*) or removes his own *varjya* (faults) and not others' faults. Read all the four alternatives as in aphorism 108

विवेचन—वर्ज्य (अवद्य) के तीन अर्थ होते है-(१) त्यागने योग्य अवगुण, (२) वज्र के समान महापाप, (३) निन्दनीय कार्य दोष।

**Elaboration**—*Varjya* has three meanings—(1) faults worth removing, (2) diamond-hard sins, and (3) faults worth censuring

### *लोकोपचार-विनय-पद* LOKOPACHAR-VINAYA-PAD (SEGMENT OF SOCIAL MODESTY)

**१११. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अब्भुट्ठेति णाममेगे णो अब्भुट्ठावेति। [ अब्भुट्ठावेति णाममेगे णोअब्भुट्ठेति, एगे अब्भुट्ठेति वि अब्भुट्ठावेति; वि एगे णो अब्भुट्ठेति णो अब्भुट्ठावेति। ]**

**११२. [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—वंदति णाममेगे णो वंदावेति। (४) वंदावेति णाममेगे णो वंदति, एगे वंदति वि वंदावेति वि, एगे णो वंदति णो वंदावेति।**

**एवं सक्कारेति, सम्माणेति पूएइ, वाएइ, पडिपुच्छति, पुच्छइ, वागरेति (४-४)।**

**११३. [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सक्कारेइ णाममेगे णो सक्कारावेइ, सक्करावेइ णाममेगे णो सक्कारेइ, एगे सक्कारेइ वि सक्कारावेइ वि, एगे णो सक्कारेइ णो सक्कारावेइ ]।**

**११४. [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सम्माणेति णाममेगे णो सम्माणावेति, सम्माणावेति णाममेगे णो सम्माणेति, एगे सम्माणेति वि सम्माणावेति वि, एगे णो सम्माणेति णो सम्माणावेति ]।**

**११५. [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पूएइ णाममेगे णो पूयावेति, पूयावेति णाममेगे णो पूएइ, एगे पूएइ वि पूयावेति वि, एगे णो पूएइ णो पूयावेति। ]**

१११. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष (गुरुजनादि को देखकर) स्वय अभ्युत्थान करता (खड़ा होता) है, किन्तु (दूसरों से) अभ्युत्थान नही करवाता। जैसे-दीक्षा आदि मे लघु मुनि,

(२) कोई दूसरों से अभ्युत्थान करवाता है, किन्तु स्वयं नहीं करता। जैसे–गुरुजन, (३) कोई स्वय भी अभ्युत्थान करता है और दूसरों से भी करवाता है। जैसे–गणधर आदि, (४) कोई न स्वयं अभ्युत्थान करता है और न दूसरों से भी करवाता है। जैसे–जिनकल्पी मुनि।

**११२.** पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई (गुरुजनादि की ) वन्दना करता है, किन्तु वन्दना करवाता नहीं। (लघु शिष्य), (२) कोई दूसरो से वन्दना करवाता है, किन्तु (स्वय) वन्दना नही करता। (गुरु), (३) कोई स्वयं भी वन्दना करता है और दूसरो से वन्दना करवाता है। (पदाधिकारी मुनि), (४) कोई न स्वय वन्दना करता है और न दूसरो से करवाता है। (जिनकल्पी)

**११३.** पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई दूसरो का सत्कार करता है, किन्तु (दूसरो से) सत्कार करवाता नही, (२) कोई दूसरो से सत्कार करवाता है, किन्तु स्वय नही करता, (३) कोई स्वय भी सत्कार करता है और दूसरो से भी करवाता है, (४) कोई न स्वय सत्कार करता है और न दूसरों से करवाता है।

**११४.** पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई सन्मान करता है, किन्तु (दूसरो से) सन्मान नही करवाता, (२) कोई दूसरो से सन्मान करवाता है, किन्तु स्वय नही करता, (३) कोई स्वय भी सन्मान करता है और दूसरो से भी करवाता है, (४) कोई न स्वय सन्मान करता है और न दूसरो से करवाता है।

**११५.** पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई (गुरुजनादि की) पूजा करता है किन्तु (दूसरो से) पूजा करवाता नही, (२) कोई दूसरो से पूजा करवाता है, किन्तु स्वय पूजा नही करता, (३) कोई स्वयं भी पूजा करता है और दूसरो से भी करवाता है, (४) कोई न स्वय पूजा करता है और न दूसरो से करवाता है।

**111.** Men are of four kinds—(1) Some man gets up (*abhyutthan*) himself (on seeing seniors) and does not expect others to get up (a junior ascetic) (2) Some man inspires others to get up and does not get up (*abhyutthan*) himself (a senior ascetic) (3) Some man gets up (*abhyutthan*) himself and inspires others as well to get up (a *Ganadhar*). (4) Some man neither gets up (*abhyutthan*) himself nor expects others to get up (a *Jinakalpi* ascetic)

**112.** Men are of four kinds—(1) Some man pays homage (*vandana*) and does not expect others to pay him homage (a junior ascetic) (2) Some man inspires others to pay him homage and does not pay homage himself (a senior ascetic) (3) Some man pays homage and inspires others as well to pay homage (a status holding ascetic) (4) Some man neither pays homage himself nor expects others to pay homage (a *Jinakalpi* ascetic).

**113.** Men are of four kinds—(1) Some man offers hospitality (*satkar*) and does not expect others to offer him hospitality (2) Some man

inspires others to offer him hospitality and does not offer hospitality himself (3) Some man offers hospitality and inspires others as well to offer hospitality. (4) Some man neither offers hospitality himself nor expects others to offer hospitality.

**114.** Men are of four kinds—(1) Some man gives respect (*sanman*) and does not expect others to give him respect (2) Some man inspires others to give him respect and does not give respect himself. (3) Some man gives respect and inspires others as well to give respect. (4) Some man neither gives respect himself nor expects others to give respect.

**115.** Men are of four kinds—(1) Some man does worship (*puja*) and does not expect others to worship him (2) Some man inspires others to worship him and does not do worship himself. (3) Some man does worship and inspires others as well to do worship (4) Some man neither does worship himself nor expects others to do worship.

**स्वाध्याय-पद SVADHYAYA-PAD (SEGMENT OF STUDY)**

**११६. [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—वाएइ णाममेगे णो वायावेइ, वायावेइ णाममेगे णो वाएइ, एगे वाएइ वि वायावेइ वि, एगे णो वाएइ णो वायावेइ। ]**

**११७. [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पडिच्छति णाममेगे णो पडिच्छावेति, पडिच्छावेति णाममेगे णो पडिच्छति, एगे पडिच्छति वि पडिच्छावेति वि, एगे णो पडिच्छति णो पडिच्छावेति।**

**११८. [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पुच्छइ णाममेगे णो पुच्छावेइ, पुच्छावेइ णाममेगे णो पुच्छइ एगे पुच्छवि वि पुच्छावेइ वि, एगे णो पुच्छइ णो पुच्छावेइ।**

**११९. [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—वागरेति णाममेगे णो वागरावेति, वागरावेति णाममेगे णो वागरेति, एगे वागरेति वि वागरावेति वि, एगे णो वागरेति णो वागरावेति।**

**१२०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुत्तधरे णाममेगे णो अत्थधरे, अत्थधरे णाममेगे [ णो सुत्तधरे, एगे सुत्तधरे वि अत्थधरे वि, एगे णो सुत्तधरे णो अत्थधरे। ]**

११६. पुरुष चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष दूसरो को वाचना देता है, किन्तु दूसरों से वाचना लेता नहीं। (आचार्य/उपाध्याय), (२) कोई दूसरो से वाचना लेता है, किन्तु वाचना देता नहीं। (नव-दीक्षित), (३) कोई दूसरो को वाचना देता भी है और दूसरों से वाचना लेता भी है। (परोपकारी/बहुश्रुत), (४) कोई न दूसरों को वाचना देता है और न दूसरों से वाचना लेता है। (जिनकल्पी या मूर्ख)

११७. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई प्रतीच्छा-(सूत्र और अर्थ का ग्रहण अथवा प्रति प्रश्न-पूछे हुए विषय मे दुबारा पूछना) करता है, किन्तु करवाता नही है। (जिज्ञासु या तार्किक), (२) कोई प्रतीच्छा करवाता है, किन्तु करता नही है। (लज्जालु या तर्कशील), (३) कोई प्रतीच्छा करता भी है और करवाता भी है। (कुछ जिज्ञासा और कुछ लज्जा के कारण), (४) कोई प्रतीच्छा न करता है और न करवाता है। (पूर्ण श्रुतज्ञानी या मूढ)

११८. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई स्वय प्रश्न करता है, किन्तु प्रश्न करवाता नहीं है। (२) कोई प्रश्न करवाता है, किन्तु स्वय करता नही है। (३) कोई प्रश्न करता भी है और करवाता भी है। (४) कोई न प्रश्न करता है और न प्रश्न करवाता है।

११९. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई सूत्रादि का व्याख्यान-(विवेचन) स्वय करता है, किन्तु अन्य से करवाता नही है (समर्थ विद्वान्)। (२) कोई व्याख्यान करवाता है, किन्तु स्वय करता नही है (अल्पज्ञ पुरुष)। (३) कोई व्याख्यान करता भी है और अन्य से करवाता भी है (साधारण ज्ञानी)। (४) कोई न स्वय व्याख्यान करता है और न अन्य से करवाता है। (अभिमानी या दुराग्रही)

१२०. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष सूत्रधर (सूत्र का ज्ञाता) होता है, किन्तु अर्थधर (अर्थ का ज्ञाता) नही होता। (२) कोई अर्थधर होता है, किन्तु सूत्रधर नही होता। (३) कोई सूत्रधर भी होता है और अर्थधर भी होता है। (४) कोई न सूत्रधर होता है और न अर्थधर होता है।

**116.** Men are of four kinds—(1) Some man gives recitation (*vachana*) to others and does not get lessons from others (*acharya/upadhyaya*) (2) Some man gets lessons from others and does not give recitation himself (neo-initiate) (3) Some man gives recitation and gets lessons as well (a generous scholar) (4) Some man neither gives nor gets lessons (a *Jinakalpi* or an idiot)

**117.** Men are of four kinds—(1) Some man does *pratichchha* (understands the meaning of the canon by asking questions again) and does not allow others to do so (a curious or a contentious person). (2) Some man allows others to do *pratichchha* and does not do it himself (a shy or a logic oriented person) (3) Some man does *pratichchha* and allows others as well to do so (a bit shy and a bit curious person). (4) Some man neither does *pratichchha* himself nor allows others to do so (a complete scholar of canons or a fool)

**118.** Men are of four kinds—(1) Some man asks questions (*prashna*) and does not allow others to do so (2) Some man allows others to ask questions and does not do that himself (3) Some man asks questions and allows others as well to do so (4) Some man neither asks questions himself nor allows others to do so

**119.** Men are of four kinds—(1) Some man gives *vyakhyan* (explains the meaning of the canon or gives discourse) and does not ask others to do so (an accomplished scholar). (2) Some man asks others to give *vyakhyan* and does not do it himself (an ignorant person). (3) Some man gives *vyakhyan* and asks others as well to do so (an ordinary scholar). (4) Some man neither gives *vyakhyan* himself nor asks others to do so (an egotist or dogmatic person)

**120.** Men are of four kinds—(1) Some man is *sutradhar* (scholar of canonical text) but not *arthadhar* (scholar of the meaning of canonical text). (2) Some man is *arthadhar* but not sutradhar. (3) Some man is *arthadhar* as well as *sutradhar*. (4) Some man is neither *arthadhar* nor *sutradhar*.

### *लोकपाल-पद (देव व्यवस्था दर्शन)* LOK-PAAL-PAD (SEGMENT OF GUARDIAN DEITIES)

**१२१.** चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता, तं जहा—सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे।

१२१. असुरकुमार-राज असुरेन्द्र (१) चमर के चार लोकपाल है-(१) सोम (पूर्व दिशा), (२) यम (दक्षिण), (३) वरुण (पश्चिम), (४) वैश्रमण (उत्तर)।

**121.** (1) Chamar Asurendra, the king of *Asur Kumar* gods has four *lok-paals* (guardian deities)—(1) *Soma* (guardian of the east direction), (2) *Yama* (guardian of the south direction), (3) *Varun* (guardian of the west direction), and (4) *Vaishraman* (guardian of the north direction).

**१२२.** (२) एवं बलिस्सवि—सोमे, जमे, वेसमणे, वरुणे। (३) धरणस्स—कालपाले, कोलपाले, सेलपाले, संखपाले। (४) भूयाणंदस्स—कालपाले, कोलपाले, संखपाले, सेलपाले। (५) वेणुदेवस्स—चित्ते, विचित्ते, चित्तपक्खे, विचित्तपक्खे। (६) वेणुदालिस्स—चित्ते, विचित्ते, विचित्तपक्खे, चित्तपक्खे। (७) हरिकंतस्स—पभे, सुप्पभे, पभकंते, सुप्पभकंते। (८) हरिस्सहस्स—पभे, सुप्पभे, सुप्पभकंते, पभकंते। (९) अग्गिसिहस्स—तेऊ, तेउसिहे, तेउकंते, तेउप्पभे। (१०) अग्गिमाणवस्स—तेऊ, तेउसिहे, तेउप्पभे, तेउकंते। (११) पुण्णस्स—रूवे, रूवंसे, रूवकंते, रूवप्पभे। (१२) विसिट्ठस्स—रूवे, रूवंसे, रूवप्पभे, रूवकंते। (१३) जलकंतस्स—जले, जलरते, जलकंते, जलप्पभे। (१४) जलप्पहस्स—जले, जलरते, जलप्पहे, जलकंते। (१५) अमितगतिस्स—तुरियगती, खिप्पगती, सीहगती, सीहविक्कमगती। (१६) अमितवाहणस्स—तुरियगती, खिप्पगती, सीहविक्कमगती, सीहगती। (१७) वेलंबस्स—काले, महाकाले, अंजणे, रिट्ठे (१८) पभंजणस्स—

**काले, महाकाले, रिट्ठे, अंजणे। (१९) घोसस्स—आवत्ते, वियावत्ते, णंदियावत्ते, महाणंदियावत्ते। (२०) महाघोस्स—आवत्ते, वियावत्ते, महाणंदियावत्ते, णंदियावत्ते।**

**सक्कस्स—सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे। (२१) ईसाणस्स—सोमे, जमे, वेसमणे, वरुणे। एवं एगंतरिता जाव अच्चुतस्स।**

१२२. इसी प्रकार बलि आदि के भी (चारो मे दिशाओ मे) चार-चार लोकपाल हैं-(२) **बलि के**—१. सोम, २ यम, ३. वैश्रमण, ४ वरुण। (३) **धरण के**—१ कालपाल, २ कोलपाल, ३ सेलपाल, ४. शंखपाल। (४) **भूतानन्द के**—१. कालपाल, २ कोलपाल, ३. शखपाल, ४. सेलपाल। (५) **वेणुदेव के**—१ चित्र, २ विचित्र, ३. चित्रपक्ष, ४ विचित्रपक्ष। (६) **वेणुदालि के**—१ चित्र, २ विचित्र, ३ विचित्रपक्ष, ४ चित्रपक्ष। (७) **हरिकान्त के**—१ प्रभ, २ सुप्रभ, ३ प्रभकान्त, ४ सुप्रभकान्त। (८) **हरिस्सह के**—१ प्रभ, २. सुप्रभ, ३ सुप्रभकान्त, ४ प्रभकान्त। (९) **अग्निशिख के**—१. तेज, २ तेजशिख, ३ तेजस्कान्त, ४ तेजप्रभ। (१०) **अग्निमाणव के**—१ तेज, २ तेजशिख, ३. तेजप्रभ, ४. तेजस्कान्त। (११) **पूर्ण के**—१ रूप, २ रूपांश, ३ रूपकान्त, ४ रूपप्रभ। (१२) **विशिष्ट के**—१. रूप, २ रूपाश, ३. रूपप्रभ, ४. रूपकान्त। (१३) **जलकान्त के**—१ जल, २ जलरत, ३. जलप्रभ, ४ जलकान्त। (१४) **जलप्रभ के**—१ जल, २ जलरत, ३ जलकान्त, ४ जलप्रभ। (१५) **अमितगति के**—१ त्वरितगति, २ क्षिप्रगति, ३ सिहगति, ४ सिहविक्रमगति। (१६) **अमितवाहन के**—१ त्वरितगति, २. क्षिप्रगति, ३ सिहविक्रमगति, ४ सिहगति। (१७) **वेलम्ब के**—१ काल, २. महाकाल, ३ अजन, ४ रिष्ट। (१८) **प्रभंजन के**—१ काल, २ महाकाल, ३ रिष्ट, ४ अंजन। (१९) **घोष के**—१ आवर्त, २ व्यावर्त, ३ नन्दिकावर्त, ४ महानन्दिकावर्त। (२०) **महाघोष के**—१ आवर्त, २ व्यावर्त, ३ महानन्दिकावर्त, ४ नन्दिकावर्त।

इसी प्रकार सौधर्म देवलोक (१) **शक्रेन्द्र के**—१ सोम, २ यम, ३ वरुण, ४ वैश्रमण। (२) **ईशानेन्द्र के**—१ सोम, २ यम, ३ वैश्रमण, ४ वरुण। तथा आगे अच्युतेन्द्र तक चार-चार लोकपाल है—१ सोम, २ यम, ३ वरुण, ४ वैश्रमण।

**122.** In the same way Balı and other *Asur Kumar* gods have four *lok-paals* each ın four cardınal directıons—(2) Balı—1 Soma, 2 Yama, 3 Vaıshraman, and 4 Varun (3) Dharan--1 Kaal-paal, 2 Koal-paal, 3. Sale-paal, and 4. *Shankh-paal*. (4) Bhutanand—1 *Kaal-paal*, 2. *Koal-paal*, 3. *Shankh-paal*, and 4 *Sale-paal* (5) Venudev—1. *Chıtra*, 2. *Vichitra*, 3 *Chitrapaksha*, and 4 *Vichıtrapaksha* (6) Venudali—1 *Chıtra*, 2 *Vichıtra*, 3 *Vichıtrapaksha*, and 4. *Chitrapaksha* (7) Harikant—1. *Prabh*, 2 *Suprabh*, 3 *Prabh-kaant*, and 4. *Suprabh-kaant*. (8) Harıssaha—1 *Prabh*, 2. *Suprabh*, 3. *Suprabh-kaant*, and 4. *Prabh-kaant* (9) Agnıshikh—1 *Tej*, 2. *Tej-shikh*, 3 *Tejaskaant*, and 4. *Tej-prabh* (10) Agnimanav—1 *Tej*, 2 *Tej-shıkh*, 3 *Tej-prabh*, and

4. *Tejaskaant*. (11) Purna—1. *Rupa*, 2. *Rupansh*, 3. *Rupakaant*, and 4. *Rupaprabh*. (12) Vishisht—1. *Rupa*, 2. *Rupansh*, 3. *Rupaprabh*, and 4. *Rupakaant*. (13) Jalakaant—1. *Jala*, 2. *Jalarat*, 3. *Jalaprabh*, and 4. *Jalakaant*. (14) Jasaprabh—1. *Jala*, 2. *Jalarat*, 3. *Jalakaant*, and 4. *Jalaprabh*. (15) Amit-gati—1 *Tvaritgati*, 2. *Kshipragati*, 3 *Simhagati*, and 4. *Simhavikram-gati*. (16) Amit-vahan—1. *Tvaritgati*, 2. *Kshipragati*, 3. *Simhavikram-gati*, and 4 *Simhagati*. (17) Velamb—1 *Kaal*, 2 *Mahakaal*, 3 *Anjan*, and 4. *Risht*. (18) Prabhanjan—1 *Kaal*, 2. *Mahakaal*, 3. *Risht*, and 4. *Anjan*. (19) Ghosh—1. *Avart*, 2. *Vyavart*, 3 *Nandikavart*, and 4. *Mahanandikavart* (20) Mahaghosh—1. *Avart*, 2 *Vyavart*, 3 *Mahanandikavart*, and 4 *Nandikavart*.

In the same way in *Saudharm Devlok* (1) Shakrendra—1. *Soma*, 2 *Yama*, 3. *Varun*, and 4 *Vaishraman* (2) Ishanendra—1. *Soma*, 2. *Yama*, 3 *Vaishraman*, and 4 *Varun*. Beyond that there are four *lok-paals* each for kings of gods up to Achyutendra—1 *Soma*, 2 *Yama*, 3. *Varun*, and 4 *Vaishraman*

विवेचन–लोकपालदेव इन्द्र के सीमारक्षक तथा विशाल साम्राज्य की रक्षा करने वाला होता है। व्यन्तर एव ज्योतिष्क देवों के लोकपाल नही होते। भवनपति और वैमानिक देवो के लोकपाल होते है। दस भवनपतियो के दक्षिणार्द्ध व उत्तरार्द्ध के १० + १० = २० इन्द्र हैं। प्रत्येक के ४ + ४ कुल ८० लोकपाल है। सोम पूर्व दिशा का, यम दक्षिण का, वरुण पश्चिम का तथा वैश्रवण उत्तर दिशा का स्वामी या सरक्षक है।

अन्तरिक्ष सम्बन्धी उपद्रवो का सम्बन्ध सोम के साथ है। मनुष्यलोक मे रोग, युद्ध, महामारी आदि का सम्बन्ध यम के साथ है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, समुद्री तूफान, बाढ आदि प्राकृतिक आपदाओ का सम्बन्ध वरुण के साथ है, इसीलिए यह जलदेव कहा जाता है। तथा सुकाल, दुष्काल, स्वर्ण-रत्न आदि की खाने, निधान आदि बातो का सम्बन्ध वैश्रवण लोकपाल के साथ है, इसे धन का देवता कुबेर भी कहते हैं। चारों दिशाओ के लोकपाल अपने-अपने इन्द्रो को मनुष्यलोक की गतिविधियो की सूचना देते रहते हैं। *(लोकपाल सम्बन्धी विस्तृत वर्णन भगवतीसूत्र, उद्देशक ७ में तथा हिन्दी टीका, पृष्ठ ७२० पर देखे)*

**Elaboration**—A *lok-paal* god is the border guard who is responsible for Security of the boundary and of vast empire of *Indra* (king of gods). The *Vyantar* (interstitial) and *Jyotishk* (stellar) gods do not have *lok-paals*. *Bhavanpati* (abode dwelling) and *Vaimanik* (celestial vehicle dwelling) gods have *lok-paals* Ten *Bhavanpatis* have twenty *Indras*, one each for their southern and northern halves. Thus there are eighty *lok-paals*, four for each. *Soma* is the guardian of the east, *Yama* that of the south, *Varun* of the west and *Vaishraman* of the north

The disturbances in the space are related to *Soma* *Yama* is responsible for diseases, wars, epidemics etc. Heavy rains, no rains, sea-storms, floods and other natural calamities are related to *Varun*, that is the reason he is called the water-god Good crops, famine, mines of gold and gems, wealth etc. are related to *Vaishraman* who is also called *Kuber*, the god of wealth. The *lok-paals* of the four cardinal directions keep their *Indras* informed of the activities in the land of humans. *(for more details about lok-paals refer to Bhagavati Sutra, chapter 7 and Hindi Tika, p 720)*

**१२३. चउव्विहा वाउकुमारा पण्णत्ता, तं जहा—काले, महाकाले, वेलंबे, पभंजणे।**

१२३. वायुकुमार चार प्रकार के है—(१) काल, (२) महाकाल, (३) वेलम्ब, (४) प्रभजन। (ये चार पाताल कलशो के स्वामी है)।

**123.** *Vayukumars* (a kind of gods) are of four kinds—(1) *Kaal*, (2) *Mahakaal*, (3) *Velamb*, and (4) *Prabhanjan* [These are overlords of four *Patal Kalashas* (four abodes in the *Lavan Samudra* in four directions)].

**१२४. चउव्विहा देवा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया, विमाणवासी।**

१२४. देव चार प्रकार के है—(१) भवनवासी, (२) वाणव्यन्तर, (३) ज्योतिष्क, (४) विमानवासी।

**124.** *Devas* are of four kinds—(1) *Bhavan-vasi* (abode dwelling), (2) *Vanavyantar* (interstitial), (3) *Jyotishk* (stellar) and (4) *Vimaan-vasi* (celestial vehicle dwelling) gods

**विवेचन**—(१) **भवनवासी**—अधोलोकवर्ती भवनो मे रहने वाले भवनपति, (२) **वाणयन्तर**—तिर्यक्लोक स्थित वनो, वृक्षो, गिरिकन्दराओ मे रहने वाले भूत, पिशाच आदि, (३) **ज्योतिष्क**—अन्तरिक्ष मे घूमने वाले सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र और तारा, (४) **विमानवासी**—ऊर्ध्वलोकवर्ती सौधर्मकल्प आदि बारह कल्पो मे रहने वाले।

**Elaboration**—(1) *Bhavan-vasi* (abode dwelling)—live in abodes in lower world (2) *Vanavyantar* (interstitial)—the *Bhoots*, *Pishachas* and other lower gods living in forests, trees, mountains, caves etc (3) *Jyotishk* (stellar)—orbiting in the sky, such as suns, moons, planets, constellations, stars etc (4) *Vimaan-vasi* (celestial vehicle dwelling)—living in the twelve upper worlds (*kalps* or heavens) including *Saudharma Kalp*

### प्रमाण-पद PRAMAN-PAD (SEGMENT OF STANDARD OF MEASUREMENT)

**१२५. चउव्विहे पमाणे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वप्पमाणे, खेत्तप्पमाणे, कालप्पमाणे, भावप्पमाणे।**

१२५. प्रमाण चार प्रकार का है-(१) द्रव्य-प्रमाण-द्रव्य का माप बताने वाली, संख्या आदि। (२) क्षेत्र-प्रमाण-क्षेत्र का माप करने वाले दण्ड, धनुष, योजन आदि। (३) काल-प्रमाण-काल का माप करने वाले आवलिका, मुहूर्त्त आदि। (४) भाव-प्रमाण-प्रत्यक्षादि प्रमाण। *(प्रमाण का विस्तृत वर्णन देखें अनुयोगद्वार, भाग २, पृष्ठ ५४-९२)*

**125.** *Pramana* (standard of measurement) is of four kinds—(1) *Dravya pramana* (standard of physical measurement)—units, numbers and other parameters of physical measurement (2) *Kshetra pramana* (standard of measurement of area)—units, numbers and other parameters of physical measurement, such as *Dand, Dhanush, Yojan* etc. (3) *Kaal pramana* (standard of measurement of time)—units, numbers and other parameters of physical measurement, such as *Avalika, Muhurt* etc (4) *Bhaava pramana* (standard of validation of state)—such as validation by direct perception etc. *(for detailed discussion on pramana refer to Illustrated Anuyogadvar Sutra, Part II, pp. 54-92)*

### *महत्तरि-पद* MAHATTARI-PAD (SEGMENT OF PRINCIPAL GODDESSES)

**१२६. चत्तारि दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा-रूया, रूयंसा, सुरूवा, रूयावती।**

१२६. दिक्कुमारियो की चार महत्तरिकाएँ है-(१) रूपा, (२) रूपांशा, (३) सुरूपा, (४) रूपवती।

**126.** There are four *Mahattarikas* (principal goddesses) of *Dikkumaris* (directional goddesses)—(1) *Rupa*, (2) *Rupamsha*, (3) *Surupa* and (4) *Rupavati*

**१२७. चत्तारि विज्जुकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा-चित्ता, चित्तकणगा, सतेरा, सोयामणई।**

१२७. विद्युत्कुमारियो की चार महत्तरिकाएँ है-(१) चित्रा, (२) चित्रकनका, (३) सतेरा, (४) सौदामिनी।

**127.** There are four *Mahattarikas* (principal goddesses) of *Vidyutkumaris* (goddesses of lightening)—(1) *Chitra*, (2) *Chitrakanaka*, (3) *Satera*, and (4) *Saudamini*.

### *देवस्थिति-पद* DEV-STHITI-PAD (SEGMENT OF LIFE SPAN OF GODS)

**१२८. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो मज्झिमपरिसाए देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता।**

**१२९. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो मज्झिमपरिसाए देवीणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता।**

१२८. देवेन्द्र देवराज शक्रेन्द्र की मध्यम परिषद् के देवो की स्थिति चार पल्योपम की है।

१२९. देवेन्द्र देवराज इशानेन्द्र की मध्यम परिषद् की देवियों की स्थिति चार पल्योपम की है।

**128.** The life span of the gods of the middle assembly of *Devendra Shakrendra*, the overlord of gods, is four *Palyopam* (a metaphoric unit of time)

**129.** The life span of the goddesses of the middle assembly of *Devendra Ishanendra*, the overlord of gods, is four *Palyopam* (a metaphoric unit of time)

**विवेचन**—इन्द्र की मध्यम परिषद् मे किसी भी आवश्यक विशिष्ट कार्य पर विचार-विमर्श किया जाता है। इसमें देवों के समान देवियाँ भी सादर सम्मिलित होती है।

**Elaboration**—In the middle assembly of *Indra* important necessary matters are discussed This assembly is attended by gods and goddesses alike

### *संसार-पद* SAMSAR-PAD (SEGMENT OF THE WORLD)

**१३०. चउव्विहे संसारे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वसंसारे, खेत्तसंसारे, कालसंसारे, भावसंसारे।**

१३०. ससार चार प्रकार का है-(१) द्रव्य-संसार-जीव और पुद्गल। (२) क्षेत्र-संसार-जीवो और पुद्गलो के परिभ्रमण क्षेत्र। (३) काल-संसार-उत्सर्पिणी आदि काल मे होने वाला जीव-पुद्गल का परिभ्रमण। (४) भाव-संसार-औदयिक आदि भावो मे जीवो का और वर्ण, रसादि मे पुद्गलो का परिवर्तन या कर्म अथवा कर्मों के कारण राग और द्वेष।

**130.** *Samsar* (the world) is of four kinds—(1) *dravya-samsar* (world of entities)—soul and matter, (2) *kshetra-samsar* (world of area)—the area of movement of soul and matter, (3) *kaal-samsar* (world of time)—the movement of soul and matter with reference to time, such as *Utsarpini*), and (4) *bhaava-samsar* (world of state)—transformation of soul in gross physical and other kinds of bodies and that of matter in appearance, taste and other attributes, also *karmas* and their effects, such as attachment and aversion

### *दृष्टिवाद-पद* DRISHTIVADA-PAD (SEGMENT OF DRISHTIVADA)

**१३१. चउव्विहे दिट्ठिवाए पण्णत्ते, तं जहा—परिकम्मं, सुत्ताइं, पुव्वगए, अणुजोगे।**

१३१. दृष्टिवाद (द्वादशागी श्रुत का बारहवाँ अग) चार प्रकार का है-(१) **परिकर्म**-इसे पढ़ने से सूत्र आदि के ग्रहण की योग्यता प्राप्त होती है। (२) सूत्र-इसे पढने से द्रव्य-पर्याय-विषयक ज्ञान प्राप्त

होता है। (३) पूर्वगत–इसके अन्तर्गत चौदह पूर्वों का समावेश है। (४) अनुयोग–इसमें तीर्थंकरादि शलाका पुरुषों के चरित्र वर्णित हैं।

**131.** *Drishtıvada* (the twelfth *Anga* of the *Dvadashangi*) is of four kinds (parts)—(1) *Parıkarma*—readıng thıs gıves the ability to understand the *Sutra* (text). (2) *Sutra*—reading thıs imparts the knowledge of *dravya-paryaya* (entities and modes) (3) *Purvagat*—this includes all the fourteen *Purvas* (the subtle canon). (4) *Anuyoga*—This contaıns the bıographies of *Tırthankars* and other *Shalaka Purush* (epoch makers).

**विवेचन**–शास्त्रों में अन्यत्र दृष्टिवाद के पाँच भेद बताये गये है-(१) परिकर्म, (२) सूत्र, (३) प्रथमानुयोग, (४) पूर्वगत, और (५) चूलिका। यहाँ चतुर्थ स्थान होने के कारण चार भेद ही बताये है। परिकर्म मे गणित सम्बन्धी करण-सूत्रो का वर्णन है तथा इसके पाँच भेद है-(१) चन्द्रप्रज्ञप्ति, (२) सूर्यप्रज्ञप्ति, (३) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, (४) द्वीप-सागरप्रज्ञप्ति, और (५) व्याख्याप्रज्ञप्ति।

**Elaboration**—Other scrıptures mention of five parts of *Drıshtıvada*—(1) *Parıkarma*, (2) *Sutra*, (3) *Prathamanuyoga*, (4) *Purvagat*, and (5) *Chulıka* As here place number four has been narrated, only four parts have been mentıoned here. The *Parıkarma* part descrıbes mathematıcal formulae and related detaıls It has five sectıons—(1) *Chandra-prajnaptı*, (2) *Surya-prajnaptı*, (3) *Jambudveep-prajnaptı*, (4) *Dveep-sagar-prajnaptı*, and (5) *Vyakhya-prajnaptı*

### *प्रायश्चित्त–पद* PRAYASHCHIT-PAD (SEGMENT OF ATONEMENT)

**१३२. चउव्विहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा–णाणपायच्छित्ते, दंसणपायच्छित्ते, चरित्तपायच्छित्ते, वियत्तकिच्चपायच्छित्ते।**

१३२. प्रायश्चित्त चार प्रकार का है-(१) ज्ञान-प्रायश्चित्त, (२) दर्शन-प्रायश्चित्त, (३) चारित्र-प्रायश्चित्त, (४) व्यक्तकृत्य-प्रायश्चित्त।

**132.** *Prayashchıt* (atonement) ıs of four kınds—(1) *jnana-prayashchit*, (2) *darshan-prayashchıt*, (3) *chaarıtra-prayashchıt*, and (4) *vyakt-krıtya-prayashchıt*.

**विवेचन**–सस्कृत टीका मे इनका दो प्रकार से निरूपण मिलता है–

(१) **प्रथम प्रकार**–ज्ञान के द्वारा चित्त की शुद्धि और पापों का विनाश होता है, अतः ज्ञान ही प्रायश्चित्त है! इसी प्रकार दर्शन और चारित्र के द्वारा चित्त की शुद्धि और पापों का विनाश होता है, अतः वे ही प्रायश्चित्त हैं। **व्यक्त-कृत्य प्रायश्चित्त** अर्थात् गीतार्थ साधु जागरूक रहकर, यतनापूर्वक जो कार्य करता है, वे पाप-विनाशक होते है। अत. वह स्वयं-प्रायश्चित्त है।

(२) द्वितीय प्रकार–ज्ञान की आराधना करने मे जो अतिचार लगते है, उनकी शुद्धि करना ज्ञान–प्रायश्चित्त है। इसी प्रकार दर्शन और चारित्र की आराधना करते समय लगने वाले अतिचारों की शुद्धि करना दर्शन–प्रायश्चित्त और चारित्र–प्रायश्चित्त है। किसी अपराध–विशेष का प्रायश्चित्त यदि तत्कालीन प्रायश्चित्त ग्रन्थो में नही भी कहा गया हो तो गीतार्थ साधु मध्यस्थ भाव से जो कुछ भी प्रायश्चित्त देता है, वह 'वियत्तकिच्च' (विदत्तकृत्य) प्रायश्चित्त कहलाता है।

**Elaboration**—In the *Sanskrit* Tika there are two interpretations of these—

(1) First interpretation—As *jnana* (knowledge) is means of purity of mind and destruction of *karmas* it is atonement in itself In the same way *darshan* (perception/faith) and *chaaritra* (conduct) too are means of purity of mind and destruction of *karmas* and thus they are also atonement *Vyakt-kritya-prayashchit*—the acts carefully and with alertness performed by a sagacious ascetic (*vyakt-kritya*) are means of negating sins, thus they are atonement in themselves.

(2) Second interpretation—To atone for faults or transgressions committed during pursuit of knowledge is *jnana-prayashchit* In the same way to atone for faults or transgressions committed during pursuit of right perception/faith and right conduct is *darshan-prayashchit* and *chaaritra-prayashchit* respectively When there is no prescribed atonement mentioned in available scriptures on the subject, a sagacious ascetic prescribes an atonement with equanimity Such atonement is called *vidatt-kritya-prayashchit* (*viyatta* of *Prakrit* transcribed as *vidatt* and not *vyakt*)

**१३३. चउव्विहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा–पडिसेवणापायच्छित्ते, संजोयणापायच्छित्ते, आरोवणापायच्छित्ते, पलिउंचणापायच्छित्ते।**

१३३. प्रायश्चित्त चार प्रकार का है–(१) प्रतिसेवना–प्रायश्चित्त, (२) सयोजना–प्रायश्चित्त, (३) आरोपणा–प्रायश्चित्त, (४) परिकुंचना–प्रायश्चित्त।

**133.** *Prayashchit* (atonement) is of four kinds—(1) *pratisevana-prayashchit*, (2) *samyojana-prayashchit*, (3) *aaropana-prayashchit* and (4) *parikunchana-prayashchit*.

**विवेचन**–(१) **प्रतिसेवना–प्रायश्चित्त**–दोष–सेवन करने पर दिया जाता है। (२) **संयोजना–प्रायश्चित्त**–एक जातीय एक समान दोषो के सेवन पर दिया जाता है। (३) **आरोपणा–प्रायश्चित्त**–एक दोष का प्रायश्चित्त चल रहा हो, उस बीच में ही उस दोष का पुन·–पुन· सेवन करने पर यह प्रायश्चित्त

दिया जाता है। (४) परिकुंचना-प्रायश्चित्त-एक दोष को छिपाने के लिए पुनः असत्य आदि अन्य दोषों का सेवन करने पर दिया जाने वाला।

**Elaboration**—(1) *Pratisevana-prayashchit*—this atonement is prescribed on committing a fault (2) *Samyojana-prayashchit*—this atonement is prescribed for same type of faults (3) *Aaropana-prayashchit*—this atonement is prescribed for committing the same fault repeatedly while atonement for the first instance is in progress. (4) *Parikunchana-prayashchit*—this atonement is prescribed for later faults committed for concealing an earlier fault.

### *काल-पद* KAAL-PAD (SEGMENT OF TIME)

**१३४. चउव्विहे काले पण्णत्ते, तं जहा-पमाणकाले, अहाउयनिव्वत्तिकाले, मरणकाले, अद्धाकाले।**

१३४. काल चार प्रकार का है-(१) **प्रमाणकाल**-समय, आवलिका, दिवस-रात्रि आदि, (२) **यथायुनिवृत्तिकाल**-आयुष्य के अनुसार नरक आदि गतियो मे रहने का काल, (३) **मरणकाल**-मृत्यु का समय, (४) **अद्धाकाल**-सूर्य की गति से ज्ञात होने वाला दिन-रात का काल। *(काल का विशेष वर्णन अनुयोगद्वार, भाग १, पृष्ठ २९ पर देखे)*

**134.** *Kaal* (time) is of four kinds—(1) *praman-kaal*—measure of time, such as *Samaya, Avalika,* day and night etc , (2) *yathayunivritti-kaal*—the period of stay in a specific genus (hell etc.) according to the predetermined life span, (3) *maran-kaal*—time of death, and (4) *addha-kaal*—the measure of time based on the movement of the sun (day and night). *(for more details refer to Illustrated Anuyogadvara Sutra, Part I, p. 29)*

### *पुद्गल-परिणाम-पद* PUDGAL-PARINAM-PAD (SEGMENT OF TRANSFORMATION OF MATTER)

**१३५. चउव्विहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा-वण्णपरिणामे, गंधपरिणामे, रसपरिणामे, फासपरिणामे।**

१३५. पुद्गल का परिणाम (परिणमन) चार प्रकार का होता है-(१) **वर्ण-परिणाम**-श्वेत, रक्त आदि रूपो का परिणमन, (२) **गन्ध-परिणाम**-सुगन्ध-दुर्गन्ध रूप गन्ध का, (३) **रस-परिणाम**-आम्ल, मधुर आदि रसों का, तथा (४) **स्पर्श-परिणाम**-स्निग्ध, रूक्ष आदि स्पर्शों का परिणमन।

**135.** *Pudgal-parinam* (transformation of matter) is of four kinds—(1) *varna-parinam* (transformation of appearance or colour)—change of appearance into white, red and other colours, (2) *gandh-parinam*

(transformation of smell)—change of smell, such as stink and fragrance, (3) *rasa-parinam* (transformation of taste)—change of taste into sour, sweet etc., and (4) *sparsh-parinam* (transformation of touch)—change of touch into smooth, rough etc

**चातुर्याम-पद CHATURYAAM-PAD**
**(SEGMENT OF FOUR DIMENSIONAL RELIGION)**

**१३६. भरहेरवएसु णं वासेसु पुरिम-पच्छिम-वज्जा मज्झिमगा बावीसं अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवेंति, तं जहा-सव्वाओ पाणातिवायाओ वेरमणं एवं सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं।**

१३६. भरत और ऐरवत क्षेत्र मे प्रथम और अन्तिम तीर्थंकर को छोडकर मध्यवर्ती बाईस अर्हन्त भगवन्त चातुर्याम धर्म का उपदेश देते हैं-(१) **सर्व प्राणातिपात** से विरमण, (२) **सर्व मृषावाद**-से विरमण, (३) **सर्व अदत्तादान**-(चौर्य-कर्म) से विरमण, (४) **सर्व बाह्य**- (वस्तुओ के) आदान से विरमण।

**136.** In *Bharat* and *Airavat* areas, except for the first and the last *Tirthankars*, all the remaining twenty two *Arhant Bhagavants* (*Tirthankars*) preach *chaturyaam dharma* (four dimensional religion—(1) complete abstention from *pranatipat* (destroying life), (2) complete abstention from *mrishavaad* (uttering lie or falsehood), (3) complete abstention from *adattadaan* (stealing), and (4) complete abstention from *bahya-adaan* (possessing any outside thing)

**१३७. सव्वेसु णं महाविदेहेसु अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवेंति, तं जहा-सव्वाओ पाणातिवायाओ वेरमणं, जाव [ सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं ] सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं।**

१३७. सभी महाविदेह क्षेत्रो मे अर्हन्त भगवन्त चातुर्याम धर्म का उपदेश देते है-(१) **सर्व प्राणातिपात** से विरमण, यावत् [ (२) **सर्व मृषावाद** से विरमण, (३) **सर्व अदत्तादान** से विरमण।] (४) **सर्व बाह्यादान** से विरमण।

**137.** In all *Mahavideh* areas all the *Arhant Bhagavants* (*Tirthankars*) preach *chaturyaam dharma* (four dimensional religion—(1) complete abstention from *pranatipat* (destroying life), (2) complete abstention from *mrishavaad* (uttering lie or falsehood), (3) complete abstention from *adattadaan* (taking what is not given or stealing), and (4) complete abstention from *bahya-adaan* (possessing any outside thing)

### दुर्गति-सुगति-पद DURGATI-SUGATI-PAD
### (SEGMENT OF GOOD AND BAD REALMS OF BIRTH)

**१३८. चत्तारि दुग्गतीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–णेरइयदुग्गती, तिरिक्खजोणियदुग्गती, मणुस्सदुग्गती, देवदुग्गती। १३९. चत्तारि सोग्गईओ पण्णत्ताओ, तं जहा–सिद्धसोग्गती, देवसोग्गती, मणुयसोग्गती, सुकुलपच्चायाती।**

१३८. दुर्गतियाँ चार प्रकार की हैं–(१) नैरयिक-दुर्गति, (२) तिर्यग्योनिक-दुर्गति, (३) मनुष्य-दुर्गति–(रुग्णता, दरिद्रता आदि की अपेक्षा), (४) देव-दुर्गति–(किल्विषिक परमाधार्मिक देव की अपेक्षा)। १३९. सुगतियाँ चार प्रकार की हैं–(१) सिद्ध-सुगति, (२) देव-सुगति, (३) मनुष्य-सुगति, (४) सुकुल-सुगति (उत्तम कुल में जन्म की अपेक्षा)।

**138.** There are four *durgatis* (bad realms of birth)—(1) *nairayik-durgati* (bad realm of hell), (2) *tiryagyonik-durgati* (bad realm of animals), (3) *manushya-durgati* (bad realm of humans, in context of poverty and sickness), and (4) *dev-durgati* (bad realm of gods, in context of *kilvishik* and *paramadharmik* gods or the attending and serving gods) **139.** There are four *sugatis* (good realms of birth)—(1) *Siddha-sugati* (good realm of the liberated), (2) *dev-sugati* (good realm of divine beings), (3) *manushya-sugati* (good realm of humans, in context of happy people), and (4) *sukul-sugati* (good realm in terms of birth in noble family).

**१४०. चत्तारि दुग्गता पण्णत्ता, तं जहा–णेरइयदुग्गता, तिरिक्खजोणियदुग्गता, मणुयदुग्गता, देवदुग्गता। १४१. चत्तारि सुग्गता पण्णत्ता, तं जहा–सिद्धसुग्गता, जाव [ देवसुग्गता, मणुयसुग्गता ], सुकुलपच्चायाया।**

१४०. दुर्गत (दुर्गति मे उत्पन्न होने वाले जीव) चार प्रकार के है–(१) नैरयिक-दुर्गत, (२) तिर्यग्योनिक-दुर्गत, (३) मनुष्य-दुर्गत, (४) देव-दुर्गत। १४१. सुगत (सुगति मे उत्पन्न होने वाले जीव) चार प्रकार के है–(१) सिद्धसुगत, (२) देवसुगत, (३) मनुष्यसुगत, और (४) उत्तम कुल मे उत्पन्न जीव।

**140.** There are four *durgats* (born in bad realms of birth)—(1) *narak durgat* (born in hell), (2) *tiryagyonik durgat* (born in bad realm of animals), (3) *manuj durgat* (born in realm of bad humans), and (4) *dev-durgat* (born in realm of bad gods). **141.** There are four *sugats* (born in good realms of birth)—(1) *Siddha sugat* (born in realm of the liberated), (2) *dev sugat* (born in good realm of divine beings), (3) *manuj sugat* (born in good realm of humans), and (4) *sukul-sugati* (born in noble family).

**कर्मांश-पद KARMANSH-PAD (SEGMENT OF FRACTION OF KARMAS)**

**१४२. पढमसमयजिणस्स णं चत्तारि कम्मंसा खीणा भवंति, तं जहा—णाणावरणिज्जं, दंसणावरणिज्जं, मोहणिज्जं, अंतराइयं। १४३. उप्पण्णणाणदंसणधरे णं अरहा जिणे केवली चत्तारि कम्मंसे वेदेति, तं जहा—वेदणिज्जं, आउयं, णामं, गोतं। १४४. पढमसमयसिद्धस्स णं चत्तारि कम्मंसा जुगवं खिज्जंति, तं जहा—वेयणिज्जं, आउयं, णामं, गोतं।**

१४२. प्रथम समयवर्ती केवली जिन के चार कर्म क्षीण हो चुके होते है-(१) ज्ञानावरणीय, (२) दर्शनावरणीय, (३) मोहनीय, और (४) अन्तराय कर्म। १४३. केवलज्ञान-दर्शन के धारक केवली जिन अर्हन्त चार सत्कर्मों का वेदन करते है-(१) वेदनीय कर्म, (२) आयुष्य कर्म, (३) नाम कर्म, और (४) गोत्र कर्म। १४४. प्रथम समयवर्ती सिद्धो के चार कर्म एक साथ क्षीण होते है-(१) वेदनीय कर्म, (२) आयुष्य कर्म, (३) नाम कर्म, और (४) गोत्र कर्म।

**142.** Four *karmas* of a *Pratham Samayavarti Kevali Jina* (omniscient *Jina* in the first moment of omniscience) are already extinct (in other words omniscience is attained the moment these four *karmas* are extinct)—(1) *Jnanavaraniya* (knowledge obscuring *karma*), (2) *Darshanavaraniya* (perception obscuring *karma*), (3) *Mohaniya* (deluding *karma*), and (4) *Antaraya* (power hindering *karma*). **143.** *Kevali Jina Arhant* (omniscient *Jina*) possessing *Keval-Jnana* and *Darshan* experiences four kinds of noble *karmas*—(1) *Vedaniya karma* (*karma* responsible for experience of pain and pleasure), (2) *Ayushya karma* (life span determining *karma*), (3) *Naam Karma* (*karma* that determines the destinies and body types), and (4) *Gotra karma* (status determining *karma*) **144.** Four *karmas* of a *Pratham Samayavarti Siddha* (perfected and liberated soul in the first moment of liberation) get destroyed at once (in other words liberation is attained the moment these four *karmas* get destroyed)—(1) *Vedaniya karma*, (2) *Ayushya karma*, (3) *Naam Karma*, and (4) *Gotra karma*

**हास्योत्पत्ति-पद HASYOTPATTI-PAD (SEGMENT OF ORIGIN OF LAUGHTER)**

**१४५. चउहिं ठाणेहिं हासुप्पत्ती सिया, तं जहा—पासेत्ता, भासेत्ता, सुणेत्ता, संभरेत्ता।**

१४५. चार कारणो से हास्य की उत्पत्ति होती है-(१) देखकर-विदूषक आदि की चेष्टाओ को देखकर, (२) बोलकर-किसी के बोलने की नकल करने से, (३) सुनकर-हास्योत्पादक वचन सुनकर, (४) स्मरण कर-हास्यजनक देखी या सुनी बातो का स्मरण।

**145.** There are four reasons for the origin of laughter—(1) by seeing—by seeing gestures of someone, such as a jester, (2) by speaking—by

imitating someone's style of speech, (3) by hearing—by hearing funny statements including jokes, and (4) by recalling—by recalling funny things seen or heard in the past.

### अंतर-पद ANTAR-PAD (SEGMENT OF DIFFERENCE)

**१४६. चउव्विहे अंतरे पण्णत्ते, तं जहा—कट्ठंतरे, पम्हंतरे, लोहंतरे, पत्थरंतरे।**

**एवामेव इत्थीए वा पुरिसस्स वा चउव्विहे अंतरे पण्णत्ते, तं जहा—कट्ठंतरसमाणे, पम्हंतरसमाणे, लोहंतरसमाणे, पत्थरंतरसमाणे।**

१४६. अन्तर (भिन्नता) चार प्रकार के होते है-(१) **काष्ठान्तर**-एक काष्ठ से दूसरे काष्ठ का अन्तर, जैसे-चन्दन और बबूल मे अन्तर है, (२) **पक्ष्मान्तर**-धागे से धागे का अन्तर, विशिष्ट कोमलता आदि की अपेक्षा से, (३) **लोहान्तर**-छेदन-शक्ति की उपयोगिता से, (४) **प्रस्तरान्तर**-सामान्य पाषण से हीरा-पन्ना आदि की अपेक्षा से।

इसी प्रकार स्त्री से स्त्री का और पुरुष से पुरुष का अन्तर भी चार प्रकार का होता है-(१) **काष्ठान्तर के समान**-विशिष्ट पद आदि की अपेक्षा से, (२) **पक्ष्मान्तर के समान**-वचन-मृदुता आदि की अपेक्षा से, (३) **लोहान्तर के समान**-स्नेह का छेदन करने आदि की अपेक्षा से, (४) **प्रस्तरान्तर के समान**-विशिष्ट मनोरथ पूर्ण करने की क्षमता व गुणो आदि की अपेक्षा से।

**146.** *Antar* (qualitative difference) is of four kinds—(1) *Kaashthantar* (wood-like difference)—difference between two kinds of wood, such as *chandan* (sandalwood) and *babool* (acacia wood). (2) *Pakshmantar* (fibre-like difference)—difference between texture of two kinds of fibres. (3) *Lohantar* (iron-like difference)—difference in hardness and use of two kinds of iron or metal (4) *Prastarantar* (stone-like difference)—difference in qualities, and worth of two kinds of stones, such as gem stone and ordinary stone

In the same way the qualitative difference between one woman and another as well as one man and another is of four kinds—(1) like *kaashthantar*—in context of special status and other such qualities, (2) like *pakshmantar*—in context of sweetness of speech and other such qualities, (3) like *lohantar*—in context of terminating amicable relations and other such qualities, and (4) like *Prastarantar*—in context of ability to accomplish lofty desires and other such qualities.

### भृतक-पद BHRITAK-PAD (SEGMENT OF SERVANT)

**१४७. चत्तारि भयगा पण्णत्ता, तं जहा—दिवसभयए, जत्ताभयए, उच्चत्तभयए, कब्बालभयए।**

१४७. भृतक (सेवक) चार प्रकार के होते हैं–(१) दिवस–भृतक–प्रतिदिन का नियत पारिश्रमिक लेने वाला। (२) यात्रा–भृतक–यात्रा काल में सेवा–सहायता करने वाला। (३) उच्चत्व–भृतक–नियत कार्य का ठेका लेकर या ठेके पर कार्य करने वाला, (४) कब्बाड–भृतक–नियत भूमि आदि खोदकर पारिश्रमिक लेने वाला।

**147.** *Bhritak* (servant) is of four kinds—(1) *divas-bhritak*—daily wage labour, (2) *yatra-bhritak*—servant employed during traveling, (3) *uchchatva-bhritak*—contract labour, and (4) *kabbad-bhritak*—servant employed for a specific work like digging.

### *प्रतिसेवि–पद* PRATISEVI-PAD (SEGMENT OF ERRANT)

**१४८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–संपागडपडिसेवी णामेगे णो पच्छण्णपडिसेवी, पच्छण्णपडिसेवी णामेगे णो संपागडपडिसेवी, एगे संपागडपडिसेवी वि पच्छण्णपडिसेवी वि, एगे णो संपागडपडिसेवी णो पच्छण्णपडिसेवी।**

१४८. दोष–सेवन करने वाले चार प्रकार के होते है–(१) कोई व्यक्ति प्रकट रूप से दोष–सेवन करता है, किन्तु प्रच्छन्न, गुप्त रूप से नही करता–(जैसे–स्वच्छन्दाचारी या निर्लज्ज पुरुष)। (२) कोई छुपकर दोष–सेवन करता है किन्तु प्रकट मे नही करता। (३) कोई प्रकट मे दोष–सेवन करता है और छुपकर भी करता है। (जैसे–दुर्व्यसनी या हत्यारा)। (४) कोई न प्रकट मे दोष–सेवन करता है न ही छुपकर। (जैसे–विवेकी साधु)।

**148.** *Pratisevi* (blunderer or errant) is of four kinds—(1) one who errs openly but not furtively (such as a shameless rogue), (2) one who errs furtively but not openly, (3) one who errs openly as well as furtively (such as debauch or killer), and (4) one who neither errs openly nor furtively (such as a sage)

### *अग्रमहिषी–पद* AGRAMAHISHIS-PAD (SEGMENT OF CHIEF QUEENS)

**१४९. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–कणगा, कणगलता, चित्तगुत्ता, वसुंधरा। १५०. एवं जमस्स वरुणस्स वेसमणस्स।**

१४९. असुरकुमारराज असुरेन्द्र चमर के लोकपाल सोम (पूर्व) महाराज की चार अग्रमहिषियाँ है–(१) कनका, (२) कलकलता, (३) चित्रगुप्ता, (४) वसुन्धरा। १५०. इसी प्रकार यम (दक्षिण), वरुण (पश्चिम) और वैश्रवण (उत्तर), लोकपालो की भी चार–चार अग्रमहिषियाँ है।

**149.** Soma (guardian of the east direction), the *lok-paal* of Chamar Asurendra, the king of *Asur Kumar* gods has four *agramahishis* (chief

queens)—(1) Kanaka, (2) Kanakalata, (3) Chitragupta, and (4) Vasundhara **150.** In the same way the other *lok-paals* (guardian deities), Yama (guardian of the south direction), Varun (guardian of the west direction) and Vaishraman (guardian of the north direction), also have four chief queens each.

**१५१. बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—मितगा, सुभद्दा, विज्जुता, असणी। १५२. एवं जमस्स वेसमणस्स वरुणस्स।**

१५१. वैरोचनराज वैरोचनेन्द्र बलि के लोकपाल सोम महाराज की चार अग्रमहिषियाँ हैं—(१) मितका, (२) सुभद्रा, (३) विद्युत, (४) अशनि। १५२. इसी प्रकार यम, वैश्रमण और वरुण लोकपालो की भी चार-चार अग्रमहिषियाँ हैं।

**151.** Soma (guardian of the east direction), the *lok-paal* of Vairochanendra Bali, has four *agramahishis* (chief queens)—(1) Mitaka, (2) Subhadraa, (3) Vidyut, and (4) Ashani **152.** In the same way the other *lok-paals,* Yama, Varun and Vaishraman, also have four chief queens each

**१५३. धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—असोगा, विमला, सुप्पभा, सुदंसणा। १५४. एवं जाव संखवालस्स।**

१५३ नागकुमारराज नागकुमारेन्द्र धरण के लोकपाल महाराज कालपाल की चार अग्रमहिषियाँ है—(१) अशोका, (२) विमला (३) सुप्रभा, (४) सुदर्शना। १५४. इसी प्रकार शंखपाल तक के अन्य लोकपालों की चार-चार अग्रमहिषियाँ है।

**153.** Kaal-paal, the *lok-paal* of Dharan Naagkumarendra, the king of *Naag Kumar* gods, has four *agramahishis* (chief queens)—(1) Ashokaa, (2) Vimala, (3) Suprabha, and (4) Sudarshana. **154.** In the same way all the other *lok-paals*, up to *Shankh-paal,* also have four chief queens each.

**१५५. भूताणंदस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो चत्तारिअग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुणंदा, सुभद्दा, सुजाता, सुमणा। १५६. एवं जाव सेलवालस्स।**

१५५. नागकुमारराज नागकुमारेन्द्र भूतानन्द के लोकपाल महाराज कालपाल की चार अग्रमहिषियाँ हैं—(१) सुनन्दा, (२) सुभद्रा, (३) सुजाता, (४) सुमना। १५६. इसी प्रकार सेलपाल तक के अन्य लोकपालों की चार-चार अग्रमहिषियाँ हैं।

**155.** Kaal-paal, the *lok-paal* of Bhootanand Naagkumarendra, the king of *Naag Kumar* gods, has four *agramahishis* (chief queens)—

(1) Sunanda, (2) Subhadraa, (3) Sujata, and (4) Sumana **156.** In the same way all the other *lok-paals*, up to Sale-paal, also have four chief queens each.

**१५७. जहा धरणस्स एवं सव्वेसिं दाहिणिंदलोगपालाणं जाव घोसस्स। १५८. जहा भूताणंदस्स एवं जाव महाघोसस्स लोगपालाणं।**

१५७. जैसे धरण के लोकपालों की चार-चार अग्रमहिषियाँ है, उसी प्रकार सभी दक्षिणेन्द्र-वेणुदेव, हरिकान्त, अग्निशिख पूर्ण, जलकान्त, अमितगति, वेलम्ब और घोष के लोकपालो की चार-चार अग्रमहिषियाँ है-(१) अशोका, (२) विमला, (३) सुप्रभा, (४) सुदर्शना। १५८. जैसे भूतानन्द के लोकपालो की चार-चार अग्रमहिषियाँ है, उसी प्रकार अन्य सभी उत्तर दिशा के इन्द्र-वेणुदालि, हरिस्सह, अग्निमाणव, विशिष्ट, जलप्रभ, अमितवाहन, प्रभजन और महाघोष के लोकपालों की चार-चार अग्रमहिषियाँ है-(१) सुनन्दा, (२) सुप्रभा, (३) सुजाता, (४) सुमना।

**157.** As the *lok-pals* of Dharan have four chief queens each, in the same way all *Dakshinendras* (the overlords of south)—Venudev, Harikant, Agnishikh, Purna, Jalakant, Amit-gati, Velamb and Ghosh—too have four chief queens each, namely—(1) Ashokaa, (2) Vimala, (3) Suprabha, and (4) Sudarshana **158.** As the *lok-pals* of Dharan have four chief queens each, in the same way all *Uttarendras* (the overlords of north)—Venudali, Harissaha, Agnimanav, Vishisht, Jalaprabh, Amit-vahan, Prabhanjan and Mahaghosh—too have four chief queens each, namely—(1) Sunanda, (2) Subhadraa, (3) Sujata, and (4) Sumana

**१५९. कालस्स णं पिसाइंदस्स पिसायरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा-कमला, कमलप्पभा, उप्पला, सुदंसणा। १६०. एवं महाकालस्स वि। १६१. सुरूवस्स णं भूतिंदस्स भूतरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा-रूपवती, बहुरूवा, सुरूवा, सुभगा। १६२. एवं पडिरूवस्स वि।**

१५९. पिशाचराज पिशाचेन्द्र काल की चार अग्रमहिषियाँ है-(१) कमला, (२) कमलप्रभा, (३) उत्पला, (४) सुदर्शना। १६०. इसी प्रकार महाकाल की भी चार अग्रमहिषियाँ है। १६१. भूतराज भूतेन्द्र सुरूप की चार अग्रमहिषियाँ है-(१) रूपवती, (२) बहुरूपा, (३) सुरूपा, (४) सुभगा। १६२. इसी प्रकार प्रतिरूप की भी चार अग्रमहिषियाँ है।

**159.** Kaal Pishachendra, the king of *Pishach* gods has four *agramahishis* (chief queens)—(1) Kamala, (2) Kamal-prabha, (3) Utpala, and (4) Sudarshana **160.** In the same way Mahakaal also has four chief queens **161.** Surupa Bhootendra, the king of *Bhoot* gods has four *agramahishis* (chief queens)—(1) Rupavati, (2) Bahurupaa, (3) Surupaa,

and (4) Subhaga. **162.** In the same way Pratırupa also has four chief queens

**१६३. पुण्णभद्दस्स णं जक्खिंदस्स जक्खरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पुण्णा, बहुपुण्णिता, उत्तमा, तारगा। १६४. एवं माणिभद्दस्स वि।**

१६३. यक्षराज यक्षेन्द्र पूर्णभद्र की चार अग्रमहिषियाँ है–(१) पूर्णा, (२) बहुपूर्णिका, (३) उत्तमा, (४) तारका। १६४. इसी प्रकार माणिभद्र की भी चार अग्रमहिषियाँ है।

**163.** Purnabhadra Yakshendra, the kıng of *Yaksha* gods has four *agramahıshis* (chief queens)—(1) Purna, (2) Bahupurnıka, (3) Uttama, and (4) Taraka. **164.** In the same way Manıbhadra also has four chief queens

**१६५. भीमस्स णं रक्खसिंदस्स रक्खसरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पउमा, वसुमती, कणगा, रतणप्पभा। १६६. एवं महाभीमस्स वि। १६७. किण्णरस्स णं किण्णरिंदस्स [ किण्णररण्णो ] चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—वडेंसा, केतुमती, रतीसेणा, रतिप्पभा। १६८. एवं किंपुरिस्स वि।**

१६५. राक्षसराज राक्षसेन्द्र भीम की चार अग्रमहिषियाँ हैं–(१) पद्मा, (२) वसुमती, (३) कनका, (४) रत्नप्रभा। १६६. इसी प्रकार महाभीम की चार अग्रमहिषियाँ है। १६७. किन्नरराज किन्नरेन्द्र किन्नर की चार अग्रमहिषियाँ है–(१) अवतसा, (२) केतुमती, (३) रतिसेना, (४) रतिप्रभा। १६८. इसी प्रकार किपुरुष की भी चार अग्रमहिषियाँ है।

**165.** Bheem Rakshasendra, the kıng of *Rakshasha* gods has four *agramahıshıs* (chıef queens)—(1) Padma, (2) Vasumatı, (3) Kanaka, and (4) Ratnaprabha **166.** In the same way Mahabheem also has four chief queens **167.** Kınnar Kınnarendra, the king of *Kınnar* gods has four *agramahıshıs* (chief queens)—(1) Avatamsa, (2) Ketumati, (3) Ratisena, and (4) Ratıprabha **168.** In the same way Kimpurush also has four chief queens.

**१६९. सप्पुरिसस्स णं किंपुरिसिंदस्स [ किंपुरिसरण्णो ? ] चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रोहिणी, णवमिता, हिरी, पुप्फवती। १७०. एवं महापुरिसस्स वि।**

१६९. किंपुरुषराज किपुरुषेन्द्र सत्पुरुष की चार अग्रमहिषियाँ है–(१) रोहिणी, (२) नवमिता, (३) ह्री, (४) पुष्पवती। १७०. इसी प्रकार महापुरुष की भी चार अग्रमहिषियाँ हैं।

**169.** Satpurush Kımpurushendra, the kıng of *Kımpurush* gods has four *agramahishis* (chıef queens)—(1) Rohıni, (2) Navamıta, (3) Hrı, and (4) Pushpavati. **170.** In the same way Mahapurush also has four chief queens.

**१७१. अतिकायस्स णं महोरगिंदस्स [ महोरग्गरण्णो ? ] चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–भुयगा, भूयगावती, महाकच्छा, फुडा। १७२. एवं महाकायस्स वि।**

१७१. महोरगराज महोरगेन्द्र अतिकाय की चार अग्रमहिषियाँ है–(१) भुजगा, (२) भुजगवती, (३) महाकक्षा, (४) स्फुटा। १७२. इसी प्रकार महाकाय की भी चार अग्रमहिषियाँ हैं।

**171.** Atikaya Mahoragendra, the king of *Mahorag* gods has four *agramahishis* (chief queens)—(1) Bhujaga, (2) Bhujagavati, (3) Mahakaksha, and (4) Sphuta **172.** In the same way Mahakaya also has four chief queens

**१७३. गीतरतिस्स णं गंधव्विंदस्स [ गंधव्वरण्णो ? ] चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–सुघोसा, विमला, सुस्सरा, सरस्सती। १७४. एवं गीयजसस्स वि।**

१७३. गन्धर्वराज गन्धर्वेन्द्र गीतरति की चार अग्रमहिषियाँ है–(१) सुघोषा, (२) विमला, (३) सुस्वरा, (४) सरस्वती। १७४. इसी प्रकार गीतयश की भी चार अग्रमहिषियाँ है।

**173.** Geetarati Gandharvendra, the king of *Gandharva* gods has four *agramahishis* (chief queens)—(1) Sughosha, (2) *Vimala*, (3) Susvara, and (4) Sarasvati **174.** In the same way Geetayash also has four chief queens.

**१७५. चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–चंदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली पभंकरा। १७६. एवं सूरस्स वि, णवरं–सूरप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा।**

१७५. ज्योतिष्कराज ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र की चार अग्रमहिषियाँ है–(१) चन्द्रप्रभा, (२) ज्योत्स्नाभा, (३) अर्चिमालिनी, (४) प्रभकरा। १७६. इसी प्रकार ज्योतिष्कराज ज्योतिष्केन्द्र सूर्य की चार अग्रमहिषियाँ हैं–(१) सूर्यप्रभा, (२) ज्योत्स्नाभा, (३) अर्चिमालिनी, (४) प्रभकरा।

**175.** Chandra Jyotishkendra, the king of *Jyotishk* gods has four *agramahishis* (chief queens)—(1) Chandraprabha, (2) Jyotsanabha, (3) Archimalini, and (4) Prabhankara **176.** In the same way Surya Jyotishkendra, the king of *Jyotishk* gods has four *agramahishis* (chief queens)—(1) Suryaprabha, (2) Jyotsanabha, (3) Archimalini, and (4) Prabhankara

**१७७. इंगालस्स णं महागहस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–विजया, वेजयंती, जयंती, अपराजिया। १७८. एवं सव्वेसिं महग्गहाणं जाव भावकेउस्स।**

१७७. महाग्रह अंगार की चार अग्रमहिषियाँ है–(१) विजया, (२) वैजयन्ती, (३) जयन्ती, (४) अपराजिता। १७८. इसी प्रकार भावकेतु तक के सभी महाग्रहो की चार-चार अग्रमहिषियाँ हैं।

**177.** Mahagraha Angaar has four *agramahishis* (chief queens)—(1) Vijaya, (2) Vaijayanti, (3) Jayanti, and (4) Aparajita. **178.** In the same way all the following *Mahagrahas* (great planets) up to Bhaavaketu also have four chief queens each.

**१७९. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रोहिणी, मयणा, चित्ता, सामा। १८०. एवं जाव वेसमणस्स।**

१७९. देवराज देवेन्द्र शक्र के लोकपाल महाराज सोम की चार अग्रमहिषियाँ हैं–(१) रोहिणी, (२) मदना, (३) चित्रा, (४) सोमा। १८०. इसी प्रकार वैश्रमण तक अन्य सभी लोकपालों की चार-चार अग्रमहिषियाँ है।

**179.** Soma (guardian of the east direction), the *lok-paal* of Shakra Devendra, the king of gods has four *agramahishis* (chief queens)—(1) Rohini, (2) Madana, (3) Chitraa and (4) Somaa **180.** In the same way the other *lok-paals* (guardian deities) up to Vaishraman also have four chief queens each

**१८१. ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पुढवी, राती, रयणी, विज्जु। १८२. एवं जाव वरुणस्स।**

१८१. देवराज देवेन्द्र ईशान के लोकपाल महाराज सोम की चार अग्रमहिषियाँ हैं–(१) पृथ्वी, (२) रात्रि, (३) रजनी, (४) विद्युत्। १८२. इसी प्रकार वरुण तक अन्य सभी लोकपालों की चार-चार अग्रमहिषियाँ है।

**181.** Soma (guardian of the east direction), the *lok-paal* of Ishan Devendra, the king of gods has four *agramahishis* (chief queens)—(1) Prithvi, (2) Ratri, (3) Rajani, and (4) Vidyut **182.** In the same way the other *lok-paals* (guardian deities) up to Varuna also have four chief queens each.

**विवेचन**—ये अग्रमहिषियाँ सभी देवियों मे प्रमुख होती हैं तथा देवायुष्य पूर्ण करके महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर सिद्धगति प्राप्त करती है। अत. विशेष पुण्यात्मा होने के कारण यहाँ उनका उल्लेख किया गया है। *(हिन्दी टीका, पृष्ठ ७४७)*

**Elaboration**—These chief queens are heads of all goddesses. After concluding their life spans in the divine realm they reincarnate in Mahavideh Area and attain liberation. This indicates their being specially meritorious and thus they find mention here.

### *विकृति-पद* VIKRITI-PAD (SEGMENT OF DEGENERATION)

**१८३. चत्तारि गोरसविगतीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—खीरं, दहिं, सप्पिं, णवणीतं। १८४. चत्तारि सिणेहविगतीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तेल्लं, घयं, वसा, णवणीतं। १८५. चत्तारि महाविगतीओ, तं जहा—महुं, मंसं, मज्जं, णवणीतं।**

१८३. गोरस सम्बन्धी विकृतियाँ चार है-(१) क्षीर (दूध), (२) दही, (३) घी, (४) नवनीत (मक्खन)। १८४. स्नेह (चिकनाई) वाली विकृतियाँ चार होती है-(१) तेल, (२) घी, (३) वसा (चर्बी), (४) नवनीत। १८५. महाविकृतियाँ चार होती है-(१) मधु, (२) माँस, (३) मद्य, (४) नवनीत।

**183.** There are four kinds of *vikritis* (degenerative things, things that on consumption cause physical, mental and spiritual degeneration) among milk products—(1) *ksheer* (milk), (2) *dahi* (curd), (3) *ghee* (clarified butter), and (4) *navaneet* (fresh butter) **184.** There are four kinds of *vikritis* among oily things—(1) *tel* (oil), (2) *ghee* (clarified butter), (3) *vasa* (fat), and (4) *navaneet* (fresh butter) **185.** There are four kinds of *mahavikritis* (highly degenerative things)—(1) *madhu* (honey), (2) *mansa* (meat), (3) *madya* (alcohol), and (4) *navaneet* (fresh butter)

### *गुप्त–अगुप्त–पद* GUPTA-AGUPTA-PAD (SEGMENT OF CONCEALED AND OPEN)

**१८६. चत्तारि कूडागारा, पण्णत्ता, तं जहा–गुत्ते णामं एगे गुत्ते, गुत्ते णामं एगे अगुत्ते, अगुत्ते णामं एगे गुत्ते, अगुत्ते णामं एगे अगुत्ते।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–गुत्ते णामं एगे गुत्ते, गुत्ते णामं एगे अगुत्ते, अगुत्ते णामं एगे गुत्ते, अगुत्ते णामं एगे अगुत्ते।**

१८६. कूटागार चार प्रकार के (पर्वतो पर बने गुप्त घर) होते है। जैसे-(१) **गुप्त होकर गुप्त**–कोई कूटागार परकोटे से घिरा होता है और उसके द्वार भी बन्द होते है। (२) **गुप्त होकर अगुप्त**–कोई कूटागार परकोटे से घिरा होता है, किन्तु द्वार बन्द नही होते। (३) **अगुप्त होकर गुप्त**–कोई कूटागार परकोटे से घिरा नही होता, किन्तु उसके द्वार बन्द होते है। (४) **अगुप्त होकर अगुप्त**–कोई कूटागार न परकोटे से घिरा होता है और न उसके द्वार ही बन्द होते है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है-(१) कुछ पुरुष गुप्त-वस्त्र पहने हुए होते है और उनकी इन्द्रियाँ भी गुप्त (वशीभूत-काबू मे) होती है। (२) कुछ पुरुष वस्त्र से गुप्त होते है, किन्तु उनकी इन्द्रियाँ गुप्त नही होती। (३) कुछ पुरुष वस्त्र पहने नही होते हैं, किन्तु उनकी इन्द्रियाँ गुप्त होती है। (४) कुछ पुरुष न वस्त्र पहने हुए होते है और न उनकी इन्द्रियाँ गुप्त होती है।

**186.** *Kutagar* (concealed house, generally built on a hill) is of four kinds—(1) *gupta* and *gupta* (concealed and secret)—a house surrounded by parapet wall and with closed doors, (2) *gupta* but *agupta* (concealed and open)—a house surrounded by parapet wall but with open doors, (3) *agupta* but *gupta* (not concealed but secret)—a house not surrounded by parapet wall but with closed doors, and (4) *agupta* and *agupta* (neither concealed nor secret)—a house neither surrounded by parapet wall nor having closed doors

In the same way men are of four kinds—(1) *gupta* and *gupta* (concealed and controlled)—properly dressed (physical concealment of sense organs) and having control (mental control properly over sense organs), (2) *gupta* but *agupta* (concealed but uncontrolled)—dressed (physical concealment of sense organs) but without control (no mental control over sense organs), (3) *agupta* but *gupta* (not concealed but controlled)—not dressed but having control over sense organs, and (4) *agupta* and *agupta* (neither concealed nor controlled)—neither dressed nor having control over sense organs.

**१८७. चत्तारि कूडागारसालाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—गुत्ता णाममेगा गुत्तदुवारा, गुत्ता णाममेगा अगुत्तदुवारा, अगुत्ता णाममेगा गुत्तदुवारा, अगुत्ता णाममेगा अगुत्तदुवारा।**

**एवामेव चत्तारित्थीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—गुत्ता णाममेगा गुत्तिंदिया, गुत्ता णाममेगा अगुत्तिंदिया, अगुत्ता णाममेगा गुत्तिंदिया, अगुत्ता णाममेगा अगुत्तिंदिया।**

१८७. कूटागारशालाएँ चार प्रकार की होती हैं-(१) **गुप्त होकर गुप्तद्वार**—कोई कूटागारशाला परकोटे से गुप्त और गुप्त द्वार वाली होती है। (२) कोई शाला परकोटे से गुप्त, किन्तु अगुप्त द्वार वाली होती है। (३) कोई न परकोटे वाली होती है और न उसके द्वार ही गुप्त होते है। (४) कोई न परकोटे से घिरी होती है और न उसके द्वार ही गुप्त होते है।

स्त्रियाँ भी चार प्रकार की होती हैं, जैसे-(१) **गुप्त होकर गुप्तेन्द्रिय**—कोई स्त्री वस्त्र से भी गुप्त और गुप्त इन्द्रिय वाली होती है। (२) कोई स्त्री वस्त्र से गुप्त होकर भी गुप्त इन्द्रिय वाली नही होती। (३) कोई स्त्री वस्त्र से अगुप्त होकर भी गुप्त इन्द्रिय वाली होती है। (४) कोई स्त्री न वस्त्र से गुप्त होती है और न उसकी इन्द्रियाँ ही गुप्त होती है।

**187.** *Kutagar* is of four kinds—(1) *gupta* and *gupta dvar* (concealed and secret)—a house surrounded by parapet wall and with concealed doors, (2) *gupta* but *agupta dvar* (concealed and open)—a house surrounded by parapet wall but with unconcealed doors, (3) *agupta* but *gupta dvar* (not concealed but secret)—a house not surrounded by parapet wall but with concealed doors, and (4) *agupta* and *agupta dvar* (neither concealed nor secret)—a house neither surrounded by parapet wall nor having concealed doors.

In the same way women are of four kinds—(1) *gupta* and *guptindriya* (concealed and controlled)—properly dressed and with control (mental control over sense organs), (2) *gupta* but *aguptindriya* (concealed but uncontrolled)—properly dressed but without control (no mental control over sense organs), (3) *agupta* but *guptindriya* (not concealed but

controlled)—not properly dressed but with control over sense organs, and (4) *agupta* and *aguptindriya* (neither concealed nor controlled)—neither properly dressed nor with control over sense organs

### अवगाहना-पद AVAGAHANA-PAD (SEGMENT OF OCCUPATION)

**१८८. चउविहा ओगाहणा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वोगाहणा, खेत्तोगाहणा, कालोगाहणा, भावोगाहणा।**

१८८. अवगाहना चार प्रकार की होती है, जैसे-(१) द्रव्यावगाहना, (२) क्षेत्रावगाहना, (३) कालावगाहना, (४) भावावगाहना।

**188.** *Avagahana* (occupation) is of four kinds—(1) *dravyavagahana*, (2) *kshetravagahana*, (3) *kaalavagahana*, and (4) *bhaavavagahana*.

**विवेचन**—जिसमे जीवादि द्रव्य स्थित होते हों, उसे अवगाहना कहते है। जिस द्रव्य का जो शरीर या आकार है वही उसकी द्रव्यावगाहना है। इसी प्रकार आकाशरूप क्षेत्र क्षेत्रावगाहना। मनुष्यक्षेत्ररूप समय की अवगाहना, कालावगाहना है, यह मनुष्यक्षेत्र मे है और भाव (पर्यायो) वाले द्रव्यो की अवगाहना, भावावगाहना है।

**Elaboration**—That which is occupied by entities like *jiva* (soul or living being) is called *avagahana* The form or shape of a thing is *dravyavagahana* The area occupied in space by a thing is *kshetravagahana* The time occupied in area of human habitation is *kaalavagahana* The state occupied by modal things in terms of modes is *bhaavavagahana*

### प्रज्ञप्ति-पद PRAJNAPTI-PAD (SEGMENT OF ELABORATION)

**१८९. चत्तारि पण्णत्तीओ अंगबाहिरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, जंबुद्दीवपण्णत्ती, दीवसागरपण्णत्ती।**

१८९. चार प्रज्ञप्तियाँ अगबाह्य है-(१) चन्द्रप्रज्ञप्ति, (२) सूर्यप्रज्ञप्ति, (३) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, (४) द्वीपसागरप्रज्ञप्ति।

॥ प्रथम उद्देशक समाप्त ॥

**189.** Four *prajnaptis* (explanatory texts) are *Angabahya* (outside the *Anga* texts)—(1) *Chandra Prajnapti*, (2) *Surya Prajnapti*, (3) *Jambudveep Prajnapti*, and (4) *Dveep-sagar Prajnapti*

**● END OF THE FIRST LESSON ●**

## द्वितीय उद्देशक
## SECOND LESSON

### प्रतिसंलीन–अप्रतिसंलीन–पद PRATISAMLINATA-APRATISAMLINATA-PAD (SEGMENT OF COUNTER-ENGROSSMENT)

**१९०. चत्तारि पडिसंलीणा पण्णत्ता, तं जहा—कोहपडिसंलीणे, माणपडिसंलीणे, मायापडिसंलीणे, लोभपडिसंलीणे। १९१. चत्तारि अपडिसंलीणा पण्णत्ता, तं जहा—कोहअपडिसंलीणे जाव लोभअपडिसंलीणे।**

१९०. प्रतिसंलीन चार प्रकार के होते है–(१) क्रोध–प्रतिसंलीन, (२) मान–प्रतिसंलीन, (३) माया–प्रतिसलीन, (४) लोभ–प्रतिसलीन। १९१. अप्रतिसलीन चार प्रकार के होते है–(१) क्रोध–अप्रतिसलीन, यावत् [(२) मान–अप्रतिसलीन, (३) माया–अप्रतिसलीन], (४) लोभ–अप्रतिसंलीन।

**190.** *Pratisamlin* (engrossed in the opposite) are of four kinds—(1) *krodh-pratisamlin* (engrossed in the opposite of anger or one who indulges in counter-engrossment of anger), (2) *maan-pratisamlin* (engrossed in the opposite of conceit), (3) *maya-pratisamlin* (engrossed in the opposite of deceit), and (4) *lobh-pratisamlin* (engrossed in the opposite of greed). **191.** *Apratisamlin* (not engrossed in the opposite) are of four kinds—(1) *krodh-apratisamlin* (not engrossed in the opposite of anger or one who does not indulge in counter engrossment of anger), . and so on up to [(2) *maan-apratisamlin* (not engrossed in the opposite of conceit), (3) *maya-apratisamlin* (not engrossed in the opposite of deceit), and] (4) *lobh-apratisamlin* (not engrossed in the opposite of greed)

**विवेचन**—प्रस्तुत प्रसग मे प्रतिसंलीनता का अर्थ है उसके प्रतिपक्ष मे लीन हो जाना, जैसे–क्रोध का उदय होने पर क्षमा मे लीन होना, मान का उदय होने पर नम्रता मे लीन होना आदि। इसके विपरीत अप्रतिसंलीनता का अर्थ है, क्रोधादि कषायों का उदय होने पर उसमे ही परिणत हो जाना। औपपातिकसूत्र के अनुसार क्रोध–प्रतिसंलीनता का अर्थ है क्रोध के उदय का निरोध कर उस क्रोध को विफल कर देना।

**Elaboration**—Here the meaning of *pratisamlinata* is to be engrossed in the opposite. For example to be engrossed in forgiveness when there is rise of anger and to be engrossed in humility when there is rise of conceit *Apratisamlinata* is to yield to passions like anger and to flow with them. According to *Aupapatik Sutra krodh-pratisamlinata* means to control and diffuse anger when it rises.

१९२. चत्तारि पडिसंलीणा पण्णत्ता, तं जहा—मणपडिसंलीणे, वइपडिसंलीणे, कायपडिसंलीणे, इंदियपडिसंलीणे। १९३. चत्तारि अपडिसंलीणा पण्णत्ता, तं जहा— मणअपडिसंलीणे, जाव इंदियअपडिसंलीणे।

१९२. प्रतिसलीन चार प्रकार के होते है–(१) मन –प्रतिसंलीन, (२) वाक्–प्रतिसंलीन, (३) काय–प्रतिसलीन, (४) इन्द्रिय–प्रतिसलीन। १९३. अप्रतिसलीन चार प्रकार के होते हैं–(१) मन– अप्रतिसलीन, यावत् [(२) वाक्–अप्रतिसलीन, (३) काय–अप्रतिसंलीन], (४) इन्द्रिय–अप्रतिसलीन।

**192.** *Pratisamlin* are of four kinds—(1) *manah-pratisamlin,* (2) *vaak-pratisamlin,* (3) *kaya-pratisamlin,* and (4) *indriya-pratisamlin* **193.** *Apratisamlin* are of four kinds—(1) *manah-apratisamlin,* ...and so on up to. [(2) *vaak-apratisamlin,* (3) *kaya-apratisamlin,* and] (4) *indriya-apratisamlin*

**विवेचन**—मन, वचन, काय की अशुभ प्रवृत्ति मे सलग्न नही होकर उसका निरोध करना मन, वचन, काय की प्रतिसलीनता है। इन्द्रियो के विषयो मे सलग्न नही होना इन्द्रिय–प्रतिसलीनता है। इसके विपरीत अप्रतिसलीनता है।

**Elaboration**—To discipline the wrong inclinations of mind, speech and body instead of associating with them is *pratisamlinata* (counter-engrossment) of mind, speech and body Not to get involved with the sensual pleasures is *pratisamlinata* (counter-engrossment) of sense organs Opposite of this is *apratisamlinata*

### *दीन–अदीन–पद* DEEN-ADEEN-PAD (SEGMENT OF POOR AND NON-POOR)

**१९४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—(१) दीणे णाममेगे दीणे, दीणे णाममेगे अदीणे, अदीणे णाममेगे दीणे, अदीणे णाममेगे अदीणे। १९५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा— (२) दीणे णाममेगे दीणपरिणते, दीणे णाममेगे अदीणपरिणते, अदीणे णाममेगे दीणपरिणते, अदीणे णाममेगे अदीणपरिणते।**

१९४. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई बाहर से दीन (दरिद्र) और मन से भी दीन होता है, (२) कोई बाहर से दीन, किन्तु मन से अदीन, (३) कोई बाहर से अदीन, किन्तु मन से दीन, और (४) कोई न बाहर से दीन और न मन से दीन होता है। १९५. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई दीन है और दीन रूप मे परिणत होता है (दीनता दिखाता है)। (२) कोई दीन होकर के भी दीनरूप से परिणत नही होता। (३) कोई दीन नही होकर के भी दीनरूप मे दिखाई देता है। (४) कोई न दीन है और न दीनरूप से परिणत होता है।

**194.** Men are of four kinds—(1) (1) Some man is *deen* (poor) externally *deen* (poor) internally as well (2) Some man is *deen* (poor) externally and

*adeen* (non-poor; opposite of poor is rich but as *deen* has numerous meanings we are using non-poor as its opposite) internally. (3) Some man is *adeen* (non-poor) externally and *deen* internally. (4) Some man is *adeen* (non-poor) externally and *adeen* (non-poor) internally as well. **195.** Men are of four kinds—(ii) (1) Some man is *deen* (poor) and *deen parinat* (transformed into poor, *i.e.* displays poverty) (2) Some man is *deen* (poor) but *adeen parinat* (displays richness). (3) Some man is *adeen* (rich) but displays poverty (4) Some man is rich and displays richness as well.

**१९६–२०२. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–(३) दीणे णाममेगे दीणरूवे (१९६)। एवं (४) दीणमणे (१९७)। (५) दीणसंकप्पे (१९८), (६) दीणपन्ने (१९९), (७) दीणदिट्ठी (२००), (८) दीणसीलायारे (२०१), (९) दीणववहारे (२०२)।**

१९६–२०२. पुरुष चार प्रकार के होते है–(३) दीन होकर दीन रूप वाला (चार भग) (१९६)। इसी प्रकार (४) दीन मन वाला (१९७), (५) दीन सकल्प वाला (१९८), (६) दीन प्रज्ञा वाला (१९९), (७) दीन दृष्टि (विचारधारा) वाला (२००), (८) दीन शीलाचार वाला (२०१), (९) दीन व्यवहार वाला (२०२)। (सबके भी चार-चार भग जानने चाहिए)

**196-202.** Men are of four kinds—(iii) (1) Some man is *deen* (poor) and *deen rupa* (poor in appearance or practice) as well (four aforesaid alternatives) (196) In the same way (iv) *deen man* (poor in mind) (197), (v) *deen sankalp* (poor in resolve) (198), (vi) *deen prajna* (poor in wisdom) (199), (vii) *deen drishti* (poor in perception/faith) (200). (viii) *deen sheel-achaar* (poor in character and conduct) (201), and (ix) *deen vyavahar* (poor in behaviour) (202) (read four aforesaid alternatives in each case)

**२०३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–(१०) दीणे णाममेगे दीणपरक्कमे, दीणे णाममेगे अदीण परक्कमे। एवं सव्वेसिं चउभंगो भाणियव्वो।**

२०३. चार प्रकार के पुरुष होते है–(१०) दीन होकर दीन पराक्रम वाला, कोई दीन होकर अदीन पराक्रम वाला। इसी प्रकार सभी पदो के चार-चार भंग समझने चाहिए।

**203.** Men are of four kinds—(x) (1) Some man is *deen* (poor) and *deen parakram* (poor in endeavour). (2) Some man is poor but *adeen parakram* (non-poor in endeavour). (consider four aforesaid alternatives in each case)

**२०४–२०७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–(११) दीणे णाममेगे दीणवित्ती (२०४)। एवं (१२) दीणजाई (२०५), (१३) दीणभासी (२०६), (१४) दीणोभासी (२०७)।**

**२०८-२१०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-(१५) दीणे णाममेगे दीणसेवी (२०८)। एवं (१६) दीणे णाममेगे दीणपरियाए (२०९)। (१७) दीणे णाममेगे दीणपरियाले, सव्वत्थ चउभंगो (२१०)।**

२०४-२०७. चार प्रकार के पुरुष होते है-(११) कोई दीन होकर दीन वृत्ति (दीन आजीविका वाला) (२०४)। इसी तरह (१२) दीन जाति (२०५), (१३) दीन भाषी (दीन वचन बोलने वाला) (२०६), (१४) दीन अवभासी (दीन दीखने वाला) समझना चाहिए (२०७)।

२०८-२१०. चार प्रकार के पुरुष होते है-(१५) दीन होकर दीन की सेवा करने वाला (२०८), (१६) दीन होकर दीन अवस्था मे रहने वाला (२०९), (१७) दीन होकर दीन परिवार वाला (२१०)। इन सभी १७ पदों के प्रत्येक के चार-चार भग होते है।

**204-207.** Men are of four kinds—(xi) some man is poor and *deen vritti* (poor in livelihood) (204), (xii) *deen jati* (poor of caste) (205), (xiii) *deen bhashi* (poor in speech) (206), and (xiv) *deen avabhasi* (poor in appearance) (207)

**208-210.** Men are of four kinds—(xv) some man is poor and *deen sevi* (poor in serving the poor) (208), (xvi) *deen paryaya* (poor and living in poor condition) (209), and (xvii) *deen parivar* (poor and having a poor family) (210). Consider four afore said alternatives in each of the said 17 cases

**विवेचन**-दीन का अर्थ है-दया पात्र, दरिद्र, दुर्बल आदि। तथा अदीन का अर्थ है-समर्थ, सक्षम, उद्यमी व उत्साही। दीन व अदीन के यहाँ पर सत्रह पदो का कथन है और प्रत्येक के चार-चार भग होने का संकेत किया गया है। प्रथम दो पदो का विस्तार मूल पाठ मे है। आगे तृतीय पद से सत्रह तक के चार-चार भग इस प्रकार समझने चाहिए-

**(३) दीन होकर दीन रूप**-(१) कोई पुरुष दीन है और दीनरूप वाला (दीनतासूचक मलिन वस्त्र आदि वाला) है। (२) कोई दीन है, किन्तु दीनरूप वाला नही। (३) कोई दीन न होकर के भी दीनरूप वाला है। (४) कोई न दीन है और न दीनरूप वाला है।

**(४) दीन और दीन मन**-(१) कोई पुरुष दीन है और दीन मन वाला भी है। (२) कोई दीन होकर भी दीन मन वाला नही है। (३) कोई दीन नही होकर के भी दीन मन वाला है। (४) कोई न दीन है और न दीन मन वाला है।

**(५) दीन और दीन संकल्प**-(१) कोई पुरुष दीन है और दीन सकल्प वाला भी है। (२) कोई दीन होकर भी दीन सकल्प वाला नही है। (३) कोई दीन नही होकर के भी दीन सकल्प वाला है। (४) कोई न दीन है और न दीन सकल्प वाला है।

**(६) दीन और दीन प्रज्ञ**-(१) कोई पुरुष दीन है और दीन प्रज्ञा (मद बुद्धि) वाला है। (२) कोई दीन होकर के भी दीन प्रज्ञा वाला नही है। (३) कोई दीन नही होकर के भी दीन प्रज्ञा वाला है। (४) कोई न दीन है और न दीन प्रज्ञा वाला है।

**(७) दीन और दीन दृष्टि**–(१) कोई पुरुष दीन है और दीन दृष्टि (विचारधारा) वाला है। (२) कोई दीन होकर भी दीन दृष्टि वाला नहीं है। (३) कोई दीन नहीं होकर भी दीन दृष्टि वाला है। (४) कोई न दीन है और न दीन दृष्टि वाला है।

**(८) दीन और दीन शीलाचार**–(१) कोई पुरुष दीन है और दीन शील–आचार वाला है। (२) कोई पुरुष दीन होकर भी दीन शील–आचार वाला नहीं। (३) कोई पुरुष दीन नहीं होकर भी दीन शील–आचार वाला है। (४) कोई पुरुष न दीन है और न दीन शील–आचार वाला है।

**(९) दीन और दीन व्यवहार**–(१) कोई पुरुष दीन है और दीन व्यवहार वाला है। (२) कोई दीन होकर भी दीन व्यवहार वाला नही है। (३) कोई दीन नही होकर भी दीन व्यवहार वाला है। (४) कोई न दीन है और दीन व्यवहार वाला है।

**(१०) दीन और दीन पराक्रम**–(१) कोई पुरुष दीन है और दीन पराक्रम वाला (उद्यम करने मे कमजोर) भी है। (२) कोई दीन होकर भी दीन पराक्रम वाला नही है। (३) कोई दीन नही होकर भी दीन पराक्रम वाला है। (४) कोई न दीन है और न दीन पराक्रम वाला है।

**(११) दीन और दीनवृत्ति**–(१) कोई पुरुष दीन है और दीनवृत्ति–(दीन जैसी आजीविका) करता है। (२) कोई दीन होकर भी दीनवृत्ति नही है। (३) कोई दीन न होकर दीनवृत्ति भी है। (४) कोई न दीन है और न दीनवृत्ति है।

**(१२) दीन और दीन जाति**–(१) कोई पुरुष (स्वभाव से) दीन है और दीन जाति वाला है। (२) कोई दीन है, किन्तु दीन जाति वाला नही। (३) कोई दीन नही होकर भी दीन जाति वाला है। (४) कोई न दीन है और न दीन जाति वाला है।

**(१३) दीन और दीन भाषी**–(१) कोई पुरुष दीन है और दीन भाषा बोलता है। (२) कोई दीन होकर भी दीन भाषा नहीं बोलता। (३) कोई दीन है और दीन भाषा भी बोलता है। (४) कोई न दीन है और न दीन भाषा बोलता है।

**(१४) दीन और दीनावभासी**–(१) कोई पुरुष दीन है और दीन जैसा दीखता है। (२) कोई दीन होकर भी दीन नही दीखता है। (३) कोई दीन नहीं होकर भी दीन दीखता है। (४) कोई न दीन है और न दीन दीखता है।

**(१५) दीन और दीन सेवी**–(१) कोई पुरुष दीन है और दीन पुरुष (स्वामी) की सेवा करता है। (२) कोई दीन होकर भी अदीन पुरुष की सेवा करता है। (३) कोई अदीन होकर भी दीन पुरुष की सेवा करता है। (४) कोई न दीन है और न दीन पुरुष की सेवा करता है।

**(१६) दीन और दीन पर्याय**–(१) कोई पुरुष दीन है और दीन पर्याय (अवस्था) वाला है। (२) कोई दीन होकर भी दीन पर्याय वाला नही है। (३) कोई दीन न होकर भी दीन पर्याय वाला है। (४) कोई न दीन है और न दीन पर्याय वाला है।

(१७) दीन और दीन परिवार-(१) कोई पुरुष दीन है और दीन परिवार (ज्ञाति बंधु व मित्रगण) वाला है। (२) कोई दीन है, किन्तु दीन परिवार वाला नही है। (३) कोई दीन न होकर दीन परिवार वाला है। (४) कोई न दीन है और न दीन परिवार वाला है।

**Elaboration**—*Deen* means pitiable, poor, weak etc *Adeen* means rich, capable, industrious and vigorous There are seventeen statements given here about poor and rich with an indication that they have four alternatives each. The first two statements have been elaborated in the text. The quads related to the third to the seventeenth statements are as follows—

(iii) *Deen* (poor) and *deen rupa*—(1) Some man is *deen* (poor) and *deen rupa* (poor in appearance, having signs of poverty like dirty dress etc.) as well (2) Some man is poor but *adeen rupa* (not poor in appearance) (3) Some man is not poor but poor in appearance (4) Some man is neither poor nor poor in appearance

(iv) *Deen* (poor) and *deen man*—(1) Some man is *deen* (poor) and *deen man* (poor in mind) as well. (2) Some man is poor but *adeen man* (not poor of mind) (3) Some man is not poor but poor of mind (4) Some man is neither poor nor poor of mind

(v) *Deen* (poor) and *deen sankalp* (poor in resolve)—(1) Some man is *deen* (poor) and *deen sankalp* (poor in resolve) as well (2) Some man is poor but *adeen sankalp* (not poor in resolve) (3) Some man is not poor but poor in resolve (4) Some man is neither poor nor poor in resolve

(vi) *Deen* (poor) and *deen prajna* (poor in wisdom)—(1) Some man is *deen* (poor) and *deen prajna* (poor in wisdom) as well (2) Some man is poor but *adeen prajna* (not poor in wisdom) (3) Some man is not poor but poor in wisdom (4) Some man is neither poor nor poor in wisdom as well

(vii) Men are of four kinds—(1) Some man is *deen* (poor) and *deen drishti* (poor in perception/faith) as well (2) Some man is poor but *adeen drishti* (not poor in perception/faith) (3) Some man is not poor but poor in perception/faith. (4) Some man is neither poor nor poor in perception/faith.

(viii) Men are of four kinds—(1) Some man is *deen* (poor) and *deen sheel-achaar* (poor in character and conduct) as well. (2) Some man is poor but *adeen sheel-achaar* (not poor in character and conduct). (3) Some man is not poor but poor in character and conduct. (4) Some man is neither poor nor poor in character and conduct.

(ix) Men are of four kinds—(1) Some man is *deen* (poor) and *deen vyavahar* (poor in behaviour). (2) Some man is poor but *adeen vyavahar* (not poor in behaviour). (3) Some man is not poor but poor in behaviour. (4) Some man is neither poor nor poor in behaviour.

(x) Men are of four kinds—(1) Some man is *deen* (poor) and *deen parakram* (poor in endeavour). (2) Some man is poor but *adeen parakram* (not poor in endeavour) (3) Some man is not poor but poor in endeavour. (4) Some man is neither poor nor poor in endeavour.

(xi) *Deen* (poor) and *deen vritti* (engaged in low grade profession)—(1) Some man is *deen* (poor) and *deen vritti* (engaged in low grade profession) as well. (2) Some man is poor but *adeen vritti* (not engaged in low grade profession). (3) Some man is not poor but poor in livelihood. (4) Some man is neither poor nor poor in livelihood.

(xii) *Deen* (poor) and *deen jati* (poor of caste or belonging to a lower caste)—(1) Some man is *deen* (poor) and *deen jati* (poor of caste) as well. (2) Some man is poor but *adeen jati* (not poor of caste) (3) Some man is not poor but poor of caste (4) Some man is neither poor nor poor of caste.

(xiii) *Deen* (poor) and *deen bhashi* (poor in speech or uses submissive language)—(1) Some man is *deen* (poor) and *deen bhashi* (poor in speech) as well (2) Some man is poor but *adeen bhashi* (not poor in speech). (3) Some man is not poor but poor in speech. (4) Some man is neither poor nor poor in speech

(xiv) *Deen* (poor) and *deen avabhasi* (poor in appearance)—(1) Some man is *deen* (poor) and *deen avabhasi* (poor in appearance) as well. (2) Some man is poor but *adeen avabhasi* (not poor in appearance). (3) Some man is not poor but poor in appearance (4) Some man is neither poor nor poor in appearance.

(xv) *Deen* (poor) and *deen sevi* (serves the poor)—(1) Some man is *deen* (poor) and *deen sevi* (serves the poor) as well. (2) Some man is poor but *adeen sevi* (serves the rich) (3) Some man is not poor but serves the poor. (4) Some man is neither poor nor serves the poor.

(xvi) *Deen* (poor) and *deen paryaya* (lives in poor condition)—(1) Some man is *deen* (poor) and *deen paryaya* (lives in poor condition). (2) Some man is poor but *adeen paryaya* (does not live in poor condition). (3) Some man is not poor but lives in poor condition. (4) Some man is neither poor nor lives in poor condition.

(xvii) *Deen* (poor) and *deen parivar* (has a poor family)—(1) Some man is *deen* (poor) and *deen parivar* (has a poor family) (2) Some man is poor but *adeen parivar* (has a rich family). (3) Some man is not poor but has a poor family. (4) Some man is neither poor nor has a poor family.

## *आर्य–अनार्य–पद (१७ पद)* ARYA-ANARYA-PAD (SEGMENT OF NOBLE AND IGNOBLE) (SEVENTEEN STATEMENTS)

**२११. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–(१) अज्जे णाममेगे अज्जे, अज्जे णाममेगे अणज्जे, अणज्जे णाममेगे अज्जे, अणज्जे णाममेगे अणज्जे। (२) एवं अज्जपरिणए, (३) अज्जरूवे, (४) अज्जमणे, (५) अज्जसंकप्पे, (६) अज्जपण्णे, (७) अज्जदिट्ठी, (८) अज्जसीलाचारे, (९) अज्जववहारे, (१०) अज्जपरक्कमे, (११) अज्जवित्ती, (१२) अज्जजाती, (१३) अज्जभासी (१४) अज्जोवभासी, (१५) अज्जसेवी, (१६) अज्जपरियाये, (१७) अज्ज परियाले। एवं सत्तरस्स आलावगा जहा दीणेणं भणिया तहा अज्जेण वि भाणियव्वा।**

२११. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) आर्य और आर्य–(१) कोई पुरुष जाति आदि से आर्य है और गुण से भी आर्य होता है, (२) कोई जाति आदि से आर्य, किन्तु गुण से अनार्य, (३) कोई जाति आदि से अनार्य, किन्तु गुण से आर्य, और (४) कोई जाति आदि से अनार्य और गुण से भी अनार्य होता है।

इसी प्रकार (२) **आर्य परिणत**–परिणमन की दृष्टि से आर्य, चार भग (३) आर्य रूप (वेषभूषा की दृष्टि से) ४ भग, (४) आर्य मन (भाव) ४ भंग, (५) आर्य सकल्प ४ भग, (६) आर्य प्रज्ञा (बुद्धि) ४ भग, (७) आर्य दृष्टि ४ भग, (८) आर्य शीलाचार ४ भग, (९) आर्य व्यवहार ४ भग, (१०) आर्य पराक्रम (पुरुषार्थ या उद्योग) ४ भग, (११) आर्य वृत्ति–(आजीविका) ४ भग, (१२) आर्य जाति–(आर्य माता की सन्तान) ४ भग, (१३) आर्य भाषी–(आर्य भाषा बोलने वाला) ४ भग, (१४) आर्यावभासी–आर्य जैसा लगने वाला ४ भग, (१५) आर्य सेवी–श्रेष्ठ जनो की सगति करने वाला ४ भग, (१६) आर्य पर्याय - सद्गृहस्थ या साधु वृत्ति वाला ४ भग, और (१७) आर्य परिवार वाला ४ भग। इन सबके दीन शब्द में कहे आलापको के अनुसार प्रत्येक के चार–चार भग कहने चाहिए।

**211.** Men are of four kinds—**(i) *arya* (noble) and *arya*—**(1) Some man is *arya* (noble by caste and other such attributes) externally and *arya* (noble in attitude and other such qualities) internally as well. (2) Some man is *arya* externally and *anarya* (ignoble) internally (3) Some man is *anarya* externally and *arya* internally (4) Some man is *anarya* (ignoble) externally and *anarya* (ignoble) internally as well

In the same way read four aforesaid alternatives for all the remaining statements as in case of *deen* (poor)—(ii) *arya parinat* (transformed into noble), (iii) *arya rupa* (noble in appearance or practice), (iv) *arya man* (noble in mind), (v) *arya sankalp* (noble in resolve), (vi) *arya prajna* (noble in wisdom), (vii) *arya drishti* (noble in perception/faith), (viii) *arya sheel-*

achaar (noble in character and conduct), (ix) *arya vyavahar* (noble in behaviour), (x) *arya parakram* (noble in endeavour), (xi) *arya vritti* (engaged in noble profession), (xii) *arya jati* (of noble caste), (xiii) *arya bhashi* (noble in speech), (xiv) *arya avabhasi* (noble in appearance), (xv) *arya sevi* (serving the noble), (xvi) *arya paryaya* (living in noble condition, such as a good citizen or an ascetic), and (xvii) *arya parivar* (having a noble family). Read four alternative in each cases as had been mentioned earlier in case of word deem (poor).

**२१२. [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जपरिणए, अज्जे णाममेगे अणज्जपरिणए, अणज्जे णाममेगे अज्जपरिणए, अणज्जे णाममेगे अणज्जपरिणए ]। २१३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जरूवे, अज्जे णाममेगे अणज्जरूवे, अणज्जे णाममेगे अज्जरूवे, अणज्जे णाममेगे अणज्जरूवे।**

२१२. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(२) **आर्य और आर्य परिणत के चार प्रकार**–(१) कोई पुरुष जाति से आर्य और आर्यरूप से परिणत होता है, (२) कोई जाति से आर्य, किन्तु अनार्यरूप से परिणत, (३) कोई जाति से अनार्य, किन्तु आर्यरूप से परिणत, और (४) कोई जाति से अनार्य और अनार्यरूप से परिणत होता है। २१३. पुरुष चार प्रकार के होते है–(३) **आर्य और आर्यरूप**–(१) कोई पुरुष जाति से आर्य और आर्यरूप वाला होता है, (२) कोई जाति से आर्य, किन्तु अनार्यरूप वाला, (३) कोई जाति से अनार्य, किन्तु आर्यरूप वाला, और (४) कोई जाति से अनार्य और अनार्यरूप वाला होता है।

**212.** Men are of four kinds—**(ii) *Arya* and *arya-parinat***—(1) Some man is *arya* (noble by birth) and *arya parinat* (transformed into noble conduct) as well (2) Some man is *arya* but *anarya parinat* (transformed into ignoble conduct) (3) Some man is *anarya* (ignoble by birth) but *arya parinat* (transformed into noble conduct) (4) Some man is ignoble by birth and transformed into ignoble as well **213.** Men are of four kinds—**(iii) *Arya* and *arya rupa***—(1) Some man is *arya* (noble by birth) and *arya rupa* (noble in appearance) as well. (2) Some man is noble but *anarya rupa* (ignoble in appearance). (3) Some man is ignoble (by birth) but noble in appearance. (4) Some man is ignoble (by birth) and ignoble in appearance as well

**२१४. [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जमणे, अज्जे णाममेगे अणज्जमणे, अणज्जे णाममेगे अज्जमणे, अणज्जे णाममेगे अणज्जमणे। २१५. [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जसंकप्पे, अज्जे णाममेगे अणज्जसंकप्पे, अणज्जे णाममेगे अज्जसंकप्पे, अणज्जे णाममेगे अणज्जसंकप्पे।**

२१४. पुरुष चार प्रकार के होते है–(४) **आर्य और आर्य मन**–(१) कोई जाति से आर्य और मन से भी आर्य होता है; (२) कोई जाति से आर्य, किन्तु मन से अनार्य, (३) कोई जाति से अनार्य, किन्तु

मन से आर्य, और (४) कोई जाति से अनार्य और मन से भी से अनार्य होता है। २१५. पुरुष चार प्रकार के होते है-(५) आर्य और आर्य संकल्प-(१) कोई पुरुष जाति से आर्य और संकल्प से भी आर्य होता है, (२) कोई जाति से आर्य, किन्तु अनार्य संकल्प वाला, (३) कोई जाति से अनार्य, किन्तु आर्य संकल्प वाला; और (४) कोई जाति से अनार्य और अनार्य सकल्प वाला होता है।

**214.** Men are of four kinds—**(iv) *Arya* and *arya man***—(1) Some man is *arya* (noble by birth) and *arya man* (noble in mind) as well. (2) Some man is noble by birth but *anarya man* (ignoble of mind) (3) Some man is ignoble by birth but noble of mind (4) Some man is ignoble by birth and ignoble of mind as well **215.** Men are of four kinds—**(v) *Arya* and *arya sankalp***—(1) Some man is *arya* (noble by birth) and *arya sankalp* (noble in resolve) as well (2) Some man is noble by birth but *anarya sankalp* (ignoble in resolve) (3) Some man is ignoble by birth but noble in resolve (4) Some man is ignoble by birth and ignoble in resolve as well

**२१६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-अज्जे णाममेगे अज्जपण्णे, अज्जे णाममेगे अणज्जपण्णे, अणज्जे णाममेगे अज्जपण्णे, अणज्जे णाममेगे अणज्जपण्णे। २१७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-अज्जे णाममेगे अज्जदिट्ठी, अज्जे णाममेगे अणज्जदिट्ठी, अणज्जे णाममेगे अज्जदिट्ठी, अणज्जे णाममेगे अणज्जदिट्ठी।**

२१६. पुरुष चार प्रकार के होते है-(६) आर्य और आर्यप्रज्ञ-(१) कोई जाति से आर्य और आर्य प्रज्ञा वाला होता है; (२) कोई जाति से आर्य, किन्तु अनार्य प्रज्ञा वाला, (३) कोई जाति से अनार्य, किन्तु आर्य प्रज्ञा वाला, (४) कोई जाति से अनार्य और अनार्य प्रज्ञा वाला होता है। २१७. पुरुष चार प्रकार के होते है-(७) आर्य और आर्य दृष्टि-(१) कोई जाति से आर्य और आर्य दृष्टि वाला होता है, (२) कोई जाति से आर्य, किन्तु अनार्य दृष्टि वाला, (३) कोई जाति से अनार्य, किन्तु आर्य दृष्टि वाला, और (४) कोई जाति से अनार्य और अनार्य दृष्टि वाला होता है।

**216.** Men are of four kinds—**(vi) *Arya* and *arya prajna***—(1) Some man is *arya* (noble by birth) and *arya prajna* (noble in wisdom) as well (2) Some man is noble by birth but *anarya prajna* (ignoble in wisdom). (3) Some man is ignoble by birth but noble in wisdom. (4) Some man is ignoble by birth and ignoble in wisdom as well **217.** Men are of four kinds—**(vii) *Arya* and *arya drishti***—(1) Some man is *arya* (noble by birth) and *arya drishti* (noble in perception/faith) as well. (2) Some man is noble by birth but *anarya drishti* (ignoble in perception/faith). (3) Some man is ignoble by birth but noble in perception/faith. (4) Some man is ignoble by birth and ignoble in perception/faith as well.

२१८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जसीलाचारे, अज्जे णाममेगे अणज्जसीलाचारे, अणज्जे णाममेगे अज्जसीलाचारे, अणज्जे णाममेगे अणज्जसीलाचारे। २१९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जववहारे, अज्जे णाममेगे अणज्जववहारे, अणज्जे णाममेगे अज्जववहारे, अणज्जे णाममेगे अणज्जववहारे।

२१८. पुरुष चार प्रकार के होते है–(८) आर्य और आर्य शीलाचार–(१) कोई जाति से आर्य और आर्य शील–आचार वाला होता है; (२) कोई जाति से आर्य, किन्तु अनार्य शील–आचार वाला है, (३) कोई जाति से अनार्य, किन्तु आर्य शील–आचार वाला; और (४) कोई जाति से अनार्य और अनार्य शील–आचार वाला होता है। २१९. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(९) आर्य और आर्य व्यवहार–(१) कोई जाति से आर्य और आर्य व्यवहार वाला होता है, (२) कोई जाति से आर्य, किन्तु अनार्य व्यवहार वाला; (३) कोई जाति से अनार्य, किन्तु आर्य व्यवहार वाला; और (४) कोई जाति से अनार्य और अनार्य व्यवहार वाला होता है।

**218.** Men are of four kinds—**(viii) *Arya* and *arya sheel-achaar***—(1) Some man is *arya* (noble by birth) and *arya sheel-achaar* (noble in character and conduct) as well. (2) Some man is noble by birth but *anarya sheel-achaar* (ignoble in character and conduct) (3) Some man is ignoble by birth but noble in character and conduct (4) Some man is ignoble by birth and ignoble in character and conduct as well **219.** Men are of four kinds—**(ix) *Arya* and *arya vyavahar***—(1) Some man is *arya* (noble by birth) and *arya vyavahar* (noble in behaviour). (2) Some man is noble by birth but *anarya vyavahar* (ignoble in behaviour) (3) Some man is ignoble by birth but noble in behaviour. (4) Some man is ignoble by birth and ignoble in behaviour as well.

२२०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जपरक्कमे, अज्जे णाममेगे अणज्जपरक्कमे, अणज्जे णाममेगे अज्जपरक्कमे, अणज्जे णाममेगे अणज्जपरक्कमे। २२१. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जवित्ती, अज्जे णाममेगे अणज्जवित्ती, अणज्जे णाममेगे अज्जवित्ती, अणज्जे णाममेगे अणज्जवित्ती।

२२०. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१०) आर्य और आर्य पराक्रम–(१) कोई जाति से आर्य और आर्य पराक्रम वाला होता है; (२) कोई जाति से आर्य, किन्तु अनार्य पराक्रम वाला, (३) कोई जाति से अनार्य, किन्तु आर्य पराक्रम वाला, और (४) कोई जाति से अनार्य और अनार्य पराक्रम वाला होता है। २२१. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(११) आर्य और आर्य वृत्ति–(१) कोई जाति से आर्य और आर्य वृत्ति वाला; (२) कोई जाति से आर्य, किन्तु अनार्य वृत्ति वाला; (३) कोई जाति से अनार्य, किन्तु आर्य वृत्ति वाला; और (४) कोई जाति से अनार्य और अनार्य वृत्ति वाला होता है।

**220.** Men are of four kinds—**(x)** ***Arya* and *arya vyavahar***—(1) Some man is *Arya* (noble by birth) and *arya parakram* (noble in endeavour). (2) Some man is noble by birth but *anarya parakram* (ignoble in endeavour) (3) Some man is ignoble by birth but noble in endeavour. (4) Some man is ignoble by birth and ignoble in endeavour as well. **221.** Men are of four kinds—**(xi)** ***Arya* and *arya vritti***—(1) Some man is *arya* (noble by birth) and *arya vritti* (engaged in noble profession) as well. (2) Some man is noble but *anarya vritti* (engaged in ignoble profession) (3) Some man is ignoble but noble in livelihood (4) Some man is ignoble and engaged in ignoble profession as well

**२२२. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जजाती, अज्जे णाममेगे अणज्जजाती, अणज्जे णाममेगे अज्जजाती, अणज्जे णाममेगे अणज्जजाती। २२३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जभासी, अज्जे णाममेगे अणज्जभासी, अणज्जे णाममेगे अज्जभासी, अणज्जे णाममेगे अणज्जभासी।**

२२२. पुरुष चार प्रकार के होते हैं—(१२) आर्य और आर्य जाति—(१) कोई जाति से आर्य और आर्य जाति वाला, (२) कोई जाति से आर्य, किन्तु अनार्य जाति वाला, (३) कोई जाति से अनार्य, किन्तु आर्य जाति वाला, और (४) कोई जाति से अनार्य और अनार्य जाति वाला होता है। २२३. पुरुष चार प्रकार के होते हैं—(१३) **आर्य और आर्य भाषी**—(१) कोई जाति से आर्य और आर्य भाषा बोलने वाला; (२) कोई जाति से आर्य, किन्तु अनार्य भाषा बोलने वाला, (३) कोई जाति से अनार्य, किन्तु आर्य भाषा बोलने वाला; और (४) कोई जाति से अनार्य और अनार्य भाषा बोलने वाला होता है।

**222.** Men are of four kinds—**(xii)** ***Arya* and *arya jati***—(1) Some man is *arya* (noble by birth) and *arya jati* (noble of caste) as well. (2) Some man is noble but *anarya jati* (ignoble of caste). (3) Some man is ignoble but noble of caste. (4) Some man is ignoble and ignoble of caste. **223.** Men are of four kinds—**(xiii)** ***Arya* and *arya bhashi***—(1) Some man is *arya* (noble by birth) and *arya bhashi* (noble in speech; speaks *Aryan* language) as well (2) Some man is noble but *anarya bhashi* (ignoble in speech; speaks non-*Aryan* language). (3) Some man is ignoble but noble in speech. (4) Some man is ignoble and ignoble in speech as well.

**२२४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जओभासी, अज्जे णाममेगे अणज्जओभासी, अणज्जे णाममेगे अज्जओभासी, अणज्जे णाममेगे अणज्जओभासी। २२५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जसेवी, अज्जे णाममेगे अणज्जसेवी, अणज्जे णाममेगे अज्जसेवी, अणज्जे णाममेगे अणज्जसेवी।**

२२४. पुरुष चार प्रकार के होते हैं-(१४) आर्य और आर्यावभासी-(१) कोई जाति से आर्य और आर्य के समान दिखता है; (२) कोई जाति से अनार्य, किन्तु आर्य के समान; (३) कोई जाति से अनार्य, किन्तु आर्य के समान, और (४) कोई जाति से अनार्य और अनार्य के समान दिखता है। २२५. पुरुष चार प्रकार के होते हैं-(१५) आर्य और आर्यसेवी-(१) कोई जाति से आर्य और आर्यपुरुषों की सेवा करता है, (२) कोई जाति से आर्य, किन्तु अनार्य पुरुषों की सेवा करता है, (३) कोई पुरुष जाति से अनार्य, किन्तु आर्य पुरुषों की सेवा करता है, और (४) कोई जाति से अनार्य और अनार्य पुरुषो की सेवा करता है।

**224.** Men are of four kinds—**(xiv) *Arya* and *arya-avabhasi***—(1) Some man is *arya* (noble by birth) and *arya-avabhasi* (noble in appearance) as well (2) Some man is noble by birth but *anarya-avabhasi* (ignoble in appearance). (3) Some man is ignoble by birth but noble in appearance. (4) Some man is ignoble by birth and ignoble in appearance as well. **225.** Men are of four kinds—**(xv) *Arya* and *arya sevi***—(1) Some man is *arya* (noble by birth) and *arya sevi* (serves the noble) as well. (2) Some man is noble by birth but *anarya sevi* (serves the ignoble). (3) Some man is ignoble by birth but serves the noble. (4) Some man is ignoble by birth and serves the ignoble as well.

२२६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-अज्जे णाममेगे अज्जपरियाए, अज्जे णाममेगे अणज्जपरियाए, अणज्जे णाममेगे अज्जपरियाए, अणज्जे णाममेगे अणज्जपरियाए। २२७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-अज्जे णाममेगे अज्जपरियाले, अज्जे णाममेगे अणज्जपरियाले, अणज्जे णाममेगे अज्जपरियाले, अणज्जे णाममेगे अणज्जपरियाले।

२२६. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१६) आर्य और आर्यपर्याय-(श्रावक या साधु अवस्था वाला) (१) कोई जाति से आर्य और आर्यपर्याय वाला; (२) कोई जाति से आर्य, किन्तु अनार्यपर्याय वाला; (३) कोई जाति से अनार्य, किन्तु आर्यपर्याय वाला, और (४) कोई जाति से अनार्य और अनार्यपर्याय वाला होता है। २२७. पुरुष चार प्रकार के होते हैं-(१७) आर्य और आर्य परिवार-(१) कोई जाति से आर्य और आर्य परिवार वाला; (२) कोई जाति से आर्य, किन्तु अनार्य परिवार वाला; (३) कोई जाति से अनार्य, किन्तु आर्य परिवार वाला; और (४) कोई जाति से अनार्य और अनार्य परिवार वाला होता है।

**226.** Men are of four kinds—**(xvi) *Arya* and *arya paryaya***—(1) Some man is *arya* (noble by birth) and *arya paryaya* (lives in noble condition such as a good citizen or an ascetic). (2) Some man is noble by birth but *anarya paryaya* (does not live in noble condition). (3) Some man is ignoble by birth but lives in noble condition (4) Some man is ignoble by birth and lives in ignoble condition as well. **227.** Men are of four kinds—**(xvii) *Arya* and *arya parivar***—(1) Some man is *arya* (noble by birth) and

*arya parivar* (has a noble family) (2) Some man is noble but *anarya parivar* (has an ignoble family). (3) Some man is ignoble but has a noble family. (4) Some man is ignoble and has an ignoble family

**विवेचन**—इन सूत्रों मे आर्यअनार्य के १७ आलापक बताये है। प्रज्ञापनासूत्र के अनुसार आर्य नौ प्रकार के होते है। (१) **क्षेत्र आर्य**—जिसका जन्म आर्य क्षेत्र मे हुआ हो, (२) आर्य जाति मे उत्पन्न हुआ—**जाति आर्य**, (३) आर्य कुल मे जन्मा-**कुल आर्य**, (४) आर्यों जैसा श्रेष्ठ व्यवसाय करने वाला—**कर्म आर्य**, (५) निर्दोष शिल्प से आजीविका करने वाला—**शिल्प आर्य**, (६) आर्यावर्त की भाषा (सस्कृत—प्राकृत आदि) बोलने वाला—**भाषा आर्य**, (७) पाँच ज्ञान मे से किसी भी ज्ञान वाला—**ज्ञान आर्य**, (८) शुद्ध दृष्टि वाला—**दर्शन आर्य**, (९) श्रेष्ठ आचार का पालन करने वाला—**चारित्र आर्य**। टीकाकार ने आर्य के आठ गुण बताये है—शान्त, सहनशील, मनोजयी, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, दानशील, दयालु और विनम्र स्वभाव वाला। जिनमे ये गुण नही होते उन्हे अनार्य माना गया है। यहाँ बताये गये १७ आलापको मे इन गुणो के परिप्रेक्ष्य मे आर्य—अनार्य की व्याख्या करनी चाहिए। *(हिन्दी टीका, पृष्ठ ७६२)*

**Elaboration**—In the aforesaid aphorisms seventeen statements about *arya* and *anarya* have been given According to *Prajnapana Sutra aryas* (noble people, the *Aryans*) are of nine kinds—(1) *kshetra arya*—one born in the area inhabited by *aryas/Aryans*, (2) *jati arya*—born in *arya/Aryan* castes, (3) *kula arya*—born in *arya/Aryan* family, (4) *karma arya*—involved in business or profession associated with *aryas/Aryans*, (5) *shilp arya*—involved in *arya* (noble or faultless) craft for livelihood, (6) *bhasha arya*—speaking the languages (*Sanskrit, Prakrit* etc ) of *Aryavart* (the country of *Aryans*), (7) *jnana arya*—endowed with any of the five *jnanas*, (8) *darshan arya*—endowed with righteous perception/faith, and (9) *chaaritra arya*—endowed with righteous conduct. The commentator (*Tika*) has given eight qualities of an *arya* (noble person)—serene, tolerant, self-controlled, truth speaking, conqueror of senses, generous, kind and modest Those who are devoid of these qualities are called *anarya* The aforesaid seventeen statements should be seen in context of these qualities *(Hindi Tika, p 762)*

**२२८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अज्जे णाममेगे अज्जभावे, अज्जे णाममेगे अणज्जभावे, अणज्जे णाममेगे अज्जभावे, अणज्जे णाममेगे अणज्जभावे।**

२२८. आर्य और आर्यभाव की दृष्टि से पुरुष चार प्रकार के होते हैं—(१) कोई जाति से आर्य और आर्यभाव—सात्विक गुणो वाला होता है, (२) कोई जाति से आर्य किन्तु अनार्यभाव—(क्रोधादि भाव) वाला, (३) कोई जाति से अनार्य, किन्तु आर्यभाव वाला, और (४) कोई जाति से अनार्य और अनार्यभाव वाला होता है।

**228.** Men are of four kinds (in context of *arya* and *arya bhaava*)—(1) Some man is *arya* (noble by birth) and *arya bhaava* (having noble or pious nature) as well. (2) Some man is noble by birth but *anarya bhaava* (having ignoble or bad nature; anger and other passions). (3) Some man is *anarya* (ignoble by birth) but pious in nature. (4) Some man is ignoble by birth and ignoble in nature as well.

### *वृषभ–जाति–पद (वृषभ के साथ तुलनात्मक चार पद)* VRISHABH-JATI-PAD (SEGMENT OF BREED OF BULL)

२२९. (१) चत्तारि उसभा पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे, कुलसंपण्णे, बलसंपण्णे, रूवसंपण्णे। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे, जाव [ कुलसंपण्णे, बलसंपण्णे ] रूवसंपण्णे।

२३०. (२) चत्तारि उसभा पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णामं एगे णो कुलसंपण्णे, कुलसंपण्णे णामं एगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि कुलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो कुलसंपण्णे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, [ कुलसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि कुलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो कुलसंपण्णे। ]

२३१. (३) चत्तारि उसभा पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णामं एगे णो बलसंपण्णे, [ बलसंपण्णे णामं एगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो बलंसपण्णे। ]

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे [ णाममेगे णो बलसंपण्णे, बलसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो बलसंपण्णे। ]

२३२. (४) चत्तारि उसभा पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णामं एगे णो रूवसंपण्णे, [ रूवसंपण्णे णामं एगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो रूवसंपण्णे। ]

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे [ णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो रूवसंपण्णे। ]

२२९. वृषभ (बैल) चार प्रकार के होते है-(१) (१) जाति (मातृपक्ष) सम्पन्न, (२) कुल (पितृवंश) सम्पन्न, (३) बलसम्पन्न, (४) रूपसम्पन्न। इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं- जातिसम्पन्न, कुलसम्पन्न, बलसम्पन्न, रूपसम्पन्न (अगले सूत्रो मे इनके विभिन्न अग कहे है)।

२३०. वृषभ चार प्रकार के होते है-(२) (१) कोई बैल जाति से सम्पन्न, किन्तु कुल से सम्पन्न नहीं होता; (२) कोई कुलसम्पन्न होता है, किन्तु जाति से नही, (३) कोई जातिसम्पन्न भी होता है और कुल भी, और (४) कोई न जातिसम्पन्न और न ही कुलसम्पन्न होता है।

पुरुष भी चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष जातिसम्पन्न होता है, किन्तु कुलसम्पन्न नही होता, (२) कोई कुलसम्पन्न होता है, किन्तु जातिसम्पन्न नही, (३) कोई जातिसम्पन्न भी होता है और कुलसम्पन्न भी; और (४) कोई न जातिसम्पन्न होता है और न ही कुलसम्पन्न होता है।

२३१. वृषभ चार प्रकार के होते है-(३) (१) कोई साड जातिसम्पन्न होता है, किन्तु बलसम्पन्न नहीं, (२) कोई बलसम्पन्न होता है, किन्तु जातिसम्पन्न नही, (३) कोई जातिसम्पन्न भी होता है और बलसम्पन्न भी, और (४) कोई न जातिसम्पन्न और न बलसम्पन्न होता है।

पुरुष भी चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष जातिसम्पन्न, किन्तु बलसम्पन्न नही होता, (२) कोई बलसम्पन्न, किन्तु जातिसम्पन्न नही, (३) कोई जातिसम्पन्न भी और बलसम्पन्न भी, और (४) कोई न जातिसम्पन्न और न बलसम्पन्न होता है।

२३२. वृषभ चार प्रकार के होते है-(४) (१) कोई बैल जातिसम्पन्न होता है, किन्तु रूपसम्पन्न नही होता, (२) कोई रूपसम्पन्न होता है, किन्तु जातिसम्पन्न नही, (३) कोई जातिसम्पन्न भी और रूपसम्पन्न भी; और (४) कोई न जातिसम्पन्न और न रूपसम्पन्न ही होता है।

पुरुष भी चार प्रकार के होते है-(१) कोई जातिसम्पन्न होता है, किन्तु रूपसम्पन्न नही होता, (२) कोई रूपसम्पन्न होता है, किन्तु जातिसम्पन्न नही, (३) कोई जातिसम्पन्न भी और रूपसम्पन्न भी, और (४) कोई न जातिसम्पन्न होता है और न रूपसम्पन्न।

**229.** *Vrishabh* (bull) are of four kinds—(i) (1) *jati sampanna* (of good maternal lineage), (2) *kula sampanna* (of good paternal lineage), (3) *bal sampanna* (endowed with physical strength, strong), and (4) *rupa sampanna* (endowed with good appearance, beautiful). Similarly men are also of four types (various alternatives of these are given in the following aphorisms).

**230.** *Vrishabh* (bull) are of four kinds—(ii) (1) Some bull is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *kula sampanna* (of good paternal lineage) (2) Some bull is *kula sampanna* and not *jati sampanna* (3) Some bull is both *jati sampanna* and *kula sampanna*. (4) Some bull is neither *jati sampanna* nor *kula sampanna.*

*Purush* (men) are also of four kinds—(1) Some man is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *kula sampanna* (of good paternal

lineage). (2) Some man is *kula sampanna* and not *jati sampanna*. (3) Some man is both *jati sampanna* and *kula sampanna*. (4) Some man is neither *jati sampanna* nor *kula sampanna*

**231.** *Vrishabh* (bull) are of four kinds—(iii) (1) Some bull is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *bal sampanna* (strong). (2) Some bull is *bal sampanna* (strong) and not *jati sampanna*. (3) Some bull is both *jati sampanna* and *bal sampanna*. (4) Some bull is neither *jati sampanna* nor *bal sampanna*

*Purush* (men) are also of four kinds—(1) Some man is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *bal sampanna* (strong). (2) Some man is *bal sampanna* (strong) and not *jati sampanna*. (3) Some man is both *jati sampanna* and *bal sampanna* (4) Some man is neither *jati sampanna* nor *bal sampanna*.

**232.** *Vrishabh* (bull) are of four kinds—(iv) (1) Some bull is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *rupa sampanna* (beautiful) (2) Some bull is *rupa sampanna* and not *jati sampanna* (3) Some bull is both *jati sampanna* and *rupa sampanna* (4) Some bull is neither *jati sampanna* nor *rupa sampanna*.

*Purush* (men) are also of four kinds—(1) Some man is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *rupa sampanna* (beautiful). (2) Some man is *rupa sampanna* and not *jati sampanna*. (3) Some man is both *jati sampanna* and *rupa sampanna*. (4) Some man is neither *jati sampanna* nor *rupa sampanna*.

### *वृषभ–कुल–पद (दो पद)* VRISHABH-KULA-PAD (SEGMENT OF BREED OF BULL)

**२३३.** (१) चत्तारि उसभा पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णामं एगे णो बलसंपण्णे, [बलसंपण्णे णामं एगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो बलसंपण्णे।]

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, [बलसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो बलसंपण्णे।]

**२३४.** (२) चत्तारि उसभा पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णामं एगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णामं एगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो रूवसंपण्णे।

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा–कुलसंपण्णे णाममेगे [ णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो कुलसम्पण्णे णो रूवसंपण्णे। ]**

२३३. (१) वृषभ चार प्रकार के होते है–(१) कोई बैल कुलसम्पन्न होता है किन्तु बलसम्पन्न नहीं, (२) कोई बलसम्पन्न होता है, किन्तु कुलसम्पन्न नही, (३) कोई कुलसम्पन्न भी होता है और बलसम्पन्न भी; और (४) कोई न कुलसम्पन्न होता है, न बलसम्पन्न।

पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष कुलसम्पन्न होता है, किन्तु बलसम्पन्न नही, (२) कोई बलसम्पन्न होता है, किन्तु कुलसम्पन्न नही, (३) कोई कुलसम्पन्न भी होता है और बलसम्पन्न भी, और (४) कोई न कुलसम्पन्न होता है न बलसम्पन्न।

२३४. (२) वृषभ चार प्रकार के होते है–(१) कोई कुलसम्पन्न होता है, किन्तु रूपसम्पन्न नही होता; (२) कोई रूपसम्पन्न होता है, किन्तु कुलसम्पन्न नही, (३) कोई कुलसम्पन्न भी होता है और रूपसम्पन्न भी, और (४) कोई न कुलसम्पन्न होता है न रूपसम्पन्न।

पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष कुलसम्पन्न होता है, किन्तु रूपसम्पन्न नही होता, (२) कोई रूपसम्पन्न होता है, किन्तु कुलसम्पन्न नही, (३) कोई कुलसम्पन्न भी होता है और रूपसम्पन्न भी, और (४) कोई न कुलसम्पन्न होता है और न रूपसम्पन्न।

**233.** (i)*Vrishabh* (bull) are of four kinds—(1) Some bull is *kula sampanna* (of good paternal lineage) and not *bal sampanna* (strong) (2) Some bull is *bal sampanna* (strong) and not *kula sampanna* (3) Some bull is both *kula sampanna* and *bal sampanna* (4) Some bull is neither *kula sampanna* nor *bal sampanna*

*Purush* (men) are also of four kinds—(1) Some man is *kula sampanna* (of good paternal lineage) and not *bal sampanna* (strong) (2) Some man is *bal sampanna* and not *kula sampanna* (3) Some man is both *kula sampanna* and *bal sampanna* (4) Some man is neither *kula sampanna* nor *bal sampanna*

**234.** (ii)*Vrishabh* (bull) are of four kinds—(1) Some bull is *kula sampanna* (of good paternal lineage) and not *rupa sampanna* (beautiful) (2) Some bull is *rupa sampanna* and not *kula sampanna* (3) Some bull is both *kula sampanna* and *rupa sampanna* (4) Some bull is neither *kula sampanna* nor *rupa sampanna*

*Purush* (men) are also of four kinds—(1) Some man is *kula sampanna* (of good paternal lineage) and not *rupa sampanna* (beautiful). (2) Some man is *rupa sampanna* and not *kula sampanna*. (3) Some man is both *kula sampanna* and *rupa sampanna* (4) Some man is neither *kula sampanna* nor *rupa sampanna*

**वृषभ–बल–पद VRISHABH-BAL-PAD (SEGMENT OF STRENGTH OF BULL)**

**२३५. चत्तारि उसभा पण्णत्ता, तं जहा—बलसंपण्णे णामं एगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णामं एगे णो बलसंपण्णे, एगे बलसंपण्णेवि रूपसंपण्णेवि, एगे णो बलसंपण्णे णो रूवसंपण्णे।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बलसंपण्णे णाममेगे [ णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, एग बलसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो बलसंपण्णे णो रूवसंपण्णे। ]**

२३५. वृषभ चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई बैल बलसम्पन्न होता है, किन्तु रूपसम्पन्न नहीं होता; (२) कोई रूपसम्पन्न होता है, किन्तु बलसम्पन्न नही, (३) कोई बलसम्पन्न भी होता है और रूपसम्पन्न भी; और (४) कोई न बलसम्पन्न होता है न रूपसम्पन्न।

पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष बलसम्पन्न होता है, किन्तु रूपसम्पन्न नही होता, (२) कोई रूपसम्पन्न होता है, किन्तु बलसम्पन्न नहीं; (३) कोई बलसम्पन्न भी होता है और रूपसम्पन्न भी; और (४) कोई न बलसम्पन्न होता है और न रूपसम्पन्न।

**235.** *Vrishabh* (bull) are of four kinds—(1) Some bull is *bal sampanna* (strong) and not *rupa sampanna* (beautiful) (2) Some bull is *rupa sampanna* and not *bal sampanna*. (3) Some bull is both *bal sampanna* and *rupa sampanna* (4) Some bull is neither *bal sampanna* nor *rupa sampanna*

*Purush* (men) are also of four kinds—(1) Some man is *bal sampanna* (strong) and not *rupa sampanna* (beautiful) (2) Some man is *rupa sampanna* and not *bal sampanna* (3) Some man is both *bal sampanna* (strong) and *rupa sampanna* (beautiful) (4) Some man is neither *bal sampanna* nor *rupa sampanna*.

विवेचन—पशु जाति मे गौवंश उत्तम माना गया है। गाय की तरह वृषभ (साड या बैल) भी मगल स्वरूप होता है; भगवान ऋषभदेव की माता ने सर्वप्रथम वृषभ का स्वप्न देखा था। जो वृषभ उत्तम माता-पिता की सन्तान है, वह जाति व कुलसम्पन्न कहा जाता है। भार वहन के समर्थ वृषभ बलसम्पन्न तथा शरीर से सुन्दर हृष्ट-पुष्ट रूपसम्पन्न कहा जाता है। इन गुणो से पुरुष के साथ तुलना की गई है—जाति की उच्चता से, लज्जाशील पाप-भीरु, अच्छी प्रकृति वाला, कुल की उच्चता से, गभीर, धीर, उद्यमी होता है। जिसमे दोनो विशेषताएँ होती हैं, वह बलवान व रूपवान भी होता है। *(हिन्दी टीका, पृ. ७६७)*

**Elaboration**—In the animal kingdom cow is believed to be the best. Like cow, bull is also considered auspicious; the first thing *Bhagavan Risabhadeva's* mother saw in her great dreams was a bull. A bull bred by good pedigree of both bull and cow is called a bull of good *kula* or paternal lineage (*kula sampanna*) and good *jati* or maternal lineage (*jati*

*sampanna*). A bull strong enough to carry heavy burden is called *bal sampanna* A bull with healthy and beautiful body is called *rupa sampanna* These attributes have been matched with qualities of man. Good maternal lineage is believed to impart qualities of modesty, both god-fear from sin and good nature Good paternal lineage is believed to impart qualities of sobriety, patience, and diligence. One who is endowed with both these qualities, he is also strong and beautiful *(Hindi Tika, p. 767)*

### *हस्ति-पद (चार पद)* HASTI-PAD (SEGMENT OF ELEPHANT)

**२३६. चत्तारि हत्थी पण्णत्ता, तं जहा-भद्दे, मंदे, मिए, संकिण्णे। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-भद्दे, मंदे, मिए, संकिण्णे।**

२३६. हाथी चार प्रकार के होते है-(१) **भद्र**-धैर्य, वीर्य, वेग आदि गुण वाला। (२) **मन्द**-धैर्य आदि गुणो की मन्दता वाला। (३) **मृग**-हरिण के समान छोटे दुर्बल शरीर और भीरुता वाला। (४) **संकीर्ण**-उक्त तीनो जाति के हाथियो के मिश्रित गुण वाला। इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है-(१) **भद्रपुरुष**-धैर्य-वीर्यादि उत्कृष्ट गुणो की प्रकर्षता वाला। (२) **मन्दपुरुष**-धैर्य-वीर्यादि गुणो की मन्दता वाला। (३) **मृगपुरुष**-छोटे, दुर्बल शरीर व भीरु स्वभाव वाला। (४) **संकीर्णपुरुष**-उक्त तीनो जाति के पुरुषो के मिश्रित गुण वाला।

**236.** *Hasti* (elephants) are of four kinds—(1) *Bhadra*—excellent in good qualities like composure, strength and speed (2) *Mand*—mediocre in good qualities like composure, strength and speed (3) *Mrig*—weak and cowardly like a deer (4) *Sankirna*—having mixed attributes of the said three classes of elephants In the same way *manushya* (men) are of four kinds—(1) *Bhadra*—excellent in good qualities like composure, strength and speed (2) *Mand*—mediocre in good qualities like composure, strength and speed (3) *Mrig*—weak and cowardly like a deer. (4) *Sankirna*—having mixed attributes of the said three classes of men

**२३७. (१) चत्तारि हत्थी पण्णत्ता, तं जहा-भद्दे णाममेगे भद्दमणे, भद्दे णाममेगे मंदमणे, भद्दे णाममेगे मियमणे, भद्दे णाममेगे संकिण्णमणे। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-भद्दे णाममेगे भद्दमणे, भद्दे णाममेगे मंदमणे, भद्दे णाममेगे मियमणे, भद्दे णाममेगे संकिण्णमणे।**

**२३८. (२) चत्तारि हत्थी पण्णत्ता, तं जहा-मंदे णाममेगे भद्दमणे, मंदे णाममेगे मंदमणे, मंदे णाममेगे मियमणे, मंदे णाममेगे संकिण्णमणे। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-मंदे णाममेगे भद्दमणे, [ मंदे णाममेगे मंदमणे, मंदे णाममेगे मियमणे, मंदे णाममेगे संकिण्णमणे। ]**

**२३९. (३) चत्तारि हत्थी पण्णत्ता, तं जहा–मिए णाममेगे भद्दमणे, मिए णाममेगे मंदमणे, मिए णाममेगे मियमणे, मिए णाममेगे संकिण्णमणे। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–मिए णाममेगे भद्दमाणे, [ मिए णाममेगे मंदमणे, मिए णाममेगे मियमणे, मिए णाममेगे संकिण्णमणे। ]**

**२४०. (४) चत्तारि हत्थी पण्णत्ता, तं जहा–संकिण्णे णाममेगे भद्दमणे, संकिण्णे णाममेगे मंदमणे, संकिण्णे णाममेगे मियमणे, संकिण्णे णाममेगे संकिण्णमणे। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–संकिण्णे णाममेगे भद्दमणे, [ संकिण्णे णाममेगे मंदमणे, संकिण्णे णाममेगे मियमणे, ] संकिण्णे णाममेगे संकिण्णमणे।**

२३७. हाथी चार प्रकार के होते हैं–(१) (१) **भद्र और भद्रमन**–कोई हाथी जाति से भद्र होता है और भद्र मन वाला (धीर) भी होता है। (गध हस्ती इसी भंग में समाविष्ट है), (२) **भद्र और मन्दमन**–कोई हाथी जाति से भद्र, किन्तु मन्द मन वाला होता है। (३) **भद्र और मृगमन**–कोई हाथी जाति से भद्र, किन्तु मृग जैसा मन वाला होता है। (४) **भद्र और संकीर्णमन**–कोई हाथी जाति से भद्र, किन्तु सकीर्ण मन वाला होता है। इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं–(१) **भद्र और भद्रमन**–कोई पुरुष भद्र (कुलीन) और भद्र मन वाला होता है। (२) **भद्र और मंदमन**–कोई पुरुष कुल से भद्र, किन्तु मंद मन वाला होता है। (३) **भद्र और मृगमन**–कोई पुरुष भद्र, किन्तु मृग मन वाला होता है। (४) **भद्र और संकीर्णमन**–कोई पुरुष भद्र, किन्तु सकीर्ण मन वाला होता है।

२३८. हाथी चार प्रकार के होते है–(२) (१) **मन्द और भद्रमन**–कोई हाथी जाति से मन्द, किन्तु भद्र मन वाला होता है। (२) **मन्द और मन्दमन**–कोई हाथी जाति से मन्द और मन्द मन वाला होता है। (३) **मन्द और मृगमन**–कोई हाथी जाति से मन्द और मृग मन वाला होता है। (४) **मन्द और संकीर्णमन**–कोई हाथी जाति से मन्द और संकीर्ण मन वाला होता है। इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) **मन्द और भद्रमन**–कोई पुरुष स्वभाव से मन्द किन्तु भद्र मनवाला होता है, (२) **मन्द और मन्दमन**–कोई पुरुष स्वभाव से मन्द और मन्द मन वाला, (३) **मन्द और मृगमन**–कोई पुरुष स्वभाव से मन्द और मृग जैसा मन वाला; और (४) **मन्द और संकीर्णमन**–कोई पुरुष स्वभाव से मन्द और संकीर्ण मन वाला होता है।

२३९. हाथी चार प्रकार के होते है–(३) (१) **मृग और भद्रमन**–कोई हाथी जाति से मृग (भीरु) किन्तु भद्र मन वाला (धैर्यवान्); (२) **मृग और मन्दमन**–कोई हाथी जाति से मृग और मन्द मन वाला, (कम धैर्य वाला) (३) **मृग और मृगमन**–कोई हाथी जाति से मृग और मृग जैसा मन वाला, और (४) **मृग और संकीर्णमन**–कोई हाथी जाति से मृग और संकीर्ण मन वाला होता है। इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) मृग और भद्र मन। (२) मृग और मन्दमन। (३) मृग और मृगमन। (४) मृग और संकीर्णमन।

२४०. हाथी चार प्रकार के होते हैं–(४) (१) **संकीर्ण और भद्रमन**–कोई हाथी जाति से संकीर्ण, किन्तु भद्र मन वाला होता है। (२) **संकीर्ण और मन्दमन**–कोई हाथी जाति से संकीर्ण और मन्द मन वाला होता है। (३) **संकीर्ण और मृगमन**–कोई हाथी जाति से संकीर्ण और मृग मन वाला होता है। (४) **संकीर्ण और संकीर्णमन**–कोई हाथी जाति से संकीर्ण और संकीर्ण मन वाला होता है। इसी प्रकार पुरुष भी चार

प्रकार के होते हैं-(१) संकीर्ण और भद्रमन। (२) संकीर्ण और मन्दमन। (३) संकीर्ण और मृगमन। (४) संकीर्ण और संकीर्णमन।

**237.** *Hasti* (elephants) are of four kinds—(1) (1) *Bhadra* and *bhadra man*—some elephant is *bhadra* (excellent by birth) and *bhadra man* (excellent in mind) (like a *Gandhahasti*) (2) *Bhadra* and *mand man*—some elephant is *bhadra* (excellent by birth) and *mand man* (mediocre in mind). (3) *Bhadra* and *mrig man*—some elephant is *bhadra* (by birth) and *mrig man* (deer-like coward in mind). (4) *Bhadra* and *sankirna man*—some elephant is *bhadra* (excellent by birth) and *sankirna man* (having mixed attributes of mind).

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) *Bhadra* and *bhadra man*—some man is *bhadra* (excellent by birth) and *bhadra man* (excellent in mind). (2) *Bhadra* and *mand man*—some man is *bhadra* (excellent by birth) and *mand man* (mediocre in mind) (3) *Bhadra* and *mrig man*—some man is *bhadra* (excellent by birth) and *mrig man* (deer-like in mind). (4) *Bhadra* and *sankirna man*—some man is *bhadra* (excellent by birth) and *sankirna man* (having mixed attributes of mind)

**238.** *Hasti* (elephant) are of four kinds—(2) (1) *Mand* and *bhadra man*—some elephant is *mand* (mild by birth) and *bhadra man* (excellent in mind). (2) *Mand* and *mand man*—some elephant is *mand* (mild by birth) and *mand man* (mediocre in mind) (3) *Mand* and *mrig man*—some elephant is *mand* (mild by birth) and *mrig man* (deer-like in mind) (4) *Mand* and *sankirna man*—some elephant is *mand* (mild by birth) and *sankirna man* (having mixed attributes of mind)

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) *Mand* and *bhadra man*—some man is *mand* (mild by birth) and *bhadra man* (excellent in mind) (2) *Mand* and *mand man*—some man is *mand* (mild by birth) and *mand man* (mediocre in mind) (3) *Mand* and *mrig man*—some man is *mand* (mild by birth) and *mrig man* (deer-like in mind) (4) *Mand* and *sankirna man*—some man is *mand* (mild by birth) and *sankirna man* (having mixed attributes of mind).

**239.** *Hasti* (elephant) are of four kinds—(3) (1) *Mrig* and *bhadra man*—some elephant is *mrig* (deer-like by birth) and *bhadra man* (excellent in mind) (2) *Mrig* and *mand man*—some elephant is *mrig* (deer-like by birth) and *mand man* (mediocre in mind) (3) *Mrig* and *mrig man*—some elephant is *mrig* (deer-like by birth) and *mrig man* (deer-like

in mind). (4) *Mrig* and *sankirna man*—some elephant is *mrig* (deer-like by birth) and *sankirna man* (having mixed attributes of mind).

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) *Mrig* and *bhadra man*. (2) *Mrig* and *mand man*. (3) *Mrig* and *mrig man*. (4) *Mrig* and *sankirna man*

**240.** *Hasti* (elephant) are of four kinds—(4) (1) *Sankirna* and *bhadra man*—some elephant is *sankirna* (of mixed breed by birth) and *bhadra man* (excellent in mind) (2) *Sankirna* and *mand man*—some elephant is *sankirna* (by birth) and *mand man* (mediocre in mind). (3) *Sankirna* and *mrig man*—some elephant is *sankirna* (by birth) and *mrig man* (deer-like in mind) (4) *Sankirna* and *sankirna man*—some elephant is *sankirna* (by birth) and *sankirna man* (having mixed attributes of mind).

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) *Sankirna* of mixed breed and *bhadra man* excellent mind (2) *Sankirna* and *mand man* mediocre mind (3) *Sankirna* and *mrig man*. (4) *Sankirna* of mixed breed and *sankirna man*

**विवेचन**—वृषभ की तरह स्थलचर प्राणियो मे हाथी भी उत्तम और मगल रूप माना जाता है। स्वाभिमान, दीर्घदर्शिता, विवेक, धीरता आदि अनेक गुणों से उसकी ख्याति है। स्वप्न मे हाथी देखना मगलकारी है। हाथी को चार भगो मे विभक्त कर यहाँ उसके साथ मनुष्य की तुलना की गई है।

**Elaboration**—Like bull, elephant is also considered good and auspicious among terrestrial beings It is well known for its grace, farsightedness, balance, poise and many other good qualities. It is auspicious to see an elephant in one's dream. It has been compared here with man by a qualitative classification into four categories

***हस्ति–लक्षण की संग्रहणी गाथाएँ*** **(COLLATIVE VERSES OF CHARACTERISTIC OF ELEPHANT)**

**मधुगुलिय–पिंगलक्खो, अणुपुव्व–सुजाय–दीहणंगूलो।**
**पुरओ उदग्गधीरो, सव्वंगसमाधितो भद्दो॥१॥**

**चल–बहल–विसम–चम्मो, थूलसिरो थूलएण पेएण।**
**थूलणह–दंतवालो, हरिपिंगल–लोयणो मंदो॥२॥**

**तणुओ तणुयग्गीवो, तणुयतओ तणुयदंत–णहवालो।**
**भीरु तत्थुव्विग्गो, तासी य भवे मिए णामं॥३॥**

**एतेसिं हत्थीणं थोवा थोवं, तु जो अणुहरति हत्थी।**
**रूवेण व सीलेण व, सो संकिण्णोत्ति णायव्वो॥४॥**

**भद्दो मज्जइ सरए, मंदो उण मज्जते वसंतंमि।**
**मिउ मज्जति हेमंते, संकिण्णो सव्वकालंमि॥५॥**

(१) जिसकी आँखे शहद की गोली के समान भूरे रग की हो, जो उचित काल-मर्यादा से उत्पन्न हुआ हो, जिसकी पूँछ लम्बी हो, जिसका अग्र भाग उन्नत हो, जो धीर हो, जिसके सब अंग प्रमाण और लक्षणयुक्त हो, वह **भद्र** जाति का हाथी है।

(२) जिसकी चमडी शिथिल, शरीर स्थूल और विषम (रेखाओ से युक्त) हो, जिसका शिर और पूँछ का मूल भाग स्थूल हो, जिसके नख, दन्त और केश मोटे हो, जिसके नेत्र सिह के समान भूरे रग के हो, वह **मन्द** जाति का हाथी है।

(३) जिसका शरीर पतला हो, कण्ठ, चमडी, नख, दन्त और केश भी पतले हों, जो स्वभाव से डरपोक, जल्दी थकता और उद्विग्न होता हो तथा दूसरो को कष्ट देता हो, वह **मृग** जाति का हाथी है।

(४) ऊपर कहे हुए तीनो जाति के हाथियो के कुछ-कुछ लक्षणो का जिसमे मिश्रण हो, रूप से और शील (स्वभाव) से जो उनका अनुकरण करता हो, अर्थात् जिसमे भद्र, मन्द और मृग जाति के हाथी की कुछ-कुछ समानता पाई जाती है, वह **संकीर्ण** जाति का हाथी कहलाता है।

(५) भद्र हाथी शरद् ऋतु मे मदयुक्त होता है। मद झरता है। मन्द हाथी वसन्त ऋतु मे मदयुक्त होता है। मृग हाथी हेमन्त ऋतु मे मदयुक्त होता है और सकीर्ण हाथी सभी ऋतुओ मे मदयुक्त रहता है। भद्र जाति का हाथी अपने प्रतिद्वद्वी का सामना दाँतो से करता है-मद शुडा दड से, मृग जाति का शरीर से या ओठो से तथा सकीर्ण जाति का समस्त अगो से प्रहार करता है।

(1) An elephant of *bhadra* breed is that whose eyes are brown like honey drop, which is born at proper time after proper gestation period, whose tail is long, whose front is raised, which is serene and whose every part is in right proportion and having good signs

(2) An elephant of *mand* breed is that whose skin is loose, whose body is flabby and disproportioned, whose head and base of tail are fat, whose nail, tusks and hair are thick and whose eyes are brown like a lion

(3) An elephant of *mrig* breed is that whose body and neck are slender, whose skin, nails, tusks and hair are thin, which is coward by nature, who feels tired and gets disturbed soon and who inflicts pain on others

(4) An elephant of *sankirna* breed is that which has a mixture of some attributes of each of the aforesaid breeds of elephants, which resembles them in appearance and nature. In other words that which has some resemblance with each of the said breeds, namely *bhadra*, *mand* and *mrig*

(5) A *bhadra* elephant ruts during the autumn season, it oozes at temples. A *mand* elephant ruts during spring season. A *mrig* elephant ruts during the winter season. A *sankurna* elephant ruts in all seasons A *bhadra* elephant fights its adversary with its tusks, a *mand* elephant fights with its trunk, a *mrig* elephant fights with body or lips and a *sankirna* elephant fights with every part of its body.

### विकथा-पद VIKATHA-PAD (SEGMENT OF GOSSIP)

**२४१. चत्तारि विकहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—इत्थिकहा, भत्तकहा, देसकहा, रायकहा।**

२४१. विकथा (संयम-साधना मे बाधा पहुँचाने वाली कथा) चार प्रकार की है-(१) स्त्रीकथा, (२) भक्तकथा (भोजन-सम्बन्धी), (३) देशकथा, (४) राजकथा।

**241.** *Vikatha* (gossip that hinders spiritual practices) is of four kinds—(1) *stree-katha* (gossip about women), (2) *bhakt-katha* (gossip about food), (3) *desh-katha* (gossip about country), and (4) *raj-katha* (gossip about king)

**२४२. (१) इत्थिकहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थीणं जाइकहा, इत्थीणं कुलकहा, इत्थीणं रूवकहा, इत्थीणं णेवत्थकहा।**

२४२. (१) स्त्रीकथा चार प्रकार की है-(१) स्त्रियो की जाति की कथा, (२) स्त्रियो के कुल की कथा, (३) स्त्रियो के रूप की कथा, (४) स्त्रियों के नेपथ्य (वेश-भूषा) की कथा।

**242.** (1) *Stree-katha* (talk about women) is of four kinds—(1) talk about castes of women, (2) talk about families of women, (3) talk about appearance or beauty of women, and (4) talk about adornments and dress (*naipathya*) of women.

**२४३. (२) भत्तकहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—भत्तस्स आवावकहा, भत्तस्स णिव्वावकहा, भत्तस्स आरंभकहा, भत्तस्स णिट्ठाणकहा।**

२४३. (२) भक्तकथा चार प्रकार की है-(१) **आवापकथा**-रसोई की सामग्री आटा, दाल, नमक आदि की चर्चा। (२) **निर्वापकथा**-पके या बिना पके अन्न या व्यजनादि की चर्चा। (३) **आरम्भकथा**-रसोई बनाने के लिए आवश्यक सामान और धन आदि की चर्चा। (४) **निष्ठान्नकथा**-रसोई मे लगे सामान और धनादि की चर्चा।

**243.** (1) *Bhakt-katha* (talk about food) is of four kinds—(1) *avapakatha*—talk about cooking material like flour, pulses, salt etc., (2) *nirvapakatha*—talk about cooked or uncooked grains and other eatables, (3) *arambh-katha*—(talk about ingredients and money needed

for cooking food, and (4) *nishthannakatha*—talk about ingredients and money utilized in cooking food.

**२४४. (३) देसकहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—देशविहिकहा, देसविकप्पकहा, देसच्छंदकहा, देसणेवत्थकहा।**

२४४. (३) देशकथा चार प्रकार की है-(१) **देशविधिकथा**—विभिन्न देशों में प्रचलित विधि-विधानों की चर्चा। (२) **देशविकल्पकथा**—विभिन्न देशो के अन्न की तथा परकोटे आदि की चर्चा। (३) **देशच्छन्दकथा**—विभिन्न देशों के विवाहादि सम्बन्धी रीति-रिवाजो की चर्चा। (४) **देशनेपथ्यकथा**—विभिन्न देशों के वेश-भूषादि की चर्चा।

**244.** (3) *Desh-katha* (talk about country) is of four kinds—(1) *desh-vidhi-katha*—talk about customs and laws prevalent in various countries, (2) *desh-vikalp-katha*—talk about food grains and boundary walls etc in various countries, (3) *deshachchhand-katha*—talk about customs and rituals of marriage and other such occasions in various countries, and (4) *desh-naipathya-katha*—talk about dresses and other adornments in various countries

**२४५. (४) रायकहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—रण्णो अतियाणकहा, रण्णो णिज्जाणकहा, रण्णो बलवाहणकहा, रण्णो कोसकोट्ठागारकहा।**

२४५. (४) राजकथा चार प्रकार की है-(१) **राज-अतियान कथा**—राजा के नगर-प्रवेश के समारम्भ की चर्चा। (२) **राज-निर्याण कथा**—राजा के युद्ध आदि के लिए नगर से निकलने की चर्चा। (३) **राज-बल-वाहन कथा**—राजा के सैन्य, सैनिको और वाहनो की चर्चा। (४) **राज-कोष-कोष्ठागार कथा**—राजा के खजाने और धान्य-भण्डार आदि की चर्चा।

**245.** (4) *Raj-katha* (talk about king) is of four kinds—(1) *raj-atiyan-katha*—talk about celebrations of a king's entry in the city, (2) *raj-niryan-katha*—talk about a king's departure from the city for a war or other purpose, (3) *Raj-bal-vahan-katha*—talk about a king's army, soldiers and vehicles, and (4) *raj-kosh-koshtagar-katha*—talk about a king's treasury and granary etc

### *कथा-पद* KATHA-PAD (SEGMENT OF RELIGIOUS DISCOURSE)

**२४६. चउव्विहा कहा पण्णत्ता, तं जहा—अक्खेवणी, विक्खेवणी, संवेयणी, णिवेदणी।**

२४६. कथा-(धर्मकथा) चार प्रकार की है-(१) **आक्षेपणी कथा**—ज्ञान, दर्शन आदि के प्रति आकर्षण उत्पन्न करने वाली कथा। (२) **विक्षेपणी कथा**—पर-मत का कथन कर स्व-मत की स्थापना करने वाली कथा। (३) **संवेदनी कथा**—शरीर की अशुचिता आदि दिखाकर वैराग्य उत्पन्न करने वाली कथा, और (४) **निर्वेदनी कथा**—कर्मों के फल बतलाकर अशुभ कर्मों से विरक्ति उत्पन्न करने वाली कथा।

**246.** *Katha* (religious discourse) is of four kinds—(1) *aakshepani-katha*—discourse that creates attraction for right knowledge, right perception/faith etc., (2) *vikshepani-katha*—discourse aimed at establishing one's own religion after stating other religions, (3) *samvedani-katha*—discourse that inspires detachment by showing ugliness and other detestable attributes of body, and (4) *nirvedani-katha*—discourse that inspires apathy for sinful deeds by enumerating bitter fruits of *karmas*.

२४७. (१) **अक्खेवणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा–आयारअक्खेवणी, ववहारअक्खेवणी, पण्णत्तिअक्खेवणी, दिट्ठिवायअक्खेवणी।**

२४७. (१) आक्षेपणी कथा चार प्रकार की है–(१) **आचारआक्षेपणी**–साधु और श्रावक के आचार का वर्णन कर श्रोता को आकर्षित करना। (२) **व्यवहाराक्षेपणी**–व्यवहार–प्रायश्चित्त लेने और न लेने के गुण–दोषों की चर्चा। (३) **प्रज्ञप्ति–आक्षेपणी**–संशयग्रस्त श्रोता के संशय को दूर कर उन्हें सम्बोधित करना। (४) **दृष्टिवादाक्षेपणी**–विभिन्न नयो की दृष्टियो से श्रोता की योग्यतानुसार तत्त्व का निरूपण करना।

**247.** (1) *Aakshepani-katha* is of four kinds—(1) *achar-akshepani*—to attract audience by describing the conduct of ascetic and *shravak*, (2) *vyavahar-akshepani*—discussion about merits and faults of accepting formal atonement, (3) *prajnapti-akshepani*—to address a wavering audience after removing its doubts, and (4) *drishtivad-akshepani*—to elaborate fundamentals from different standpoints (*naya*) according to the ability of the listener

२४८. (२) **विक्खेवणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा–(१) ससमयं कहेइ, ससमयं कहित्ता परसमयं कहेइ, (२) परसमयं कहेत्ता ससमयं ठावइत्ता भवति, (३) सम्मावायं कहेइ, सम्मावायं कहेत्ता मिच्छावायं कहेइ, (४) मिच्छावायं कहेत्ता सम्मावायं ठाइवत्ता भवति।**

२४८. (२) **विक्षेपणी** कथा चार प्रकार की है। जैसे–(१) पहले स्व–समय (स्व–सिद्धान्त) को कहना, पुनः स्व–समय कहकर पर–समय (पर–सिद्धान्त) को कहना। (२) पहले पर–समय को कहना, पुनः स्व–समय को कहकर उसकी स्थापना करना। (३) पर–समय–गत सम्यक् तत्त्वों का कथन कर पुनः उनके मिथ्या तत्त्वों को कहना। अथवा–आस्तिकवाद का निरूपण कर नास्तिकवाद का निरूपण करना। (४) पर–समय–गत मिथ्या तत्त्वों का कथन कर सम्यक् तत्त्व का निरूपण करना।

**248.** (2) *Vikshepani-katha* is of four kinds—(1) To state *sva-samaya* (one's own doctrine), to repeat it again and then to state *par-samaya* (other doctrines). (2) To state other doctrines first and then to state and establish one's own doctrine. (3) To state correct principles of other

doctrines and then state wrong principles of other doctrines. (4) To state wrong principles of other doctrines and then enumerate correct doctrine.

**२४९. (३) संवेयणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—इहलोगसंवेयणी, परलोगसंवेयणी, आत—सरीरसंवेयणी, पर—सरीरसंवेयणी।**

२४९. (३) संवेगनी कथा चार प्रकार की है। जैसे-(१) इस लोक-सम्बन्धी असारता, अनित्यता का निरूपण करना। (२) परलोक-सम्बन्धी (देव-तिर्यंच गति) असारता आदि का निरूपण करना। (३) अपने शरीर की अशुचिता का निरूपण करना। (४) दूसरो के शरीरो की अशुचिता का निरूपण करना।

**249.** (3) *Samvedani-katha* is of four kinds—(1) to enumerate the worthless and ephemeral nature of this life, (2) to enumerate the worthless and ephemeral nature of the next life (in divine or animal realms), (3) to enumerate the foulness of one's own body, and (4) to enumerate the foulness of others' bodies

**२५०. (४) णिव्वेदणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—**

**(१) इहलोगे दुच्चिण्णा कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति। (२) इहलोगे दुच्चिण्णा कम्मा परलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति। (३) परलोगे दुच्चिण्णा कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति। (४) परलोगे दुच्चिण्णा कम्मा परलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति।**

**(१) इहलोगे सुचिण्णा कम्मा इहलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति। (२) इहलोगे सुचिण्णा कम्मा परलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति। (३) [ परलोगे सुचिण्णा कम्मा इहलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति। (४) परलोगे सुचिण्णा कम्मा परलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ]।**

२५०. (४) निर्वेदनी कथा चार प्रकार की है। जैसे-(१) इस लोक (इस जन्म) के दुश्चीर्ण कर्म (अशुभ कर्म) इस लोक मे (इसी जन्म) मे दु खमय फल देने वाले होते है। (२) इस लोक के दुश्चीर्ण कर्म परलोक (आगामी जन्म) मे दु खरूप फल देने वाले होते है। (३) परलोक के (पूर्वभवोपार्जित) दुश्चीर्ण कर्म इस लोक में दु खरूप फल देने वाले होते है। (४) परलोक के दुश्चीर्ण कर्म परलोक, (आगामी जन्म) मे दु खरूप फल देने वाले होते है। (इस प्रकार की प्ररूपणा करना)

(१) इस लोक के सुचीर्ण (शुभ कर्म) कर्म इसी लोक मे सुखमय फल देने वाले होते हैं। (२) इस लोक के सुचीर्ण कर्म परलोक मे सुखमय फल देने वाले होते है। (३) परलोक के सुचीर्ण कर्म इस लोक में सुखमय फल देने वाले होते है। (४) परलोक के सुचीर्ण कर्म परलोक मे सुखमय फल देने वाले होते हैं।

**250.** (4) *Nirvedani-katha* is of four kinds—To enumerate that (1) bad *karmas* acquired during this lifetime bear bitter fruits (misery) during this very life, (2) bad *karmas* acquired during this lifetime bear bitter fruits during the next life, (3) bad *karmas* acquired during the past

lifetime bear fruits during this life, and (4) bad *karmas* acquired during the past lifetime bear fruits during the next life.

(1) Good *karmas* acquired during this lifetime bear pleasant fruits (happiness) during this very life, (2) good *karmas* acquired during this lifetime bear pleasant fruits during the next life, (3) good *karmas* acquired during the past lifetime bear pleasant fruits during this life and (4) good *karmas* acquired during the past lifetime bear pleasant fruits during the next life.

**विवेचन**—पाप कर्मों का फल बताकर उनसे विरक्ति पैदा करने वाली निर्वेदनी कथा का दो प्रकार से निरूपण किया गया है। प्रथम प्रकार मे पापानुबंधी कर्मों का फल भोगने के चार प्रकार बताये हैं। उदाहरण रूप में जैसे–(१) चोर, हत्यारे आदि इस जन्म में पाप कर्म करके इसी जन्म मे कारागार आदि की सजा भोगते है। (२) कितने ही शिकारी आदि इस जन्म में पाप बन्ध कर नरकादि परलोक में दु ख भोगते है। (३) कितने ही प्राणी पूर्वभवोपार्जित पाप कर्मों का दुष्फल इस जन्म मे गर्भकाल से लेकर मरण तक दारिद्र्य, व्याधि आदि के रूप मे भोगते है। (४) पूर्वभव मे उपार्जन किये गये अशुभ कर्मों से उत्पन्न काक, गिद्ध आदि जीव माँस–भक्षणादि करके पुनः पाप कर्मों को बाँधकर नरकादि में दु.ख भोगते है।

द्वितीय प्रकार में पुण्यानुबन्धी अर्थात् पुण्य कर्म का फल भोगने के चार प्रकार बताये है। उनका स्पष्टीकरण इस प्रकार है -(१) तीर्थंकरो आदि को दान देने वाला दाता इसी भव मे विशेष पुण्यो का उपार्जन कर स्वर्णवृष्टि आदि पंच आश्चर्यों को प्राप्त कर पुण्य का फल भोगता है। (२) साधु आदि सत्पुरुष इस लोक मे सयम की साधना के साथ–साथ पुण्य कर्म को बाँधकर परभव में स्वर्गादि के सुख भोगते है। (३) परभव में उपार्जित पुण्य के फल को तीर्थंकरादि इस भव मे भोगते है। (४) पूर्वभव मे उपार्जित शुभ कर्मों से जैसे तीर्थंकर बनने वाली दिव्य आत्माएँ स्वर्ग मे जाकर (वहाँ पर फल नही प्राप्त कर) मनुष्य भव मे आकर उनका फल भोगते है। *(विशेष वर्णन देखे हिन्दी टीका, पृष्ठ ७८०)*

**Elaboration**—The *nirvedini-katha*, that inspires detachment by showing the bitter fruits of demeritorious *karmas*, has been explained two ways. Stated at first are the four ways of suffering fruits of demeritorious *karmas*. The examples of said four ways are—(1) Thieves, murderers and other criminals suffer punishment like imprisonment for the sinful deeds committed by them during this life time (2) Many hunters acquire bondage of demeritorious *karmas* during this birth and suffer during next birth in places like hell (3) Many beings suffer poverty, disease and other miseries during this birth as a consequence of bondage of demeritorious *karmas* from past birth. (4) Born as carrion eaters like vulture and crow due to sinful actions in the past birth, many beings further indulge in sinful deeds like killing and consuming meat to

acquire bondage of demeritorious *karmas* and suffer the consequences during next birth in places like hell

Stated next are the four ways of enjoying fruits of meritorious *karmas*. The examples are—(1) A person giving alms to lofty persons like *Tirthankars* earns meritorious *karmas* and enjoys its fruits during the same birth in the form of five miracles including shower of gold. (2) Noble people like ascetics acquire meritorious *karmas* due to their spiritual practices and other good deeds and enjoy the consequences during next birth in places like divine realm. (3) Many beings like *Tirthankars* enjoy during this birth the consequences of meritorious *karmas* from past birth. (4) Destined to be born as lofty persons like *Tirthankars* due to pious actions in the past birth, many beings born in the divine realm do not enjoy the fruits there but they do enjoy during their next birth as human beings *(for more details refer to Hindi Tika, p 780)*

### कृश–दृढ़–पद KRISH-DRIDHA-PAD (SEGMENT OF WEAK AND STRONG)

**२५१. चत्तारि पुरिसजाया, पण्णत्ता, तं जहा–किसे णाममेगे किसे, किसे णाममेगे दढे, दढे णाममेगे किसे, दढे णाममेगे दढे। २५२. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–किसे णाममेगे किससरीरे, किसे णाममेगे दढसरीरे, दढे णाममेगे किससरीरे, दढे णाममेगे दढसरीरे।**

२५१. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कृश और कृश–कोई पुरुष मूलत कृश होता है और कालान्तर में भी कृश ही रहता है। (२) कृश और दृढ़–कोई पुरुष मूलत कृश होता है और कालान्तर में दृढ हो जाता है। (३) दृढ़ और कृश–कोई पुरुष मूलत' दृढ होता है और कालान्तर मे कृश होता है। (४) दृढ़ और दृढ़–कोई पुरुष मूलत दृढ होता है और कालान्तर मे भी दृढ ही होता है। २५२. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कृश और कृशशरीर–कोई पुरुष भावो से कृश होता है और शरीर से भी कृश (दुर्बल) होता है। (२) कृश और दृढ़शरीर–कोई भावो से कृश होता है, किन्तु शरीर से दृढ़ होता है। (३) दृढ़ और कृशशरीर–कोई भावो से दृढ होता है, किन्तु शरीर से कृश होता है। (४) दृढ़ और दृढ़शरीर–कोई पुरुष भावों से दृढ होता है और शरीर से भी दृढ होता है।

**251.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) *Krish* and *krish*—some man is *krish* (weak) originally and remains *krish* (weak) later as well. (2) *Krish* and *dridha*—some man is *krish* originally but becomes *dridha* (strong) later (3) *Dridha* and *krish*—some man is *dridha* (strong) originally and becomes *krish* (weak) later (4) *Dridha* and *dridha*—some man is *dridha* (strong) originally and remains *dridha* (strong) later as well. **252.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) *Krish* and *krish sharira*—some man is *krish* (mentally weak) and *krish sharira* (physically weak) as well. (2) *Krish*

(*bhaava*) and *dridha sharira*—some man is mentally weak but physically strong. (3) *Dridha* (*bhaava*) and *krish sharira*—some man is mentally strong and physically weak. (4) *Dridha* (*bhaava*) and *dridha sharira*—some man is mentally strong and physically strong as well.

**विवेचन**—यहाँ भावों से कृश के अर्थ में कषायों की अल्पता अथवा उत्साह की मंदता आदि तथा शरीर की कृशता के अर्थ मे दुर्बलता या तप के कारण शारीरिक क्षीणता का अर्थ भी किया जाता है और इसी प्रकार दृढता का अर्थ समझना चाहिए। प्रथम भंग में, धन्ना अणगार, अर्जुन मुनि व आनन्द गाथापति का उदाहरण; दूसरे भग मे गुरु के समक्ष अँगुली तोड़कर फेंकने वाले उग्र कषायी तपस्वी मुनि का, तीसरे भंग में भरत चक्रवर्ती आदि का गणधर का तथा चौथे भंग में मिथ्यादृष्टि और तपविहीन व्यक्ति का उदाहरण समझना चाहिए।

**Elaboration**—Here *krish bhaava* can also be interpreted as weakening of passions or lower intensity of enthusiasm towards passions, and *krish sharira* as emaciated body due to austerities And same analogy is for *dridha* (strong). Examples of the first alternative are ascetic *Dhanna*, ascetic *Arjuna* and *Anand Gathapati*. Example of the second alternative is an ascetic with intense passions but observing rigorous austerities Example of the third alternative is *Bharat Chakravarti*. Example of the fourth is an person having wrong faith and not observing austerities

**२५३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—(१) किससरीरस्स णाममेगस्स णाणदंसणे समुप्पज्जति णो दढसरीरस्स, (२) दढसरीरस्स णाममेगस्स णाणदंसणे समुप्पज्जति णो किससरीरस्स, (३) एगस्स किससरीरस्सवि णाणदंसणे समुप्पज्जति दढसरीरस्सवि, (४) एगस्स णो किससरीरस्स णाणदंसणे समुप्पज्जति णो दढसरीरस्स।**

२५३. पुरुष चार प्रकार के होते है—(१) किसी कृश शरीर वाले पुरुष को विशिष्ट ज्ञान-दर्शन की उपलब्धि होती है, किन्तु दृढ शरीर वाले को नही होती, (२) किसी दृढ शरीर वाले पुरुष को ज्ञान-दर्शन की उपलब्धि होती है, किन्तु कृश शरीर वाले को नही, (३) किसी कृश शरीर वाले पुरुष को ज्ञान-दर्शन की उपलब्धि होती है और दृढ़ शरीर वाले को भी; (४) किसी कृश शरीर वाले पुरुष को भी ज्ञान-दर्शन की उपलब्धि नही होती और दृढ शरीर वाले को भी नही।

**253.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some *krish sharira* (physically weak) man attains special *Jnana-darshan* (knowledge and perception/faith) but one who have a *dridha sharira* (physically strong) one does not attain it. (2) Some *dridha sharira* (well built) man attains special *Jnana-darshan* while a *krish sharira* one does not attain it. (3) Some *krish sharira* (physically slight) man attains special *Jnana-darshan* (knowledge and perception/faith) and so does a *dridha sharira*

(physically strong) one. (4) Some *krish sharira* man does not attain special *Jnana-darshan* and a *dridha sharira* one too.

**अतिशेष–ज्ञान–दर्शन–बाधक–साधक–पद ATISHESH-JNANA-DARSHAN-BADHAK-SADHAK- PAD (SEGMENT OF ATTAINING AND NOT ATTAINING MIRACULOUS KNOWLEDGE AND PERCEPTION/FAITH)**

**२५४. चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा अस्सिं समयंसि अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जिउकामेवि ण समुप्पज्जेज्जा, तं जहा–**

**(१) अभिक्खणं–अभिक्खणं इत्थिकहं भत्तकहं देसकहं कहेत्ता भवति। (२) विवेगेण विउस्सग्गेणं णो सम्ममप्पाणं भावित्ता भवति। (३) पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि णो धम्मजागरियं जागरइत्ता भवति। (४) फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदाणियस्स णो सम्मं गवेसित्ता भवति।**

**इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा जाव [ णो समुप्पज्जेज्जा।**

२५४. चार कारणो से निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियो के इस समय अर्थात् चतुर्थ आरे मे भी तत्काल अतिशययुक्त ज्ञान–दर्शन उत्पन्न होते–होते भी उत्पन्न नही होत–

(१) जो बार–बार स्त्रीकथा, भक्तकथा, देशकथा और राजकथा करता है। (२) जो विवेक और व्युत्सर्ग के द्वारा आत्मा को सम्यक् प्रकार के भावित नही करता। (३) जो पूर्वरात्रि और अपररात्रिकाल के समय धर्म–जागरणा करके जागृत नही रहता। (४) जो प्रासुक, एषणीय, उञ्छ और सामुदानिक भिक्षा की सम्यक् प्रकार से गवेषणा नही करता।

**254.** For four reasons *nirgranth* and *nirgranthi* (male and female ascetics) about to attain miraculous *jnana* and *darshan* (knowledge and perception/faith) fail to do that—

(1) He who repeatedly indulges in gossips about women, food, country and king (2) He who does not properly enkindle his soul with sagacity and renunciation (3) He who does not remain awake for religious activities during first and last quarters of night (4) He who does not explore for prescribed, acceptable, to be collected in small portions and begged alms.

**विवेचन**–विशिष्ट पदो का अर्थ इस प्रकार है–**विवेक**–अशुद्ध भावो को त्यागकर शरीर और आत्मा की भिन्नता का विचार करना। **व्युत्सर्ग**–शरीर पर से ममत्व हटाकर कायोत्सर्ग करना। **प्रासुक**–अचित्त या निर्जीव वस्तु प्रासुक कहलाती है। **एषणीय**–उद्गम आदि दोषो से रहित साधुओं के लिए कल्प्य आहार। **उञ्छ**–अनेक घरों से थोडा–थोडा लिया जाने वाला भक्त–पान। **सामुदानिक**–याचनावृत्ति से भिक्षा प्राप्त करना। **अतिशय ज्ञान–दर्शन**–उत्कृष्ट जातिस्मरण, परमावधि, मन पर्यव ज्ञान और केवल ज्ञान–दर्शन।

**TECHNICAL TERMS**

*Vivek*—to contemplate over distinctiveness of body and soul after getting free of impure thoughts. *Vyutsarg*—to dissociate from one's body by removing fondness for it. *Prasuk—achitt* or not contaminated with living organism is called *prasuk* (food prescribed for ascetics). *Eshaniya*—faultless (of origin etc.) food acceptable for ascetics. *Uchchha*—food and drinks collected in small portions from numerous houses *Samudanik*—collecting alms by begging. *Atishaya jnana-darshan*—miraculous knowledge and perception/faith, such as maximum *jati-smaran jnana-darshan* (memory of earlier births), ultimate *avadhi jnana-darshan*, *manah-paryav jnana-darshan* and *Keval jnana-darshan*. (details about these terms have already been discussed)

**२५५. चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे समुप्पज्जेज्जा, तं जहा—**

**(१) इत्थिकहं भत्तकहं देसकहं रायकहं णो कहेत्ता भवति। (२) विवेगेण विउस्सग्गेणं सम्ममप्पाणं भावेत्ता। (३) पुव्वरत्तवरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरइत्ता भवति। (४) फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदाणियस्स सम्मं गवेसित्ता भवति।**

**इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा जाव अतिसेस णाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे समुप्पज्जेज्जा।**

२५५. चार कारणो से निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियो को अतिशययुक्त ज्ञान–दर्शन (उत्पन्न होने की स्थिति मे होने पर) तत्काल उत्पन्न होते हैं–(१) जो स्त्रीकथा, भक्तकथा, देशकथा और राजकथा नहीं कहता। (२) जो विवेक और व्युत्सर्ग के द्वारा आत्मा की सम्यक् प्रकार से भावना करता है। (३) जो पूर्वरात्रि और अपररात्रि के समय धर्म जागरणा करता है। (४) जो प्रासुक, एषणीय, उञ्छ (बचा हुआ) और सामुदानिक भिक्षा की सम्यक् प्रकार से गवेषणा करता है।

इन चार कारणों से निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियो को अतिशययुक्त ज्ञान–दर्शन उत्पन्न होने की स्थिति होने पर तत्काल उत्पन्न हो जाते है।

**255.** For four reasons *nirgranth* and *nirgranthi* (male and female ascetics) about to attain miraculous *jnana* and *darshan* (knowledge and perception/faith) at once do attain that—

(1) He who does not indulge in gossips about women, food, country and king. (2) He who properly enkindles his soul with sagacity and renunciation. (3) He who remains awake for religious activities during first and last quarters of night. (4) He who sincerely explores

for prescribed, acceptable, to be collected in small portions and begged alms.

For these four reasons male and female ascetics about to attain miraculous *jnana* and *darshan* at once do that.

### स्वाध्याय-पद SVADHYAYA-PAD (SEGMENT OF STUDY)

**२५६. णो कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण बा चउहिं महापाडिवएहिं सज्झायं करेत्तए, तं जहा—आसाढपाडिवए, इंदमहपाडिवए, कत्तियपाडिवए, सुगिम्हगपाडिवए।**

२५६. निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों को चार महाप्रतिपदाओ मे स्वाध्याय नहीं करना चाहिए। जैसे—(१) **आषाढ़-प्रतिपदा**—आषाढी पूर्णिमा के पश्चात् आने वाली सावन की प्रतिपदा, (२) **इन्द्रमह-प्रतिपदा**—आसोज मास की पूर्णिमा के पश्चात् आने वाली कार्तिक की प्रतिपदा, (३) **कार्तिक-प्रतिपदा**—कार्तिक पूर्णिमा के पश्चात् आने वाली मगसिर की प्रतिपदा, और (४) **सुग्रीष्म-प्रतिपदा**—चैत्री पूर्णिमा के पश्चात् आने वाली वैशाख की प्रतिपदा।

**256.** *Nirgranth* and *nirgranthi* (male and female ascetics) should not study on four *Mahapratipadas*—(1) *Ashadh pratipada*—first day of the month of *Savan* or the fortnight following the full moon night of the month of *Ashadh*, (2) *Indramaha pratipada*—first day of the month of *Kartik* or the fortnight following the full moon night of the month of *Asoja*, (3) *Kartik pratipada*—first day of the month of *Mangsir* or the fortnight following the full moon night of the month of *Kartik,* and (4) *Sugrishma pratipada*—first day of the month of *Vaihsakh* or the fortnight following the full moon night of the month of *Chaitra*

**विवेचन**—किसी महोत्सव के पश्चात् आने वाली प्रतिपदा महाप्रतिपदा कही जाती है। भगवान महावीर के समय इन्द्रमह, स्कन्दमह, यक्षमह और भूतमह, ये चार महोत्सव जन-साधारण मे प्रचलित थे। निशीथभाष्य के अनुसार आषाढी पूर्णिमा को इन्द्रमह, आश्विनी पूर्णिमा को स्कन्दमह, कार्तिकी पूर्णिमा को यक्षमह और चैत्री पूर्णिमा को भूतमह मनाया जाता था। इन उत्सवों में सम्मिलित लोग अपनी परम्परा के अनुसार इन्द्रादि की पूजादि करते थे। उत्सव के दूसरे दिन प्रतिपदा को अपने मित्रादिको को बुलाते और सब मिलकर मद्यपान व भोजनादि करते-कराते थे।

इन महाप्रतिपदाओ के दिन स्वाध्याय-निषेध के अनेक कारणों में से एक प्रधान कारण यह बताया गया है कि महोत्सव मे सम्मिलित लोग समीपवर्ती साधु और साध्वियो को स्वाध्याय करते या शास्त्र-वाचनादि करते हुए देखकर भड़क सकते है और नशा आदि करके उपद्रव भी कर सकते हैं। अतः यही उचित माना गया कि उस दिन साधु-साध्वी मौनपूर्वक स्थान पर ही अपने धर्म-कार्यों को सम्पन्न करें। दूसरा कारण यह भी बताया गया है कि जहाँ समीप मे जन-साधारण का शोरगुल हो रहा हो, वहाँ पर साधु-साध्वी एकाग्रतापूर्वक शास्त्र की शब्द या अर्थवाचना को ग्रहण भी नहीं कर सकते

हैं। इसे लोक विरुद्ध व्यवहार माना गया है। पवित्र धार्मिक ग्रन्थों के विषय मे स्वाध्यायकाल तथा अस्वाध्यायकाल की मर्यादा जैन परम्परा के समान वैदिक परम्परा में भी रही है। सुश्रुत संहिता में बताया है कि कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी व अमावस्या तथा शुक्ल पक्ष की अष्टमी, चतुर्दशी व पूर्णिमा को एवं सूर्योदय व सूर्यास्त का समय अनध्यायकाल है। *(सुश्रुत संहिता २/९-१०)*

स्वाध्याय के लिए मन की एकाग्रता आवश्यक है। रामायण का प्रसग है–लंका से लौटने पर हनुमान से श्रीराम ने सीता के स्वास्थ्य के विषय में पूछा तो हनुमान जी ने उत्तर दिया–***प्रतिपद् पाठशीलस्य विद्येव तनुतांगता।*** प्रतिपदा को पढ़ने वाले विद्यार्थी की जैसे विद्या क्षीण हो जाती है उसी प्रकार सीता भी दुर्बल हो गई हैं।

**Elaboration**—A *pratipada* (first day of a fortnight of the lunar calendar) following a festive occasion is called *Mahapratıpada*. There were four popular festivals during *Bhagavan Mahavır's* period—*Indramah, Skandamah, Yakshamah* and *Bhootamah* According to *Nısheeth Mahabhashya, Indramah* festival was celebrated on the *Ashadh purnıma* (full moon day of *Ashadh* month), *Skandamah* on the *Ashvın purnıma*, *Yakshamah* on the *Kartik purnıma* and *Bhootamah* on the *Chaitra purnıma*. Following their respectıve traditions people celebratıng these festivals ceremonıally worshipped *Indra* and other deıties. The followıng day, a *pratıpada*, they invited theır friends for drinks and feast

One of the reasons, an ımportant one, for proscribıng studıes by ascetics on these *Mahapratipadas* ıs that seeing male and female ascetics studying or recıting scriptures ın their neıghbourhood, people enjoying festivities could get annoyed and create disturbance. Thus it was considered proper that on such days the ascetıcs spend their tıme silently performıng their relıgıous duties and rıtuals. Another reason for this negation ıs that ıt is almost ımpossible for ascetics to study or recite scriptures wıth required concentration in the noise and disturbance of a pubic festival. It ıs considered transgression of established social norms. Like Jaın tradition the rules about proper and improper time of study of pious religious scriptures have been prevalent in *Vedic* tradition as well. It is mentioned in *Sushrut Samhita* that study of scriptures is proscribed on fourteenth and fifteenth days of the dark half of a month and eighth, fourteenth and fifteenth days of the bright half of a month as also at dawn and dusk. *(Sushrut Samhita 2/9-10)*

Mental concentration is essential for studies. There is an incident from *Ramayan* confirming this—Shri Rama asked Hanuman about Sita's health when he returned from Lanka Hanuman replied—"Sita has become weak just as the knowledge of a student who studies on a *pratipada* becomes weak"

**२५७. णो कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा चउहिं संझाहिं सज्झायं करेत्तए, तं जहा—पढमाए, पच्छिमाए, मज्झण्हे, अड्ढरत्ते। २५८. कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा चउक्कालं सज्झायं करेत्तए, तं जहा—पुव्वण्हे, अवरण्हे, पओसे, पच्चूसे।**

२५७. निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियो को चार सन्ध्याओ मे स्वाध्याय नही करना चाहिए। जैसे—(१) **प्रथम सन्ध्या**—सूर्योदय का पूर्वकाल, (२) **पश्चिम सन्ध्या**—सूर्यास्त के पीछे का काल, (३) **मध्याह्न सन्ध्या**—दिन के मध्य समय का काल, और (४) **अर्धरात्र सन्ध्या**—आधी रात का समय। २५८. निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों को चार कालो मे स्वाध्याय करना चाहिए। जैसे—(१) **पूर्वाह्न में**—दिन के प्रथम पहर में, (२) **अपराह्न में**—दिन के अन्तिम पहर मे, (३) **प्रदोष में**—रात के प्रथम पहर मे, और (४) **प्रत्यूष में**—रात के अन्तिम पहर मे।

**257.** *Nirgranth* and *nirgranthi* (male and female ascetics) should not study on four *sandhyas* (the four periodic junctures in a day)—(1) *pratham sandhya*—dawn (immediately before dawn is the proscribed period), (2) *pashchim sandhya*—dusk (immediately after dusk is the proscribed period), (3) *madhyanha sandhya*—mid-day (around mid-day is the proscribed period) and (4) *ardharatra sandhya*—midnight (around midnight is the proscribed period), **258.** *Nirgranth* and *nirgranthi* (male and female ascetics) should study during four periods of a day—(1) *purvanha*—first quarter of the day, (2) *aparanha*—last quarter of the day, (3) *pradosh*—first quarter of the night, and (4) *pratyush*—last quarter of the night.

**विवेचन**—दिन और रात्रि के सन्धिकाल को तथा दिन व रात के मध्यकाल को सन्ध्या कहा जाता है। इन सन्ध्याओ मे स्वाध्याय के निषेध का कारण यह बताया गया है कि ये चारो सन्ध्याएँ ध्यान का समय हैं। ध्यान के लिए यह अमृत वेला है। इस समय मे अन्त स्रावी ग्रन्थियाँ विशेष सक्रिय रहती है।

**Elaboration**—The junction of day and night as well as middle of the day and middle of the night are called *sandhya* or periodic junctures in a day. The reason for negating studies during these junctures is that these are the ideal periods for meditation and during these periods the endocrine glands are said to be hyperactive.

*लोकस्थिति-पद* **LOK-STHITI-PAD (SEGMENT OF STRUCTURE OF UNIVERSE)**

**२५९. चउव्विहा लोगट्ठिती पण्णत्ता, तं जहा—आगासपतिट्ठिए वाते, वातपतिट्ठिए उदधी, उदधिपतिट्ठिया पुढवी, पुढविपतिट्ठिया तसा थावरा पाणा।**

२५९. लोकस्थिति चार प्रकार की है-(१) आकाश पर वायु (तनुवात-घनवात) स्थित है, (२) वायु पर घनोदधि, (३) घनोदधि पर पृथ्वी, और (४) पृथ्वी पर स्थावर और त्रस प्राणी स्थित हैं।

**259.** *Lok-sthiti* (structure of universe) is four tiered—(1) *vayu* (thin air and thick air) is situated over *akash* (space), (2) *ghanodadhi* (dense water) is situated over *vayu*, (3) *prithvi* (earth) is situated over *ghanodadhi* (dense water), and (4) *sthavar* and *tras pranis* (immobile and mobile beings) are located over *prithvi*.

*पुरुष-भेद-पद* **PURUSH-BHED-PAD (SEGMENT OF TYPES OF MAN)**

**२६०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—तहे णाममेगे, णोतहे णाममेगे, सोवत्थी णाममेगे, पधाणे णाममेगे।**

२६०. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) **तथापुरुष**—आदेश को स्वीकार कर काम करने वाला अथवा यथार्थवादी, (२) **नोतथापुरुष**—आदेश को न मानकर स्वच्छदता से काम करने वाला अथवा मिथ्यावादी, (३) **सौवस्तिकपुरुष**—स्वस्ति-पाठक अथवा खुशामद करने वाला, और (४) **प्रधानपुरुष**—पुरुषो मे प्रधान, स्वामी अथवा सबका विश्वासपात्र।

**260.** *Purush* (man) is of four kinds—(1) *tatha-purush*—man who accepts order and does accordingly, a realist, (2) *notatha-purush*—man who does not take order and works independently; unrealistic, (3) *sauvastik-purush*—a flatterer, and (4) *pradhan-purush*—prime among men, master or one who has confidence of all

*आत्म-पद* **ATMA-PAD (SEGMENT OF THE SELF)**

**२६१. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आयंतकरे णाममेगे णो परंतकरे, परंतकरे णाममेगे णो आयंतकरे, एगे आयंतकरेवि परंतकरेवि, एगे णो आयंतकरे णो परंतकरे।**

२६१. पुरुष चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष अपना अन्त करता है, किन्तु दूसरे का नहीं; (२) कोई दूसरे का अन्त करता है, किन्तु अपना नहीं, (३) कोई अपना भी अन्त करता है और दूसरे का भी, और (४) कोई न अपना अन्त करता है और न दूसरे का।

**261.** *Purush* (man) is of four kinds—(1) some man ends (*ant*) his life and not that of the other, (2) some man does not end his life but does that of the other, (3) some man ends his life and that of the other as well, and (4) some man neither ends his own life nor that of the other.

**विवेचन**—संस्कृत टीकाकार ने 'अन्त' शब्द के अनेक अर्थ किये हैं। जैसे—एक अर्थ है—'भव या संसार का अन्त करना।' (१) कोई पुरुष अपने भव का अन्त करता है, किन्तु दूसरे के भव का अन्त नहीं करता। जैसे प्रत्येकबुद्ध केवली या गजसुकुमार मुनि आदि। (२) कोई पुरुष अचरमशरीरी होने से अपना भवान्त तो नहीं कर पाते, किन्तु उपदेश देकर दूसरे के ससार का अन्त करते हैं। (३) कोई पुरुष अपने संसार का भी अन्त करते है और उपदेश देकर दूसरो के ससार का भी। जैसे—तीर्थंकर और अन्य सामान्य केवली आदि। (४) कोई पुरुष न अपने भव का अन्त करते है और न ही दूसरे का भव का। जैसे—पचम काल में जन्मे आचार्य आदि।

'अन्त' शब्द का मरण अर्थ मे भी प्रयोग होता है। इनके चार भग इस प्रकार बनते है—

(१) कोई पुरुष अपना 'अन्त' अर्थात् मरण या घात करता है, किन्तु दूसरे का घात नहीं करता। जैसे—क्रोधी या दयालु परोपकारी। (२) कोई पर-घातक होता है, किन्तु आत्म-घातक नहीं। जैसे—शिकारी, योद्धा, हिंसक आदि। (३) कोई आत्म-घातक भी होता है और पर-घातक भी। जैसे—परस्पर लड़ते दो शत्रु। (४) कोई न आत्म-घातक होता है और न पर-घातक। जैसे—अप्रमत्त संयमी।

**Elaboration**—The *Sanskrit* commentator (*Tika*) has given many meanings of the word '*ant*' One meaning is 'to end or terminate the cycles of rebirth' (1) Some man ends or terminates his cycles of rebirth and those of others. For example a *Pratyek-buddha kevali* (one who gets enlightened and liberated without the benefit of any discourse or guidance), ascetic Gajasukumar etc (2) Some man (although accomplished but not destined to get liberated) does not terminate his own cycles of rebirth but makes others do that by his preaching (3) Some man terminates his own cycles of rebirth and those of others as well through his preaching (4) Some man neither terminates his own cycles of rebirth nor those of others For example *acharyas* born in the fifth epoch of this half-cycle of time

The four alternatives when *ant* means death or killing are—

(1) Some man ends (*ant*) or kills himself but not others. For example an angry but kind person (2) Some man kills others but not himself. For example a warrior, hunter or a killer (3) Some man kills himself as well as others For example two fighting adversaries. (4) Some man neither kills himself nor others. For example an alert sage.

**२६२. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आयंतमे णाममेगे णो परंतमे, परंतमे णाममेगे णो आयंतमे, एगे आयंतमेवि परंतमेवि, एगे णो आयंतमे णो परंतमे।**

**२६३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आयंदमे णाममेगे णो परंदमे, परंदमे णाममेगे णो आयंदमे, एगे आयंदमेवि परंदमेवि, एगे णो आयंदमे णो परंदमे।**

२६२. चार प्रकार के पुरुष होते हैं–(१) कुछ पुरुष अपने आपको खिन्न (संतप्त) करते हैं, किन्तु दूसरे को नहीं; (२) कुछ दूसरे को खिन्न करते हैं, किन्तु अपने को नहीं; (३) कुछ अपने आपको भी खिन्न करते हैं तथा दूसरे को भी; और (४) कुछ न तो अपने को खिन्न करते हैं और न ही दूसरे को।

[प्रथम भंग में सहिष्णु या दुर्बल व्यक्ति, दूसरे में स्वार्थी या सबल, तीसरे मे कलहप्रिय और चौथे भंग में शान्त आत्मा का उदाहरण समझना चाहिए।]

२६३. चार प्रकार के पुरुष होते है–(१) कुछ पुरुष अपना दमन करते है, किन्तु दूसरे का नहीं; (२) कुछ दूसरे का दमन करते हैं, किन्तु अपना नहीं; (३) कुछ अपना भी दमन करते है और दूसरे का भी; और (४) कुछ न अपना दमन करते हैं और न दूसरो का।

**262.** (1) Some man troubles himself but not others. (2) Some man troubles others but not himself. (3) Some man troubles himself as well as others (4) Some man neither troubles himself nor others.

(Examples of these are—a tolerant or weak person, selfish or strong person, quarrelsome person, and serene person respectively.)

**263.** (1) Some man subjugates (*daman*) himself but not others. (2) Some man subjugates others but not himself (3) Some man subjugates himself as well as others (4) Some man neither subjugates himself nor others

**विवेचन**–दमन के अनेक अर्थ है। इन्द्रियो को वश मे करना, मन व वासना का दमन करना, किसी को दण्ड देना, किसी पर अनुशासन करना आदि। यहाँ प्रथम भग मे संयमी पुरुष, जिनकल्पी आदि, दूसरे भग मे अध्यापक या राजपुरुष आदि; तीसरे भग मे आचार्य आदि तथा चौथे भग मे स्वच्छन्दाचारी का उदाहरण समझना चाहिए।

**Elaboration**—The word *daman* has many meanings. To control senses, to supress desires and lust, to punish some one, to discipline someone etc. Examples of these are—a disciplined person like a *jinakalpi* ascetic, teacher or administrator, *acharya* and an indisciplined person respectively.

### *गर्हा–पद* GARHA-PAD (SEGMENT OF REPROACH)

**२६४. चउव्विहा गरहा पण्णत्ता, तं जहा–उवसंपज्जामित्तेगा गरहा, वितिगिच्छामित्तेगा गरहा, जंकिंचिमिच्छामित्तेगा गरहा, एवंपि पण्णत्तेगा गरहा।**

२६४. गर्हा चार प्रकार की है–(१) **उपसम्पदारूप गर्हा**–अपने दोषो का निवेदन करने के लिए गुरु के समीप जाऊँ, ऐसा विचार करना। (२) **विचिकित्सारूप गर्हा**–अपने निन्दनीय दोषो का निराकरण करूँ, ऐसा विचार करना। (३) **मिच्छामिरूप गर्हा**–जो कुछ मैंने असद् आचरण किया है, वह मेरा कार्य मिथ्या हो ऐसा कहना, और (४) **एवमपि प्रज्ञप्तिरूप गर्हा**–भगवान ने ऐसा कहा है कि अपने दोष की गर्हा (निन्दा) करने से भी किये गये दोष की शुद्धि होती है, ऐसा विचार करना।

**264.** *Garha* (reproach) is of four kinds—(1) *Upasampadarupa garha*—to think of going to the guru for stating one's faults. (2) *Vichikitsarupa garha*—to think of correcting one's censurable faults. (3) *Michchhamirupa garha*—to state 'may the faults committed by me become false or undone' (4) *Evamapi prajnaptirupa garha*—to deefly think that *Bhagavan* has said that faults are condoned if one criticises himself for the faults committed

*अलमस्तु (निग्रह)-पद* **NIGRAHA-PAD (SEGMENT OF RESTRAINT)**

**२६५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-अप्पणो णाममेगे अलमंथू भवति णो परस्स, परस्स णाममेगे अलमंथू भवति णो अप्पणो, एगे अप्पणोवि अलमंथू भवति परस्सवि, एगे णो अप्पणो अलमंथू भवति णो परस्स।**

२६५. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष अपना निग्रह करने मे समर्थ होता है, किन्तु दूसरे का निग्रह करने मे समर्थ नही होता, (२) कोई दूसरे का निग्रह करने मे समर्थ होता है, अपना निग्रह करने में नही, (३) कोई अपना निग्रह करने मे समर्थ भी होता है और पर का निग्रह करने में भी, और (४) कोई न अपना निग्रह करने मे समर्थ होता है और न पर का निग्रह करने मे।

**265.** (1) Some man is able to restrain (*nigraha*) himself but not others. (2) Some man is able to restrain others but not himself (3) Some man is able to restrain himself as well as others (4) Some man is able to neither restrain himself nor others

*ऋजु-वक्र-मार्ग-पद* **RIJU-VAKRA-MARG-PAD (SEGMENT OF STRAIGHT AND OBLIQUE PATH)**

**२६६. चत्तारि मग्गा पण्णत्ता, तं जहा-उज्जू णाममेगे उज्जू, उज्जू णाममेगे वंके, वंके णाममेगे उज्जू, वंके णाममेगे वंके। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-उज्जू णाममेगे उज्जू, उज्जू णाममेगे वंके, वंके णाममेगे उज्जू, वंके णाममेगे वंके।**

२६६. मार्ग चार प्रकार के होते है-(१) ऋजु और ऋजु-कोई मार्ग ऋजु (सरल) दिखता है और सरल ही होता है, (२) ऋजु और वक्र-कोई मार्ग ऋजु दिखता है, किन्तु वक्र होता है, (३) वक्र और ऋजु-कोई मार्ग वक्र दिखता है, किन्तु ऋजु होता है, और (४) वक्र और वक्र-कोई मार्ग वक्र दिखता है और वक्र ही होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष सरल दिखता है और सरल ही होता है, (२) कोई सरल दिखता है, किन्तु कुटिल होता है, (३) कोई कुटिल दिखता है, किन्तु सरल होता है, और (४) कोई कुटिल दिखता है और कुटिल ही होता है।

**266.** *Marg* (path) are of four kinds—(1) *Riju* and *riju*—some *path* is *riju* (straight or simple) in appearance and *riju* (simple) actually as well.

(2) *Riju* (simple) and *vakra* (crooked)—some path is straight in appearance but *vakra* (crooked) actually. (3) *Vakra* and *riju*—some path is crooked in appearance but straight actually. (4) *Vakra* and *vakra*—some path is crooked in appearance and crooked actually as well.

In the same way men are of four kinds—(1) Some man is *riju* (straight or simple) in appearance and *riju* (straight forward) actually. (2) Some man is straight in appearance but *vakra* (crooked) actually (3) Some man is crooked in appearance but straight forward actually. (4) Some man is crooked in appearance and crooked actually as well

**क्षेम-अक्षेम-पद KSHEM-AKSHEM-PAD (SEGMENT OF PLACID AND DISTURBED)**

**२६७. चत्तारि मग्गा पण्णत्ता, तं जहा—खेमे णाममेगे खेमे, खेमे णाममेगे अखेमे। अखेमे णाममेगे खेमे, अखेमे णाममेगे अखेमे। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—खेमे णाममेगे खेमे, खेमे णाममेगे अखेमे, अखेमे णाममेगे खेमे, अखेमे णाममेगे अखेमे।**

२६७. मार्ग चार प्रकार के होते हैं-(१) **क्षेम और क्षेम**—कोई मार्ग आदि मे क्षेम (निरुपद्रव) होता है और अन्त मे भी क्षेम होता है, (२) **क्षेम और अक्षेम**—कोई मार्ग आदि में क्षेम, किन्तु अन्त में अक्षेम (उपद्रव वाला) होता है, (३) **अक्षेम और क्षेम**—कोई मार्ग आदि मे अक्षेम, किन्तु अन्त में क्षेम होता है, तथा (४) **अक्षेम और अक्षेम**—कोई मार्ग आदि मे भी अक्षेम और अन्त मे भी अक्षेम होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष आदि मे क्षेम, क्रोधादि उपद्रव से रहित होता है और अन्त मे भी क्षेम (क्षमाशील) होता है; (२) कोई आदि में क्षेम होता है, किन्तु अन्त मे अक्षेम, (३) कोई आदि मे अक्षेम, किन्तु अन्त मे क्षेम, और (४) कोई आदि मे भी अक्षेम और अन्त में भी अक्षेम होता है।

**267.** *Margs* (paths) are of four kinds—*Kshem* and *kshem*—(1) some *marg* is *kshem* (placid) originally and *kshem* later as well (2) *Kshem* and *akshem*—some *marg* is placid originally but *akshem* (disturbed) later (3) *Akshem* and *kshem*—some *marg* is disturbed originally but placid later. (4) *Akshem* and *akshem*—some *marg* is disturbed originally and later as well

In the same way men are of four kinds—(1) Some man is *kshem* (placid; free of disturbances like anger) originally and *kshem* (forgiving) later. (2) Some man is placid originally but *akshem* (disturbed) later. (3) Some man is disturbed originally but placid later. (4) Some man is disturbed originally and later as well.

**२६८. चत्तारि मग्गा पण्णत्ता, तं जहा—खेमे णाममेगे खेमरूवे, खेमे णाममेगे अखेमरूवे, अखेमे णाममेगे खेमरूवे, अखेमे णाममेगे अखेमरूवे। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—खेमे णाममेगे खेमरूवे, खेमे णाममेगे अखेमरूवे, अखेमे णाममेगे खेमरूवे, अखेमे णाममेगे अखेमरूवे।**

२६८. मार्ग चार प्रकार के होते है-(१) कोई मार्ग क्षेम दिखता है और क्षेमरूप होता है; (२) कोई मार्ग क्षेम दिखता है, किन्तु अक्षेमरूप वाला होता है; (३) कोई मार्ग अक्षेम दिखता है, किन्तु क्षेमरूप वाला होता है, और (४) कोई मार्ग अक्षेम दिखता है और अक्षेमरूप वाला ही होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष क्षेम और क्षेमरूप वाला होता है; (२) कोई क्षेम, किन्तु अक्षेमरूप वाला, (३) कोई अक्षेम, किन्तु क्षेमरूप वाला, और (४) कोई अक्षेम और अक्षेमरूप वाला होता है।

**268.** *Margs* (paths) are of four kinds—(1) Some *marg* is *kshem* (placid) and *kshem rupa* (placid in appearance) as well (2) Some *marg* is placid but *akshem rupa* (difficult in appearance) (3) Some *marg* is difficult but placid in appearance (4) Some *marg* is actually difficult and disturbed in appearance as well

In the same way men are of four kinds—(1) Some man is *kshem* (placid) and *kshem rupa* (placid in appearance) as well (2) Some man is placid but *akshem rupa* (disturbed in appearance) (3) Some man is disturbed but placid in appearance. (4) Some man is disturbed and disturbed in appearance as well.

**विवेचन**-टीकाकार ने बताया है-मार्ग के पक्ष मे क्षेम का अर्थ है-डाकू व हिंसक पशुओ के भय से मुक्त, क्षेमरूप का अर्थ है-वृक्षो, जलाशयो आदि से युक्त। कोई मार्ग चोर आदि से रहित तो है, परन्तु पर्वतो व काँटो आदि के कारण विषम-अक्षेमरूप है। कोई मार्ग चोर आदि के भय से रहित तो नहीं है, परन्तु सम है। कोई मार्ग भययुक्त भी है और विषम भी है।

पुरुष के भाव पक्ष की दृष्टि से कोई पुरुष सद्गुणी है और साधु वेष वाला है। कोई सद्गुणी है, परन्तु साधु वेष नही है। कोई गुणहीन है, परन्तु वेष से साधु है और कोई गुणहीन भी है तथा वेशहीन भी है। *(हिन्दी टीका, पृ ८९१)*

**Elaboration**—The commentator (*Tika*) explains—In context of *marg* or path *kshem* means free of the fear of bandits and fierce beasts. *Kshem rupa* means having trees and ponds. Some path is free of bandits but still difficult in appearance (*akshem rupa*) because of hills and thorns etc Some path is not free of bandits but is straight. Some path is fearful as well as crooked.

In context of man *kshem* means placid or virtuous and *kshem rupa* means pious in appearance or in the garb of an ascetic. Someone is virtuous but not in the ascetic garb Someone is not virtuous but is in ascetic garb and someone is neither virtuous nor in the ascetic garb.

**२६९. चत्तारि संबुक्का पण्णत्ता, तं जहा—वामे णाममेगे वामावत्ते, वामे णाममेगे दाहिणावत्ते, दाहिणे णाममेगे वामावत्ते, दाहिणे णाममेगे दाहिणावत्ते। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—वामे णाममेगे वामावत्ते, वामे णाममेगे दाहिणावत्ते, दाहिणे णाममेगे वामावत्ते, दाहिणे णाममेगे दाहिणावत्ते।**

२६९. शंख चार प्रकार के होते हैं-(१) **वाम और वामावर्त**—कोई शंख जाति से या गुण से वाम-(वाम पार्श्व में स्थित या प्रतिकूल गुण वाला) और वामावर्त (आकृति से बाईं ओर घुमाव वाला) होता है, (२) **वाम और दक्षिणावर्त**—कोई शंख वाम और दक्षिणावर्त (दाईं ओर घुमाव वाला) होता है, (३) **दक्षिण और वामावर्त**—कोई शंख दक्षिण (अनुकूल गुण वाला) और वामावर्त होता है, तथा (४) **दक्षिण और दक्षिणावर्त**—कोई शंख दक्षिण और दक्षिणावर्त होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं-(१) **वाम और वामावर्त**—कोई पुरुष वाम (स्वभाव से प्रतिकूल) और वामावर्त (प्रवृत्ति से) भी प्रतिकूल होता है। (शंख की तरह चार भग जानने चाहिए)

**269.** *Shankhs* (conch-shells) are of four kinds—(1) ***Vama* and *vamavart***—some *shankh* (conch-shell) is *vama* (left or bad) in terms of class and quality and *vamavart* (with a left turn in shape) (2) ***Vama* and *dakshinavart***—some *shankh* is bad in quality but *dakshinavart* (with a right turn in shape). (3) ***Dakshin* and *vamavart***—some *shankh* is good in quality but *vamavart* (with a left turn in shape). (4) ***Dakshin* and *dakshinavart***—some *shankh* is good in quality and *dakshinavart* (with a right turn in shape).

In the same way *purush* (man) are of four kinds—(1) ***Vama* and *vamavart***—some *purush* is *vama* (bad) by nature and *vamavart* (bad in action). Remaining alternatives should be read as in case of conch-shell.

**विवेचन**—शंख के मुख्य दो प्रकार हैं—वाम और दक्षिण। दक्षिण शंख—मगल कार्यों मे शुभ व अनुकूल प्रभाव वाला माना जाता है। वाम शंख—अमंगलिक व प्रतिकूल प्रभाव वाला होता है। वाम शख दो प्रकार के होते हैं—वामावर्त और दक्षिणावर्त। दक्षिण शंख भी दो प्रकार के होते हैं—दक्षिणावर्त और वामावर्त। जो आवर्त बाईं ओर घूमा हुआ है अथवा बाईं ओर से आरम्भ होता है, वह वामावर्त, इसके विपरीत दक्षिणावर्त। वाम और वामावर्त शंख अशुभ व निकृष्ट होता है, दक्षिण व दक्षिणावर्त शंख सर्वोत्तम माना जाता है।

पुरुष के पक्ष में वाम का अर्थ—मिथ्यादृष्टि तथा वामावर्त का अर्थ—आचार की दृष्टि से हीन। दक्षिण का अर्थ—सम्यग्दृष्टि तथा दक्षिणावर्त का अर्थ—धर्मशील सदाचारी समझना चाहिए। *(हिन्दी टीका, पृ ८११)*

**Elaboration**—Conch-shells are mainly of two kinds—*vama* or of bad quality and *dakshin* or of good quality. *Dakshin shankh*—is believed to be good and favourable for auspicious occasions. *Vama shankh* is believed to have inauspicious and unfavourable influence. *Vama shankh*

is of two kinds—*vamavart* and *dakshinavart*. *Dakshin shankh* is also of two kinds—*vamavart* and *dakshinavart*. The conch-shell with its spiral structure having left turn starting from the left side is *vamavart*. Opposite of this is *Dakshinavart* *Vama* and *vamavart* conch-shell is inauspicious and worthless *Dakshin* and *dakshinavart* conch-shell is supposed to be the best and auspicious

In context of man *vama* means unrighteous and *vamavart* means having bad conduct In the same way *dakshin* means righteous and *dakshinavart* means immaculate in religious conduct. *(Hindi Tika, p. 811)*

**२७०. चत्तारि धूमसिहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—वामा णाममेगा वामावत्ता, वामा णाममेगा दाहिणावत्ता, दाहिणा णाममेगा वामावत्ता, दाहिणा णाममेगा दाहिणावत्ता। एवामेव चत्तारि इत्थीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—वामा णाममेगा वामावत्ता, वामा णाममेगा दाहिणावत्ता, दाहिणा णाममेगा वामावत्ता, दाहिणा णाममेगा दाहिणावत्ता।**

२७०. धूम-शिखाएँ चार प्रकार की होती है-(१) **वामा और वामावर्त्ता**—कोई धूम-शिखा वाम और वामावर्त होती है, (२) **वामा और दक्षिणावर्त्ता**—कोई धूम-शिखा वाम, किन्तु दक्षिणावर्त होती है; (३) **दक्षिणा और वामावर्त्ता**—कोई धूम-शिखा दक्षिण, किन्तु वामावर्त होती है; तथा (४) **दक्षिण और दक्षिणावर्त्ता**—कोई धूम-शिखा दक्षिण और दक्षिणावर्त होती है।

इसी प्रकार स्त्रियाँ चार प्रकार की होती है-(१) कोई स्त्री वाम और वामावर्त; (२) कोई वाम, किन्तु दक्षिणावर्त, (३) कोई दक्षिण, किन्तु वामावर्त, और (४) कोई दक्षिण और दक्षिणावर्त होती है।

**270.** *Dhoom-shikhas* (tongues of smoke) are of four kinds—**(1) *Vama* and *vamavart***—some *dhoom-shikha* is *vama* (left or bad) in terms of quality and *vamavart* (with a left turn) **(2) *Vama* and *dakshinavart***—some *dhoom-shikha* is bad in quality but *dakshinavart* (with a right turn). **(3) *Dakshin* and *vamavart***—some *dhoom-shikha* is good in quality but *vamavart* (with a left turn) **(4) *Dakshin* and *dakshinavart***—some *dhoom-shikha* is good in quality and *dakshinavart* (with a right turn)

In the same way *stree* (women) are of four kinds—(1) some *stree* (woman) is *vama* (unrighteous) and *vamavart* (of bad conduct), (2) some *stree* is *vama* and *dakshinavart* (good conduct), (3) some stree is *dakshin* (righteous) and *vamavart*, and (4) some *stree* is *dakshin* and *dakshinavart*

**२७१. चत्तारि अग्गिसिहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—वामा णाममेगा वामावत्ता, वामा णाममेगा दाहिणावत्ता, दाहिणा णाममेगा वामावत्ता, दाहिणा णाममेगा दाहिणावत्ता। एवामेव चत्तारि इत्थीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—वामा णाममेगा वामावत्ता, वामा णाममेगा दाहिणावत्ता, दाहिणा णाममेगा वामावत्ता, दाहिणा णाममेगा दाहिणावत्ता।**

२७१. अग्नि-शिखाएँ चार प्रकार की होती हैं-(१) कोई अग्नि-शिखा वाम और वामावर्त होती है; (२) कोई अग्नि-शिखा वाम, किन्तु दक्षिणावर्त होती है; (३) कोई अग्नि-शिखा दक्षिण, किन्तु वामावर्त होती है; और (४) कोई अग्नि-शिखा दक्षिण और दक्षिणावर्त होती है।

इसी प्रकार स्त्रियाँ भी चार प्रकार की होती हैं-(१) कोई स्त्री वाम और वामावर्ता होती है; (२) कोई स्त्री वाम, किन्तु दक्षिणावर्त; (३) कोई स्त्री दक्षिण, किन्तु वामावर्त, और (४) कोई स्त्री दक्षिण और दक्षिणावर्त होती है।

**271.** *Agnishikhas* (tongues of fire) are of four kinds—(1) some *agnishikha* (tongue of fire) is *vama* and *vamavart*, (2) some *agnishikha* is *vama* and *dakshinavart*, (3) some *agnishikha* is *dakshin* and *vamavart*, and (4) some *agnishikha* is *dakshin* and *dakshinavart*.

In the same way *stree* (women) are of four kinds—(1) some *stree* (woman) is *vama* and *vamavart*, (2) some *stree* is *vama* and *dakshinavart*, (3) some *stree* is *dakshin* and *vamavart*, and (4) some *stree* is *dakshin* and *dakshinavart*.

**२७२. चत्तारि वायमंडलिया पण्णत्ता, तं जहा—वामा णाममेगा वामावत्ता, वामा णाममेगा दाहिणावत्ता, दाहिणा णाममेगा वामावत्ता, दाहिणा णाममेगा दाहिणावत्ता।**

**एवामेव चत्तारि इत्थीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—वामा णाममेगा वामावत्ता, वामा णाममेगा दाहिणावत्ता, दाहिणा णाममेगा वामावत्ता, दाहिणा णाममेगा दाहिणावत्ता।**

२७२. वात-मण्डलिकाएँ चार प्रकार की होती हैं-(१) कोई वात-मण्डलिका वाम और वामावर्त होती है; (२) कोई वाम, किन्तु दक्षिणावर्त; (३) कोई दक्षिण, किन्तु वामावर्त, और (४) कोई दक्षिण और दक्षिणावर्त होती है।

इसी प्रकार स्त्रियाँ भी चार प्रकार की होती है-(१) कोई स्त्री वाम और वामावर्त होती है, (२) कोई वाम, किन्तु दक्षिणावर्त; (३) कोई दक्षिण, किन्तु वामावर्त; और (४) कोई दक्षिण और दक्षिणावर्त होती है।

**272.** *Vaat-mandalikas* (whirlwinds) are of four kinds—(1) some *vaat-mandalika* (whirlwind) is *vama* and *vamavart*, (2) some *vaat-mandalika* is *vama* and *dakshinavart*, (3) some *vaat-mandalika* is *dakshin* and *vamavart*, and (4) some *vaat-mandalika* is *dakshin* and *dakshinavart*.

In the same way *stree* (women) are of four kinds—(1) some *stree* (woman) is *vama* and *vamavart*, (2) some *stree* is *vama* and *dakshinavart*, (3) some *stree* is *dakshin* and *vamavart*, and (4) some *stree* is *dakshin* and *dakshinavart*.

**विवेचन—सूत्र २७०—धूम-शिखा—**धुएँ से ऊपर उठने वाली शिखा दो प्रकार की होती हैं-(१) वामा (बाईं ओर मुड़ने वाली), और (२) दक्षिणा (दायीं ओर मुड़ने वाली)। वामा धूम-शिखा—अशुभ, रोगवर्द्धक और जीवननाशक मानी जाती है, तथा दक्षिणा धूम-शिखा—रोगनाशक, मांगलिक होती है।

स्त्री के पक्ष में वामा का अर्थ–प्रतिकूल स्वभाव वाली और वामावर्ता का अर्थ–विपरीत आचरण वाली समझना चाहिए। धुआँ भी दो प्रकार का होता है–एक दुर्गंधित पदार्थ का, एक सुगन्धित पदार्थ का। दुर्गन्धित धूम–शिखा–वामावर्ता तथा सुगन्धित धूम–शिखा–दक्षिणावर्ता समझना चाहिए।

सूत्र २७१–**अग्नि–शिखा**–दो प्रकार की होती है–चिता आदि से उठी अग्नि–शिखा वामा तथा हवन कुण्ड आदि पवित्र स्थानो से उठी दक्षिणा कही जाती है। अग्नि–शिखा ज्योति रूप मे प्रकाश भी देती है और ज्वाला रूप मे ताप देती है, जलाती भी है। इसी प्रकार स्त्री के पक्ष मे अग्नि–शिखा की तुलना की गई है, जो स्त्री अपने स्वभाव से सतापदायिनी होती है वह वामा तथा आचरण में कुल को जलाने वाली है, वह वामावर्ता। जो अपने उदात्त स्वभाव के कारण दूसरो को प्रकाश देती है वह दक्षिणा और श्रेष्ठ आचरण से जगत् का कल्याण करती है वह दक्षिणावर्ता।

सूत्र २७२–**वात–मण्डलिका**–वायु का मंडलाकार उठने वाला गोला। बाईं ओर उठने वाली वात–मण्डलिका धन–जन को हानि पहुँचाने वाली अशुभ सूचक होती है और दक्षिणावर्ता–आरोग्यवर्धक, सुखद मानी जाती है। स्त्री के पक्ष मे वामा का अर्थ है–कुटिल व दुष्ट स्वभाव वाली तथा वामावर्ता का अर्थ है–स्वैराचारिणी। दक्षिणा का भाव है–कला–चातुर्य सपन्न व दक्षिणावर्ता–सुशीला। वात–मण्डलिका की तरह स्त्री के पक्ष मे भी चार भग बनते है। *(हिन्दी टीका, पृ ८१३)*

**Elaboration**—(270 ) *Dhoom-shikhas*—tongues of rising smoke are of two kinds—(1) *vama* or that which turns left, and (2) *dakshina* or that which turns right The tongue of smoke that turns left is believed to be inauspicious, booster of disease and destroyer of life and one that turns right is believed to be auspicious and healing.

In context of woman *vama* means one with bad nature and *vamavarti* means with bad behaviour Smoke is also of two kinds, one with bad smell and another with good smell Foul smelling smoke is *vamavarti* and fragrant smoke is *dakshinavarti*.

(271 ) *Agnishikha*—tongue of flame is of two kinds—that rising out of a funeral pyre is *vama* and that rising out of a sacrificial pyre and other pious places is *dakshina*. A tongue of flame is a source of light (*jyoti*) and also a source of heat (*jvala*) that burns too In context of woman the classification is based on these qualities. A woman who causes discomfort to the family by her nature is called *vama* and one who tortures the family with her despicable conduct is called *vamavarta*. A woman who enlightens others with her generous nature is ***dakshina*** and one who benefits people by her ideal conduct is *dakshinavarta*.

(272 ) *Vaat-mandalika*—whirlwind is also of two kinds. A whirlwind rising towards left is a bad omen that is harbinger of harm to wealth and health of people and that rising towards right is messenger of good

health and happiness. In context of woman *vama* means crooked and wicked and *vamavarta* means licentious *Dakshina* means intelligent and wise and *dakshinavarta* is upright. Like whirlwind there are four alternatives regarding woman in this context. *(Hindi Tika, p 813)*

**२७३. चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता, तं जहा—वामे णाममेगे वामावत्ते, वामे णाममेगे दाहिणावत्ते, दाहिणे णाममेगे वामावत्ते, दाहिणे णाममेगे दाहिणावत्ते।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—वामे णाममेगे वामावत्ते, वामे णाममेगे दाहिणावत्ते, दाहिणे णाममेगे वामावत्ते, दाहिणे णाममेगे दाहिणावत्ते।**

२७३. वनषण्ड (उद्यान) चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई वनषण्ड वाम और वामावर्त होता है; (२) कोई वाम, किन्तु दक्षिणावर्त, (३) कोई दक्षिण, किन्तु वामावर्त, और (४) कोई दक्षिण एव दक्षिणावर्त होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष वाम और वामावर्त होता है। (वनषण्ड की तरह चारों भग कहने चाहिए।)

**273.** *Vanakhand* (garden) are of four kinds—(1) some *vanakhand* (garden) is *vama* and *vamavart*, (2) some *vanakhand* is *vama* and *dakshinavart*, (3) some *vanakhand* is *dakshin* and *vamavart,* and (4) some *vanakhand* is *dakshin* and *dakshinavart*.

In the same way *purush* (man) are of four kinds—(1) some *purush* is *vama* (bad) by nature and *vamavart* (bad in action) Remaining alternatives should be read as in the case of garden

**विवेचन**—वनषण्ड—उद्यान भी दो प्रकार के होते है। जहाँ हिंसक पशुओं व चोर-डाकुओ का भय रहता है, तथा झाड-झखाड उगे रहते हैं वह वाम तथा सुन्दर फल-फूल वाले वृक्षों से हराभरा, पर्यटकों के लिए रमणीय एवं तपस्वी तथा योगी जनों का तपोवन, दक्षिण कहा जाता है।

पुरुषो के पक्ष मे वाम का अर्थ है–विचारो से वाममार्गी तथा लोक-विरुद्ध क्रिया करने वाले वामावर्त। दक्षिण का अर्थ है–धार्मिक विचारों वाले तथा धर्मानुकूल आचरण करने वाले दक्षिणावर्त कहलाते है।

इसी प्रकार सूत्र २६५ से २७३ तक सज्जन-दुर्जन, साधु-असाधु आदि मानव-स्वभाव को लक्ष्य कर अनेकान्त दृष्टि से १७ चतुर्भंगी बताई गई हैं। *(हिन्दी टीका, पृ. ८१३)*

**Elaboration**—*Vanakhand*—Gardens are also of two kinds One is fearsome due to presence of fierce animals and bandits and tangled thickets etc. This is *vama*. The other is filled with beautiful flower and fruit bearing trees and plants, attractive for visitors and place of meditation for yogis and hermits. This is *dakshin*.

In context of man *vama* and *vamavart* mean wrong in thought and action and harmful to people *Dakshin* and *dakshinavart* mean religious and pious in thoughts and conduct.

This way seventeen quads have been made to cover human nature from relative standpoints, such as religious and irreligious, pious and impious, righteous and unrighteous etc

*निर्ग्रन्थ–निर्ग्रन्थी–आलाप–पद* **NIRGRANTH-NIRGRANTHI-ALAAP-PAD (SEGMENT OF TALK BETWEEN MALE AND FEMALE ASCETICS)**

**२७४. चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथे णिग्गंथिं आलवमाणे वा संलवमाणे वा णातिक्कमति, तं जहा– १. पंथं पुच्छमाणे वा, २. पंथं देसमाणे वा, ३. असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दलेमाणे वा, ४. असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दलावेमाणे वा।**

२७४. साधु चार कारणो से साध्वी के साथ आलाप–सलाप करता हुआ श्रमणाचार का उल्लंघन नही करता है। जैसे–(१) मार्ग पूछता हुआ, (२) मार्ग बताता हुआ, (३) अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य देता हुआ, और (४) गृहस्थो के घर से अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य दिलाता हुआ।

**274.** A *nirgranth* does not transgress the ascetic-code if he talks to a *nirgranthi* for four reasons—(1) to inquire for a *path*, (2) to show a *path*, (3) to offer food, and (4) to help seeking alms from householders

*तमस्काय–पद* **TAMASKAYA-PAD (SEGMENT OF DARKNESS)**

**२७५. तमुक्कायस्स णं चत्तारि णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा–१. तमेति वा, २. तमुक्काएति वा, ३. अंधकारेति वा, ४. महंधकारेति वा। २७६. तमुक्कायस्स णं चत्तारि णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा–१. लोगंधगारेति वा, २. लोगतमसेति वा, ३. देवंधगारेति वा, ४. देवतमसेति वा। २७७. तमुक्कायस्स णं चत्तारि णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा–१. वातफलिहेति वा, २. वातफलिहखोभेति वा, ३. देवरण्णेति वा, ४. देववूहेति वा। २७८. तमुक्काए णं चत्तारि कप्पे आवरित्ता चिट्ठति, तं जहा–सोधम्मीसाणं सणंकुमारमाहिंदं।**

२७५. तमस्काय के चार नाम है–(१) तम, (२) तमस्काय, (३) अन्धकार, और (४) महान्धकार। २७६. तमस्काय के चार नाम है–(१) लोकान्धकार, (२) लोकतम, (३) देवान्धकार, और (४) देवतम। २७७. तमस्काय के चार नाम है–(१) वातपरिघ, (२) वातपरिघक्षोभ, (३) देवारण्य, और (४) देवव्यूह। २७८. तमस्काय चार कल्पों को घेर करके अवस्थित है–(१) सौधर्मकल्प, (२) ईशानकल्प, (३) सनत्कुमारकल्प, और (४) माहेन्द्रकल्प।

**275.** *Tamaskaya* (agglomerative entity of darkness) has four names—(1) *tam*, (2) *tamaskaya*, (3) *andhakar*, and (4) *mahandhakar*. **276.** *Tamaskaya* (darkness) has four names—(1) *lokandhakar*, (2) *lok-tam*, (3) *devandhakar*, and (4) *devatam*. **277.** *Tamaskaya* (darkness) has four names—(1) *vaat-parigh*, (2) *vaat-parigh-kshobh*, (3) *devaranya*, and (4) *devavyuha* **278.** *Tamaskaya* (darkness) surrounds four *kalps* (divine

dimensions)—(1) *Saudharma kalp*, (2) *Ishan kalp*, (3) *Sanatkumar kalp*, and (4) *Mahendra kalp*

**विवेचन**—उक्त चारों सूत्रों में जिस तमस्काय का निरूपण किया गया है वह जलकाय का सघन अन्धकार रूप मे परिणत समूह है। इस जम्बूद्वीप से आगे असंख्यात द्वीप-समुद्र पार करने पर अरुणवर द्वीप आता है। उसकी बाहरी वेदिका के अन्त में अरुणवर समुद्र है। उसके भीतर ४२ हजार योजन जाने पर एक प्रदेश विस्तृत गोलाकार अन्धकार की एक श्रेणी ऊपर की ओर उठती है जो १,७२१ योजन ऊँची जाने के बाद तिरछी विस्तृत होती हुई सौधर्म आदि चारो देवलोको को घेरकर पाँचवें ब्रह्मलोक के रिष्ट विमान तक चली गई है। उसके पुद्गल कृष्णवर्ण के हैं, अतः उसे तमस्काय कहा जाता है। प्रथम सूत्र में उसके चार नाम सामान्य अन्धकार के और दूसरे सूत्र मे उसके चार नाम महान्धकार के वाचक हैं। लोक मे इसके समान अत्यन्त काला कोई दूसरा अन्धकार नहीं है, इसलिए उसे लोकतम और लोकान्धकार कहते है। देवों के शरीर की दिव्य प्रभा भी वहाँ पर हतप्रभ हो जाती है, अत उसे देवतम और देवान्धकार कहते है। बाहर की वायु भी उसमे प्रवेश नही पा सकती, अत उसे वातपरिघ और वायु टकराती हुई संक्षोभ स्खलित हो जाती है, इसलिए वातपरिघक्षोभ कहा है। देवों के लिए भी वह दुर्गम है, अपराधी देवो के छिपने का स्थान है, अत वह देवारण्य कहा जाता है। *(भगवतीसूत्र, शतक ७ मे विस्तृत वर्णन देखे)* आधुनिक वैज्ञानिको ने ससार मे अनेक ब्लेक होल्स का पता लगाया है, तमस्काय के साथ ब्लेक होल की तुलना करके देखा जा सकता है। तमस्काय की स्थिति का चित्र इस प्रकार बनता है–

**Elaboration**—The *tamaskaya* (agglomerative entity of darkness) discussed in aforesaid four aphorisms is the transformed state of water bodies into agglomerative form of dense darkness After innumerable island-sea pairs beyond this Jambu continent lies Arunavar continent At the end of its outer *vedika* (central plateau) is Arunavar sea Crossing 42 thousand *Yojans* in that sea comes a large round area of darkness rising into the space Going perpendicular for 1,721 *Yojans* it turns it expands to envelope four divine dimensions including *Saudharma kalp* and goes up to *Risht Vimaan* of *Brahmlok kalp* As its constituent particles are of black colour it is called *tamaskaya*. Its four names listed in the first aphorism are synonyms of simple darkness and those in the second aphorism are synonyms of dense darkness. As there is nothing darker than this in this universe it is called *lok-tam* and *lokandhakar* The divine radiance of gods also diffuses there, therefore it is called *devatam* and *devandhakar*. As outside air cannot penetrate it, it is called *vaat-parigh*. On colliding with it outside air disintegrates, therefore it is called *vaat-parigh-kshobh*. As it is difficult for gods to enter it and as it acts as a refuge for criminal gods it is called *devaranya (for more details refer to Bhagavati Sutra 7)*. Modern scientists have found many black holes in the universe. It would be interesting to compare *tamaskaya* and black holes. The illustration of *tamaskaya* is as under—
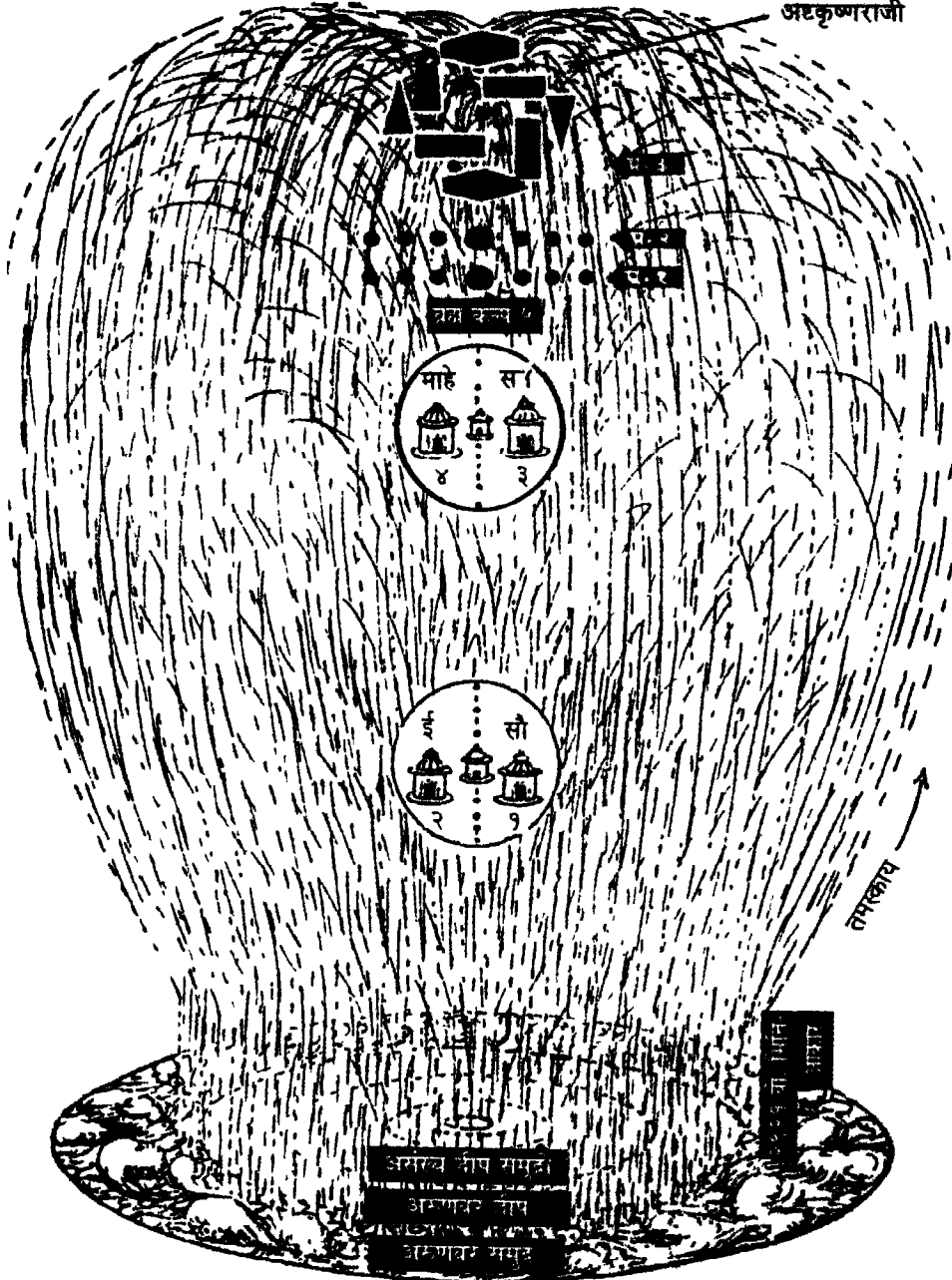
Scene of the rising '*Tamaskay*' (agglomerative entity of darkness) from the Arunavar Samudra

**दोष-प्रतिसेवि-पद DOSH-PRATISEVI-PAD (SEGMENT OF THE ERRANT)**

**२७९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—संपागडपडिसेवी णाममेगे, पच्छण्णपडिसेवी णाममेगे, पडुप्पण्णणंदी णाममेगे, णिस्सरणणंदी णाममेगे।**

२७९. चार प्रकार के पुरुष होते है-(१) **सम्प्रकटप्रतिसेवी**—कोई पुरुष प्रकट में सबके समक्ष अथवा जान-बूझकर दर्प से दोष सेवन करता है, (२) **प्रच्छन्नप्रतिसेवी**—कोई छिपकर दोष सेवन करता है, (३) **प्रत्युत्पन्नप्रतिनन्दी**—कोई वर्तमान काल के सुख, सन्मान के लोभ से दोष सेवन करके आनन्दानुभव करता है, और (४) **निःसरणानन्दी**—कोई-(स्वच्छन्दाचारी) दूसरो के चले जाने पर (गच्छ से किसी साधु या शिष्य आदि के निकल जाने पर) प्रसन्न होता है।

**279.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) *samprakat-pratisevi*—some person commits faults before everyone or knowingly and with pride, (2) *prachchhanna-pratisevi*—some person commits fault furtively, (3) *pratyutpanna-pratinandi*—some person enjoys committing fault with a desire for happiness and honour during this life, and (4) *nihsarananandi*—some person of loose conduct is happy when some other person goes away (some ascetic or disciple is expelled from the group)

**जय-पराजय-पद JAYA-PARAJAYA-PAD (SEGMENT OF VICTORY AND DEFEAT)**

**२८०. चत्तारि सेणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—जइत्ता णाममेगा णो पराजिणित्ता, पराजिणित्ता णाममेगा णो जइत्ता, एगा जइत्तावि पराजिणित्तावि, एगा णो जइत्ता णो पराजिणित्ता।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जइत्ता णाममेगे णो पराजिणित्ता, पराजिणित्ता णाममेगे णो जइत्ता, एगे जइत्तावि पराजिणित्तावि, एगे णो जइत्ता णो पराजिणित्ता।**

२८०. सेनाएँ चार प्रकार की होती है-(१) कोई सेना विजयी होती है, किन्तु पराजित नही होती, (२) कोई सेना पराजित होती है, किन्तु विजयी नही होती, (३) कोई सेना कभी जीतती है और कभी पराजित भी होती है; और (४) कोई सेना न जीतती है और न पराजित ही होती है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई साधु परीषहादि को जीतता है, किन्तु उनसे पराजित नही होता। जैसे-भगवान महावीर। (२) कोई परीषहादि से पराजित होता है, किन्तु उनको जीत नहीं पाता। जैसे-कुण्डरीक। (३) कोई परीषहादि को कभी जीतता है और कभी उनसे पराजित भी होता है। जैसे-शैलक राजर्षि या मेघ मुनि। (४) कोई परीषहादि को न जीतता और न पराजित ही होता है। जैसे-जिसको कभी परीषह उत्पन्न ही नहीं हुआ हो ऐसा नवदीक्षित मुनि।

**280.** *Sena* (army) is of four kinds—(1) some army is victorious and never gets defeated, (2) some army gets defeated and is never victorious, (3) some army is victorious sometimes and gets defeated sometimes, and (4) some army is neither victorious nor gets defeated.

*Purush* (man) is of four kinds—(1) Some man is victorious over afflictions and never gets defeated by them For example Bhagavan Mahavir. (2) Some man gets defeated by afflictions and is never victorious For example Kundarik. (3) Some man is victorious sometimes and gets defeated sometimes. For example Shailak Rajarshi and ascetic Megh. (4) Some man is neither victorious nor gets defeated. For example a neo-initiate who has never faced afflictions

**२८१. चत्तारि सेणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–जइत्ता णाममेगा जयइ, जइत्ता णाममेगा पराजिणति, पराजिणित्ता, णाममेगा जयइ, पराजिणित्ता णाममेगा पराजिणति।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–जइत्ता णाममेगा जयइ, जयइ णाममेगे पराजिणति, पराजिणित्ता णाममेगे जयइ, पराजिणित्ता णाममेगे पराजिणति।**

२८१. सेनाएँ चार प्रकार की होती है–(१) कोई सेना एक बार शत्रु-सेना को जीतकर दुबारा युद्ध होने पर फिर जीतती है, (२) कोई सेना एक बार शत्रु-सेना को जीतकर दुबारा युद्ध होने पर उससे पराजित होती है, (३) कोई सेना एक बार शत्रु-सेना से पराजित होकर दुबारा युद्ध होने पर उसे जीतती है, और (४) कोई सेना एक बार पराजित होकर के पुन पराजित होती है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई साधु कष्टो (परीषहो) को जीतकर पुन (मनोविकारों को) भी जीतता है। जैसे–प्रसन्नचन्द्र राजर्षि, (२) कोई कष्टो को पहले जीतकर बाद मे हार जाता है। जैसे–रथनेमि, (३) कोई पहले परीषहो से हारकर फिर धैर्य धारण कर जीत जाता है। जैसे–मेघ मुनि, और (४) कोई पहले हारकर फिर भी हारता है।

**281.** *Sena* (army) is of four kinds—(1) Some army is victorious once over the enemy forces and again also if there is a war. (2) Some army is victorious once over the enemy forces and gets defeated if there is a war again (3) Some army gets defeated once by the enemy forces and gets victorious if there is a war again (4) Some army gets defeated once by the enemy forces and gets defeated if there is a war again.

In the same way *purush* (man) is of four kinds—(1) Some man is victorious once (over afflictions) and again (over mental perversions) For example Prasannachandra Rajarshi. (2) Some man is victorious once over afflictions and gets defeated the second time. For example Rathanemi (3) Some man gets defeated once by afflictions and gets victorious second time For example ascetic Megh (4) Some man gets defeated once by afflictions and gets defeated second time as well.

माया–पद MAYA-PAD (SEGMENT OF DECEIT)

२८२. चत्तारि केतणा पण्णत्ता, तं जहा—वंसीमूलकेतणए, मेंढविसाणकेतणए, गोमुत्तिकेतणए, अवलेहणियकेतणए।

एवामेव चउविहा माया पण्णत्ता, तं जहा—वंसीमूलकेतणासमाणा, जाव [ मेंढविसाणकेतणासमाणा, गोमुत्तिकेतणासमाणा ] अवलेहणियकेतणासमाणा।

१. वंसीमूलकेतणासमाणं मायमणुपविट्ठे जीवे कालं करेति, णेरइएसु उववज्जति। २. मेंढविसाणकेतणासमाणं मायमणुपविट्ठे जीवे कालं करेति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति। ३. गोमुत्ति जाव [ केतणासमाणं मायमणुपविट्ठे जीवे ] कालं करेति, मणुस्सेसु उववज्जति। ४. अवलेहणिय जाव [ केतणासमाणं मायमणुपविट्ठे जीवे कालं करेति ], देवेसु उववज्जति।

२८२. केतन (वक्र पदार्थ) चार प्रकार का होता है–(१) वंशीमूल केतनक–बाँस की जड जैसा वक्र, (२) मेंढ्रविषाण केतनक–मेढ़े के सीग जैसा वक्र, (३) गोमूत्रिका केतनक–चलते बैल की मूत्र–धारा जैसा वक्र, और (४) अवलेखनिका केतनक–छिलते हुए बाँस की पतली छाल जैसा वक्र।

माया भी चार प्रकार की होती है–(१) वंशीमूल केतनसमाना–बाँस की जड़ के समान अत्यन्त कुटिल अनन्तानुबन्धी माया [(२) मेंढ़े के सींग के समान कुटिल अप्रत्याख्यानावरण माया, (३) गोमूत्रिका के समान प्रत्याख्यानावरण माया] और (४) अवलेखनिका केतनसमाना–बाँस के छिलके के समान सज्वलन माया।

(१) वशीमूल के समान माया मे प्रवर्तमान जीव काल करता है तो नारकी मे उत्पन्न होता है। (२) मेष–विषाण के समान माया मे प्रवर्तमान जीव काल करके तिर्यग्योनि मे, (३) गोमूत्रिका के समान माया वाला जीव काल करके मनुष्य योनि में, और (४) अवलेखनिका के समान माया वाला जीव मरकर देवो में उत्पन्न होता है।

**282.** *Ketan* (crooked things) are of four kinds—(1) *vamshimool ketanak*—crooked like bamboo-root, (2) *mendhravishan ketanak*—crooked like horns of a ram, (3) *gomutrika ketanak*—crooked like urine mark of a walking ox, and (4) *avalekhanika ketanak*—crooked like chiseled thin skin of bamboo.

*Maya* (deceit) is of four kinds—(1) Like *vamshimool ketanak*—extremely crooked like bamboo-root; *anantanubandhi maya*. (2) Like *mendhravishan ketanak*—very crooked like horns of ram; *apratyakhyanavaran maya* (3) Like *gomutrika ketanak*—crooked like urine mark of a walking ox; *pratyakhyanavaran maya*. (4) Like *avalekhanika ketanak*—a little crooked like chiseled thin skin of bamboo; *sanjvalan maya*.

(1) A man dying under the influence of *maya* like *vamshimool ketanak* reincarnates in hell. (2) A man dying under the influence of *maya* like

*mendhravishan ketanak* reincarnates as an animal (3) A man dying under the influence of *maya* like *gomutrika ketanak* reincarnates as a human being. (4) A man dying under the influence of *maya* like *avalekhanika ketanak* reincarnates in divine dimension

### मान-पद MAAN-PAD (SEGMENT OF CONCEIT)

**२८३. चत्तारि थंभा पण्णत्ता, तं जहा–सेलथंभे, अट्ठिथंभे, दारुथंभे, तिणिसलताथंभे।**

**एवामेव चउव्विहे माणे पण्णत्ता, तं जहा–सेलथंभसमाणे, जाव [ अट्ठिथंभसमाणे, दारुथंभसमाणे ] तिणिसलताथंभसमाणे।**

**१. सेलथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति, णेरइएसु उववज्जति। २. एवं जाव [ अट्ठिथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे कालं करेति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति। ३. दारुथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति, मणुस्सेसु उववज्जति। ] ४. तिणिसलताथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेति, देवेसु उववज्जति।**

२८३. स्तम्भ चार प्रकार के होते है–(१) शैलस्तम्भ–पत्थर का खम्भा, (२) अस्थिस्तम्भ–हाड का खम्भा, (३) दारुस्तम्भ–काठ का खम्भा, और (४) तिनिशलतास्तम्भ–बेत का खम्भा।

इसी प्रकार मान भी चार प्रकार का होता है–(१) शैलस्तम्भ समान–अत्यन्त कठोर अनन्तानुबन्धी मान, [(२) अस्थिस्तम्भ समान–अप्रत्याख्यानावरण मान, (३) दारुस्तम्भ समान–अल्प कठोर प्रत्याख्यानावरण मान], और (४) तिनिशलतास्तम्भ समान–स्वल्प कठोर सज्वलन मान।

(१) शैलस्तम्भ के समान मान मे प्रवर्तमान जीव काल करके नारकियो मे उत्पन्न होता है, यावत् [(२) अस्थिस्तम्भ के समान तिर्यग्योनिको मे, (३) दारुस्तम्भ के समान मनुष्यो में], और (४) तिनिशलतास्तम्भ के समान मान मे प्रवर्तमान जीव काल करके देवो मे उत्पन्न होता है।

**283.** *Stambh* (pillar) are of four kinds—(1) *shail stambh*—rock pillar, (2) *asthi stambh*—bone pillar, (3) *daru stambh*—wooden pillar, and (4) *tinish-lata stambh*—cane pillar

*Maan* (conceit) is of four kinds—(1) Like *shail stambh*—extremely hard *anantanubandhi maan* (ego) (2) Like *asthi stambh*—very hard *apratyakhyanavaran maan* (ego). (3) Like *daru stambh*—hard *pratyakhyanavaran maan* (ego) (4) Like *tinish-lata stambh*—little hard *sanjvalan maan.*

(1) A man dying when he is under the influence of *maan* like *shail stambh* reincarnates in hell. (2) A man dying when he is under the influence of *maan* like *asthi stambh* reincarnates as an animal. (3) A man dying when he is under the influence of *maan* (ego) like *daru stambh*

कषाय-स्वरूप और परिणाम

चित्र परिचय १६

Illustration No. 16
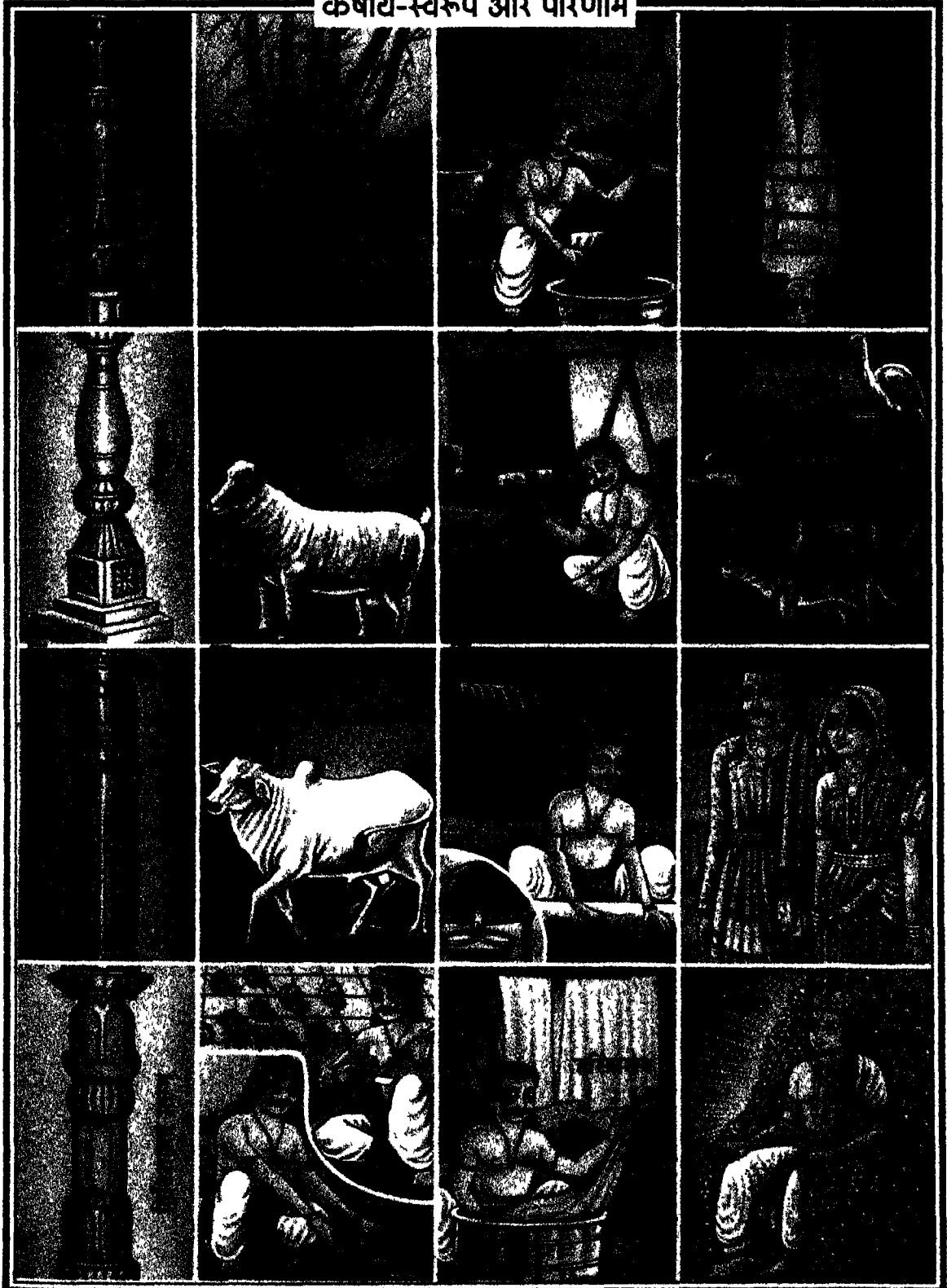
## कषाय स्वरूप और परिणाम

(१) **मान–अहंकार के चार स्तर–१ शैल स्तम्भ**–पत्थर के स्तम्भ के समान अत्यन्त कठोर। २ **अस्थि स्तम्भ**–हड्डियों के बने स्तम्भ के समान कुछ कम कठोर। ३ **काष्ट स्तम्भ**–लकडी के स्तम्भ के समान कुछ मृदु। ४ **तिनिशलता स्तम्भ**–घास के बने स्तम्भ के समान मृदु। शीघ्र झुक जाने वाला।

(२) **माया–कपट के चार स्तर–१ वंशीमूल केतन**–बाँस की जड के समान। २ **मेंढे के सींग** की तरह घुमावदार किन्तु कुछ कम वक्रता वाला, हृदय में गहरी गाँठें रखने वाला। ३ **गोमूत्र** की धारा के समान साधारण वक्रतायुक्त। ४ **अवलेखनिका**–चाँस की लकड़ी के छिलका के समान अति अल्प वक्रता वाला।

(३) **लोभ के चार स्तर–१ कृमि राग रक्त**–किरमिजी रंग के समान अत्यन्त गाढा रंग वाला गहन लोभ। २ **कर्दम राग**–कीचड के रंग के समान गाढा रंग वाला लोभ। ३ **खंजन राग**–काजल के रंग के समान सामान्य गाढा लोभ। ४ **हरिद्रा राग**–हल्दी के रंग के समान सुशोध्य, शीघ्र मिट जाने वाला हल्का लोभ।

प्रथम कोटि के तीनों कषाय अनन्तानुबन्धी हैं इनमें मृत्यु प्राप्त करने वाला नरकगामी होता है। द्वितीय कोटि के कषाय अप्रत्याख्यानवरण हैं इनमें मृत्यु प्राप्त करने वाला तिर्यंचगति में जाता है। तृतीय कोटि का प्रत्याख्यानवरण है, इनमें मरकर जीव मनुष्यगति प्राप्त करता है। चतुर्थ कोटि का संज्वलन कषाय है, इस दशा में मृत्यु प्राप्त करने वाला देवगति में जाता है। चित्र में तीनों कषाय का स्वरूप तथा उनके परिणाम दर्शाये हैं।

स्था. ४, सूत्र २८२, २८१

(क्रोध कषाय का वर्णन भाग २ सूत्र ३५४ पर है।)

## PASSIONS FORM AND FRUITS

**(1) Four levels of maan (conceit)—1 Like shail stambh**—extremely hard like a rock-pillar 2 **Like asthi stambh**—very hard like a bone-pillar 3 **Like daru stambh**—hard like a wooden pillar 4 **Like tinish-lata stambh**—little hard and pliable like a pillar made of hay

**(2) Four levels of maya (deceit)—1 Like vamshimool ketan**—extremely crooked like bamboo root 2 **Like mendhravishan**—very crooked like horns of ram one who carries a grudge **3. Like gomutrika**—crooked like urine mark of a walking ox **4 Like avalekhanika**—little crooked like chiseled thin skin of bamboo

**(3) Four levels of lobh (greed)—1. Like krimiragarakt**—extremely hard to remove like a spot of crimson dye 2 **Like kardamaraga**—very hard to remove like a spot of slime 3 **Like khanjanaraga**—hard to remove like a spot of soot 4 **Like haridraraga**—little hard to remove like a spot of turmeric

All the three passions of the first grade are anantanubandhi and lead to birth in hell Those of the second grade are apratyakhyanavaran and lead to birth as an animal Those of the third grade are pratyakhyanavaran and lead to birth as a human being Those of the third grade are sanjvalan and lead to birth as a divine being The illustration shows three passions and their consequences

*- Sthaan 4, Sutra 282 281*

(Anger has been described in Part 2, aphorism 354)

reincarnates as a human being. (4) A man dying when under the influence of *maan* (ego) like *tinish-lata stambh* reincarnates in divine dimension.

**लोभ-पद LOBH-PAD (SEGMENT OF GREED)**

**२८४. चत्तारि वत्था पण्णत्ता, तं जहा–किमिरागरत्ते, कद्दमरागरत्ते, खंजणरागरत्ते, हलिद्दरागरत्ते।**

**एवामेव चउव्विहे लोभे पण्णत्ते, तं जहा–किमिरागरत्तवत्थसमाणे, कद्दमरागरत्तवत्थसमाणे, खंजणरागरत्तवत्थसमाणे, हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणे।**

**१. किमिरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, णेरइएसु उववज्जइ। २. तहेव जाव [कद्दमरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ। ३. खंजणरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, मणुस्सेसु उववज्जइ।] ४. हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, देवेसु उववज्जइ।**

२८४. वस्त्र चार प्रकार के होते है–(१) **कृमिरागरक्त**–कृमियो के रक्त से या किर्मिजी रग से रंगा हुआ वस्त्र, (२) **कर्दमरागरक्त**–कीचड से रगा हुआ, (३) **खञ्जनरागरक्त**–काजल के रंग से रगा हुआ, और (४) **हरिद्रारागरक्त**–हल्दी के रग से रंगा हुआ।

इसी प्रकार लोभ भी चार प्रकार का होता है–(१) कृमिरागरक्त वस्त्र के समान अत्यन्त कठिनाई से छूटने वाला अनन्तानुबन्धी लोभ, यावत् [(२) कर्दमरागरक्त वस्त्र के समान कठिनाई से छूटने वाला अप्रत्याख्यानावरण लोभ, (३) खञ्जनरागरक्त वस्त्र के समान स्वल्प कठिनाई से छूटने वाला प्रत्याख्यानावरण लोभ], और (४) हरिद्रारागरक्त वस्त्र के समान सरलता से छूटने वाला सज्वलन लोभ।

(१) कृमिरागरक्त वस्त्र के समान लोभ मे प्रवर्तमान जीव काल करके नारक मे उत्पन्न होता है, यावत् [(२) कर्दमरागरक्त वस्त्र के समान लोभ वाला तिर्यग्योनिकों मे, (३) खञ्जनरागरक्त वस्त्र के समान लोभ वाला मनुष्यों में], और (४) हरिद्रारागरक्त वस्त्र के समान लोभ वाला जीव काल करके देवों में उत्पन्न होता है।

**284.** *Vastra* (cloth) are of four kinds—(1) *krimiragarakt*—coloured with blood of worms or with *kirmichi* (blood-red) colour, (2) *kardamaragarakt*—coloured with slime, (3) *kardamaragarakt*—coloured with soot, and (4) *haridraragarakt vastra*—coloured with turmeric.

*Lobh* (greed) is of four kinds—(1) Like *krimiragarakt*—extremely hard to remove *anantanubandhi lobh* unending greed. (2) Like *kardamaragarakt vastra*—very hard to remove *apratyakhyanavaran lobh*. (3) Like *khanjanaragarakt vastra*—hard to remove *pratyakhyanavaran lobh*. (4) Like *haridraragarakt vastra*—a little hard to remove *sanjvalan lobh*.

(1) A man dying when under the influence of *lobh* like *krimiragarakt* reincarnates in hell. (2) A man dying when under the influence of *lobh* like *kardamaragarakt vastra* reincarnates as an animal (3) A man dying when under the influence of *lobh* like *khanjanaragarakt vastra* reincarnates as a human being. (4) A man dying when under the influence of *lobh* like *haridraragarakt vastra* reincarnates in divine dimension

**संसार-पद SAMSAR-PAD (SEGMENT OF WORLD)**

**२८५. चउव्विहे संसारे पण्णत्ते, तं जहा–णेरइयसंसारे, जाव [ तिरिक्खजोणियसंसारे, मणुस्ससंसारे ], देवसंसारे।**

२८५. संसार चार प्रकार का है–(१) नैरयिकससार, (२) तिर्यग्योनिकससार, (३) मनुष्यससार, और (४) देवससार।

**285.** *Samsar* (world) is of four kinds—(1) *narayik samsar* (infernal world), (2) *tiryagyonik samsar* (animal world), (3) *manushya samsar* (human world), and (4) *deva samsar* (divine world)

**२८६. चउव्विहे आउए पण्णत्ते, तं जहा–णेरइयआउए, जाव [ तिरिक्खजोणियआउए, मणुस्साउए ], देवाउए।**

२८६. आयुष्य चार प्रकार का होता है–(१) नैरयिक-आयुष्य, (२) तिर्यग्योनिक-आयुष्य, (३) मनुष्य-आयुष्य, और (४) देव-आयुष्य।

**286.** *Ayushya* (life span) is of four kinds—(1) *narayik ayushya* (infernal life span), (2) *tiryagyonik ayushya* (animal life span), (3) *manushya ayushya* (human life span), and (4) *deva ayushya* (divine life span).

**२८७. चउव्विहे भवे पण्णत्ते, तं जहा–णेरइयभवे, जाव [ तिरिक्खजोणियभवे, मणुस्सभवे ] देवभवे।**

२८७. भव (उत्पत्ति) चार प्रकार का होता है–(१) नैरयिकभव, (२) तिर्यग्योनिकभव, (३) मनुष्यभव, और (४) देवभव।

**287.** *Bhava* (reincarnation or birth) is of four kinds—(1) *narayik bhava* (infernal reincarnation or birth), (2) *tiryagyonik bhava* (animal reincarnation or birth), (3) *manushya bhava* (human reincarnation or birth), and (4) *deva bhava* (divine reincarnation or birth).

**आहार-पद AHAR-PAD (SEGMENT OF FOOD)**

**२८८. चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा–असणे, पाणे, खाइमे, साइमे।**

२८८. आहार चार प्रकार का होता है-(१) अशन-अन्न आदि। (२) पान-कांजी, दुग्ध, छाछ आदि। (३) खादिम-फल, मेवा आदि। (४) स्वादिम-ताम्बूल, लवग, इलायची आदि।

**288.** *Ahar* (food) is of four kinds—(1) *ashan* (staple food)—grains etc., (2) *paan* (liquids)—vinegar, milk, butter-milk etc., (3) *khadya* (general food)—fruits, dry fruits etc., and (4) *svadya* (savoury food)—betel leaves, clove, cardamom etc

**२८९. चउव्विहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—उवक्खरसंपण्णे, उवक्खडसंपण्णे, सभावसंपण्णे, परिजुसियसंपण्णे।**

२८९. आहार चार प्रकार का होता है-(१) उपस्कर-सम्पन्न-घी, तेल आदि से युक्त मसाले डालकर छौंका हुआ। (२) उपस्कृत-सम्पन्न-पकाया हुआ भात आदि। (३) स्वभाव-सम्पन्न-स्वभाव से पके फल आदि। (४) पर्युषित-सम्पन्न-रात-वासी रखने से तैयार हुआ आहार।

**289.** *Ahar* (food) is of four kinds—(1) *upaskar-sampanna*—cooked in oil or butter with spices, (2) *upaskrit-sampanna*—cooked rice etc , (3) *svabhava-sampanna*—naturally ripened fruits etc , and (4) *paryushit-sampanna*—food prepared by seasoning for one night

### *कर्मावस्था-पद* KARMAVASTHA-PAD (SEGMENT OF STATE OF KARMA)

**२९०. चउव्विहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—पगतिबंधे, ठितिबंधे, अणुभावबंधे, पदेसबंधे।**

**२९१. चउव्विहे उवक्कमे पण्णत्ते, तं जहा—बंधणोवक्कमे, उदीरणोवक्कमे, उवसामणोवक्कमे, विप्परिणामणोवक्कमे।**

**२९२. बंधणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—पगतिबंधणोवक्कमे, ठितिबंधणोवक्कमे, अणुभावबंधणोवक्कमे, पदेसबंधणोवक्कमे।**

**२९३. उदीरणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—पगतिउदीरणोवक्कमे, ठितिउदीरणोवक्कमे, अणुभावउदीरणोवक्कमे, पदेसउदीरणोवक्कमे।**

**२९४. उवसामणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—पगतिउवसामणोवक्कमे, ठितिउवसामणोवक्कमे, अणुभावउवसामणोवक्कमे, पदेसउवसामणोवक्कमे।**

**२९५. विप्परिणामणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—पगतिविप्परिणामणोवक्कमे, ठितिविप्परिणामणोवक्कमे, अणुभावविप्परिणामणोवक्कमे, पएसविप्परिणामणोवक्कमे।**

**२९६. चउव्विहे अप्पाबहुए पण्णत्ते, तं जहा—पगतिअप्पाबहुए, ठितिअप्पाबहुए, अणुभावअप्पाबहुए, पएसअप्पाबहुए।**

**२९७. चउव्विहे संकमे पण्णत्ते, तं जहा–पगतिसंकमे, ठितिसंकमे, अणुभावसंकमे, पएससंकमे।**

२९०. **बन्ध** (कर्मबन्ध) चार प्रकार का होता है–(१) **प्रकृतिबन्ध**–जीव द्वारा ग्रहण किये हुए कर्म-पुद्गलों में ज्ञानादि गुणो को रोकने का स्वभाव उत्पन्न होना, (२) **स्थितिबन्ध**–ग्रहण किये हुए कर्म-पुद्गलों की काल-मर्यादा का नियत होना, (३) **अनुभावबन्ध**–कर्म-पुद्गलों में फल देने की तीव्र-मन्द शक्ति का उत्पन्न होना, और (४) **प्रदेशबन्ध**–कर्म-पुद्गलो के प्रदेशो का समूह।

२९१. **उपक्रम** चार प्रकार का होता है–(१) **बन्धनोपक्रम**–कर्म-पुद्गलो का जीव प्रदेशो के साथ परस्पर सम्बन्ध होना, (२) **उदीरणोपक्रम**–कर्मों की उदीरणा मे कारणभूत जीव का प्रयत्न, (३) **उपशामनोपक्रम**–कर्मों के उपशमन मे कारणभूत जीव का प्रयत्न, और (४) **विपरिणामनोपक्रम**–कर्मों की एक अवस्था से दूसरी अवस्था रूप परिणमन कराने मे कारणभूत जीव का प्रयत्न।

२९२. **बन्धनोपक्रम** चार प्रकार का होता है–(१) प्रकृति-बन्धनोपक्रम, (२) स्थिति-बन्धनोपक्रम, (३) अनुभाव-बन्धनोपक्रम, और (४) प्रदेश-बन्धनोपक्रम।

२९३. **उदीरणोपक्रम** चार प्रकार का होता है–(१) प्रकृति-उदीरणोपक्रम, (२) स्थिति-उदीरणोपक्रम, (३) अनुभाव-उदीरणोपक्रम, और (४) प्रदेश-उदीरणोपक्रम।

२९४. **उपशामनोपक्रम** चार प्रकार का होता है–(१) प्रकृति-उपशामनोपक्रम, (२) स्थिति-उपशामनोपक्रम, (३) अनुभाव-उपशामनोपक्रम, और (४) प्रदेश-उपशामनोपक्रम।

२९५. **विपरिणामनोपक्रम** चार प्रकार का होता है–(१) प्रकृति-विपरिणामनोपक्रम, (२) स्थिति-विपरिणामनोपक्रम, (३) अनुभाव-विपरिणामनोपक्रम, और (४) प्रदेश-विपरिणामनोपक्रम।

२९६. अल्पबहुत्व चार प्रकार का है–(१) प्रकृति-अल्पबहुत्व, (२) स्थिति-अल्पबहुत्व, (३) अनुभाव-अल्पबहुत्व, और (४) प्रदेश-अल्पबहुत्व।

२९७. सक्रम चार प्रकार का होता है–(१) प्रकृति-सक्रम, (२) स्थिति-सक्रम, (३) अनुभाव-सक्रम, (४) प्रदेश-संक्रम।

**290.** *Bandh* (bondage of *karma*) is of four kinds—(1) *prakriti bandh* (qualitative bondage)—development of the capacity of veiling attributes like knowledge in the *karma* particles acquired by soul, (2) *sthiti bandh* (duration bondage)—fixation of the duration of bondage of the acquired *karma* particles, (3) *anubhaava bandh* (potency bondage)—development of intensity of fruition in *karma* particles, and (4) *pradesh bandh* (space-point or sectional bondage)—clustering of *karma* particles relative to soul space-points

**291.** *Upakram* (commencement) is of four kinds—(1) *bandhanopakram*—commencement of the contact of *karma* particles

with soul space-points, (2) *udiranopakram*—commencement of efforts of a soul directed at fruition of *karmas*, (3) *upashamannopakram*—commencement of efforts of a soul directed at pacification of *karmas*, and (4) *viparinamanopakram*—commencement of efforts of a soul directed at transformation of one state of *karma* to another.

**292.** *Bandhanopakram* is of four kinds—(1) *prakriti bandhanopakram*, (2) *sthiti bandhanopakram*, (3) *anubhaava bandhanopakram*, and (4) *pradesh bandhanopakram*.

**293.** *Udiranopakram* is of four kinds—(1) *prakriti udiranopakram*, (2) *sthiti udiranopakram*, (3) *anubhaava udiranopakram*, and (4) *pradesh udiranopakram*.

**294.** *Upashamanopakram* is of four kinds—(1) *prakriti upashamanopakram*, (2) *sthiti upashamanopakram*, (3) *anubhaava upashamanopakram*, and (4) *pradesh upashamanopakram*.

**295.** *Viparinamanopakram* is of four kinds—(1) *prakriti viparinamanopakram*, (2) *sthiti viparinamanopakram*, (3) *anubhaava viparinamanopakram*, and (4) *pradesh viparinamanopakram*

**296.** *Alpabahutva* maximum and minimum is of four kinds—(1) *prakriti alpabahutva*, (2) *sthiti alpabahutva*, (3) *anubhaava alpabahutva*, and (4) *pradesh alpabahutva*.

**297.** *Sankram* is of four kinds—(1) *prakriti sankram*, (2) *sthiti sankram*, (3) *anubhaava sankram*, and (4) *pradesh sankram*.

**२९८. चउव्विहे णिधत्ते पण्णत्ते, तं जहा—पगतिणिधत्ते, ठितिणिधत्ते, अणुभावणिधत्ते, पएसणिधत्ते।**

**२९९. चउव्विहे णिकाइत पण्णत्ते, तं जहा—पगईणिकाइए, ठितिणिकाइए, अणुभावणिकाइए, पएसणिकाइए।**

२९८. निधत्त चार प्रकार का होता है—(१) प्रकृति-निधत्त, (२) स्थिति-निधत्त, (३) अनुभाव-निधत्त, (४) प्रदेश-निधत्त।

२९९. निकाचित चार प्रकार का होता है—(१) प्रकृति-निकाचित, (२) स्थिति-निकाचित, (३) अनुभाव-निकाचित, (४) प्रदेश-निकाचित।

**298.** *Nidhatt* is of four kinds—(1) *prakriti nidhatt*, (2) *sthiti nidhatt*, (3) *anubhaava nidhatt*, and (4) *pradesh nidhatt*

**299.** *Nikachit* is of four kinds—(1) *prakriti nikachit*, (2) *sthiti nikachit*, (3) *anubhaava nikachit*, and (4) *pradesh nikachit*.

**विवेचन**—सूत्र २६३ से लेकर २७२ तक के १० सूत्रों मे कर्मों की अनेक अवस्थाओं का निरूपण है। इसमें से (२) उदय और (३) सत्ता को छोडकर शेष आठ की 'करण' सज्ञा है। क्योंकि उनके सम्पादन के लिए जीव को अपनी योग–वीर्य–शक्ति का विशेष उपक्रम (उद्यम) करना पडता है। दस अवस्थाओं का स्वरूप इस प्रकार है–

(१) **बन्ध**—जीव और कर्म–पुद्गलो का गाढ सयोग। (२) **उदय**—बँधे हुए कर्म–पुद्गलो को यथासमय फल देना। (३) **सत्ता**—बँधे कर्मों का जीव के उदय मे आने तक अवस्थित रहना अनुदय अवस्था है। (४) **उदीरणा**—बँधे कर्मों को उदयकाल आने के पूर्व ही अपवर्तन करके उदय में लाना। (५) **उद्वर्तना**—बँधे कर्मों की स्थिति और अनुभाव–शक्ति को बढाना। (६) **अपवर्तना**—बँधे कर्मों की स्थिति और अनुभाव–शक्ति को घटाना। (७) **संक्रम**—एक कर्म–प्रकृति के सजातीय दूसरी प्रकृति मे परिणमन होना। (८) **उपशम**—मोह कर्म को उदय–उदीरणा के अयोग्य करना। (९) **निधत्ति**—बँधे हुए जिस कर्म को उदय मे भी न लाया जा सके और उद्वर्तन, अपवर्तन एव सक्रम भी न किया जा सके, ऐसी अवस्था–विशेष। (१०) **निकाचित**—बँधे हुए जिस कर्म का उपशम, उदीरणा, उद्वर्तना, अपवर्तना और सक्रम आदि कुछ भी न किया जा सके, ऐसी अवस्था–विशेष।

उक्त दशों ही प्रकृति, स्थिति, अनुभाव और प्रदेश के भेद से चार–चार प्रकार के होते है। उनमे से बन्ध, उदीरणा, उपशम, सक्रम, निधत्त और निकाचित के चार–चार भेदो का वर्णन सूत्रो मे किया ही है। शेष उद्वर्तना और अपवर्तना का समावेश विपरिणामनोपक्रम मे है।

**विपरिणमन**—कर्म–पुद्गलो के क्षय, क्षयोपशम, उद्वर्तना, अपवर्तना आदि के द्वारा नई–नई अवस्थाएँ उत्पन्न करना।

**Elaboration**—Various states of *karmas* have been defined in the aforesaid ten aphorisms from 263 to 272. Besides *udaya* (2) and *satta* (3) the remaining eight states are called '*karan*' (instrument or means) This is because in order to attain these states a soul has to make special efforts by means of *yoga* (association), *virya* (potency) and *shakti* (power) Brief definitions of these ten states are as follows—

(1) *Bandh* (bondage)—intimate association or fusion of soul and *karma* particles (2) *Udaya* (fructification)—natural fructification of *karma* particles in due course in the form of suffering (3) *Satta* (latent state)—latent state of acquired *karmas* before their fructification. This is non-fructified state (4) *Udirana* (fructify) to cause fructification of acquired *karmas* by reducing their potency in advance of their natural fruition. (5) *Udvartana* (enhancement)—enhancement of the duration and potency of acquired *karmas*. (6) *Apavartana* (reduction)—reduction of the duration and potency of acquired *karmas*. (7) *Sankram* (transformation)—qualitative transformation of one species of *karma* to

another of the same class. (8) *Upasham* (pacification)—to cause deluding *karma* not to fructify naturally or with effort. (9) *Nidhatti* (state of partial intransigence)—a state of *karmas* where they are rendered incapable of the processes of *udaya, udvartan, apavartan* and *sankram.* (10) *Nikachit* (state of intransigence)—a state of *karmas* where they are rendered incapable of all processes including *upasham, udirana, udvartan, apavartan* and *sankram*

The aforesaid ten states have four alternatives each in terms of *prakriti* (nature), *sthiti (*duration), *anubhaava* (essence) and *pradesh* (contents) Out of these *bandh, udirana, upasham, sankram, nidhatt* and *nikachit* have been stated in the aforesaid aphorisms The remaining two, *udvartana* and *apavartana*, are covered in *viparinamanopakram*

*Viparinaman*—to create new states of *karma* particles through the processes of *kshaya* (extinction), *kshayopasham* (extinction-cum-pacification), *udvartana* (enhancement), *apavartana* (reduction) etc.

**संख्या–पद SANKHYA-PAD (SEGMENT OF NUMBER)**

**३००. चत्तारि एक्का पण्णत्ता, तं जहा–दविएक्कए, माउएक्कए, पज्जवेक्कए, संगहेक्कए।**

३००. 'एक' संख्या चार प्रकार की होती है–(१) **द्रव्यैक**, (२) **मातृकैक**, (३) **पर्यायैक**, (४) **संग्रहैक**।

**300.** *Ek sankhya* (number one) is of four kinds—(1) *dravyaik* (one entity), (2) *matrikaik* (one root), (3) *paryayaik* (one mode), and (4) *samgrahaik* (one collection).

**विवेचन–१. द्रव्यैक**–संसार में द्रव्य अनेक प्रकार के हैं, जैसे–जीव द्रव्य, अजीव द्रव्य आदि। किन्तु द्रव्यत्व सबमें समान होने से 'द्रव्य एक' है ऐसा कहा जाता है। (२) **मातृका एक**–उप्पन्नेइ वा विगमे इ वा, धुव इ वा–इन तीन पदों को मातृका पद कहा जाता है। प्रत्येक द्रव्य इस मातृकापद से युक्त 'सत्' है। यह सभी नयों का बीजभूत है। (३) **पर्याय एक**–द्रव्य की तरह पर्याय भी अनेक है, किन्तु एक द्रव्य में एक समय में एक ही पर्याय होती है तथा परिणमन स्वभाव की दृष्टि से पर्याय एक है। (४) **संग्रह एक**–संग्रहनय पदार्थ के सामान्य धर्म का कथन करता है। सभी पदार्थों मे सामान्यत्व एक है, जैसे गेहूँ के विशाल ढेर को यह गेहूँ पड़ा है, मनुष्यों के समूह को समाज कहना। *(हिन्दी टीका, पृष्ठ ८३६)*

**Elaboration**—(1) *Dravyaik* (one entity)—There are numerous entities in this universe but as the existential attribute of being an entity is same in all, it is said that entity is one. (2) *Matrikaik* (one root)—'creation, destruction and permanence' is called the *matrika pad* (root phrase). It is the basis of existence of every entity. It is also the root of all *nayas*

(standpoints). (3) *Paryayaik* (one mode)—Like entities modes are also numerous but at one point of time one entity has only one mode. Also the property of transformation is uniform in all modes. (4) *samgrahaik* (one collection)—*samgraha naya* (generalized viewpoint) deals with general properties of things. Such general properties are uniform in a collection of things. For example to state that 'this is wheat' for a heap of grains of wheat or 'this is society' for a group of men *(Hindi Tika, p. 836)*

**३०१. चत्तारि कती पण्णत्ता, तं जहा—दवियकती, माउयकती, पज्जवकती, संगहकती।**

३०१. संख्यावाचक 'कति' चार प्रकार का है। जैसे—(१) द्रव्यकति—द्रव्य कितने हैं ? (२) मातृकाकति—मातृका कितने है ? (३) पर्यायकति—पर्याय कितने है ? (४) संग्रहकति—संग्रह कितने है ?

**301.** *Kati* (how many ?) is of four kinds—(1) *dravyakati*—how many entities are there? (2) *matrikakati*—how many roots are there?, (3) *paryayakati*—how many modes are there? and (4) *samgrahakati*—how many collectives are there ?

**विवेचन**—'कति' शब्द बहुवचनात है और साथ ही प्रश्नवाचक। द्रव्य, मातृकापद, पर्याय और संग्रह इन सबके समूह का वाचक होने से कति चार प्रकार का है। जैसे—द्रव्य कितने है ? छह ! मातृका पद कितने हैं ? अनन्त ! दंडक (पर्याय विशेष) कितने है ? चौबीस। काय (जीव समूह) कितने है ? छह। *(हिन्दी टीका, पृष्ठ ८३६)*

**Elaboration**—The word '*kati*' has a plural ending and it is interrogative as well As it is in context of *dravya, matrika, paryaya* and *samgraha*, *kati* is stated to be of four kinds Examples—How many entities are there ? There are six entities How many roots are there ? There are infinite roots How many *dandaks* (specific modes) are there ? There are twenty four *dandaks*. How many *kayas* (classes of beings) are there ? There are six classes of beings *(Hindi Tika, p 836)*

**३०२. चत्तारि सव्वा पण्णत्ता, तं जहा—णामसव्वए, ठवणसव्वए, आएससव्वए, णिरवसेससव्वए।**

३०२. 'सर्व' चार प्रकार के होते है। जैसे—(१) नामसर्व—नामनिक्षेप की अपेक्षा जिसका 'सर्व' नाम रखा जाय। (२) स्थापनासर्व—स्थापनानिक्षेप की अपेक्षा जिस व्यक्ति मे 'सर्व' का आरोप किया जाय। (३) आदेशसर्व—अधिक की मुख्यता को ध्यान मे रखकर अल्प को गौण मानकर कहना 'आदेश-सर्व' है। जैसे—बहुत लोगों के चले जाने और कुछ बचे रहने पर भी कहना 'सारा गाम चला गया'। (४) निरवशेषसर्व—सम्पूर्ण व्यक्तियो के आश्रय से कहा जाने वाला 'सर्व' निरवशेषसर्व है। जैसे—सर्व देव अनिमिष (नेत्र टिमिकाररहित) होते है, क्योंकि एक भी देव नेत्र टिमिकारसहित नहीं होता।

**302.** *Sarva* (all) is of four kinds—(1) *Naam sarva* (*sarva* as name)—in context of name attribution, that which is named *sarva*. (2) *Sthapana sarva*—In context of notional installation, that in which *sarva* (all) is installed. (3) *Adesh sarva*—to state *sarva* (all) by considering the larger portion and ignoring the smaller portion. For example when a larger portion of the population of a village leaves and only a few are left, it is said that whole village has gone. (4) *Niravashes sarva*—to state *sarva* (all) to cover all and leaving none. For example to state 'All gods are non-blinking.' Here *sarva* genuinely covers all, because there is not a single god that blinks.

### कूट-पद KOOT-PAD (SEGMENT OF PEAKS)

**३०३. माणुसुत्तरस्स णं पव्वयस्स चउदिसिं कूडा पण्णत्ता, तं जहा—रयणे, रत्तणुच्चए सव्वरयणे, रतणसंचए।**

३०३. मानुषोत्तर पर्वत की चारो दिशाओं मे चार कूट है—(१) रत्नकूट—दक्षिण—पूर्व आग्नेय दिशा मे। (२) रत्नोच्चयकूट—दक्षिण—पश्चिम नैऋत्य दिशा में। (३) सर्वरत्नकूट—पूर्व—उत्तर ईशान दिशा में। (४) रत्नसचयकूट—पश्चिम—उत्तर वायव्य दिशा मे।

**303.** In four directions of Manushottar mountain there are four *koots* (peaks)—(1) Ratna *koot* in the Agneya (south-east) direction, (2) Ratnochchaya *koot* in the Nairitya (south-west) direction, (3) Sarvaratna *koot* in the Ishaan (north-east) direction, and (4) Ratnasanchaya *koot* in the Vayavya (north-west) direction.

### कालचक्र-पद KAAL CHAKRA-PAD (SEGMENT OF CYCLE OF TIME)

**३०४. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो हुत्था। ३०५. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवतेसु वासेसु इमीसे ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो पण्णत्तो। ३०६. जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवतेसु वासेसु आगमेस्साए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो भविस्सइ।**

३०४. जम्बूद्वीप द्वीप मे भरत और ऐरवत क्षेत्रों मे अतीत उत्सर्पिणी के 'सुषम—सुषमा' नामक आरे का काल—प्रमाण चार कोडाकोडी सागरोपम था। ३०५. जम्बूद्वीप द्वीप के भरत और ऐरवत क्षेत्रों में इस अवसर्पिणी के 'सुषम—सुषमा' नामक आरे का काल—प्रमाण चार कोडाकोडी सागरोपम था। ३०६. जम्बूद्वीप नामक द्वीप के भरत और ऐरवत क्षेत्रों में आगामी उत्सर्पिणी के 'सुषम—सुषमा' नामक आरे का काल—प्रमाण चार कोडाकोडी सागरोपम होगा।

**304.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas the length of *Sukham-sukhama ara* (epoch of extreme happiness) of the past *Utsarpini* (progressive half-cycle of time) was four *koda-kodi Sagaropam* (a metaphoric unit of time). **305.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas the length of *Sukham-sukhama ara* (epoch of extreme happiness) of the current *Avasarpini* (regressive half-cycle of time) was four *koda-kodi Sagaropam* (a metaphoric unit of time). **306.** In Jambu Dveep in Bharat and Airavat areas the length of *Sukham-sukhama ara* (epoch of extreme happiness) of the coming *Utsarpini* (progressive half-cycle of time) will be four *koda-kodi Sagaropam* (a metaphoric unit of time)

**३०७. जंबुद्दीवे दीवे देवकुरु उत्तरकुरुवज्जओ चत्तारि अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—हेमवते, हेरण्णवते, हरिवरिसे, रम्मगवरिसे।**

**चत्तारि वट्टवेयड्ढपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—सद्दावाती, वियडावाती, गंधावाती, मालवंतपरियाते। तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—साती, पभासे, अरुणे, पउमे।**

३०७. जम्बूद्वीप द्वीप मे देवकुरु और उत्तरकुरु को छोडकर चार अकर्मभूमियाँ है–(१) हैमवत, (२) हैरण्यवत, (३) हरिविर्ष, (४) रम्यकवर्ष।

उनमें चार वैताढ्य पर्वत है–(१) शब्दापाती, (२) विकटापाती, (३) गन्धापाती, (४) माल्यवत्पर्याय। उन पर पल्योपम की स्थिति वाले यावत् महर्द्धिक चार देव रहते है–(१) स्वाति, (२) प्रभास, (३) अरुण, (४) पद्म।

**307.** Leaving aside Deva Kuru and Uttar Kuru there are four *akarma bhumis* (land of inactivity or of enjoyment) in Jambu Dveep—(1) Haimavat, (2) Hairanyavat, (3) Harivarsh, and (4) Ramyak-varsh.

In these there are four *Vaitadhya* mountains—(1) Shabdapati, (2) Vikatapati, (3) Gandhapati, and (4) Malyavatparyaya. On these reside four gods (*Mahardhik*) having great wealth, . and so on up to... life span of one *Palyopam* (a metaphoric unit of time)—(1) Swati, (2) Prabhas, (3) Arun, and (4) Padma.

### महाविदेह–पद MAHAVIDEH-PAD (SEGMENT OF MAHAVIDEH

**३०८. जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—पुव्वविदेहे, अवरविदेहे, देवकुरा, उत्तरकुरा।**

३०८. जम्बूद्वीप द्वीप में महाविदेह क्षेत्र चार भागो में विभक्त है-(१) पूर्वविदेह, (२) अपरविदेह, (३) देवकुरु, (४) उत्तरकुरु।

**308.** Mahavideh area in Jambu Dveep is divided into four parts—(1) Purva Videh, (2) Apar Videh, (3) Deva Kuru, and (4) Uttar Kuru.

**पर्वत-पद PARVAT-PAD (SEGMENT OF MOUNTAIN)**

**३०९. सव्वे वि णं णिसढ-णीलवंत-वासहरपव्वता चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, चत्तारि गाउसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता।**

३०९. सभी निषध और नीलवत वर्षधर पर्वतो की ऊँचाई चार सौ योजन की है और भूमिगत गहराई चार सौ कोश की है।

**309.** The height of all the *Nishadh* and *Neelavant Varshadhar* mountains is four hundred *Yojans* (a unit of eight miles) and their depth from ground level is four hundred *Kosh* (a unit of two miles)

**३१०. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए उत्तरकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता, तं जहा-चित्तकूडे, पम्हकूडे, णलिणकूडे, एगसेले। ३११. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं सीताए महाणदीए दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता, तं जहा-तिकूडे, वेसमणकूडे, अंजणे, मातंजणे।**

३१०. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व भाग मे सीता महानदी के उत्तरी किनारे पर चार वक्षस्कार पर्वत है-(१) चित्रकूट, (२) पद्मकूट, (३) नलिनकूट, (४) एकशैलकूट। ३११. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के पूर्व भाग मे सीता महानदी के दक्षिणी किनारे पर चार वक्षस्कार पर्वत है-(१) त्रिकूट, (२) वैश्रमणकूट, (३) अजनकूट, (४) मातांजनकूट।

**310.** In Jambu Dveep in the eastern part of Mandar mountain there are four *Vakshaskar* mountains on the northern bank of great river Sita—(1) Chitrakoot, (2) Padmakoot, (3) Nalinakoot, and (4) Ekashailakoot. **311.** In Jambu Dveep in the eastern part of Mandar mountain there are four *Vakshaskar* mountains on the southern bank of great river Sita—(1) Trikoot, (2) Vaishramankoot, (3) Anjanakoot, and (4) Matanjanakoot.

**३१२. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओदाए महाणदीए दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता, तं जहा-अंकावती, पम्हावती, आसीविसे, सुहावहे। ३१३. जम्बूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमे णं सीओदाए महाणदीए उत्तरकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता, तं जहा-चंदपव्वते, सूरपव्वते, देवपव्वते, णागपव्वते। ३१४. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स चउसु विदिसासु चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता, तं जहा-सोमणसे, विज्जुप्पभे, गंधमायणे, मालवंते।**

३१२. जम्बूद्वीप द्वीप में मन्दर पर्वत के पश्चिम भाग मे सीतोदा महानदी के दक्षिणी किनारे पर चार वक्षस्कार पर्वत कहे है-(१) अंकावती, (२) पक्ष्मावती, (३) आशीविष, (४) सुखावह। ३१३. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के पश्चिम भाग में सीतोदा महानदी के उत्तरी किनारे पर चार वक्षस्कार पर्वत हैं-(१) चन्द्रपर्वत, (२) सूर्यपर्वत, (३) देवपर्वत, (४) नागपर्वत। ३१४. जम्बूद्वीप द्वीप में मन्दर पर्वत की चार विदिशाओं मे चार वक्षस्कार पर्वत है-(१) सौमनस, (२) विद्युत्प्रभ, (३) गन्धमादन, (४) माल्यवान्।

**312.** In Jambu Dveep in the western part of Mandar mountain there are four *Vakshaskar* mountains on the southern bank of great river Sitoda—(1) Ankavati, (2) Pakshmavati, (3) Ashivish, and (4) Sukhavah. **313.** In Jambu Dveep in the western part of Mandar mountain there are four *Vakshaskar* mountains on the northern bank of great river Sitoda—(1) Chandraparvat, (2) Suryaparvat, (3) Devaparvat, and (4) Naagparvat. **314.** In Jambu Dveep in the four intermediate directions there are four *Vakshaskar* mountains—(1) Saumanas, (2) Vidyutprabh, (3) Gandhamadan, and (4) Malyavan.

### *शलाका-पुरुष-पद* SHALAKA PURUSH-PAD (SEGMENT OF EPOCH MAKERS)

**३१५. जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे जहण्णपए चत्तारि अरहंता, चत्तारि चक्कवट्टी, चत्तारि बलदेवा चत्तारि वासुदेवा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा।**

३१५. जम्बूद्वीप द्वीप के महाविदेह क्षेत्र मे कम से कम चार अर्हन्त, चार चक्रवर्ती, चार बलदेव और चार वासुदेव उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होगे।

**315.** In the Mahavideh area of Jambu Dveep at least four *Arhants*, four *Chakravartis*, four *Baladevas* and four *Vasudevas* were, are and will be born

**विवेचन**-इस सूत्र का अभिप्राय है-महाविदेह मे कम से कम चार अरिहंत, चार चक्रवर्ती, चार बलदेव-वासुदेव, दो पूर्व महाविदेह तथा दो पश्चिम महाविदेह मे हर समय रहते है। कभी इनका अभाव नहीं होता। जिस विजय में चक्रवर्ती होते है। उसमे बलदेव-वासुदेव नहीं होते। हाँ, जिस विजय में तीर्थंकर होते है। उसमें चक्रवर्ती भी हो सकते हैं और बलदेव-वासुदेव भी। *(हिन्दी टीका, पृष्ठ ८४५)*

**Elaboration**—This aphorism conveys that in Mahavideh at least four *Arhants*, four *Chakravartis*, four *Baladevas* and four *Vasudevas* always exist. They are never extinct. *Chakravarti* and *Baldeva-Vasudeva* do not coexist in any *Vijaya* (a sub-continent size area). However, with a *Tirthankar* either a *Chakravarti* or *Baldeva-Vasudeva* may coexist. *(Hindi Tika, p. 845)*

मन्दर-पर्वत-पद MANDAR-PARVAT-PAD (SEGMENT OF MANDAR MOUNTAIN)

**३१६. जंबुद्दीवे दीवे मंदरे पव्वते चत्तारि वणा पण्णत्ता, तं जहा—भद्दसालवणे, णंदणवणे, सोमणसवणे, पंडगवणे। ३१७. जंबुद्दीवे दीवे मंदरे पव्वते पंडगवणे चत्तारि अभिसेगसिलाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पंडुकंबलसिला, अइपंडुकंबलसिला, रत्तकंबलसिला, अतिरत्तकंबलसिला।**

३१६. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत पर चार वन हैं-(१) भद्रशाल वन, (२) नन्दन वन, (३) सौमनस वन, (४) पण्डक वन। ३१७. जम्बूद्वीप द्वीप में मन्दर पर्वत पर पण्डक वन में चार अभिषेकशिलाएँ है-(१) पाण्डुकम्बल शिला (पूर्व), (२) अतिपाण्डुकम्बल शिला (दक्षिण), (३) रक्तकम्बल शिला (पश्चिम), (४) अतिरक्तकम्बल शिला (उत्तर)।

**316.** In Jambu Dveep there are four forests on Mandar mountain—(1) Bhadrashal *van* (forest), (2) Nandan *van*, (3) Saumanas *van*, and (4) Pandak *van*. **317.** In Jambu Dveep their are four *abhishek shilas* (anointment rocks) in Pandak *van*—(1) Pandukambal *shila* (east), (2) Atipandukambal *shila* (south), (3) Raktakambal *shila* (west), and (4) Atiraktakambal *shila* (north).

**विवेचन**—पण्डक वन चारो वनो मे सबसे ऊपर है। इसमे चार अभिषेक शिलाएँ हैं, उन पर तीर्थंकरों का जन्मोत्सव मनाया जाता है। पूर्व, पश्चिम मे शिलाओं पर दो-दो सिंहासन होते हैं तथा जिन पर महाविदेह क्षेत्र मे उत्पन्न तीर्थंकरो का तथा उत्तर-दक्षिण मे एक-एक शिला है, जिन पर ऐरवत तथा भरत क्षेत्र में जन्मे तीर्थंकरो का जन्मोत्सव मनाया जाता है। *(हिन्दी टीका, पृष्ठ ८४५)*

**Elaboration**—Pandak *van* is highest among the four forests It has four *abhishek shilas* (anointment rocks) on which birth ceremonies of *Tirthankars* are performed. There are two thrones each on the rocks in east and west directions On these rocks birth ceremonies of *Tirthankars* born in Mahavideh area are performed. On the rock in the north and south directions there is one throne each On these rocks birth ceremonies of *Tirthankars* born in Airavat and Bharat areas are performed. *(Hindi Tika, p 845)*

**३१८. मंदरचूलिया णं उवरिं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता।**

३१८. मन्दर पर्वत की चूलिका का ऊपरी विष्कम्भ (विस्तार) चार योजन है।

**318.** The *vishkambh* (spread or area) of the *chulika* (peak) of Mandar mountain is four *Yojans* (a unit of eight miles).

धातकीषण्ड-पुष्करवर-पद DHATKIKHAND-PUSHKARVAR-PAD (SEGMENT OF DHATKIKHAND-PUSHKARVAR)

**३१९. एवं धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धेवि कालं आदिं करेत्ता जाव मंदरचूलियत्ति। एवं जाव पुक्खरवरदीवपच्चत्थिमद्धे जाव मंदरचूलियत्ति।**

जंबुद्दीवगआवस्सगं तु कालओ चूलिया जाव।
धायइसंडे पुक्खरवरे य पुव्वावरे पासे॥१॥–संग्रहणी गाथा

३१९. इसी प्रकार धातकीषण्ड द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध मे भी काल–पद (सूत्र ३०४) से लेकर यावत् मन्दरचूलिका (सूत्र ३१८) तक का सर्व कथन जानना चाहिए। इसी प्रकार (अर्ध) पुष्करवर द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध मे भी कालपद से लेकर यावत् मन्दरचूलिका तक का सर्व कथन जानना चाहिए।

(सग्रहणी गाथा)–कालपद से लेकर मन्दरचूलिका तक जम्बूद्वीप मे किया गया सभी वर्णन धातकीषण्डद्वीप के और अर्द्ध–पुष्करवरद्वीप के पूर्व–अपर पार्श्व भाग मे भी कहा गया है।

**319.** In the same way the description of the eastern and western halves of Dhatakikhand Dveep should be read as that mentioned in aphorisms 304 (segment of time) to 318 (Mandar *Chulika*) In the same way the description of the eastern and western halves of Ardhapushkaravar Dveep should also be read as that mentioned in said aphorisms 304

(Collative verse) All the description about Jambu Dveep mentioned from segment of time to Mandar *chulika* has also been repeated with regard to the eastern and western halves of Dhatakikhand Dveep and Ardhapushkaravar Dveep

### द्वार–पद DVAR-PAD (SEGMENT OF GATEWAY)

**३२०. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स चत्तारि दारा पण्णत्ता, तं जहा–विजये, विजयंते, जयंते, अपराजिते। ते णं दारा चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं, तावइयं चेव पवेसेणं पण्णत्ता।**

**तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्डिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा–विजये, वेजयंते, जयंते, अपराजिते।**

३२०. जम्बूद्वीप द्वीप के चार द्वार है–(१) विजयद्वार, (२) वैजयन्तद्वार, (३) जयन्तद्वार, (४) अपराजितद्वार।

इन द्वारो की चौडाई चार योजन की और प्रवेश (मुख) भी चार योजन का है।

उन द्वारो पर पल्योपम की स्थिति वाले चार महर्धिक देव रहते है–(१) विजयदेव, (२) वैजयन्तदेव, (३) जयन्तदेव, (४) अपराजितदेव।

**320.** There are four *dvars* (gateways) of Jambu Dveep—(1) Vijaya *dvar*, (2) Vaijayant *dvar*, (3) Jayant *dvar*, and (4) Aparajit *dvar*. The width of these gateways is four *Yojans* (a unit of eight miles) and entrance (height) is also four *Yojans*

On these gateways reside four gods (*Mahardhik*) having great wealth, ...and so on up to.. life span of one *Palyopam* (a metaphoric unit of time)—(1) Vijaya *deva*, (2) Vaijayant *deva*, (3) Jayant *deva*, and (4) Aparajit *deva*.

### *अन्तर्द्वीप-पद (दक्षिणदिशावर्ती २८ द्वीप)* ANTAR-DVEEP-PAD (SEGMENT OF MIDDLE ISLANDS)

**३२१. (१) जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं तिण्णि-तिण्ण जोयणसयाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता, तं जहा—एगूरुयदीवे, आभासियदीवे, वेसाणियदीवे, णंगोलियदीवे।**

**तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति, तं जहा—एगूरुया, आभासिया, वेसाणिया, णंगोलिया।**

३२१. (१) जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के दक्षिण मे क्षुल्लक हिमवान् वर्षधर पर्वत की चारो विदिशाओं मे लवण-समुद्र के भीतर तीन-तीन सौ योजन जाने पर चार अन्तर्द्वीप है-(१) एकोरुक द्वीप, (२) आभाषिक द्वीप, (३) वैषाणिक द्वीप, (४) लागुलिक द्वीप। उन द्वीपो पर चार प्रकार के मनुष्य रहते हैं-(१) एकोरुक, (२) आभाषिक, (३) वैषाणिक, (४) लागुलिक।

**321.** (1) In Jambu Dveep to the south of Mandar mountain in all the four intermediate directions of Kshullak Himavan *Varshadhar* mountain there are four *antardveeps* (middle islands) three hundred *Yojans* (a unit of eight miles) from the shore in Lavan Samudra—(1) Ekoruk island, (2) Abhashik island, (3) Vaishanik island, and (4) Langulik island. On these *islands* live four kinds of human beings—(1) *Ekoruk*, (2) *Abhashik*, (3) *Vaishanik*, and (4) *Langulik*.

**३२२. (२) तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं चत्तारि-चत्तारि जोयणसयाइं ओगाहेत्ता, एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता, तं जहा—हयकण्णदीवे, गयकण्णदीवे, गोकण्णदीवे, सक्कुलिकण्णदीवे। तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति, तं जहा—हयकण्णा, गयकण्णा, गोकण्णा, सक्कुलिकण्णा।**

**३२३. (३) तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं पंच-पंच जोयणसयाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं चत्तारि अन्तर दीवा पण्णत्ता, तं जहा—आयंसमुहदीवे, मेंढमुहदीवे, अओमुहदीवे, गोमुहदीवे। तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा।**

३२२. (२) उन उपर्युक्त अन्तर्द्वीपो की चारो विदिशाओ से लवणसमुद्र के भीतर चार-चार सौ योजन जाने पर चार अन्तर्द्वीप हैं-(१) हयकर्ण द्वीप, (२) गजकर्ण द्वीप, (३) गोकर्ण द्वीप, (४) शष्कुलीकर्ण द्वीप।

उन अन्तर्द्वीपों पर चार प्रकार के मनुष्य रहते हैं-(१) हयकर्ण, (२) गजकर्ण, (३) गोकर्ण, (४) शष्कुलीकर्ण।

३२३. (३) उन अन्तर्द्वीपो की चारों विदिशाओ मे लवणसमुद्र के भीतर पाँच-पाँच सौ योजन जाने पर चार अन्तर्द्वीप है-(१) आदर्शमुख द्वीप, (२) मेषमुख द्वीप, (३) अयोमुख द्वीप, (४) गोमुख द्वीप।

उन द्वीपो पर चार प्रकार के मनुष्य रहते है। जैसे-(१) आदर्शमुख, (२) मेषमुख, (३) अयोमुख, (४) गोमुख।

**322.** (2) Four hundred *Yojans* (a unit of eight miles) ahead into the Lavan Samudra from the four aforesaid islands there are four *antardveeps* (middle islands) in four intermediate directions—(1) Hayakarn island, (2) Gajakarn island, (3) Gokarn island, and (4) Shashkulikarn island.

On these *islands* live four kinds of human beings—(1) *Hayakarn*, (2) *Gajakarn*, (3) *Gokarn*, and (4) *Shashkulikarn*.

**323.** (3) Five hundred *Yojans* (a unit of eight miles) ahead into the Lavan Samudra from the four aforesaid *islands* there are four *antardveeps* (middle islands) in four intermediate directions—(1) Adarshamukh island, (2) Meshamukh island, (3) Ayomukh island, and (4) Gomukh island

On these islands live four kinds of human beings—(1) *Adarshamukh*, (2) *Meshamukh*, (3) *Ayomukh*, and (4) *Gomukh*

**३२४. (४) तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं छ-छ जोयणसयाइं ओगाहेत्ता, एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता, तं जहा-आसमुहदीवे, हत्थिमुहदीवे, सीहमुहदीवे, वग्घमुहदीवे। तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा।**

**३२५. (५) तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं सत्त-सत्त जोयणसयाइं ओगाहेत्ता, एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता, तं जहा-आसकण्णदीवे, हत्थिकण्णदीवे, अकण्णदीवे, कण्णपाउरदीवे। तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा।**

३२४. (४) उन द्वीपो की चारो विदिशाओ मे लवणसमुद्र के भीतर छह-छह सौ योजन जाने पर चार अन्तर्द्वीप हैं-(१) अश्वमुख द्वीप, (२) हस्तिमुख द्वीप, (३) सिहमुख द्वीप, (४) व्याघ्रमुख द्वीप। उन द्वीपों पर चार प्रकार के मनुष्य रहते है-(१) अश्वमुख, (२) हस्तिमुख, (३) सिहमुख, (४) व्याघ्रमुख।

३२५. (५) उन द्वीपो की चारों विदिशाओं मे लवणसमुद्र के भीतर सात-सात सौ योजन जाने पर चार अन्तर्द्वीप हैं-(१) अश्वकर्ण द्वीप, (२) हस्तिकर्ण द्वीप, (३) अकर्ण द्वीप, (४) कर्णप्रावरण द्वीप। उन द्वीपो पर चार प्रकार के मनुष्य रहते है-(१) अश्वकर्ण, (२) हस्तिकर्ण, (३) अकर्ण, (४) कर्णप्रावरण।

**324.** (4) Six hundred *Yojans* (a unit of eight miles) ahead into the Lavan Samudra from the four aforesaid islands there are four *antardveeps* (middle *islands*) in four intermediate directions—(1) Ashvamukh island, (2) Hastimukh island, (3) Simhamukh island, and (4) Vyaghramukh island. On these islands live four kinds of human beings—(1) *Ashvamukh*, (2) *Hastimukh*, (3) *Simhamukh* and (4) *Vyaghramukh*.

**325.** (5) Seven hundred *Yojans* (a unit of eight miles) ahead into the Lavan Samudra from the four aforesaid islands there are four *antardveeps* (middle *islands*) in four intermediate directions—(1) Ashvakarn island, (2) Hastikarn island, (3) Akarn island and (4) Karnapravaran island On these islands live four kinds of human beings—(1) *Ashvakarn*, (2) *Hastikarn*, (3) *Akarn* and (4) *Karnapravaran*.

**३२६.** (६) तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं अट्ठ जोयणसयाइं ओगाहेत्ता, एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कामुहदीवे, मेहमुहदीवे, विज्जुमुहदीवे, विज्जुदन्तदीवे। तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा।

**३२७.** (७) तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं णव-णव जोयणसयाइं ओगाहेत्ता, एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता, तं जहा—घणदंतदीवे, लट्ठदंतदीवे, गूढदंतदीवे, सुद्धदंतदीवे।

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति, [ तं जहा—घणदंता, लट्ठदंता, गूढदंता, सुद्धदंता। ]

३२६. (६) उन द्वीपों की चारो विदिशाओ मे लवणसमुद्र के भीतर आठ-आठ सौ योजन जाने पर चार अन्तर्द्वीप है-(१) उल्कामुख द्वीप, (२) मेघमुख द्वीप, (३) विद्युन्मुख द्वीप, (४) विद्युद्दन्त द्वीप। उन द्वीपो पर चार प्रकार के मनुष्य रहते है-(१) उल्कामुख, (२) मेघमुख, (३) विद्युन्मुख, (४) विद्युद्दन्त।

३२७. (७) उन द्वीपो की चारो विदिशाओं मे लवणसमुद्र के भीतर नौ-नौ सौ योजन जाने पर चार अन्तर्द्वीप हैं-(१) घनदन्त द्वीप, (२) लष्टदन्त द्वीप, (३) गूढदन्त द्वीप, (४) शुद्धदन्त द्वीप। उन द्वीपो पर चार प्रकार के मनुष्य रहते हैं-(१) घनदन्त, (२) लष्टदन्त, (३) गूढदन्त, (४) शुद्धदन्त।

**326.** (6) Eight hundred *Yojans* ahead into the Lavan Samudra from the four aforesaid islands there are four *antardveeps* (middle islands) in four intermediate directions—(1) Ulkamukh island, (2) Meghamukh island, (3) Vidyunmukh island, and (4) Vidyuddant island. On these islands live four kinds of human beings—(1) *Ulkamukh*, (2) *Meghamukh*, (3) *Vidyunmukh*, and (4) *Vidyuddant*

**327.** (7) Nine hundred *Yojans* ahead into the Lavan Samudra from the four aforesaid islands there are four antardveeps (middle islands) in four

intermediate directions—(1) Ghanadant island, (2) Lashtadant island, (3) Goodhadant island, and (4) Shuddhadant island. On these islands live four kinds of human beings—(1) *Ghanadant*, (2) *Lashtadant*, (3) *Goodhadant*, and (4) *Shuddhadant*.

### *उत्तरदिशावर्ती २८ अन्तरद्वीप* NORTHERN 28 MIDDLE ISLANDS

**३२८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं सिहरिस्स वासहरपव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं तिण्णि-तिण्णि जोयणसयाइं ओगाहेत्ता, एत्थ णं चत्तारि अन्तरदीवा पण्णत्ता, तं जहा- एगूरुयदीवे, सेसं तहेव णिरवसेसं भाणियव्वं जाव सुद्धदंता।**

३२८. जम्बूद्वीप द्वीप मे मन्दर पर्वत के उत्तर मे शिखरी वर्षधर पर्वत की चारो विदिशाओं मे लवणसमुद्र के भीतर तीन-तीन सौ योजन जाने पर चार अन्तर्द्वीप है। जैसे-(१) एकोरुक द्वीप, (२) आभाषिक द्वीप, (३) वैषाणिक द्वीप, (४) लागुलिक द्वीप।

इस प्रकार जैसे क्षुल्लक हिमवान् वर्षधर पर्वत की चारो विदिशाओ मे लवणसमुद्र के भीतर जितने अन्तर्द्वीप और जितने प्रकार के मनुष्य है वह सर्व वर्णन यहाँ पर भी शुद्धदन्त मनुष्य पर्यन्त मन्दर पर्वत के उत्तर मे जानना चाहिए।

**328.** In Jambu Dveep to the north of Mandar mountain in all the four intermediate directions of Shikhari *Varshadhar* mountain there are four *antardveeps* (middle islands) three hundred *Yojans* (a unit of eight miles) from the shore in Lavan Samudra—(1) Ekoruk island, (2) Abhashik island, (3) Vaishanik island, and (4) Langulik island

In the same way all the description about all middle islands and all kinds of human beings living there should be read to be the same as that mentioned about the middle islands in Lavan Samudra in the four intermediate directions of Kshullak Himavan *Varshadhar* mountain up to *Shuddhadant* human beings

**विवेचन**-उक्त आठ सूत्रो मे ५६ अन्तर्द्वीपो और वहाँ रहने वाले मनुष्यों के विषय में वर्णन है। ये द्वीप लवण समुद्र के भीतर दक्षिण-उत्तर चारो विदिशाओ मे हैं। २८ अन्तर्द्वीप दक्षिण मे तथा २८ उत्तर दिशा मे है। वहाँ के निवासी मनुष्य व तिर्यंच युगलिया होते है। वहाँ असि, मषि, कृषि का प्रयोग नहीं होने से उन्हें अकर्मभूमि कहते है। उनकी सब प्रकार की आवश्यकताएँ दस प्रकार के कल्पवृक्षों से पूर्ण होती है। एक दिन के अन्तर से उन्हे भूख लगती है। उनकी आयु पल्योपम के असंख्यातवें भाग की होती है। जब ७९ दिन की आयु शेष रहती है तब सन्तान का जोडा एक पुत्र व एक पुत्री पैदा होती है। ७९ दिन उनका पालन-पोषण करने के बाद व माता-पिता एक छीक व उबासी के साथ आयुष्य पूर्ण कर देवगति में जाते हैं। *(विस्तृत वर्णन जीवाभिगम, प्रतिपत्ति ३ देखे)* चित्र मे अन्तर्द्वीपो की स्थिति बताई गई है।
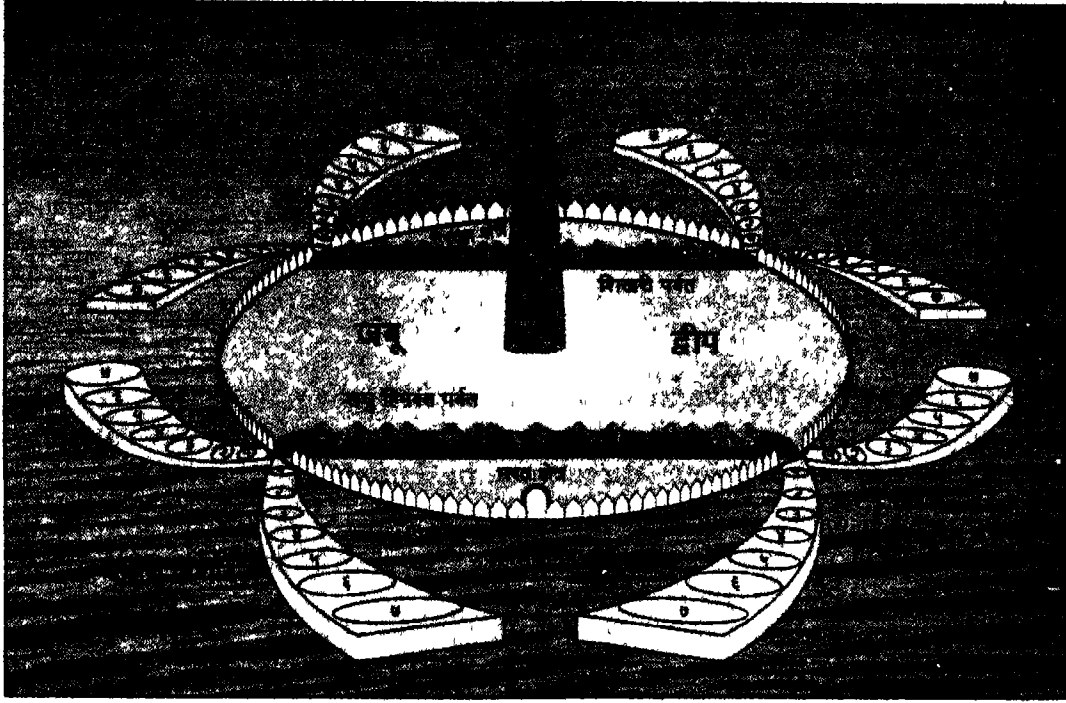
**Elaboration**—In the aforesaid eight aphorisms 56 middle islands and people living there have been described. These islands are in Lavan Samudra to the north and south in all the four intermediate directions. 28 middle islands are towards south and 28 are towards north The human beings and the animals living there are twins Due to the absence of sword, ink (material for writing) and cultivation these areas are called *akarma bhumi* (land of inactivity or enjoyment) All the needs of inhabitants there are fulfilled by ten kinds of *Kalpavrikshas* (wish fulfilling trees). They get hungry only after one day Their life span is an uncountable fraction of one *Palyopam* Seventy nine days before death they give birth to twins (a son and a daughter). After nursing them for seventy nine days they die with a sneeze and a yawn respective and reincarnate as divine beings. *(for more details refer to Jivabhigam, Pratipatti 3)*

**महापाताल कलश–पद MAHAPATAL KALASH-PAD (SEGMENT OF MAHAPATAL KALASH**

**३२९. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ चउदिसिं लवणसमुद्दं पंचाणउइं जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता, एत्थ णं महतिमहालया महालंजरसंठाणसंठिता चत्तारि महापायाला पण्णत्ता, तं जहा—वलयामुहे, केउए, जूवए, ईसरे।**

**तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्डिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—काले, महाकाले, वेलंबे, पभंजणे।**

३२९. जम्बूद्वीप द्वीप की बाहरी वेदिका के अन्तिम भाग से चारों दिशाओं में लवणसमुद्र के भीतर पंचानवै हजार योजन जाने पर चार महापाताल (कलश) अवस्थित हैं, जो बहुत विशाल एवं बड़े घड़े के समान आकार वाले हैं। उनके नाम इस प्रकार है-(१) वडवामुख (पूर्व में), (२) केतुक (दक्षिण में), (३) यूपक (पश्चिम में), (४) ईश्वर (उत्तर मे)।

उन पर पल्योपम की स्थिति वाले महर्धिक चार देव रहते है-(१) काल, (२) महाकाल, (३) वेलम्ब, (४) प्रभजन।

**329.** Ninety five thousand *Yojans* (a unit of eight miles) away from the edge of the outer *vedika* (plateau) of Jambu Dveep there are four *Mahapatal Kalash* in four directions in Lavan Samudra. These are gigantic and pitcher shaped There names are—(1) Vadavamukh (in the east), (2) Ketuk (in the south), (3) Yupak (in the west), and (4) Ishvar (in the north)

On these reside four gods (*Mahardhik*) having great wealth, ..and so on up to... life span of one *Palyopam* (a metaphoric unit of time)—(1) Kaal, (2) Mahakaal, (3) Velamb, and (4) Prabhanjan

### *आवास–पर्वत–पद* AVAS-PARVAT-PAD (SEGMENT OF ABODE MOUNTAINS)

**३३०. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ चउद्दिसिं लवणसमुद्दं बायालीसं—बायालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता, एत्थ णं चउण्हं वेलंधरणागराईणं चत्तारि आवासपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—गोथूभे, उदओभासे, संखे, दगसीमे।**

**तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्डिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—गोथूभे, सिवए, संखे, मणोसिलए।**

३३०. जम्बूद्वीप द्वीप की बाहरी वेदिका के अन्तिम भाग से चारों दिशाओं मे लवणसमुद्र के भीतर बयालीस–बयालीस हजार योजन जाने पर वेलधर नागराजो के चार आवास–पर्वत हैं-(१) गोस्तूप, (२) उदावभास, (३) शंख, (४) दकसीम।

उनमे पल्योपम की स्थिति वाले यावत् महर्धिक चार देव रहते हैं-(१) गोस्तूप, (२) शिवक, (३) शक, (४) मन शिलाक।

**330.** Located forty two five thousand *Yojans* away from the edge of the outer *vedika* (plateau) of Jambu Dveep there are four *Avas-parvats* (abode mountains) of Velandhar *Naagrajas* in four directions

in Lavan Samudra—(1) Gostupa, (2) Udavabhas, (3) Shankh, and (4) Dakaseem.

On these reside four gods (*Mahardhik*) having great wealth, ...and so on up to . life span of one *Palyopam* (a metaphoric unit of time)—(1) Gostupa, (2) Shivak, (3) Shank, and (4) Manahshilak.

**३३१. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं बायालीसं-बायालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता, एत्थ णं चउण्हं अणुवेलंधरणागराईणं चत्तारि आवासपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—कक्कोडए, विज्जुप्पभे, केलासे, अरुणप्पभे।**

**तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, जं जहा—कक्कोडए, कद्दमए, केलासे, अरुणप्पभे।**

३३१. जम्बूद्वीप द्वीप की बाहरी वेदिका के अन्तिम भाग से चारो विदिशाओं में लवणसमुद्र के भीतर बयालीस-बयालीस हजार योजन जाने पर अनुवेलन्धर नागराजों के चार आवास-पर्वत है-(१) कर्कोटक, (२) विद्युत्प्रभ, (३) कैलाश, (४) अरुणप्रभ।

उन पर पल्योपम की स्थिति वाले यावत् महर्धिक चार देव रहते है-(१) कर्कोटक, (२) कर्दमक, (३) कैलाश, (४) अरुणप्रभ।

**331.** Located forty two five thousand *Yojans* (a unit of eight miles) away from the edge of the outer *vedika* (plateau) of Jambu Dveep there are four *Avas-parvats* (abode mountains) of Anuvelandhar *Naagrajas* in four intermediate directions in Lavan Samudra—(1) Karkotak, (2) Vidyutprabh, (3) Kailash, and (4) Arunaprabh

On these reside four gods (*Mahardhik*) having great wealth, ...and so on up to... life span of one *Palyopam* (a metaphoric unit of time)—(1) Karkotak, (2) Kardamak, (3) Kailash, and (4) Arunaprabh

### ज्योतिष-पद JYOTISH-PAD (SEGMENT OF ASTROLOGY)

**३३२. लवणे णं समुद्दे चत्तारि चंदा पभासिंसु वा पभासंति वा पभासिस्संति वा। चत्तारि सूरिया तविंसु वा तवंति वा तविस्संति वा। चत्तारि कित्तियाओ जाव चत्तारि भरणीओ।**

**३३३. चत्तारि अग्गी जाव चत्तारि जमा। ३३४. चत्तारि अंगारा जाव चत्तारि भावकेऊ।**

३३२. लवणसमुद्र में चार चन्द्रमा प्रकाश करते थे, प्रकाश करते है और प्रकाश करते रहेंगे। चार सूर्य आताप करते थे, आताप करते हैं और आताप करते रहेंगे।

चार कृतिका यावत् चार भरणी तक के सभी नक्षत्रो के चन्द्र के साथ योग किया था, करते है और करते रहेंगे।

३३३. नक्षत्रों के अग्नि से लेकर यम तक चार-चार देव हैं। ३३४. चार अंगारक यावत् चार भावकेतु तक के सभी ग्रहो ने भ्रमण किया था, करते हैं और करते रहेगे।

**332.** In Lavan samudra four moons gave, give and will give light and four suns gave give and will give heat

(In Lavan Samudra) four *Krittika* (*Eta Tauri* or Pleiades), . and so on up to four *Bharani* (35 Arietis), all these constellations did, do and will associate with the moon

**333.** (In Lavan Samudra) there are four gods of each constellation—four Agni, .and so on up to .. four Yama **334.** (In Lavan Samudra) there are great planets (in sets of four) that did, do and will orbit around (each sun)—four *Angarak*, and so on up to . four *Bhavaketu*.

### द्वार-पद DVAR-PAD (SEGMENT OF GATEWAY)

**३३५. लवणस्स णं समुद्दस्स चत्तारि दारा पण्णत्ता, तं जहा-विजए, वेजयंते, जयंते, अपराजिते। ते णं दारा चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसणं पण्णत्ता।**

**तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा-विजए, वेजयंते, जयंते, अपराजिए।**

३३५. लवणसमुद्र के चार द्वार है-(१) विजय, (२) वैजयन्त, (३) जयन्त, (४) अपराजित।

वे द्वार चार योजन चौडे और चार योजन प्रवेश (मुख) वाले हैं। उन पर पल्योपम की स्थिति वाले महर्धिक चार देव रहते है-(१) विजयदेव, (२) वैजयन्तदेव, (३) जयन्तदेव, (४) अपराजितदेव।

**335.** There are four *dvars* (gateways) of Lavan Samudra—(1) Vijaya *dvar*, (2) Vaijayant *dvar*, (3) Jayant *dvar*, and (4) Aparajit *dvar*.

The width of these gateways is four *Yojans* (a unit of eight miles) and entrance (height) is also four *Yojans* On these gateways reside four gods (*Mahardhik*) having great wealth, ...and so on up to... life span of one *Palyopam* (a metaphoric unit of time)—(1) Vijaya *deva*, (2) Vaijayant *deva*, (3) Jayant *deva*, and (4) Aparajit *deva*

### धातकीषण्ड-पुष्करवर-पद DHATKIKHAND-PUSHKARVAR-PAD (SEGMENT OF DHATKIKHAND-PUSHKARVAR)

**३३६. धयइसंडे णं दीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते।**

३३६. धातकीषण्ड द्वीप का चक्रवाल विष्कम्भ चौडाई की अपेक्षा चार लाख योजन विस्तृत है।

**336.** The *chakraval vishkambh* (area) of Dhatakikhand Dveep is four hundred thousand *Yojans*

३३७. जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बहिया चत्तारि भरहाइं, चत्तारि एरवयाइं।

एवं जहा सद्दुद्देसए तहेव णिरवसेसं भाणियव्वं जाव चत्तारि मंदरा चत्तारि मंदरचूलियाओ।

३३७. जम्बूद्वीप द्वीप के बाहर (धातकीषण्ड और पुष्करवर द्वीप मे) चार भरत क्षेत्र, चार ऐरवत क्षेत्र हैं।

जैसे शब्दोद्देशक (दूसरे स्थान के तीसरे उद्देशक) में जो बतलाया गया है, वह सब पूर्ण रूप से यहाँ जान लेना चाहिए। वहाँ जो दो-दो की सख्या के बतलाये गये है, वे यहाँ चार-चार जानना चाहिए। धातकीषण्ड में दो मन्दर और दो मन्दरचूलिका तथा पुष्करवरद्वीप मे भी दो मन्दर और मन्दरचूलिका है।

**337.** Outside Jambu Dveep there are four Bharat areas and four Airavat areas (in Dhatakikhand and Pushkaravar Dveep).

All the details mentioned in *Shabdoddeshak* (third lesson of second *Sthaan*) should be read here. The numbers two mentioned there should be changed to four. In Dhatakikhand there are two Mandar and two Mandar *Chulika* and so are in Pushkaravar Dveep

### *नन्दीश्वर द्वीप-पद* NANDISHVAR DVEEP-PAD (SEGMENT OF NANDISHVAR DVEEP)

**३३८. णंदीसरवरस्स णं दीवस्स चक्कवाल-विक्खंभस्स बहुमज्झदेसभागे चउद्दिसिं चत्तारि अंजणगपव्वता पण्णत्ता, तं जहा-पुरत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते, दाहिणिल्ले अंजणगपव्वते, पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते, उत्तरिल्ले अंजणगपव्वते।**

**ते णं अंजणगपव्वता चउरासीतिं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं, एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं, मूले दसजोयणसहस्सं उव्वेहेणं, मूले दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, तदणंतरं च णं मायाए-मायाए परिहायमाणा-परिहारमाणा उवरिमेगं जोयणसहस्सं विक्खंभेणं पण्णत्ता मूले इक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसते परिक्खेवेणं, उवरिं तिण्णि-तिण्णि जोयणसहस्साइं एगं च बावट्ठं जोयणसतं परिक्खेवेणं। मूले विच्छिण्ण मज्झे संखित्ता उप्पिं तणुया गोपुच्छसंठाणसंठिता सव्वअंजणमाया अच्छा सण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पंका णिक्कंकड-च्छाया सप्पभा समिरीया सउज्जोय पासाईया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा।**

३३८. नन्दीश्वरवर द्वीप के चक्रवाल-विष्कम्भ (मंडल) के ठीक बीचोबीच चारों दिशाओ मे चार अंजनपर्वत हैं। जैसे-(१) पूर्वी अंजनपर्वत, (२) दक्षिणी अंजनपर्वत, (३) पश्चिमी अंजनपर्वत, (४) उत्तरी अंजनपर्वत।

उनकी ऊँचाई चौरासी हजार योजन और भूमितल में गहराई एक योजन है। भूमि पर उनका विस्तार दस हजार योजन है। तदनन्तर थोडी-थोड़ी मात्रा से हीन होता हुआ ऊपरी भाग में एक हजार योजन विस्तार है।

मूल मे भूमि पर उन अंजनपर्वतो की परिधि इकतीस हजार छह सौ तेईस (३१,६२३) योजन और ऊपरी भाग मे तीन हजार एक सौ बासठ (३,१६२) योजन की है।

वे मूल मे विस्तीर्ण, मध्य मे सक्षिप्त और अन्त मे सबसे पतले हैं। गोपुच्छ के आकार वाले हैं। वे सभी ऊपर से नीचे तक अंजनरत्नमयी (कृष्ण वर्ण) है, स्फटिक के समान स्वच्छ और पारदर्शी, चिकने, चमकदार, शाण पर घिसे हुए से मृदुल, प्रमार्जनी से साफ किये सरीखे, रजरहित, निर्मल, बेदाग, निष्कण्टक, निरावरण छाया वाले, प्रभायुक्त अपनी किरणो से दूसरों को प्रकाशित करने वाले, मन को प्रसन्न करने वाले, दर्शनीय, कमनीय और अतीव रमणीय है।

**338.** In the exact center of *chakraval vishkambh* (circular area) of Nandishvaravar Dveep there are four Anjan mountains in four directions—(1) Eastern Anjan *Parvat*, (2) Southern Anjan *Parvat*, (3) Western Anjan *Parvat*, and (4) Northern Anjan *Parvat*.

Their height is eighty four thousand *Yojans* (a unit of eight miles) and depth from the ground level is one *Yojan*. Their expanse on the land is ten thousand *Yojans* With gradual reduction it becomes one thousand *Yojans* at the top

Their circumference at the base on ground level is thirty one thousand six hundred twenty three (31,623) *Yojans* (a unit of eight miles) and at the top it is three thousand one hundred sixty two (3,162) *Yojans*

They are large at the base, lesser at the middle and least at the top. They are of the shape of tail of a cow From top to bottom they are *anjanaratnamayi* (of the colour of a black gem), clear and transparent like rock crystal, smooth, shining, brilliant as if polished on a grinding wheel and rubbed with a soft cloth, dust-free, spotless, thorn-less (without any sharp outcrops), with a clean shadow, radiant, enlightening, delightful, attractive, enchanting and extremely pleasing in appearance.

**३३९.** तेसिं णं अंजणगपव्वयाणं उवरि बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता। तेसिं णं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि सिद्धायतणा पण्णत्ता। ते णं सिद्धायतणा एगं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, बावत्तरि जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं।

तेसिं णं सिद्धायतणाणं चउदिसिं चत्तारि दारा पण्णत्ता, तं जहा—देवदारे, असुरदारे, णागदारे, सुवण्णदारे। तेसु णं दारेसु चउव्विहा देवा परिवसंति, तं जहा—देवा, असुरा, णागा, सुवण्णा।

तेसिं णं दाराणं पुरओ चत्तारि मुहमंडवा पण्णत्ता। तेसिं णं मुहमंडवाणं पुरओ चत्तारि पेच्छाघरमंडवा पण्णत्ता। तेसिं णं पेच्छाघरमंडवाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि वइरामया अक्खाडगा पण्णत्ता। तेसिं णं वइरामयाणं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि मणिपेढियातो पण्णत्ताओ। तासिं

**णं मणिपेढियाणं उवरि चत्तारि सीहासणा पण्णत्ता। तेसिं णं सीहासणाणं उवरि चत्तारि विजयदूसा पण्णत्ता। तेसिं णं विजयदूसगाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि वइरामया अंकुसा पण्णत्ता। तेसिं णं वइरामएसु अंकुसेसु चत्तारि कुंभिका मुत्तादामा पण्णत्ता। ते णं कुंभिका मुत्तादामा पत्तेयं-पत्तेयं अण्णेहिं तदद्धउच्चत्तपमाणमित्तेहिं चउहिं अद्धकुंभिक्केहिं मुत्तादामेहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता।**

**तेसिं णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। तासिं णं मणिपेढियाणं उवरि चत्तारि-चत्तारि चेइयथूभा पण्णत्ता। तेसिं णं चेइयथूभाणं पत्तेयं-पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। तासिं णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि जिणपडिमाओ सव्वरयणामईओ संपलियंकणिसण्णाओ थूभाभिमुहाओ चिट्ठंति, तं जहा-रिसभा, वद्धमाणा, चंदाणणा, वारिसेणा। तेसिं णं चेइयथूभाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। तासिं णं मणिपेढियाणं उवरि चत्तारि चेइयरुक्खा पण्णत्ता। तेसिं णं चेइयरुक्खाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। तासिं णं मणिपेढियाणं उवरि चत्तारि महिंदज्झया पण्णत्ता। तेसिं णं महिंदज्झयाणं पुरओ चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ। तासिं णं पुक्खरिणीणं पत्तेयं-पत्तेयं चउदिसिं चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता, तं जहा-पुरत्थिमे णं, दाहिणे णं, पच्चत्थिमे णं, उत्तरे णं।**

**पुव्वे णं असोगवणं, दाहिणओ होइ सत्तवण्णवणं।**
**अवरे णं चंपगवणं, चूतवणं उत्तरे पासे॥१॥-संग्रहणी-गाथा**

३३९. उन अजन पर्वतो का ऊपर भूमिभाग अति समतल और रमणीय है।

उनके अत्यन्त समतल रमणीय भूमिभगो के ठीक बीचोबीच चार सिद्धायतन है। प्रत्येक सिद्धायतन की लम्बाई एक सौ योजन, चौडाई पचास योजन और ऊँचाई बहत्तर योजन की है।

उन सिद्धायतनों के चारों दिशाओ मे चार द्वार है। जैसे-(१) देवद्वार (पूर्व), (२) असुरद्वार (दक्षिण), (३) नागद्वार (पश्चिम), (४) सुपर्णद्वार (उत्तर)।

उन द्वारों पर चार देव रहते है-(१) देव, (२) असुर, (३) नाग, और (४) सुपर्ण।

प्रत्येक द्वार के समक्ष एक-एक मुख-मण्डप (प्रागण) है। उन मुख-मण्डपो के आगे चार प्रेक्षागृह-मण्डप (नाट्यशाला) है। उन प्रेक्षागृह मण्डपों के ठीक बीच मे चार वज्रमय अक्षवाटक (रगमच, सभागृह) हैं। उन वज्रमय अक्षवाटकों के मध्य मे चार मणिपीठिकाएँ (रत्नों से जडी चौकी) हैं। उन मणिपीठिकाओं के ऊपर चार सिंहासन है। उन सिंहासनों के ऊपर चार विजयदूष्य (चन्दोवा) तना हुआ है। उन विजयदूष्यों के मध्य भाग में चार वज्रमय अंकुश (अंकुश के आकार का स्तम्भ) है। उन वज्रमय अंकुशों के ऊपर चार कुम्भिक प्रमाण मुक्तामालाएँ लटकती हैं। उन कुम्भिक मुक्तामालाओ से प्रत्येक माला पर उनकी ऊँचाई से आधी ऊँचाई वाली चार अर्ध-कुम्भिक मुक्तामालाएँ सर्व ओर से लिपटी हुई हैं।

उन प्रेक्षागृह-मण्डपो के आगे चार मणिपीठिकाएँ है। उन मणिपीठिकाओं के ऊपर चार चैत्यस्तूप हैं। उन चैत्यस्तूपों में से प्रत्येक पर चारों दिशाओं मे चार-चार मणिपीठिकाएँ हैं। उन मणिपीठिकाओ

पर सर्वरत्नमय, पर्यङ्कासन जिन-प्रतिमाएँ अवस्थित है और उनका मुख स्तूप के सामने है। उनके नाम इस प्रकार हैं-(१) ऋषभा, (२) वर्धमाना, (३) चन्द्रानना, (४) वारिषेणा।

उन चैत्यस्तूपों के आगे चार मणिपीठिकाएँ है। उन मणिपीठिकाओ के ऊपर चार चैत्यवृक्ष है। उन चैत्यवृक्षो के आगे चार मणिपीठिकाएँ है। उन मणिपीठिकाओं के ऊपर चार महेन्द्रध्वज हैं। उन महेन्द्रध्वजो के आगे चार नन्दा पुष्करिणियाँ है। उन पुष्करिणियों में से प्रत्येक के आगे पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर-चारों दिशाओ में चार वनषण्ड है।

(१) पूर्व में अशोकवन, (२) दक्षिण मे सप्तवर्णवन, (३) पश्चिम मे चम्पकवन, और (४) उत्तर मे आम्रवन है।

**339.** The land at the top of these *Anjan* Mountains is level and attractive

Exactly in the middle of those perfectly level and attractive areas there are four *Siddhayatans* (temples of *Siddhas*). The length of each of these *Siddhayatans* is one hundred *Yojans*, width is fifty *Yojans* (a unit of eight miles) and height is seventy two *Yojans*

These *Siddhayatans* have four gates facing four directions—(1) *Devadvar* (east), (2) *Asur-dvar* (south), (3) *Naag-dvar* (west), and (4) *Suparnadvar* (north).

On these gates reside four gods—(1) *Deva*, (2) *Asur*, (3) *Naag*, and (4) *Suparna*.

In front of every gate there is a *mukha-mandapa* (frontal *mandapa* or entrance-porch) After these entrance porches there are four *prekshagriha-mandapa* (*natya-shala; ranga-mandapa*, a pillared hall open on all sides) Exactly in the middle of these halls are four diamond studded *akshavatak* (assembly halls) At the center of these assembly halls are four *manipeethika* (gem studded pedestal-base) On these pedestals are four thrones On these thrones hang four *vijayadushya* (canopy). At the center of these canopies are four diamond studded *ankush* (a goad shaped pillar). On these pillars are suspended four *kumbhik* (a measure of weight) pearl strings. Around each of these pearl strings and covering half the total length are entwined other pearl strings of half *kumbhik*.

After these *prekshagriha-mandaps* there are four gem studded pedestals. On these pedestals are four *chaitya stupa* (shrine). In each of these shrines there are four gem studded pedestals each in all four directions. On these pedestals are installed front facing *Jina*-images in

*paryankasan* (a *yogic* posture) made of gem stones. There names are (1) Rishabha, (2) Vardhamana, (3) Chandranan, and (4) Varishena.

After these shrines there are four gem studded pedestals. On these pedestals are four *chaitya vrikshas* (temple trees). After these trees are four gem studded pedestals. On these pedestals are four *Mahendra dhvaja* (flags). After the flags are four *nanda pushakarinis* (lakes with lotuses). After each of these lakes are four *van-khands* (forest strips) in all the four directions, namely east, south, west and north

(1) *Ashoka-van* in the east, (2) *Saptaparn-van* in the south, (3) *Champak-van* in the west, and (4) *Amra-van* in the north.

**विवेचन**—'मण' या क्विंटल की तरह प्राचीन काल मे कुंभक एक माप होता था। सस्कृत टीकाकार ने कुम्भ का प्रमाण इस प्रकार बताया है—चार प्रस्थ = एक आढक। ४ आढक = १ द्रोण। ६० आढक = एक जघन्य कुम्भ। ८० आढक = एक मध्यम कुम्भ। १०० आढक = लगभग क्विटल का एक उत्कृष्ट कुम्भ। इस प्राचीन माप के अनुसार ४० मण का एक जघन्य कुम्भ होता है। कुम्भ प्रमाण मोतियो से बनी माला को कुम्भिक मुक्तादाम कहा जाता है। अर्धकुम्भ का प्रमाण २० मण जानना चाहिए।

टीकाकार ने 'चैत्य' के दो अर्थ किये हैं—जो स्तूप चित्त को प्रसन्न करता है, वह चैत्य तथा जो स्तूप सिद्धायतन के समीप हो वह चैत्य स्तूप। *(हिन्दी टीका, पृष्ठ ८६२)*

**Elaboration**—Like maund and Quintal, *Kumbhak* is a measure of weight. According to the *Sanskrit* commentator the measure of *Kumbh* is—four *Prasth* = one *Adhak*, 4 *Adhak* = 1 *Dron*, 60 *Adhak* = 1 *Jaghanya Kumbh*, 80 *Adhak* = 1 *Madhyam Kumbh*, 100 *Adhak* = 1 *Utkrisht Kumbh*. Thus the ancient measure of *Kumbh* is equivalent to modern 40 Maunds. Bead strings made of pearls weighing one *Kumbh* is called *Kumbhak Muktidam* *Ardh Kumbh* is 20 Maunds

The commentator has given two meanings of *Chaitya*—(1) a delightful *stupa* (funerary monument or mound) is called *chaitya* (2) a stupa near a *Siddhayatan* (*Siddha* temple) is called *chaitya stupa*.

### *नन्दा पुष्करिणियाँ* NANDA PUSHKARINIS (DELIGHTFUL LAKES)

**३४०. तत्थ णं जे से पुरत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णंदुत्तरा, णंदा, आणंदा, णंदिवद्धणा। ताओ णं णंदाओ पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयसहस्सं आयामेणं पण्णासं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, दसजोयणसताइं उव्वेहेणं।**

**तासिं णं पुक्खरिणीणं पत्तेयं—पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता।**

तेसिं णं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरतो चत्तारि तोरणा पण्णत्ता, तं जहा—पुरत्थिमे णं, दाहिणे णं, पच्चत्थिमे णं, उत्तरे णं। तासिं णं पुक्खरिणीणं पत्तेयं—पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता, तं जहा—पुरतो, दाहिणे णं, पच्चत्थिमे णं उत्तरे णं।

पुव्वे णं असोगवणं, दाहिणओ होइ सत्तवण्णवणं।
अवरे णं चंपगवणं, चूयवणं उत्तरे पासे।।१।।—संग्रहणी—गाथा

तासिं णं पुक्खरिणीणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि दधिमुहगपव्वया पण्णत्ता, ते णं दधिमुहगपव्वया चउसट्ठिं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं, एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा पल्लगसंठाणसंठिता, दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसते परिक्खेवेणं, सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा।

तेसिं णं दधिमुहगपव्वताणं उवरि बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता, सेसं जहेव अंजणगपव्वताणं तहेव णिरवसेसं भाणियव्वं जाव चूतवणं उत्तरे पासे।

३४०. उन पूर्वोक्त चार अजन पर्वतो मे से जो पूर्व दिशा का अजन पर्वत है, उसकी चारो दिशाओ मे (१) नन्दोत्तरा, (२) नन्दा, (३) आनन्दा, (४) नन्दिवर्धना नाम की चार नन्दा (आनन्ददायिनी) पुष्करिणियाँ है। वे नन्दा पुष्करिणियाँ एक लाख योजन लम्बी, पचास हजार योजन चौडी और एक हजार योजन गहरी है।

उन नन्दा पुष्करिणियो मे से चारो दिशाओ मे तीन-तीन सोपान (तीन सीढ़ी) वाली चार सोपानपक्तियाँ है। उन त्रि-सोपान पक्तियो के आगे पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर मे चार तोरण है। उन नन्दा पुष्करिणियो मे से प्रत्येक के चारो दिशाओ मे चार वनषण्ड है।

(१) पूर्व में अशोकवन, (२) दक्षिण मे सप्तपर्णवन, (३) पश्चिम मे चम्पकवन, और (४) उत्तर मे आम्रवन।

उन पुष्करिणियों के बिल्कुल मध्य भाग मे चार दधिमुख पर्वत है। वे दधिमुख पर्वत ऊपर चौसठ हजार योजन ऊँचे और नीचे एक हजार योजन गहरे हैं। वे ऊपर, नीचे और मध्य मे सर्वत्र समान विस्तार वाले है। उनका आकार अन्न भरने के पल्यक (कोठी) के समान गोल है। वे दस हजार योजन लम्बे-चौडे है। उनकी परिधि इकतीस हजार छह सौ तेईस (३१,६२३) योजन है। वे सब रत्नमय यावत् रमणीय है।

उन दधिमुख पर्वतो के ऊपर अत्यन्त समतल, रमणीय भूमिभाग है। शेष वर्णन जैसे अंजन पर्वतो का है उसी प्रकार यावत् आम्रवन तक सम्पूर्ण रूप से जानना चाहिए।

**340.** In all the four directions of the *Anjan Parvat* located in the east among the aforesaid four *Anjan Parvats* there are four *nanda pushkarinis* (delightful lakes with lotuses)—(1) Nandottara, (2) Nanda, (3) Ananda, and (4) Nandivardhanaa. These delightful lakes are one

hundred thousand *Yojans* long, fifty thousand *Yojans* wide and one thousand *Yojans deep*.

In all the four directions of these lakes there are four rows of three tiered steps. After these steps there are four *torans* (ornamental entrances). In all the four directions of these lakes are four *van-khands* (forest strips).

(1) Ashoka-*van* in the east, (2) Saptaparn-*van* in the south, (3) Champak-*van* in the west, and (4) Amra-*van* in the north.

At the center of these lakes there are four *Dadhimukh parvats*. Their height is eighty four thousand *Yojans* and depth from the ground level is one *Yojan*. Their expanse is uniform at the bottom, middle and top. There shape is round (cylindrical) like silos. Their length and breadth is ten thousand *Yojans*. Their circumference is thirty one thousand six hundred twenty three (31,623) *Yojans*. They are gem studded ...and so on up to... and extremely pleasing.

At the top of these *Dadhimukh* mountains are attractive level grounds. Remaining description should be read as that of *Anjan Parvats* . .and so on up to... Amra-*van*.

**३४१. तत्थ णं जे से दाहिणिल्ले अंजणगपव्वते, तस्स णं चउदिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—भद्दा, विसाला, कुमुदा, पोंडरीगिणी। ताओ णं णंदाओ पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयसहस्सं, सेसं तं चेव जाव दधिमुहगपव्वता जाव वणसंडा।**

३४१. उन चार अंजन पर्वतों में जो दक्षिण दिशा वाला अंजन पर्वत है, उसकी चारों दिशाओं में (१) भद्रा, (२) विशाला, (३) कुमुदा, (४) पौंडरीकिणी नाम वाली चार नन्दा पुष्करिणियाँ हैं। वे नन्दा पुष्करिणियाँ एक लाख योजन लम्बी हैं। शेष सर्व वर्णन दधिमुख पर्वत और वनषण्ड तक पूर्व दिशा के समान जानना चाहिए।

**341.** In all the four directions of the Southern *Anjan Parvat* among the aforesaid four *Anjan Parvats* there are four *nanda pushkarinis* (delightful lakes with lotuses)—(1) Bhadraa, (2) Vishalaa, (3) Kumuda, and (4) Paundarikini. These delightful lakes are one hundred thousand *Yojans* (a unit of eight miles) long. Remaining description should be read as mentioned about the east up to *Dadhimukh Parvat* and *Nanda pushkarinis*.

**३४२. तत्थ णं जे से पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णंदिसेणा, अमोहा, गोथूभा, सुदंसणा। सेसं तं चेव, तहेव दधिमुहगपव्वता, तहेव सिद्धायतणा जाव वणसंडा।**

३४२. उन चार अंजन पर्वतों में जो पश्चिम दिशा वाला अंजन पर्वत है, उसकी चारों दिशाओं में (१) नन्दिषेणा, (२) अमोघा, (३) गोस्तूपा, (४) सुदर्शना ये चार नन्दा पुष्करिणियाँ हैं।

इनका विस्तार आदि शेष सर्व वर्णन पूर्व दिशा के समान है, उसी प्रकार दधिमुख पर्वत है और उसी प्रकार सिद्धायतन यावत् वनषण्ड का वर्णन जानना चाहिए।

**342.** In all the four directions of the Eastern *Anjan Parvat* among the aforesaid four *Anjan Parvats* there are four *Nanda pushkarinis* (delightful lakes with lotuses)—(1) Nandishenaa, (2) Amogha, (3) Gostupa, and (4) Sudarshana.

The expanse and other description should be read as mentioned about the east, including the same *Dadhimukh Parvat,* same *Siddhayatan* ...and so on up to... *van-khand.*

**३४३. तत्थ णं जे से उत्तरिल्ले अंजणगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—विजया, वेजयंती, जयंती, अपराजिता। ताओ णं णंदाओ पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयसहस्सं सेसं तं चेव पमाणं, तहेव दधिमुहगपव्वता, तहेव सिद्धाययणा जाव वणसंडा।**

३४३. उन चार अंजन पर्वतों मे जो उत्तर दिशा वाला अंजन पर्वत है, उसकी चारो दिशाओ मे (१) विजया, (२) वैजयन्ती, (३) जयन्ती, (४) अपराजिता ये चार नन्दा पुष्करिणियाँ है।

वे नन्दा पुष्करिणियाँ एक लाख योजन विस्तृत है, शेष सर्व वर्णन पूर्व के समान है। उसी प्रकार दधिमुख पर्वत है उसी प्रकार सिद्धायतन यावत् वनषण्ड जानना चाहिए।

**343.** In all the four directions of the Northern *Anjan Parvat* among the aforesaid four *Anjan Parvats* there are four *nanda pushkarinis* (delightful lakes with lotuses)—(1) Vijayaa, (2) Vaijayanti, (3) Jayanti, and (4) Aparajita.

The expanse and other description should be read as mentioned about the east, including the similar existence of *Dadhimukh Parvat, Siddhayatan* ...and so on up to. *van-khand.*

### रतिकर पर्वत—पद RATIKAR PARVAT-PAD (RATIKAR MOUNTAIN)

**३४४. णंदीसरवरस्स णं दीवस्स चक्कवाल—विक्खंभस्स बहुमज्झदेसभागे चउसु विदिसासु चत्तारि रतिकरगपव्वता पण्णत्ता, तं जहा—उत्तरपुरत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए, दाहिणपुरत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए, दाहिण—पच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए, उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए। ते णं रतिकरगपव्वता दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस गाउयसताइं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा झल्लरिसंठाणसंठिता, दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं, एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसते परिक्खेवेणं, सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा।**

३४४. नन्दीश्वरवर द्वीप के चक्रवाल विष्कम्भ (वलयाकार विस्तार) के बिल्कुल मध्य भाग में चारों विदिशाओं में चार रतिकर पर्वत (रमणीय क्रीड़ास्थली) हैं—(१) उत्तर—पूर्व दिशा का रतिकर

पर्वत, (२) दक्षिण-पूर्व दिशा का रतिकर पर्वत, (३) दक्षिण-पश्चिम दिशा का रतिकर पर्वत, (४) उत्तर-पश्चिम दिशा का रतिकर पर्वत।

वे रतिकर पर्वत एक हजार योजन ऊँचे और एक हजार कोस गहरे हैं। ऊपर, मध्य और अधोभाग में सर्वत्र समान विस्तार वाले हैं। वे झालर के आकार से अवस्थित है, अर्थात् गोलाकार हैं। उनका विस्तार दस हजार योजन और परिधि इकतीस हजार छह सौ तेईस (३१,६२३) योजन है। वे सर्वरत्नमय, स्वच्छ यावत् रमणीय हैं।

**344.** In the middle of the *chakraval vishkambh* (circular area) of Nandishvar Dveep there are four *Ratikar parvats* (areas of entertainment akin to hill-station) in the four intermediate directions—(1) north-eastern *Ratikar Parvat*, (2) south-eastern *Ratikar Parvat*, (3) south-western *Ratikar Parvat*, and (4) north-western *Ratikar Parvat*.

The height of these *Ratikar Parvats* is one thousand *Yojans* (a unit of eight miles) and depth from the ground level is one thousand *Kos* (a unit of two miles). Their expanse is uniform at the bottom, middle and top. There shape is round (cylindrical) like *jhalar* (cymbals). Their length and breadth is ten thousand *Yojans*. Their circumference thirty one thousand six hundred twenty three (31,623) *Yojans*. They are gem studded ...and so on up to... and extremely pleasing

**३४५. तत्थ णं जे से उत्तरपुरत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते, तस्स णं चउदिसिं ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णंदुत्तरा, णंदा, उत्तरकुरा, देवकुरा। कण्हाए, कण्हराईए, रामाए, रामरक्खियाए।**

३४५. उनमें जो उत्तर-पूर्व दिशा का रतिकर पर्वत है, उसकी चारो दिशाओं में देवराज ईशान देवेन्द्र की चार अग्रमहिषियो-(१) कृष्णा, (२) कृष्णराजिका, (३) रामा, (४) रामरक्षिता की जम्बूद्वीप प्रमाण वाली-एक लाख योजन विस्तृत चार राजधानियाँ हैं, उनके नाम हैं-(१) नन्दोत्तरा, (२) नन्दा, (३) उत्तरकुरा, (४) देवकुरा।

**345.** In all the four directions of the north-eastern *Ratikar Parvat* there are four capital cities of the four *Agramahishis* (chief queens) of king of gods Ishaan *Devendra*—(1) Krishnaa, (2) Krishnarajika, (3) Rama, and (4) Ramarakshita. These capital cities are of the size of Jambu Dveep (one hundred thousand *Yojans* in area) and their names are—(1) Nandottara, (2) Nanda, (3) Uttarakura, and (4) Devakura.

**३४६. तत्थ णं जे से दाहिणपुरत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समणा, सोमणसा, अच्चिमाली, मणोरमा। पउमाए, सिवाए, सतीए, अंजूए।**

३४६. उनमें जो दक्षिण-पूर्व दिशा का रतिकर पर्वत है, उसकी चारों दिशाओं में देवराज शक्र देवेन्द्र की चार अग्रमहिषियों-(१) पद्मा, (२) शिव, (३) शची, और (४) अंजू की जम्बूद्वीप प्रमाण वाली चार राजधानियाँ है। उनके नाम है-(१) समना, (२) सौमनसा, (३) अर्चिमालिनी, (४) मनोरमा।

**346.** In all the four directions of the south-eastern *Ratikar Parvat* there are four capital cities of the four *Agramahishis* (chief queens) of king of gods Shakra *Devendra*—(1) Padmaa, (2) Shiva, (3) Shachi, and (4) Anju These capital cities are of the size of Jambu Dveep (one hundred thousand *Yojans* in area) and their names are—(1) Samanaa, (2) Saumanasa, (3) Archimalini, and (4) Manorama

**३४७. तत्थ णं जे से दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणमेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—भूता, भूतवडेंसा, गोथूभा, सुदंसणा। अमलाए, अच्छराए, णवमियाए, रोहिणीए।**

३४७. उन पर्वतो मे जो दक्षिण-पश्चिम दिशा का रतिकर पर्वत है, उसकी चारों दिशाओ में देवराज शक्र देवेन्द्र की चार अग्रमहिषियो-(१) अमला, (२) अप्सरा, (३) नवमिका, (४) रोहिणी की जम्बूद्वीप प्रमाण वाली चार राजधानियाँ है। उनके नाम है-(१) भूता, (२) भूतावतंसा, (३) गोस्तूपा, (४) सुदर्शना।

**347.** In all the four directions of the south-western *Ratikar Parvat* there are four capital cities of the four *Agramahishis* (chief queens) of king of gods Shakra *Devendra*—(1) Amalaa, (2) Apsara, (3) Navamika, and (4) Rohini. These capital cities are of the size of Jambu Dveep (one hundred thousand *Yojans* in area) and their names are—(1) Bhoota, (2) Bhootavatamsa, (3) Gostupa, and (4) Sudarshana

**३४८. तत्थ णं जे से उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते, तस्स णं चउद्दिसिमीसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवप्पमाणमेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणा, रतणुच्चया, सव्वरतणा, रतणसंचया। वसूए, वसुगुत्ताए, वसुमित्ताए, वसुंधराए।**

३४८. जो उत्तर-पश्चिम दिशा का रतिकर पर्वत है, उसकी चारो दिशाओ मे देवराज ईशान देवेन्द्र की चार अग्रमहिषियों-(१) वसु, (२) वसुगुप्ता, (३) वसुमित्रा, (४) वसुन्धरा की जम्बूद्वीप प्रमाण वाली चार राजधानियाँ है। उनके नाम है-(१) रत्ना, (२) रत्नोच्चया, (३) सर्वरत्ना, (४) रत्नसचया।

**348.** In all the four directions of the north-western *Ratikar Parvat* there are four capital cities of the four *Agramahishis* (chief queens) of king of gods Ishaan *Devendra*—(1) Vasu, (2) Vasugupta, (3) Vasumitra, and (4) Vasundhara These capital cities are of the size of Jambu Dveep (one hundred thousand *Yojans* in area) and their names are—(1) Ratnaa, (2) Ratnochchaya, (3) Sarvaratnaa, and (4) Ratnasanchayaa.

**विवेचन**—सूत्र ३०९ से ३१९ तक में नंदीश्वर द्वीप का जो वर्णन किया है, उससे पता चलता है कि यह द्वीप वास्तव में कितना रमणीय और आनन्ददायक है। ढाई द्वीप के बाहर के सभी द्वीपों में नन्दीश्वर का अलग ही महत्त्व है। इस पर देव-देवियाँ चातुर्मासिक, सावत्सरिक तथा जिन जन्म कल्याणक आदि अवसरों पर अष्टान्हिक महोत्सव मनाते हैं। यह द्वीप देव रमणीय द्वीप है। इसका विस्तृत वर्णन जीवाभिगमसूत्र में देखना चाहिए।

**Elaboration**—The description of Nandishvar Dveep given in aphorisms 309-319 informs us how enchanting and delightful this continent is Nandishvar Dveep has its own importance among the continents outside *Adhai Dveep* Gods and goddesses perform *Ashtanhik Mahotsava* (a specific religious celebrations) here on various occasions like *chaturmasik* (four months of monsoon stay), *Samvatsarik* (annual) and auspicious days of birth of *Tirthankars*. This is a continent frequented by gods. For detailed description of this continent consult *Jivabhigam Sutra*

### *सत्य-पद* SATYA-PAD (SEGMENT OF TRUTH)

**३४९. चउव्विहे सच्चे पण्णत्ते, तं जहा—णामसच्चे, ठवणसच्चे, दव्वसच्चे, भावसच्चे।**

३४९. सत्य के चार प्रकार हैं—(१) **नामसत्य**—किसी व्यक्ति का 'सत्य' नाम रखना। (२) **स्थापनासत्य**—किसी वस्तु में 'सत्य' का आरोप करना। (३) **द्रव्यसत्य**—सत्य का ज्ञाता, किन्तु उपयोगशून्य पुरुष। (४) **भावसत्य**—सत्य का ज्ञाता और सत्यविषयक उपयोग से युक्त।

**349.** *Satya* (truth) is of four kinds—(1) *Naam satya* (*satya* as name)—a person who is named Satya (2) *Sthapana satya*—a thing in which *satya* (truth) is installed (3) *Dravya satya* (physical truth)—a person who knows truth but does not act accordingly (4) *Bhaava satya*—a person who knows truth and also acts accordingly.

### *आजीविक तप-पद* AJIVIK-TAP-PAD (SEGMENT OF PENANCE OF AJIVIKS)

**३५०. आजीवियाणं चउव्विहे तवे पण्णत्ते, तं जहा—उग्गतवे, घोरतवे, रसणिज्जूहणता, जिब्भिंदियपडिसंलीणता।**

३५०. आजीविको (गोशालक के शिष्यों) का तप चार प्रकार का है—(१) **उग्रतप**—षष्ठभक्त (उपवास) बेला, तेला आदि करना। (२) **घोरतप**—सूर्य-आतापनादि के साथ उपवासादि करना। (३) **रस-निर्यूहणतप**—घृत आदि रसों का परित्याग करना। (४) **जिह्वेन्द्रिय-प्रतिसंलीनता तप**—मनोज्ञ और अमनोज्ञ भक्त-पानादि में राग-द्वेषरहित होकर जिह्वेन्द्रिय को वश करना।

**350.** *Tap* (penance) of Ajiviks (followers of Goshalak) is of four kinds—(1) *Ugra-tap*—to observe *Shasht bhakt* (two-day fast), *Asht bhakt* (three day fast) and other such austerities (2) *Ghor-tap*—to observe fasts

enduring heat of sun and other such mortifications. (3) *Rasa-niryuhan-tap*—to avoid consuming butter and other such rich food. (4) *Jihvendriys-pratisamlinata-tap*—to have control over taste buds by avoiding attachment for tasty and aversion for drab food

**संयमादि-पद SAMYAMADI-PAD (SEGMENT OF DISCIPLINE ETC.)**

**३५१. चउव्विहे संजमे पण्णत्ते, तं जहा—मणसंजमे, वइसंजमे, कायसंजमे, उवगरणसंजमे।**

**३५२. चउव्विहे चियाए पण्णत्ते, तं जहा—मणचियाए, वइचियाए, कायचियाए, उवगरणचियाए।**

३५१ संयम के चार प्रकार है–(१) मन-सयम, (२) वाक्-सयम, (३) काय-सयम, (४) उपकरण–वस्त्र–पात्रादि का संयम।

३५२. त्याग के चार प्रकार है–(१) मन त्याग, (२) वाक्–त्याग, (३) काय–त्याग, (४) उपकरण–त्याग।

**351.** *Samyam* (discipline), is of four kinds—(1) *manah-samyam* (mental discipline), (2) *vak-samyam* (vocal discipline), (3) *kaya-samyam* (physical discipline) and (4) *upakaran-samyam* (discipline regarding ascetic equipment including garb and bowls)

**352.** *Tyag* (renunciation) is of four kinds—(1) *manah-tyag* (mental renunciation), (2) *vak-tyag* (vocal renunciation), (3) *kaya-tyag* (physical renunciation), and (4) *upakaran-tyag* (renunciation of ascetic equipment including garb and bowls)

**३५३. चउव्विहा अकिंचणता पण्णत्ता, तं जहा—मणअकिंचणता, वइअकिंचणता, कायअकिंचणता, उवगरणअकिंचणता।**

३५३. अकिंचनता के चार प्रकार है–(१) मन–अकिंचनता, (२) वचन–अकिचनता, (३) काय–अकिंचनता, (४) उपकरण–अकिचनता।

॥ द्वितीय उद्देशक समाप्त ॥

**353.** *Akinchanata* (paucity) is of four kinds—(1) *manah-akinchanata* (mental paucity), (2) *vak-akinchanata* (vocal paucity), (3) *kaya-akinchanata* (physical paucity), and (4) *upakaran-akinchanata* (paucity of ascetic equipment including garb and bowls).

**● END OF THE SECOND LESSON ●**

## तृतीय उद्देशक
## THIRD LESSON

### क्रोध–पद KRODH-PAD (SEGMENT OF ANGER)

३५४. चत्तारि राईओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पव्वयराई, पुढविराई, वालुयराई, उदगराई।

एवामेव चउव्विहे कोहे पण्णत्ते, तं जहा—पव्वयराइसमाणे, पुढविराइसमाणे, वालुयराइसमाणे, उदगराइसमाणे।

१. पव्वयराइसमाणं कोहमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, णेरइएसु उववज्जति।

२. पुढविराइसमाणं कोहमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति।

३. वालुयराइसमाणं कोहमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, मणुस्सेसु उववज्जति।

४. उदगराइसमाणं कोहमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, देवेसु उववज्जति।

३५४. राजि (रेखा) चार प्रकार की होती है–(१) पर्वतराजि, (२) पृथ्वीराजि, (३) वालुकाराजि, और (४) उदकराजि।

इसी प्रकार क्रोध चार प्रकार का होता है–(१) पर्वतराजि के समान–अनन्तानुबन्धी, (२) पृथ्वीराजि के समान–अप्रत्याख्यानावरण, (३) वालुकाराजि के समान–प्रत्याख्यानावरण, और (४) उदकराजि के समान–संज्वलन।

(१) पर्वतराजि समान क्रोध मे प्रवर्तमान जीव काल करे तो नारक मे उत्पन्न होता है, (२) पृथ्वीराजि समान क्रोध में प्रवर्तमान जीव काल करे तो तिर्यग्योनि मे, (३) वालुकाराजि समान क्रोध मे प्रवर्तमान जीव काल करे तो मनुष्ययोनि मे, और (४) उदकराजि समान क्रोध मे प्रवर्तमान जीव काल करे तो देवयोनि में उत्पन्न होता है।

**354.** *Raji* (line) is of four kinds—(1) *parvat-raji* (line on mountain or rock), (2) *prithvi-raji* (line on land), (3) *baluka-raji* (line on sand), and (4) *udak-raji* (line in water).

In the same way anger is of four kinds—(1) like *parvat-raji* (*anantanubandhi*), (2) like *prithvi-raji* (*apratyakhyanavaran*), (3) like *baluka-raji* (*pratyakhyanavaran*), and (4) like *udak-raji* (*sanjvalan*).

(1) When a living being dies in state of anger like *parvat-raji* (*anantanubandhi*) it is reborn in hell, (2) when a living being dies in state of anger like *prithvi-raji* (*apratyakhyanavaran*) it is reborn as an

animal, (3) when a living being dies in state of anger like *baluka-raji* (*pratyakhyanavaran*) it is reborn as a human being, and (4) when a living being dies in state of anger like *udak-raji* (*sanjvalan*) it is reborn in the divine realm

**विवेचन**—उदक (जल) पर खिची हुई रेखा जैसे तुरन्त मिट जाती है, उसी प्रकार जो क्रोध अन्तर्मुहूर्त्त (४८ मिनट) के भीतर उपशान्त हो जाता है, वह **संज्वलन** क्रोध है। बालू में बनी रेखा जैसे वायु आदि के द्वारा अल्प समय के भीतर मिट जाती है, इसी प्रकार जो क्रोध पाक्षिक प्रतिक्रमण के समय तक शान्त हो जाता है, वह **प्रत्याख्यानावरण** क्रोध है। ग्रीष्म ऋतु में पृथ्वी पर बनी हुई रेखा वर्षा होने पर मिट जाती है, इसी प्रकार जिस क्रोध का सस्कार अधिक से अधिक एक वर्ष तक रहे और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करते हुए शान्त हो जाए, वह **अप्रत्याख्यानावरण** क्रोध है। पत्थर की रेखा मिटनी मुश्किल है, उसी प्रकार जिस क्रोध का सस्कार एक वर्ष के बाद भी दीर्घकाल तक बना रहे, उसे **अनन्तानुबन्धी** क्रोध कहा है।

(माया, मान, लोभ कषाय का वर्णन सूत्र २८२-२८४ मे किया जा चुका है।)

**Elaboration**—*Sanjvalan krodh* is the kind of anger that gets pacified soon, within *antarmuhurt* (48 minutes), just like a line drawn on the surface of water that vanishes within moments *Pratyakhyanavaran krodh* is the kind of anger that gets pacified latest by the time of fortnightly *pratikraman* (critical review), just like a line drawn on sand that is soon obliterated by wind *Apratyakhyanavaran krodh* is the kind of anger that continues for a maximum period of one year and gets pacified latest while doing *samvatsarik pratikraman* (annual critical review), just like a line drawn on ground during summer season that gets obliterated when rains start. *Anantanubandhi krodh* is the kind of anger that continues even after a year for a long time, just like a line etched on stone that is difficult to obliterate.

Other passions including *maya* (deceit), *maan* (conceit) and *lobh* (greed) have already been discussed in aphorisms 282-284.

### भाव-पद BHAAVA-PAD (SEGMENT OF SENTIMENTS)

**३५५. चत्तारि उदगा पण्णत्ता, तं जहा—कद्दमोदए, खंजणोदए, बालुओदए, सेलोदए।**

**एवामेव चउव्विहे भावे पण्णत्ते, तं जहा—कद्दमोदगसमाणे, खंजणोदगसमाणे, वालुओदगसमाणे, सेलोदगसमाणे।**

१. कद्दमोदगसमाणं भावमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, णेरइएसु उववज्जति। एवं जाव—

२. [ खंजणोदगसमाणं भावमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति।

३. वालुओदगसमाणं भावमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, मणुस्सेसु उववज्जति ]।

४. सेलोदगसमाणं भावमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ, देवेसु उववज्जति।

३५५. उदक (जल) चार प्रकार का होता है–(१) कर्दमोदक–कीचड वाला चिकना जल, (२) खंजनोदक–काजल, तेल आदि मिला जल, (३) वालुकोदक–बालू मिट्टीयुक्त जल, और (४) शैलोदक–पर्वतीय जल (पर्वतों पर गिरा पानी)।

इसी प्रकार जीवों के भाव (राग-द्वेष रूप परिणाम) चार प्रकार के होते है–(१) कर्दमोदक समान–अत्यन्त मलिन व दुःशोध्य भाव, (२) खंजनोदक समान–मलिन भाव, (३) वालुकोदक समान–अल्प मलिन शीघ्र स्वच्छ होने वाला भाव, और (४) शैलोदक समान–अत्यल्प मलिन या निर्मल भाव।

(१) कर्दमोदक–समान भाव में प्रवर्तमान जीव काल करने पर नारकों में, (२) खंजनोदक–समान भाव वाला जीव काल करने पर तिर्यग्योनिक जीवों में, (३) वालुकोदक–समान भाव वाला जीव काल करने पर मनुष्यों में, और (४) शैलोदक–समान भाव वाला जीव काल करने पर देवों में उत्पन्न होता है।

**355.** *Udak* (water) is of four kinds—(1) *kardamodak*—slimy and oily water, (2) *khanjanodak*—water with soot, oil and other impurities, (3) *valukodak*—sand mixed water, and (4) *shailodak*—mountain water (rain water from mountains)

In the same way *bhaavas* (sentiments in form of attachment and aversion) are of four kinds—(1) like *kardamodak*—extremely vile and irredeemable sentiments, (2) like *khanjanodak*—vile sentiments, (3) like *valukodak*—little vile and easily redeemable sentiments, and (4) like *shailodak*—very little or pure sentiments.

(1) A man dying when under the influence of *bhaava* like *kardamodak* reincarnates in hell (2) A man dying when under the influence of *bhaava* like *khanjanodak* reincarnates as an animal. (3) A man dying when under the influence of *bhaava* like *valukodak* reincarnates as a human being. (4) A man dying when under the influence of *bhaava* like *shailodak* reincarnates in divine dimension.

**रुत–रूव–पद RUT-RUPA-PAD (SEGMENT OF VOICE AND APPEARANCE)**

**३५६. चत्तारि पक्खी पण्णत्ता, तं जहा–रुतसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो रुतसंपण्णे, एगे रुतसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो रुतसंपण्णे णो रूवसंपण्णे।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रुतसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो रुतसंपण्णे, एगे रुतसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो रुतसंपण्णे णो रूवसंपण्णे।**

३५६. पक्षी चार प्रकार के होते है–(१) कोई पक्षी रुत–(स्वर–) सम्पन्न (मधुर स्वर वाला) होता है, किन्तु रूप–सम्पन्न (सुन्दर) नहीं होता, जैसे–कोयल, (२) कोई पक्षी रूप–सम्पन्न होता है, किन्तु स्वर–सम्पन्न नही होता, जैसे–तोता, (३) कोई पक्षी स्वर–सम्पन्न भी होता है और रूप–सम्पन्न भी, जैसे–मोर; एवं (४) कोई पक्षी न स्वर–सम्पन्न होता है और न रूप–सम्पन्न होता है, जैसे–काक (कौआ)।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई मधुर स्वर–सम्पन्न प्रियभाषी होता है, किन्तु सुन्दर नही होता; (२) कोई दीखने में सुन्दर होता है, किन्तु मधुरभाषी नहीं होता, (३) कोई दीखने में मधुरभाषी और सुन्दर भी होता है, तथा (४) कोई न मधुरभाषी होता है और न ही सुन्दर।

**356.** *Pakshi* (birds) are of four kinds—(1) Some bird is endowed with *rut* (sweet voice) but not with *rupa* (good appearance; beauty), for example a cuckoo. (2) Some bird is endowed with sweet voice but not with beauty, for example a parrot. (3) Some bird is endowed with sweet voice as well as with beauty, for example a peacock (4) Some bird is endowed neither with sweet voice nor with beauty, for example a crow

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is endowed with sweet voice but not with beauty (2) Some man is endowed with sweet voice but not with beauty (3) Some man is endowed with sweet voice as well as with beauty (4) Some man is endowed neither with sweet voice nor with beauty

### *प्रीतिक–अप्रीतिक–पद* PRITIK-APRITIK-PAD (SEGMENT OF FRIENDSHIP AND ANIMOSITY)

**३५७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पत्तियं करेमीतेगे पत्तियं करेति, पत्तियं करेमीतेगे अप्पत्तियं करेति, अप्पत्तियं करेमीतेगे पत्तियं करेति, अप्पत्तियं करेमीतेगे अप्पत्तियं करेति।**

३५७. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष किसी से प्रीति करने जाऊँ, ऐसा सोचता है और प्रीति करके आता है, (२) कोई किसी से प्रीति करने जाता है, किन्तु अप्रीति (द्वेष) करके आता है, (३) कोई किसी से अप्रीति करने जाता है, किन्तु प्रीति करके आता है; और (४) कोई अप्रीति करने जाता है और अप्रीति करके आता है।

**357.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man thinks of going to make someone a friend and ends up making him a friend. (2) Some man thinks of going to make someone a friend and ends up making him an enemy. (3) Some man thinks of going to make someone an enemy and

ends up making him a friend. (4) Some man thinks of going to make someone an enemy and ends up making him an enemy.

**३५८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–अप्पणो णाममेगे पत्तियं करेति णो परस्स, परस्स णाममेगे पत्तियं करेति णो अप्पणो, एगे अप्पणोवि पत्तियं करेति परस्सवि, एगे णो अप्पणो पत्तियं करेति णो परस्स।**

३५८. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष अपने आप से प्रीति करता है, किन्तु दूसरे से नहीं करता; (२) कोई दूसरे से प्रीति करता है, किन्तु अपनो से (अपने से) नहीं करता; (३) कोई अपनों से भी और पर से भी प्रीति करता है; और (४) कोई न अपनों से और न पर से भी प्रीति करता है।

**358.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man loves himself (and his kin) but not others. (2) Some man loves others but not himself (and his kin). (3) Some man loves himself (and his kin) as well as others. (4) Some man neither loves himself (and his kin) nor others

**३५९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–पत्तियं पवेसामीतेगे पत्तियं पवेसेति, पत्तियं पवेसामीतेगे अप्पत्तियं पवेसेति, अप्पत्तियं पवेसामीतेगे पत्तियं पवेसेति, अप्पत्तियं पवेसामीतेगे अप्पत्तियं पवेसेति।**

३५९. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष दूसरे के मन में प्रीति उत्पन्न करना चाहता है और प्रीति उत्पन्न करता है, (२) कोई दूसरे के मन मे प्रीति उत्पन्न करना चाहता है, किन्तु और अधिक अप्रीति उत्पन्न कर देता है, (३) कोई दूसरे के मन मे अप्रीति उत्पन्न करना चाहता है, किन्तु प्रीति उत्पन्न कर देता है; और (४) कोई दूसरे के मन मे अप्रीति उत्पन्न करना चाहता है और अप्रीति उत्पन्न कर देता है।

**359.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man wants to invoke friendship in others and does so (2) Some man wants to invoke friendship in others and ends up invoking animosity (3) Some man wants to invoke animosity in others and ends up invoking friendship. (4) Some man wants to invoke animosity in others and does so.

**३६०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–अप्पणो णाममेगे पत्तियं पवेसेति णो परस्स, परस्स णाममेगे पत्तियं पवेसेति णो अप्पणो, एगे अप्पणोवि पत्तियं पवेसेति परस्सवि, एगे णो अप्पणो पत्तियं पवेसेति णो परस्स।**

३६०. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष अपने मन में प्रीति का प्रवेश (–संचार) कर लेता है, किन्तु दूसरे के मन में नहीं कर पाता; (२) कोई दूसरे के मन में प्रीति का प्रवेश कर देता है, किन्तु अपने मन में नहीं कर पाता; (३) कोई अपने मन में भी प्रीति का प्रवेश करता है और दूसरों के मन में भी; तथा (४) कोई न अपने मन में प्रीति का प्रवेश कर पाता है और न दूसरों के मन में।

**360.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man infuses love in his own mind but is unable to do so in other person's mind. (2) Some man infuses love in other person's mind but is unable to do so in his own mind. (3) Some man infuses love in his own mind as well as in other person's mind (4) Some man is unable to infuses love in his own mind as well as in other person's mind.

**विवेचन**—इन चार सूत्रो मे आये 'पत्तियं' शब्द के संस्कृत टीकाकार ने दो अर्थ किये हैं–एक प्रीति अर्थात् प्रेम, और दूसरा प्रतीति अर्थात् विश्वास। दोनों ही अर्थों के अनुसार चारों भगों की व्याख्या की जा सकती है।

जो पुरुष उदात्त मनोवृत्ति वाले (स्थिर-परिणामी), दूसरों के मान-सम्मान व विचारों को महत्त्व देने वाले तथा पुण्यशाली होते है, वे दूसरों के मन में प्रीति या विश्वास उत्पन्न करना चाहते हैं और अपने उद्देश्य मे सफल हो जाते हैं।

कुछ पुरुष दूसरो के मन मे अप्रीति उत्पन्न करना चाहते है परन्तु वैसा नहीं कर पाते। इसके भी दो कारण है–(१) अप्रीति या द्वेष उत्पन्न करने का पहला कारण दूर हो जाने पर उसके मन से अप्रीति के भाव मिटकर प्रीति मे बदल जाते हैं, (२) सामने वाला व्यक्ति अप्रीतिजनक हेतु में भी प्रीति उत्पन्न करने का उदात्त स्वभाव वाला होने पर अप्रीति को भी प्रीति मे बदल सकता है। इसमें संयोग, वातावरण, सत्सग-प्रभाव, सदुपदेश, स्वार्थ बुद्धि, परोपकार बुद्धि, शुद्ध चिन्तन और उदार चिन्तन, कर्त्तव्यपालन और उत्तरदायित्व की भावना आदि का सकारात्मक प्रभाव समझा जा सकता है। *(संस्कृत टीका, पत्र २२४)*

**Elaboration**—The Sanskrit commentator has interpreted the term '*pattiyam*', used in the aforesaid four aphorisms, two ways—(1) *priti* or *prem* (love), and (2) *pratiti* or faith. All the four alternatives can be elaborated with both these meanings

Individuals who are liberal, give due importance to honour, respect and views of others and are meritorious, they are generally successful when they want to infuse love or faith in others. Some individual wants to infuse animosity in others but fails to do so There are two reasons for this—(1) When the initial cause for invoking animosity or aversion is removed his antagonistic feelings are replaced by affection. (2) When the adversary is so generous and liberal that he can be lovable even in antagonistic situation, he can turn animosity into love. This happens due to the positive influence of circumstances, environment, good company, good advise, self interest, altruism, purity of thought, liberal thoughts, sense of duty and responsibility etc.

उपकार-पद UPAKAR-PAD (SEGMENT OF GENEROSITY)

३६१. चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—पत्तोवए, पुप्फोवए, फलोवए, छायोवए।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पत्तोवा रुक्खसमाणे, पुप्फोवा रुक्खसमाणे, फलोवा रुक्खसमाणे, छायोवा रुक्खसमाणे।

३६१. वृक्ष चार प्रकार के होते हैं-(१) पत्तों से युक्त (जैसे-तेंदू वृक्ष); (२) फूलों से युक्त (जैसे-गुलाब); (३) फलों से युक्त (जैसे-आम), और (४) छाया से युक्त (जैसे-वट वृक्ष)।

(परोपकारी वृत्ति की अपेक्षा) पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष स्वयं तो सम्पन्न रहता है, किन्तु दूसरों को कुछ नही देता; (२) कोई धनादि के अभाव मे भी अपने मधुर व्यवहार से दूसरों को प्रसन्न कर देता है; (३) कोई धनादि देकर दूसरों के अभाव दूर कर देता है; और (४) कोई मधुर वचन, आश्वासन आदि देकर अपनी छत्रछाया मे दूसरों को आश्रय देता है।

**361.** *Vriksha* (trees) are of four kinds—(1) with leaves (like *tendu*), (2) with flowers (like rose), (3) with fruits (like mango), and (4) with shade (like banyan tree).

*Purush* (men) are also of four kinds (in context of generosity)—(1) Some person is wealthy but does not give anything to anybody, (2) some person pleases others by his sweet behaviour in spite of lack of wealth, (3) some person removes paucity of others simply by giving wealth and other things, and (4) some person gives refuge to others under his wings with sweet words of assurance

आश्वास-पद ASHVAAS-PAD (SEGMENT OF REST)

३६२. भारण्णं वहमाणस्स चत्तारि आसासा पण्णत्ता, तं जहा—

१. जत्थ णं अंसाओ अंसं साहरइ, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।

२. जत्थवि य णं उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवति, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।

३. जत्थवि य णं णागकुमारावासंसि वा सुवण्णकुमारावासंसि वा वासं उवेति, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।

४. जत्थवि य णं आवकहाए चिट्ठति, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।

एवामेव समणोवासगस्स चत्तारि आसासा पण्णत्ता, तं जहा—

१. जत्थवि य णं सीलव्वय-गुणव्वय-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं पडिवज्जति, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।

२. जत्थवि य णं सामाइयं देसावगासियं सम्ममणुपालेइ, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।

**३. जत्थवि य णं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेइ, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।**

**४. जत्थवि य णं अपच्छिम-मारणंतिय-संलेहणा-झूसणा-झूसिते भत्तपाण-पडियाइक्खिते पाओवगए कालमणवकंखमाणे विहरति, तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते।**

३६२. भार को वहन करने वाले पुरुष के लिए चार आश्वास (विश्राम) स्थान होते है-(१) प्रथम आश्वास-वह अपने भार को एक कन्धे से दूसरे कन्धे पर रखता है, (२) दूसरा आश्वास-वह अपना भार भूमि पर रखकर मल-मूत्र त्यागता है, (३) तीसरा आश्वास-वह किसी नागकुमार या सुपर्णकुमार आदि के देवस्थान पर रात्रि मे निवास करता है, और (४) चौथा आश्वास-वह अपने घर पहुँचकर भार से पूर्ण रूप में मुक्त होकर यावज्जीवन सुखपूर्वक रहता है।

इसी प्रकार श्रमणोपासक (श्रावक) के चार आश्वास (विश्राम) स्थान होते हैं-(१) जब वह शीलव्रत, गुणव्रत रूप पापो से निवृत्ति और पौषधोपवास आदि को स्वीकार करता है (पहला आश्वास), (२) जब वह सामायिक और देशावकाशिक व्रत का सम्यक् प्रकार से परिपालन करता है (दूसरा आश्वास), (३) जब वह अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या और पूर्णमासी के दिन परिपूर्ण पौषध का सम्यक् प्रकार परिपालन करता है (तीसरा आश्वास), और (४) जिस समय वह जीवन के अन्त मे मारणान्तिक सलेखना की आराधना से युक्त होकर भक्तपान का त्याग कर पादोपगमन सथारा स्वीकार कर मरण की आकाक्षा नहीं करता हुआ समय व्यतीत करता है (चौथा आश्वास)।

**362.** For a person carrying weight there are four *ashvaas* (places of rest)—(1) First *ashvaas* (place of rest)—he shifts his load from one shoulder to the other. (2) Second *ashvaas*—he places his load on the ground and relieves himself of nature's call (3) Third *ashvaas*—he stays at some temple of *Naag Kumar* or *Suparna Kumar* for the night. (4) Fourth *ashvaas*—he reaches home, gets completely free of the load and lives happily all his life

In the same way for a *shramanopasak* (*shravak* or Jain layman) there are four *ashvaas* (places of rest)—(1) When he moves away from sins by accepting *sheelvrats* (vows of morality), *gunavrats* (restraints that reinforce the practice of *anuvrats*), *paushadhopavas* (partial ascetic vow and fasting) etc. (first *ashvaas*) (2) When he properly observes *samayik vrat* (Jain system of periodic meditation performed in slots of 45 minutes) and *deshavakashik vrat* (limiting the area of one's movement) (second *ashvaas*) (3) When he properly observes complete *paushadh* (partial ascetic vow under which a householder lives like an initiated ascetic for a specific period) on eighth, fourteenth and fifteenth days of a

# श्रावक के चार आश्वास

**चित्र परिचय १७** | **Illustration No. 17**
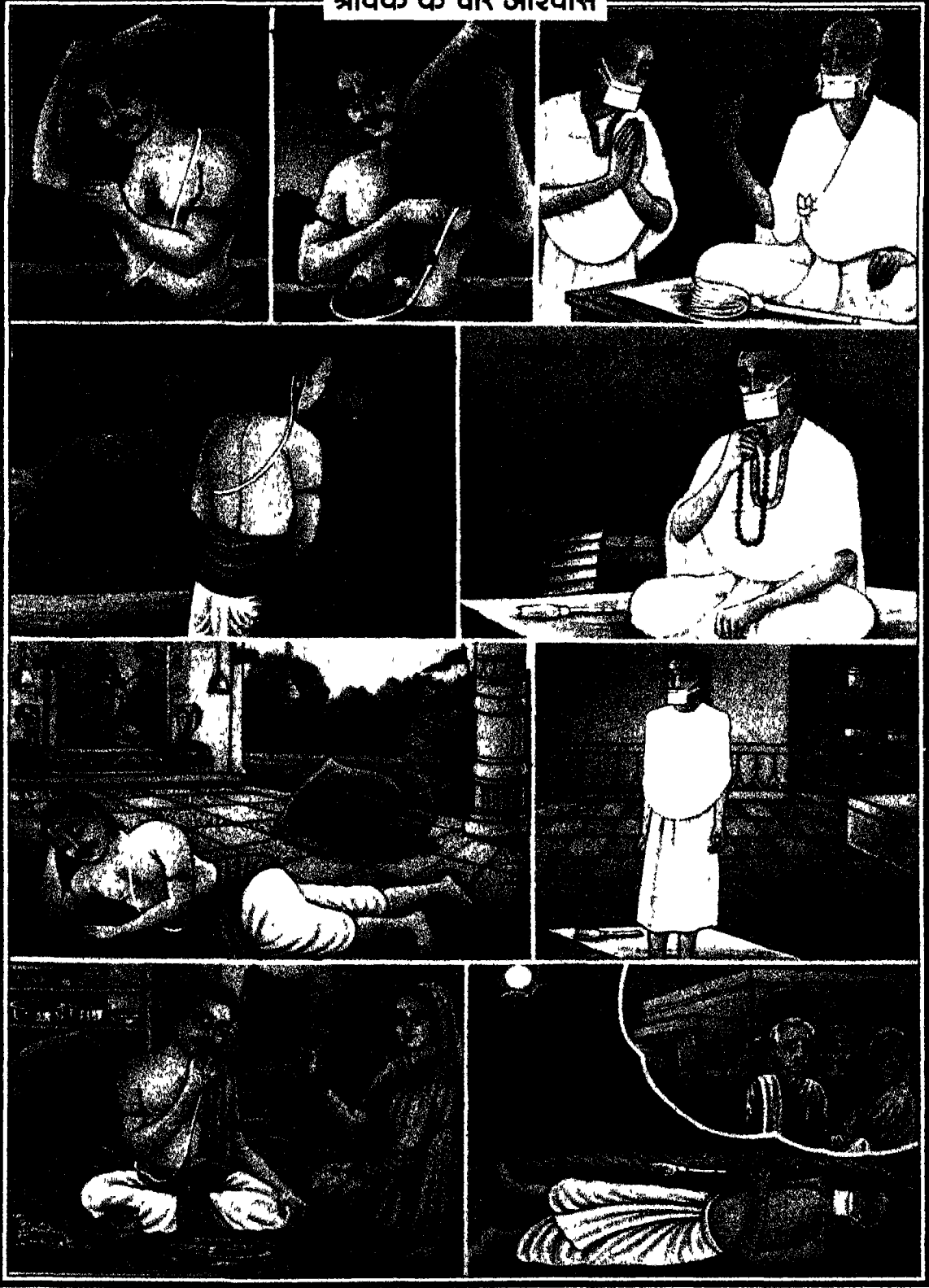
## श्रावक के चार आश्वास

(जिस प्रकार भार वहन वाले के लिए मार्ग में चार विश्राम स्थान होते हैं, उसी प्रकार श्रमणोपासक के लिए जीवन में चार अध्यात्मिक विश्राम स्थल हैं

१ भारवाहक, एक कन्धे को बदलकर दूसरे कन्धे पर भार रखता है। श्रावक अपने जीवन में गुणव्रत, शीलव्रत आदि व्रत ग्रहण कर आत्मा को विश्रान्ति-शान्ति प्रदान करता है।

२ भारवाहक मल-मूत्र त्यागने के लिए भार भूमि पर रखकर कुछ समय विश्रान्ति लेता है। श्रावक भी सामायिक व संवर आदि धार्मिक क्रियाएँ करता हुआ आत्मा को विश्रान्ति देता है।

३ भारवाहक किसी मन्दिर व धर्मशाला आदि में रात विश्राम लेकर थकान उतारता है। श्रावक भी पर्व तिथियों को पौषध आदि करके जीवन यात्रा में आत्म शान्ति अनुभवता है।

४ भारवाहक अपने घर पर पहुँचकर भार को पूर्ण रूप से दूर रखकर भोजन आदि करके पूर्ण विश्रान्ति लेता है। श्रावक भी जीवन के अन्तिम समय में गृहस्थ जीवन के सर्व कार्यों से मुक्त होकर संलेखना संथारा आदि द्वारा अन्तिम आराधना करके आत्मा को पूर्ण विश्रान्ति देता है। चित्र में भारवाहक के स्थान से श्रावक जीवन में धर्म जागरणा की स्थिति दर्शायी है।

—स्थान ४, सूत्र ३६२

## FOUR PLACES OF REST FOR A SHRAVAK

For a person carrying weight there are four places of rest. In the same way for a *shravak* also there are four places of rest -

1 A person carrying load shifts his load from one shoulder to the other. A *shravak* provides peace to his soul by accepting *sheel vrats*, *guna vrats* and other vows.

2 A person carrying load places his load on the ground and relieves himself of nature's call. A *shravak* provides peace to his soul when he properly performs *samayik-vrat*, *samvar* and other religious activities.

3 A person carrying load stays at some hostel for the night to rest. A *shravak* provides peace to his soul when he properly observes complete *paushadh* on auspicious days.

4 A person carrying load reaches home, gets completely free of the load and rests after taking meals. A *shravak* provides absolute peace to his soul when during the last days of his life he practices *maranantik samlekhana* and other rituals of the ultimate vow. The illustration shows the spiritual awakening of a person with the analogy of a person carrying load.

—*Sthaan 4, Sutra 362*

fortnight (third *ashvaas*). (4) When during the last days of his life he practices *maranantik samlekhana* (ultimate vow till death), abandons all food and drinks, accepts *padopagaman santhara* (lifelong fasting keeping the body motionless like a fallen tree) and spends time peacefully without the desire of death (fourth *ashvaas*).

### उदित–अस्तमित–पद UDIT-ASTAMIT-PAD (SEGMENT OF RISE AND FALL)

**३६३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–उदितोदिते णाममेगे, उदितत्थमिते णाममेगे, अत्थमितोदिते णाममेगे, अत्थमितत्थमिते णाममेगे।**

**भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी णं उदितोदिते, बंभदत्ते णं राया चाउरंतचक्कवट्टी उदितत्थमिते, हरिएसबले णं अणगारे अत्थमितोदिते, काले णं सोयरिये अत्थमितत्थमिते।**

३६३. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) उदितोदित–कोई पुरुष प्रारम्भ मे उदित (उन्नत) और अन्त तक उन्नत ही रहता है। जैसे–चारों दिशाओं मे अतिम छोर तक राज्य करने वाले चक्रवर्ती भरत राजा, (२) उदितास्तमित–कोई प्रारम्भ से उन्नत, किन्तु अन्त में अस्तमित अर्थात् सर्वसमृद्धि से भ्रष्ट होकर दुर्गति का पात्र होता है। जैसे–चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त राजा, (३) अस्तमितोदित–कोई प्रारम्भ में सम्पदा–विहीन, किन्तु जीवन के उत्तरार्ध मे उन्नति को प्राप्त करता है। जैसे–हरिकेशबल अनगार; और (४) अस्तमितास्तमित–कोई प्रारम्भ में भी हीन–दीन अवस्था मे रहता है और जीवन के अन्त में भी दुर्गति का पात्र होता है। जैसे–कालशौकरिक।

**363.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) *Uditodit* (rise and rise)—some man is *udit* (rising or in his prime) initially and remains so till the end For example Chakravarti Bharat whose reign extended in all the four direction till the end (2) *Uditastamit* (rise and fall)—some man is in his prime initially but falls in the end loosing all his wealth and glory. For example Chakravarti Brahmadatt. (3) *Astamodit* (fall and rise)—some man is fallen or deprived initially but during the later part of his life he attains progress. For example ascetic Harikeshabal. (4) *Astamitastamit* (fall and fall)—some man is deprived initially and remains so till the end of his life. For example Kaalashaukarik.

### युग्म–पद YUGMA-PAD (SEGMENT OF SET OF NUMBERS)

**३६४. चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा–कडजुम्मे, तेयोए, दावरजुम्मे, कलिओए।**

३६४. युग्म (राशि–विशेष) चार प्रकार का होता है–(१) कृतयुग्म–जिस राशि में चार का भाग देने पर शेष चार रहे, वह कृतयुग्म राशि है। जैसे–८, १२, १६, २० अंक; (२) त्र्योज–जिस राशि में चार का भाग देने पर तीन शेष रहे, वह त्र्योज। जैसे–७, ११, १५, १९ अंक; (३) द्वापरयुग्म–जिस

राशि में चार का भाग देने पर दो शेष रहे, वह द्वापरयुग्म। जैसे–६, १०, १४, १८ अंक; तथा (४) कल्योज–जिस राशि में चार का भाग देने पर एक शेष रहे, वह कल्योज। जैसे–५, ९, १३, १७, २१ अंक।

**364.** *Yugma* (specific sets of numbers) are of four kinds—(1) *Krityugma*—a number when divided by four has four as quotient. For example—8, 12, 16, 20 etc. (2) *Tryoj*—a number when divided by four has three as quotient. For example—7, 11, 15, 19 etc (3) *Dvapar*—a number when divided by four has two as quotient. For example—6, 10, 14, 18 etc (4) *Kalyoj*—a number when divided by four has one as quotient For example—5, 9, 13, 17, 21 etc.

**३६५. णेरइयाणं चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा–कडजुम्मे, तेओए, दावरजुम्मे, कलिओए।**

३६५. नारक जीव चारों प्रकार के युग्म वाले होते हैं–(१) कृतयुग्म, (२) त्र्योज, (३) द्वापरयुग्म, और (४) कल्योज।

**365.** *Naarak jivas* (infernal beings) conform to four kinds of *yugmas* (specific sets of numbers)—(1) *Krityugma,* (2) *Tryoj,* (3) *Dvapar,* and (4) *Kalyoj*.

**३६६. एवं असुरकुमाराणं जाव थणियकुमाराणं। एवं–पुढविकाइयाणं आउ–तेउ–वाउ–वणस्सतिकाइयाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियतिरिक्ख–जोणियाणं मणुस्साणं वाणमंतरजोइसियाणं वेमाणियाणं–सव्वेसिं जहा णेरइयाणं।**

३६६. इसी प्रकार असुरकुमारो से लेकर स्तनितकुमारों तक, तथा पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, वनस्पतिकायिको के, द्वीन्द्रियो के, त्रीन्द्रियों के, चतुरिन्द्रियो के, पचेन्द्रिय तिर्यग्योनिको के, मनुष्यो के, वाणव्यन्तरो के, ज्योतिष्को के और वैमानिको के सभी के नारकियो के समान चारो युग्म कहे गये हैं।

**366.** In the same way all the beings from *Asur Kumars* to *Stanit Kumars*, earth-water-fire-air-plant bodied beings, two-three-four sensed beings, five sensed animals, human beings, interstitial gods, stellar gods and celestial vehicle dwelling gods are said to conform to four *yugmas* (specific sets of numbers like infernal beings.

**विवेचन**–संख्याएँ दो प्रकार की होती हैं–सम और विषम। सम संख्या को युग्म और विषम संख्या को ओज कहा जाता है। सभी दण्डको में चारों युग्म राशियों के जीव पाये जाने का कारण यह है कि जन्म और मरण की अपेक्षा इनकी राशि मे कमी या अधिकता होती रहती है, इसलिए किसी समय विवक्षित राशि कृतयुग्म पाई जाती है, तो किसी समय त्र्योज आदि राशि पाई जाती है।

चार युग की प्रतीकात्मक भाषा पर चिन्तन करते हुए आचार्य श्री आत्माराम जी म. ने लिखा है कि वैदिक साहित्य में चार युग बताये हैं–(१) कृतयुग (सतयुग), (२) त्रेता, (३) द्वापर, और (४) कलियुग। तथा इनके साथ धर्म के चार चरण की कल्पना जोड़ी गई है–सत्य, अहिंसा, दया और

दम। सतयुग में धर्म के चारों चरण रहते हैं, त्रेता में तीन, द्वापर में दो और कलियुग में केवल एक चरण (दम–तप व संयम) रहता है। *(विस्तार के लिए देखें–हिन्दी टीका, पृ. ८९४)*

**Elaboration**—Numbers are of two kinds—even and odd. Even number is called *yugma* and odd number is called *oja*. The reason for finding living beings conforming to all these four *yugma* numbers in all *dandaks* is that in context of birth and death their number continues to increase or decrease. Thus at some point of time the number falls in the category of *Krit yugma*, and at other time in *Tryoj* or other *yugma*. Contemplating over this metaphoric expression of four ages *Acharya Shri Atmaram ji M.* writes that in *Vedic* literature for ages have been mentioned—(1) *Krit yug* (*Satayug*), (2) *Treta*, (3) *Dvapar*, and (4) *Kaliyug*. With these, four categories of religion have been associated—*satya* (truth), *ahimsa, daya* (kindness) and *dam* (austerities and self control). In *Satayug* all the four prevail, in *Treta* three, in *Dvapar* two and in *Kaliyug* only one prevails and that is *dam* (austerities and self control). *(for more details refer to Hindi Tika, p. 894).*

### *शूर–पद* SHOOR-PAD (SEGMENT OF BRAVE)

**३६७. चत्तारि सूरा पण्णत्ता, तं जहा–तवसूरे, खंतिसूरे, दाणसूरे, जुद्धसूरे।**

**खंतिसूरा अरहंता, तवसूरा अणगारा, दाणसूरे वेसमणे, जुद्धसूरे वासुदेवे।**

३६७. शूर चार प्रकार के होते है–(१) क्षान्ति या शान्ति शूर, (२) तप.शूर, (३) दानशूर, और (४) युद्धशूर।

(१) अर्हन्त भगवन्त क्षान्तिशूर (क्षमावीर) होते हैं, (२) अनगार साधु तपःशूर (तपोवीर) होते हैं, (३) वैश्रमण देव दानशूर (दानवीर) होते है, और (४) वासुदेव युद्धशूर (युद्धवीर) होते हैं।

**367.** *Shoor* (brave) are of four kinds—(1) *kshanti* or *shanti shoor* (brave in forgiveness), (2) *tapah shoor* (brave in austerities), (3) *daan shoor* (brave in charity), and (4) *yuddha shoor* (brave in war)

(1) *Arhant Bhagavant* (*Tirthankars*) are *kshanti shoor* (brave in forgiveness), (2) *anagar sadhus* (homeless ascetics) are *tapah shoor* (brave in austerities), (3) Vaishraman Deva (the god of wealth) is *daan shoor* (brave in charity), and (4) *Vasudevas* are *yuddha shoor* (brave in war).

**विवेचन**–अरिहंत अनन्तबली होते हैं। क्षमा करना उनका सहज स्वभाव है। अनगार तप में सर्वोपरि होता है, वह आत्म शुद्धि के निमित्त घोर तप करता है। वैश्रमण देव, दान देकर भी न तो किसी पर अहसास जताता है और न ही प्रतिफल की अपेक्षा रखता है। वासुदेव–नीति प्रेरित व नीतिपूर्वक युद्ध करते हैं। उनका युद्ध धर्म युद्ध कहलाता है। *(हिन्दी टीका, पृ ८९६)*

**Elaboration**—*Arihant* is extremely strong. Forgiveness is his intrinsic nature. An ascetic is accomplished in austerities and he performs rigorous austerities for inner purity Vaishraman, the god of wealth, gives wealth without any obligation or desire of reciprocation. *Vasudeva* conducts a war inspired by morality and conducted morally. His wars are called *dharma-yuddha* (just war) *(Hindi Tika, p. 896)*

**उच्च-नीच-पद UCHCH-NEECH-PAD (SEGMENT OF HIGH AND LOW)**

**३६८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—उच्चे णाममेगे उच्चच्छंदे, उच्चे णाममेगे णीयच्छंदे, णीए णाममेगे उच्चच्छंदे, णीए णाममेगे णीयच्छंदे।**

३६८. पुरुष चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष कुल, वैभव आदि से उच्च होता है और उच्च-विचार आदि से भी उच्च होता है, (२) कोई कुल आदि से उच्च होता है, किन्तु विचारों से नीच, (३) कोई जाति-कुलादि से नीच, किन्तु विचारो से उच्च, और (४) कोई जाति-कुलादि से भी नीच और विचार आदि से भी नीच होता है।

**368.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man is high or noble in terms of family and wealth and also lofty in thoughts, (2) some man is high in terms of family and wealth but lowly or mean in thoughts, (3) some man is lowly in terms of family and wealth but lofty in thoughts, and (4) some man is lowly in terms of family and wealth and also lowly in thoughts

**लेश्या-पद LESHYA-PAD (SEGMENT OF COMPLEXION OF SOUL)**

**३६९. असुरकुमाराणं चत्तारि लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेसा, णीललेसा, काउलेसा, तेउलेसा।**

**३७०. एवं जाव थणियकुमाराणं। एवं—पुढविकाइयाणं आउ—वणस्सइकाइयाणं वाणमंतराणं—सव्वेसिं जहा असुरकुमाराणं।**

३६९. असुरकुमारों मे चार लेश्याएँ होती है-(१) कृष्णलेश्या, (२) नीललेश्या, (३) कापोतलेश्या, और (४) तेजोलेश्या।

३७०. इसी प्रकार स्तनितकुमारो के, तथा पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, वनस्पतिकायिक जीवों के और वाणव्यन्तर देवों के, इन सबके असुरकुमारों के समान चार-चार लेश्याएँ होती हैं।

**369.** *Asura Kumars* have four *leshyas* (complexion of soul)—(1) *krishna leshya* (black complexion of soul), (2) *neel leshya* (blue complexion of soul), (3) *kapot leshya* (pigeon complexion of soul), and (4) *tejo leshya* (fiery complexion of soul)

**370.** In the same way *Stanit Kumars*, earth-bodied, water-bodied, plant-bodied and interstitial gods have four *leshyas* each like *Asur Kumars*.

## युक्त–अयुक्त–पद (चार भंग) YUKTA-AYUKTA-PAD (SEGMENT OF WITH AND WITHOUT)

**३७१. चत्तारि जाणा पण्णत्ता, तं जहा–जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, [ अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते ]।**

३७१. यान चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई यान (वाहन) बैल आदि से संयुक्त और वस्त्राभरणों से युक्त सुसज्जित होता है, (२) कोई यान बैल आदि से सयुक्त होने पर भी वस्त्रादि से सुसज्जित नहीं होता है, (३) कोई यान अयुक्त–बैल आदि नहीं जुते होने पर भी वस्त्रादि से सुसज्जित होता है, और (४) कोई यान न बैल आदि से युक्त होता है और न वस्त्रादि से ही सुसज्जित होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष धनादि से युक्त और सदाचार तथा योग्य वेश–भूषा से भी संयुक्त होता है, (२) कोई धनादि से युक्त होता है, किन्तु योग्य वेश–भूषादि से युक्त नहीं होता, [(३) कोई धनादि से युक्त नहीं होने पर भी योग्य वेश–भूषादि से युक्त होता है, तथा (४) कोई न धनादि से ही युक्त होता है और न योग्य वेश–भूषादि से ही युक्त होता है]।

**371.** *Yaan* (vehicle or cart) is of four kinds—(1) some cart is with (*yukta*) bullocks etc. harnessed to it and also adorned with (*yukta*) cloths and ornaments, (2) some cart is with (*yukta*) bullocks etc. harnessed to it but without (*ayukta*) cloths and ornaments, (3) some cart is without (*ayukta*) bullocks etc. harnessed to it but still adorned with (*yukta*) cloths and ornaments, and (4) some cart is without (*ayukta*) bullocks etc. harnessed to it and without (*ayukta*) cloths and ornaments too.

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) some man is endowed with (*yukta*) wealth and other possessions and also adorned with (*yukta*) proper dress and ornaments, (2) some man is endowed with (*yukta*) wealth and other possessions but not adorned with (*ayukta*) proper dress and ornaments, (3) some man is not endowed with (*ayukta*) wealth and other possessions but still adorned with (*yukta*) proper dress and ornaments, and (4) some man is neither endowed with (*ayukta*) wealth and other possessions nor adorned with (*ayukta*) proper dress and ornaments.

३७२. चत्तारि जाणा पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, [ अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते ]।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, [ जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते ]।

३७२. यान चार प्रकार के होते है–(१) युक्त और युक्त–परिणत–कोई यान बैल आदि से युक्त होता है और युक्त–परिणत (पहले योग्य सामग्री से युक्त नहीं होता, किन्तु बाद में सामग्री के भाव से परिणत हो जाता है, (२) कोई यान बैल आदि से युक्त होने पर भी योग्य सामग्री से रिक्त होता है, [(३) कोई यान बैल आदि से अयुक्त होने पर भी सामग्री से भरा होता है, और (४) कोई यान न तो बैल आदि से युक्त और न सामग्री से युक्त होता है]।

पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष धनादि युक्त और धर्म के शुद्ध भावो से युक्त होता है, [(२) कोई धनादि से युक्त होकर भी धर्म से परिणत नही, (३) कोई धनादि से युक्त न होने पर भी धर्म मे परिणत, और (४) कोई न धनादि से युक्त और न धर्म से परिणत होता है]।

**372.** *Yaan* (vehicle or cart) is of four kinds—(1) some cart is with (*yukta*) bullocks etc. harnessed to it and equipped later with (*yukta parinat*) necessary things, (2) some cart is with (*yukta*) bullocks etc harnessed to it but later not equipped with (*ayukta parinat*) necessary things, [(3) some cart is not with (*ayukta*) bullocks etc harnessed to it but equipped later with (*yukta parinat*) necessary things, and (4) some cart is neither with (*ayukta*) bullocks etc harnessed to it nor equipped later with (*ayukta parinat*) necessary things]

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) some man is endowed with (*yukta*) wealth and other possessions and later endowed with (*yukta parinat*) pure and religious thoughts, [(2) some man is endowed with (*yukta*) wealth and other possessions but later not endowed with (*ayukta parinat*) pure and religious thoughts, (3) some man is not endowed with (*ayukta*) wealth and other possessions but later endowed with (*yukta parinat*) pure and religious thoughts, and (4) some man is neither endowed with (*ayukta*) wealth and other possessions nor endowed later with (*ayukta parinat*) pure and religious thoughts].

३७३. चत्तारि जाणा पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, [ अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ]।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, [ जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ]।

३७३. यान चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई यान बैल आदि से युक्त और युक्त रूप (सुन्दर रूप) वाला होता है; (२) कोई बैल आदि से युक्त, किन्तु अयुक्त रूप वाला (जीर्णशीर्ण); (३) कोई बैल आदि से अयुक्त, किन्तु युक्त रूप वाला; और [(४) कोई न बैल आदि से युक्त और न युक्त रूप वाला होता है]।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष धन व गुणो से युक्त और रूप व वेश आदि से भी युक्त; [(२) कोई गुणादि से युक्त, किन्तु रूप से युक्त नहीं, (३) कोई गुणो से युक्त नही, किन्तु रूप से युक्त, और (४) कोई न गुणों से ही युक्त और न रूप से ही युक्त होता है]।

**373.** *Yaan* (vehicle or cart) is of four kinds—(1) some cart is with (*yukta*) bullocks etc. harnessed to it and also beautiful in appearance (*yukta rupa*), (2) some cart is with (*yukta*) bullocks etc harnessed to it but not beautiful in appearance (*ayukta rupa*), (3) some cart is not with (*ayukta*) bullocks etc harnessed to it but still beautiful in appearance (*yukta rupa*), and [(4) some cart is neither with (*ayukta*) bullocks etc. harnessed to it nor beautiful in appearance (*ayukta rupa*)]

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) some man is endowed with (*yukta*) wealth and other qualities and also beautiful in appearance (*yukta rupa*), [(2) some man is endowed with (*yukta*) wealth and other qualities but not beautiful in appearance (*ayukta rupa*), (3) some man is not endowed with (*ayukta*) wealth and other qualities but still beautiful in appearance (*yukta rupa*), and (4) some man is neither endowed with (*ayukta*) wealth and other qualities nor beautiful in appearance (*ayukta rupa*)]

**३७४. चत्तारि जाणा पण्णत्ता, तं जहा--जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, [ जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे ]।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा--जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, [ जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे ]।**

३७४. यान चार प्रकार के होते है-(१) कोई यान बैल आदि से युक्त और वस्त्राभरणादि की शोभा से भी युक्त होता है, [(२) कोई बैल आदि से तो युक्त, किन्तु शोभा से युक्त नही; (३) कोई बैल आदि से युक्त नहीं, किन्तु शोभा से युक्त; और (४) कोई न बैलादि से युक्त और न शोभा से ही युक्त होता है]।

पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष ज्ञानादि सद्गुणों से युक्त और उचित वेश आदि की शोभा से भी युक्त होता है; [(२) कोई गुणों से युक्त, किन्तु शोभा से युक्त नही, (३) कोई गुणों से तो युक्त नहीं, किन्तु शोभा से युक्त; और (४) कोई न गुणों से युक्त और न शोभा से ही युक्त होता है]।

**374.** *Yaan* (vehicle or cart) is of four kinds—(1) some cart is with (*yukta*) bullocks etc. harnessed to it and also endowed with grandeur

(*yukta shobha*) of decoration and ornaments, [(2) some cart is with (*yukta*) bullocks etc. harnessed to it but not endowed with grandeur (*ayukta shobha*), (3) some cart is not with (*ayukta*) bullocks etc. harnessed to it but still endowed with grandeur (*yukta shobha*), and (4) some cart is neither with (*ayukta*) bullocks etc. harnessed to it nor endowed with grandeur (*ayukta shobha*)]

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) some man is endowed with (*yukta*) knowledge and other qualities and also endowed with grandeur (*yukta shobha*), [(2) some man is endowed with (*yukta*) knowledge and other qualities but not endowed with grandeur (*ayukta shobha*), (3) some man is not endowed with (*ayukta*) knowledge and other qualities but still endowed with grandeur (*yukta shobha*), and (4) some man is neither endowed with (*ayukta*) knowledge and other qualities nor endowed with grandeur (*ayukta shobha*)].

### *युग्य–पद (चार भंग)* YUGYA-PAD (SEGMENT OF PAIRS)

**३७५. चत्तारि जुग्गा पण्णत्ता, तं जहा–जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते।**

**३७५.** चार प्रकार के युग्य– (वाहन–बैल, अश्व आदि की जोडी अथवा दो हाथ का चौकोर यान, जैसे–दो घोडों की बग्घी) होते है–(१) कोई युग्य बाह्य उपकरणों से युक्त और उत्तम गति–वेग से भी युक्त होता है, (२) कोई युक्त होकर भी उत्तम गति–वेग से युक्त नही होता, (३) कोई उपकरणों से युक्त नही होता, किन्तु उत्तम गति से युक्त होता है, और (४) कोई न उपकरणों से युक्त होता है और न उत्तम गति से युक्त होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष सम्पत्ति से युक्त होता है और सदाचार से भी युक्त होता है; (२) कोई सम्पत्ति से युक्त होता है, किन्तु सदाचार से युक्त नहीं होता; (३) कोई सम्पत्ति से तो युक्त नहीं होता, किन्तु सदाचार से युक्त होता है, और (४) कोई न सम्पत्ति से युक्त होता है और न सदाचार से ही युक्त होता है।

**375.** *Yugya* (pair; a pair of animals like horse or a vehicle with a pair of animals harnessed to it) is of four kinds—(1) some *yugya* (pair) is well equipped (*yukta*) and also has (*yukta*) good speed, (2) some pair is well equipped (*yukta*) but does not have good speed (*ayukta*), (3) some pair is not well equipped (*ayukta*) but has good speed (*yukta*), and (4) some pair is neither well equipped (*ayukta*) nor has good speed.

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) some man is endowed with (*yukta*) wealth and also endowed with (*yukta*) good conduct, (2) some man is endowed with (*yukta*) wealth but not endowed with (*ayukta*) good conduct, (3) some man is not endowed with (*ayukta*) wealth but still endowed with (*yukta*) good conduct, and (4) some man is neither endowed with (*ayukta*) wealth nor endowed with (*ayukta*) good conduct.

**३७६. चत्तारि आलावगा, तथा जुग्गेण वि, पडिवक्खो, तहेव पुरिसजाया जाव सोभेत्ति। एवं जहा जाणेण [ चत्तारि जुग्गा पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, [ जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते ]।**

३७६. चार आलापक यहाँ भी कहने चाहिए। जिस प्रकार यान के विषय मे युक्त (उपकरणों से युक्त), युक्त-परिणत (वहन कार्य में लगा हुआ), युक्त रूप और युक्त शोभा के चार आलापक है, वैसे यहाँ युग्य के विषय मे कहकर पुरुषों की भी धन, सदाचार, ज्ञान आदि के साथ चतुर्भंगियाँ कहनी चाहिए।

[युग्य चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई युग्य युक्त और युक्तपरिणत होता है, (२) कोई युक्त होकर भी अयुक्त-परिणत, (३) कोई अयुक्त होकर भी युक्त-परिणत, और (४) कोई न युक्त और न युक्त-परिणत होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष गुणों से युक्त होता है और योग्य परिणति वाला भी; (२) कोई गुणो से तो युक्त होता है, किन्तु योग्य परिणति वाला नही; (३) कोई गुणों से युक्त नही, किन्तु योग्य परिणति वाला होता है; और (४) कोई न तो गुणो से युक्त और न योग्य परिणति वाला होता है।]

**376.** Four alternatives should also be read here with regard to *yugya* like those mentioned with regard to *yaan* (*yukta, yukta parinat, yukta rupa* and *yukta shobha*). And the same should be repeated about *purush* (man).

(1) some *yugya* (pair) is well equipped (*yukta*) initially and later also (*yukta parinat*), (2) some pair is well equipped (*yukta*) initially but gets ill equipped later (*ayukta parinat*), (3) some pair is ill equipped (*ayukta*) initially but gets well equipped later (*yukta parinat*), and (4) some pair is neither well equipped (*ayukta*) initially nor later (*ayukta parinat*).

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) some man is endowed with (*yukta*) virtues initially and later as well (*yukta parinat*), (2) some man is endowed with (*yukta*) virtue initially but not later

(*ayukta parinat*), (3) some man is not endowed with (*ayukta*) virtues initially but acquires virtues later (*yukta parinat*), and (4) some man is neither endowed with (*ayukta*) virtues initially nor acquires virtues later (*ayukta parinat*).

**३७७. [ चत्तारि जुग्गा पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ]।**

३७७. युग्य चार प्रकार के होते है–(१) कोई युक्त और युक्त रूप वाला, (२) कोई युक्त, किन्तु अयुक्त रूप वाला, (३) कोई अयुक्त, किन्तु युक्त रूप वाला, तथा (४) कोई अयुक्त और अयुक्त रूप वाला होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई युक्त और युक्त रूप वाला, (२) कोई युक्त, किन्तु अयुक्त रूप वाला, (३) कोई अयुक्त, किन्तु युक्त रूप वाला, एव (४) कोई अयुक्त और अयुक्त रूप वाला होता है।

**377.** *Yugya* (pair) is of four kinds (in terms of quality and appearance)—(1) some pair is *yukta* and *yukta rupa*, (2) some pair is *yukta* and *ayukta rupa*, (3) some pair is *ayukta* and *yukta rupa*, and (4) some pair is *ayukta* and *ayukta rupa*

In the same way *purush* (men) are of four kinds (in terms of quality and appearance)—(1) some man is *yukta* and *yukta rupa*, (2) some man is *yukta* and *ayukta rupa*, (3) some man is *ayukta* and *yukta rupa*, and (4) some man is *ayukta* and *ayukta rupa*

**३७८. [ चत्तारि जुग्गा पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे ]।**

३७८. युग्य चार प्रकार के होते है–(१) कोई युक्त और युक्त शोभा वाला; (२) कोई युक्त, किन्तु अयुक्त शोभा वाला; (३) कोई अयुक्त, किन्तु युक्त शोभा वाला, और (४) कोई अयुक्त और अयुक्त शोभा वाला होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई युक्त और युक्त शोभा वाला; (२) कोई युक्त, किन्तु अयुक्त शोभा वाला, (३) कोई अयुक्त, किन्तु युक्त शोभा वाला; तथा (४) कोई अयुक्त और अयुक्त शोभा वाला होता है।

**378.** *Yugya* (pair) is of four kinds (in terms of quality and grandeur)—(1) some pair is *yukta* and *yukta shobha*, (2) some pair is *yukta* and *ayukta shobha*, (3) some pair is *ayukta* and *yukta shobha*, and (4) some pair is *ayukta* and *ayukta shobha*.

In the same way *purush* (men) are of four kinds (in terms of quality and grandeur)—(1) some man is *yukta* and *yukta shobha*, (2) some man is *yukta* and *ayukta shobha*, (3) some man is *ayukta* and *yukta shobha*, and (4) some man is *ayukta* and *ayukta shobha*.

**सारथी–पद SARATHI-PAD (SEGMENT OF CHARIOTEER)**

**३७९. चत्तारि सारही पण्णत्ता, तं जहा–जोयावइत्ता णामं एगे णो विजोयावइत्ता, विजोयावइत्ता णाममेगे णो जोयावइत्ता, एगे जोयावइत्तावि विजोयावइत्तावि, एगे णो जोयावइत्ता णो विजोयावइत्ता।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–जोयावइत्ता णामं एगे णो विजोयावइत्ता, [ विजोयावइत्ता णामं एगे णो जोयावइत्ता, एगे जोयावइत्तावि विजोयावइत्तावि, एगे णो जोयावइत्ता णो विजोयावइत्ता ]।**

३७९. सारथी (रथ-वाहक) चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई सारथी घोडे आदि को रथ मे जोडने वाला (योजक) होता है, किन्तु उन्हें मुक्त करने वाला (वियोजक) नहीं होता, (२) कोई सारथी घोडो को मुक्त करने वाला होता है, किन्तु रथ में जोडने वाला नहीं होता, (३) कोई सारथी रथ में जोडने वाला भी होता है और उन्हें मुक्त करने वाला भी; और (४) कोई सारथी न घोडे आदि को रथ में जोडता है और न उन्हे मुक्त ही करता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष दूसरों को उत्तम कार्यों से जोड़ता है, किन्तु अनुचित कार्यों से वियुक्त-युक्त नही करता; [(२) कोई दूसरो को अयोग्य कार्यों से वियुक्त तो करता है, किन्तु उत्तम कार्यों में युक्त नहीं करता, (३) कोई दूसरो को उत्तम कार्यों में युक्त भी करता है और अनुचित कार्यों से वियुक्त भी करता है; और (४) कोई दूसरों को न युक्त ही करता है और न वियुक्त ही करता है।]

**379.** *Sarathi* (charioteers) are of four kinds—(1) Some *sarathi* (charioteer) is *yojak* (one who engages horses to the chariot) and not *viyojak* (one who disengages horses from the chariot). (2) Some *sarathi* (charioteer) is *viyojak* (one who disengages) and not *yojak* (one who engages). (3) Some *sarathi* (charioteer) is *yojak* (one who engages) as well as *viyojak* (one who disengages). (4) Some *sarathi* (charioteer) is neither *yojak* (one who engages) nor *viyojak* (one who disengages).

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) Some *purush* (man) is *yojak* (one who engages others in good deeds) and not *viyojak* (one who disengages others from bad deeds). [(2) Some *purush* (man) is *viyojak* (one who disengages) and not *yojak* (one who engages). (3) Some *purush* (man) is *yojak* (one who engages) as well as *viyojak* (one who disengages). (4) Some *purush* (man) is neither *yojak* (one who engages) nor *viyojak* (one who disengages)].

### युक्त–अयुक्त–अश्व–पद YUKTA-AYUKTA-ASHVA-PAD (SEGMENT OF EQUIPPED AND NON-EQUIPPED HORSE)

३८०. चत्तारि हया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, [ अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते ]।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, [ जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते ]।

३८१. एवं जुत्तपरिणते, जुत्तरूवे, जुत्तसोभे, सव्वेसिं पडिवक्खो पुरिसजाता। [ चत्तारि हया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते ]।

३८२. एवं जहा हयाणं तहा गयाण वि भाणियव्वं, पडिवक्खे तहेव पुरिसजाता। [ चत्तारि हया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ]।

३८३. [ चत्तारि हया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे ]।

३८०. घोडे चार प्रकार के होते है–(१) कोई घोडा जीन–पलान से युक्त और वेगयुक्त भी होता है; (२) कोई जीन–पलान से युक्त, किन्तु वेगयुक्त नहीं होता; (३) कोई जीन–पलान से अयुक्त, किन्तु वेगयुक्त; और (४) कोई न जीन–पलान से युक्त और न वेग से ही युक्त होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष वस्त्राभरण से युक्त और उत्साह आदि गुणों से भी युक्त होता है; (२) कोई वस्त्राभरण से युक्त, किन्तु उत्साह आदि गुणों से युक्त नहीं; (३) कोई वस्त्राभरण से अयुक्त, किन्तु गुणों से युक्त; और (४) कोई न वस्त्राभरण से युक्त और न गुणों से युक्त होता है।

३८१. घोड़े चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई घोडा जीन आदि से युक्त और युक्त–परिणत–सुशिक्षित भी होता है, (२) कोई युक्त होकर भी अयुक्त–परिणत–अशिक्षित, (३) कोई अयुक्त होकर भी युक्त–परिणत, और (४) कोई अयुक्त और अयुक्त–परिणत होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष संयम आदि से युक्त एवं युक्त–परिणत–विद्यावान भी होता है, (२) कोई युक्त होकर अयुक्त–परिणत–विद्याहीन, (३) कोई अयुक्त होकर युक्त–परिणत, और (४) कोई अयुक्त होकर अयुक्त–परिणत होता है।

३८२. घोड़ों की तरह हाथियों के विषय में भी चार आलापक बनते हैं और पुरुष के पक्ष में भी वैसा ही कहना चाहिए।

जैसे–घोडे चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई घोडा युक्त (जीव आदि से युक्त) और युक्त रूप (सुन्दर) होता है, (२) कोई युक्त, किन्तु अयुक्त रूप; (३) कोई अयुक्त, किन्तु युक्त रूप, और (४) कोई अयुक्त और अयुक्त रूप होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार क होते हैं–(१) कोई युक्त–(गुण–सम्पन्न) और युक्त रूप (शरीर से सुन्दर) होता है; (२) कोई युक्त, किन्तु अयुक्त रूप वाला, (३) कोई अयुक्त, किन्तु युक्त रूप वाला, और (४) कोई अयुक्त और अयुक्त रूप वाला होता है।

३८३. पुनः घोडे चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई घोडा वस्त्राभूषण से युक्त और युक्त शोभा–(श्रीसम्पन्न) होता है; (२) कोई युक्त, किन्तु अयुक्त शोभा वाला, (३) कोई अयुक्त, किन्तु युक्त शोभा वाला; और (४) कोई अयुक्त और अयुक्त शोभा वाला होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई संयम आदि गुणों से युक्त और युक्त शोभा (प्रभावशाली) होता है; (२) कोई संयमयुक्त होकर भी अयुक्त शोभा (प्रभावहीन) होता है, (३) कोई अयुक्त, किन्तु युक्त शोभा वाला; और (४) कोई अयुक्त और अयुक्त शोभा वाला होता है।

**380.** *Ashva* (horse) is of four kinds—(1) some *ashva* (horse) is *yukta* (equipped with saddle) and also has (*yukta*) good speed, (2) some horse is equipped with saddle (*yukta*) but does not have good speed (*ayukta*), (3) some horse is not equipped with saddle (*ayukta*) but has good speed (*yukta*), and (4) some horse is neither equipped with saddle (*ayukta*) nor has good speed.

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) some man is endowed with (*yukta*) dress and ornaments and also endowed with

(*yukta*) qualities, (2) some man is endowed with (*yukta*) dress and ornaments but not with (*ayukta*) qualities, (3) some man is not endowed with (*ayukta*) dress and ornaments but with (*yukta*) qualities, and (4) some man is neither endowed with (*ayukta*) dress and ornaments nor with (*ayukta*) qualities.

**381.** *Ashva* (horse) is of four kinds—(1) some *ashva* (horse) is saddled (*yukta*) and also gets well trained (*yukta parinat*), (2) some horse is saddled (*yukta*) but not trained (*ayukta parinat*), (3) some horse is not saddled (*ayukta*) but gets well trained (*yukta parinat*), and (4) some horse is neither saddled (*ayukta*) nor trained (*ayukta parinat*)

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) some man is endowed with (*yukta*) virtues and educated as well (*yukta parinat*), (2) some man is endowed with (*yukta*) virtues but not educated (*ayukta parinat*), (3) some man is not endowed with (*ayukta*) virtues but educated (*yukta parinat*), and (4) some man is neither endowed with (*ayukta*) virtues nor educated (*ayukta parinat*).

**382.** Like horses there are four alternatives with regard to elephants And the same should be repeated about *purush* (man) For example—

*Ashva* (horse) is of four kinds (in terms of equipment like saddle and appearance or *rupa*)—(1) some horse is *yukta* and *yukta rupa*, (2) some horse is *yukta* and *ayukta rupa*, (3) some horse is *ayukta* and *yukta rupa*, and (4) some horse is *ayukta* and *ayukta rupa*

In the same way *purush* (men) are of four kinds (in terms of qualities and appearance)—(1) some man is *yukta* and *yukta rupa*, (2) some man is *yukta* and *ayukta rupa*, (3) some man is *ayukta* and *yukta rupa*, and (4) some man is *ayukta* and *ayukta rupa*.

**383.** *Ashva* (horse) is of four kinds (in terms of equipment and grandeur or *shobha*)—(1) some horse is *yukta* and *yukta shobha*, (2) some horse is *yukta* and *ayukta shobha*, (3) some horse is *ayukta* and *yukta shobha*, and (4) some horse is *ayukta* and *ayukta shobha*.

In the same way *purush* (men) are of four kinds (in terms of qualities like discipline and grandeur)—(1) some man is *yukta* and *yukta shobha*, (2) some man is *yukta* and *ayukta shobha*, (3) some man is *ayukta* and *yukta shobha*, and (4) some man is *ayukta* and *ayukta shobha*.

(SEGMENT OF EQUIPPED AND NON-EQUIPPED ELEPHANT)

३८४. [ चत्तारि गया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते णाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते ]।

३८५. [ चत्तारि गया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणते, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणते ]।

३८६. [ चत्तारि गया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ]।

३८७. [ चत्तारि गया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, जुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे, अजुत्ते णाममेगे अजुत्तसोभे ]।

३८४. हाथी चार प्रकार के होते है–(१) कोई हाथी अम्बाडी से युक्त होता है और धीरता आदि गुणों से भी युक्त होता है, (२) कोई युक्त होकर भी अयुक्त, (३) कोई अयुक्त होकर युक्त, और (४) कोई अयुक्त होकर अयुक्त होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष वस्त्राभूषण आदि से युक्त होता है और गुणयुक्त भी होता है, (२) कोई युक्त होकर अयुक्त, (३) कोई अयुक्त होकर युक्त, और (४) कोई अयुक्त होकर अयुक्त होता है।

३८५. हाथी चार प्रकार के होते है। जैसे–(१) कोई हाथी अम्बाड़ी आदि से युक्त और युक्त–परिणत (युद्ध कला में निष्णात) होता है, (२) कोई युक्त होकर अयुक्त–परिणत, (३) कोई अयुक्त होकर युक्त–परिणत, और (४) कोई अयुक्त होकर अयुक्त–परिणत होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष सयम से युक्त और युक्त–परिणत (क्षमाशील, विवेकवान) होता है, (२) कोई युक्त होकर अयुक्त–परिणत, (३) कोई अयुक्त होकर युक्त–परिणत, और (४) कोई अयुक्त होकर अयुक्त–परिणत होता है।

३८६. हाथी चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई हाथी अम्बाड़ी आदि से युक्त और युक्त रूप (सुन्दर आकृति) वाला होता है, (२) कोई युक्त, किन्तु अयुक्त रूप वाला, (३) कोई अयुक्त, किन्तु युक्त रूप वाला, और (४) कोई अयुक्त और अयुक्त रूप वाला होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष युक्त (संयमयुक्त) और युक्त रूप वाला, (२) कोई युक्त, किन्तु अयुक्त रूप वाला, (३) कोई अयुक्त, किन्तु युक्त रूप वाला, और (४) कोई अयुक्त और अयुक्त रूप वाला होता है।

३८७. हाथी चार प्रकार के होते है-(१) कोई हाथी अम्बाड़ी आदि से युक्त और युक्त शोभा (श्रीसम्पन्न) होता है, (२) कोई युक्त, किन्तु अयुक्त शोभा वाला, (३) कोई अयुक्त, किन्तु युक्त शोभा वाला, और (४) कोई अयुक्त और अयुक्त शोभा वाला होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष युक्त और युक्त शोभा वाला, (२) कोई युक्त, किन्तु अयुक्त शोभा वाला, (३) कोई अयुक्त, किन्तु युक्त शोभा वाला, और (४) कोई अयुक्त और अयुक्त शोभा वाला होता है।

**384.** *Gaja* (elephant) is of four kinds—(1) some *gaja* (elephant) is *yukta* (equipped with caparisons) and also has good qualities (*yukta*), (2) some elephant is equipped (*yukta*) but does not have good qualities (*ayukta*), (3) some elephant is not equipped (*ayukta*) but has good qualities (*yukta*), and (4) some elephant is neither equipped (*ayukta*) nor has good qualities.

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) some man is endowed with (*yukta*) dress and ornaments and also endowed with (*yukta*) qualities, (2) some man is endowed with (*yukta*) dress and ornaments but not with (*ayukta*) qualities, (3) some man is not endowed with (*ayukta*) dress and ornaments but with (*yukta*) qualities, and (4) some man is neither endowed with (*ayukta*) dress and ornaments nor with (*ayukta*) qualities.

**385.** *Gaja* (elephant) is of four kinds (in terms of equipment like caparisons and trained for war or *yukta parinat*)—(1) some elephant is *yukta* and *yukta parinat*, (2) some elephant is *yukta* and *ayukta parinat*, (3) some elephant is *ayukta* and *yukta parinat*, and (4) some elephant is *ayukta* and *ayukta parinat*.

In the same way *purush* (men) are of four kinds (in terms of discipline and acquired virtues like forgiveness and sagacity)—(1) some man is *yukta* and *yukta parinat*, (2) some man is *yukta* and *ayukta parinat*, (3) some man is *ayukta* and *yukta parinat*, and (4) some man is *ayukta* and *ayukta parinat*.

**386.** *Gaja* (elephant) is of four kinds (in terms of equipment like saddle and appearance or *rupa*)—(1) some elephant is *yukta* and *yukta rupa*, (2) some elephant is *yukta* and *ayukta rupa*, (3) some elephant is *ayukta* and *yukta rupa*, and (4) some elephant is *ayukta* and *ayukta rupa*.

In the same way *purush* (men) are of four kinds (in terms of qualities and appearance)—(1) some man is *yukta* and *yukta rupa*, (2) some man is *yukta* and *ayukta rupa*, (3) some man is *ayukta* and *yukta rupa*, and (4) some man is *ayukta* and *ayukta rupa*.

**387.** *Gaja* (elephant) is of four kinds (in terms of equipment and grandeur or *shobha*)—(1) some elephant is *yukta* and *yukta shobha*, (2) some elephant is *yukta* and *ayukta shobha*, (3) some elephant is *ayukta* and *yukta shobha*, and (4) some elephant is *ayukta* and *ayukta shobha*.

In the same way *purush* (men) are of four kinds (in terms of qualities like discipline and grandeur)—(1) some man is *yukta* and *yukta shobha*, (2) some man is *yukta* and *ayukta shobha*, (3) some man is *ayukta* and *yukta shobha*, and (4) some man is *ayukta* and *ayukta shobha*.

### पथ–उत्पथ–पद PATH-UTPATH-PAD
### (SEGMENT OF RIGHT PATH AND WRONG PATH)

**३८८.** चत्तारि जुग्गारिता पण्णत्ता, तं जहा—पंथजाई णाममेगे णो उप्पहजाई, उप्पहजाई णाममेगे णो पंथजाई, एगे पंथजाईवि उप्पहजाईवि, एगे णो पंथजाई णो उप्पहजाई।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पंथजाई णाममेगे णो उप्पहजाई, उप्पहजाई णाममेगे णो पंथजाई, एगे पंथजाईवि उप्पहजाईवि, एगे णो पंथजाई णो उप्पहजाई।

३८८. युग्यारित–युग्य का ऋत (घोडे आदि जोडो का गमन)–चार प्रकार का होता है–(१) कोई जोड़ा मार्गगामी होता है, किन्तु उन्मार्गगामी नहीं; (२) कोई उन्मार्गगामी होता है, किन्तु मार्गगामी नहीं; (३) कोई मार्गगामी भी होता है और उन्मार्गगामी भी; और (४) कोई न मार्गगामी होता है और न उन्मार्गगामी होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष पथयायी–न्यायनीति के मार्ग पर चलता है, किन्तु उन्मार्गगामी नहीं, (२) कोई उन्मार्गगामी होता है, किन्तु मार्गगामी नहीं, (३) कोई मार्गगामी होता है और उन्मार्गगामी भी; और (४) कोई न मार्गगामी होता है और न उन्मार्गगामी होता है।

**388.** The movement of pairs of horses (etc.) is of four kinds—(1) some pair moves on the right *path* (*margagami*) and not on the wrong *path* (*unmargagami*), (2) some pair moves on the wrong *path* (*unmargagami*)

and not on the right *path* (*margagami*), (3) some pair moves on the right *path* (*margagami*) and also on the wrong *path* (*unmargagami*), and (4) some pair moves neither on the right *path* (*margagami*) nor on the wrong *path* (*unmargagami*).

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) some man moves on the right *path* (*margagami*) and not on the wrong *path* (*unmargagami*), (2) some man moves on the wrong *path* (*unmargagami*) and not on the right *path* (*margagami*), (3) some man moves on the right *path* (*margagami*) and also on the wrong *path* (*unmargagami*), and (4) some man moves neither on the right *path* (*margagami*) nor on the wrong *path* (*unmargagami*).

### रूप–शील–पुष्प–पद RUPA-SHEEL-PUSHPA-PAD (SEGMENT OF APPEARANCE, CHARACTER AND FLOWER)

**३८९. चत्तारि पुप्फा पण्णत्ता, तं जहा—रूवसंपण्णे णाममेगे णो गंधसंपण्णे, गंधसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, एगे रूवसंपण्णे वि गंधसंपण्णे वि, एगे णो रूवसंपण्णे णो गंधसंपण्णे।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रूवसंपण्णे णाममेगे णो सीलसंपण्णे, सीलसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, एगे रूवसंपण्णेवि सीलसंपण्णेवि, एगे णो रूवसंपण्णे णो सीलसंपण्णे।**

३८९. पुष्प चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुष्प रूपसम्पन्न (सुन्दर) होता है, किन्तु गन्धसम्पन्न नही। जैसे–आकुलि (आक) का फूल, (२) कोई गन्धसम्पन्न होता है, किन्तु रूपसम्पन्न नही। जैसे–मौलश्री व रातरानी का फूल, (३) कोई रूपसम्पन्न और गन्धसम्पन्न भी होता है। जैसे–गुलाब व जुही का फूल; और (४) कोई न रूपसम्पन्न होता है और न गन्धसम्पन्न होता है। जैसे–टेसू का फूल।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई रूपसम्पन्न होता है, किन्तु शीलसम्पन्न नही; (२) कोई शीलसम्पन्न होता है, किन्तु रूपसम्पन्न नही, (३) कोई रूपसम्पन्न होता है और शीलसम्पन्न भी, और (४) कोई न रूपसम्पन्न होता है और न शीलसम्पन्न ही होता है।

**389.** *Pushpa* (flowers) are of four kinds—(1) Some *pushpa* (flower) has *rupa* (beauty) but not *gandh* (fragrance). For example *Akuli* flower (ark flower). (2) Some *pushpa* (flower) has *gandh* (fragrance) but not *rupa* (beauty). For example *Maulashri* and *Raat-rani* flowers (*Milusops* elengi and queen of night flowers) (3) Some *pushpa* (flower) has *gandh* (fragrance) as well as *rupa* (beauty). For example *Gulab* and *Juhi* flowers (rose and jasmine flowers). (4) Some *pushpa* (flower) has neither *gandh* (fragrance) nor *rupa* (beauty). For example *Tesu* flower (*Palash* or *Butea* frondosa flowers).

In the same way *purush* (men) are of four kinds—(1) Some *purush* (man) has *rupa* (beauty) but not *sheel* (character). (2) Some *purush* (man) has *sheel* (character) but not *rupa* (beauty). (3) Some *purush* (man) has *sheel* (character) as well as *rupa* (beauty). (4) Some *purush* (man) has neither *sheel* (character) nor *rupa* (beauty).

**जाति–पद JATI-PAD (SEGMENT OF CASTE)**

**३९०. (१) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, [ कुलसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि.कुलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो कुलसंपण्णे ]।**

**३९१. (२) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, बलसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो बलसंपण्णे।**

**३९२. (३) एवं जातीए य, रूवेण य, चत्तारि आलावगा, एवं जातीए य, सुएण य, एवं जातीए य, सीलेण य, एवं जातीए य, चरित्तेण य, एवं कुलेण य, बलेण य, एवं कुलेण य, रूवेण य, कुलेण य, सुएण य, कुलेण य, सीलेण य, कुलेण य, चरित्तेण य।**

**[ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो रूवसंपण्णे ]।**

**३९३. (४) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो सुयसंपण्णे, सुयसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि सुयसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो सुयसंपण्णे ]।**

**३९४. (५) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो सीलसंपण्णे, सीलसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि सीलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो सीलसंपण्णे ]।**

**३९५. (६) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो चरित्तसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि चरित्तसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो चरित्तसंपण्णे ]।**

३९०. (१) पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई जातिसम्पन्न (उत्तम मातृपक्ष वाला) होता है, किन्तु कुलसम्पन्न (उत्तम पितृपक्ष वाला) नहीं होता; [(२) कोई कुलसम्पन्न, किन्तु जातिसम्पन्न नहीं होता; (३) जातिसम्पन्न भी और कुलसम्पन्न भी; और (४) कोई न जातिसम्पन्न, न कुलसम्पन्न होता है]।

३९१. (२) पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई जातिसम्पन्न होता है, किन्तु बलसम्पन्न नहीं; (२) कोई बलसम्पन्न, किन्तु जातिसम्पन्न नही, (३) कोई जातिसम्पन्न भी और बलसम्पन्न भी; और (४) कोई न जातिसम्पन्न और न बलसम्पन्न होता है।

३९२. (३) इसी प्रकार जातिसम्पन्न, रूपसम्पन्न के चार आलापक, जाति–श्रुत के चार, जाति–शील के, जाति–चरित्र के तथा कुल एव बल, कुल एव रूप, कुल–श्रुत, कुल–शील, कुल–चारित्र के आलापक होते है। [सूत्र ३९० से ४१० तक २१ सूत्रो मे जाति के सयोग से ६, कुल के संयोग से ५, बल के संयोग से ४, रूप के सयोग से ३, श्रुत के सयोग से २ और शील के संयोग से १, कुल २१ चौभगी आगे के सूत्रों मे बताई गई है।]

पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई जातिसम्पन्न होता है, किन्तु रूपसम्पन्न नही, (२) कोई रूपसम्पन्न, किन्तु जातिसम्पन्न नहीं, (३) कोई जातिसम्पन्न भी और रूपसम्पन्न भी, और (४) कोई न जातिसम्पन्न और न रूपसम्पन्न होता है।

३९३. (४) पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई जातिसम्पन्न होता है, किन्तु श्रुतसम्पन्न नहीं, (२) कोई श्रुतसम्पन्न, किन्तु जातिसम्पन्न नही, (३) कोई जातिसम्पन्न भी और श्रुतसम्पन्न भी, और (४) कोई न जातिसम्पन्न और न श्रुतसम्पन्न होता है।

३९४. (५) पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई जातिसम्पन्न होता है, किन्तु शीलसम्पन्न नही, (२) कोई शीलसम्पन्न, किन्तु जातिसम्पन्न नही, (३) कोई जातिसम्पन्न और शीलसम्पन्न भी, और (४) कोई न जातिसम्पन्न और न शीलसम्पन्न होता है।

३९५. (६) पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई जातिसम्पन्न होता है, किन्तु चरित्रसम्पन्न नही, (२) कोई चरित्रसम्पन्न, किन्तु जातिसम्पन्न नही; (३) कोई जातिसम्पन्न भी और चरित्रसम्पन्न भी, तथा (४) कोई न जातिसम्पन्न और न चरित्रसम्पन्न होता है।

**390.** (1) *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *kula sampanna* (of good paternal lineage) (2) Some man is *kula sampanna* and not *jati sampanna* (3) Some man is both *jati sampanna* and *kula sampanna*. (4) Some man is neither *jati sampanna* nor *kula sampanna*.

**391.** (2) *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *bal sampanna* (strong) (2) Some man is *bal sampanna* and not *jati sampanna* (3) Some man is both *jati sampanna* and *bal sampanna*. (4) Some man is neither *jati sampanna* nor *bal sampanna*.

**392.** (3) In the same way there are four statements in context of *jati* and *rupa sampanna* (lineage and appearance), four regarding *jati-shrut, jati sheel, jati-charitra* and others regarding *kula-bal, kula-rupa, kula-*

*shrut*, *kula-sheel*, *kula-charitra* [In 21 aphorisms from 390 to 410 there are 21 quads—6 associated with *jati*, 5 with *kula*, 4 with *bal*, 3 with *shrut*, 3 with *rupa*, 2 with *shrut* and 1 with *sheel* ]

*Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *rupa sampanna* (endowed with beauty). (2) Some man is *rupa sampanna* and not *jati sampanna*. (3) Some man is both *jati sampanna* and *rupa sampanna*. (4) Some man is neither *jati sampanna* nor *rupa sampanna*.

**393.** (4) *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *shrut sampanna* (having knowledge of scriptures). (2) Some man is *shrut sampanna* and not *jati sampanna*. (3) Some man is both *jati sampanna* and *shrut sampanna*. (4) Some man is neither *jati sampanna* nor *shrut sampanna*

**394.** (5) *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *sheel sampanna* (endowed with good character). (2) Some man is *sheel sampanna* and not *jati sampanna*. (3) Some man is both *jati sampanna* and *sheel sampanna*. (4) Some man is neither *jati sampanna* nor *sheel sampanna*.

**395.** (6) *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *chaaritra sampanna* (endowed with pious conduct). (2) Some man is *chaaritra sampanna* and not *jati sampanna*. (3) Some man is both *jati sampanna* and *chaaritra sampanna*. (4) Some man is neither *jati sampanna* nor *chaaritra sampanna*.

### *कुल–पद* KULA-PAD (SEGMENT OF LINEAGE)

**३९६. (७) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–कुलसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, बलसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो बलसंपण्णे ]।**

**३९७. (८) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–कुलसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो रूवसंपण्णे ]।**

**३९८. (९) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–कुलसंपण्णे णाममेगे णो सुयसंपण्णे, सुयसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि सुयसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो सुयसंपण्णे ]।**

**३९९. (१०) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णाममेगे णो सीलसंपण्णे, सीलसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि सीलसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो सीलसंपण्णे ]।**

**४००. (११) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—कुलसंपण्णे णाममेगे णो चरित्तसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि चरित्तसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो चरित्तसंपण्णे ]।**

३९६. (७) पुरुष चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई कुलसम्पन्न होता है, किन्तु बलसम्पन्न नही, (२) कोई बलसम्पन्न होता है, किन्तु कुलसम्पन्न नही, (३) कोई कुलसम्पन्न भी और बलसम्पन्न भी, और (४) कोई न कुलसम्पन्न और न बलसम्पन्न होता है।

३९७. (८) पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई कुलसम्पन्न होता है, किन्तु रूपसम्पन्न नही, (२) कोई रूपसम्पन्न होता है, कुलसम्पन्न नही, (३) कोई कुलसम्पन्न भी होता है और रूपसम्पन्न भी; तथा (४) कोई न कुलसम्पन्न होता है और न रूपसम्पन्न ही होता है।

३९८. (९) पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई कुलसम्पन्न होता है, किन्तु श्रुतसम्पन्न नही, (२) कोई श्रुतसम्पन्न होता है, किन्तु कुलसम्पन्न नही, (३) कोई कुलसम्पन्न भी और श्रुतसम्पन्न भी, और (४) कोई न कुलसम्पन्न और न श्रुतसम्पन्न ही होता है।

३९९. (१०) पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई कुलसम्पन्न होता है, किन्तु शीलसम्पन्न नही, (२) कोई शीलसम्पन्न होता है, किन्तु कुलसम्पन्न नही, (३) कोई कुलसम्पन्न भी होता है और शीलसम्पन्न भी, और (४) कोई न कुलसम्पन्न और न शीलसम्पन्न होता है।

४००. (११) पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई कुलसम्पन्न होता है, किन्तु चरित्रसम्पन्न नही, (२) कोई चरित्रसम्पन्न होता है, किन्तु कुलसम्पन्न नही; (३) कोई कुलसम्पन्न भी और चरित्रसम्पन्न भी; और (४) कोई न कुलसम्पन्न और न चरित्रसम्पन्न ही होता है।

**396.** (7) *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *kula sampanna* (of good paternal lineage) and not *bal sampanna* (strong) (2) Some man is *bal sampanna* and not *kula sampanna*. (3) Some man is both *kula sampanna* and *bal sampanna* (4) Some man is neither *kula sampanna* nor *bal sampanna*.

**397.** (8) *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *kula sampanna* (of good paternal lineage) and not *rupa sampanna* (beautiful). (2) Some man is *rupa sampanna* and not *kula sampanna*. (3) Some man is both *kula sampanna* and *rupa sampanna*. (4) Some man is neither *kula sampanna* nor *rupa sampanna*.

**398.** (9) *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *kula sampanna* (of good paternal lineage) and not *shrut sampanna* (having knowledge of scriptures). (2) Some man is *shrut sampanna* and not *kula sampanna*. (3) Some man is both *kula sampanna* and *shrut sampanna*. (4) Some man is neither *kula sampanna* nor *shrut sampanna*.

**399.** (10) *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *kula sampanna* (of good paternal lineage) and not *sheel sampanna* (endowed with good character). (2) Some man is *sheel sampanna* and not *kula sampanna*. (3) Some man is both *kula sampanna* and *sheel sampanna*. (4) Some man is neither *kula sampanna* nor *sheel sampanna*.

**400.** (11) *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *kula sampanna* (of good paternal lineage) and not *chaaritra sampanna* (endowed with pious conduct). (2) Some man is *chaaritra sampanna* and not *kula sampanna*. (3) Some man is both *kula sampanna* and *chaaritra sampanna*. (4) Some man is neither *kula sampanna* nor *chaaritra sampanna*.

### बल-पद BAL-PAD (SEGMENT OF STRENGTH)

**४०१. (१२) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बलसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, एगे बलसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो बलसंपण्णे णो रूवसंपण्णे।**

**४०२. (१३) एवं बलेण य सुएण य, एवं बलेण य सीलेण य, एवं बलेण य चरित्तेण य, [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बलसंपण्णे णाममेगे णो सुयसंपण्णे, सुयसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, एगे बलसंपण्णेवि सुयसंपण्णेवि, एगे णो बलसंपण्णे णो सुयसंपण्णे ]।**

**४०३. (१४) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बलसंपण्णे णाममेगे णो सीलसंपण्णे, सीलसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, एगे बलसंपण्णेवि सीलसंपण्णेवि, एगे णो बलसंपण्णे णो सीलसंपण्णे ]।**

**४०४. (१५) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बलसंपण्णे णाममेगे णो चरित्तसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, एगे बलसंपण्णेवि चरित्तसंपण्णेवि, एगे णो बलसंपण्णे णो चरित्तसंपण्णे ]।**

४०१. (१२) पुरुष चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई बलसम्पन्न होता है, किन्तु रूपसम्पन्न नहीं; (२) कोई रूपसम्पन्न होता है, किन्तु बलसम्पन्न नहीं; (३) कोई बलसम्पन्न भी और रूपसम्पन्न भी; और (४) कोई न बलसम्पन्न और न रूपसम्पन्न ही होता है।

४०२. (१३) पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई बलसम्पन्न होता है, किन्तु श्रुतसम्पन्न नही; (२) कोई श्रुतसम्पन्न होता है, किन्तु बलसम्पन्न नहीं, (३) कोई बलसम्पन्न भी होता है और श्रुतसम्पन्न भी; और (४) कोई न बलसम्पन्न और न श्रुतसम्पन्न ही होता है।

४०३. (१४) पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई बलसम्पन्न होता है, किन्तु शीलसम्पन्न नही, (२) कोई शीलसम्पन्न होता है, किन्तु बलसम्पन्न नहीं, (३) कोई बलसम्पन्न भी और शीलसम्पन्न भी होता है; और (४) कोई न बलसम्पन्न और न शीलसम्पन्न ही होता है।

४०४. (१५) पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई बलसम्पन्न होता है, किन्तु चारित्रसम्पन्न नहीं; (२) कोई चारित्रसम्पन्न होता है, किन्तु बलसम्पन्न नही, (३) कोई बलसम्पन्न भी और चारित्रसम्पन्न भी होता है, और (४) कोई न बलसम्पन्न और न चारित्रसम्पन्न ही होता है।

**401.** (12) *Purush* (men) are also of four kinds—(1) Some man is *bal sampanna* (strong) and not *rupa sampanna* (beautiful). (2) Some man is *rupa sampanna* and not *bal sampanna* (3) Some man is both *bal sampanna* and *rupa sampanna* (4) Some man is neither *bal sampanna* nor *rupa sampanna*

**402.** (13) *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *bal sampanna* (strong) and not *shrut sampanna* (having knowledge of scriptures) (2) Some man is *shrut sampanna* and not *bal sampanna* (3) Some man is both *bal sampanna* and *shrut sampanna* (4) Some man is neither *bal sampanna* nor *shrut sampanna*

**403.** (14) *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *bal sampanna* (strong) and not *sheel sampanna* (endowed with good character) (2) Some man is *sheel sampanna* and not *bal sampanna*. (3) Some man is both *bal sampanna* and *sheel sampanna* (4) Some man is neither *bal sampanna* nor *sheel sampanna*

**404.** (15) *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *bal sampanna* (strong) and not *chaaritra sampanna* (endowed with pious conduct). (2) Some man is *chaaritra sampanna* and not *bal sampanna* (3) Some man is both *bal sampanna* and *chaaritra sampanna*. (4) Some man is neither *bal sampanna* nor *chaaritra sampanna*.

**रूप-पद RUPA-PAD (SEGMENT OF BEAUTY)**

**४०५. (१६) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रूवसंपण्णे णाममेगे णो सुयसंपण्णे, एवं रूवेण य सीलेण य, रूवेण य चरित्तेण य, सुयसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, एगे रूवसंपण्णेवि सुयसंपण्णेवि, एगे णो रूवसंपण्णे णो सुयसंपण्णे।**

४०६. (१७) [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रूवसंपण्णे णाममेगे णो सीलसंपण्णे, सीलसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, एगे रूवसंपण्णेवि सीलसंपण्णेवि, एगे णो रूवसंपण्णे णो सीलसंपण्णे ]।

४०७. (१८) [ चत्तारि परिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रूवसंपण्णे णाममेगे णो चरित्तसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, एगे रूवसंपण्णेवि चरित्तसंपण्णेवि, एगे णो रूवसंपण्णे णो चरित्तसंपण्णे ]।

४०५. (१६) पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई रूपसम्पन्न होता है, किन्तु श्रुतसम्पन्न नहीं, (२) कोई श्रुतसम्पन्न होता है, किन्तु रूपसम्पन्न नही; (३) कोई रूपसम्पन्न भी और श्रुतसम्पन्न भी होता है, तथा (४) कोई न रूपसम्पन्न और न श्रुतसम्पन्न ही होता है।

४०६. (१७) पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई रूपसम्पन्न होता है, किन्तु शीलसम्पन्न नहीं; (२) कोई शीलसम्पन्न होता है, किन्तु रूपसम्पन्न नहीं; (३) कोई रूपसम्पन्न भी और शीलसम्पन्न भी होता है, और (४) कोई न रूपसम्पन्न और न शीलसम्पन्न ही होता है।

४०७. (१८) पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई रूपसम्पन्न होता है, किन्तु चारित्रसम्पन्न नही, (२) कोई चारित्रसम्पन्न होता है, किन्तु रूपसम्पन्न नही; (३) कोई रूपसम्पन्न भी और चारित्रसम्पन्न भी होता है, और (४) कोई न रूपसम्पन्न और न चारित्रसम्पन्न ही होता है।

**405.** (16) *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *rupa sampanna* (beautiful) and not *shrut sampanna* (having knowledge of scriptures) (2) Some man is *shrut sampanna* and not *rupa sampanna*. (3) Some man is both *rupa sampanna* and *shrut sampanna*. (4) Some man is neither *rupa sampanna* nor *shrut sampanna*.

**406.** (17) *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *rupa sampanna* (beautiful) and not *sheel sampanna* (endowed with good character) (2) Some man is *sheel sampanna* and not *rupa sampanna*. (3) Some man is both *rupa sampanna* and *sheel sampanna*. (4) Some man is neither *rupa sampanna* nor *sheel sampanna*.

**407.** (18) *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *rupa sampanna* (beautiful) and not *chaaritra sampanna* (endowed with pious conduct). (2) Some man is *chaaritra sampanna* and not *rupa sampanna*. (3) Some man is both *rupa sampanna* and *chaaritra sampanna*. (4) Some man is neither *rupa sampanna* nor *chaaritra sampanna*.

**श्रुत-पद SHRUT-PAD (SEGMENT OF SCRIPTURES)**

**४०८. (१९) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुयसंपण्णे णाममेगे णो सीलसंपण्णे, सीलसंपण्णे णाममेगे णो सुयसंपण्णे, एगे सुयसंपण्णेवि सीलसंपण्णेवि, एगे णो सुयसंपण्णे णो सीलसंपण्णे।**

**४०९. (२०) एवं सुएण य चरित्तेण य [ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सुयसंपण्णे णाममेगे णो चरित्तसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे णाममेगे णो सुयसंपण्णे, एगे सुयसंपण्णेवि चरित्तसंपण्णेवि, एगे णो सुयसंपण्णे णो चरित्तसंपण्णे ]।**

४०८. (१९) पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई श्रुतसम्पन्न होता है, किन्तु शीलसम्पन्न नहीं, (२) कोई शीलसम्पन्न होता है, किन्तु श्रुतसम्पन्न नही, (३) कोई श्रुतसम्पन्न भी और शीलसम्पन्न भी होता है, और (४) कोई न श्रुतसम्पन्न और न शीलसम्पन्न ही होता है।

४०९. (२०) पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई श्रुतसम्पन्न होता है, किन्तु चारित्रसम्पन्न नहीं, (२) कोई चारित्रसम्पन्न होता है, किन्तु श्रुतसम्पन्न नहीं; (३) कोई श्रुतसम्पन्न भी और चारित्रसम्पन्न भी होता है; और (४) कोई न श्रुतसम्पन्न और न चारित्रसम्पन्न ही होता है।

**408.** (19) *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *shrut sampanna* (endowed with knowledge of scriptures) and not *sheel sampanna* (endowed with good character). (2) Some man is *sheel sampanna* and not *shrut sampanna* (3) Some man is both *shrut sampanna* and *sheel sampanna.* (4) Some man is neither *shrut sampanna* nor *sheel sampanna.*

**409.** (20) *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *shrut sampanna* (endowed with knowledge of scriptures) and not *chaaritra sampanna* (endowed with pious conduct). (2) Some man is *chaaritra sampanna* and not *shrut sampanna* (3) Some man is both *shrut sampanna* and *chaaritra sampanna* (4) Some man is neither *shrut sampanna* nor *chaaritra sampanna.*

**शील-पद SHEEL-PAD (SEGMENT OF CHARACTER)**

**४१०. (२१) चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सीलसंपण्णे णाममेगे णो चरित्तसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे णाममेगे णो सीलसंपण्णे, एगे सीलसंपण्णेवि चरित्तसंपण्णेवि, एगे णो सीलसंपण्णे णो चरित्तसंपण्णे। एते एक्कवीसं भंगा भाणियव्वा।**

४१०. (२१) पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई शीलसम्पन्न होता है, किन्तु चारित्रसम्पन्न नहीं; (२) कोई चारित्रसम्पन्न होता है, किन्तु शीलसम्पन्न नही; (३) कोई शीलसम्पन्न भी और चारित्रसम्पन्न भी होता है; तथा (४) कोई न शीलसम्पन्न और न चारित्रसम्पन्न ही होता है।

**410.** (21) *Purush* (men) are of four kinds—(1) Some man is *sheel sampanna* (endowed with good character) and not *chaaritra sampanna* (endowed with pious conduct). (2) Some man is *chaaritra sampanna* and not *shrut sampanna*. (3) Some man is both *shrut sampanna* and *chaaritra sampanna*. (4) Some man is neither *shrut sampanna* nor *chaaritra sampanna*

### आचार्य-फल-पद ACHARYA-PHAL-PAD (SEGMENT OF ACHARYA AND FRUIT)

**४११. चत्तारि फला पण्णत्ता, तं जहा–आमलगमहुरे, मुद्दियामहुरे, खीरमहुरे, खंडमहुरे।**

**एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, तं जहा–आमलगमहुरफलसमाणे, जाव [ मुद्दियामहुरफलसमाणे, खीरमहुरफलसमाणे ] खंडमहुरफलसमाणे।**

४११. चार प्रकार के फल होते हैं–(१) आँवले के समान मधुर, (२) द्राक्षा के समान मधुर, (३) दूध के समान मधुर, तथा (४) खांड-शक्कर के समान मधुर।

आचार्य भी चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई आचार्य (वाणी और व्यवहार में) आँवले के फल के समान अल्प मधुर होते हैं, (२) कोई दाख के फल के समान अधिक मधुर, (३) कोई दूध (खीर) के समान अधिकतर मधुर होते है, और (४) कोई खांड (मिश्री) के समान बहुत अधिक मधुर होते हैं।

**411.** *Phal* (fruits) are of four kinds—(1) sweet like *amla* (hog-plum; Emblica officinalis), (2) sweet like *draksha* (grapes), (3) sweet like *dudha* (milk), and (4) sweet like *khaand* (sugar).

*Acharyas* (preceptors) are also of four kinds—(1) some *acharya* is slightly sweet (in speech and behaviour) like *amla* (hog-plum), (2) some is sweet like *draksha* (grapes), (3) some is very sweet like *dudha* (milk), and (4) some is very very sweet like *khaand* (sugar).

### वैयावृत्य-पद VAIYAVRITYA-PAD (SEGMENT OF SERVICE)

**४१२. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–आतवेयावच्चकरे णाममेगे णो परवेयावच्चकरे, परवेयावच्चकरे णाममेगे णो आतवेयावच्चकरे, एगे आतवेयावच्चकरेवि परवेयावच्चकरेवि, एगे णो आतवेयावच्चकरे णो परवेयावच्चकरे।**

४१२. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई अपनी वैयावृत्य करता है, किन्तु दूसरों की नहीं करता (–एकलविहारी); (२) कोई दूसरों की वैयावृत्य करता है, किन्तु अपनी नहीं करता (–अभिग्रहधारी); (३) कोई अपनी भी वैयावृत्य करता है और दूसरों की भी (–स्थविरकल्पी); तथा (४) कोई न अपनी और न दूसरों की ही वैयावृत्य करता है (–जिनकल्पी)।

**412.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man serves himself but not others (*ekal vihari* or ascetic living alone), (2) some man serves

others but not himself (*abhıgrahadharı* or ascetic with specific resolve), (3) some man serves hımself as well as others (*sthavır kalpi* or senior and non-itinerant ascetic) and (4) some man neither serves himself not others (*jinakalpi* or ascetic, who goes into complete ısolation).

**विवेचन**—स्वार्थी मनुष्य अपनी सेवा करता है, दूसरों की नहीं। नि:स्वार्थी मनुष्य दूसरों की सेवा करता है, अपनी नही। सुश्रावक या सुशिष्य अपनी भी सेवा करता है और दूसरों की भी। आलसी, मूर्ख और पादोपगमन सथारा वाला या जिनकल्पी मुनि न अपनी सेवा करता है और न दूसरो की सेवा करता है।

**Elaboration**—A selfish person serves hımself and none else A selfless person serves others not himself A good *shravak* (*Jaın* layman) and a good dıscıple serves hımself as well as others A lazy and foolish person or the ascetics who have retired ınto solitude, *Jınakalpı* or one observing ultimate vow, neither serves hımself nor others.

**४१३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—करेति णाममेगे वेयावच्चं णो पडिच्छइ, पडिच्छइ णाममेगे वेयावच्चं णो करेति, एगे करेतिवि वेयावच्चं पडिच्छइवि, एगे णो करेति वेयावच्चं णो पडिच्छइ।**

४१३. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई दूसरो की वैयावृत्य करता है, किन्तु दूसरो से अपनी वैयावृत्य नहीं कराता (समर्थ या निस्पृह पुरुष), (२) कोई दूसरो से अपनी वैयावृत्य कराता है, किन्तु दूसरो की नहीं करता (आचार्य या रुग्ण, वृद्ध), (३) कोई दूसरो की भी वैयावृत्य करता है और अपनी भी दूसरो से कराता है (स्थविरकल्पी), तथा (४) कोई न दूसरो की वैयावृत्य करता है और न दूसरो से अपनी कराता है (जिनकल्पी या स्वार्थी पुरुष)।

**413.** *Purush* (men) are of four kınds—(1) some man serves hımself but avoıds others servıng hım (a resourceful or desıreless person), (2) some man accepts servıces of others but does not serve others (an *acharya*, a sick or old person), (3) some man serves others and also accepts services of others (a *sthavır kalpı* or senıor and non-itınerant ascetıc), and (4) some man neither serves others nor accepts servıces of others (a *jınakalpı* or a selfish person)

### *अर्थ–मान–पद* ARTH-MAAN-PAD (SEGMENT OF MONEY AND PRIDE)

**४१४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—अट्ठकरे णाममेगे णो माणकरे, माणकरे णाममेगे णो अट्ठकरे, एगे अट्ठकरेवि माणकरेवि, एगे णो अट्ठकरे णो माणकरे।**

४१४. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष अर्थकर-(काम करने वाला या धनोपार्जन करने वाला) होता है, किन्तु उसका अभिमान नही करता (जैसे-राजा का मंत्री या घर का मुखिया);

(२) कोई अभिमान करता है, किन्तु अर्थकर नहीं होता (जैसे–दरिद्र, मूर्ख या आलसी अथवा निकम्मा विद्यावान पुरुष); (३) कोई अर्थकर भी होता है और अभिमान भी करता है (सामान्य गृहस्थ); और (४) कोई न अर्थकर होता है और न अभिमान ही करता है (साधु)।

**414.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man is *arthakar* (employed or a money earner) but is not proud of that (a king's minister or the head of a family), (2) some man is proud but is not *arthakar* (a poor, foolish or lazy person or an educated unemployed), (3) some man is *arthakar* as well as proud (an ordinary householder), and (4) some man is neither *arthakar* nor proud (an ascetic)

### *गण–अर्थकर–पद* GANA-ARTHAKAR-PAD (SEGMENT OF WORKER FOR RELIGIOUS ORGANIZATION)

**४१५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–गणट्ठकरे णाममेगे णो माणकरे, माणकरे णाममेगे णो गणट्ठकरे, एगे गणट्ठकरेवि माणकरेवि, एगे णो गणट्ठकरे णो माणकरे।**

४१५. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई गण (संघ) के लिए कार्य करता है, किन्तु उसका अभिमान नही करता, (२) कोई अभिमान तो करता है, किन्तु गण के लिए कार्य नही करता, (३) कोई गण के लिए कार्य भी करता है और अभिमान भी करता है, और (४) कोई न गण के लिए कार्य ही करता है और न अभिमान ही करता है।

**415.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man is *ganarthakar* (works for or serves the religious organization) but is not proud of that, (2) some man is proud but is not *ganarthakar*, (3) some man is *ganarthakar* as well as proud, and (4) some man is neither *ganarthakar* nor proud

**४१६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–गणसंगहकरे णाममेगे णो माणकरे, माणकरे णाममेगे णो गणसंगहकरे, एगे गणसंगहकरेवि माणकरेवि, एगे णो गणसंगहकरे णो माणकरे।**

४१६. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई गण के लिए (साधनों का) संग्रह करता है, किन्तु अभिमान नहीं करता; (२) कोई अभिमान तो करता है, किन्तु संग्रह नहीं करता, (३) कोई संग्रह भी करता है और अभिमान भी; तथा (४) कोई गण के लिए न संग्रह ही करता है और न अभिमान ही करता है।

**416.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man is *ganasangrahakar* (collects money and provisions for the religious organization) but is not proud of that, (2) some man is proud but is not *ganasangrahakar*, (3) some man is *ganasangrahakar* as well as proud, and (4) some man is neither *ganasangrahakar* nor proud.

**४१७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—गणसोभकरे णाममेगे णो माणकरे, माणकरे णाममेगे णो गणसोभकरे, एगे गणसोभकरेवि माणकरेवि, एगे णो गणसोभकरे णो माणकरे।**

४१७. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई अपने प्रभाव से गण की शोभा बढ़ाता है, किन्तु उसका अभिमान नहीं करता, (२) कोई अभिमान तो करता है, किन्तु गण की कोई शोभा नहीं बढाता; (३) कोई गण की शोभा भी बढ़ाता है और अभिमान भी करता है, तथा (४) कोई न गण की शोभा ही बढ़ाता है और न अभिमान ही करता है।

**417.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man is *ganashobhakar* (enhances glory of the religious organization with his influence) but is not proud of that, (2) some man is proud but is not *ganashobhakar*, (3) some man is *ganashobhakar* as well as proud, and (4) some man is neither *ganashobhakar* nor proud.

**४१८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—गणसोहिकरे णाममेगे णो माणकरे, माणकरे णाममेगे णो गणसोहिकरे, एगे गणसोहिकरेवि माणकरेवि, एगे णो गणसोहिकरे णो माणकरे।**

४१८. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई गण की शुद्धि करता है (बढती हुई दुष्प्रवृत्तियों पर रोक लगाता है), किन्तु अभिमान नहीं करता, (२) कोई अभिमान करता है, किन्तु गण की शुद्धि नहीं करता; (३) कोई गण की शुद्धि भी करता है और अभिमान भी करता है, और (४) कोई न गण की शुद्धि ही करता है और न अभिमान ही करता है।

**418.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man is *ganashuddhikar* (curbs unethical activities of the religious organization) but is not proud of that, (2) some man is proud but is not *ganashuddhikar*, (3) some man is *ganashuddhikar* as well as proud, and (4) some man is neither *ganashuddhikar* nor proud.

**४१९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रूवं णाममेगे जहति णो धम्मं, धम्मं णाममेगे जहति णो रूवं, एगे रूवपि जहति धम्मंपि, एगे णो रूवं जहति णो धम्मं।**

४१९. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष वेश का त्याग कर देता है, किन्तु धर्म का त्याग नहीं करता, (२) कोई धर्म का त्याग कर देता है, किन्तु वेश का त्याग नहीं करता, (३) कोई वेश का भी त्याग कर देता है और धर्म का भी त्याग कर देता है, तथा (४) कोई न वेश का ही त्याग करता है और न धर्म का ही त्याग करता है।

**419.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man abandons the ascetic garb but does not abandon his religion, (2) some man abandons his religion but does not abandon the ascetic garb, (3) some man abandons the ascetic garb as well as his religion, and (4) some man abandons neither the ascetic garb nor his religion.

**४२०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—धम्मं णाममेगे जहति णो गणसंठितिं, गणसंठितिं णाममेगे जहति णो धम्मं, एगे धम्मंवि जहति गणसंठितिंवि, एगे णो धम्मं जहति णो गणसंठितिं।**

४२०. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष धर्म (संयम धर्म) का त्याग कर देता है, किन्तु गण का निवास और मर्यादा नहीं छोड़ता, (२) कोई गण की मर्यादा छोड़ देता है, किन्तु धर्म का त्याग नहीं करता; (३) कोई धर्म और गण की मर्यादा, दोनों का त्याग कर देता है, और (४) कोई न धर्म को छोड़ता है और न गण की मर्यादा को।

**420.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man abandons the *dharma* (ascetic discipline) but does not abandon his organizational abode and codes, (2) some man abandons his organizational abode and codes but does not abandon the *dharma* (ascetic discipline), (3) some man abandons the *dharma* (ascetic discipline) as well as his organizational abode and codes, and (4) some man abandons neither the *dharma* (ascetic discipline) nor his organizational abode and codes.

**४२१. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—पियधम्मे णाममेगे णो दढधम्मे, दढधम्मे णाममेगे णो पियधम्मे, एगे पियधम्मेवि दढधम्मेवि, एगे णो पियधम्मे णो दढधम्मे।**

४२१. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) **प्रियधर्मा, न दृढधर्मा**–किसी को धर्म तो प्रिय होता है, किन्तु वह धर्म मे दृढ नहीं रहता (नियम आदि का पालन नही कर सकता), (२) कोई धर्म के पालन में दृढ होता है, किन्तु अन्तरग से उसे वह धर्म प्रिय नही होता (जो प्रतिज्ञा स्वीकार कर ली उसे नहीं छोडते, किन्तु धर्म के प्रति आस्था नहीं रहती), (३) किसी को धर्म प्रिय भी होता है और उसके पालन मे भी दृढ होता है, तथा (४) किसी को न धर्म प्रिय होता है और न उसके पालन मे ही दृढ होता है।

**421.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man is *priyadharma* (loves his religion) but not *dridhadharma* (not steadfast in observing codes), (2) some man is *dridhadharma* but not *priyadharma* (although he does not break the vows he has taken but he lacks faith), (3) some man is *priyadharma* as well as *dridhadharma* and (4) some man is neither *priyadharma* nor *dridhadharma*.

### आचार्य–पद ACHARYA-PAD (SEGMENT OF PRECEPTOR)

**४२२. चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, तं जहा—पव्वावणायरिए णाममेगे णो उवट्ठावणायरिए, उवट्ठावणायरिए णाममेगे णो पव्वावणायरिए, एगे पव्वावणायरिएवि उवट्ठावणायरिएवि, एगे णो पव्वावणायरिए णो उवट्ठावणायरिए धम्मायरिए।**

४२२. आचार्य चार प्रकार के होते हैं–(१) **प्रव्राजनाचार्य, न उपस्थापनाचार्य**–कोई आचार्य प्रव्रज्या (दीक्षा) देते हैं, किन्तु उपस्थापना (महाव्रतो की आरोपणा) नहीं कराते; (२) कोई आचार्य उपस्थापना

कराते हैं, किन्तु प्रव्रज्या नहीं देते, (३) कोई आचार्य दीक्षा देते हैं और उपस्थापना भी कराते हैं; और (४) कोई आचार्य उक्त दोनो ही कार्य नही करते, किन्तु धर्म के प्रतिबोधक धर्माचार्य होते हैं।

**422.** *Acharya* (preceptors) are of four kinds—(1) some *acharya* is *pravraajanacharya* (one who performs initiation) but not *upasthapanacharya* (one who conducts formal acceptance of great vows by an ascetic), (2) some *acharya* is *upasthapanacharya* but not *pravraajanacharya*, (3) some *acharya* is *pravraajanacharya* as well as *upasthapanacharya*, and (4) some *acharya* is neither *pravraajanacharya* nor *upasthapanacharya* but a *dharmacharya* or religious preceptor

**४२३. चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, तं जहा–उद्देसणायरिए णाममेगे णो वायणायरिए, वायणायरिए णाममेगे णो उद्देसणायरिए, एगे उद्देसणायरिएवि वायणायरिएवि, एगे णो उद्देसणायरिए णो वायणायरिए–धम्मायरिए।**

४२३. आचार्य चार प्रकार के होते है–(१) कोई आचार्य शिष्यो को अंगसूत्र पढने का आदेश देने वाले होते हैं, किन्तु स्वयवाचना देने वाले नही होते, (२) कोई वाचनाचार्य होते है, किन्तु उद्देशनाचार्य नहीं होते, (३) कोई उद्देशनाचार्य और वाचनाचार्य दोनो होते है, तथा (४) कोई न उद्देशनाचार्य और न वाचनाचार्य होते है, किन्तु धर्म का प्रतिबोध देने वाले होते है।

**423.** *Acharya* (preceptors) are of four kinds—(1) some *acharya* is *uddeshanacharya* (one who instructs disciples to study *Anga Sutras*) but not *vachanacharya* (one who recites *Anga Sutras* to disciples), (2) some *acharya* is *vachanacharya* but not *uddeshanacharya*, (3) some *acharya* is *uddeshanacharya* as well as *vachanacharya*, and (4) some *acharya* is neither *uddeshanacharya* nor *vachanacharya* but a *dharmacharya* or religious preceptor

**विवेचन–उद्देशनाचार्य**–जो अध्ययन के विषय मे शिष्यो का मार्गदर्शन करते हैं तथा अंगसूत्रों के अध्ययन के योग्य बनाते है। **वाचनाचार्य**–शास्त्र की वाचना देने वाले। **धर्माचार्य**–धर्म का उपदेश या धर्म की दीक्षा देने वाले, साधु या गृहस्थ–धर्माचार्य कोई भी हो सकते है।

**Elaboration**—*Uddeshanacharya*—one who instructs and guides disciples to study *Anga Sutras* making them capable of studying the same. *Vachanacharya*—one who recites *Anga Sutras* and other scriptures to disciples. *Dharmacharya*—one who preaches religion or initiates one into a religious group An ascetic and a householder both can be *dharmacharya*.

**४२४. चत्तारि अंतेवासी पण्णत्ता, तं जहा—पव्वावणंतेवासी णाममेगे णो उवट्ठावणंतेवासी, उवट्ठावणंतेवासी णाममेगे णो पव्वावणंतेवासी, एगे पव्वावणंतेवासीवि उवट्ठावणंतेवासीवि, एगे णो पव्वावणंतेवासी णो उवट्ठावणंतेवासी—धम्मंतेवासी।**

४२४. अन्तेवासी (गुरु के समीप रहने वाले शिष्य) चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई शिष्य प्रव्राजना अन्तेवासी होता है अर्थात् दीक्षा देने वाले आचार्य का दीक्षादान की दृष्टि से ही शिष्य होता है, किन्तु उपस्थापना की दृष्टि से अन्तेवासी नहीं होता, (२) कोई शिष्य उपस्थापना की अपेक्षा से अन्तेवासी होता है, किन्तु प्रव्राजना की अपेक्षा से अन्तेवासी नहीं होता; (३) कोई शिष्य प्रव्राजना-अन्तेवासी भी होता है और उपस्थापना-अन्तेवासी भी होता है (जिसने एक ही आचार्य से दीक्षा और उपस्थापना ग्रहण की हो); तथा (४) कोई शिष्य न प्रव्राजना की अपेक्षा अन्तेवासी होता है और न उपस्थापना की दृष्टि से ही अन्तेवासी होता है, किन्तु मात्र धर्मोपदेश की अपेक्षा धर्मान्तेवासी होता है।

**424.** *Antevasi* (a disciple who lives with his guru)—(1) some disciple is only with respect to *pravraajana* (initiation) and not with respect to *upasthapana* (formal acceptance of great vows), (2) some disciple is only with respect to *upasthapana* and not with respect to *pravraajana*, (3) some disciple is with respect to *pravraajana* and *upasthapana* both and (4) some disciple is neither with respect to *pravraajana* nor with respect to *upasthapana* but *dharmantevasi* (with respect to religious preaching)

**४२५. चत्तारि अंतेवासी पण्णत्ता, तं जहा—उद्देसणंतेवासी णाममेगे णो वायणंतेवासी, वायणंतेवासी णाममेगे णो उद्देसणंतेवासी, एगे उद्देसणंतेवासीवि वायणंतेवासीवि, एगे णो उद्देसणंतेवासी णो वायणंतेवासी—धम्मंतेवासी।**

४२५. (पुन ) अन्तेवासी चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई उद्देशना की अपेक्षा से अन्तेवासी होता है, किन्तु वाचना की अपेक्षा से नहीं, (२) कोई वाचना की अपेक्षा से अन्तेवासी होता है, किन्तु उद्देशना की अपेक्षा से नही, (३) कोई उद्देशना की अपेक्षा से भी अन्तेवासी होता है और वाचना की अपेक्षा से भी, (४) कोई न उद्देशना की अपेक्षा से ही अन्तेवासी होता है और न वाचना की अपेक्षा से ही है, मात्र धर्म प्रतिबोध पाने की अपेक्षा से अन्तेवासी होता है।

**425.** *Antevasi* (a disciple who lives with his guru)—(1) someone is disciple only with respect to *uddeshana* (guidance) and not with respect to *vaachana* (recitation), (2) someone is disciple only with respect to *vaachana* and not with respect to *uddeshana*, (3) someone is disciple with respect to *uddeshana* and *vaachana* both, and (4) someone is disciple neither with respect to *uddeshana* nor with respect to *vaachana* but only a *dharmantevasi* (disciple with respect to religious preaching).

विवेचन—विशेष शब्दों के अर्थ—प्रव्राजनाचार्य—दीक्षा देने वाले गुरु। उपस्थापनाचार्य—महाव्रतों की आरोपणा कराने वाले। उद्देशनाचार्य—अंग आदि आगमों का अध्ययन करने में मार्गदर्शन करने वाले। वाचनाचार्य— शिष्यों को शास्त्र की वाचना देने वाले। धर्माचार्य—धर्म का बोध देने वाले।

प्रव्रजन अन्तेवासी—जिस गुरु ने शिष्य को दीक्षा दी है, वह शिष्य उनका प्रव्रजन अन्तेवासी माना जाता है। उपस्थापनान्तेवासी—जिनके पास छेदोपस्थानीयचारित्र रूप महाव्रतों की आरोपणा ली हो, वह उनका उपस्थापनान्तेवासी होता है। धर्मान्तेवासी—जिनके पास धर्म का बोध प्राप्त किया हो, वह उनका धर्मान्तेवासी कहा जाता है। उद्देशनान्तेवासी—जिनके पास शास्त्र अध्ययन के लिए मार्गदर्शन प्राप्त किया है, वह उनका उद्देशनान्तेवासी होता है। वाचनान्तेवासी—जिनके पास शास्त्र की वाचना ली हो, वह उनका वाचनान्तेवासी कहलाता है।

इस प्रकार गुरु के तीन रूप होते है—दीक्षा गुरु, विद्या गुरु और धर्म गुरु।

शिष्य के भी तीन रूप होते है—दीक्षा शिष्य, विद्या शिष्य तथा धर्म शिष्य।

**Elaboration—TECHNICAL TERMS**

**Pravraajanacharya**—the preceptor who initiates into the order. **Upasthapanacharya**—the preceptor who formally supervises accepting of great vows **Uddeshanacharya**—the preceptor who guides the study of *Angas* and other ***Agams***. **Vachanacharya**—the preceptor who recites the scriptures to disciples. **Dharmacharya**—the preceptor who preaches religion in general.

**Pravrajan antevasi**—for the preceptor who initiates someone into the order, this disciple is *Pravrajan antevasi* **Upasthapan antevasi**—for the preceptor who formally supervises someone's accepting of great vows, this disciple is *Upasthapana antevasi*. **Dharma antevasi**—for the preceptor who preaches religion to someone, this disciple is *Dharma antevasi*. **Uddeshana antevasi**—for the preceptor who guides someone in the study of *Angas* and other *Agams*, this disciple is *Uddeshan antevasi*. **Vaachana antevasi**—for the preceptor who recites the scriptures to someone, this disciple is *Vaachana antevasi*.

## महत्कर्म—अल्पकर्म—निर्ग्रन्थ—पद MAHATKARMA-ALPAKARMA-NIRGRANTH-PAD
## (SEGMENT OF ASCETICS WITH LONG AND SHORT DURATION OF KARMIC BONDAGE)

४२६. चत्तारि णिग्गंथा पण्णत्ता, तं जहा—

(१) राइणिए समणे णिग्गंथे महाकम्मे महाकिरिए अणायावी असमिते धम्मस्स अणाराहए भवति।

(२) राइणिए समणे णिग्गंथे अप्पकम्मे अप्पकिरिए आयावी समिए धम्मस्स आराहए भवति।

(३) ओमराइणिए समणे णिग्गंथे महाकम्मे महाकिरिए अणायावी असमिए धम्मस्स अणाराहए भवति।

(४) ओमराइणिए समणे णिग्गंथे अप्पकम्मे अप्पकिरिए आयावी समिए धम्मस्स आराहए भवति।

**महाकर्म—अल्पकर्म—निर्ग्रन्थी—पद MAHATKARMA-ALPAKARMA-NIRGRANTH-PAD (SEGMENT OF ASCETICS WITH LONG AND SHORT DURATION OF KARMAS)**

४२७. चत्तारि णिग्गंथीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

(१) राइणिया समणी णिग्गंथी एवं चेव ४। [ महाकम्मा महाकिरिया अणायावी असमिता धम्मस्स अणाराधिया भवति ]।

(२) [ रातिणिया समणी णिग्गंथी अप्पकम्मा अप्पकिरिया आतावी समिता धम्मस्स आराहिया भवति ]।

(३) [ ओमरातिणिया समणी णिग्गंथी महाकम्मा महाकिरिया अणायावी असमिता धम्मस्स अणाराधिया भवति ]।

(४) [ ओमरातिणिया समणी णिग्गंथी अप्पकम्मा अप्पकिरिया आतावी समिता धम्मस्स आराहिया भवति ]।

४२६. निर्ग्रन्थ चार प्रकार के होते है—(१) कोई श्रमण निर्ग्रन्थ रात्निक (दीक्षापर्याय मे ज्येष्ठ) होकर भी महाकर्मा (दीर्घकाल तक भोगे जाने वाले कर्मों वाला), महाक्रिय (दीर्घकालीन कठोर क्रिया करने वाला), अनातापी (अतपस्वी) और असमित (समिति—रहित) होने के कारण धर्म का अनाराधक होता है।

(२) कोई रात्निक श्रमण निर्ग्रन्थ अल्पकर्मा, अल्पक्रिय (अल्पकालीनक्रिया वाला), आतापी (तपस्वी) और समित (समिति वाला) होने के कारण धर्म का आराधक होता है।

(३) कोई निर्ग्रन्थ श्रमण अवमरात्निक (अल्पकालीन दीक्षापर्याय वाला) होकर महाकर्मा, महाक्रिय, अनातापी और असमित होने के कारण धर्म का अनाराधक होता है।

(४) कोई अवमरात्निक श्रमण निर्ग्रन्थ अल्पकर्मा, अल्पक्रिय, आतापी और समित होने के कारण धर्म का आराधक होता है।

४२७. निर्ग्रन्थियाँ चार प्रकार की होती है, जैसे—सूत्र ४२६ में निर्ग्रन्थ के विषय में कहा है वैसे ही यहाँ निर्ग्रन्थ (साध्वी) का स्वरूप उसी प्रकार समझना चाहिए। निर्ग्रन्थ के स्थान पर निर्ग्रन्थी समझें। बाकी अर्थ सूत्र ४२६ के अनुसार है।

**426.** *Nirgranthas* (male ascetics) are of four kinds—(1) In spite of being a *ratnik* (senior in terms of period of initiation) some *Shraman Nirgranth* (Jain ascetic) is *dharma-anaradhak* (religious transgressor; one who does not properly follow the religious path) because of being *mahakarma* (having long lasting bondage of *karmas*), *mahakriya* (one who indulges in rigorous penance for a long period), *anataapi* (devoid of austerities) and *asamit* (devoid of *samitis* or self-regulation).

(2) Some *ratnik* (senior in terms of period of initiation) *Shraman Nirgranth* is *dharma-aradhak* (one who immaculately follows the religious path) because of being *alpakarma* (having short lived bondage of *karmas*), *alpakriya* (one who indulges in rigorous penance for a short period), *ataapi* (observer of austerities) and *samit* (observer of *samitis* or self-regulation).

(3) Some *avamaratnik* (with a short period of initiation) *Shraman Nirgranth* is *dharma-anaradhak* because of being *mahakarma*, *mahakriya*, *anataapi* and *asamit*.

(4) Some *avamaratnik Shraman Nirgranth* is *dharma-aradhak* because of being *alpakarma*, *alpakriya*, *ataapi* and *samit*

**427.** Nirgranthis are of four kinds—This relates to female ascetics. Substituting *nirgranthi* (female ascetic) for *nirgranth* (male ascetic), the text of aphorism 426 should be repeated verbatim.

**महाकर्म—अल्पकर्म—श्रमणोपासक—पद MAHATKARMA-ALPAKARMA-SHRAMANOPASAK-PAD (SEGMENT OF ASCETICS WITH LONG AND SHORT DURATION OF KARMAS)**

**४२८. चत्तारि समणोवासगा पण्णत्ता, तं जहा—**

**(१) राइणिए समणोवासए महाकम्मे तहेव ४। [ महाकिरिए अणायावी असमिते धम्मस्स अणराधए भवति ]।**

**(२) [ राइणिए समणोवासए अप्पकम्मे अप्पकिरिए आतावी समिए धम्मस्स आराहए भवति ]।**

**(३) [ ओमराइणिए समणोवासए महाकम्मे महाकिरिए अणातावी असमिते धम्मस्स अणाराहए भवति ]।**

(४) [ ओमराइणिए समणोवासए अप्पकम्मे अप्पकिरिए आतावी समिते धम्मस्स आराहए भवति ]।

## महाकर्म—अल्पकर्म—श्रमणोपासिका—पद MAHATKARMA-ALPAKARMA-SHRAMANOPASIKA-PAD (SEGMENT OF ASCETICS WITH LONG AND SHORT DURATION OF KARMAS)

**४२९. चत्तारि समणोवासियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–**

**(१) राइणिया समणोवासिता महाकम्मा तहेव चत्तारि गमा।**

४२८. श्रमणोपासक चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई रात्निक श्रमणोपासक महाकर्मा (भारी कर्मों वाला), महाक्रिय, अनातापी और असमित होने के कारण अर्थात् श्रावक जीवन में आने वाले कष्टों को सहने में असमर्थ एवं श्रावकाचार के प्रति उदासीन रहकर स्वधर्म में निष्ठावान नहीं होता। अतः धर्म का अनाराधक होता है।

(२) कोई रात्निक श्रमणोपासक अल्पकर्मा, अल्पक्रिय, आतापी और समित होने के कारण धर्म का आराधक होता है।

(३) कोई अवमरात्निक (अल्पकालिक श्रावकपर्याय वाला) श्रमणोपासक महाकर्मा, महाक्रिय, अनातापी और असमित होने के कारण धर्म का अनाराधक होता है।

(४) कोई अवमरात्निक श्रमणोपासक अल्पकर्मा, अल्पक्रिय, आतापी और समित होने के कारण धर्म का आराधक होता है।

४२९. श्रमणोपासिकाएँ चार प्रकार की होती है–(१) कोई रात्निक श्रमणोपासिका, महाकर्मा, महाक्रिय, अनातापिनी और असमित होने के कारण धर्म की अनाराधिका होती है। (सूत्र ४२८ की तरह चार भग समझने चाहिए। श्रमणोपासक के स्थान पर श्रमणोपासिका कहे।)

**428.** *Shramanopasaks* (male devotees of ascetics) are of four kinds—(1) In spite of being a *ratnik* (senior in terms of period of initiation) some *Shramanopasak* is *dharma-anaradhak* (religious transgressor; one who does not properly follow the religious path) because of being *mahakarma* (having long lasting bondage of *karmas*), *mahakriya* (one who indulges in rigorous penance for a long period), *anataapi* (devoid of austerities) and *asamit* (devoid of *samitis* or self-regulation). In other words, failing to endure the rigours of religious life he becomes apathetic to the right conduct, loses faith in his religion and becomes a transgressor.

(2) Some *ratnik Shramanopasak* is *dharma-aradhak* (one who immaculately follows the religious path) because of being *alpakarma* (having short lived bondage of *karmas*), *alpakriya* (one who indulges in

rigorous penance for a short period), *ataapi* (observer of austerities) and *samit* (observer of *samitis* or self-regulation).

(3) Some *avamaratnik* (with a short period of initiation) *Shramanopasak* is *dharma-anaradhak* because of being *mahakarma*, *mahakriya*, anataapi and *asamit*

(4) Some *avamaratnik Shramanopasak* is *dharma-aradhak* because of being *alpakarma*, *alpakriya*, ataapi and samit

**429.** *Shramanopasikas* (female devotees of ascetics) are of four kinds—(1) This relates to female devotees. Substituting *shramanopasika* (female devotee) for *shramanopasak* (male devotee), the text of aphorism 428 should be repeated verbatim

**विवेचन**—इन चार सूत्रो मे श्रमण–श्रमणी तथा श्रावक–श्राविका के व्रताराधना की दृष्टि से चार भेद किये है।

**प्रथम भंग है रात्निक**—अर्थात् जिन्हे दीक्षा ग्रहण किये बहुत लम्बा समय हो गया है। अथवा जिन श्रमणोपासको को भी श्रावक व्रत धारण किये दीर्घकाल व्यतीत हो गया है। फिर भी वह जन्म-जन्मान्तरों में बाँधे हुए भारी पापकर्मों के कारण, अपनी व्रताराधना मे जागरूक नही होते, न ही तप की सम्यक् आराधना करते है, वे धर्म के आराधक नही होते।

**द्वितीय भंग है अवमरात्निक**—जिनको व्रत ग्रहण किये तो कम समय ही हुआ है, किन्तु कर्मों की अल्पता के कारण वे अपने व्रतो की, तप की सम्यक् प्रकार से आराधना करते हुए धर्म के आराधक होते है।

बाकी भग इनके ही विकल्प है।

**Elaboration**—These four aphorisms give four categories each of Jain ascetics and laity

The first category is *ratnik* or those who have been initiated long back. In case of lay devotees it means those who accepted the vows meant for laity long back In spite of that they are not sincere in observing either the vows or austerities due to a strong bondage of *karmas* acquired during past births. Thus they are not properly following the religious path.

The second category is *avamaratnik* or those who have been initiated recently. In spite of that they follow the religious path immaculately by

sincerely observing vows and austerities due to weak bondage of *karmas* acquired during past births. The other alternatives mentioned are variations of these two.

**श्रमणोपासक प्रकार–पद SHRAMANOPASAK PRAKAR-PAD**

**(SEGMENT OF TYPES OF SHRAMANOPASAKS)**

**४३०. चत्तारि समणोवासगा पण्णत्ता, तं जहा–अम्मापिइसमाणे, भाइसमाणे, मित्तसमाणे, सवत्तिसमाणे।**

४३०. श्रमणोपासक चार प्रकार के होते है–(१) माता-पिता के समान, (२) भाई के समान, (३) मित्र के समान, (४) सपत्नी (सौत) के समान।

**430.** *Shramanopasaks* are of four kinds—(1) like parents, (2) like a brother, (3) like a friend, and (4) like a co-wife

**विवेचन**–श्रमण-निर्ग्रन्थो की उपासना-आराधना करने वाले गृहस्थ श्रमणोपासक के गुण और प्रकृति के अनुसार चार भेद इस प्रकार होते है–जिन श्रमणोपासको में बिना किसी भेदभाव के, परमार्थ बुद्धि से श्रमणो के प्रति अत्यन्त स्नेह, वात्सल्य और श्रद्धा का भाव रहता है उनकी तुलना माता-पिता से की गई है। वे तात्त्विक-विचारणा मे और जीवन-निर्वाह मे, दोनो ही अवसरो पर प्रगाढ वात्सल्य और भक्तिभाव का परिचय देते है।

जिन श्रमणोपासको मे तत्त्व विचार के समय श्रमणो के प्रति वात्सल्य और प्रसग आने पर उग्रभाव दोनो ही समय आने पर होते है, उनकी तुलना भाई से की गई है।

जिन श्रमणोपासको मे श्रमणो के प्रति कारणवश प्रीति और कारण विशेष से अप्रीति दोनो पाई जाती है, उनकी तुलना मित्र से की गई है।

जो केवल नाम से श्रमणोपासक कहलाते है, किन्तु जिनमे श्रमणो के प्रति वात्सल्य या भक्तिभाव नहीं होता, प्रत्युत जो ईर्ष्या-द्वेषवश छिद्रान्वेषण ही करते रहते है, उनकी तुलना सपत्नी (सौत) से की गई है।

**Elaboration**—There are four qualitative categories of *shramanopasaks* or the householder devotees of *Shraman nirgranths* (Jain ascetics). The *shramanopasaks* having impartial and unselfish fondness, affection and respect for ascetics are compared with parents. They display deep fondness and devotion both in religious contemplation and worldly activities.

When in religious contemplation, some *shramanopasaks* have feelings of love for ascetics but during mundane activities they are bitter towards ascetics. The *shramanopasaks* having this kind of mixed feelings for ascetics have been compared with a brother.

The *shramanopasaks* having fondness for ascetics for some reason on some occasion and aversion for some reason on another occasion have been compared with a friend.

The *shramanopasaks* for namesake who have neither a liking nor devotion for ascetics and who indulge in fault-finding with jealousy and aversion have been compared with a co-wife.

**४३१. चत्तारि समणोवासगा पण्णत्ता, तं जहा—अद्दागसमाणे पडागसमाणे, खाणुसमाणे, खरकंटयसमाणे।**

४३१. श्रमणोपासक (अन्य प्रकार से) चार प्रकार के होते हैं–(१) आदर्श (दर्पण) समान, (२) पताका समान, (३) स्थाणु समान, (४) खरकण्टक समान।

**431.** Also, *shramanopasaks* are of four kinds—(1) like aadarsh (mirror), (2) like pataka (flag), (3) like sthanu (tree-stump), and (4) like khar-kantak (thorn).

विवेचन—इस सूत्र मे स्वभाव के आधार पर उपमा देकर श्रावको के चार भेद बताये हैं–

जो श्रमणोपासक आदर्श (दर्पण) के समान निर्मल चित्त होता है, वह साधु जनो के द्वारा प्रतिपादित शास्त्र ज्ञान को यथार्थ रूप मे ग्रहण करता है।

जो श्रमणोपासक पताका (ध्वजा) के समान अस्थिर चित्त व चंचल विचार वाला होता है, वह जैसी देशना या प्रवचन सुनता है, उसी से प्रेरित होकर उधर ही झुक जाता है। किसी एक निश्चित तत्त्व पर स्थिर नही रह पाता।

जो श्रमणोपासक स्थाणु (सूखे वृक्ष का ठूँठ अथवा खूँटा) के समान उद्दंड स्वभाव का होता है तथा जो समझाये जाने पर भी अपने कदाग्रह को नहीं छोडता है अथवा स्थाणु खूँटे के समान जो किसी एक पक्ष से बँधा रहता है।

जो श्रमणोपासक महाकदाग्रही होता है उसको समझाने के लिए यदि कोई सन्त पुरुष प्रयत्न करता है तो वह तीक्ष्ण दुर्वचन रूप कण्टकों से उसे भी बींध डालता है, ऐसे पुरुष को खरकण्टक–समान कहा जाता है।

इस प्रकार चित्त की निर्मलता, अस्थिरता, जडता और कलुषता की अपेक्षा से चार भेद होते हैं।

**Elaboration**—This aphorism gives four categories of *shravaks* (Jain laymen) based on their nature using suitable metaphors.

A *shramanopasak* having mirror-like clear mind understands and accepts the true meaning of the scriptural knowledge preached by ascetics.

A **shramanopasak** having unstable and wavering mind like a flag flows with varying views in discourses. He is incapable of being firm on a real fundamental

A *shramanopasak* who is arrogant and rigid like a dry stump of a tree never abandons his dogma in spite of all efforts of explaining him the truth. Like a peg he remains stuck to just one facet.

A *shramanopasak* who is extremely arrogant and dogmatic is like a sharp thorn If some saintly person tries to show him the right path he retaliates with thorn-like stinging words.

Thus there are four categories of *shramanopasak* based on purity, fickleness, rigidity and perversion of mind.

**४३२. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स समणोवासगाणं सोधम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता।**

४३२. सौधर्म कल्प मे अरुणाभ विमान मे उत्पन्न हुए श्रमण भगवान महावीर के श्रमणोपासकों की स्थिति चार पल्योपम की कही गई है।

**432.** The life span of the *shramanopasak* followers of Shraman Bhagavan Mahavir born in the *Arunabh vimaan* (celestial vehicle) in *Saudharma Kalp* is four *Palyopam*.

**देवागमन–बाधक–साधक कारण–पद DEVAGAMAN-BAADHAK-SAADHAK KARAN-PAD**

**(SEGMENT OF REASONS FOR COMING AND NOT COMING OF GODS)**

**४३३. चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए, तं जहा–**

**(१) अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववण्णे, से णं माणुस्सए कामभोगे णो आढाइ, णो परियाणाति, णो अट्ठं बंधइ, णो णियाणं पगरेति, णो ठितीपगप्पं पगरेति।**

**(२) अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववण्णे, तस्स णं माणुस्सए पेमे वोच्छिण्णे, दिव्वे संकंते भवति।**

**(३) अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववण्णे, तस्स णं एवं भवति–इण्हिं गच्छं मुहुत्तेणं गच्छं, तेणं कालेणमप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति।**

**(४) अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववण्णे, तस्स णं माणुस्सए गंधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवति, उड्ढंपि य णं माणुस्सए गंधे जाव चत्तारि पंच जोयणसताइं हव्वमागच्छति।**

**इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए।**

४३३. देवलोक मे तत्काल उत्पन्न हुआ देव शीघ्र ही मनुष्यलोक मे आने की इच्छा करता है, किन्तु शीघ्र आने मे समर्थ नही होता। इसके चार कारण है–

(१) देवलोक में तत्काल उत्पन्न हुआ देव दिव्य काम–भोगों में मूर्च्छित (आकण्ठ डूबा हुआ), **गृद्ध** (भोग की आकाक्षा करने वाला), **ग्रथित** (विषयो मे आसक्त) हुआ और **अध्युपपन्न** (उनमे अत्यन्त अनुरक्त व्यामूढ) होकर मनुष्य सम्बन्धी काम–भोगो का आदर नहीं करता है, उन्हे अच्छा नही जानता है, उनसे लगाव तथा सम्बन्ध नही रखता है, उन्हें पाने का **निदान** (सकल्प) नही करता है और न **स्थितिप्रकल्प** (उनके बीच मे रहने की इच्छा) करता है।

(२) देवलोक मे तत्काल उत्पन्न हुए देव का मनुष्य–सम्बन्धी प्रेम सम्बन्ध टूट जाता है और उसके भीतर **दिव्य प्रेम**–देवलोक सम्बन्धी प्रेम सचारित हो जाता है।

(३) देवलोक मे तत्काल उत्पन्न हुआ देव ऐसा विचार करने लगता है–"अभी जाता हूँ, थोड़ी देर में जाता हूँ। मुहूर्त्त भर मे जाता हूँ।" किन्तु देवो का मुहूर्त्त भर भी इतना लम्बा होता है कि इतने काल में अल्प आयुष्य के धारक मनुष्य काल धर्म को प्राप्त हो जाते हैं।

(४) देवलोक में तत्काल उत्पन्न हुआ देव, यहाँ आना चाहता है, किन्तु उसे मनुष्यलोक की गन्ध **प्रतिकूल**–(दुर्गन्ध रूप) तथा **प्रतिलोम** (इन्द्रिय और मन को अप्रिय) लगने लगती है, क्योंकि मनुष्यलोक की दुर्गन्ध चार–पाँच सौ योजन ऊपर तक फैलती रहती है। वह उसे सहन नहीं कर पाता, अत. चाह कर भी नीचे नही आता।

इन चार कारणों से तत्काल उत्पन्न हुआ देव शीघ्र ही मनुष्यलोक मे आने की इच्छा करता हुआ भी आने में समर्थ नही होता।

**433.** A newly born god in the divine realm soon wants to come to the land of humans but he is not able to do that for four reasons—

(1) A newly born god in the divine realm gets fond of (*murchhit*), infatuated with (*griddha*), captivated by (*grathit*) and obsessed with (*adhyupapanna*) divine pleasures and does not have respect, liking, concern, and desire for human pleasures Neither does he have *sthiti-prakalp* or wish to live among them (humans)

(2) The love for humans of a newly born god shatters and he is infused with love for divine pleasures.

(3) A newly born god in the divine realm thinks—"I will just go. I will go soon. I will go in a moment." But the duration of this moment of gods is so long that during this period the short lived man (for whom he desired to visit) dies.

(4) A newly born god in the divine realm soon wants to come to the land of humans but the smell of the world of humans, which spreads four to five hundred *Yojans* above the land, is obnoxious (*pratikool*) and disgusting (*pratilom*) to him Although he wants to come down he cannot do so because he is unable to tolerate it

For these four reasons, a newly born god in the divine realm soon wants to come to the land of humans but he is unable to do so.

४३४. चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, संचाएति हव्वमागच्छित्तए, तं जहा—

(१) अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते जाव अणज्झोववण्णे, तस्स णं एवं भवति—अत्थि खलु मम माणुस्सए भवे आयरिएति वा उवज्झाएति वा पवत्तीति वा थेरेति वा गणीति वा गणधरेति वा गणावच्छेदेति वा, जेसिं पभावेणं मए इमा एतारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुत्ती [ दिव्वे देवाणुभावे ? ] लद्धा पत्ता अभिसमण्णागता तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि जाव पज्जुवासामि।

(२) अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु जाव [ दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते अगिद्धे अगढिते ] अणज्झोववण्णे, तस्स णं एवं भवति—एस णं माणुस्सए भवे णाणीति वा तवस्सीति वा अइदुक्कर-दुक्करकारगे, तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि जाव [ णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं ] पज्जुवासामि।

**(३) अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु जाव [ दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते अगिद्धे अगढिते ] अणज्झोववण्णे, तस्स णमेवं भवति—अत्थि णं मम माणुस्सए भवे माताति वा जाव [ पियाति वा भायाति वा भगिणीति वा भज्जाति वा पुत्ताति वा धूयाति वा ] सुण्हाति वा, तं गच्छामि णं तेसिमंतियं पाउब्भवामि, पासंतु ता मे इममेतारूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं [ दिव्वं देवाणुभावं ? ] लद्धं पत्तं अभिसमण्णागतं।**

**(४) अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु जाव [ दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिते अगिद्धे अगढिते ] अणज्झोववण्णे, तस्स णमेवं भवति—अत्थि णं मम माणुस्सए भवे मित्तेति वा सहीति वा सुहीति वा सहाएति वा संगइएति वा, तेसिं च णं अम्हे अण्णमण्णस्स संगारे पडिसुते भवति—जो मे पुव्विं चयति से संबोहेतव्वे।**

**इच्चेतेहिं जाव [ चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए ] संचाएति हव्वमागच्छित्तए।**

४३४. देवलोक में तत्काल उत्पन्न हुआ देव चार कारणो से शीघ्र मनुष्यलोक मे आने की इच्छा करता है और आ भी सकता है—

(१) देवलोक मे तत्काल उत्पन्न हुआ देव, जो देव सम्बन्धी दिव्य काम-भोगों मे मूर्च्छित, गृद्ध, ग्रथित और आसक्त नहीं होता, उसका ऐसा विचार होता है-मनुष्यलोक मे मेरे मनुष्यभव के उपकारी आचार्य हैं, उपाध्याय है या प्रवर्तक है या स्थविर है या गणी हैं या गणधर हैं या गणावच्छेदक हैं, जिनके प्रभाव से मुझे यहाँ यह इस प्रकार की दिव्य देवऋद्धि दिव्य देवद्युति और दिव्य देवानुभाव प्राप्त हुआ है और भोगने के योग्य स्थिति में पहुँचा हूँ। अत मै उन भगवन्तो की वन्दना करने, नमस्कार करने, उनका सत्कार करने, सन्मान करने और कल्याणरूप, मंगलमय देव चैत्यस्वरूप की पर्युपासना करने जाऊँ।

(२) देवलोक में तत्काल उत्पन्न हुआ देव, जो उन काम-भोगो में आसक्त नहीं होता, वह ऐसा विचार करता है-इस मनुष्यभव मे मुझ पर उपकार करने वाले ज्ञानी है, तपस्वी हैं, अतिदुष्कर घोर तपस्या करने वाले तपस्वी है, अतः मै जाऊँ-उन भगवन्तो की वन्दना करूँ, [नमस्कार करूँ, उनका सत्कार करूँ, सन्मान करूँ और कल्याणरूप, मंगलमय देव व चैत्यस्वरूप की] पर्युपासना करूँ।

(३) देवलोक मे तत्काल उत्पन्न हुआ देव दिव्य काम-भोगो मे मूर्च्छित नहीं होकर ऐसा विचार करता है-मेरे मनुष्य भव के माता हैं, पिता है या भाई है, बहिन हैं, स्त्री है, पुत्र हैं, पुत्र-वधू हैं, अतः मैं वहाँ जाऊँ, उनके सम्मुख प्रकट होकर मेरी इस प्रकार की दिव्य देवर्धि, दिव्य देवद्युति और दिव्य देव-प्रभाव को उन्हे बताऊँ।

(४) देवलोक में तत्काल उत्पन्न हुआ देव, उन देव सम्बन्धी भोगों से अलिप्त रहकर ऐसा विचार करता है—मनुष्यलोक में मेरे मनुष्य भव के मित्र हैं, सखा (बाल्यकाल के साथी) हैं, हितैषी हैं या सहायक हैं या परिचित हैं। उनका हमारे साथ परस्पर वायदा (वचनबद्धता) है कि जो पहले मरण प्राप्त होगा वह दूसरे को बोध देने आयेगा।

इन चार कारणों से देवलोक में तत्काल उत्पन्न हुआ देव शीघ्र मनुष्यलोक में आने की इच्छा करता है और शीघ्र आने के लिए समर्थ होता है।

**434.** A newly born god in the divine realm soon wants to come to the land of humans and he can, indeed, come for four reasons—

(1) A newly born god in the divine realm not fond of, infatuated with, captivated by and obsessed with divine pleasures thinks—In the land of humans live my *acharya*, *upadhyaya*, *pravartak*, *sthavir*, *gani*, *ganadhar* and *ganavachhedak* of past human birth under whose influence I attained, acquired, possessed (for enjoyment) such divine opulence, radiance and divine powers. Therefore I should go pay homage and obeisance to them, offer them honour and respect, and ensure their beatitude. Doing that I should worship the auspicious *Bhagavants* (*Tirthankars*) in the form of images and temples.

(2) A newly born god in the divine realm not obsessed with divine pleasures thinks—In the land of humans live many *jnanis* (sages), *tapasvis* (ascetics observing austerities) and those observing extremely rigorous austerities Therefore I should go pay homage and obeisance to them, ... and so on up to.. worship the auspicious *Bhagavants* (*Tirthankars*).

(3) A newly born god in the divine realm not obsessed with divine pleasures thinks—In the land of humans live my mother (father, brothers, sisters, wife, son, daughter) and daughter-in-law of my past human birth. Therefore I should go there and appear before them to enable them to see this divine opulence, radiance and divine power I have attained.

(4) A newly born god in the divine realm not obsessed with divine pleasures thinks—In the land of humans live my friends, childhood friends, well-wishers, associates and acquaintances. We did a mutual promise that whoever dies first will come back to enlighten the others.

For these four reasons, a newly born god in the divine realm soon wants to come to the land of humans and is, indeed, able to come.

**अन्धकार–उद्योतादि के चार कारण–पद ANDHAKAR-UDYOT AADI-PAD (SEGMENT OF DARKNESS, LIGHT ETC.).**

**४३५. चउहिं ठाणेहिं लोगंधगारे सिया, तं जहा–अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं, अरहंतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे, पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे, जायतेजे वोच्छिज्जमाणे।**

४३५. चार कारणो से मनुष्यलोक मे अन्धकार होता है।

(१) अर्हन्तो –तीर्थंकरो के विच्छेद–शरीर छोडकर मोक्ष मे चले जाने पर, (२) तीर्थंकरों द्वारा प्ररूपित धर्म के विच्छेद–लोप या लोको मे धर्म के प्रति उदासीनता होने पर, (३) पूर्व (चौदह पूर्व शास्त्र) श्रुत के विच्छेद–उनका अध्ययन–अध्यापन बन्द होने अथवा पूर्वधरों का देवलोक होने पर, (४) जाततेजस् के विच्छेद–दुषम आरे के अन्तिम दिन भरत और ऐरवत क्षेत्र में बादर अग्नि का लोप हो जाने पर।

**435.** There are four reasons for spread of darkness in *manushyalok* (human realm or the land inhabited by humans)—(1) on *vichchhed* (extinction or *nirvana*) of *Arihants* (*Tirthankars*), (2) on *vichchhed* (extinction) of or apathy for the religion propagated by *Arhat*, (3) on *vichchhed* (extinction or termination of study and teaching) of *Purvagat Shrut* (the subtle canon) or death of scholars of these, and (4) on *vichchhed* (extinction or disappearance) of *jaat-tejas* (the gross fire that disappears from Bharat and Airavat areas on the last day of the *Dukham* epoch)

**४३६. चउहिं ठाणेहिं लोउज्जोते सिया, तं जहा–अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिनिव्वाणमहिमासु।**

४३६. चार कारणो से मनुष्यलोक मे उद्योत (प्रकाश) होता है–(१) अर्हन्तों–तीर्थंकरों के उत्पन्न होने पर, (२) अर्हन्तों के प्रव्रजित (दीक्षित) होने के अवसर पर, (३) अर्हन्तों को केवलज्ञान उत्पन्न होने की महिमा के अवसर पर, (४) अर्हन्तो के निर्वाण कल्याण (मोक्ष गमन) की महिमा के अवसर पर।

**436.** There are four reasons for spread of light in the land inhabited by humans—(1) at the time of birth of *Arihants*, (2) at the time of initiation of *Arihants*, (3) at the time of celebrating the attainment of *Keval jnana* (omniscience) by *Arihants*, and (4) at the time of celebration of the *Nirvana Kalyanak* (the auspicious occasion of *nirvana*) of *Arihants*

**४३७. एवं देवंधगारे, देवुज्जोते, देवसण्णिवाते, देवुक्कलियाए, देवकहकहए, [ चउहिं ठाणेहिं देवंधगारे सिया, तं जहा—अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं, अरहंतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे, पुव्वगते वोच्छिज्जमाणे, जायतेजे वोच्छिज्जमाणे ]।**

४३७. चार कारणों से देवलोक मे अन्धकार होता है–(सूत्र ४३५ के अनुसार) (१) अर्हन्तो के व्युच्छेद हो जाने पर, (२) अर्हत् प्ररूपित धर्म के व्युच्छेद हो जाने पर, (३) पूर्वगत श्रुत के व्युच्छेद हो जाने पर, (४) अग्नि के व्युच्छेद हो जाने पर।

**437.** There are four reasons for spread of darkness in *dev-lok* (divine realm or the heavens) (as mentioned in aphorism 435)—(1) on *nirvana* of *Arihants*, (2) on extinction of the religion propagated by *Arhat*, (3) on extinction of the subtle canon, and (4) on extinction of gross fire.

**४३८. चउहिं ठाणेहिं देवुज्जोते सिया, [ तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु। ]**

**४३९. चउहिं ठाणेहिं देवसण्णिवाते सिया, [ तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु। ]**

**४४०. चउहिं ठाणेहिं देवुक्कलिया सिया, [ तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु। ]**

**४४१. चउहिं ठाणेहिं देवकहकहए सिया, [ तं जहा—अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु। ]**

४३८. चार कारणो से देवलोक मे उद्योत (प्रकाश) होता है–(१) अर्हन्तो के उत्पन्न होने पर, (२) अर्हन्तो के प्रव्रजित होने पर, (३) अर्हन्तो के केवलज्ञान उत्पन्न होने की महिमा पर, (४) अर्हन्तो के परिनिर्वाण कल्याण की महिमा पर।

४३९. (उक्त) चार कारणो से देव–सन्निपात होता है।

४४०. उक्त चार कारणो से देवोत्कलिका होता है।

४४१. उक्त चार कारणों से देव–कहकहा होते है।

**438.** There are four reasons for spread of light in *dev-lok* (divine realm)—(1) at the time of birth of *Arihants*, (2) at the time of initiation of *Arihants*, (3) at the time of celebrating the attainment of omniscience by *Arihants*, and (4) at the time of celebration of the *Nirvana Kalyanak* of *Arihants*.

**439.** For the aforesaid four reasons there occurs *dev-sannipat* (descending of gods on the land of humans or earth).

**440.** For the aforesaid four reasons there occurs *devotkalika* (great congregation of *vimaan* dwelling gods).

**441.** For the aforesaid four reasons there occurs *dev-kahakaha* (divine laughter as expression of joy).

**विवेचन**—सूत्र ४३७ में 'देव अंधकार' का कथन है। सामान्य रूप में कहा जाता है कि देवलोक में कभी अंधकार नहीं होता। किन्तु निम्न चार कारण उपस्थित होने पर सम्पूर्ण लोक में क्षण भर के लिए अंधकार छा जाता है, ऐसा वृत्तिकार का मत है। सूत्र ४३८ से ४४२ तक देवोद्योत आदि चार शब्द आये हैं। इनका भावार्थ इस प्रकार है–

**देव-उद्योत**—(प्रकाश) दो प्रकार का होता है–द्रव्य-प्रकाश चन्द्र, सूर्य, दीपक आदि का तथा भाव-प्रकाश, ज्ञान का व सत्य धर्म का। यहाँ पर भाव-प्रकाश की दृष्टि से कथन है। **देव-सन्निपात**—देवों का सम्मिलित होकर मनुष्यलोक मे आगमन। **देवोत्कलिका**—देवों की लहरी या जमघट। जैसे एक के पीछे दूसरी तरग उठती है उसी प्रकार देवगण पंक्तिबद्ध होकर जब पृथ्वी पर आते हैं, उसे देवोत्कलिका कहा जाता है। **देव-कहकहा**—उक्त चारों अवसरो पर देवगण हर्ष व प्रमोद के कारण कल-कल हर्ष-ध्वनि करते है, उसे देव-कहकहा कहते है। (वृत्ति मुनि जम्बू विजय जी, भाग २, पृष्ठ ४१८)

**Elaboration**—There is a mention of darkness in the divine realm in aphorism 437. It is said that generally the divine realm never gets dark But according to the commentator (*Vritti*), on the four aforesaid occasions darkness envelopes the whole universe just for a moment. The four technical terms mentioned in aphorisms 438 to 442 are explained as follows—

**Dev-udyot (divine light)**—It is of two kinds—*dravya-prakash* (physical light) and *bhaava-prakash* (spiritual light) The light of the sun, the moon, lamp etc is physical light and the light of knowledge and true religion is spiritual light Here the statements refer to spiritual light *Dev-sannipat*—descending of gods in congregation on the land of humans. *Devotkalika*—waves of gods or a congregation of gods. When the gods come on the earth in files and columns like waves it is called *devotkalika*. *Dev-kahakaha*—on the said four occasions gods emit sounds of laughter to express their delight and joy. This is called *dev-kahakaha*. (*Vritti* by Muni Jambu Vijaya ji, part 2, p. 418).

**४४२. चउहिं ठाणेहिं देविंदा माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति, एवं जहा तिठाणे जाव लोगंतिया देवा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छेज्जा। तं जहा–अरहंतेहि जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु।**

**४४३. एवं सामाणिया, तायत्तीसगा, लोगपाला देवा, अग्गमहिसीओ देवीओ, परिसोववण्णगा देवा, अणियाहिवई देवा, आरक्खा देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छति, तं जहा– अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहि पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु।**

**४४४. चउहिं ठाणेहिं देवा अब्भुट्ठिज्जा, तं जहा–अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु।**

**४४५. चउहिं ठाणेहिं देवाणं आसणाइं चलेज्जा, तं जहा–अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु।**

**४४६. चउहिं ठाणेहिं देवा सीहणायं करेज्जा, तं जहा–अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु।**

**४४७. चउहिं ठाणेहिं देवा चेलुक्खेवं करेज्जा, तं जहा–अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु।**

**४४८. चउहिं ठाणेहिं देवाणं चेइयरुक्खा चलेज्जा, तं जहा–अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु।**

**४४९. चउहिं ठाणेहिं लोगंतिया देवा माणुसं लोग हव्वमागच्छेज्जा, तं जहा–अरहंतेहिं जायमाणेहिं, अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु।**

४४२. जिस प्रकार तीसरे स्थान पर देवेन्द्र (सौधर्मेन्द्र–शक्रेन्द्र) के मनुष्यलोक मे आने के तीन कारण कहे है, वैसे देवेन्द्रो के मनुष्यलोक में आने के यहाँ चार कारण इस प्रकार बताये है–(१) अर्हन्तो के उत्पन्न होने पर, (२) अर्हन्तों के प्रव्रजित होने पर, (३) अर्हन्तो के केवलज्ञान उत्पन्न होने की महिमा पर, (४) अर्हन्तों के परिनिर्वाणकल्याण की महिमा पर।

४४३. इसी प्रकार सामानिक, त्रायस्त्रिंशक, लोकपाल देव, उनकी अग्रमहिषियाँ, पारिषद्यदेव, अनीकाधिपति (सेनापति), देव और आत्मरक्षक देव, उक्त चार कारणो से तत्काल मनुष्यलोक मे आते हैं।

४४४. उक्त चार कारण उपस्थित होने पर देव अपने सिहासन से उठते है।

४४५. उक्त चार कारण उपस्थित होने पर देवों के आसन चलायमान (कम्पित) होते है।

४४६. उक्त चार कारणों से देव सिंहनाद (सिह गर्जना के तुल्य ध्वनि) करते हैं।

४४७. उक्त चार कारणों से देव चेलोत्क्षेप (दिव्य वस्त्रों की वृष्टि) करते हैं।

४४८. उक्त चार कारणों से देवों के चैत्यवृक्ष (देवताओ के पास का वृक्ष, जिस पर देवताओं का चिन्ह अंकित रहता है) चलायमान होते है।

४४९. उक्त चार कारणो से लोकान्तिक देव (लोक के अन्त में रहने वाले नव प्रकार के लोकान्तिक देव) मनुष्यलोक में शीघ्र आते हैं।

**442.** As three reasons have been mentioned in the Third Sthaan for *devendras* (overlords of gods) to rush to the land of humans, here four reasons have been mentioned as follows—(1) at the time of birth of *Arihants*, (2) at the time of initiation of *Arihants*, (3) at the time of celebrating the attainment of omniscience by *Arihants*, and (4) at the time of celebration of the *Nirvana Kalyanak* of *Arihants*.

**443.** In the same way for four aforesaid reasons various gods rush to earth These include—*samanik* gods, *tryastrinshik* gods and *lok-pal* gods, *agramahishi* goddesses, *parishadya* gods, *aneekadhipati* gods and *atmarakshak* gods

**444.** For the aforesaid four reasons gods at once getting up from their thrones.

**445** For the aforesaid four reasons the throne gods at once starts vibrating (*chalaayamaan*)

**446.** For the aforesaid four reasons gods at once start roaring like a lion (*simhanaad*)

**447.** For the aforesaid four reasons gods at once start tossing or showering dresses (*chelotkshep*)

**448.** For the aforesaid four reasons the divine *chaitya vrikshas* (trees located at the gates of *Sudharma sabha* or divine assembly) start swinging

**449.** For the aforesaid four reasons *Lokantik* gods (gods dwelling at the edge of the universe in the fifth dev-lok) at once come to the earth.

---

१ सूत्र ४४२ से ४४९ तक का पाठ आचार्य श्री आत्माराम जी म द्वारा सम्पादित प्रति तथा अभयदेव सूरि कृत टीका की मूल प्रति मे नही है। ब्यावर तथा लाडनूँ की प्रतियों में है। —सम्पादक

**Note :** The text of aphorisms 442-449 is available only in the Beawar and Ladnu editions and not in the original Abhayadev Suri Tika as well as the edition by Acharya Shri Atmamarm ji —**Editor**

## दुःखशय्या–पद DUHKHASHAYYA-PAD (SEGMENT OF BED OF MISERY)

४५०. चत्तारि दुहसेज्जाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–

(१) तत्थ खलु इमा पढमा दुहसेज्जा–से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए णिग्गंथे पावयणे संकिते कंखिते बितिगिच्छते भेयसमावण्णे कलुससमावण्णे णिग्गंथं पावयणं णो सद्दहति णो पत्तियति णो रोएइ, णिग्गंथं पावयणं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे मणं उच्चावयं णियच्छति, विणिघातमावज्जति–पढमा दुहसेज्जा।

(२) अहवा दोच्चा दुहसेज्जा–से णं मुंडे भवित्ता, अगाराओ जाव [ अणगारियं ] पव्वइए सएणं लाभेणं णो तुस्सति, परस्स लाभमासाएति पीहेति पत्थेति अभिलसति, परस्स लाभमासाएमाणे जाव [ पीहेमाणे पत्थेमाणे ] अभिलसमाणे मणं उच्चावयं णियच्छइ, विणिघातमावज्जति–दोच्चा दुहसेज्जा।

(३) अहावरा तच्चा दुहसेज्जा–से णं मुंडे भवित्ता जाव [ अगाराओ अणगारियं ] पव्वइए दिव्वे माणुस्सए कामभोगे आसाइए जाव [ पीहेति पत्थेति ] अभिलसति, दिव्वे माणुस्सए कामभोगे आसाएमाणे जाव [ पीहेमाणे पत्थेमाणे ] अभिलसमाणे मणं उच्चावयं णियच्छति, विणिघातमावज्जति–तच्चा दुहसेज्जा।

(४) अहावरा चउत्था दुहसेज्जा–से णं मुंडे जाव [ भवित्ता अगाराओ अणगारियं ] पव्वइए, तस्स णं एवं भवति–जया णं अहमगारवासमावसामि तदा णमहं संवाहण–परिमद्दण–गातब्भंग–गातुच्छोलणाइं लभामि, जप्पभिइं च णं अहं मुंडे जाव [ भवित्ता अगाराओ अणगारियं ] पव्वइए तप्पभिइं च णं अहं संवाहण जाव [ परिमद्दण–गातब्भंग ] गातुच्छोलणाइं णो लभामि। से णं संवाहण जाव [ परिमद्दण–गातब्भंग ] गातुच्छोलणाइं आसाएति जाव [ पीहेति पत्थेति ] अभिलसति, से णं संवाहण जाव [ परिमद्दण–गातब्भंग ] गातुच्छोलणाइं आसाएमाणे जाव [ पीहेमाणे पत्थेमाणे अभिलसमाणे ] मणं उच्चावयं णियच्छति, विणिघातमावज्जति–चउत्था दुहसेज्जा।

४५०. चार दुःखशय्याएँ इस प्रकार बताई हैं–

(१) **पहली दुःखशय्या**–कोई पुरुष मुण्डित (दीक्षित) होकर अगार (गृहस्थ अवस्था) से अनगारिता (साधु धर्म) में प्रव्रजित हो, निर्ग्रन्थ–प्रवचन मे १ शंकित, २. कांक्षित, ३ विचिकित्सित, ४. भेदसमापन्न, और ५ कलुषसमापन्न होकर निर्ग्रन्थ प्रवचन में श्रद्धा नहीं करता, प्रतीति (विश्वास) नहीं करता, रुचि (प्रेम–प्रीति) नहीं करता। वह निर्ग्रन्थ प्रवचन पर अश्रद्धा करता हुआ, अप्रतीति करता हुआ, अरुचि करता हुआ, मन को ऊँचा–नीचा करता है और विनिघात (धर्मभ्रष्टता) को प्राप्त होता है। यह उसकी पहली दुःखशय्या है।

(२) दूसरी दुःखशय्या—कोई पुरुष मुण्डित होकर अगार से अनगारिता मे प्रव्रजित हो, अपने प्राप्त लाभ से (भिक्षा में प्राप्त भक्त–पानादि से) सन्तुष्ट नहीं होता है, किन्तु दूसरे को प्राप्त हुए लाभ की आशा करता है, इच्छा करता है, प्रार्थना करता है और अभिलाषा (निरन्तर चाहना) करता है। वह दूसरे के लाभ की आशा करता हुआ, इच्छा करता हुआ, प्रार्थना करता हुआ और अभिलाषा करता हुआ मन को ऊँचा–नीचा करता है और विनिघात को प्राप्त होता है। यह उसकी दूसरी दुःखशय्या है।

(३) तीसरी दुःखशय्या—कोई पुरुष मुण्डित होकर अगार से अनगारिता मे प्रव्रजित हो देवो और मनुष्य सम्बन्धी काम–भोगों की आशा करता है, इच्छा करता है, प्रार्थना करता है, अभिलाषा करता है। वह देवों के और मनुष्यों के काम–भोगों की आशा करता हुआ, इच्छा करता हुआ, प्रार्थना करता हुआ अभिलाषा करता हुआ मन को ऊँचा–नीचा करता है और विनिघात को प्राप्त होता है। यह उसकी तीसरी दुःखशय्या है।

(४) चौथी दुःखशय्या—कोई पुरुष मुण्डित होकर अगार से अनगारिता मे प्रव्रजित हुआ। उसको ऐसा विचार होता है—जब मै गृहवास में रहता था, तब मै सम्बाधन (मालिश), परिमर्दन (दबाना), गात्राभ्यंग (तेल आदि चुपडना) और गात्रोत्क्षालन (स्नान) करता था। परन्तु जब से मुण्डित होकर अगार से अनगार बना हूँ, तब से मै सम्बाधन, परिमर्दन, गात्राभ्यग और गात्रप्रक्षालन नही कर पा रहा हूँ। ऐसा विचार कर वह सम्बाधन, परिमर्दन, गात्राभ्यग और गात्रप्रक्षालन की आशा करता है, इच्छा कारता है, प्रार्थना करता है और अभिलाषा करता है। सम्बाधन, परिमर्दन, गात्राभ्यग और गात्रप्रक्षालन की इच्छा करता हुआ, प्रार्थना करता हुआ और अभिलाषा करता हुआ वह अपने मन को ऊँचा–नीचा करता है और विनिघात को प्राप्त होता है। यह उस मुनि की चौथी दु खशय्या है।

**450.** *Duhkhashayya* (bed of misery) is of four kinds—

**(1) First bed of misery**—On getting tonsured and getting initiated as a homeless ascetic after renouncing his household, some person does not have belief, awareness and interest in the ascetic-sermon out of—1 suspicion, 2. misgiving, 3 doubt, 4. distrust, and 5. perversion. Continued disbelief, unawareness and disinterest in the ascetic-sermon lead to a wavering mind and, in turn, his fall from grace (*vinighat*). This is his first bed of misery

**(2) Second bed of misery**—On getting tonsured and getting initiated as a homeless ascetic after renouncing his household, some person is not contented with his gains (collected alms) and hopes, desires, prays and craves for gains by others. Such continued hope, desire, prayer and craving lead to a wavering mind and, in turn, his fall from grace (*vinighat*). This is his second bed of misery.

(3) **Third bed of misery**—On getting tonsured and getting initiated as a homeless ascetic after renouncing his household, some person hopes, desires, prays and craves for divine and human carnal pleasures. Such continued hope, desire, prayer and craving lead to a wavering mind and, in turn, his fall from grace (*vinighat*). This is his third bed of misery.

(4) **Fourth bed of misery**—On getting tonsured and getting initiated as a homeless ascetic after renouncing his household, some person thinks—'When I was a householder I used to enjoy *sambadhan* (massage), *parimardan* (massage with creams and pastes), *gatrabhyang* (oil massage) and *gatrokshalan* (bath) but since I have become ascetic I am unable to do all that.' With this idea he hopes, desires, prays and craves for massages (as aforesaid) and bath. Such continued hope, desire, prayer and craving lead to a wavering mind and, in turn, his fall from grace (*vinighat*). This is his fourth bed of misery

**सुखशय्या–पद SUKHASHAYYA-PAD (SEGMENT OF BED OF HAPPINESS)**

४५१. चत्तारि सुहसेज्जाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–

(१) तत्थ खलु इमा पढमा सुहसेज्जा–से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए णिग्गंथे पावयणे णिस्संकिते णिक्कंखिते णिव्वितिगिच्छए णो भेदसमावण्णे णो कलुससमावण्णे णिग्गंथं पावयणं सद्दहइ पत्तियइ रोएइ, णिग्गंथं पावयणं सद्दहमाणे पत्तियमाणे रोएमाणे णो मणं उच्चावयं णियच्छति, णो विणिघातमावज्जति–पढमा सुहसेज्जा।

(२) अहावरा दोच्चा सुहसेज्जा–से णं मुंडे जाव (भवित्ता, अगाराओ अणगारियं ] पव्वइए सएणं लाभेणं तुस्सति, परस्स लाभं णो आसाएति णो पीहेति णो पत्थेति णो अभिलसति, परस्स लाभमणासएमाणे जाव [ अपीहेमाणे अपत्थेमाणे ] अणभिलसमाणे णो मणं उच्चावयं णियच्छति, णो विणिघातमावज्जति दोच्चा सुहसेज्जा।

(३) अहावरा तच्चा सुहसेज्जा–से णं मुंडे जाव [ भवित्ता अगाराओ अणगारियं ] पव्वइए दिव्व–माणुस्सए कामभोगे णो आसाएति जाव [ णो पीहेति णो पत्थेति ] णो अभिलसति, दिव्वमाणुस्सए कामभोगे अणासाएमाणे जाव [ अपीहेमाणे अपत्थेमाणे ] अणभिलसमाणे णो मणं उच्चावयं णियच्छति, णो विणिघातमावज्जति–तच्चा सुहसेज्जा।

(४) अहावरा चउत्था सुहसेज्जा–से णं मुंडे जाव [ भवित्ता अगाराओ अणगारियं ] पव्वइए, तस्स णं एवं भवति–जइ ताव अरहंता भगवंतो हट्ठा अरोगा बलिया कल्लसरीरा अण्णयराइं ओरालाइं कल्लाणाइं विउलाइं पयताइं पग्गहिताइं महाणुभागाइं कम्मक्खयकारणाइं तवोकम्माइं पडिवज्जंति, किमंग पुण अहं अब्भोवगमिओवक्कमियं वेयणं णो सम्मं सहामि खमामि तितिक्खेमि अहियासेमि ?

**ममं च णं अब्भोवगमिओवक्कमियं [ वेयणं ? ] सम्ममसहमाणस्स अक्खममाणस्स अतितिक्खेमाणस्स अणहियासेमाणस्स किं मण्णे कज्जति ?**

**एगंतसो मे पावे किम्मे कज्जति।**

**ममं च णं अब्भोवगमिओवक्कमियं [ वेयणं ? ] सम्मं सहमाणस्स जाव [ खममाणस्स तितिक्खेमाणस्स ] अहियासेमाणस्स किं मण्णे कज्जति ?**

**एगंतसो मे णिज्जरा कज्जति—चउत्था सुहसेज्जा।**

४५१. चार सुखशय्याएँ इस प्रकार है–

(१) **पहली सुखशय्या**–कोई पुरुष मुण्डित होकर अगार त्यागकर अनगारता में प्रव्रजित हो, निर्ग्रन्थ प्रवचन में शंका–कांक्षा–विचिकित्सा से मुक्त रहकर, भेद और कालुष्य भाव से दूर रहकर, निर्ग्रन्थ प्रवचन में श्रद्धा करता है, प्रतीति करता है और रुचि करता है। वह निर्ग्रन्थ प्रवचन मे श्रद्धा करता हुआ, प्रतीति करता हुआ, रुचि करता हुआ, मन को ऊँचा–नीचा नहीं करता है (किन्तु समता को धारण करता है), वह धर्म के विनिघात–(विनाश) को नहीं प्राप्त होता है (किन्तु धर्म मे स्थिर रहता है)। यह उसकी पहली सुखशय्या है।

(२) **दूसरी सुखशय्या**–कोई पुरुष मुण्डित होकर अगार त्यागकर अनगारिता मे प्रव्रजित हो, अपने प्राप्त (भिक्षा) लाभ से सन्तुष्ट रहता है, दूसरे के लाभ की आशा, प्रार्थना और अभिलाषा नही करता है। वह दूसरे के लाभ की आशा, इच्छा, प्रार्थना और अभिलाषा नही करता हुआ मन को ऊँचा–नीचा नही होने देता है। वह धर्म के विनिघात को नही प्राप्त होता है। यह उसकी दूसरी सुखशय्या है।

(३) **तीसरी सुखशय्या**–कोई पुरुष मुण्डित होकर अगार त्यागकर अनगारिता में प्रव्रजित होकर देवो के और मनुष्यो के काम–भोगो की आशा नही करता, इच्छा नही करता, प्रार्थना नहीं करता और अभिलाषा नही करता है। वह उनकी आशा, इच्छा, प्रार्थना और अभिलाषा नही करता हुआ मन को ऊँचा–नीचा नही करता है। वह धर्म के विनिघात को नही प्राप्त होता है। यह उसकी तीसरी सुखशय्या है।

(४) **चौथी सुखशय्या**–कोई पुरुष मुण्डित होकर अगार त्यागकर अनगारिता मे प्रव्रजित हुआ। तब उसको ऐसा विचार होता है–जब यदि अर्हन्त भगवन्त हृष्ट–पुष्ट, नीरोग, बलशाली और स्वस्थ शरीर वाले होकर भी कर्मों का क्षय करने के लिए उदार, कल्याण, विपुल, प्रयत, प्रगृहीत, महानुभाग, कर्म–क्षय करने वाले अनेक प्रकार के तप कर्मों मे से भी अन्यतर (विशिष्ट) तपो को स्वीकार करते हैं, तब मैं आभ्युपगमिकी और औपक्रमिकी वेदना को क्यो न सम्यक् प्रकार से सहूँ? क्यो न क्षमा धारण करूँ? और क्यों न धीरतापूर्वक वेदना मे स्थिर रहूँ?

यदि मै आभ्युपगमिकी और औपक्रमिकी वेदना को सम्यक् प्रकार से सहन नही करूँगा, क्षमा धारण नहीं करूँगा और धीरतापूर्वक वेदना मे स्थिर नहीं रहूँगा, तो मुझे क्या होगा? मुझे एकान्त रूप से पाप कर्म होगा?

यदि मैं आभ्युपगमिकी और औपक्रमिकी वेदना को सम्यक् प्रकार से सहन करूँगा, क्षमा धारण करूँगा और धीरतापूर्वक वेदना में स्थिर रहूँगा तो मुझे क्या होगा ? एकान्त रूप से मेरे कर्मों की निर्जरा होगी। यह उसकी चौथी सुखशय्या है।

**451.** *Sukhashayya* (bed of happiness) is of four kinds—

(1) **First bed of happiness**—On getting tonsured and getting initiated as a homeless ascetic after renouncing his household, some person remains free of suspicion, misgiving, doubt, distrust and perversion and has belief, awareness and interest in the ascetic-sermon. Such continued belief, awareness and interest in the ascetic-sermon helps him avoid the wavering state of mind as well as the consequent fall from grace (*vinighat*) (he remains steadfast on the religious path). This is his first bed of happiness

(2) **Second bed of happiness**—On getting tonsured and getting initiated as a homeless ascetic after renouncing his household, some person remains contented with his gains (collected alms) and does not hope, desire, pray and crave for gains by others Such continued restrain of hope, desire, prayer and craving helps him avoid the wavering state of mind as well as the consequent fall from grace (*vinighat*). This is his second bed of happiness

(3) **Third bed of happiness**—On getting tonsured and getting initiated as a homeless ascetic after renouncing his household, some person remains does not hope, desire, pray and crave for divine and human carnal pleasures. Such continued restrain of hope, desire, prayer and craving helps him avoid the wavering state of mind as well as the consequent fall from grace (*vinighat*). This is his third bed of happiness.

(4) **Fourth bed of happiness**—On getting tonsured and getting initiated as a homeless ascetic after renouncing his household, some person thinks—'When *Arihant Bhagavan*, although having healthy, disease free and strong body, accepts higher austerities from among various *udaar*, *kalyan*, *vipul*, *prayat*, *pragraheet* and *mahanubhag* *karma*-destroying austerities, then why should I not endure *abhyupagamiki* (voluntary) and *aupakramiki* (natural) afflictions ? Why should I not be forgiving ? and why should I not endure the pain with patience ?

If I do not rightly endure *abhyupagamiki* (voluntary) and *aupakramiki* (natural) afflictions, if I am not forgiving and do not endure the pain with patience, what will happen to me ? I will exclusively acquire demeritorious *karmas*.

If I rightly endure *abhyupagamiki* (voluntary) and *aupakramiki* (natural) afflictions, if I am forgiving and endure the pain with patience, what will happen to me ? I will exclusively shed *karmas*. This is his fourth bed of happiness.

**विवेचन**—दुःखशय्या का अर्थ है, दु ख की अवस्था। कठिन ऊँची-नीची शय्या पर सोने से जिस प्रकार नीद नही आती, मन मे बेचैनी बढती है, तनाव बढता है। उसी प्रकार सयम जीवन से उद्वेलित एवं दु खी होकर संतप्त रहने को यहाँ दुःखशय्या कहा है।

जिस प्रकार मन की सशयग्रस्तता, भोगो की तरफ लुब्धता और त्यागे हुए शारीरिक सुखों की मिथ्या अभिलाषा करते रहना, पुरानी स्मृतियो मे झूलते रहना दु खशय्या है। उसी प्रकार सुखशय्या मे भी निम्न बातें मुख्य है—मन को श्रद्धा मे स्थिर रखना, जो प्राप्त हुआ, उसी मे सन्तोष करना, सांसारिक सुखों मे आसक्त नही होना और कष्ट सहिष्णु बनना। अपने लक्ष्य की ओर बढते रहना। इसी का नाम है सुखशय्या। मन की अशान्त व चचल अवस्था दु खशय्या है और शान्त व स्थिर अवस्था सुखशय्या है।

**पारिवारिक शब्द—संबाधन**—शरीर की मालिश करना,

**परिमर्दन**—बेसन, तेल मिश्रित पीठी से मर्दन करना।

**गात्राभ्यंग**—सुगधित व पुष्टिकारक तेल से शरीर की मालिश करना।

**गात्रोत्क्षालन**—वस्त्र आदि से शरीर को रगडकर शीतल या उष्ण जल से स्नान करना।

**शंकित**—निर्ग्रन्थ-प्रवचन के सम्बन्ध मे शकाशील रहना।

**कांक्षित**—निर्ग्रन्थ-प्रवचन को स्वीकार कर फिर किसी अन्य दर्शन की आकांक्षा करना। इससे स्वीकृत साधना मार्ग के प्रति अस्थिरता आती है।

**विचिकित्सित**—निर्ग्रन्थ-प्रवचन को स्वीकार कर किसी भी प्रकार की ग्लानि अनुभव करना अथवा फल के विषय मे संदेह करना।

**भेद—समापन्न होना**—जप-तप आदि की निरन्तर चलने वाली साधना का क्रम टूट जाना या दुविधाग्रस्त हो जाना।

**कलुष—समापन्न**—साधना मे निरुत्साहित या निराश होकर मन को मलिन करना।

**उदार तपःकर्म**—आशंसा-प्रशंसा आदि की अपेक्षा न करके निदान आदि से मुक्त तपस्या।

**कल्याण तपःकर्म**—आत्मा को पापों से मुक्त कर मंगल करने वाली तपस्या।

**विपुल तपःकर्म**—बहुत दिनों तक की जाने वाली दीर्घकालीन तपस्या।

**प्रयत्न तपःकर्म**—सर्वतोभावेन मन व इन्द्रियों पर उत्कृष्ट संयम से युक्त तपस्या।

**प्रगृहीत तपःकर्म**—आदर प्रीतिपूर्वक स्वीकार की गई तपस्या।

**महानुभाग तपःकर्म**—अचिन्त्य व असीम शक्तियुक्त ऋद्धियो को प्रदान करने वाली तपस्या।

**कर्मक्षयकारिणी तपस्या**—तप समस्त कर्मों का क्षय करने वाला है, इस विश्वास के साथ तप करना।

**आभ्युपगमिकी वेदना**—कर्मनिर्जरा हेतु स्वेच्छापूर्वक स्वीकार की गई वेदना।

**औपक्रमिकी वेदना**—पूर्वकृत कर्मों के उदय से सहसा आई हुई प्राणघातक वेदना।

दु खशय्याओ मे पडा हुआ व्यक्ति वर्तमान मे भी दुःख पाता है और आगे के लिए अपना संसार बढ़ाता है।

इसके विपरीत सुखशय्या पर शयन करने वाला साधक प्रतिक्षण कर्मों की निर्जरा करता है और ससार का अन्त कर सिद्धपद पाकर अनन्त सुख भोगता है।

**Elaboration**—Bed of misery means state of misery. It is not possible to have an undisturbed sleep on an uneven bed and this leads to mental agitation and stress Therefore such bed is called bed of misery. In the same way to remain disturbed, tormented and sad in ascetic life is called state of misery or bed of misery

Having a suspicious mind, attraction for mundane pleasures, false hope for the abandoned pleasures and delving in past memories is bed of misery In the same way following things are important for bed of happiness—to be stable in faith, to be contented with what one gets, not to get obsessed with worldly pleasures and to develop ability to tolerate afflictions To continue progressing towards the goal is bed of happiness. Agitated and wavering state of mind is bed of misery and serene and stable state of mind is bed of happiness.

**TECHNICAL TERMS**

**Sambadhan**—to get body massage.

**Parimardan**—to apply and rub creams and pastes made of oil and gram flour.

**Gatrabhyang**—to massage with fragrant and nutritional oils.

**Gatrotkshalan**—to cleanse the body with cloth and take bath with cold or warm water.

**Shankit**—to be suspicious or have doubt in the ascetic discourse.

**Kankshit**—to seek other philosophy after accepting ascetic discourse. This breeds instability on the accepted religious path.

**Vichikitsa**—to be remorseful after accepting the ascetic discourse or to be doubtful about its benefits

**Bhed-samapanna**—break in the sequence of mantra chanting, austerities and other such practices or to be shaky about their benefits.

**Kalush-samapanna**—to be remorseful due to loss of enthusiasm and hope in religious practices

**Udaar tapah-karma**—austerities free of desires including any expectation of recognition and praise

**Kalyan tapah-karma**—austerities that cleanse the soul of sins and lead to beatitude.

**Vipul tapah-karma**—austerities of long duration

**Prayat tapah-karma**—austerities with superlative and all-round self control over mind and senses

**Pragraheet tapah-karma**—austerities accepted with respect and devotion.

**Mahanubhag tapah-karma**—austerities that lead to acquisition of unimaginable and supernatural powers

**Karmakshayakarini tapasya**—to indulge in austerities with the belief that austerities destroy all *karmas*

**Aabhyupagamiki vedana**—voluntarily accepted pain aimed at shedding of *karmas*

**Aupakramiki vedana**—unexpected and fatal pain caused by natural fruition of *karmas* acquired in the past

A man in the beds of misery suffers misery in the present birth and extends the cycles of rebirth.

On the other hand a man in the bed of happiness continues to shed *karmas* every moment. He ultimately ends the cycles of rebirth, attains the *Siddha* status and experiences infinite bliss.

## अवाचनीय–वाचनीय–पद AVAACHANIYA-VAACHANIYA-PAD

(SEGMENT OF QUALIFICATION OF PREACHING)

**४५२. चत्तारि अवायणिज्जा पण्णत्ता, तं जहा–अविणीए, विगइपडिबद्धे, अविओसवियपाहुडे, माई।**

४५२. चार व्यक्ति अवाचनीय–(वाचना देने के अयोग्य) होते हैं–(१) अविनीत–जो उद्दण्ड और अभिमानी हो। (२) विकृति–प्रतिबद्ध–जो दूध–घृतादि खाने में लोलुप हो। (३) अव्यवशमित–प्राभृत–जो क्रोधी और कलहप्रिय हो। (४) मायावी–मायाचार करने वाला।

**452.** *Avaachaniya* (persons not qualified to preach) are of four kinds—(1) *avineet*—who is arrogant and conceited, (2) *vikriti-pratibaddha*—who has obsessive liking for rich food like butter and milk, (3) *avyashamit-prabhrit*—who is prone to anger and belligerence, and (4) *mayavi*—who is deceitful

**४५३. चत्तारि वायणिज्जा पण्णत्ता, तं जहा–विणीते, अविगइपडिबद्धे, विओसवियपाहुडे, अमाई।**

४५३. चार व्यक्ति वाचनीय (वाचना देने के योग्य) होते हैं–(१) विनीत–जो अहकार से रहित हो, (२) विकृति–अप्रतिबद्ध–जो रसलोलुप न हो, (३) व्यवशमित–प्राभृत–जिसका कलह एवं क्रोध उपशान्त रहता हो, (४) अमायावी–जो मायाचार से रहित हो।

**453.** *Vaachaniya* (persons qualified to preach) are of four kinds—(1) *vineet*—who is free of arrogance and conceit, (2) *vikriti-apratibaddha*—who has no liking for rich food like butter and milk, (3) *vyashamit-prabhrit*—whose anger and belligerence have been pacified, (4) *amayavi*—who is not deceitful.

## भरण–पोषण–पुरुष–पद BHARAN-POSHAN-PURUSH-PAD

(SEGMENT OF LIVELIHOOD OF MAN)

**४५४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–आयंभरे णाममेगे णो परंभरे, परंभरे णाममेगे णो आयंभरे, एगे आयंभरेवि परंभरेवि, एगे णो आयंभरे णो परंभरे।**

४५४. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष अपना ही भरण–पोषण करता है, दूसरों का नहीं (स्वार्थी), (२) कोई पुरुष दूसरों का भरण–पोषण करता है, अपना नहीं (परमार्थी), (३) कोई पुरुष अपना भरण–पोषण करता है और दूसरों का भी (परोपकारी), (४) कोई पुरुष न अपना ही भरण–पोषण करता है और न दूसरों का ही (आलसी)।

**454.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man takes care of his own livelihood and not of others (a selfish person), (2) some man takes care of livelihood of others and not his own (an altruistic person), (3) some man takes care of his own livelihood as well as that of others (a generous person), and (4) some man neither takes care of his own livelihood nor that of others (a lazy person)

**दुर्गत–सुगत–पुरुष–पद DURGAT-SUGAT-PURUSH-PAD (SEGMENT OF BAD OR GOOD STATE)**

**४५५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–दुग्गए णाममेगे दुग्गए, दुग्गए णाममेगे सुग्गए, सुग्गए णाममेगे दुग्गए, सुग्गए णाममेगे सुग्गए।**

४५५. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष धन से भी दुर्गत (दरिद्र) होता है और ज्ञान, सदाचार आदि से भी दुर्गत (हीन) होता है, (२) कोई पुरुष धन से दुर्गत होता है, किन्तु ज्ञान आदि से सुगत (सम्पन्न) होता है, (३) कोई पुरुष धन से सुगत होता है, किन्तु ज्ञान आदि से दुर्गत होता है, (४) कोई पुरुष धन से भी सुगत होता है और ज्ञान आदि से भी सुगत होता है।

**455.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man is *durgat* (in bad or deprived state) in terms of wealth and *durgat* also in terms of virtues like knowledge and good conduct, (2) some man is *durgat* in terms of wealth and *sugat* (in good or endowed state) in terms of virtues like knowledge and good conduct, (3) some man is *sugat* in terms of wealth and *durgat* in terms of virtues like knowledge and good conduct, and (4) some man is *sugat* in terms of wealth and *sugat* also in terms of virtues like knowledge and good conduct.

**४५६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–दुग्गए णाममेगे दुव्वए, दुग्गए णाममेगे सुव्वए, सुग्गए णाममेगे दुव्वए, सुग्गए णाममेगे सुव्वए।**

४५६. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष दुर्गत (दरिद्र) और दुर्व्रत (सदाचार से हीन) होता है। (२) कोई दुर्गत होकर भी सुव्रत होता है। (३) कोई सुगत, किन्तु दुर्व्रत होता है। (४) कोई सुगत और सुव्रत होता है।

**456.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man is *durgat* (poor) and *durvrat* (deprived of good conduct) also, (2) some man is *durgat* but *suvrat* (having good conduct), (3) some man is *sugat* (wealthy) but *durvrat*, and (4) some man is *sugat* and *suvrat* also.

**विवेचन**–टीकाकार ने 'दुर्व्रत' शब्द के दो अर्थ किये है–(१) दुर्व्रत–सदाचार से हीन तथा (२) दुर्व्यय–सम्पत्ति का दुरुपयोग व अपव्यय करने वाला है। तदनुसार चारो भगों का अर्थ इस प्रकार किया जा सकता है–

(१) कोई पुरुष दुर्गत (दरिद्र) होता है और प्राप्त धन का दुर्व्यय करता है। (२) कोई दरिद्र होकर भी धन का सद्व्यय करता है। (३) कोई धन-सम्पन्न होकर धन का दुर्व्यय करता है। (४) कोई धन-सम्पन्न होकर धन का सद्व्यय करता है।

**Elaboration**—The commentator (*Tika*) has given two interpretations of the term *duvvaye*—1. *durvrat*—deprived of good conduct, and 2. *durvyaya*—one who misuses money, a spendthrift. Taking the second interpretation the four alternatives are as follows—

(1) some man is *durgat* (poor) and *durvyaya* (spendthrift) also, (2) some man is *durgat* but *sadvyaya* (doing useful expenditure), (3) some man is *sugat* (wealthy) but *durvyaya*, and (4) some man is *sugat* and *suvyaya* also

**४५७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दुग्गए णाममेगे दुप्पडियाणंदे, दुग्गए णाममेगे सुप्पडियाणंदे। [ सुग्गए णाममेगे दुप्पडियाणंदे, सुग्गए णाममेगे सुप्पडियाणंदे ]।**

४५७. पुरुष चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष दुर्गत (दरिद्र) और दुष्प्रत्यानन्द-(कृत उपकार को न मानने वाला कृतघ्न) होता है। (२) कोई दुर्गत होकर भी सुप्रत्यानन्द (कृतज्ञ) होता है। (३) कोई सुगत-सम्पन्न होकर दुष्प्रत्यानन्द (कृतघ्न) होता है। (४) कोई सुगत और सुप्रत्यानन्द (कृतज्ञ) होता है।

**457.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man is *durgat* (poor) and *dushpratyanand* (ungrateful) also, (2) some man is *durgat* but *supratyanand* (grateful), (3) some man is *sugat* (wealthy) but *dushpratyanand* and (4) some man is *sugat* and *supratyanand* also.

**४५८. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दुग्गए णाममेगे दुग्गतिगामी, दुग्गए णाममेगे सुग्गतिगामी। [ सुग्गए णाममेगे दुग्गतिगामी, सुग्गए णाममेगे सुग्गतिगामी ]।**

४५८. पुरुष चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष दुर्गत (दरिद्र) और (असद्कर्म करके)-दुर्गतिगामी होता है। (२) कोई दुर्गत होकर भी (शुभ कर्म करके)-सुगतिगामी होता है। (३) कोई सुगत (सम्पन्न) और दुर्गतिगामी होता है। (४) कोई सुगत और सुगतिगामी होता है।

**458.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man is *durgat* (poor) and *durgatigami* (destined to a bad birth due to misdeeds) also, (2) some man is *durgat* but *sugatigami* (destined to a good birth due to good deeds), (3) some man is *sugat* (wealthy) but *durgatigami*, and (4) some man is *sugat* and *sugatigami* also.

**४५९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—दुग्गए णाममेगे दुग्गतिं गते, दुग्गए णाममेगे सुग्गतिं गते। [ सुग्गए णाममेगे दुग्गतिं गते, सुग्गए णाममेगे सुग्गतिं गते ]।**

४५९. पुरुष चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष दुर्गत है और दुर्गति को प्राप्त हुआ है। (२) कोई दुर्गत होकर भी सुगति को प्राप्त हुआ है। (३) कोई सुगत होकर भी दुर्गति को प्राप्त हुआ है। (४) कोई सुगत है और सुगति को ही प्राप्त हुआ है।

**459.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man is *durgat* (poor) and has attained a bad birth also, (2) some man is *durgat* but has attained a good birth, (3) some man is *sugat* (wealthy) but has attained a bad birth, and (4) some man is *sugat* and has attained a good birth also.

**तमः—ज्योति—पद TAMAH-JYOTI-PAD (SEGMENT OF DARKNESS AND LIGHT)**

**४६०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—तमे णाममेगे तमे, तमे णाममेगे जोती, जोती णाममेगे तमे, जोती णाममेगे जोती।**

**४६१. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—तमे णाममेगे तमबले, तमे णाममेगे जोतिबले, जोती णाममेगे तमबले, जोती णाममेगे जोतिबले।**

४६०. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष पहले भी तम (अज्ञानी) होता है और जीवनभर तम (अज्ञानी) ही रहता है। (२) कोई पहले तम किन्तु पीछे ज्योति (ज्ञानी) हो जाता है। (३) कोई पहले ज्योति किन्तु बाद मे तम हो जाता है। (४) कोई पहले भी ज्योति (ज्ञानी) और बाद में भी ज्योति (ज्ञानी) ही रहता है।

४६१. पुरुष चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष तम (अज्ञानी और दुष्ट चित्त वाला) होता है और तमोबल (अज्ञान और असदाचारमय जीवन वाला) रहता है। (२) कोई तम होकर भी ज्योतिर्बल (ज्ञान एव सदाचार बल वाला) होता है। (३) कोई ज्योति होकर भी तमोबल वाला रहता है। (४) कोई ज्योति और ज्योतिर्बल होता है।

**460.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man is initially *tam* (ignorant) and remains ignorant all his life, (2) some man is initially ignorant but later becomes *jyoti* (enlightened), (3) some man is initially enlightened but later becomes ignorant, and (4) some man is initially enlightened and remains enlightened all his life.

**461.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man is *tam* (ignorant and evil) and also *tamobal* (having evil thoughts and evil conduct), (2) some man is ignorant and evil but *jyotirbal* (enlightened and with good conduct), (3) some man is *jyoti* (wise) but *tamobal* (having evil thoughts and evil conduct), and (4) some man is *jyoti* (enlightened) and also *jyotirbal* (enlightened and with good conduct).

विवेचन—इन दोनों सूत्रों में 'तम' और 'ज्योति' आदि शब्द प्रतीकात्मक है। 'तम' का अर्थ अज्ञान या अप्रशस्त विचार एवं ज्योति का अर्थ ज्ञान व शुभ विचार है। तमोबल का अर्थ है—युद्ध, हिंसा, चोरी आदि असद् आचरण ही जिसका बल हो। ज्योतिर्बल का अर्थ सदाचारमय शान्ति, प्रेम आदि के व्यवहार से है।

**Elaboration**—In these two aphorisms the words '*tam*' and '*jyoti*' are metonymic. *Tam* or darkness signifies ignorance or evil thoughts and *jyoti* or light signifies enlightenment or pious thoughts. *Tamobal* means one whose strength lies in evil conduct, such as war, violence, theft etc and *jyotirbal* means one whose strength lies in good conduct, such as peace, love etc.

**४६२. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—तमे णाममेगे तमबलपलज्जणे, तमे णाममेगे जोतिबलपलज्जणे [ जोती णाममेगे तमबलपलज्जणे, जोती णाममेगे जोतिबलपलज्जणे ]।**

४६२. पुरुष चार प्रकार के होते हैं—(१) कोई पुरुष तम (अज्ञान) और तमोबल मे प्रसन्नता अनुभव करता है। (२) कोई तम, किन्तु ज्योतिर्बल (ज्ञान व शुभ विचार) मे प्रसन्न होता है। (३) कोई ज्योति, किन्तु तमोबल मे, और (४) कोई ज्योति और ज्योतिर्बल में प्रसन्नता का अनुभव करता है।

**462.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man experiences joy in *tam* and *tamobal*, (2) some man experiences joy in *tam* and *jyotirbal*, (3) some man experiences joy in *jyoti* and *tamobal*, and (4) some man experiences joy in *jyoti* and *jyotirbal*.

**परिज्ञात—अपरिज्ञात—पद PARIJNAT-APARIJNAT-PAD**

**(SEGMENT OF KNOWLEDGEABLE AND UNKNOWLEDGEABLE)**

**४६३. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—परिण्णातकम्मे णाममेगे णो परिण्णातसण्णे, परिण्णातसण्णे णाममेगे णो परिण्णातकम्मे, एगे परिण्णातकम्मेवि। [ परिण्णातसण्णेवि, एगे णो परिण्णातकम्मे णो परिण्णातसण्णे ]।**

४६३. पुरुष चार प्रकार के होते है—(१) कुछ पुरुष परिज्ञातकर्मा होते है, किन्तु परिज्ञातसंज्ञ नहीं होते। (२) कोई परिज्ञातसज्ञ होते हैं, किन्तु परिज्ञातकर्मा नहीं होते। (३) कोई परिज्ञातकर्मा भी और परिज्ञातसंज्ञ भी होते हैं। (४) कोई न परिज्ञातकर्मा और परिज्ञातसंज्ञ होते है।

**463.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man is *parijnat-karma* (knowledgeable about violence) but not *parijnat-sanjna* (who renounces violence), (2) some man is *parijnat-sanjna* but not *parijnat-karma*, (3) some man is *parijnat-karma* as well as *parijnat-sanjna*, and (4) some man is neither *parijnat-karma* nor *parijnat-sanjna*.

**४६४. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—परिण्णातकम्मे णाममेगे णो परिण्णातगिहावासे, परिण्णातगिहावासे णाममेगे णो परिण्णातकम्मे, [ एगे परिण्णातकम्मेवि परिण्णातगिहावासेवि, एगे णो परिण्णातकम्मे णो परिण्णातगिहावासे ]।**

४६४. पुरुष चार प्रकार के होते हैं—(१) कोई पुरुष परिज्ञातकर्मा तो होता है, किन्तु गृहावास का परित्यागी नहीं होता, (२) कोई गृहावास का परित्यागी तो होता है, किन्तु परिज्ञातकर्मा नहीं होता, (३) कोई परिज्ञातकर्मा भी होता है और परिज्ञातगृहावास भी, (४) कोई न तो परिज्ञातकर्मा होता है और न परिज्ञातगृहावास होता है।

**464.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man is *parijnat-karma* (knowledgeable about violence) but not *parijnat-grihavas* (who renounces household), (2) some man is *parijnat-grihavas* but not *parijnat-karma*, (3) some man is *parijnat-karma* as well as *parijnat-grihavas*, and (4) some man is neither *parijnat-karma* nor *parijnat-grihavas*.

**विवेचन**—परिज्ञातकर्मा का अर्थ है—जिसने ज्ञान से हिंसा आदि का स्वरूप जान लिया है। परिज्ञातसंज्ञ—जो हिंसादि की लालसा को त्यागता है। हिंसा आदि को तथा विषयेच्छा को त्यागने की इच्छा नहीं रखते हैं। अर्थात् दिखाने के रूप मे हिंसा आदि के त्यागी होते है, प्रथम कोटि मे वे है जो हिंसा का स्वरूप जानते है किन्तु भाव रूप मे उनसे विरक्त नही होते। ये पाखण्डी या आडम्बरी होते है। दूसरी कोटि के, मन से पापों व इच्छा तृष्णा से दूर रहते है, किन्तु व्यवहार दृष्टि मे संसारी प्रतीत होते हैं, जैसे व्रतधारी श्रावक। तीसरी कोटि के व्यवहार व निश्चय, शरीर व मन दोनों से ही पापों के त्यागी होते है, जैसे अप्रमत्त संयमी। चौथी कोटि के सामान्य ससारी हैं, जो समान्य रूप से विषय हिंसा आदि में लगे रहते है और मन से भी विषय में लीन होते है।

सज्ञा का अर्थ है—बलवती तीव्र इच्छा। उसके चार प्रकार हैं—आहार संज्ञा, भय संज्ञा, मैथुन संज्ञा और परिग्रह सज्ञा।

जिसने गृहवास का त्यागकर साधु धर्म स्वीकार कर लिया है।

**Elaboration**—*parijnat-karma*—one who has understood violence and other sinful activities through his knowledge *Parijnat-sanjna*—one who has renounced the desire to indulge in violence and other sinful activities. The first category mentioned here includes people who are knowledgeable about violence but are not desirous of renouncing violence and fondness for mundane pleasures. In other words they are the hypocrites who pose to have abandoned violence but, in fact, are not mentally detached from it. The second category includes those who have distanced themselves from sins and desires but formally appear to be householders, for example a vow abiding layman. The third category

includes those who have formally and actually or physically and mentally renounced sins, for example *apramatt samyami* (accomplished and alert sages). The fourth category is of ordinary worldly people who are generally involved in violence and are also attached to mundane pleasures.

*Sanjna*—strong desire or craving. It is of four kinds—*ahar-sanjna* or craving for food, *bhaya-sanjna* or desire to run away out of fear, *maithun-sanjna* or sexual desire and *parigraha-sanjna* or covetousness.

**४६५. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—परिण्णातसण्णे णाममेगे णो परिण्णातगिहावासे, परिण्णातगिहावासे णाममेगे [ णो परिण्णातसण्णे, एगे परिण्णातसण्णेवि परिण्णातगिहावासेवि, एगे णो परिण्णातसण्णे णो परिण्णातगिहावासे ]।**

४६५. पुरुष चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष सज्ञाओ (वासनाओं) का परित्यागी तो होता है, किन्तु गृहावास का परित्यागी नहीं होता। (२) कोई गृहावास का त्यागी तो होता है, किन्तु इच्छा का त्यागी नही होता। (३) कोई परिज्ञातसंज्ञा भी होता है और परिज्ञातगृहावास भी, (४) कोई न परिज्ञातसज्ञा होता है और न परिज्ञातगृहावास होता है।

**465.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man is *parijnat-sanjna* (who renounces desires) but not *parijnat-grihavas* (who renounces household), (2) some man is *parijnat-grihavas* but not *parijnat-sanjna*, (3) some man is *parijnat-sanjna* as well as *parijnat-grihavas*, and (4) some man is neither *parijnat-sanjna* nor *parijnat-grihavas*.

**इहार्थ–परार्थ–पद IHARTH-PARARTH-PAD (SEGMENT OF THIS AND THE NEXT BIRTH)**

**४६६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—इहत्थे णाममेगे णो परत्थे, परत्थे णाममेगे णो इहत्थे। [ एगे इहत्थेवि परत्थेवि, एगे णो इहत्थे णो परत्थे ]।**

४६६. पुरुष चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष इहार्थ–(लौकिक प्रयोजन वाला) होता है, किन्तु परार्थ–(पारलौकिक प्रयोजन वाला) नही होता। (जैसे नास्तिकवादी)। (२) कोई परार्थ होता है, किन्तु इहार्थ नहीं होता। (जैसे–परलोक के सुखों के लिए लौकिक सुखों को त्यागने वाला)। (३) कोई इहार्थ भी होता है और परार्थ भी होता है, (जैसे–धर्मपूर्वक जीवन जीने वाला सद्‌गृहस्थ), (४) कोई न इहार्थ होता है और न परार्थ ही होता है।

**466.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) some man is *iharth* (who strives for gains during this birth) but not *pararth* (who strives for gains in the next birth, like an atheist), (2) some man is *pararth* but not *iharth* (like those who sacrifice gains in this life for a better next life), (3) some man is *iharth* as well as *pararth* (like a devout householder), and (4) some man is neither *iharth* nor *pararth*.

विवेचन—टीकाकार के अनुसार 'इहास्थ' का एक अर्थ इस लोक सम्बन्धी कार्यों में जिसकी आस्था है, वह और जिसकी परलोक सम्बन्धी कार्यों में आस्था है, वह 'परास्थ' पुरुष है। इस अर्थ के अनुसार भी चार भंग होते हैं।

**Elaboration**—According to the commentator (*Tika*) another meaning of *ihattha* is *ihasth* or one who has faith only in this world. *Parattha* means *parasth* or one who has faith only in the next life. With this meaning also the four alternatives remain unchanged.

### हानि–वृद्धि–पद HAANI-VRIDDHI-PAD (SEGMENT OF LOSS AND GAIN)

**४६७. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—एगेणं णाममेगे वड्ढति एगेणं हायति, एगेणं णाममेगे वड्ढति दोहिं हायति, दोहिं णाममेगे वड्ढति एगेणं हायति, दोहिं णाममेगे वड्ढति दोहिं हायति।**

४६७. पुरुष चार प्रकार के होते हैं-(१) एक से बढने वाला, एक से हीन होने वाला [कोई पुरुष एक श्रुत–शास्त्राभ्यास में बढता है और एक–सम्यग्दर्शन से हीन होता है]। (२) एक से बढने वाला, दो से हीन होने वाला [कोई एक शास्त्राभ्यास से बढता है, किन्तु सम्यग्दर्शन और विनय से हीन होता है]। (३) दो से बढ़ने वाला, एक से हीन होने वाला [कोई शास्त्राभ्यास और चारित्र इन दो से बढता है और एक सम्यग्दर्शन से हीन होता है]। (४) कोई दो से बढने वाला, दो से हीन होने वाला [कोई शास्त्राभ्यास और चारित्र इन दो से बढता है और सम्यग्दर्शन एव विनय इन दो से हीन होता है]।

**467.** *Purush* (men) are of four kinds—(Some person) (1) Gains in one and loses in one (some person gains in terms of *shrut* or study of scriptures and looses in terms of right perception/faith). (2) Gains in one and loses in two (some person gains in terms of *shrut* or study of scriptures and looses in terms of right perception/faith as well as modesty). (3) Gains in two and loses in one (some person gains in terms of study of scriptures as well as right conduct and looses in terms of right perception/faith). (4) Gains in two and loses in two (some person gains in terms of study of scriptures as well as right conduct and looses in terms of right perception/faith as well as modesty)

विवेचन–'एक' और 'दो' इन सामान्य पदो के आधार से उक्त व्याख्या के अतिरिक्त और भी अनेक प्रकार से व्याख्या की जाती है, जैसे–

(१) कोई एक ज्ञान से बढ़ता है और एक राग से हीन होता है। (२) कोई एक ज्ञान से बढ़ता है और राग–द्वेष इन दो से हीन होता है। (३) कोई ज्ञान और संयम इन दो से बढ़ता है और एक राग से

हीन होता है। (४) कोई ज्ञान और संयम इन दो से बढ़ता है और राग-द्वेष इन दो से हीन होता है। इसी प्रकार क्रोध, मान, माया, लोभ के साथ तर्क, श्रद्धा, आचार और अश्रद्धा आदि के साथ अन्य विकल्प भी किये जा सकते हैं-

टीकाकार द्वारा सूचित चतुर्भंगी का एक उदाहरण इस प्रकार है-

(१) कुछ पुरुष एक तृष्णा से बढ़ते हैं, एक मैत्री से हीन होते हैं। (२) कुछ पुरुष तृष्णा से बढ़ते हैं, मैत्री और करुणा से हीन होते हैं। (३) कुछ पुरुष ईर्ष्या और क्रूरता से बढ़ते हैं, मैत्री से हीन होते हैं। (४) कुछ पुरुष मैत्री और करुणा से बढ़ते हैं, ईर्ष्या और क्रूरता से हीन होते हैं। (इत्यादि)

**Elaboration**—Besides the aforesaid interpretation based on the terms one and two there are many more. For example—

(1) Some person gains in terms of *jnana* or knowledge (one) and looses in terms of *raag* or attachment (one). (2) Some person gains in terms of *jnana* or knowledge (one) and looses in terms of *raag* or attachment as well as *dvesh* or aversion (two). (3) Some person gains in terms of *jnana* or knowledge as well as self-control (two) and looses in terms of *raag* or attachment (one). (4) Some person gains in terms of *jnana* or knowledge as well as self-control (two) and looses in terms of *raag* or attachment as well as *dvesh* or aversion (two).

Another example of these four alternatives as given by the commentator (*Tika*) is as follows—

(1) Some person gains in terms of *trishna* or craving (one) and looses in terms of *ayu* or life span (one). (2) Some person gains in terms of *trishna* or craving (one) and looses in terms of *maitri* or friendship as well as *karuna* or compassion (two). (3) Some person gains in terms of *irshya* or jealousy as well as *kroorata* or cruelty (two) and looses in terms of *maitri* or friendship (one). (4) Some person gains in terms of *maitri* or friendship as well as *karuna* or compassion (two) and looses in terms of *irshya* or jealousy as well as *kroorta* or cruelty (two). (etc.)

### आकीर्ण—खलुंक—पद AAKIRNA-KHALUNK-PAD (SEGMENT OF TAME AND STUBBORN)

**४६८. चत्तारि पकंथगा पण्णत्ता, तं जहा—आइण्णे णाममेगे आइण्णे, आइण्णे णाममेगे खलुंके, खलुंके णाममेगे आइण्णे, खलुंके णाममेगे खलुंके।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आइण्णे णाममेगे आइण्णे चउभंगो [ आइण्णे णाममेगे खलुंके, खलुंके णाममेगे आइण्णे, खलुंके णाममेगे खलुंके ]।**

४६८. प्रकन्थक-घोड़े चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई घोड़ा पहले (आरम्भ से) भी आकीर्ण (सरल व तेज गति वाला) होता है और बाद में (जीवनभर) भी आकीर्ण रहता है। (२) कोई घोड़ा

पहले आकीर्ण होता है, किन्तु बाद मे खलुंक (मन्द गति और अड़ियल) हो जाता है। (३) कोई घोड़ा पहले खलुंक होता है, किन्तु बाद में आकीर्ण हो जाता है। (४) कोई घोड़ा पहले भी खलुंक होता है और बाद में भी खलुक ही रहता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष पहले भी आकीर्ण-(तीव्र बुद्धि और विनयवान) होता है और बाद में भी वैसा ही रहता है। (२) कोई पहले आकीर्ण (सरल व तीव्र बुद्धि) होता है, किन्तु पीछे खलुंक-(मन्द बुद्धि व अविनीत) हो जाता है। (३) कोई पहले तो खलुंक होता है, किन्तु पीछे आकीर्ण हो जाता है। (४) कोई पहले भी खलुक होता है और पीछे भी खलुंक ही रहता है।

**468.** *Prakanthak* (horses) are of four kinds—(1) some horse is initially *aakirna* (tame and fast) and remains *aakirna* all his life, (2) some horse is initially tame and fast but later becomes *khalunk* (stubborn and slow), (3) some horse is initially stubborn and slow but later becomes tame and fast, and (4) some horse is initially stubborn and slow and remains stubborn and slow all his life

In the same way *manushya* (men) are of four kinds—(1) some man is initially *aakirna* (modest and sharp) and remains *aakirna* all his life, (2) some man is initially modest and sharp but later becomes *khalunk* (stubborn and dumb), (3) some man is initially stubborn and dumb but later becomes modest and sharp, and (4) some man is initially stubborn and dumb and remains stubborn and dumb all his life.

४६९. चत्तारि पकंथगा पण्णत्ता, तं जहा—आइण्णे णाममेगे आइण्णताए वहति, आइण्णे णाममेगे खलुंकताए वहति ४। [ खलुंके णाममेगे आइण्णताए, खलुंके णाममेगे खलुंकताए ]।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—आइण्णे णाममेगे आइण्णताए वहति चउभंगो [ आइण्णे णाममेगे खलुंकताए वहति, खलुंके णाममेगे आइण्णताए वहति, खलुंके णाममेगे खलुंकताए वहति ]।

४६९. प्रकन्थक-घोडे चार प्रकार के होते है-(१) कोई घोडा आकीर्ण होता है और आकीर्णविहारी भी होता है अर्थात् आरोही पुरुष (सवार) को उत्तम रीति से ले जाता है। (२) कोई घोडा आकीर्ण होकर भी खलुंकविहारी होता है, अर्थात् आरोही को मार्ग मे अड़-अड़कर परेशान करता है। (३) कोई घोडा पहले खलुंक होता है, किन्तु पीछे आकीर्णविहारी हो जाता है। (४) कोई घोडा खलुंक (जिद्‌दी अड़ियल) होता है और खलुंकविहारी (सवारी के समय अडकर खडा हो जाने वाला) होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष बुद्धिमान् होता है और वैसा ही व्यवहार करता है। (२) कोई बुद्धिमान् तो होता है, किन्तु मूर्खों के समान व्यवहार करता है। (३) कोई

मन्द बुद्धि होता है, किन्तु बुद्धिमानों के समान व्यवहार करता है। (४) कोई मूर्ख होता है और मूर्खों के समान ही व्यवहार करता है।

(यहाँ पहला पद स्वभाव व प्रकृति की अपेक्षा से तथा दूसरा पद व्यवहार व आदत की अपेक्षा से समझना चाहिए।)

**469.** *Prakanthak* (horses) are of four kinds—(1) some horse is *aakirna* (tame and fast) and also *aakirna-vihari* (carries the rider smoothly), (2) some horse is tame and fast but still *khalunk-vihari* (torments the rider by balking), (3) some horse is *khalunk* (stubborn and slow) but *aakirna-vihari*, and (4) some horse is *khalunk* and also *khalunk-vihari*.

In the same way *manushya* (men) are of four kinds—(1) some man is wise and behaves wisely as well, (2) some man is wise but behaves like a fool, (3) some man is foolish but behaves like a wise person, and (4) some man is foolish and also behaves like a fool.

(here the first part of the statement is related to nature and the second part is related to behaviour)

### जाति-पद JATI-PAD (SEGMENT OF MATERNAL LINEAGE)

४७०. चत्तारि पकंथगा पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे। [ कुलसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि कुलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो कुलसंपण्णे ]।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे चउभंगो। [ णो कुलसंपण्णे, कुलसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि कुलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो कुलसंपण्णे ]।

४७०. घोड़े चार प्रकार के होते है-(१) कोई घोड़ा जातिसम्पन्न होता है, किन्तु कुलसम्पन्न नहीं होता। (२) कोई घोडा कुलसम्पन्न होता है, किन्तु जातिसम्पन्न नही। (३) कोई घोड़ा जातिसम्पन्न भी होता है और कुलसम्पन्न भी। (४) कोई घोड़ा न जातिसम्पन्न होता है और न कुलसम्पन्न होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई जातिसम्पन्न होता है, कुल सम्पन्न नहीं। (२) कुलसम्पन्न होता है, जातिसम्पन्न नही। (३) जातिसम्पन्न भी, कुलसम्पन्न भी। (४) जातिसम्पन्न न कुलसम्पन्न।

**470.** *Prakanthak* (horse) are of four kinds—(1) Some horse is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *kula sampanna* (of good paternal lineage). (2) Some horse is *kula sampanna* and not *jati sampanna*. (3) Some horse is both *jati sampanna* and *kula sampanna*. (4) Some horse is neither *jati sampanna* nor *kula sampanna*.

*Purush* (men) are also of four kinds—(1) Some man is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *kula sampanna* (of good paternal lineage). (2) Some man is *kula sampanna* and not *jati sampanna*. (3) Some man is both *jati sampanna* and *kula sampanna*. (4) Some man is neither *jati sampanna* nor *kula sampanna*.

**४७१. चत्तारि पकंथगा पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे। [ बलसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो बलसंपण्णे ]।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे। [ बलसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो बलसंपण्णे ]।**

४७१. घोड़े चार प्रकार के होते है–(१) कोई घोड़ा जातिसम्पन्न, किन्तु बलसम्पन्न नहीं। (२) बलसम्पन्न, किन्तु जातिसम्पन्न नही। (३) जातिसम्पन्न भी, बलसम्पन्न भी। (४) न जातिसम्पन्न, न बलसम्पन्न।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष जातिसम्पन्न होता है, बलसम्पन्न नही। (२) कोई बलसम्पन्न है, जातिसम्पन्न नही। (३) कोई जातिसम्पन्न भी और बलसम्पन्न भी। (४) कोई न जातिसम्पन्न, न ही बलसम्पन्न।

**471.** *Prakanthak* (horse) are of four kinds—(1) Some horse is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *bal sampanna* (strong). (2) Some horse is *bal sampanna* and not *jati sampanna* (3) Some horse is both *jati sampanna* and *bal sampanna* (4) Some horse is neither *jati sampanna* nor *bal sampanna*

*Purush* (men) are also of four kinds—(1) Some man is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *bal sampanna* (strong) (2) Some man is *bal sampanna* and not *jati sampanna* (3) Some man is both *jati sampanna* and *bal sampanna* (4) Some man is neither *jati sampanna* nor *bal sampanna*

**४७२. चत्तारि कंथगा पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे। [ रूवसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो रूवसंपण्णे ]।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे। [ रूवसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो रूवसंपण्णे ]।**

४७२. घोडे चार प्रकार के होते हैं–(१) जातिसम्पन्न होता है, किन्तु रूपसम्पन्न (सुन्दर) नहीं होता। (२) कोई रूपसम्पन्न, किन्तु जातिसम्पन्न नहीं। (३) कोई जातिसम्पन्न भी, रूपसम्पन्न भी, और (४) कोई न जातिसम्पन्न, न रूपसम्पन्न।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है-(१) जातिसम्पन्न, किन्तु रूपसम्पन्न नही। (२) रूपसम्पन्न, किन्तु जातिसम्पन्न नहीं। (३) जातिसम्पन्न भी, रूपसम्पन्न भी, और (४) न जातिसम्पन्न, न रूपसम्पन्न।

**472.** *Prakanthak* (horse) are of four kinds—(1) Some horse is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *rupa sampanna* (beautiful). (2) Some horse is *rupa sampanna* and not *jati sampanna.* (3) Some horse is both *jati sampanna* and *rupa sampanna* (4) Some horse is neither *jati sampanna* nor *rupa sampanna*.

*Purush* (men) are also of four kinds—(1) Some man is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *rupa sampanna* (beautiful). (2) Some man is *rupa sampanna* and not *jati sampanna* (3) Some man is both *jati sampanna* and rupa sampanna. (4) Some man is neither *jati sampanna* nor *rupa sampanna*.

**४७३. चत्तारि कंथगा पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे णाममेगे णो जयसंपण्णे। [ जयसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि जयसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो जयसंपण्णे ]।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—जातिसंपण्णे। [ णाममेगे णो जयसंपण्णे, जयसंपण्णे णाममेगे णो जातिसंपण्णे, एगे जातिसंपण्णेवि जयसंपण्णेवि, एगे णो जातिसंपण्णे णो जयसंपण्णे ]।**

४७३. घोडे चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई घोडा जातिसम्पन्न होता है, किन्तु जयसम्पन्न (विजय प्राप्त कराने वाला) नही होता। (२) कोई घोडा जयसम्पन्न होता है, किन्तु जातिसम्पन्न नही। (३) कोई घोडा जातिसम्पन्न भी होता है और जयसम्पन्न भी। (४) कोई घोडा न जातिसम्पन्न और न जयसम्पन्न होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है-(१) कोई पुरुष जातिसम्पन्न होता है, जय सम्पन्न नही। (२) कोई जयसम्पन्न होता है, जाति सम्पन्न नहीं। (३) कोई जयसम्पन्न भी, जातिसम्पन्न भी। (४) कोई न जातिसम्पन्न, न जयसम्पन्न।

**473.** *Prakanthak* (horse) are of four kinds—(1) Some horse is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *jaya sampanna* (instrumental in victory). (2) Some horse is *jaya sampanna* and not *jati sampanna*. (3) Some horse is both *jati sampanna* and *jaya sampanna.* (4) Some horse is neither *jati sampanna* nor *jaya sampanna*.

***Purush*** (men) are also of four kinds—(1) Some man is *jati sampanna* (of good maternal lineage) and not *jaya sampanna* (victorious). (2) Some

man is *jaya sampanna* and not *jati sampanna*. (3) Some man is both *jati sampanna* and *jaya sampanna* (4) Some man is neither *jati sampanna* nor *jaya sampanna*.

**कुल–पद KULA-PAD (SEGMENT OF BEAUTY)**

**४७४. एवं कुलसंपण्णेण य बलसंपण्णेण य, कुलसंपण्णेण य रूवसंपण्णेण य, कुलसंपण्णेण य जयसंपण्णेण य, एवं बलसंपण्णेण य रूवसंपण्णेण य, बलसंपण्णेण जयसंपण्णेण ४ सव्वत्थ पुरिसजाया पडिवक्खो [ चत्तारि पकंथगा पण्णत्ता, तं जहा–कुलसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, बलसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो बलसंपण्णे ]।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–कुलसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, बलसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि बलसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो बलसंपण्णे।**

**४७५. चत्तारि पकंथगा पण्णत्ता, तं जहा–कुलसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो रूवसंपण्णे।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–कुलसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो रूवसंपण्णे।**

**४७६. चत्तारि पकंथगा पण्णत्ता, तं जहा–कुलसंपण्णे णाममेगे णो जयसंपण्णे, जयसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि जयसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो जयसंपण्णे।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–कुलसंपण्णे णाममेगे णो जयसंपण्णे, जयसंपण्णे णाममेगे णो कुलसंपण्णे, एगे कुलसंपण्णेवि जयसंपण्णेवि, एगे णो कुलसंपण्णे णो जयसंपण्णे।**

४७४. इसी प्रकार कुलसम्पन्न और बलसम्पन्न, कुलसम्पन्न और रूपसम्पन्न, कुलसम्पन्न और जयसम्पन्न, बलसम्पन्न और रूपसम्पन्न, बलसम्पन्न और जयसम्पन्न–इनके साथ चतुर्भंगी समझनी चाहिए। सभी जगह घोडे के प्रतिपक्ष की तुलना पुरुष से करे। जैसे–घोडे चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई घोड़ा कुलसम्पन्न होता है, किन्तु बलसम्पन्न नही होता। (२) कोई बलसम्पन्न होता है, किन्तु कुलसम्पन्न नहीं। (३) कोई कुलसम्पन्न भी और बलसम्पन्न भी। (४) कोई न कुलसम्पन्न और न ही बलसम्पन्न होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई पुरुष कुलसम्पन्न होता है, बलसम्पन्न नहीं। (२) कोई बलसम्पन्न होता है, कुलसम्पन्न नही। (३) कोई कुलसम्पन्न भी और बलसम्पन्न भी, और (४) कोई न कुलसम्पन्न और न ही बलसम्पन्न होता है।

४७५. घोडे चार प्रकार के होते हैं–(१) कोई घोड़ा कुलसम्पन्न होता है, रूपसम्पन्न नहीं। (२) कोई रूपसम्पन्न तो होता है, कुलसम्पन्न नही, (३) कोई कुलसम्पन्न भी और रूपसम्पन्न भी, और (४) कोई न कुलसम्पन्न और न रूपसम्पन्न होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष कुलसम्पन्न होता है, रूपसम्पन्न नहीं। (२) कोई रूपसम्पन्न होता है, कुलसम्पन्न नहीं। (३) कोई कुलसम्पन्न भी और रूपसम्पन्न भी, और (४) कोई न कुलसम्पन्न, न ही रूपसम्पन्न होता है।

४७६. घोड़े चार प्रकार के होते है-(१) कोई घोडा कुलसम्पन्न होता है, किन्तु जयसम्पन्न नहीं। यहाँ जयसम्पन्न का अर्थ है-निर्भीक व साहसी। (२) कोई जयसम्पन्न होता है, किन्तु कुलसम्पन्न नहीं। (३) कोई कुलसम्पन्न भी होता है और जयसम्पन्न भी। (४) कोई न कुलसम्पन्न ही होता है और न जयसम्पन्न ही।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष कुलसम्पन्न होता है, जयसम्पन्न (सफल) नहीं होता। (२) कोई जयसम्पन्न होता है, किन्तु कुलसम्पन्न नहीं। (३) कोई कुलसम्पन्न भी, जयसम्पन्न भी, और (४) कोई न कुलसम्पन्न और न ही जयसम्पन्न होता है।

**474.** In the same way four alternatives each should be read for combinations of *kula sampanna* and *bala sampanna*, *kula sampanna* and *rupa sampanna*, *kula sampanna* and *jaya sampanna*, *bala sampanna* and *rupa sampanna*, and *bala sampanna* and *jaya sampanna* And qualities of horse should be repeated with man. For example—*Prakanthak* (horse) are of four kinds—(1) Some horse is *kula sampanna* (of good paternal lineage) and not *bal sampanna* (strong). (2) Some horse is *bal sampanna* and not *kula sampanna*. (3) Some horse is both *kula sampanna* and *bal sampanna*. (4) Some horse is neither *kula sampanna* nor *bal sampanna*.

*Purush* (men) are also of four kinds—(1) Some man is *kula sampanna* (of good paternal lineage) and not *bal sampanna* (strong). (2) Some man is *bal sampanna* and not *kula sampanna*. (3) Some man is both *kula sampanna* and *bal sampanna*. (4) Some man is neither *kula sampanna* nor *bal sampanna*.

**475.** *Prakanthak* (horse) are of four kinds—(1) Some horse is *kula sampanna* (of good paternal lineage) and not *rupa sampanna* (beautiful). (2) Some horse is *rupa sampanna* and not *kula sampanna*. (3) Some horse is both *kula sampanna* and *rupa sampanna*. (4) Some horse is neither *kula sampanna* nor *rupa sampanna*.

Purush (men) are also of four kinds—(1) Some man is *kula sampanna* (of good paternal lineage) and not *rupa sampanna* (beautiful). (2) Some man is *rupa sampanna* and not *kula sampanna*. (3) Some man is both

*kula sampanna* and *rupa sampanna*. (4) Some man is neither *kula sampanna* nor *rupa sampanna*.

**476.** *Prakanthak* (horse) are of four kinds—(1) Some horse is *kula sampanna* (of good paternal lineage) and not *jaya sampanna* (instrumental in victory). (2) Some horse is *jaya sampanna* and not *kula sampanna*. (3) Some horse is both *kula sampanna* and *jaya sampanna*. (4) Some horse is neither *kula sampanna* nor *jaya sampanna*.

*Purush* (men) are also of four kinds—(1) Some man is *kula sampanna* (of good paternal lineage) and not jaya sampanna (victorious). (2) Some man is *jaya sampanna* and not *kula sampanna* (3) Some man is both *kula sampanna* and *jaya sampanna*. (4) Some man is neither *kula sampanna* nor *jaya sampanna*.

### बल–पद BAL-PAD (SEGMENT OF STRENGTH)

**४७७. चत्तारि पकंथगा पण्णत्ता, तं जहा–बलसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, एगे बलसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो बलसंपण्णे णो रूवसंपण्णे।**

**एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–बलसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, रूवसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, एगे बलसंपण्णेवि रूवसंपण्णेवि, एगे णो बलसंपण्णे णो रूवसंपण्णे।**

४७७. घोडे चार प्रकार के होते है–(१) कोई घोडा बलसम्पन्न होता है, किन्तु रूपसम्पन्न नही होता। (२) कोई रूपसम्पन्न तो होता है, किन्तु बलसम्पन्न नही। (३) कोई बलसम्पन्न भी होता है और रूपसम्पन्न भी। (४) कोई न बलसम्पन्न होता है और न रूपसम्पन्न ही होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते है–(१) कोई पुरुष बलसम्पन्न होता है, किन्तु रूपसम्पन्न नही होता। (२) कोई रूपसम्पन्न होता, किन्तु बलसम्पन्न नहीं। (३) कोई बलसम्पन्न भी होता है और रूपसम्पन्न भी। (४) कोई न बलसम्पन्न और न रूपसम्पन्न ही होता है।

**477.** *Prakanthak* (horse) are of four kinds—(1) Some horse is *bal sampanna* (strong) and not *rupa sampanna* (beautiful). (2) Some horse is *rupa sampanna* and not *bal sampanna*. (3) Some horse is both *bal sampanna* and *rupa sampanna* (4) Some horse is neither *bal sampanna* nor *rupa sampanna*.

*Purush* (men) are also of four kinds—(1) Some man is *bal sampanna* (strong) and not *rupa sampanna* (beautiful). (2) Some man is *rupa sampanna* and not *bal sampanna* (3) Some man is both *bal sampanna* and *rupa sampanna*. (4) Some man is neither *bal sampanna* nor *rupa sampanna*.

४७८. चत्तारि पकंथगा पण्णत्ता, तं जहा—बलसंपण्णे णाममेगे णो जयसंपण्णे, जयसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, एगे बलसंपण्णेवि जयसंपण्णेवि, एगे णो बलसंपण्णे णो जयसंपण्णे।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—बलसंपण्णे णाममेगे णो जयसंपण्णे, जयसंपण्णे णाममेगे णो बलसंपण्णे, एगे बलसंपण्णेवि जयसंपण्णेवि, एगे णो बलसंपण्णे णो जयसंपण्णे।

४७८. घोड़े चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई घोडा बलसम्पन्न होता है, जयसम्पन्न नहीं होता। (२) कोई जयसम्पन्न होता है, बलसम्पन्न नहीं। (३) कोई बलसम्पन्न भी होता है और जयसम्पन्न भी। (४) कोई न बलसम्पन्न ही होता है और न जयसम्पन्न ही।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष बलसम्पन्न होता है, किन्तु जयसम्पन्न नहीं होता। (२) कोई जयसम्पन्न होता है, किन्तु बलसम्पन्न नहीं। (३) कोई बलसम्पन्न भी होता है और जयसम्पन्न भी। (४) कोई न बलसम्पन्न और न जयसम्पन्न ही होता है।

**478.** *Prakanthak* (horse) are of four kinds—(1) Some horse is *bal sampanna* (strong) and not *jaya sampanna* (instrumental in victory). (2) Some horse is *jaya sampanna* and not *bal sampanna*. (3) Some horse is both *bal sampanna* and *jaya sampanna*. (4) Some horse is neither *bal sampanna* nor *jaya sampanna*

*Purush* (men) are also of four kinds—(1) Some man is *bal sampanna* (strong) and not *jaya sampanna* (victorious) (2) Some man is *jaya sampanna* and not *bal sampanna*. (3) Some man is both *bal sampanna* and *jaya sampanna* (4) Some man is neither *bal sampanna* nor *jaya sampanna*

**रूप—पद RUPA-PAD (SEGMENT OF BEAUTY)**

४७९. चत्तारि पकंथगा पण्णत्ता, तं जहा—रूवसंपण्णे णाममेगे णो जयसंपण्णे ४। [ जयसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, एगे रूवसंपण्णेवि जयसंपण्णेवि, एगे णो रूवसंपण्णे णो जयसंपण्णे ]।

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—रूवसंपण्णे णाममेगे णो जयसंपण्णे, [ जयसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे, एगे रूवसंपण्णेवि जयसंपण्णेवि, एगे णो रूवसंपण्णे णो जयसंपण्णे ]।

४७९. घोड़े चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई घोडा रूपसम्पन्न होता है, किन्तु जयसम्पन्न नहीं होता। (२) कोई जयसम्पन्न होता है, किन्तु रूपसम्पन्न नहीं। (३) कोई रूपसम्पन्न भी होता है और जयसम्पन्न भी। (४) कोई न रूपसम्पन्न है और न जयसम्पन्न ही होता है।

इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं-(१) कोई पुरुष रूपसम्पन्न होता है, किन्तु जयसम्पन्न नहीं। (२) कोई जयसम्पन्न तो होता है, किन्तु रूपसम्पन्न नही। (३) कोई रूपसम्पन्न भी और जयसम्पन्न भी होता है। (४) कोई न रूपसम्पन्न और न जयसम्पन्न ही होता है।

**479.** ***Prakanthak*** **(horse) are of four kinds—(1) Some horse is *rupa sampanna* (beautiful) and not *jaya sampanna* (instrumental in victory). (2) Some horse is *jaya sampanna* and not *rupa sampanna*. (3) Some horse is both *rupa sampanna* and *jaya sampanna*. (4) Some horse is neither *rupa sampanna* nor *jaya sampanna*.**

***Purush*** **(men) are also of four kinds—(1) Some man is *rupa sampanna* (beautiful) and not *jaya sampanna* (victorious). (2) Some man is *jaya sampanna* and not *rupa sampanna*. (3) Some man is both *rupa sampanna* and jaya sampanna (4) Some man is neither *rupa sampanna* nor *jaya sampanna***

**विवेचन**—संस्कृत भाषा में घोड़ो के लिए दो शब्द आते हैं—**कन्थक**—सामान्य जाति के घोडे, **प्रकन्थक**—विशेष जाति के घोडे। इसी प्रकार घोडो की चित्राली, अरबी, उराली, सिंधी आदि अनेक जातियाँ (नस्लें) होती हैं। जाति के कारण घोड़ो के गुण भी भिन्न-भिन्न होते हैं। जैसे—अरबी घोड़ा भागने में तेज नहीं होता, किन्तु निर्भीक होता है। उराली घोडा भागने में जितना तेज होता है, उतना निर्भीक नहीं होता। (हिन्दी टीका, पृष्ठ ९७७ से ९८०)

**Elaboration**—In Sanskrit language there are two terms for horses—*kanthak* or horses of ordinary breed and *prakanthak* or horses of special breed. There are numerous such special breeds, namely Chitrali, Arabian, Urali, Sindhi etc Based on breed, horses have different qualities. For example an Arabian horse is not fast but fearless. Urali horse is fast but not so fearless.

In these aphorisms various facets of human character, behaviour and nature have been explained using horse as a metaphor. (*Hindi Tika*, pp. 977-980)

## सिंह-शृगाल-पद SIMHA-SHRIGAAL-PAD (SEGMENT OF LION AND JACKAL)

**४८०. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—सीहत्ताए णाममेगे णिक्खंते सीहत्ताए विहरइ, सीहत्ताए णाममेगे णिक्खंते सीयालत्ताए विहरइ, सीयालत्ताए णाममेगे णिक्खंते सीहत्ताए विहरइ, सीयालत्ताए णाममेगे णिक्खंते सीयालत्ताए विहरइ।**

४८०. [प्रव्रज्या ग्रहण कर उनका पालन करने वाले] पुरुष चार प्रकार के होते हैं—(१) कोई पुरुष सिंहवृत्ति (वीरता) से निष्क्रांत-प्रव्रजित होता है और सिंहवृत्ति से ही विचरता है। (२) कोई सिंहवृत्ति से प्रव्रजित होता है, किन्तु शृगालवृत्ति (दीनता) से विचरता है। (३) कोई शृगालवृत्ति से निष्क्रान्त होता है, किन्तु सिंहवृत्ति से विचरता है। (४) कोई शृगालवृत्ति से निष्क्रान्त होता है और शृगालवृत्ति से ही विचरता है।

**480.** ***Purush*** **(men) are also of four kinds (those who get initiated and follow the ascetic way)—(1) Some man gets initiated (*nishkrant*) with *simha-vritti* (lion-like attitude; fearless) and moves about with lion-like attitude. (2) Some man gets initiated with lion-like attitude but moves about with *shrigaal-vritti* (jackal-like attitude; cowardly). (3) Some man gets initiated with jackal-like attitude but moves about with lion-like attitude. (4) Some man gets initiated with jackal-like attitude but moves about also with jackal-like attitude.**

**विवेचन**—सिंहवृत्ति का अभिप्राय है—सिंह के समान निर्भीकता, साहसिकता तथा संशयमुक्त होकर किसी सहायता की अपेक्षा किये बिना चलना। शृगालवृत्ति का अभिप्राय है—कठिनाइयों से डर जाना, दूसरों की सहायता या आश्रय की अपेक्षा रखना तथा घबराकर बीच में ही अधीर हो जाना।

**Elaboration**—*Simha-vritti* means to move about fearlessly, courageously and free of hesitation without any expectation of assistance from any direction. *Shrigaal-vritti* means to be afraid in face of difficulties, to expect help from or refuge with others and to lose poise and patience.

**सम–पद SAM-PAD (SEGMENT OF SIMILARITY)**

**४८१. चत्तारि लोगे समा पण्णत्ता, तं जहा—अपइट्ठाणे णरए, जंबुद्दीवे दीवे, पालए जाणविमाणे, सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे।**

४८१. लोक मे चार स्थान समान हैं। ये चारों ही एक लाख योजन विस्तार वाले हैं)। जैसे—(१) अप्रतिष्ठान नरक—अधोलोक मे सातवें नरक के पाँच नारकावासों में से मध्यवर्ती एक नारकावास। (२) मध्यलोक का जम्बूद्वीप नामक द्वीप। (३) पालकयान—विमान—ऊर्ध्वलोक में सौधर्मेन्द्र का यात्रा-विमान। (४) सर्वार्थसिद्ध महाविमान—पाँच अनुत्तर विमानों में मध्यवर्ती विमान।

**481.** In *Lok* (universe) four places are *sam* (similar or equal)—(1) *Apratishthan narak*—the middle infernal abode among the five abodes of the seventh hell in the lower world, (2) Jambu continent in the middle world, (3) *Paalakayan vimaan*—the commuting celestial vehicle of Saudharmendra in the upper world, and (4) *Sarvarthasiddha mahavimaan*—the middle *vimaan* among the five *Anuttar vimaans*. (all these have an area of one hundred thousand *Yojans*)

**४८२. चत्तारि लोगे समा सपक्खिं सपडिदिसिं पण्णत्ता, तं जहा—सीमंतए णरए, समयक्खेत्ते, उडुविमाणे, इसीपब्भारा पुढवी।**

४८२. लोक में चार सम—(पैंतालीस लाख योजन के समान विस्तार वाले), सपक्ष—(समान पार्श्व वाले) और सप्रतिदिश—(समान दिशा और विदिशा वाले) हैं)। जैसे—(१) सीमन्तक नरक—पहले नरक

का मध्यवर्ती प्रथम नारकावास। (२) समयक्षेत्र–मनुष्य क्षेत्र–अढाई द्वीप। (३) उडुविमान–सौधर्म कल्प के प्रथम प्रस्तर का मध्यवर्ती उडु नामक विमान। (४) ईषत्प्राग्भारा–पृथ्वी–लोक के अग्र भाग पर अवस्थित भूमि (सिद्धालय)।

**482.** In *Lok* (universe) four places are *sam* (equal having an area of four million five hundred thousand *Yojans*), *sapaksh* (similar in flanks) and *sapratidish* (similar in directions and intermediate directions)—(1) *Simantak narak*—the middle infernal abode of the first hell, (2) *Samaya kshetra*—the land of humans or the Adhai Dveep, (3) *Udduvimaan*—the middle *vimaan* of the first level of *Saudharma Kalp* and (4) *Ishatpragbhara prithvi*—the area located at the edge of universe or the abode of *Siddhas*.

### द्विशरीर–पद DVISHARIRA-PAD (SEGMENT OF TWO BODIES)

**४८३. उड्ढलोगे णं चत्तारि बिसरीरा पण्णत्ता, तं जहा–पुढविकाइया, आउकाइया, वणस्सकाइया, उराला तसा पाणा। ४८४. अहोलोगे णं चत्तारि बिसरीरा पण्णत्ता, तं जहा–एवं चेव, (पुढविकाइया, आउकाइया, वणस्सकाइया, उराला तसा पाणा। ४८५. एवं तिरियलोगे वि (णं चत्तारि बिसरीरा पण्णत्ता, तं जहा–एवं चेव, (पुढविकाइया, आउकाइया, वणस्सकाइया, उराला तसा पाणा।**

४८३. ऊर्ध्वलोक मे चार द्विशरीरी (दूसरे जन्म मे शरीर धारण कर सिद्धगति प्राप्त कर सकते हैं)–(१) पृथ्वीकायिक, (२) अप्कायिक, (३) वनस्पतिकायिक, (४) उदार (संज्ञी पचेन्द्रिय) त्रस प्राणी। ४८४. अधोलोक मे चार द्विशरीरी है–(१) पृथ्वीकायिक, (२) अप्कायिक, (३) वनस्पतिकायिक, (४) उदार त्रस प्राणी। ४८५. तिर्यक्लोक मे चार द्विशरीरी है–(१) पृथ्वीकायिक, (२) अप्कायिक, (३) वनस्पतिकायिक, (४) उदार त्रस प्राणी।

**483.** There are four *dvisharirıs* (those who may get liberated during the next incarnation) in *urdhvalok* (upper world)—(1) *prithvikayik* (earth-bodied beings), (2) *apkayik* (water-bodied beings), (3) *vanaspatikayik* (plant-bodied beings) and (4) *udaar tras prani* (sentient five sensed beings). **484.** There are four *dvishariris* (those who may get liberated during the next incarnation) in *adholok* (lower world)—(1) *prithvikayik* (earth-bodied beings), (2) *apkayik* (water-bodied beings), (3) *vanaspatikayik* (plant-bodied beings), and (4) *udaar tras prani* (sentient five sensed beings). **485.** There are four *dvishariris* (those who may get liberated during the next incarnation) in the *tiryaklok* (transverse world)—(1) *prithvikayik* (earth-bodied beings), (2) *apkayik* (water-bodied beings), (3) *vanaspatikayik* (plant-bodied beings), and (4) *udaar tras prani* (sentient five sensed beings).

विवेचन–उक्त तीनों सूत्रों में छह कायिक जीवो में से अग्निकायिक और वायुकायिक जीवों को छोड़ दिया गया है, इसका कारण है, वे मरकर मनुष्यों में उत्पन्न नहीं होते और इसीलिए वे दूसरे भव में सिद्ध नहीं हो सकते। छहों कायों में जो सूक्ष्म जीव हैं, वे भी मरकर अगले भव मे मनुष्य न हो सकने के कारण मुक्त नहीं हो सकते। त्रस के साथ 'उदार' विशेषण से यह सूचित किया गया है कि विकलेन्द्रिय त्रस प्राणी भी अगले भव में सिद्ध नहीं हो सकते। अतः संज्ञी पंचेन्द्रिय त्रस जीवो को 'उदार त्रस प्राणी' पद से ग्रहण करना चाहिए। द्विशरीरी का अर्थ है–एक वर्तमान भव का शरीर तथा एक अगले भव का मनुष्य शरीर जिससे मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।

**Elaboration**—In the three aforesaid aphorisms fire-bodied and air-bodied beings have been excluded. The reason is that they do not reincarnate as human beings and therefore they cannot attain liberation during next birth. The minute (*sukshma*) beings in all the six life forms also do not reincarnate as humans and so they too-cannot get liberated. The adjective *udaar* with *tras* indicates that *vikalendriya* (one to four sensed) beings also cannot get liberated during the next birth. Thus the phrase '*udaar tras prani*' should be interpreted as sentient mobile beings. *Dvisharin* means having two bodies or the present body and the human body during the next birth when liberation may be attained

### सत्त्व–पद SATTVA-PAD (SEGMENT OF COURAGE)

४८६. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा–हिरिसत्ते, हिरिमणसत्ते, चलसत्ते, थिरसत्ते।

४८६. पुरुष चार प्रकार के होते हैं। जैसे–(१) ह्रीसत्त्व–विषम परिस्थिति मे भी लज्जावश कायर न होने वाला। (२) ह्रीमनःसत्त्व–भयवश शरीर मे रोमाच, कम्पनादि होने पर भी मन मे दृढता रखने वाला। (३) चलसत्त्व–परीषहादि आने पर विचलित होने वाला। (४) स्थिरसत्त्व–उग्र से उग्र परीषह और उपसर्ग आने पर भी स्थिर रहने वाला।

**486.** *Purush* (men) are of four kinds—(1) *Hri-sattva*—who, in adverse conditions, does not show cowardice for face-saving. (2) *Hrimanah-sattva*—who remains mentally strong even when his body trembles with fear. (3) *Chal-sattva*—who gets disturbed in face of afflictions. (4) *Sthir-sattva*—who is unmoved even by gravest afflictions

### प्रतिमा–पद PRATIMA-PAD (SEGMENT OF SPECIAL CODES AND RESOLUTIONS)

४८७. चत्तारि सेज्जपडिमाओ पण्णत्ताओ। ४८८. चत्तारि वत्थपडिमाओ पण्णत्ताओ। ४८९. चत्तारि पायपडिमाओ पण्णत्ताओ। ४९०. चत्तारि ठाणपडिमाओ पण्णत्ताओ।

४८७. चार शय्या-प्रतिमाएँ (शय्या सम्बन्धी अभिग्रह या प्रतिज्ञाएँ) कही गई हैं। ४८८. चार वस्त्र-प्रतिमाएँ (वस्त्र सम्बन्धी प्रतिज्ञाएँ) कही गई हैं। ४८९. चार पात्र सम्बन्धी प्रतिमाएँ (पात्र-प्रतिज्ञाएँ) कही गई हैं। ४९०. चार स्थान-प्रतिमाएँ (स्थान सम्बन्धी प्रतिज्ञाएँ) कही गई हैं।

**487.** There are four *shayya-pratimas* (special codes and resolutions related to bed). **488.** There are four *vastra-pratimas* (special codes and resolutions related to dress). **489.** There are four *paatra-pratimas* (special codes and resolutions related to begging-bowls). **490.** There are four *sthaan-pratimas* (special codes and resolutions related to place of stay).

**विवेचन**-साधु अपनी आवश्यकता के अनुसार शय्या, वस्त्र, पात्र और स्थान की याचना करता है परन्तु उसमें भी विभिन्न प्रकार के अभिग्रह धारण कर मर्यादा करता है। यहाँ पर केवल उनका नामोल्लेख है। आयारचूला के आधार पर टीकाकार ने चारों प्रतिमाओं का स्वरूप इस प्रकार बताया है-

**१. शय्या-प्रतिमा के चार प्रकार-**

(१) (श्रमण प्रतिज्ञा/अभिग्रह धारण करता है) मेरे नाम से उद्दिष्ट-घोषित या संकल्पित शय्या मिलेगी तो ग्रहण करूँगा, अनुद्दिष्ट अन्य शय्या को नहीं ग्रहण करूँगा। (२) मेरे लिए उद्दिष्ट शय्या को यदि मैं देखूँगा तो उसे ग्रहण करूँगा, अनुद्दिष्ट और अदृष्ट शय्या को नहीं ग्रहण करूँगा। (३) मेरे लिए उद्दिष्ट शय्या यदि शय्यातर के घर में होगी तो उसे ग्रहण करूँगा, अन्यथा नहीं। (४) मेरे लिए उद्दिष्ट शय्या यदि सहज बिछी हुई मिलेगी तो उसे ग्रहण करूँगा, अन्यथा नहीं।

**२. वस्त्र-प्रतिमा के चार प्रकार-**

(१) मेरे लिए उद्दिष्ट वस्त्र की ही याचना करूँगा, अन्य की नही। (२) मेरे लिए उद्दिष्ट वस्त्र को यदि देखूँगा तो उसकी ही याचना करूँगा, अन्य की नहीं। (३) मेरे लिए उद्दिष्ट और घोषित वस्त्र यदि शय्यातर के द्वारा उपयोग मे लाया हुआ हो तो उसकी याचना करूँगा, अन्य की नहीं। (४) मेरे लिए उद्दिष्ट और घोषित वस्त्र यदि शय्यातर के द्वारा फैंक देने योग्य हो तो उसकी याचना करूँगा, अन्य की नहीं।

**३. पात्र-प्रतिमा के चार प्रकार-**

(१) मेरे लिए उद्दिष्ट काष्ठ-पात्र आदि की मैं याचना करूँगा, अन्य की नहीं। (२) मेरे लिए उद्दिष्ट पात्र को यदि मैं देखूँगा तो उसकी याचना करूँगा, अन्य की नहीं। (३) मेरे लिए उद्दिष्ट पात्र यदि दाता

का निजी है और उसके द्वारा उपयोग में लिया हुआ है तो मैं याचना करूँगा, अन्यथा नहीं। (४) मेरे लिए उद्दिष्ट पात्र यदि दाता का निजी है, उपभुक्त है और उसके द्वारा छोड़ने–त्याग देने के योग्य है तो मैं याचना करूँगा, अन्य नहीं।

**४. स्थान–प्रतिमा के चार प्रकार–**

(१) कायोत्सर्ग, ध्यान और स्वाध्याय के लिए मैं जिस उपाश्रय में ठहरा हूँ, उस स्थान का आश्रय लूँगा, वहाँ पर ही मैं हाथ–पैर पसारूँगा, वहीं पर सीमित–विचरण करूँगा और भींत आदि का सहारा लूँगा, अन्यथा नहीं। (२) स्वीकृत स्थान में ठहरूँगा, किन्तु इधर–उधर नहीं घूमूँगा। (३) स्वीकृत स्थान में भी भींत आदि का सहारा नहीं लूँगा। (४) स्वीकृत स्थान में भी मैं न हाथ–पैर पसारूँगा, न भित्ति आदि का सहारा लूँगा, न पाद–विचरण करूँगा। किन्तु जैसा कायोत्सर्ग, पद्मासन या अन्य आसन से स्थिर होऊँगा, नियत काल तक तथैव स्थिर रहूँगा।

**Elaboration**—An ascetic seeks bed, dress, begging-bowl and place of stay according to his needs However, he further limits these by taking various special resolves Only their name have been mentioned here. On the basis of *Ayar-chula* the commentator (*Tika*) has described them as follows—

(a) *Shayya-pratimas* (special codes and resolutions related to bed)—

An ascetic resolves that—(1) I will accept only a bed that is specifically meant for me, not otherwise (2) I will accept only a bed which I see and which is specifically meant for me, not otherwise. (3) I will accept only a bed that is specifically meant for me and is lying in the house of a *shayyatar* (person who provides facilities for staying overnight), not otherwise. (4) I will accept only a bed that is specifically meant for me and is ready for use in ordinary course, not otherwise

(b) *Vastra-pratimas* (special codes and resolutions related to dress)—

An ascetic resolves that—(1) I will seek only a dress that is specifically meant for me, not any other (2) I will seek only a dress which I see and which is specifically meant for me, not any other. (3) I will seek only a dress that is specifically meant for me and has already been used by the *shayyatar*, not any other (4) I will seek only a dress that is specifically meant for me and is worth discarding by the *shayyatar*, not any other.

(c) ***Paatra-pratimas*** **(special codes and resolutions related to begging-bowls)—**

An ascetic resolves that—(1) I will seek only a begging-bowl (wooden etc.) that is specifically meant for me, not any other. (2) I will seek only a begging-bowl which I see and which is specifically meant for me, not any other. (3) I will seek only a begging-bowl that is specifically meant for me, belongs to the donor and has been used by him, not any other. (4) I will seek only a begging-bowl that is specifically meant for me, belongs to the donor, has been used by him and is worth discarding, not any other.

(d) *Sthaan-pratimas* (special codes and resolutions related to place of stay)—

An ascetic resolves that—(1) I will rest, spread my limbs, limit my movement and lean on the walls (etc.) only within the *upashraya* (place of stay for ascetics) where I stay for *kayotsarg* (a meditational practice of dissociating oneself from his body), meditation and studies, not otherwise (2) I will stay only in the accepted area and not move around. (3) Even in the accepted area of stay I will not lean on the walls (etc ) (4) Even in the accepted area I will neither spread my limbs, nor lean on the walls (etc.) or move on feet Instead, for a specified period I will remain unmoving in *kayotsarg*, lotus or other yogic posture accepted by me.

### शरीर–पद SHARIRA-PAD (SEGMENT OF BODY)

**४९१. चत्तारि सरीरगा जीवफुडा पण्णत्ता, तं जहा—वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए।**

४९१. चार शरीर जीव–स्पृष्ट कहे गये हैं, जैसे–(१) वैक्रियशरीर, (२) आहारकशरीर, (३) तैजसशरीर, (४) कार्मणशरीर।

**491.** Four *sharira* (bodies) are said to be *jiva-sprisht* (soul-linked)—(1) *vaikriya sharira* (transmutable body), (2) *aharak sharira* (telemigratory body), (3) *taijas sharira* (fiery body), and (4) *karman sharira* (*karmic* body).

**४९२. चत्तारि सरीरगा कम्मुमीसगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए।**

४९२. चार शरीर कार्मणशरीर से संयुक्त कहे गये हैं–(१) औदारिकशरीर, (२) वैक्रियशरीर, (३) आहारकशरीर, (४) तैजसशरीर।

**492.** Four *sharira* (bodies) are said to be united with ***karman sharira*** (*karmic* body)—(1) *audarik sharira* (gross physical body), (2) *vaikriya*

*sharira* (transmutable body), (3) *aharak sharira* (telemigratory body), and (4) *taijas sharira* (fiery body).

**विवेचन**—शरीर पाँच प्रकार के बताये हैं—औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस और कार्मण। इनमें औदारिक शरीर को छोड़कर शेष चार शरीर को 'जीव-स्पृष्ट' कहा है। वैक्रिय आदि चार शरीरों को जीव-स्पृष्ट कहने का अभिप्राय यह है कि ये चारों शरीर सदा जीव से व्याप्त ही मिलेंगे। जीव से रहित वैक्रिय आदि शरीरों की सत्ता कभी सम्भव नहीं है अर्थात् जीव द्वारा त्यक्त वैक्रिय आदि शरीर पृथक् रूप से कभी नहीं मिलेंगे। जीव के बहिर्गमन करते ही वैक्रिय आदि शरीरों के पुद्गल-परमाणु तत्काल बिखर जाते हैं, उनका कोई चिन्ह शेष नहीं रहता। किन्तु औदारिकशरीर की स्थिति उक्त चारो शरीरो से भिन्न है। औदारिकशरीर जीव के त्याग देने पर भी हाड़-माँस बचा रहता है।

चार शरीरों को कार्मणशरीर से संयुक्त कहने का अर्थ यह है कि अकेला कार्मणशरीर कभी नहीं पाया जाता है। जब भी और जिस किसी भी गति में वह मिलेगा, तब वह औदारिक आदि चार शरीरों में से किसी एक, दो या तीन के साथ सम्मिश्र या संयुक्त ही मिलेगा।

**Elaboration**—There are five bodies—*audarik sharira* (gross physical body), *vaikriya sharira* (transmutable body), *aharak sharira* (telemigratory body), *taijas sharira* (fiery body) and *karman sharira* (*karmic* body). Out of these, except gross physical body, the remaining four are said to be *jiva-sprisht* (soul-linked). This is because all these four bodies are always found linked with soul. Existence of these four bodies including *vaikriya* independent of soul is never possible. In other words any of these four bodies left by soul have no existence. With the exit of soul the subtle constituent particles at once disintegrate leaving no sign. *Audarik sharira* is different than these because even when the soul abandons, it remains in the form of flesh and bones.

The statement that *karman sharira* is united with four bodies conveys that it has no independent existence. Whenever and wherever it is found it is always found united with one, two or three of the other four kinds of bodies.

### स्पृष्ट-पद SPRISHT-PAD (SEGMENT OF PERVASION)

**४९३. चउहिं अत्थिकाएहिं लोगे फुडे पण्णत्ते, तं जहा—धम्मत्थिकाएणं, अधम्मत्थिकाएणं, जीवत्थिकाएणं, पुग्गलत्थिकाएणं।**

४९३. यह समूचा लोक चार अस्तिकायों से स्पृष्ट (व्याप्त) है-(१) धर्मास्तिकाय से, (२) अधर्मास्तिकाय से, (३) जीवास्तिकाय से, और (४) पुद्गलास्तिकाय से।

**493.** This whole *Lok* (universe) is *sprisht* (pervaded) by four *astikayas* (eternal agglomerative entities)—(1) *Dharmastikaya* (motion entity), (2) *Adharmastikaya* (inertia entity), (3) *Akashastikaya* (space entity), and (4) *Pudgalastikaya* (matter entity)

**४९४. चउहिं बादरकाएहिं उववज्जमाणेहिं लोगे फुडे पण्णत्ते, तं जहा–पुढविकाइएहिं, आउकाइएहिं, वाउकाइएहिं, वणस्सइकाइएहिं।**

४९४. निरन्तर उत्पन्न होने वाले चार अपर्याप्तक बादरकायिक जीवों के द्वारा यह सर्वलोक स्पृष्ट–परिव्याप्त है–(१) बादर पृथ्वीकायिक जीवो से, (२) बादर अप्कायिक जीवों से, (३) बादर वायुकायिक जीवो से, (४) बादर वनस्पतिकायिक जीवों से।

**494.** This whole *Lok* (universe) is *sprisht* (pervaded) by four continuously producing *aparyaptak badar-kayik jivas* (inchoate gross-bodied beings)—(1) *badar prithvi-kayik jivas* (gross earth-bodied beings), (2) *badar ap-kayik jivas* (gross water-bodied beings), (3) *badar vayu-kayik jivas* (gross air-bodied beings), and (4) *badar vanaspati-kayik jivas* (gross plant-bodied beings).

**विवेचन**–इस सूत्र में बादर तेजस्कायिक जीवो का नामोल्लेख नही करने का कारण यह है कि वे सर्व लोक मे नही पाये जाते हैं, यद्यपि सूक्ष्म तेजस्कायिक जीव सर्व लोक में व्याप्त है, किन्तु 'बादरकाय' का सद्भाव केवल मनुष्य क्षेत्र में ही पाया जाता है। बादर पृथ्वीकायिकादि चारों काया के जीव निरन्तर मरते रहते है और उत्पन्न होते रहते है।

**Elaboration**—The reason for excluding *tejas-kayik jivas* (fire-bodied beings) from this list is that they do not exist everywhere in the universe. Although minute fire-bodied beings pervade the whole universe, the gross fire-bodied beings exist only in the land of humans The four gross bodied beings including earth-bodied ones continuously die and get reborn.

**तुल्य–प्रदेश–पद TULYA-PRADESH-PAD (SEGMENT OF EQUAL SPACE-POINTS)**

**४९५. चउहिं पएसग्गेणं तुल्ला पण्णत्ता, तं जहा–धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, लोगागासे, एगजीवे।**

४९५. प्रदेशाग्र–प्रदेशों के परिमाण की अपेक्षा से चार अस्तिकाय द्रव्य समान हैं–(१) धर्मास्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, (३) लोकाकाश, (४) एक जीव।

**495.** In terms of *pradeshagra* (number of space-points) four *astikaya dravya* (agglomerative entities) are equal—(1) *Dharmastikaya*, (2) *Adharmastikaya*, (3) *Lokakash*, and (4) single soul.

विवेचन—इन चारों के असंख्यात प्रदेश होते हैं और ये बराबर-बराबर हैं।

**Elaboration**—All these four entities have innumerable space-points and their number is equal.

## नो सुपश्य-पद NO SUPASHYA-PAD (SEGMENT OF NOT ORDINARILY VISIBLE)

४९६. चउण्हमेगं सरीरं णो सुपस्सं भवइ, तं जहा—पुढविकाइयाणं, आउकाइयाणं, तेउकाइयाणं, वणस्सइकाइयाणं।

४९६. इन चार काय के जीवों का एक शरीर सुपश्य (सहज दृश्य) नहीं होता है-(१) पृथ्वीकायिक जीवों का, (२) अप्कायिक जीवों का, (३) तैजसकायिक जीवों का, (४) साधारण वनस्पतिकायिक जीवों का।

**496.** A single body of these four beings is not *supashya* (ordinarily visible)—(1) *prithvi-kayik jivas* (earth-bodied beings), (2) *ap-kayik jivas* (water-bodied beings), (3) *taijas-kayik jivas* (fire-bodied beings), and (4) *sadharan vanaspati-kayik jivas* (clustered plant-bodied beings).

विवेचन-'सुपश्य नहीं' का अर्थ आँखों से दिखाई नहीं देता, यह समझना चाहिए। इन चारों ही कायों के जीवों में एक-एक जीव के शरीर की अवगाहना अगुल के असंख्यातवें भाग बताई गई है। इतने छोटे शरीर का दिखना नेत्रों-से सम्भव नहीं है। हाँ, अनुमानादि प्रमाणों से उनका जानना सम्भव है या फिर केवली भगवान उनको देखते हैं।

**Elaboration**—*Nosupashya* means not visible with naked eye. A single being of any of the aforesaid four classes of beings occupies innumerable fraction of an *Angul* (width of a finger). It is not possible to see such minute body with naked eye. They are either known hypothetically or are visible to an omniscient.

## इन्द्रियार्थ-पद INDRIYARTH-PAD (SEGMENT OF FUNCTION OF SENSE ORGANS)

४९७. चत्तारि इंदियत्था पुट्ठा वेदेंति, तं जहा—सोइंदियत्थे, घाणिंदियत्थे, जिब्भिंदियत्थे, फासिंदियत्थे।

४९७. चार इन्द्रियों के विषय स्पर्श होने पर ही अर्थात् ग्राहक इन्द्रिय के साथ उनका संयोग होने पर ही ज्ञान होता है, जैसे-(१) श्रोत्रेन्द्रिय का विषय-शब्द, (२) घ्राणेन्द्रिय का विषय-गन्ध,

(३) रसनेन्द्रिय का विषय-रस, और (४) स्पर्शनेन्द्रिय का विषय-स्पर्श। (चक्षु-इन्द्रिय रूप के साथ संयोग हुए बिना ही अपने विषय-रूप को देखती है।)

**497.** The subjects of four sense organs are known by the receptor organ through touch only—(1) the subject of *shrotrendriya* (ear)—sound, (2) the subject of *ghranendriya* (nose)—smell, (3) the subject of *rasanendriya* (taste-buds)—taste, and (4) the subject of *sparshanendriya* (touch)—touch. (*Chakshu-indriya* knows its subject without coming in contact with it.)

**अलोक-अगमन-पद ALOK-AGAMAN-PAD**

**(SEGMENT OF ABSENCE OF MOVEMENT IN UNOCCUPIED SPACE)**

**४९८. चउहिं ठाणेहिं जीवा य पोग्गला य णो संचाएंति बहिया लोगंता गमणयाए, तं जहा— गतिअभावेणं, णिरुवग्गहयाए, लुक्खताए, लोगाणुभावेणं।**

४९८. इन चार कारणो से जीव और पुद्गल लोकान्त से बाहर (अलोक मे) गमन नही कर सकते-(१) **गति के अभाव से**-जैसे दीपशिखा का स्वभाव नीचे जाने का नहीं है, वैसे लोकान्त से आगे इनका गति करने का स्वभाव नही होने से। (२) **निरुपग्रहता से**-जैसे पंगु पुरुष गाड़ी आदि साधन के अभाव मे गति नही कर सकता, वैसे धर्मास्तिकाय रूप उपग्रह अर्थात् निमित्त कारण का अभाव होने से। (३) **रूक्ष होने से**-लोकान्त मे स्निग्ध पुद्गल भी रूक्ष रूप से परिणत हो जाते है, जिस कारण उनका आगे गमन सम्भव नही तथा कर्म-पुद्गलो के भी रूक्ष रूप से परिणत हो जाने के कारण ससारी जीवो का भी लोक के बाहर गमन सम्भव नही रहता। (४) **लोकानुभाव से**-जैसे सूर्य, चन्द्र आदि सौर मण्डल अपने मार्ग मे दूसरी ओर नही जाते, वैसे ही लोक की स्वाभाविक मर्यादा से बँधे होने से जीव और पुद्गल लोकान्त से आगे नही जा सकते।

**498.** For four reasons soul and matter cannot move beyond *Lokant* (edge of occupied space)—**(1) Absence of natural movement (*gati*)**—*the natural movement of a flame is upwards and not downwards*, in the same way the natural movement of soul and matter is confined to *Lok* and not beyond **(2) Absence of means (*nirupagrahata*)**—a disabled person cannot move in absence of a vehicle or other such means, in the same way in the absence of *Dharmastikaya* (motion entity), the cause of motion, in *Alok* (unoccupied space) matter and soul cannot move beyond *Lokant*. **(3) Roughness (*rukshata*)**—at the edge of *Lok* smooth particles, including the *karma*-particles, turn rough making it impossible

for matter and living beings (*jiva*) to move beyond that point. (4) *Natural limit*—The sun, the moon and other heavenly bodies move within the limits of their natural orbits, in the same way soul and matter are governed by the natural limits of their movement within the *Lok* and are unable to move beyond *Lokant*.

**ज्ञात–पद JNATA-PAD (SEGMENT OF EXAMPLE)**

**४९९. चउव्विहे णाए पण्णत्ते, तं जहा–आहरणे, आहरणतद्देसे, आहरणतद्दोसे, उवण्णासोवणए।**

४९९. ज्ञात (दृष्टान्त) चार प्रकार के होते है–(१) आहरण–सामान्य दृष्टान्त। जिस दृष्टान्त में वक्ता का भाव पूर्ण रूप में घटित होता हो। (२) आहरणतद्देश–एकदेशीय दृष्टान्त। जिस दृष्टान्त मे भाव एक अश मे घटित होता हो। (३) आहरणतद्दोष–दोषयुक्त दृष्टान्त। (४) उपन्यासोपनय–वादी के द्वारा किये गये वाद के खण्डन के लिए प्रतिवादी के द्वारा दिया गया विरुद्धार्थक उपनय।

**499.** *Jnata* (examples) are of four kinds—(1) *acharan*—simple example in which the idea of the speaker is completely reflected. (2) *Aharanataddesh*—partial example in which only a portion of the idea is reflected (3) *Aharanataddosh*—faulty example (4) *Upanyasopanaya*—contradictory example given by the opponent to counter the argument of the speaker

**५००. आहरणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा–अवाए, उवाए, ठवणाकम्मे, पडुप्पण्णविणासी।**

५००. आहरण दृष्टान्त चार प्रकार का होता है–(१) अपाय–दृष्टान्त–हेयधर्म का ज्ञापक दृष्टान्त। (२) उपाय–दृष्टान्त–इच्छित वस्तु की प्राप्ति का उपाय बताने वाला दृष्टान्त। (३) स्थापनाकर्म–दृष्टान्त–स्वमत की स्थापना के लिए प्रयुक्त दृष्टान्त। (४) प्रत्युत्पन्नविनाशी–दृष्टान्त–तत्काल उत्पन्न दोष का निवारण करने के लिए दिया जाने वाला दृष्टान्त।

**500.** *Aaharan jnata* (simple example) is of four kinds—(1) *Apaya drishtant*—an example conveying ignoble (2) *Upaaya drishtant*—an example showing way of acquiring a desired thing. (3) *Sthaapanakarma drishtant*—an example used for establishing one's own doctrine (4) *Pratyutpanna vinashi drishtant*—an example given for correcting an instantaneous fault.

**५०१. आहरणतद्देसे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा–अणुसिट्ठी, उवालंभे, पुच्छा, णिस्सावयणे।**

५०१. आहरण–तद्देश ज्ञात (दृष्टान्त) चार प्रकार का होता है–(१) अनुशिष्टि–आहारणतद्देश–सद्गुणों की प्रशंसा कर स्वमत को पुष्ट करना। (२) उपालम्भ–आहरण–तद्देश–अपराध करने वाले

शिष्यों को उपालंभ द्वारा शिक्षित करना। (३) पृच्छा-आहरण-तद्देश-प्रश्नों-प्रतिप्रश्नों के द्वारा निर्णय करना। (४) निःश्रावचन-आहरण-तद्देश-एक के माध्यम से दूसरे को शिक्षा या प्रबोध देना।

**501.** *Aharanataddesh jnata* is of four kinds—(1) *Anushisht aharanataddesh*—to establish own doctrine by praising virtues. (2) *Upalambh aharanataddesh*—to edify disciples, who have committed mistake, through reproach (3) *Prichchha aharanataddesh*—to arrive at a conclusion through questions and counter questions. (4) *Nihshravachan aharanataddesh*—to edify or enlighten someone through a third person

**५०२. आहरणतद्दोसे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अधम्मजुत्ते, पडिलोमे, अत्तोवणीते, दुरुवणीते।**

५०२. आहरण-तद्दोष ज्ञात (दृष्टान्त) चार प्रकार का है। (१) अधर्मयुक्त-आहरण-तद्दोष-अधर्म बुद्धि को उत्पन्न करने वाला दृष्टान्त। (२) प्रतिलोम-आहरण-तद्दोष-अपसिद्धान्त की प्रतिपादक अथवा प्रतिकूल आचरण की शिक्षा देने वाला दृष्टान्त। (३) आत्मोपनीत-आहरण-तद्दोष-पर-मत मे दोष दिखाने के लिए प्रयुक्त किया गया किन्तु स्वमत को दूषित करने वाला दृष्टान्त। (४) दुरुपनीत-आहरण-तद्दोष-जिस दृष्टान्त का उपसंहार दोषयुक्त हो।

**502.** *Aharanataddosh jnata* is of four kinds—(1) *Adharma yukta aharanataddosh*—an example giving rise to evil thoughts (2) *Pratilom aharanataddosh*—an example teaching wrong doctrine or bad conduct. (3) *Atmopaneet aharanataddosh*—an example used for showing faults of other doctrine but tarnishing own doctrine. (4) *Durupaneet aharanataddosh*—an example with a faulty conclusion.

**५०३. उवण्णासोवणए चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—तव्वत्थुते, तदण्णवत्थुते, पडिणिभे, हेतू।**

५०३. उपन्यासोपनय-ज्ञात (दृष्टान्त) चार प्रकार का होता है-(१) तद्-वस्तुक उपन्यासोपनय-वादी के द्वारा किये गये हेतु से उसका ही निराकरण करना। (२) तदन्यवस्तुक-उपन्यासोपनय-प्रस्तुत की गई वस्तु से भिन्न वस्तु में भी प्रतिवादी की बात को पकड़कर उसे हराना। (३) प्रतिनिभ-उपन्यासोपनय-वादी द्वारा प्रयुक्त हेतु के समान दूसरा हेतु प्रयोग करके उसके हेतु को असिद्ध करना। (४) हेतु-उपन्यासोपनय-हेतु बताकर अन्य के प्रश्न का समाधान कर देना।

**503.** *Upanyasopanaya jnata* is of four kinds—(1) *Tad-vastuk upanyasopanaya*—to counter a speaker by using his own argument. (2) *Tadanya-vastuk upanyasopanaya*—to counter a speaker by shifting

from the argument used by him. (3) *Pratinibh upanyasopanaya*—to counter a speaker by using another similar argument as given by him. (4) *Hetu upanyasopanaya*—answering a question by presenting the cause.

### हेतु–पद HETU-PAD (SEGMENT OF CAUSE)

**५०४. हेऊ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—जावए, थावए, वंसए, लूसए।**

**अहवा—हेऊ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—पच्चक्खे, अणुमाणे, ओवम्मे, आगमे।**

**अहवा—हेऊ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अत्थित्तं अत्थि सो हेऊ, अत्थित्तं णत्थि सो हेऊ, णत्थित्तं अत्थि सो हेऊ, णत्थित्तं णत्थि सो हेऊ।**

५०४. हेतु (साध्य की सिद्धि करने वाला वचन) चार प्रकार का होता है–(१) **यापक हेतु**–जिसे प्रतिवादी शीघ्र न समझ सके ऐसा समय बिताने वाला उलझाने वाला हेतु। (२) **स्थापक हेतु**–साध्य को शीघ्र स्थापित (सिद्ध) करने वाला हेतु। (३) **व्यंसक हेतु**–प्रतिवादी को छल या भुलावे में डालने वाला हेतु। (४) **लूषक हेतु**–व्यंसक हेतु के द्वारा प्राप्त आपत्ति को दूर करने वाला हेतु।

अथवा–हेतु चार प्रकार का होता है–(१) प्रत्यक्ष, (२) अनुमान, (३) औपम्य (उपमान), (४) आगम। (इनका वर्णन अनुयोगद्वारसूत्र, भाग–२, पृष्ठ २७५ पर किया गया है।)

अथवा–हेतु चार प्रकार का होता है–(१) 'अस्तित्व है' इस प्रकार से विधि–साधक विधि हेतु। (२) 'अस्तित्व नही है' इस प्रकार से विधि–साधक–निषेध हेतु। (३) 'नास्तित्व है' इस प्रकार से निषेध–साधक विधि हेतु। (४) 'नास्तित्व नही है' इस प्रकार से निषेध–साधक निषेध–हेतु।

**504.** *Hetu* (causative phrase or statement that proves a point) is of four kinds—(1) *Yapak hetu*—a confusing and time consuming *hetu* that is hard to comprehend by an opponent. (2) *Sthapak hetu*—a *hetu* that quickly proves a point. (3) *Vyansak hetu*—a deceptive *hetu* that beguiles an opponent. (4) *Looshak hetu*—a *hetu* that helps recover from the beguiled state caused by a vyansak hetu.

Also *Hetu* (causative phrase or statement that proves a point) is of four kinds—(1) *Pratyaksh* (direct experience or perceptual cognition), (2) *Aupamya* (*Anumaan* or inferential knowledge), (3) *Upamaan* (analogical knowledge), and (4) *Agam* (scriptural knowledge). (for details refer to *Illustrated Anuyog-dvar Sutra*, Part 2, p. 275)

Also *Hetu* (causative phrase or statement that proves a point) is of four kinds—(1) A positive statement proving a point, such as—'There is existence'. (2) A negative statement proving a point, such as—'There is

no existence'. (3) A positive statement disproving a point, such as—'There is non-existence'. (4) A negative statement disproving a point, such as—'There is no non-existence'.

**विवेचन**—सूत्र ४९९ से ५०४ तक सूत्रों में न्यायशास्त्र में आये दृष्टान्त तथा हेतु आदि का वर्णन है। इस विषय को बिना व्याख्या एव उदाहरण के समझना कठिन है। टीकाकार ने अनेक उदाहरण व दृष्टान्त देकर विस्तारपूर्वक समझाया है। उसके सारांश रूप में यहाँ कुछ विवेचन प्रस्तुत हैं–

'ज्ञात' शब्द का अर्थ दृष्टान्त, आख्यानक अथवा कथानक भी होता है। उसके मुख्यतया दो भेद हैं–चरित और कल्पित। 'ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की तरह निदान दुःख के लिए ही होता है', यह चरित-दृष्टान्त है। प्रमादी जीवो को यौवन आदि की अनित्यता दिखाने के लिए 'किसलय' और 'जीर्णपत्र' का संवाद कल्पित दृष्टान्त है।

जैसे कि टूटकर गिरते हुए जीर्णपत्र का परिहास करती हुई कोंपले बोलीं–"देखा, हम आए और तुम चले", इस व्यग्य का उत्तर देता हुआ पत्ता बोला–"जैसे तुम हो, कभी हम भी ऐसे ही थे, जैसे हम हैं वैसे कभी तुम भी हो जाओगे।" इस प्रकार गिरते हुए जीर्णपत्र ने किसलयो को शिक्षा दी, अतः यौवन आदि पर कभी भी अहभाव नही करना चाहिए। इस प्रकार के दृष्टान्त कल्पित कहलाते है।

'ज्ञात' के मूल भेद चार है–जैसे कि आहरण, आहरणतद्देश, आहरणतद्दोष और उपन्यासोपनय। इनमे से प्रत्येक के चार-चार भेद होते है। इस प्रकार 'ज्ञात' के कुल सोलह भेद होते है। सर्वप्रथम आहरण और उसके चार उपभेदो का विवेचन किया जाता है–

१. **आहरण**—अप्रसिद्ध अर्थ को प्रसिद्धि मे लाने या अप्रतीत अर्थ की प्रतीति करवाने को 'आहरण' (दृष्टान्त) कहा जाता है। जैसे–पाप दुःख का कारण होता है, जैसे–महाराज ब्रह्मदत्त। आहरण के मूल भेद चार है–

(क) **अपाय**—अपाय का अर्थ है–अनर्थ या दुःख। इस ससार के सभी पदार्थ प्रायः अनर्थों के कारण हैं, इस विषय का विवेचन द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा से किया जाता है। द्रव्य से अनर्थ होता है या द्रव्य के लिए अनर्थ होता है। इसी के कारण ही प्रिय सम्बन्धियों का नाश हो जाता है। जैसे–कूणिक और चेटक राजा का घोर संग्राम सिंचानक हाथी और हार के लिए ही हुआ था। सभी प्रकार के दुर्व्यसनो का आरम्भ द्रव्य से ही होता है, अतः आसक्तिपूर्वक द्रव्य स्वयं अपाय-दुःख एवं अनर्थ का मूल कारण है। यह द्रव्यापाय कहलाता है।

जो क्षेत्र भय का कारण है, जिस क्षेत्र में शत्रु, जल, अग्नि, चोर, रोग, युद्ध, अराजकता और अप्रतिष्ठा इत्यादि का भय है उसका परित्याग कर देना चाहिए। जैसे–प्रतिवासुदेव जरासंध के भय से यादवो ने मथुरा नगरी का परित्याग कर द्वारिका नगरी का निर्माण किया। अथवा जिस स्थान या घर में सर्प एवं व्यंतर आदि देवों का भय हो। यह **क्षेत्रापाय** कहलाता है।

जो काल सब ओर से भयानक दीखता हो, भले ही वह अल्पकाल के लिए हो या बहुकाल के लिए, वह कालापाय कहलाता है। उसे धर्मपूर्वक व्यतीत करना चाहिए, क्योंकि जीवन को पवित्र एवं धर्ममय बनाना ही कालापाय को दूर करने का साधन है।

क्रोध आदि कषाय जो आत्मा के सद्गुणों का नाश करने वाले हैं, उन्हीं से भावों में मालिन्य आता है, अतः उन्हें भावापाय कहा जाता है। जैसे–चण्डकौशिक पूर्वभव के तीव्र कषायों के कारण ही सर्प बना और फिर भगवान के द्वारा प्रतिबोध प्राप्त कर कषायों को अनर्थ का मूल कारण जान लेने पर क्षमा का आश्रय लेकर समाधिपूर्वक जीवन–यापन करके आठवें देवलोक का उच्च देव बना।

(ख) उपाय–इष्ट पदार्थ की प्राप्ति के लिए जो व्यापारादि रूप साधन–सामग्री होती है, उसे उपाय कहते हैं। इसके भी द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव से चार भेद होते हैं।

(ग) स्थापना–कर्म–जिस दृष्टान्त के द्वारा परमत का निराकरण हो और स्वमत की पुष्टि या स्थापना हो, उसे स्थापना–कर्म कहते हैं। जैसे कि सूत्रकृतांग नामक सूत्र के दूसरे श्रुतस्कन्ध के पहले अध्ययन में पुण्डरीक का रूपक दिया गया है। भ्रान्ति आदि का निराकरण करके उन्हें सत्यमार्ग पर स्थापित करना भी स्थापना–कर्म है।

(घ) प्रत्युत्पन्न विनाशी–यदि किसी अच्छे गुण के विनाश होने की सम्भावना हो, तो तत्काल ही उसे विनाश से बचाने का प्रयत्न करना चाहिए। जैसे–शील रक्षा के लिए कन्या आदि को कामोत्तेजक नृत्यशाला आदि मे जाने से रोकने का प्रयत्न करना। इसी प्रकार यदि शिष्यों के कुमार्गगामी होने की सम्भावना हो तो उनको कुमार्ग से हटाकर सन्मार्ग में लाने का प्रयत्न करना।

२. आहरणतद्देश–जिसमें दृष्टान्त अर्थात् उपमेय के एक ही भाग से उपमान की समानता प्रदर्शित की जाए, उसे आहरणतद्देश कहा जाता है। जैसे कि "इसका मुख चन्द्र के समान सौम्य है।" यहाँ उपमान रूप चन्द्र की केवल सौम्य आकृति ही ग्रहण की गई है। यद्यपि चन्द्र मे अन्य अनेक विशेषताएँ हैं तो भी उनमें से एक सौम्य धर्म का ही मुख में आरोप किया गया है, अतः यह दृष्टान्त आहरणतद्देश ज्ञात है। इसके भी चार भेद होते हैं–

(क) अनुशिष्टि–गुणवान् व्यक्ति के गुणों की प्रशंसा करना, जनता मे उसके अनुकरण की प्रवृत्ति को जागृत करने का प्रयत्न करना, जिस चरित या दृष्टान्त से जन–मन को अनुशासन मे रहने की शिक्षा मिले, उस दृष्टान्त का वर्णन करना अनुशिष्टि ज्ञात कहलाता है। जैसे कि सुभद्रा सती ने अपने शील का महत्त्व दिखलाया, देवों ने उसकी प्रशंसा की, औरों को उसके समान सदाचार पालन करने की प्रेरणा दी।

(ख) उपालंभ–किसी अपराध के होने पर अपराधी को शान्तिपूर्वक और मधुर वचनों से उपालंभ देना, जिससे वह कुमार्ग से हटकर सन्मार्ग पर आ जाए, ऐसा उपालंभ आत्मशुद्धि का एक उत्तम मार्ग

है। जैसे–चन्दनबाला ने मृगावती साध्वी को उपालंभ देकर उसका कल्याण किया तथा राजीमती साध्वी ने विचलित–मन रथनेमि को उपालंभ देकर संयममार्ग में स्थिर किया। इस प्रकार के चरित व दृष्टान्तों को उपालंभ कहा जाता है। उपालभ द्वेष–बुद्धि से नहीं, हित–बुद्धि से दिया जाता है।

(ग) **पृच्छा**–किसी अज्ञात विषय को समझने के लिए, अपनी शंकाओं को दूर करने के लिए या जनता को समझाने के लिए अपने विषय में या दूसरों के विषय में किसी अतिशय–ज्ञानसंपन्न मुनिवर से प्रश्न पूछना पृच्छा। जैसे कि कूणिक राजा ने एक बार भगवान महावीर से पूछा–"भगवन् ! ऐसा चक्रवर्ती जिसने काम–भोगो का परित्याग नहीं किया, वह मरकर कहाँ उत्पन्न होता है?" तब भगवान ने उत्तर दिया–"काम–भोगो मे आसक्त होने से वह उत्कृष्ट सातवें नरक में उत्पन्न हो सकता है।" तब कूणिक ने पूछा–"भगवन् ! मै मरकर कहाँ उत्पन्न होऊँगा?" भगवान ने कहा–"छट्ठी नरक में।" कूणिक ने पूछा–"क्या मै चक्रवर्ती नही हूँ?" भगवान मे कहा–"नही ! क्योंकि तेरे पास चौदह रत्ननिधि नही है।" तब कूणिक ने कृत्रिम रत्न तैयार करवा के चक्रवर्ती बनने का भरसक प्रयत्न किया, भरतक्षेत्र जीतने चला और वैताढ्य पर्वत के गुफा द्वार पर कृतमाल यक्ष द्वारा मारे जाने पर वह छट्ठी नरक मे गया। यह पृच्छा 'ज्ञात' का उदाहरण है।

(घ) **निश्रावचन**–किसी एक सुयोग्य व्यक्ति का आलंबन लेकर अन्य व्यक्तियो को सुशिक्षित करना निश्रावचन कहलाता है। जैसे–भगवान ने द्रुमपत्र नामक उत्तराध्ययन के दसवे अध्ययन में गौतम को सम्बोधित कर अन्य शिष्यो को अप्रमत्त रहने का उपदेश दिया कि "**समयं गोयम ! मा पमायए।**" इस प्रकार से दी जाने वाली शिक्षा को निश्रावचन कहते है।

३. **आहरणतद्दोष**–जो चरित दृष्टान्त या युक्ति सदोष हो, जिससे साध्य खंडित होता हो, जैसे–"शब्द नित्य है, अमूर्त्त होने से, घट के समान" इस वाक्य मे शब्द पक्ष है, नित्यत्व साध्य है, अमूर्त्त होना यह हेतु है, घट के समान यह दृष्टान्त है। 'घट के समान' दृष्टान्त मे नित्यत्व का साध्य होना और अमूर्त्तत्व का साधन होना, ये दोनो ही नही पाये जाते, क्योंकि घट मानव कृत होने से अनित्य है तथा पौद्गलिक होने से मूर्त्त है। इस प्रकार यह दृष्टान्त साध्य और साधन दोनो की दृष्टि से विकल है। आहरणतद्दोष के निम्न चार भेद है–

(क) **अधर्मयुक्त**–जिस चरित या दृष्टान्त के सुनने से श्रोताओं में अधर्म–बुद्धि उत्पन्न हो, जिसके सुनने से अधर्म कार्यों मे प्रवृत्ति हो। इस प्रकार की कथा–कहानियों का समावेश अधर्मयुक्त आहरणतद्दोष मे होता है। जैसे किसी के पुत्र को चेटों ने काट खाया। उसके पिता ने चेटों के बिल में गर्म जल डलवाकर सब चेटो का विनाश कर डाला। चाणक्य ने यह दृष्टान्त सुनकर अपने शत्रुओं को विष देकर मरवा डाला।

(ख) प्रतिलोम—जिसके सुनने से प्रतिकूलता का भाव जगे, जैसे—शठं प्रति शाठ्यं कुर्यात्—धूर्त के प्रति धूर्तता का व्यवहार करना यह भावना जागृत हो, उसे प्रतिलोम आहरणतद्दोष कहा जाता है।

(ग) आत्मोपनीत—जहाँ परमत को दूषित करने के लिए दिए गये दृष्टान्त से अपना ही पक्ष दूषित हो जाये, वह आत्मोपनीत कहलाता है। जैसे—किसी सभा में किसी सदस्य ने कहा—"यहाँ सभी मूर्ख हैं।" 'सभी' कहने पर वक्ता स्वयं भी मूर्ख सिद्ध हो जाता है।

अथवा किसी राजा ने किसी पिंगल नामक नैमित्तिक से पूछा कि "अमुक तालाब यत्न करने पर भी ठीक नहीं होता, क्या उपाय किया जाए?" तब नैमित्तिक ने कहा—"राजन् ! यह तालाब एक अच्छे पुरुष की बलि चाहता है, जहाँ तालाब टूटा है वहाँ अमुक गुण व लक्षण वाले पुरुष को जीवित गाड़ा जाये तभी यह सभी प्रकार से ठीक हो सकेगा।" राजा ने मंत्री से ऐसा पुरुष ढूँढ़ने को कहा। मंत्री ने कहा—"महाराज ! इस नैमित्तिक से बैठकर सुयोग्य गुण सम्पन्न पुरुष और कौन मिलेगा।" तब राजा ने अपने भृत्यों के द्वारा उस नैमित्तिक की बलि तालाब के निमित्त दे दी। इस तरह अपने ही विवेकहीन वचनों से नैमित्तिक को मरना पड़ा। इस प्रकार के सभी दृष्टान्त आहरणतद्दोष के अन्तर्गत आत्मोपनीत हैं।

(घ) दुरुपनीत—जिसके बोलने से अपनी ही नीचता सिद्ध हो, उसे दुरुपनीत ज्ञात कहते है। जिस प्रकार किसी ने एक भिखारी से पूछा—"हे भिक्षुक ! तेरी कथा मे ये जगह-जगह छेद क्यो हो रहे है?" उसने उत्तर दिया—"यह कंथा नही, यह तो मछलियाँ पकडने का जाल है।" "तो क्या तुम मछली भी खाते हो?" "हाँ, वह बिना मद्य के अच्छी नहीं लगतीं।" "तो क्या तुम मद्य भी पीते हो?" "हाँ, उसे वेश्या के साथ पीता हूँ, अकेला नहीं।" "तो क्या वेश्या के यहाँ भी जाते हो?" "हाँ, शत्रुओ के गले पर पैर रखकर जाता हूँ।" "क्या तुम्हारे शत्रु भी हैं?" "हाँ, जिनके घर मे सेध लगाता हूँ, वे मेरे शत्रु बन जाते है।" "तो क्या तुम चोरी भी करते हो?" "हाँ, जुए के लिए सब कुछ करना ही पडता है।" "तुम ऐसा क्यों करते हो?" "क्योंकि मैं दासी का पुत्र हूँ।" प्रश्नकर्त्ता ने तो सामान्य बात पूछी, किन्तु भिखारी ने इतना असंगत उत्तर दिया कि वह स्वयं ही नीच सिद्ध हो गया।

४. उपन्यासोपनय—वादी द्वारा अपने मत की पुष्टि के लिए जो कुछ कहा जाता है, उसका निराकरण करके पक्ष रूप में जो स्वमत स्थापित किया जाता है, उसे उपन्यासोपनय कहते है। इसके चार भेद है—

(क) तद्वस्तुक—जिसमें पर के द्वारा दिया गया उत्तर ही उत्तर रूप हो, वह तद्वस्तुक कहलाता है। जैसे—किसी ने कहा—"मेरे गाँव में एक बहुत बडा तालाब है, उसके तट पर एक बहुत बडा वृक्ष है, उसके पत्ते जितने जल में गिरते हैं वे सब जलचर जीवों के रूप में परिणत हो जाते है और जो पत्ते स्थल पर गिरते हैं वे सब स्थलचर जीवों के रूप में परिणत हो जाते है।" तब किसी अन्य व्यक्ति ने पूछा—"जो पत्ते दोनों के मध्य में गिरते हैं उनकी क्या दशा होती है?" तुम्हारे कथन मे तो वे मध्य मे गिरे पत्ते मिश्रित रूप होने चाहिए; किन्तु ऐसा नहीं होता दीखता है, इसलिए यह बात मिथ्या है।

(ख) तदन्यवस्तुक—इसका अभिप्राय है–वादी का पक्ष खण्डित करने के लिए युक्ति रखना। जैसे कि वादी ने कहा जो पत्र जल में गिरते हैं वे जलचर जीव बन जाते है और जो स्थल पर गिरते हैं वे स्थलचर जीव बनते हैं। इस पक्ष का खण्डन करने के लिए युक्ति दी गई कि "जो पत्र गिराकर खाये जाते हैं या कहीं ले जाये जाते हैं, उनका क्या होता होगा?" कारण कार्य मे यथोचित सम्बन्ध न होने से यह कथन युक्तियुक्त नहीं है। इस प्रकार के तर्क तदन्यवस्तुक कहलाते हैं।

(ग) प्रतिनिभ—"जैसे को तैसा" उत्तर देकर वादी को निरुत्तर कर देना। जैसे किसी ने कहा–"जो मुझे नई बात सुनाएगा, उसे मै एक लाख रुपये मूल्य का कटोरा दूँगा।" इस घोषणा को सुनकर अनेक विद्वानों ने अपूर्व–अपूर्व श्लोको की रचना करके नई–नई बातें सुनाईं, परन्तु सबकी बातें सुनकर वह कह देता–"यह बात या यह पद्य मेरा सुना हुआ है।" तब एक सिद्ध–पुत्र ने कहा–

*"तुज्झ पिया मज्झ पिउणो, धारेइ अणूणयं सयसहस्सं।*
*जइ सुयपुव्वं दिज्जउ, अह न सुयं खोरयं देहि॥"*

"तुम्हारे पिताजी पर मेरे पिताजी का एक लाख रुपया देना था, यदि यह बात तुमने पहले से ही सुन रखी है तो मेरे पिताजी का एक लाख रुपया चुका दो, अगर तुमने यह बात पहले नही सुन रखी है और इसे नई बात समझते हो, तो मुझे कटोरा दे दो।" इस प्रकार की उत्तर–विधि का नाम प्रतिनिभ है। यह प्रतिछलात्मक आहरण है।

(घ) हेतु—उपन्यासोपनय हेतु उसे कहते हैं, जहाँ प्रश्न का हेतु ही उत्तर रूप में कहा जाये। किसी ने किसी साधु से कहा–"हे साधो ! तुम ब्रह्मचर्य आदि कष्ट क्यो सहते हो?" तब साधु ने उत्तर दिया–"जो तपस्या आदि शुभ क्रियाएँ नही करते, उन्हें नरक आदि के दुःख सहने पड़ते हैं।" जैसे किसी ने पूछा–"साधो ! तुम दीक्षित क्यो हुए हो?" तब उसने उत्तर दिया–"बिना दीक्षा ग्रहण किए प्राय. कर्म क्षय नही हो सकते।" इन प्रश्नो मे जो प्रश्न रूप में कहा गया है, वही उत्तर रूप मे यहाँ प्रकट किया गया है।

इस प्रकार ज्ञात के मूल भेद चार है और उत्तर भेद सोलह हैं। पहला ज्ञात समग्रसाधर्म्यरूप है, दूसरा देशसाधर्म्य है, तीसरा ज्ञात सदोष है और चौथा ज्ञात प्रतिवादी का उत्तररूप विषय है।

**Elaboration**—Aforesaid aphorisms 499 to 504 cover some topics from *Nyaya shastra* (Logics) like *drishtant* and *hetu*. This subject is difficult to understand without elaboration and examples. The commentator (*Tika*) has explained all these in great detail giving elaborate explanations and numerous examples. We give a brief gist of that here—

The word *jnata* means example and story. There are two main categories of *jnata—charit* (biographical stories) and *kalpit* (imaginary stories or fiction). 'Solution is meant only for sorrow just as in case of Brahmadatt Chakravarti.' This is an example of *charit drishtant* (biographical example). The example of *kisalaya* (sprouts) and *jirnapatra* (falling leaves) given to explain the ephemeral nature of youth to deluded or ignorant people is a *kalpit drishtant* (imaginary example). The example goes like this—

A sprout sarcastically said to a falling leave—"See ! We arrive and you leave." Replying to the pun, the falling leaf said—"Once I was as you are now and soon you will become as we are now." This is how falling leaves enlightened sprouts. Therefore one should never by proud of youth and other such ephemeral things. Such examples are called imaginary examples.

There are four main categories of *jnata—aaharan jnata, aharanataddesh*, *aharanataddosh* and *upanyasopanaya*. Each one of these has four sub-categories Thus there are sixteen kinds of *jnata* We first explain *Aharan jnata* and its four sub-categories—

**1. Aharan**—To popularize the less known or to reveal the unknown is called *aharan* (*drishtant* or example). For example—Sin is the source of misery, as in case of king Brahmadatt. There are four categories of *Aharan*—

**(a) Apaaya**—*apaaya* means misery or sorrow All things in this world often cause misery This subject is explained in terms of matter, space, time and state. Matter (material things including wealth and territory) causes misery or misery is inflicted for matter, even loved ones are killed for this. For example—the terrible battle between kings Kunik and Chetak was fought for Sechanak elephant and a necklace. All bad habits are acquired for matter therefore infatuation with matter is the root cause of misery and sorrow. This is called *dravyapaya* (matter related misery).

The area that gives rise to terror, the area that has sources of fear, like enemy, water, fire, thieves, epidemic, war, anarchy and loss of prestige, should be abandoned. For example due to oppression of Prativasudev Jarasandh, Yadavas abandoned Mathura and founded the

city of Dvarika. A haunted house or that infested with venomous creatures like snakes should be abandoned. This is called *kshetrapaya* (area related misery).

The period that appears terrifying in all respects, irrespective of its being short or long, is called *kaalapaya* (time related misery). Such period should be spent with religiosity because the only means of removing *kaalapaya* (terrible times) is to turn religious.

Anger and other passions destroy virtues of soul and cause perversion. Therefore they are called *bhaavapaya* (state or feeling related misery) For example Chandakaushik became a serpent due to intense passions during his earlier birth. After getting Bhagavan Mahavir's sermon he became aware that passions were the root cause of his predicament. He then embraced forgiveness devoting rest of his life to meditation and reincarnated in a higher divine realm.

(b) **Upaaya**—the means and methods employed to obtain desired things are called *upaaya* This also has four extensions based on matter, space, time and state.

(c) **Sthaapana karma**—the example that counters other doctrine and supports or establishes own doctrine is called *sthaapana karma.* An example is the story of Pundareek mentioned in the first chapter of the second *shrutskandh* of *Sutrakritanga Sutra*. To remove misunderstanding and doubts and put some one on the right path is also *sthaapana karma*.

(d) **Pratyutpanna vinashi**—if there are chances of loosing some virtue, immediate efforts should be made to avoid that. For example efforts to prevent a girl from going to an erotic dance in order to protect her chastity In the same way to make efforts to take preventive measures if there are chances of disciples taking to the wrong path are called *Pratyutpanna vinashi*.

2. **Aharanataddesh**—Partial example in which only a portion of the idea is reflected is called *Aharanataddesh* For example—"Her face is serene like the moon" Here only the attribute of serenity of the metaphor—the moon—has been taken into consideration. Even though moon has many unique attributes still only one of them, serenity, has been applied to the object, the face. This example is *Aharanataddesh jnata* This too has four branches—

(a) **Anushisht**—to praise virtues of a noble person; to make efforts to infuse in masses the tendency to emulate him, and to narrate the biography or incident that inspires people to be disciplined. For example Sati Subhadra showed the importance of her chastity, gods praised her and inspired others to emulate her conduct.

**(b) Upalambh aharanataddesh**—to reproach calmly in sweet words when someone commits a mistake. From wrong path such reproach steers him to the right path. Such reproach is a good method to gain spiritual purity. For example Chandanbala reproached Sadhvi Mrigavati and steered her towards beatitude. Sadhvi Rajimati reproached wavering Rathanemi and established him on the path of ascetic-discipline. Such biographical stories and examples are called *upalambh* It is employed with sympathetic intention and not that of condemnation.

**(c) Prichchha**—to ask questions regarding self or others to an extremely wise sage in order to understand some unknown subject, or to remove one's doubts, or to edify masses. For example king Kunik once asked Bhagavan Mahavir—"*Bhagavan* ! Where a Chakravarti who has not renounced carnal pleasures reincarnates after death ?" *Bhagavan* replied—"Due to his infatuation with carnal pleasures, at worst, he may reincarnate in the seventh hell." Kunik further asked—"*Bhagavan* ! After my death where will I reincarnate ?" *Bhagavan* said—"In the sixth hell." Kunik—"Am I not a Chakravarti ?" *Bhagavan*—"No ! Because you do not have the required fourteen jewels." Then Kunik tried his best to become a Chakravarti by getting prepared replicas of jewels. He marched to conquer Bharat area but was killed at the gate of a cave in Vaitadhya mountain by Kritmal Yaksh to reincarnate in the sixth hell. This is an example of *prichchha jnata*.

**(d) Nihshravachan**—to edify or enlighten someone through a third person. For example in the tenth chapter of *Uttaradhyayan Sutra* Bhagavan Mahavir asks all his disciples to be alert always simply by addressing Gautam—"Even for a moment, Gautam ! Don't be in stupor." Such lesson is called *nishravachan*.

**3. Aharanataddosh**—A faulty story, example or argument that defies the desired conclusion. For example—"Sound is eternal and being

formless it is like a pot." In this statement Sound is subject, eternality is the desired conclusion, 'being formless' is cause and 'like a pot' is example. In the example 'like a pot' the goal of eternality as well as the cause of formlessness both are unfitting because being created by man it is not eternal and being made of matter it has a form. Thus this example is wrong on both counts—means and goal. This too has four branches—

**(a) Adharmayukta**—the story or example that incites evil thoughts in the listener and inspires him to indulge in evil deeds. Such stories are included in *Adharmayukta Aharanataddosh*. An example—A boy was stung by ants. His father got all the ants killed by pouring hot water in the ant-hole. Chanakya heard this story and he was inspired to kill his enemies by poisoning and he did that.

**(b) Pratilom aharanataddosh**—a story or example that inspires reaction. For example the proverb—rod is the logic of fools inspires to react violently to violence done to you.

**(c) Atmopaneet aharanataddosh**—an example used for showing faults of other doctrine but tarnishing own doctrine. An example a person comments in a meeting—"Everyone is fool here." The speaker inadvertently included himself in 'everyone'.

**Another example**—A king once asked an augur named Pingal—"All efforts have failed to repair the breach in this pool. What should be done ?" The augur replied—"This pool requires that a good person be sacrificed here A person with such and such qualities should be buried alive at the point of the breach Only then it could be repaired." The king asked his minister to look for such a person. The minister said—"Sire ! Where would we find a person better suited than this augur." The king ordered his guards to sacrifice the augur. The augur died due to his thoughtless uttering. Such examples are included in *Atmopaneet aharanataddosh*.

**(d) Durupaneet aharanataddosh**—an example that exposes one's own shortcomings. For example—Someone asked a beggar, "O beggar ! Why your patchwork garb has so many holes ?" The beggar replied—"This is not my garb, this is a fishing net." "Do you eat fish ?" "Yes ! But it does not taste good without wine." "Do you drink wine as well ?" "Yes ! But only with that prostitute, never alone." "So, you also go to a

prostitute ?" "Only when I step on my enemies." "You have enemies too ?" "Of course, those whose house I break in for stealing." "You steal as well ?" "You see, I have to do all this for gambling." "Why do you gamble ?" "Simple ! Because I am a maid's son." He was asked a simple question but his answers were so irrelevant that his deprivation was established.

**4. Upanyasopanaya**—an example that establishes own doctrine after countering the arguments of the opponent supporting his doctrine. This too has four limbs—

**(a) Tad-vastuk upanyasopanaya**—to counter a speaker by using his own argument. For example—Someone said—"In my village there is a large lake. On its bank is a large tree. Its leaves turn into aquatic beings when they fall in water and terrestrial beings when they fall on the land." A listener reacted—"What then happens to the leaves falling in the middle? According to what you say they should become amphibious. But that is not evident, therefore what you have said is false

**(b) Tadanyavastuk upanyasopanaya**—to counter a speaker by shifting from the argument used by him. For example—The argument that leaves turn into aquatic beings when they fall in water and terrestrial beings when they fall on the land is countered by saying—"What of those leaves that are made to fall and are taken away or eaten ?" Your statement is wrong as there is no proper relationship between cause and effect. Such counter arguments are called *Tadanyavastuk upanyasopanaya*.

**(c) Pratinibh upanyasopanaya**—to counter a speaker by using another similar fitting argument as given by him. For example—Some king announced—"I will give a bowl filled with one hundred thousand coins to a person who tells me something I have not already heard." In response many scholars created beautiful poetry and told many new things. To each one the king would say—"I already know this story or verse." Finally a learned and clever young man said—"Your father owed my father one hundred thousand coins. If you already know this fact, please repay the debt you have inherited. If you do not know this and find this to be something new, please give me the bowl." This is an example of counter deception.

(d) **Hetu upanyasopanaya**—answering a question by presenting the cause of the question For example—Someone asked an ascetic—"O ascetic ! Why do you suffer hardships of celibacy and other austerities ?" The ascetic replied—"One who does not suffer hardships of celibacy and other austerities has to suffer torments of hell and other such places." On a further question—"O ascetic ! Why did you get initiated ?" the ascetic replied—"Without getting initiated *karmas* cannot generally be shed." Here the reply incorporates the original question.

Thus *jnata* (example) has four categories and sixteen sub-categories. First example completely involves own doctrine, second partially involves own doctrine, third is faulty and fourth involves answer as an opponent

## हेतु-भेद (सूत्र ५०४) KINDS OF HETU (APHORISM 504)

हेतु का शाब्दिक अर्थ है-''हिनोति-गमयति ज्ञेयमिति हेतुः''- जिससे ज्ञेय पदार्थों का ज्ञान हो, उसे हेतु कहते हैं। अथवा जो अपने साध्य के साथ अविनाभाव (अत्यन्त घनिष्ट) सम्बन्ध वाला होता है, वही हेतु कहलाता है। हेतु के मूलतः चार भेद है-

(क) **यापक**-जो हेतु वादी की काल-यापना करता है, उसे यापक कहते हैं। काल-यापक हेतु वही होता है जो अधिक विशेषणों वाला होता है। उसे समझने में काल-यापन होता है, वह शीघ्रता से ध्यान में नही आता। इसे ''वितडावाद'' भी कहा जा सकता है।

(ख) **स्थापक**-जो हेतु पर-पक्ष का खण्डन कर स्वपक्ष की स्थापना करे, उसे स्थापक हेतु कहते है। ''अग्निस्तत्रधूमात्।'' ''वहाँ अग्नि है, क्योंकि वहाँ धुआँ है।'' यहाँ धूम रूप हेतु ने अग्नि का ज्ञान शीघ्र करा दिया है, अतः धूम स्थापक हेतु है।

किसी धूर्त्त परिव्राजक ने प्रत्येक ग्राम या नगर में ऐसी प्ररूपणा करनी प्रारम्भ कर दी कि-''लोक के मध्य भाग मे दिया गया दान अनन्त फलदायक होता है। यह लोक का मध्य है, इस रहस्य को केवल मैं ही जानता हूँ।'' तब उसकी मान्यता को खंडित करने के लिए किसी विज्ञ व्यक्ति ने कहा-''हे परिव्राजक ! लोक का मध्य भाग तो एक ही होता है, फिर वह प्रत्येक ग्राम में अलग-अलग रूप में कैसे सम्भावित हो सकता है? अतएव तुम्हारे कथनानुसार लोक का मध्य भाग युक्ति संगत नहीं है।'' इस प्रकार उसी के कथन से उसकी असत्यता को पकड़ लिया।

(ग) **व्यंसक**-जिस हेतु के द्वारा वादी को असमंजस में डाला जाये, उसे व्यंसक हेतु कहते हैं। जैसे-कोई गाड़ीवान अपनी गाडी मे अनाज भरकर किसी दूसरे गाँव में जा रहा था। उसने मार्ग में एक मरी

हुई तित्तिरी पकड़कर अपनी गाड़ी में रख ली। चलते-चलते उसका एक नगरी में ठहरना हुआ। वहाँ किसी धूर्त्त ने उससे कहा-"यह शकटतित्तिरी कितने में देते हो?" तब उस शकटवाहक ने सोचा कि यह शकट में रखी हुई तित्तिरी की माँग कर रहा है। अतः उसने कहा-"इस शकटतित्तिरी को मैं तर्पणलोडिका अर्थात् सत्तू के भाव से दूँगा। तब वह धूर्त्त तित्तिरी सहित उस गाड़ी को ले जाने लगा। गाड़ीवान ने कहा-"यह तुम क्या करते हो? गाड़ी तो मेरी है।" धूर्त्त ने कहा-"तुमने ही तो "शकटतित्तिरी" ऐसा कहकर इसे "तर्पणलोडिका" में देना स्वीकार किया है, इसलिए मैंने शकट-सहित तित्तिरी को लिया है, यदि तुझे इसमें सन्देह है तो साक्षी रूप में इन लोगों से पूछ लो।" उसके पूछने पर सबने यह कहा है कि हाँ, इसने तित्तिरी-सहित ही शकट खरीदा है। तब वह गाड़ीवान चिंतित हुआ। इस तरह गाड़ी वाले को व्यामोह में डालना व्यंसक हेतु है।

(घ) लूषक-जिसने जिस विधि से अपने को ठगा, उसी विधि से उसे ठगना। जिस दाव-पेंच से अपने को किसी ने पराजित किया, उसी रीति से उसे पराजित करना लूषक हेतु है। जैसे-उक्त प्रकार से ठगाया हुआ गाड़ीवान घूमते-फिरते किसी वकील से मिला, उसके समक्ष अथ से इति तक सब बातें कह सुनाईं। वकील के कथनानुसार वह गाड़ीवान कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों को ले जाकर उस धूर्त्त के घर पहुँचा और कहने लगा-"तर्पणलोडिका दो।" उसने अपनी पत्नी से कहा कि इसे "सत्तू पानी घोलकर दे दो।" जब स्त्री सत्तू पानी घोलने लगी तब वह गाड़ीवान उस स्त्री को हाथ पकड़कर ले जाने लगा। धूर्त्त ने कहा-"यह क्या करते हो?" गाड़ीवान बोला-"यह स्त्री मेरी है, क्योंकि तर्पण के निमित्त जो सत्तू तैयार कर रही है, उसे "तर्पणलोडिका" कहते है। तुमने शकटतित्तिरी के बदले मे "तर्पणलोडिका" देना स्वीकार किया है। इससे वह धूर्त्त पराजित हुआ और उसने उसकी गाड़ी वापस कर दी। शकटतित्तिरी शब्द से गाड़ीवान ठगा गया था और "तर्पणलोडिका" शब्द से धूर्त्त। अत. गाड़ीवान का हेतुभूत तर्क लूषक हेतु है।

यद्यपि न्यायशास्त्र मे इस विषय का विशद विवेचन प्राप्त होता है, तथापि दार्शनिको ने भी इस विषय की विवेचना को काफी गहराई से दिया है।

हेतु प्रमाण के चार भेद अन्य प्रकार से भी कहे हैं-

**(क) अत्थित्तं अत्थि सो हेऊ**-पहले भंग का उदाहरण-**पर्वतो वह्निमान् धूमवत्त्वात्**। पर्वत में अग्नि है, धुआँ होने से। **(ख) अत्थित्तं नत्थि सो हेऊ**-दूसरे भग का उदाहरण-**अत्राग्निरस्ति शीतस्पर्शाभावात्**। यहाँ अग्नि है, शीत स्पर्श न होने से। (ग) **नत्थित्तं अत्थि सो हेऊ**-तीसरे भंग का उदाहरण-**अत्राग्निर्नास्ति शीतस्पर्शसद्भावात्**। यहाँ अग्नि नहीं, शीत स्पर्श होने से। **(घ) नत्थित्तं नत्थि सो हेऊ**-चौथे भंग का उदाहरण-**नास्त्यत्र शिंशपा वृक्षाभावात्**। यहाँ शीशम नहीं, वृक्षों का अभाव होने से। **(हिन्दी टीका, प्रथम भाग, पृ. १००१ से १०१२)**

The literal meaning of *hetu* is—that which helps acquire knowledge about the object is called *hetu*. In other words—that which has incontrovertible relationship with the concept to be proved is called *hetu*. It has four limbs—

**(a) Yapak hetu**—a *hetu* that consumes time (*kaal yapak*) of the opponent. A *kaal yapak hetu* essentially has numerous adjectives It is not easy and requires time to comprehend It may also be called captious controversy.

**(b) Sthapak hetu**—a hetu that quickly refutes the other doctrine and establishes own doctrine In the statement—"Where there is smoke, there is fire." The cause 'smoke' quickly establishes the presence of fire, hence smoke is *sthapak hetu*

A cunning *parivrajak* started preaching in every village and town he visited—"Charity given at the center of the *Lok* is highly beneficial Only I know this secret that this is the center of the *Lok* " In order to break the blind faith in him a wise person refuted him—"O *Parivrajak* ! The center of *Lok* is only one. How is it possible that every village and town has a center of *Lok* ? Therefore your statement is self-contradictory and your claim about center of *Lok* is wrong " Thus his wrong was soon revealed by his own statement

**(c) Vyansak hetu**—a deceptive *hetu* that beguiles an opponent Example—A bullock cart-owner was going to some other village with his cart filled with grain On the way he picked a dead *tittiri* (partridge) and put it in the cart On the way he stopped in a town. There a swindler asked him—"How much do you want for this *shakat-tittiri* (partridge in cart)" ? The cart-owner thought that the man was asking about the *tittiri* lying in the *shakat* (cart) He offered—"I will sell it in return of *tarpan-lodika* (gram flour soup) " The swindler at once prepared to drive away the cart with the *tittiri* The cart-owner objected—"What are you doing ? This cart belongs to me." The swindler said—"You agreed yourself just now to sell this *shakat* and *tittiri* in exchange of *tarpan-lodika*. I will give you *tarpan-lodika* in exchange of this *shakat* with *tittiri* I take from you. If you have any doubt you may ask these people standing around." When the cart-owner asked, the onlookers confirmed that the swindler had purchased the *shakat* with *tittiri*. The cart owner got worried. To thus confuse the cart-owner is *vyansak hetu*.

**(d) Looshak hetu**—a hetu that helps recover from the beguiled state caused by a *vyansak hetu*. In other words to beguile the opponent with the trick he used to beguile you is called *looshak hetu*. Example—

The defrauded cart-owner met a lawyer and told him the whole story. As advised by the lawyer he took along some influential townsmen and went to the swindler's house. He demanded—"Give me the *tarpan-lodika*." The swindler asked his wife—"Mix some gram flour in water and give it to him." When that woman started mixing the flour in water the cart-owner held her hand and wanted to take her away. The swindler objected—"What are you doing ?" The cart-owner said—"Now this woman belongs to me because the woman who mixes flour in water for gratifying (*tarpan*) is called *tarpan-lodika* You have promised to give me *tarpan-lodika* in exchange of my *shakat-tittiri*." The swindler realized he had lost and returned the cart. The cart-owner was swindled with the word *shakat-tittiri* and the swindler was swindled with the word *tarpan-lodika* Therefore the word used by the cart-owner is *looshak hetu*

Although greater details about this subject are available in the works of logic, philosophers have also ventured in serious discussions on this.

There is also a mention of four limbs of *hetu praman* in another context—

(a) Affirmative as affirmative. Example—As there is smoke in the mountain there is fire. (b) Negative as affirmative. Example—As the touch here is not cold, there is fire. (c) Affirmative as negative Example—As the touch here is cold, there is no fire (d) Negative as negative Example—As there are no trees here, there is no rosewood. (*Hindi Tika*, First Part, pp. 1001-1012)

### संख्यान-पद SANKHYAN-PAD (SEGMENT OF MATHEMATICS)

**५०५. चउव्विहे संखाणे पण्णत्ते, तं जहा—परिकम्मं, ववहारे, रज्जू, रासी।**

५०५. सख्यान (गणित) चार प्रकार का होता है—(१) परिकर्म-संख्यान—जोड, बाकी, गुणा, भाग आदि गणित। (२) व्यवहार-संख्यान—लघुतम, महत्तम, भिन्न, मिश्र आदि गणित। (३) रज्जु-संख्यान—राजुरूप क्षेत्रगणित। (४) राशि-संख्यान—त्रैराशिक, पंचराशिक आदि गणित।

**505.** *Sankhyan* (mathematics) is of four kinds—(1) *Parikarma-sankhyan*—addition, subtraction, multiplication, division etc. (2) *Vyavahar-sankhyan*—lowest common multiple, highest common factor, factors, compounds etc. (3) *Rajju-sankhyan*—lines and areas (geometry). (4) *Rashi-sankhyan*—squares, cubes, logarithms etc.

**५०६. अहोलोगे णं चत्तारि अंधगारं करेति, तं जहा–णरगा, णेरइया, पावाइं कम्माइं, असुभा पोग्गला।**

५०६. अधोलोक में चार पदार्थ अन्धकार करते है–(१) नरक, (२) नैरयिक, (३) पापकर्म, और (४) अशुभ पुद्गल।

**506.** Four things cause darkness in *adholok* (lower world)—(1) *narak* (hell), (2) *nairayik* (infernal beings), (3) *paap-karma* (demeritorious *karmas*), and (4) *ashubh-pudgal* (bad or inauspicious matter particles).

**५०७. तिरियलोगे णं चत्तारि उज्जोतं करेति, तं जहा–चंदा, सूरा, मणी, जोती।**

५०७. तिर्यक्लोक मे चार पदार्थ उद्योत करते है–(१) चन्द्र, (२) सूर्य, (३) मणि, तथा (४) ज्योति (अग्नि)।

**507.** Four things cause light in *tiryaklok* (transverse world)—(1) the moon, (2) the sun, (3) a gem, and (4) fire

**५०८. उड्ढलोगे णं चत्तारि उज्जोतं करेति, तं जहा–देवा, देवीओ, विमाणा, आभरणा।**

**॥ तृतीय उद्देशक समत्तं ॥**

**॥ चतुर्थ स्थान समत्तं ॥**

**॥ सचित्र स्थानांगसूत्र, भाग १ समत्तं ॥**

५०८. ऊर्ध्वलोक मे चार पदार्थ उद्योत करते है–(१) देव, (२) देवियाँ, (३) विमान, और (४) देव-देवियों के आभरण (आभूषण)।

**॥ तृतीय उद्देशक समाप्त ॥**

**॥ चतुर्थ स्थान समाप्त ॥**

**॥ सचित्र स्थानांगसूत्र, भाग १ समाप्त॥**

**508.** Four things cause light in *urdhvalok* (higher world)—(1) gods, (2) goddesses, (3) celestial vehicles, and (4) divine ornaments.

**END OF THE THIRD LESSON**

**END OF PLACE NUMBER FOUR**

**END OF THE FIRST PART OF ILLUSTRATED STHANANGA SUTRA**

# आगमों का अनध्यायकाल

## (स्व. आचार्यप्रवर श्री आत्माराम जी महाराज द्वारा सम्पादित नन्दीसूत्र से उद्धृत)

स्वाध्याय के लिए आगमों में जो समय बताया गया है, उसी समय शास्त्रों का स्वाध्याय करना चाहिए। अनध्यायकाल में स्वाध्याय वर्जित है।

मनुस्मृति आदि स्मृतियों में भी अनध्यायकाल का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। वैदिक लोग भी वेद के अनध्यायों का उल्लेख करते हैं। इसी प्रकार अन्य आर्ष ग्रन्थों का भी अनध्याय माना जाता है। जैनागम भी सर्वज्ञोक्त, देवाधिष्ठित तथा स्वर-विद्या संयुक्त होने के कारण, इनका भी शास्त्रों में अनध्यायकाल वर्णित किया गया है।

स्थानांगसूत्र के अनुसार, दस आकाश से सम्बन्धित, दस औदारिक शरीर से सम्बन्धित, चार महाप्रतिपदा, चार महाप्रतिपदा की पूर्णिमा और चार सन्ध्या। इस प्रकार बत्तीस अनध्यायकाल माने गए हैं, जिनका सक्षेप मे निम्न प्रकार से वर्णन है।

*आकाश सम्बन्धी दस अनध्याय*

१. उल्कापात-तारापतन-यदि महत् तारापतन हुआ है तो एक प्रहर पर्यन्त शास्त्र-स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

२. दिग्दाह-जब तक दिशा रक्तवर्ण की हो अर्थात् ऐसा मालूम पडे कि दिशा में आग-सी लगी है, तब भी स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

३. गर्जित-बादलों के गर्जन पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

४. विद्युत्-बिजली चमकने पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

किन्तु गर्जन और विद्युत् का अस्वाध्याय चातुर्मास में नहीं मानना चाहिए। क्योंकि वह गर्जन और विद्युत् प्रायः ऋतु-स्वभाव से ही होता है। अतः आर्द्रा से स्वाति नक्षत्र पर्यन्त अनध्याय नहीं माना जाता।

५. निर्घात-बिना बादल के आकाश में व्यन्तरादिकृत घोर गर्जना होने पर दो प्रहर तक अस्वाध्यायकाल है।

६. यूपक-शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया को सन्ध्या की प्रभा और चन्द्रप्रभा के मिलने को यूपक कहा जाता है। इन दिनों प्रहर रात्रि पर्यन्त स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

७. यक्षादीप्त-कभी किसी दिशा मे बिजली चमकने जैसा, थोड़े-थोड़े समय पीछे जो प्रकाश होता है वह यक्षादीप्त कहलाता है। अतः आकाश में जब तक यक्षाकार दीखता रहे तब तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

८. धूमिका-कृष्ण-कार्तिक से लेकर माघ मास तक का समय मेघों का गर्भमास होता है। इसमे धूम्र वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुंध पड़ती है। वह धूमिका-कृष्ण कहलाती है। जब तक वह धुंध पडती रहे, तब तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

९. मिहिकाश्वेत-शीतकाल में श्वेत वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुंध मिहिका कहलाती है। जब तक यह गिरती रहे, तब तक अस्वाध्यायकाल है।

१०. रज-उद्घात-वायु के कारण आकाश में चारों ओर धूल छा जाती है। जब तक यह धूल फैली रहती है, स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

*औदारिक शरीर सम्बन्धी दस अनध्याय*

११-१३. हड्डी, माँस और रुधिर-पंचेन्द्रिय, तिर्यंच की हड्डी, माँस और रुधिर यदि सामने दिखाई दें, तो जब तक वहाँ से यह वस्तुएँ उठाई न जाएँ, तब तक अस्वाध्याय है। वृत्तिकार आसपास के ६० हाथ तक इन वस्तुओं के होने पर अस्वाध्याय मानते हैं।

इसी प्रकार मनुष्य सम्बन्धी अस्थि, माँस और रुधिर का भी अनध्याय माना जाता है। विशेषता इतनी है कि इनका अस्वाध्याय सौ हाथ तक तथा एक दिन-रात का होता है। स्त्री के मासिक धर्म का अस्वाध्याय तीन दिन तक तथा बालक एवं बालिका के जन्म का अस्वाध्याय क्रमशः सात एवं आठ दिन पर्यन्त का माना जाता है।

१४. अशुचि-मल-मूत्र सामने दिखाई देने तक अस्वाध्याय है

१५. श्मशान-श्मशान भूमि के चारो ओर सौ-सौ हाथ पर्यन्त अस्वाध्याय माना जाता है।

१६. चन्द्रग्रहण-चन्द्रग्रहण होने पर जघन्य आठ, मध्यम बारह और उत्कृष्ट सोलह प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

१७. सूर्यग्रहण-सूर्यग्रहण होने पर भी क्रमश आठ, बारह और सोलह प्रहर पर्यन्त अस्वाध्यायकाल माना गया है।

१८. पतन-किसी बडे मान्य राजा अथवा राष्ट्र-पुरुष का निधन होने पर जब तक उसका दाह-संस्कार न हो, तब तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए अथवा जब तक दूसरा अधिकारी सत्तारूढ न हो, तब तक शनै -शनै· स्वाध्याय करना चाहिए।

१९. राजव्युद्ग्रह-समीपस्थ राजाओ में परस्पर युद्ध होने पर जब तक शान्ति न हो जाए, तब तक और उसके पश्चात् भी एक दिन-रात्रि स्वाध्याय नहीं करे।

२०. औदारिक शरीर-उपाश्रय के भीतर पंचेन्द्रिय जीव का वध हो जाने पर जब तक कलेवर पडा रहे, तब तक तथा १०० हाथ तक यदि निर्जीव कलेवर पडा हो तो स्वाध्याय नही करना चाहिए।

२१-२८. चार महोत्सव और चार महाप्रतिपदा-आषाढ-पूर्णिमा, आश्विन-पूर्णिमा, कार्तिक-पूर्णिमा और चैत्र-पूर्णिमा ये चार महोत्सव हैं। इन पूर्णिमाओ के पश्चात् आने वाली प्रतिपदा को महाप्रतिपदा कहते हैं। इनमें स्वाध्याय करने का निषेध है।

२९-३२. प्रातः, सायं, मध्याह्न और अर्ध-रात्रि-प्रात· सूर्य उगने से एक घडी पहले तथा एक घडी पीछे। सूर्यास्त होने से एक घडी पहले तथा एक घडी पीछे। मध्याह्न अर्थात् दोपहर में एक घडी पहले और एक घडी पीछे एव अर्ध-रात्रि मे भी एक घडी पहले तथा एक घडी पीछे स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

इस प्रकार अस्वाध्यायकाल टालकर दिन-रात्रि में चार काल का स्वाध्याय करना चाहिए।

Appendix-1

# INAPPROPRIATE TIME FOR STUDY OF AGAMS

**(Quoted from Nandi Sutra edited by Late Acharya Pravar Shri Atmaramji M.)**

Scriptures should be studied only at the appropriate time as prescribed in the *Agams* Study of scriptures at a 'time inappropriate for studies' (*anadhyaya kaal*) is prohibited

Detailed description of *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies) is also included in *Smritis* (the corpus of *Sanatan Dharmashastra*) like *Manusmriti*. Vedic people also mention about the *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies) of the *Vedas*. This rule is applicable to other Aryan holy books. As Jain *Agams* are sermons of the Omniscient, ensconced by the *devas*, and phonetically composed, discussion about the *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies) is also included in the scriptures. For example .

According to *Sthananga Sutra* there are thirty two slots of time defined as *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies)—ten related to sky, ten related to the gross physical body (*audarik sharira*), four relating to *mahapratipada* (the date following a specific full moon night), four relating to the date of the said full moon night, and four relating to *sandhya* (the four junctions of parts of the day, viz morning, noon, evening, and midnight). They are briefly described as follows ·

## RELATING TO SKY

**1. Ulkapat or Tarapatan**—If a falling star or a comet is visible in the sky, scriptures should not be studied for three hours following the incident.

**2. Digdaha**—As long as the sky looks crimson in any direction, as if there was a fire, then study of scriptures should not be done

**3. Garjit**—For three hours following thunder of clouds such studies are prohibited.

**4. Vidyut**—For three hours following lightening such studies are prohibited.

However, the prohibition related to thunder and lightening is not applicable during the four months of monsoon. This is because frequent thunder and lightening is an essential attribute of that season. Thus this prohibition is relaxed starting from *Ardra* till *Svati Nakshatra* (lunar mansion or 27/28 divisions of the ecliptic on the path of the moon)

**5. Nirghat**—For six hours following thunder without clouds (demonic or otherwise) such studies are prohibited.

**6. Yupak**—The conjunction of solar and lunar glows at twilight hour on first second and third days of the bright half of a month (*Shukla Paksha*) is called *Yupak*. During these dates such studies are prohibited during the first quarter of the night

**7. Yakshadeepti**—Some times there is a lightning like intermittent glow visible in the sky This is called *Yakshadeepti*. As long as such glow is visible in the sky such studies are prohibited.

**8. Dhoomika-krishna**—The months from *Kartik* to *Maagh* are months of cloud formation During this period smoky fog of suspended water particles is a frequent phenomenon This is called *Dhoomika-krishna*. As long as this fog exists such studies are prohibited

**9. Mihikashvet**—The white mist during winter season is called *Mihikashvet*. As long as this exists such studies are prohibited.

**10. Raj-udghat**—High speed wind causes dust storm. This is called *Raj-udghat*. As long as the sky is filled with dust such studies are prohibited

**RELATING TO GROSS PHYSICAL BODY**

**11-13. Bone, flesh and blood**—As long as bone, flesh and blood of five sensed animals are visible and not removed from sight such studies are prohibited According to the commentator (*Vritti*) if such things are lying up to a distance of 60 yards the prohibition is effective

This rule is applicable to human bones, flesh and blood with the amendment that the distance is 100 cubits and the effective period is one day and night The period prohibited for studies is three days in case of a women in menstruation, seven days in case of male-child birth and eight days in case of a female-child birth

**14. Ashuchi**—As long as excreta is visible and not removed from sight such studies are prohibited

**15. Smashan**—Up to a distance of hundred yards in any direction from a cremation ground such studies are prohibited

**16. Chandra grahan**—At the time of lunar eclipse such studies are prohibited for eight, twelve, or sixteen hours

**17. Surya grahan**—At the time of solar eclipse such studies are prohibited for eight, twelve, or sixteen hours.

**18. Patan**—On the death of a king or some other nationally eminent person such studies are prohibited as long as he is not cremated Even after that, the period of study is kept limited as long as his successor does not take over.

**19. Raaj-vyudgraha**—During a war between neighbouring states such studies are prohibited as long as peace does not prevail. Studies should be resumed only 24 hours after peace is established.

**20. Audarik Sharir**—In case a five sensed animal dies or is killed in an *upashraya* (place of stay for ascetics) such studies are prohibited as long as the dead body is not removed. This prohibition also applies if a dead body is lying within 100 yards of the place of stay.

**21-28. Four Mahotsavas and four Mahapratipada**—*Ashadh, Ashvin, Kartik*, and *Chaitra purnimas* (the full moon days of these four months) are called great festival days. The days after these festival days are called *Mahapratipada*. On all these days such studies are prohibited.

**29-32. Sandhya**—During the twenty four minutes preceding and following the four junctions of parts of the day, viz. morning, noon, evening, and midnight such studies are prohibited

Studies of scriptures or other holy books should be done avoiding all these *anadhyaya kaal* (time inappropriate for studies).

# विश्व में पहली बार जैन साहित्य के इतिहास में एक नये ज्ञान युग का शुभारम्भ

(जैन आगम, हिन्दी एव अंग्रेजी भावार्थ और विवेचन के साथ। शास्त्र के भावों को उद्‌घाटित करने वाले बहुरंगे चित्रो सहित)

**१. सचित्र उत्तराध्ययन सूत्र–** मूल्य ५००/–

भगवान महावीर की अन्तिम वाणी। आदर्श जीवन विज्ञान तथा तत्वज्ञान से युक्त मोक्षमार्ग के सम्पूर्ण अगों का सार पूर्ण वर्णन। एक ही सूत्र में सम्पूर्ण जैन आचार, दर्शन और सिद्धान्तों का समग्र सद्‌बोध।

**२. सचित्र दशवैकालिक सूत्र** मूल्य ५००/–

जैन श्रमण की अहिंसा व यतना युक्त आचार संहिता। जीवन मे पद–पद पर काम आने वाले विवेक युक्त, संयत व्यवहार, भोजन, भाषा, विनय आदि की मार्गदर्शक सूचनाएँ। आचार विधि को रंगीन चित्रों के माध्यम से आकर्षक और सुबोध बनाया गया है।

**३. सचित्र नन्दीसूत्र** मूल्य ५००/–

मतिज्ञान–श्रुतज्ञान आदि पाँचों ज्ञानों का उदाहरणो सहित विस्तृत वर्णन।

**४. सचित्र अनुयोगद्वार सूत्र (भाग १, २)** मूल्य १०००/–

यह शास्त्र जैन दर्शन और तत्वज्ञान को समझने की कुजी है। नय, निक्षेप, प्रमाण, जैसे दार्शनिक विषयो के साथ ही गणित, ज्योतिष, सगीत शास्त्र, काव्य शास्त्र, प्राचीन लिपि, नाप–तौल आदि सैकडों विषयो का वर्णन है। यह सूत्र गम्भीर भी है और बडा भी है। अत दो भागों में प्रकाशित किया है।

**५. सचित्र आचारांग सूत्र (भाग १, २)** मूल्य १०००/–

यह ग्यारह अगों में प्रथम अंग है। भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित अहिंसा, सम्यकत्व, सयम, तितिक्षा आदि आधारभूत तत्त्वों का बहुत ही सुन्दर वर्णन है। भगवान महावीर का जीवन चरित्र, उनकी छद्मस्थ चर्या का आँखो देखा वर्णन तथा जैन श्रमण का आचार–विचार दूसरे भाग में है। दोनो भाग विविध ऐतिहासिक व सांस्कृतिक चित्रो से युक्त।

**६. स्थानांग सूत्र (भाग १, २)** १२००/–

यह चौथा अग सूत्र है। अपनी खास सख्या प्रधान शैली मे संकलित यह शास्त्र ज्ञान, विज्ञान, ज्योतिष, भूगोल–गणित, इतिहास, नीति–आचार, मनोविज्ञान, पुरुष–परीक्षा आदि सैकड़ों प्रकार के विषयों का ज्ञान देने वाला बहुत ही विशालकाय शास्त्र है। भावार्थ और विवेचन के कारण प्रत्येक पाठक के लिए समझने में सरल और ज्ञानवर्धक है।

**७. ज्ञाता धर्म कथा (भाग १, २)** मूल्य १०००/–

भगवान महावीर द्वारा प्रवचनो मे प्रयुक्त धर्म कथाएँ, उद्‌बोधक रूपक, दृष्टान्त आदि जिनके माध्यम से तत्त्वज्ञान सहज ही ग्राह्य हो गया है। विविध रोचक रंगीन चित्रों से युक्त। दो भागो मे सम्पूर्ण आगम।

**८. सचित्र उपासक दशा एवं अनुत्तरौपपातिक दशा** मूल्य ५००/–

सप्तम अंग उपासक दशा मे भगवान महावीर के प्रमुख १० श्रावको का जीवन चरित्र तथा उनके श्रावक धर्म का रोचक वर्णन है। नवम अग अनुत्तरौपपातिक दशा में उत्कृष्ट तपःसाधना करने वाले ३३ श्रमणों की तप ध्यान–साधना का रोमाचक वर्णन है। भावो को स्पष्ट करने वाले कलात्मक रंगीन चित्रों सहित।

**९. सचित्र निरयावलिका एवं विपाक सूत्र** मूल्य ६००/–

निरयावलिका में पाँच उपांग हैं। भगवान महावीर के परमभक्त राजा कूणिक के जन्म आदि का वर्णन तथा वैशाली गणतंत्राध्यक्ष चेटक के साथ हुए महाशिलाकंटक युद्ध का रोमांचक सचित्र चित्रण तथा भगवान अरिष्टनेमि एवं भगवान पार्श्वनाथ के शासन में दीक्षित अनेक श्रमण-श्रमणियों का चरित्र इनमें है।

विपाकसूत्र में अशुभ कर्मों के अत्यन्त कटु फल का वर्णन है, जिसे सुनते ही हृदय द्रवित हो जाता है, तथा सुख विपाक में दान-तप आदि शुभ कर्मों के महान सुखदायी पुण्य फलो का मुँह बोलता वर्णन है। भाव पूर्ण रोचक कलापूर्ण चित्रों के साथ।

**१०. सचित्र अन्तकृद्दशा सूत्र** मूल्य ५००/–

आठवें अग अन्तकृद्दशासूत्र में मोक्षगामी ९० महान आत्म साधक श्रमण-श्रमणियो के तपोमय साधना जीवन का प्रेरक वर्णन है। यह सूत्र पर्युषण में विशेष रूप में पठनीय है। विविध चित्र व तपों के चित्रों से समझने में सरल सुबोध है।

**११. सचित्र औपपातिक सूत्र** मूल्य ६००/–

यह प्रथम उपाग हैं। इसमें राजा कूणिक का भगवान महावीर की वन्दनार्थ प्रस्थान, दर्शन-यात्रा तथा भगवान की धर्मदेशना, धर्म प्ररूपणा आदि विषयो का बहुत ही विस्तृत लालित्य युक्त वर्णन है। इसी में अम्बड परिव्राजक आदि अनेक परिव्राजकों की तप साधना का वर्णन भी है।

**१२. सचित्र रायपसेणिय सूत्र** मूल्य ५००/–

यह द्वितीय उपाग है। धर्मद्वेषी प्रदेशी राजा को धर्मबोध देकर परम धार्मिक बनाने वाले महान ज्ञानी आचार्य केशीकुमार श्रमण के साथ आत्मा, परलोक, पुनर्जन्म आदि विषयो पर हुई तर्क युक्त अध्यात्म चर्चा प्रत्येक जिज्ञासु के लिए पठनीय ज्ञानवर्द्धक है। आत्मा और शरीर की भिन्नता समझाने वाले उदाहरणों के चित्र भी बोधप्रद है।

**१३. सचित्र कल्पसूत्र** मूल्य ५००/–

कल्पसूत्र का पठन, पर्युषण में विशेष रूप में होता है। इसमे २४ तीर्थंकरों का जीवन चरित्र है। साथ ही भगवान महावीर का विस्तृत जीवन चरित्र, श्रमण समाचारी तथा स्थविरावली का वर्णन है। २४ तीर्थंकरों के जीवन से सम्बन्धित सुरम्य चित्रो के कारण सभी के लिए आकर्षक उपयोगी है।

- इस प्रकार १७ जिल्दो में १८ आगम तथा कल्पसूत्र प्रकाशित हो चुके हैं। प्राकृत अथवा हिन्दी का साधारण ज्ञान रखने वाले व्यक्ति भी अंग्रेजी माध्यम से जैन शास्त्रो का भाव, उस समय की आचार-विचार प्रणाली आदि को अच्छी प्रकार से समझ सकते हैं। अंग्रेजी शब्द कोष भी दिया गया है।
- पुस्तकालयों, ज्ञान भण्डारों तथा संत-सतियो, स्वाध्यायियों के लिए विशेष रूप से संग्रह करने योग्य आगमों का यह प्रकाशन कुछ समय पश्चात् दुर्लभ हो सकता है।
- इस आगम माला के प्रकाशन में परम श्रद्धेय उत्तरभारतीय प्रवर्तक गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज की अत्यन्त बलवती प्रेरणा रही है। उनके शिष्य रत्न जैन शासन दिवाकर आगम ज्ञाता उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनिजी म. द्वारा सम्पादित है, इनके सह सम्पादक है प्रसिद्ध विद्वान श्रीचन्द सुराना। अंग्रेजी अनुवाद कर्ता है, श्री सुरेन्द्र बोथरा तथा सुश्रावक श्री राजकुमार जी जैन।

## IN THE HISTORY OF JAIN LITERATURE BEGINNING OF A NEW ERA OF KNOWLEDGEFOR THE FIRST TIME IN THE WORLD

(Jain Agams published with free flowing translation in Hind and English. Also included are multicoloured illustrations vividly exemplifying various themes contained in scriptures)

1. **Illustrated Uttaradhyayan Sutra** **Price Rs. 500/-**

   The last sermon of Bhagavan Mahavir. Essence of the ideal way of life and path of liberation based on philosophical knowledge contained in all Angas. The pious discourse encapsulating complete Jain conduct, philosophy and principles.

2. **Illustrated Dashavaikalik Sutra** **Price Rs. 500/-**

   The simple rule book of ahimsa and caution based Shraman conduct rendered vividly with the help of multicoloured illustrations Useful at every step in life, even of common man, as a guide book of good behaviour, balanced conduct and norms of etiquette, food and speech

3. **Illustrated Nandi Sutra** **Price Rs. 500/-**

   All enveloping discussion of the five facets of knowledge including Mati-jnana and Shrut-jnana

4. **Illustrated Anuyogadvar Sutra (Parts 1 and 2)** **Price Rs. 1,000/-**

   This scripture is the key to understanding Jain philosophy and metaphysics. Besides philosophical topics like Naya, Nikshep, and Praman it contains discussion about hundreds of other subjects including mathematics, astrology, music, poetics, ancient scripts, and weights and measures The complexity and volume of this could be covered only in two volumes

5. **Illustrated Acharanga Sutra (Parts 1 and 2)** **Price Rs. 1,000/-**

   This is the first among the eleven Angas. It contains lucid description of ahimsa, samyaktva, samyam, titiksha and other fundamentals propagated by Bhagavan Mahavir Eye-witness-like description of the life of Bhagavan Mahavir and his pre-omniscience praxis as well as details about ascetic conduct and praxis form the second part. Both parts contain multi-coloured illustrations on a variety of historical and cultural themes.

6. **Illustrated Sthananga Sutra (Parts 1 and 2)** **Price Rs. 1,200/-**

This is the fourth Anga Sutra. Compiled in its unique numerical placement style, this scripture is a voluminous work containing information about scriptural knowledge, science, astrology, geography, mathematics, history, ethics, conduct, psychology, judging man and hundreds of other topics. The free flowing translation and elaboration make the contents easy to understand and edifying even for common readers.

7. **Illustrated Jnata Dharma Katha Sutra (Parts 1 and 2)** **Price Rs. 1,000/-**

Famous inspiring and enlightening religious tales, allegories and incidents told by Bhagavan Mahavir presented with attractive colourful illustrations. This works makes the abstract philosophical principles easy to understand. This is the sixth Anga complete in two volumes

8. **Illustrated Upasak Dasha and Anuttaraupapatik Dasha Sutra** **Price Rs. 500/-**

This book contains the seventh and the ninth Angas The seventh Anga, Upasak Dasha, contains the stories of life of ten prominent Shravak disciples of Bhagavan Mahavir with a special emphasis on their religious conduct The ninth Anga Anuttaraupapatik Dasha contains thrilling description of the lofty austerities and meditation done by thirty three specific ascetics With colourful illustrations

9. **Illustrated Niryavalika and Vipaak Sutra** **Price Rs. 600/-**

Niryavalika has five Upangas that contain the story of the birth of King Kunik, a devout disciple of Bhagavan Mahavir. This also contains the thrilling and illustrated description of the famous Mahashilakantak war between Kunik and Chetak, the president of the republic of Vaishali. Besides these it also has life-stories of many Shramans and Shramanis of the lineage of Bhagavan Parshva Naath

Vipaak Sutra contains the description of the extremely bitter fruits of ignoble deeds. This touching description inspires one towards noble deeds like charity and austerities the fruits of which have been lucidly described in its second section titled Sukha-vipaak. The colourful artistic illustrations add to the attraction.

10. **Illustrated Antakriddasha Sutra** **Price Rs. 500/-**

This eighth Anga contains the inspiring stories of the spiritual pursuits of ninety great men destined to be liberated. This Sutra is specially read during the Paryushan period. The illustrations related to austerities are specially informative.

**11. Illustrated Aupapatik Sutra** **Price Rs. 500/-**

This the first Upanga. This contains lucid and poetic description of numerous topics including King Kunik's preparations to go to pay homage to Bhagavan Mahavir, Bhagavan's sermon and establishment of the religious order. This also contains the description of austerities observed by Ambad and many other Parivrajaks.

**12. Illustrated Raipaseniya Sutra** **Price Rs. 500/-**

This is the third Upanga It provides an interesting and edifying reading of the discussions between Acharya Keshi Kumar Shraman and the anti-religious king Pradeshi on topics like soul, next life, and rebirth. This dialogue turned him into a great religionist. The illustrations of the examples showing the difference between soul and body are also instructive

**13. Illustrated Kalpa Sutra** **Price Rs. 500/-**

Kalpa Sutra is widely read and recited during the Paryushan festival It contains stories of life of 24 Tirthankars with more details about Bhagavan Mahavir's life It also contains the disciple lineage of Bhagavan Mahavir and detailed ascetic praxis The illustrations connected with the 24 Tirthankars add to its attraction as well as utility

- Thus till date 18 Agams and Kalpa Sutra have been published in 17 books. The English translation makes it possible for those with passing knowledge of Prakrit and Hind to understand the content of Jain Agams including the religious practices as prevalent in ancient times Also included in some of these editions are glossaries of Jain terms with their mea ings in English

- Due to its demand by libraries, Jnana Bhandars, ascetics and lay readers this unique series may soon go out of print.

- The publication of this Agam series has been inspired by Uttar Bharatiya Pravartak Gurudev Bhandari Shri Padmachandra ji M. S Its editor is his able disciple Uttar Bharatiya Pravartak Shri Amar Muni ji Maharaj. His team includes renowned scholar Shri Shrichand Surana as associate editor, Shri Surendra Bothara and Sushravak Shri Raj Kumar Jain, as English translators